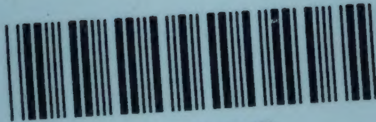

KSUL
002025
KSUL


KSUL
002025
KSUL




ओ३म्

# ॥ ऋग्वेदसंहितायाः ॥

मन्त्राणां

वर्णानुक्रमसूची

अजमेरस्थ वैदिक यन्त्रालये

मुद्रिता

—:o—

सृष्ट्यब्दाः १९७२९४९००२

संवत् १९५८ वि०




॥ ओ३म् ॥

# ऋग्वेदसंहितायाः

## मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची

# अ



| क. | अष्ट. | अ. | वर्ग. | पृष्ठांक | | अष्ट. | अ. | वर्ग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अकर्मतेस्वपसोअभूम | ३ | ४ | १९ | ६५० | अक्षीभ्यांतेनासिकाभ्यां | ८ | ८ | २१ |
| अकर्मादस्युरभिनोअवन्तु | ७ | ७ | ७ | ५६३ | अक्षेत्रवित्क्षेत्रविदं | ७ | ७ | ३० |
| अकारितइन्द्रगोतमेभिः | १ | ५ | ५ | ५६४ | अक्षैर्मादीव्यःकृषिमित् | ७ | ८ | ९ |
| अकारिब्रह्मसमिधान | ३ | ५ | ५ | २१२ | अक्षोदयच्छवसाक्षाम | ३ | ६ | १ |
| अकारिवामन्धसो | ५ | १ | ३ | ३०२ | अक्षोनचक्रयोःशूर | ४ | ६ | १७ |
| अक्रन्ददग्निस्तनयन् | ७ | ८ | २८ | ४२१ | अक्षणश्चिद्गातुवित्तरा | ६ | २ | २२ |
| अक्रान्त्समुद्रःप्रथमे | ७ | ४ | १८ | ७८ | अगच्छतंकृपमाणंपराव | १ | ८ | २१ |
| अक्रंविहस्तासुकृते | ४ | ३ | ३१ | १७७ | अगच्छदुविप्रतमःसखीयं | ३ | २ | ६ |
| अक्रोनवभ्रिःसमिथेमही | २ | ८ | १५ | १८२ | अगन्निन्द्रश्रवोबृहत् | ३ | २ | २२ |
| अक्षएवन्तःकर्णवन्तः | ८ | २ | २४ | ३४२ | अगन्ममहानमसा | ५ | २ | १५ |
| अक्षन्नमीमदन्ताहि | १ | ६ | ३ | ३१५ | अगव्यूतिक्षेत्रमागन्म | ४ | ७ | ३३ |
| अक्षानहोन्ह्यतन | ८ | १ | १४ | ११६ | अगस्त्यःखनमानःखनित्रै | २ | ४ | २२ |
| अक्षासइदंकुशिनः | ७ | ८ | ४ | ५८२ | अगस्त्यस्यनद्भ्यः | ८ | १ | २४ |
| अक्षितोतिःसनेदिमं | १ | १ | १० | ४२१ | अगोरुधायगविषे | ६ | २ | १८ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ५२१ | अयंसोमइन्द्रतुभ्यं | ७ | ३ | २४ |
| २६५ | अयंसोमश्चमूसुतो | ४ | ३ | ५ |
| ५०७ | अयंसोमःकपर्दिने | ७ | २ | १५ |
| ५८३ | अयंस्तुतोराजावन्दि | ८ | १ | २९ |
| ३१४ | अयंस्वादुरिहमदिष्ठः | ४ | ७ | ३० |
| ३७३ | अयंहयद्वांदेवयाउ | ५ | ५ | १४ |
| ४६२ | अयंहयेनवाइदं | ६ | ५ | २७ |
| ६४३ | अयंहितेअमर्त्यः | ८ | ८ | २ |
| ३६० | अयंहिनेतावरुणः | ५ | ४ | ७ |
| २९० | अयंहोताप्रथमः | ४ | ५ | ११ |
| ६४४ | अरण्यान्यरण्यानि | ८ | ८ | ४ |
| १७४ | अरण्योर्निहितोजातवे | ३ | १ | ३२ |
| ४२६ | अरमतिरनर्वणः | ६ | २ | ४० |
| ५११ | अरममाणोअत्येति | ७ | २ | २७ |
| १३७ | अरमयःसरपसः | २ | ६ | १२ |
| ४६९ | अरमश्वायगायति | ६ | ६ | १९ |
| ५२८ | अरश्मानोयेरथाः | ७ | ४ | १४ |
| २७१ | अराइवेदचरमा | ४ | ३ | २३ |
| ६७७ | अराधिहोतानिषदा | ८ | १ | १३ |
| ६४७ | अरायिकाणेविकटे | ८ | ८ | १३ |
| ५१२ | अरावीदंशुःसचमानः | ७ | २ | ३१ |
| २८ | अरित्रंवांदिवस्पृथु | १ | ३ | ३४ |
| ५८५ | अरिष्टःसमर्तोविश्वः | ८ | २ | ५ |
| ४६० | अरुणप्सुरुषाअभूत् | ६ | ५ | २० |
| ६६ | अरुणोमासकृद्वृकः | १ | ७ | २३ |
| ३१८ | अरुषस्यदुहितरा | ४ | ८ | ५ |
| ४९० | अरुषोजनयन्गिरः | ६ | ८ | १५ |
| ५१६ | अरूरुचदुषसःपृश्निः | ७ | ३ | ८ |
| १३४ | अरोरवीद्वृष्णोअस्य | २ | ६ | ४ |
| ६१४ | अरंकामायहरयः | ८ | ५ | ६ |
| ११५ | अरंकृण्वंतुवेदिं | २ | ४ | १० |
| ४११ | अरंक्षयायनोमहे | ६ | १ | १९ |
| ४६९ | अरंतइन्द्रकुक्षये | ६ | ६ | १९ |
| ३८२ | अरंदासोनमीळ्हुषेक | ५ | ६ | ८ |
| २२१ | अरंमउस्रयाम्णे | ३ | ६ | ३० |
| ३२७ | अरंमेगन्तंहवनाय | ५ | १ | ३ |
| ४६९ | अरंहिष्मासुतेषुणः | ६ | ६ | १९ |
| ४५६ | अर्चतप्रार्चत | ६ | ५ | ६ |
| ११६ | अर्चद्वृषावृषभिः | २ | ४ | १३ |
| ४२५ | अर्चन्तएकेमहिसामम | ६ | २ | ३६ |
| २४४ | अर्चन्तस्त्वाहवामहे | ४ | १ | ५ |
| ५६ | अर्चन्तिनारीरपसोन | १ | ६ | २५ |
| ३४ | अर्चादिवेबृहतेशूष्यं१व | १ | ४ | १७ |
| २०२ | अर्चामितेसुमतिं | ३ | ४ | २४ |
| ५४७ | अर्चामिवांवर्धायापः | ७ | ६ | ११ |
| ३४ | अर्चाशक्रायशाकिने | १ | ४ | १७ |
| ३४५ | अर्णांसिचित्पप्रथाना | ५ | २ | २४ |
| ६५ | अर्थमिद्वाउअर्थिनः | १ | ७ | २० |
| ४६३ | अर्थिनोयन्तिचेदर्थं | ६ | ५ | ३३ |
| ३४५ | अर्धवीरस्यशृतपां | ५ | २ | २७ |
| ४५७ | अर्भकोनकुमारकः | ६ | ५ | ७ |
| ६४२ | अर्यमणंबृहस्पतिं | ८ | ७ | २५ |
| १९९ | अर्यमणंवरुणंमित्रमे | ३ | ४ | १६ |
| १९२ | अर्यमाणोअदितिः | ३ | ३ | २७ |
| २८३ | अर्यम्यंवरुणमित्र्यं | ४ | ४ | ३१ |
| ६४५ | अर्योवागिरोअभ्यर्च | ८ | ८ | ६ |
| ५५४ | अर्योविशांगातुरेतु | ७ | ७ | २ |
| ४५ | अर्वाद्भिरग्नेअर्वतोनृ | १ | ५ | २० |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ४९३ | असर्जिरथ्योयथा | ६ | ८ | २६ |
| ५२३ | असर्जिवकारथ्ये | ७ | ४ | १ |
| ५३७ | असर्जिवाजीतिरःपवि | ७ | ५ | २१ |
| १२० | असर्जिवांस्थविरावेध | २ | ४ | २६ |
| ५२१ | असर्जिस्कम्भोदिवः | ७ | ३ | २१ |
| ३७३ | असश्चतामघवद्भ्यो | ५ | ५ | १३ |
| ५१६ | असश्चतःशतधाराः | ७ | ३ | १७ |
| ३३१ | असश्चन्तीभूरिधारे | ५ | १ | १४ |
| ३४० | असादिव्रतोवह्निः | ५ | २ | १० |
| ११६ | असामयथासुषखायः | २ | ४ | १४ |
| २५ | असामिहिप्रयज्यवः | १ | ३ | १९ |
| २५ | असाम्योजोबिभृता | १ | ३ | १६ |
| ६३८ | असावन्योअसुर | ८ | ७ | २० |
| २६० | अस्तवितेजुजुषाणाय | ४ | २ | २० |
| ३४७ | असाविदेवंगोऋजीकं | ५ | ३ | ३ |
| ५० | असाविसोमइन्द्रते | १ | ६ | ५ |
| ५१६ | असाविसोमोअरुषः | ७ | ३ | ७ |
| ६२० | असाविसोमःपुरुहूत | ८ | ५ | २४ |
| ५०१ | असाव्यंशुर्मदाय | ७ | १ | २४ |
| २११ | असिक्न्यांयजमानोन | ३ | ५ | २३ |
| १०७ | असियमोअस्यादित्यो | २ | ३ | ११ |
| ४९ | असिहिवीरसेन्यः | १ | ६ | १ |
| ५८१ | असुनीतेपुनरस्मासु | ८ | १ | २३ |
| ५८१ | असुनीतेमनोअस्मासु | ८ | १ | २२ |
| ११८ | असुन्वन्तंसमंजहि | २ | ४ | १९ |
| ४१० | असुन्वामिन्द्रसंसदं | ६ | १ | १६ |
| १८२ | असूतपूर्वोवृषभोज्या | ३ | २ | २३ |
| ११४ | असूतपृश्निर्महतरेणाय | २ | ४ | ७ |
| ५०३ | असृक्षतप्रवाजिनः | ७ | १ | ३६ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ४८३ | अस्रग्रमिन्द्रवःपथा | ६ | ७ | २८ |
| ४ | अस्रग्रमिन्द्रतेगिरः | १ | १ | १७ |
| ४९६ | अस्रग्रंदेववीतये | ७ | १ | ३ |
| ५०७ | अस्रग्रंदेववीतयेवाज | ७ | २ | १६ |
| ४६८ | असौचयानउर्वरा | ६ | ६ | १४ |
| ४६८ | असौयएषिवीरकः | ६ | ६ | १४ |
| ६६ | असौयःपन्थाआदित्यः | १ | ७ | २३ |
| २४३ | असंमृष्टोजायसेमात्रोः | ४ | १ | ३ |
| ४३५ | अस्तभ्नाद्यामसुरोवि | ६ | ३ | २८ |
| ४४६ | अस्ताविमन्म | ६ | ४ | २१ |
| ९५ | अस्ताव्यग्निःशिमीव | २ | २ | ९ |
| ५७३ | अस्ताव्यग्निर्नरांसुशे | ७ | ८ | २९ |
| ४५५ | अस्तिदेवाअंहोरुः | ६ | ४ | ५२ |
| ४७१ | अस्तिसोमोअयंसुतः | ६ | ६ | २८ |
| २७८ | अस्तिहिवामिहस्तोता | ४ | ४ | १४ |
| ४२४ | अस्तिहिवःसजात्यंरि | ६ | २ | ३२ |
| २३ | अस्तिहिष्मामदायवः | १ | ३ | १४ |
| १७४ | अस्तीदमधिमन्थनं | ३ | १ | ३२ |
| ९२ | अस्तुश्रौषट्पुरोअग्निं | २ | २ | ३ |
| ५७० | अस्तेवसुप्रतरंत्वायं | ७ | ८ | २२ |
| ८३ | अस्तोढ्वंस्तोम्याब्रह्म | २ | १ | ९ |
| २३२ | अस्थुरुचित्राउषसः | ३ | ८ | १ |
| ४८१ | अस्मभ्यमिन्द्राविन्द्रयुः | ६ | ७ | १९ |
| ५३४ | अस्मभ्यंगातुवित्तमः | ७ | ५ | १० |
| १५४ | अस्मभ्यंताद्दिवोअद्भ्यः | २ | ८ | ३ |
| १३७ | अस्मभ्यंतद्वसोदानाय | २ | ६ | १२ |
| १३७ | अस्मभ्यंतद्वसोदानाय | २ | ६ | १४ |
| २२० | अस्मभ्यंताँअपावृधि | ३ | ६ | २६ |
| ५३३ | अस्मभ्यंत्वावसुविदं | ७ | ५ | ७ |

# आ

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ५७ | आन्यंदिवोमातरिश्वा | १ | ६ | २८ |
| ६४० | आपइद्वाउभेषजीः | ८ | ७ | २५ |
| ३४५ | आपक्थासोभला | ५ | २ | २५ |
| २६६ | आपथयोविपथयो | ४ | ३ | ९ |
| ४५७ | आपप्राथमहिनाव्ह | ६ | ५ | ९ |
| ३२६ | आपप्रुषीपार्थिवानि | ४ | ८ | ३२ |
| २३२ | आपप्रुषीविभावरी | ३ | ८ | ३ |
| ४९ | आपप्रौपार्थिवंरजः | १ | ६ | १ |
| ३२६ | आपरमाभिरुतमध्य | ५ | १ | २ |
| २३४ | आपर्वतस्यमरुता | ३ | ८ | ६ |
| ४८५ | आपवमानधारय | ६ | ७ | ३९ |
| ४८९ | आपवमाननोभर | ६ | ८ | १३ |
| ५०४ | आपवमानसुष्टुतिं | ७ | २ | १ |
| ५०६ | आपवस्वगाविष्टये | ७ | २ | ९ |
| ५३९ | आपवस्वदिशांपत | ७ | ५ | २६ |
| ४९० | आपवस्वमदिन्तम | ६ | ८ | १५ |
| ४९७ | आपवस्वमदिन्तम | ७ | १ | ७ |
| ४९५ | आपवस्वमहीमिषं | ६ | ८ | ३१ |
| ५०१ | आपवस्वसहस्रिणं | ७ | १ | २६ |
| ५०२ | आपवस्वसहस्रिणं | ७ | १ | ३० |
| ५०५ | आपवस्वसुवीर्यं | ७ | २ | १ |
| ५०३ | आपवस्वहिरण्यवत् | ७ | १ | ३३ |
| ४२३ | आपशुंगासिपृथिवींव | ६ | २ | ३१ |
| ३७५ | आपश्चातान्नासत्या | ५ | ५ | १९ |
| ३७६ | आपश्चातान्नासत्या | ५ | ५ | २० |
| ३४९ | आपश्चित्पिप्युःस्तर्यः | ५ | ३ | ७ |
| ३५५ | आपश्चिदस्मैपिन्वंत | ५ | ३ | २५ |
| ३८१ | आपश्चिद्धिस्वयशसः | ५ | ६ | ७ |
| ४८४ | आपानासोविवस्वतः | ६ | ७ | ३४ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ६०६ | आपान्तमन्युःस्तृपल | ८ | ४ | [illegible] |
| ६२२ | आपीवोअस्मेपितरेव | ८ | ६ | [illegible] |
| ३६१ | आपुत्रासोनमातरं | ५ | ४ | [illegible] |
| १७८ | आपूर्णोअस्यकलशः | ३ | २ | [illegible] |
| १२ | आपूषंचित्रबर्हिषं | १ | २ | [illegible] |
| १२ | आपोअद्यान्वचारिषं | १ | २ | [illegible] |
| ५४५ | आपोअद्यान्वचारिषं | ७ | ६ | [illegible] |
| ५५२ | आपोअस्मान्मातरः | ७ | ६ | [illegible] |
| ५० | आपोनदेवीरुपयंतिहो | १ | ६ | [illegible] |
| ५७१ | आपोनसिन्धुमभियत् | ७ | ८ | [illegible] |
| १०४ | आपोभूयिष्ठाइत्येको | २ | ३ | [illegible] |
| ३६३ | आपोयंवःप्रथमं | ५ | ४ | [illegible] |
| ५६१ | आपोरेवतीःक्षयथाहि | ७ | ७ | [illegible] |
| ६३२ | आपोहयद्बृहतीर्विश्वं | ८ | ७ | [illegible] |
| ५४५ | आपोहिष्ठामयोभुवः | ७ | ६ | [illegible] |
| १२ | आपःपृणीतभेषजं | १ | २ | [illegible] |
| ५४५ | आपःपृणीतभेषजं | ७ | ६ | [illegible] |
| ५६ | आप्यायस्वमदिंतम | १ | ६ | [illegible] |
| ५६ | आप्यायस्वसमेतुते | १ | ६ | [illegible] |
| ४९२ | आप्यायस्वसमेतुते | ६ | ८ | [illegible] |
| ४६४ | आप्रद्रवपरावतः | ६ | ६ | [illegible] |
| २५२ | आप्रद्रवहरिवोमाविवे | ४ | १ | [illegible] |
| ४२४ | आप्रयातमरुतोविश्नो | ६ | २ | [illegible] |
| २३३ | आप्रारजांसिदिव्या | ३ | ८ | [illegible] |
| ५८९ | आप्रुषायन्मधुन | ८ | २ | [illegible] |
| ४३८ | आबुन्दंवृत्रहाददे | ६ | ३ | [illegible] |
| ६८ | आभरतांशिक्षतंवज्रबा | १ | ७ | [illegible] |
| २८८ | आभानुनापार्थिवानि | ४ | ५ | [illegible] |
| २७९ | आभात्यग्निरुपसा | ४ | ४ | [illegible] |

| पृष्ठांक· | | अष्ट· | अ· | वर्ग· |
|---|---|---|---|---|
| ८७ | आसूर्योनभानुमद्भिः | ४ | ९ | ६ |
| ६२ | आसूर्योयातुसप्ताश्वः | ४ | २ | २७ |
| ३६ | आसोतापरिषिञ्चता | ७ | ९ | १८ |
| ३९ | आसोमसुवानोअद्रि | ७ | ९ | १३ |
| ३०१ | आसंयतमिन्द्रणः | ४ | ६ | १४ |
| ३६७ | आस्तुतासोमरुतो | ९ | ४ | २७ |
| ११३ | आस्थापयन्तयुवतिंयु | २ | ४ | ९ |
| ७९ | आस्नोवृकस्यवर्ति | १ | ८ | १० |
| ३२ | आस्मारथंवृषपाणे | १ | ४ | ११ |
| ४८८ | आस्मिन्पिशंगमिन्दवः | ६ | ८ | ११ |
| ३६ | आस्त्वमद्मयुवमानोअ | १ | ४ | २३ |

| पृष्ठांक· | | अष्ट· | अ· | वर्ग· |
|---|---|---|---|---|
| ४९६ | आहरयःससृज्रिरे | ६ | ५ | ९ |
| ५३१ | आहर्यतायधृष्णवे | ७ | ४ | २९ |
| ९३९ | आहर्यतोअर्जुनेअत्के | ७ | ५ | १४ |
| ६४९ | आहार्षत्वाविदंत्वा | ८ | ८ | १९ |
| ९४१ | आहिद्यावापृथिवी | ७ | ९ | २९ |
| ४१८ | आहिरुहतमश्विना | ६ | २ | ६ |
| २१६ | आहिष्मायातिनर्य | ३ | ६ | १८ |
| १४ | आहिष्मासूनवेपिता | १ | २ | २० |
| १६७ | आहोतामन्द्रोविदथा | ३ | १ | १४ |
| ४३२ | आहंसरस्वतीवतोः | ६ | ३ | २१ |
| ९४९ | आहंपितॄन्त्सुविदत्रान् | ७ | ६ | १७ |

# इ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ७९ | इच्छन्तित्वासोम्यासः | ३ | २ | १ |
| ९९ | इच्छन्तिदेवाःसुन्वन्तं | ९ | ७ | २० |
| ९१ | इच्छन्नश्वस्ययच्छिरः | १ | ६ | ७ |
| ७९ | इतऊतीवोअजरं | ६ | ७ | ३ |
| ३१ | इतिचिद्धित्वाधना | ८ | ७ | १ |
| ९८ | इतिचिन्नुप्रजायैपशुम | ४ | २ | १६ |
| ४२ | इतिचिन्मन्युमध्रि | ३ | ८ | २९ |
| २८ | इतित्वाग्नेवृष्टिहव्यस्य | ८ | ६ | १६ |
| १३ | इतित्वादेवाइमआहुः | ८ | ९ | ४ |
| ३० | इतिवाइतिमेमनः | ८ | ६ | २६ |
| २९ | इतिस्तुतासोअसथा | ६ | २ | ३७ |
| ३ | इतोवासातिमीमहे | १ | १ | १२ |
| ९६ | इत्थाधीवन्तमद्रिवः | ९ | ७ | २४ |
| २४७ | इत्थायथातऊतये | ४ | १ | १२ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ४८ | इत्थाहिसोमइन्मदे | १ | ९ | २९ |
| ९९० | इदमकर्मनमो | ८ | २ | १८ |
| ९४ | इदमग्नेसुधितंदुर्धिता | २ | २ | ७ |
| १२ | इदमापःप्रवहत | १ | २ | १२ |
| ९४९ | इदमापःप्रवहत | ७ | ६ | ९ |
| ९८२ | इदमित्थारौद्रंगूर्तवचा | ८ | १ | २६ |
| २३२ | इदमुत्यत्पुरुतमं | ३ | ८ | १ |
| २०३ | इदमुत्यन्महिमहा | ३ | ९ | २ |
| १०४ | इदमुदकंपिबतेत्यब्रवी | २ | ३ | ९ |
| ३२८ | इदाहितउषोअद्रि | ९ | १ | ६ |
| ३०० | इदाहितेवेविषतः | ४ | ६ | ११ |
| ४२४ | इदाहिवउपस्तुति | ६ | २ | ३३ |
| ३२८ | इदाहिवोविधते | ९ | १ | ६ |
| २२२ | इदाह्नःपीतिमुतवोमदं | ३ | ७ | २ |

# ई

# उ

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| १३९ | उग्रष्विन्नुशूरमन्द | २ | ६ | ६ |
| ३४७ | उग्रोजज्ञेवीर्याय | ५ | ३ | १ |
| २७७ | उग्रोवांककुहोययिः | ४ | ४ | १२ |
| ४४४ | उग्रंनवीरं | ६ | ४ | १९ |
| ४९१ | उग्रंयुयुज्मपृतनासुसा | ६ | ४ | ३८ |
| ३६६ | उग्रंवओजःस्थिरा | ५ | ४ | २३ |
| ४४ | उचथ्ये३वपुषियःस्व | ६ | ४ | ६ |
| ५०० | उच्चातेजातमन्धसः | ७ | १ | १९ |
| ६२२ | उच्चादिविदक्षिणाव | ८ | ६ | ३ |
| ३७९ | उच्छन्तीयाकृणोषिमं | ५ | ६ | १ |
| २३२ | उच्छन्तीरद्यचितयन्त | ३ | ८ | १ |
| ३८४ | उच्छन्नुषसःसुदिनाअ | ५ | ६ | १२ |
| २७५ | उच्छंत्यांमेयजता | ४ | ४ | २ |
| ३२८ | उच्छादिवोदुहितः | ५ | १ | ६ |
| १९ | उच्छिष्टंचम्वोर्भर | १ | २ | २६ |
| ६१९ | उच्छुष्माओषधीनां | ८ | ५ | ६ |
| १६९ | उच्छोचिषासहसस्पुत्र | ३ | १ | १८ |
| १६४ | उच्छ्रयस्ववनस्पते | ३ | १ | ३ |
| ५५३ | उच्छ्वंचस्वपृथिविमा | ७ | ६ | २८ |
| ५५३ | उच्छ्वंचमानापृथिवि | ७ | ६ | २८ |
| ४९१ | उज्जातमिन्द्रतेशवः | ६ | ४ | ४१ |
| ५७१ | उज्जायतांपरशुः | ७ | ८ | २९ |
| १८३ | उतऋतुभिर्ऋतुपाः | ३ | ३ | ११ |
| ५६२ | उतकण्वंनृषदःपुत्रं | ७ | ७ | २८ |
| ६४४ | उतगावइवादन्त्युत | ८ | ८ | ४ |
| २०९ | उतग्नाअग्निरध्वर | ३ | ५ | ६ |
| २६३ | उतग्नाव्यन्तुदेवपत्नीः | ४ | २ | २८ |
| २७३ | उतघानेमोअस्तुतः | ४ | ३ | २७ |
| ३२३ | उतघासरथीतमः | ४ | ८ | २२ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | व[र्ग.] |
|---|---|---|---|---|
| ४०९ | उततेसुष्टुताहरी | ६ | १ | १ |
| ४०२ | उतत्यदाश्वश्व्यं | ५ | ८ | १ |
| ३७३ | उतत्यद्वांजुरते | ५ | ५ | १ |
| २२० | उतत्यातुर्वशायद् | ३ | ६ | २ |
| ४१३ | उतत्यादैव्याभिषजा | ६ | १ | २ |
| ८० | उतत्यामेयशसाश्वेतना | २ | १ | |
| ५८३ | उतत्यामेरौद्रावर्चिम | ८ | १ | २ |
| ५०२ | उतत्याहरितोदश | ७ | १ | ३ |
| ३१९ | उतत्यामेहवमाजग्म्या | ४ | ८ | |
| २०८ | उतत्यायजताहरी | ३ | ५ | १ |
| २२० | उतत्यासद्यआर्या | ३ | ६ | २ |
| १४९ | उतत्येदेवीसुभगे | २ | ७ | १ |
| ३५७ | उतत्येनोमरुतो | ५ | ४ | |
| २६३ | उतत्येनःपर्वतासःसुश | ४ | २ | २ |
| २५४ | उतत्येमाध्वन्यस्यजुष्टाः | ४ | २ | |
| २५४ | उतत्येमापौरुकुत्स्यस्य | ४ | २ | |
| २५४ | उतत्येमामारुताश्वस्य | ४ | २ | |
| १० | उतत्यंचमसंनवं | १ | २ | |
| २६३ | उतत्यन्नोमारुतंशर्धआ | ४ | २ | २ |
| २२० | उतत्यंपुत्रमग्रुवः | ३ | ६ | २ |
| ३७३ | उतत्यंभुज्युमश्विनास | ५ | ५ | १ |
| ४६६ | उतत्यंवीरंधनसामृ | ६ | ६ | |
| ४३६ | उतत्वाग्नेममस्तुतः | ६ | ३ | ३ |
| ४३७ | उतत्वाधीतयोमम | ६ | ३ | ४ |
| ४३६ | उतत्वानमसावयं | ६ | ३ | ३ |
| ४३८ | उतत्वाबधिरंवयं | ६ | ३ | ४ |
| ४३६ | उतत्वाभृगुवच्छुचे | ६ | ३ | ३ |
| ४५९ | उतत्वामदितेमहि | ६ | ४ | ९ |

# ऊ

# ऋ

# ए

# ऐ

# ओ



# औ



# अं

# क

# ख



# ग

# घ



# च

# छ



# ज

# त

# द

# ध

# न

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| १८ | नदन्नभिन्नमप्रुयाशया | १ | २ | ३७ |
| ११९ | नदस्यमारुधतःकाम | २ | ४ | २२ |
| ३५४ | नदुष्टुतीमर्त्योविन्दते | ५ | ३ | २१ |
| ५६३ | नदेवानाममपिव्रतं | ७ | ८ | २ |
| ४२६ | नदेवानाममपिह्नुतः | ६ | २ | ३९ |
| ४५६ | नदंवओदतीनां | ६ | ५ | ५ |
| ४०१ | नद्यावइन्द्रमोजसा | ५ | ८ | ११ |
| ४२७ | ननूनंब्रह्मणामृणं | ६ | ३ | ४ |
| ११५ | ननूनमस्तिनोश्वः | २ | ४ | १० |
| २६९ | नपर्वतानद्योवरन्तवः | ४ | ३ | १८ |
| ४२१ | नपाताशवसोमहः | ६ | २ | २१ |
| ४५३ | नपातोदुर्गहस्यमे | ६ | ४ | ४७ |
| ४५० | नपापासोमनामहे | ६ | ४ | ३८ |
| २६ | नपूषणंमेथामसि | १ | ३ | २५ |
| २५४ | नपंचभिर्दशभिर्व | ४ | २ | ३ |
| ४८६ | नप्तीभिर्योविवस्वतः | ६ | ८ | ३ |
| २३३ | नप्रमियेसवितुर्दैव्यस्य | ३ | ८ | ५ |
| ६२३ | नभोजामम्रुर्नन्यर्थमी | ८ | ६ | ४ |
| ३२० | नमइदुग्रंनमआविवासे | ४ | ८ | १२ |
| १४० | नमइन्द्रेणसख्यं | २ | ६ | २२ |
| ६०२ | नमत्स्त्रीसुभसत्तरा | ८ | ४ | २ |
| ४८५ | नमसेदुपसीदत | ६ | ७ | ३७ |
| ४६१ | नमस्तेअग्नओजसे | ६ | ५ | २५ |
| १६० | नमस्यतहव्यदातिंस्व | २ | ८ | १८ |
| १०३ | नमागरंनद्योमातृतमा | २ | ३ | १ |
| १४८ | नमातमन्नश्रमन्नोत | २ | ७ | १३ |
| ५६३ | नमामिमेथर्नाजहीळ | ७ | ८ | ३ |
| ६३६ | नमृत्युरासीदमृतंनत | ८ | ७ | १७ |
| ११६ | नमृषाश्रान्तंयदवन्ति | २ | ४ | २२ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ६१ | नमोदिवेबृहतेरोदसी | २ | १ | [illegible] |
| १५ | नमोमहद्भ्यो | १ | २ | [illegible] |
| ५६६ | नमोमित्रस्यवरुणस्य | ७ | ८ | [illegible] |
| ४३१ | नमोवाकेप्रस्थितेअध्व | ६ | ३ | [illegible] |
| १४७ | नमःपुरातेवरुणोत | २ | ७ | [illegible] |
| ३२८ | नयईषन्तेजनुषोयानु | ५ | १ | [illegible] |
| ४२६ | नयजमानरिष्यसि | ६ | २ | [illegible] |
| १५६ | नयत्परोनान्तरः | २ | ८ | [illegible] |
| ५४६ | नयत्पुराचक्रमाकद्धनू | ७ | ६ | [illegible] |
| ३१२ | नयसीद्वतिद्विषः | ४ | ७ | [illegible] |
| ४५६ | नयस्यतेशवसान | ६ | ५ | [illegible] |
| ६२ | नयस्यदेवादेवतानम | १ | ७ | १० |
| ३३ | नयस्यद्यावापृथिवीअ | १ | ४ | [illegible] |
| ६०६ | नयस्यद्यावापृथिवीन | ८ | ४ | [illegible] |
| २१३ | नयस्यवर्ताजनुषान्व | ३ | ६ | ४ |
| २०४ | नयस्यसातुर्जनितोर | ३ | ५ | [illegible] |
| १५४ | नयस्येन्द्रोवरुणोनमि | २ | ८ | [illegible] |
| ३४८ | नयातवइन्द्रजूजुवुर्नः | ५ | ३ | [illegible] |
| ४५६ | नयुष्मेवाजबन्धवः | ६ | ५ | [illegible] |
| १६ | नयेदिवःपृथिव्याअन्तं | १ | ३ | [illegible] |
| ४६ | नयोरुपब्दिरश्व्यः | १ | ५ | [illegible] |
| ६६ | नयोवरायमरुतामिव | २ | २ | [illegible] |
| ३०२ | नयंजरन्तिशरदोनमा | ४ | ६ | [illegible] |
| १४ | नयंदिप्सन्तिदिप्सवः | १ | २ | [illegible] |
| ४५४ | नयंदुध्रावरन्तेनस्थिरा | ६ | ४ | [illegible] |
| ९९ | नयंरिपवोनरिषण्यवो | २ | २ | [illegible] |
| ४०८ | नयंविविक्तोरोदसी | ६ | १ | [illegible] |
| ३९५ | नयंशुक्रोनदुराशीः | ५ | ७ | [illegible] |
| ३०७ | नयंहिंसंतिधीतयोन | ४ | ७ | [illegible] |

| पृष्ठांक· | | अष्ट· | अ· | वर्ग· |
|---|---|---|---|---|
| ३०० | नुमआवाचमुपयाहि | ४ | ६ | १२ |
| ४२० | नूअन्यत्राचिदद्रिपः | ६ | २ | १७ |
| ८८ | नूइत्थातेपूर्वथाचप्रवा | २ | १ | २१ |
| ३५१ | नूइन्द्ररायेवरिवस्कृधी | ५ | ३ | ११ |
| ३४६ | नूइन्द्रसूरस्तवमानऊ | ५ | २ | ३० |
| ३०६ | नूगृणानोगृणतेप्रत्न | ४ | ७ | ११ |
| ६० | नूचपुराचसदनंरयी | १ | ७ | ४ |
| ३४७ | नूचित्सभ्रेषतेजनो | ५ | ३ | २ |
| ३६ | नूचित्सहोजाअमृतो | १ | ४ | २३ |
| ३५१ | नूचिन्नइन्द्रोमघवास | ५ | ३ | ११ |
| ३४८ | नूचिन्नुतेमन्यमानस्य | ५ | ३ | ६ |
| २५६ | नूतआभिरभिष्टिभिः | ४ | २ | ९ |
| १३१ | नूतेपूर्वस्यावसोअधि | २ | ५ | २५ |
| ४१७ | नूत्वाइदिन्द्रतेवयं | ६ | २ | २ |
| ३४० | नूत्वामग्नईमहेवसिष्ठाः | ५ | २ | १० |
| ३४० | नूत्वामग्नईमहेवसिष्ठाः | ५ | २ | ११ |
| ३६३ | नूदेवासोवरिवःकर्त | ५ | ४ | १५ |
| २४६ | नूनइद्धिवार्यमासा | ४ | १ | ६ |
| ३३० | नूनइन्द्रावरुणागृणा | ५ | १ | १२ |
| २४५ | नूनएहिवार्यमग्ने | ४ | १ | ८ |
| ४१६ | नूनमर्चविहायसे | ६ | २ | १३ |
| ४८४ | नूनव्यसेनवीयसे | ६ | ७ | ३३ |
| २९० | नूनश्चित्रंपुरुवाजाभि | ४ | ५ | १२ |
| ५२९ | नूनस्त्वंरथिरोदेवसोम | ७ | ४ | २० |
| २४३ | नूनोअग्नऊतये | ४ | १ | २ |
| २८७ | नूनोअग्नेवृकेभिःस्वस्ति | ४ | ५ | ६ |
| ३७७ | नूनोगोमद्वीरवद्धेहि | ५ | ५ | २२ |
| ५२४ | नूनोरयिमुपमास्वनृव | ७ | ४ | ३ |
| २२९ | नूनोरयिंपुरुवीरंबृहन्तं | ३ | ७ | २० |

| पृष्ठांक· | | अष्ट· | अ· | वर्ग· |
|---|---|---|---|---|
| ४९४ | नूनोरयिंमहामिन्दो | ६ | ८ | ३० |
| ३१८ | नूनोरयिंरथ्यंचर्षणि | ४ | ८ | ७ |
| १६७ | नूनोरास्वसहस्र | ३ | १ | १३ |
| ४०९ | नूनंतदिन्द्रदद्धिनः | ६ | १ | ७ |
| ३०७ | नूनंनइन्द्रापराय | ४ | ७ | ५ |
| ५३५ | नूनंपुनानोविभिः | ७ | ५ | १२ |
| १३५ | नूनंसातेप्रतिवरं | २ | ६ | ६ |
| १३६ | नूनंसातेप्रतिवरं | २ | ६ | १८ |
| १३९ | नूनंसातेप्रतिवरंजरि | २ | ६ | २० |
| १४० | नूनंसातेप्रतिवरंज | २ | ६ | २२ |
| १४१ | नूनंसातेप्रतिवरंज | २ | ६ | २४ |
| १४१ | नूनंसातेप्रतिवरंजरि | २ | ६ | २६ |
| १३८ | नूनंसातेप्रतिरंजरित्रे | २ | ६ | १६ |
| २६७ | नूमन्वानएषां | ४ | ३ | १० |
| ३८६ | नूमर्तोदयतेसनिष्यन् | ५ | ६ | २५ |
| ३७० | नूमित्रोवरुणोअर्यमा | ५ | ५ | ४ |
| ३७१ | नूमित्रोवरुणोअर्यमा | ५ | ५ | [illegible] |
| ४६६ | नूमेगिरोनासत्या | ६ | ६ | ८ |
| ३३६ | नूमेब्रह्माण्यग्नउच्छशा | ५ | १ | २६ |
| ३३६ | नूमेब्रह्माण्यग्नउच्छशा | ५ | १ | २७ |
| ३७३ | नूमेहवमाशृणुतंयुवाना | ५ | ५ | १३ |
| ३७४ | नूमेहवमाशृणुतंयुवाना | ५ | ५ | १६ |
| ३५९ | नूरोदसीअभिष्टुतेव | ५ | ४ | ६ |
| ३६० | नूरोदसीआभिष्टुतेव | ५ | ४ | [illegible] |
| २३४ | नूरोदसीअहिनाबुध्न्ये | ३ | ८ | [illegible] |
| २३४ | नूरोदसीबृहद्भिर्नोवरू | ३ | ८ | [illegible] |
| २१० | नूष्टुतइन्द्रनूगृणानः | ३ | ५ | [illegible] |
| २११ | नूष्टुतइन्द्रनूगृणानः | ३ | ५ | [illegible] |
| २१३ | नूष्टुतइन्द्रनूगृणानः | ३ | २ | [illegible] |

# प

# ब

# म

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| २२८ | मन्नूहिष्मागच्छथईव | ३ | ७ | १६ |
| १७६ | मखस्यतेतविषस्यप्रजू | ३ | २ | १५ |
| ४८३ | मघोनआपवस्वनः | ६ | ७ | ३१ |
| ३५३ | मघोनःस्मवृत्रहत्येषुचो | ५ | ३ | १६ |
| १८४ | मतयःसोमपामुरुं | ३ | ३ | ३ |
| ४९६ | मतीजुष्टोधियाहितः | ७ | १ | १ |
| ११८ | मत्सिनोवस्यइष्टये | २ | ४ | १६ |
| ५२९ | मत्सिवायुमिष्टये | ७ | ४ | १९ |
| ५२३ | मत्सिसोमवरुणं | ७ | ३ | २६ |
| ५२९ | मत्सिवायुमिष्टये | ७ | ४ | १९ |
| ११७ | मत्स्यपायितेमहः | २ | ४ | १८ |
| ४ | मत्स्वासुशिप्रमन्दि | १ | १ | १७ |
| ४७५ | मत्स्वासुशिप्रहारिवस्त | ६ | ७ | ३ |
| ९८ | मथीद्यदींविष्टो | २ | २ | १७ |
| ४४ | मथीद्यदींविभृतो | १ | ५ | १५ |
| ४८५ | मदच्युत्क्षेतिसादने | ६ | ७ | ३८ |
| ३९४ | मदेनेषितंमद | ५ | ७ | १४ |
| ४९ | मदेमदेहिनो | १ | ६ | २ |
| ५५ | मधुनक्तमुतोषसो | १ | ६ | १८ |
| ३३१ | मधुनोद्यावापृथिवीमि | ५ | १ | १४ |
| ५२२ | मधुपृष्ठंघोरमयास | ७ | ३ | २५ |
| २३५ | मधुमतीरोषधीर्द्यावआ | ३ | ८ | ९ |
| ६ | मधुमन्तंतनूनपात् | १ | १ | २४ |
| ५५६ | मधुमन्मेपरायणं | ७ | ७ | १० |
| ५५ | मधुमान्नोवनस्पति | १ | ६ | १८ |
| ५५ | मधुवाताऋतायते | १ | ६ | १८ |
| ४८७ | मधोर्धारामनुक्षर | ६ | ८ | ७ |
| ५८२ | मध्यायत्कर्त्वमभवत् | ८ | १ | २७ |
| २९१ | मध्येहोतादुरोणेबर्हि | ४ | ५ | १४ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| २७७ | मध्वऊषुमधूयुवा | ४ | ४ | १ |
| ३६७ | मध्वोवोनाममारुतंयज | ५ | ४ | २ |
| २२९ | मध्वःपिबतंमधुपेभिरा | ३ | ७ | २ |
| ५२९ | मध्वःसूदंपवस्व | ७ | ४ | १ |
| ७५ | मध्वःसोमस्याश्विना | १ | ८ | १ |
| ६२५ | मनीषिणःप्रभरध्वं | ८ | ६ | १ |
| ५१६ | मनीषिभिःपवतेपूर्व्यः | ७ | ३ | १ |
| २४७ | मनुष्वत्त्वानिधीमहि | ४ | १ | १ |
| १८ | मनुष्वदग्नेअंगिरस्व | १ | २ | ३ |
| १७८ | मनुष्वदिन्द्रसवनंजुषा | ३ | २ | |
| ६०० | मनोअस्याअनआसी | ८ | ३ | २ |
| ४१८ | मनोजवसावृषणामद | ६ | २ | |
| ४७६ | मनोजवाअयमानः | ६ | ७ | |
| ५८२ | मनोनयेषुहवनेषु | ८ | १ | २ |
| ४४ | मनोनयोऽध्वनः | १ | ५ | १ |
| ५८० | ममोन्वाहुवामहे | ८ | १ | १ |
| ३५३ | मन्त्रमखर्वंसुधितंसुपश | ५ | ३ | १ |
| १७४ | मन्थतानरःकविमद्वय | ३ | १ | ३ |
| ५९३ | मन्दमानऋतादधि | ८ | ३ | |
| ३९८ | मन्दन्तुत्वामघवन्निन्द्रे | ५ | ७ | ३ |
| ८६ | मन्दन्तुत्वामन्दिनो | २ | १ | २ |
| १५३ | मन्दस्वहोत्रादनुजोषम | २ | ८ | |
| ४०२ | मन्दस्वासुस्वर्णर | ५ | ८ | १ |
| ८१ | मन्दामहेदशतयस्य | २ | १ | |
| ३२ | मन्दिष्टयदुशनेकाव्येस | १ | ४ | १ |
| ९६ | मन्द्रजिह्वाजुगुर्वणी | २ | २ | १ |
| ४८२ | मन्द्रयासोमधारया | ६ | ७ | २ |
| ३०९ | मन्द्रस्यकवेर्दिव्यस्य | ४ | ७ | १ |
| ५०८ | मन्द्रस्यरूपंविविदुः | ७ | २ | २ |

# य

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| २८१ | युंजतेमनउतयुंजतेधि | ४ | ४ | २४ |
| ३ | युंजन्तिब्रध्नमरुषं | १ | १ | ११ |
| ४७५ | युञ्जन्तिहरीइषिरस्य | ६ | ७ | २ |
| ३ | युंजन्त्यस्यकाम्या | १ | १ | ११ |
| ४६६ | युंजाथांरासभंरथे | ६ | ६ | ८ |
| ४१६ | यूनऊषुनविष्ठया | ६ | १ | ३९ |
| १०५ | यूपव्रस्काउतयेयूपवा | २ | ३ | ८ |
| २२४ | यूयमस्मभ्यंधिषणा | ३ | ७ | ८ |
| २६९ | यूयमस्मान्नयतवस्यो | ४ | ३ | १८ |
| ३०५ | यूयंगावोमेदयथाकृशं | ४ | ६ | २५ |
| ५२ | यूयंतत्सत्यशवसः | १ | ६ | १२ |
| १४७ | यूयंदेवाःप्रमतिर्यूय | २ | ७ | ११ |
| ५९६ | यूयंधूर्षुप्रयुजोन | ८ | ३ | १० |
| ११२ | यूयंनउग्रामरुतः | २ | ४ | २ |
| २७३ | यूयंमर्त्तंविपन्यवः | ४ | ३ | २८ |
| २६९ | यूयंरयिंमरुतस्पार्हवीरं | ४ | ३ | १६ |
| २७१ | यूयंराजानमिर्यंजनाय | ४ | ३ | २३ |
| ४१५ | यूयंराजानःकंचिच्चर्ष | ६ | १ | ३५ |
| ६३५ | यूयंविश्वंपरिपाथ | ८ | ७ | १३ |
| ३५८ | यूयंहरत्नंमघवत्सुधत्थ | ५ | ४ | ३ |
| २३२ | यूयंहिदेवीर्ऋतयुग्भिर | ३ | ८ | १ |
| ३२० | यूयंहिष्ठासुदानवः | ४ | ८ | १३ |
| ४०३ | यूयंहिष्ठासुदानवो | ५ | ८ | २० |
| ४६५ | यूयंहिष्ठासुदानवः | ६ | ६ | ४ |
| ३२८ | येअग्नयोनशोशुचन्निं | ५ | १ | ७ |
| ५५० | येअग्निदग्धायेअनग्नि | ७ | ६ | १९ |
| २४३ | येअग्नेचन्द्रतेगिरः | ४ | १ | २ |
| २४७ | येअग्नेनेरयन्तिते | ४ | १ | १२ |
| ५८४ | येअग्नेःपरिजज्ञिरे | ८ | २ | २ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| १०९ | येअर्वाचस्ताँउपराच | २ | ३ | १७ |
| २२३ | येअश्विनायेपितरायऊ | ३ | ७ | ४ |
| २६७ | येअञ्जिषुयेवाशीषु | ४ | ३ | ११ |
| २६७ | येऋष्वाऋष्टिविद्युतः | ४ | ३ | १० |
| १२६ | येअस्यायेआंग्याः | २ | ५ | १५ |
| ३२१ | येकेचज्मामहिनोआहि | ४ | ८ | १६ |
| ३१४ | येगव्यतामनसाशत्रुमा | ४ | ७ | २८ |
| २२३ | येगोमन्तंवाजवन्तंसु | ३ | ७ | ४ |
| ३४८ | येचपूर्वऋषयोयेचनू | ५ | ३ | ६ |
| २५३ | येचाकनन्तचाकनंतनू | ४ | १ | ३१ |
| ४१६ | येचार्हन्तिमरुतःसुदा | ६ | १ | ३९ |
| ६४७ | येचित्पूर्वऋतसापः | ८ | ८ | १२ |
| ३० | येचिद्धित्वामृषयःपूर्वे | १ | ४ | ५ |
| ११९ | येचिद्धिपूर्वऋतसाप | २ | ४ | २२ |
| ४१३ | येचिद्धिमृत्युबन्धवः | ६ | १ | २८ |
| ५५० | येचेहपितरोयेच | ७ | ६ | १९ |
| ५५० | येतातृपुर्देवत्रा | ७ | ६ | १८ |
| २३३ | येतेत्रिरहन्त्सवितःस | ३ | ८ | ५ |
| ५०० | येतेपवित्रमूर्मयो | ७ | १ | १८ |
| २१ | येतेपंथाःसवितः | १ | ३ | ७ |
| ५७६ | येतेविप्रब्रह्मकृतः | ८ | १ | ६ |
| ११८ | येतेवृषणोवृषभासइन्द्र | २ | ४ | २० |
| २२८ | येतेशुक्रासःशुचयःशु | ४ | ५ | ८ |
| १७८ | येतेशुष्मंयेतविषीमवर्ध | ३ | २ | ९ |
| ३८७ | येतेसरस्वऊर्मयो | ५ | ६ | २० |
| ३९३ | येतेसन्तिदशग्विनः | ५ | ७ | १ |
| ४२५ | योत्रिंशतित्रयस्परो | ६ | २ | ३ |
| १२६ | येत्वादेवोस्रिकं | २ | ५ | १ |
| ४०१ | येत्वामिन्द्रनतुष्टुवुः | ५ | ८ | १ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ३७५ | योवांरथोनृपतीअस्ति | ५ | ५ | १८ |
| ५८ | योविश्वतःसुप्रतीकः | १ | ६ | ३१ |
| ६३ | योविश्वस्यजगतः | १ | ७ | १२ |
| ४७९ | योविश्वादयतेवसु | ६ | ७ | १४ |
| ४२७ | योविश्वान्यभिव्रता | ६ | ३ | ६ |
| १९७ | योविश्वाभिविपश्यति | ३ | ४ | १० |
| ६५७ | योविश्वाभिविपश्यति | ८ | ८ | ४५ |
| १४८ | योवृत्रायसिनमत्रा | २ | ७ | १२ |
| ३९६ | योवेदिष्ठोअव्यथिषु | ५ | ७ | २१ |
| ३२१ | योवोदेवाघृस्नुना | ४ | ८ | १५ |
| ५६१ | योवोवृताभ्योअकृणो | ७ | ७ | २५ |
| ५४५ | योवःशिवतमोरसः | ७ | ६ | ५ |
| २२३ | योवःसुनोत्यभिपित्वे | ३ | ७ | ६ |
| ५६४ | योवःसेनानीर्महतो | ७ | ८ | ५ |
| ४५७ | योव्यँतीरफाणयत् | ६ | ५ | ७ |
| ६३ | योव्यंसंजाहृषाणेन | १ | ७ | १२ |
| १३५ | योहत्वाहिमरिणात् | २ | ६ | ७ |
| ४०० | योह्वांमधुनोदृतिः | ५ | ८ | ४ |
| ४१४ | योहव्यान्यैरयतामनु | ६ | १ | ३३ |
| ३७४ | योहस्यवांरशिरावस्त | ५ | ५ | १६ |
| ६०५ | योहोतासीत्प्रथमो | ८ | ४ | १० |
| ५४९ | यौतेश्वानौयमरक्षिता | ७ | ६ | १६ |
| ६३९ | यंकुमारनवंरथं | ८ | ७ | २३ |
| ६३९ | यंकुमारप्रावर्तयो | ८ | ७ | २३ |
| ६३२ | यंक्रन्दसीअवसा | ८ | ७ | ४ |
| १३५ | यंक्रंदसीसंयती | २ | ६ | ८ |
| ४६० | यंजनासोहविष्मन्तो | ६ | ५ | २१ |
| ४६५ | यंतेश्येनःपदाभरत् | ६ | ६ | २ |
| ६४३ | यंतेश्येनश्चारुमवृकं | ८ | ८ | २ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | व |
|---|---|---|---|---|
| ३६८ | यंत्रायध्वइदमिदं | ५ | ४ | [illegible] |
| ५५१ | यंत्वमग्नेसमदहः | ७ | ६ | [illegible] |
| ८६ | यंत्वंरथमिन्द्रमेधसा | २ | १ | [illegible] |
| ४५८ | यंत्वंविप्रमेधसातौ | ६ | ५ | [illegible] |
| ४६० | यंत्वागोपवनोगिरा | ६ | ५ | [illegible] |
| ४३६ | यंत्वाजनासइन्धते | ६ | ३ | [illegible] |
| ४६१ | यंत्वाजनासईळते | ६ | ५ | [illegible] |
| ५४२ | यंत्वाजनासोअभिसं | ७ | ५ | [illegible] |
| ५७३ | यंत्वादेवादधिरेहव्य | ८ | १ | [illegible] |
| ६१६ | यंत्वादेवापिःशुशुचा | ८ | ५ | [illegible] |
| २२ | यंत्वादेवासोमनवेदधु | १ | ३ | [illegible] |
| ५४२ | यंत्वाद्यावापृथिवीयं | ७ | ५ | [illegible] |
| ५९० | यंत्वापूर्वमीळितो | ८ | २ | [illegible] |
| ५१५ | यंत्वावाजिन्नघ्न्याअ | ७ | ३ | [illegible] |
| १६१ | यंदेवासस्त्रिरहन्नायज | २ | ८ | [illegible] |
| ६०५ | यंदेवासोजनयन्ताग्निं | ८ | ४ | [illegible] |
| ५६५ | यंदेवासोवथवाजसातौ | ७ | ८ | [illegible] |
| ५८५ | यंदेवासोवथवाजसातौ | ८ | २ | [illegible] |
| २१४ | यन्नइद्रोजुजुषे | ३ | ६ | [illegible] |
| ४०६ | यन्नासत्यापराके | ५ | ८ | [illegible] |
| २९ | यन्नासत्यापरावति | १ | ४ | [illegible] |
| ४०४ | यन्नासत्यापरावति | ५ | ८ | [illegible] |
| ४०५ | यन्नासत्याभुरण्यथो | ५ | ८ | [illegible] |
| ५५३ | यन्नियानंन्ययनं | ७ | ७ | [illegible] |
| १०५ | यन्निर्णिजारेक्णसाप्रा | २ | ३ | [illegible] |
| १०६ | यन्नीक्षणंमांस्पचन्या | २ | ३ | [illegible] |
| १८७ | यंनुकिःपृतनासु | ३ | ३ | [illegible] |
| २७४ | यन्नूनमश्यांगतिं | ४ | ४ | [illegible] |
| ४०६ | यन्नूनंधीभिरश्विना | ५ | ८ | [illegible] |

# र

# व

# श

# ष



# स

| क. | | अष्ट. | अ | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ० | सूर्यचक्षुर्गच्छतुवातं | ७ | ६ | २० |
| ८ | सूर्याचन्द्रमसौधाता | ८ | ८ | ४८ |
| ० | सूर्यायावहतुःप्रागात् | ८ | ३ | २२ |
| १ | सूर्यायैदेवेभ्यः | ८ | ३ | २३ |
| ६ | सूर्येविषमासजा | २ | ९ | १९ |
| ३ | सूर्योदेवीमुषसंरोचमा | १ | ८ | ७ |
| ८ | सूर्योनोदिवस्पातु | ८ | ८ | १६ |
| ७ | सूर्योरश्मिंयथासृजा | ६ | ३ | ९ |
| ३ | सृजन्तिरश्मिमोजसा | ९ | ८ | १९ |
| ९ | सृजःसिन्धूँरहिना | ८ | ६ | ११ |
| ४ | सृजोमहीरिन्द्रया | २ | ६ | ३ |
| २ | सृण्येवजर्भरीतुर्फरीतू | ८ | ६ | २ |
| ९ | सेदग्निरग्नीरत्यस्त्व | ९ | १ | २९ |
| ९ | सेदग्निर्योवनुष्यतोनि | ५ | १ | २९ |
| २ | सेदग्नेअस्तुसुभगः | ३ | ४ | २४ |
| ० | सेदुग्रोअस्तुमरुतःसशु | ९ | ४ | ७ |
| ५ | सेद्दभवोयमवथ | ३ | ७ | १० |
| २ | सेनेवसृष्टामंदधा | १ | ९ | १० |
| ८ | सेमन्नःकाममापृण | १ | १ | ३१ |
| ८ | सेमन्नःस्तोममागहि | १ | १ | ३० |
| ४ | सेमामाविड्डिप्रभृतिं | २ | ७ | १ |
| ३ | सेमांवेतुवषट्कृति | ९ | २ | १६ |
| २ | सेहानउग्रपृतनाअभि | ६ | ३ | १९ |
| ३ | सैनानीकेनसुवि | २ | ६ | १२ |
| ९ | सोअग्नईजेशशमेचम | ४ | ४ | ३६ |
| ९ | सोअग्नएनानमसास | ९ | ६ | १६ |
| १ | सोअग्निर्योवसुगृणे | ३ | ८ | २२ |
| ० | सोअग्नेअह्नांहरिः | ७ | ३ | २० |
| ४ | सोअद्धादाशवध्वरो | ६ | १ | ३० |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| १४० | सोअप्रतीनिमनवे | ६ | २ | २३ |
| ६१७ | सोअभ्रियोनयवसः | ८ | ९ | १५ |
| ३९ | सोअर्णवोननद्यः | १ | ४ | १९ |
| ९०१ | सोअर्षेन्द्रायपीतये | ७ | १ | २९ |
| ६१३ | सोअस्यवज्रोहारितो | ८ | ५ | ९ |
| ५१९ | सोअस्याविशेमहिशर्म | ७ | ३ | १४ |
| १४१ | सोअंगिरसामुचथा | २ | ६ | २९ |
| ६१ | सोअंगिरोभिरंगिरस्त | १ | ७ | ८ |
| ९४७ | सोचिन्नुभद्राक्षुमती | ७ | ६ | ९ |
| ९९६ | सोचिन्नुवृष्टिर्यूथ्या३ | ७ | ७ | ६ |
| ५७६ | सोचिन्नुसख्यानर्यइनः | ८ | १ | ६ |
| ३६४ | सोताहिसोममद्रिभिः | ५ | ७ | १३ |
| १३८ | सोदंचंसिंधुमरिणान | २ | ६ | १६ |
| ४९४ | सोमइद्धःसुतोअस्तु | ६ | ४ | ९० |
| ९३९ | सोमउषुवाणःसोतृभिः | ७ | ९ | १३ |
| ६४७ | सोमएकेभ्यःपवते | ८ | ८ | १२ |
| ९५ | सोमगीर्भिष्ट्वा | १ | ६ | २१ |
| ३२३ | सोममन्यउपासदत् | ४ | ८ | २३ |
| २३१ | सोममिन्द्राबृहस्पती | ३ | ७ | २५ |
| ९९ | सोमयास्तेमयोभुवः | १ | ६ | २० |
| ४४३ | सोमराजन्मृळयानः | ६ | ४ | १२ |
| ९९ | सोमरारंधिनोहृदि | १ | ६ | २१ |
| ९१९ | सोमस्यधारापवतेनृ | ७ | ३ | ५ |
| १९८ | सोमस्यमातवसंवक्ष्यग्ने | २ | ८ | १३ |
| ४५९ | सोमस्यमित्रावरुणा | ६ | ९ | १७ |
| ६९१ | सोमस्यराज्ञोवरुणस्य | ८ | ८ | २९ |
| ९२८ | सोमंगावोधेनवः | ७ | ४ | १७ |
| ६०० | सोमंमन्यतेपपिवान् | ८ | ३ | २० |
| ६४२ | सोमंराजानमवसे | ८ | ७ | २९ |

# ह

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. | वर्ग. |
|---|---|---|---|---|
| ६२६ | हरित्वावर्चसासूर्यस्य | ८ | ६ | १२ |
| ६१४ | हरिश्मशारुर्हरिकेश | ८ | ५ | ६ |
| ५११ | हरिंमृजन्त्यरुषो | ७ | २ | २७ |
| ६१३ | हरिंहियोनिमभियेसम | ८ | ५ | ५ |
| ४२५ | हरिःसृजानःपथ्या | ७ | ४ | ५ |
| १४० | हरीनुकंरथइन्द्रस्य | २ | ६ | २१ |
| १३४ | हरीनुतइन्द्रवाजयन्ता | २ | ६ | ४ |
| ५५६ | हरीन्वस्ययावने | ७ | ७ | ९ |
| ६२१ | हरीयस्यसुयुजाविव्रता | ८ | ५ | २६ |
| १८५ | हर्यन्नुषसमर्चयः | ३ | ३ | ८ |
| ४१७ | हर्यश्वंसत्पतिंचर्षणीस | ६ | २ | २ |
| ५९४ | हवएषामसुरोनक्षतद्यां | ८ | ३ | ५ |
| ३५१ | हवंतइन्द्र | ५ | ३ | १२ |
| ३५२ | हवंतउत्वाहव्यंविवा | ५ | ३ | १४ |
| ५१६ | हविर्हविष्मोमहि | ७ | ३ | ८ |
| २८ | हविषाजारोअपां | १ | ३ | ३३ |
| ४५६ | हविष्कृणुध्वमागमत् | ६ | ५ | १४ |
| ६०५ | हविष्पान्तमजरंस्वर्वि | ८ | ४ | १० |
| १५० | हवीमाभिर्हवतेयोहवि | २ | ७ | १६ |
| ४०९ | हवेत्वासूरउदिते | ६ | १ | ९ |
| २३६ | हव्यवाळग्निरजरः | ३ | ८ | १८ |
| १२ | हस्काराद्विद्युतस्पयतो | १ | २ | १० |
| ४८४ | हस्तच्युतेभिरद्रिभिः | ६ | ७ | ३६ |
| ६४० | हस्ताभ्यांदशशाखा | ८ | ७ | २५ |
| ४२ | हस्तेदधानोनृम्णा | १ | ५ | ११ |
| ६२४ | हस्तेनैवग्राह्यआधिर | ८ | ६ | ७ |
| १५५ | हस्तेवशक्तिमभिसन्द | २ | ८ | ५ |
| ४३० | हारिद्रवेवपतथोवनेदुप | ६ | ३ | १५ |
| ५१० | हितोनसप्तिरभि | ७ | २ | १४ |

| पृष्ठांक. | | अष्ट. | अ. |
|---|---|---|---|
| ५६१ | हिनोतानोअध्वरं | ७ | ७ |
| ४८४ | हिन्वानासोरथाइव | ६ | ७ |
| ५०४ | हिन्वानोवाचमिष्यति | ७ | १ |
| ५०४ | हिन्वानोहेतृभिर्यतः | ७ | १ |
| ५०४ | हिन्वंतिसूरमुस्रयः | ७ | २ |
| ४०७ | हिन्वंतिसूरमुस्रयःपव | ७ | २ |
| ७४ | हिमेनाग्निंघ्रंसमवारये | १ | ८ |
| ५६० | हिमेवपर्णामुषिताव | ८ | २ |
| ८१ | हिरण्यकर्णंमणिग्रीव | २ | १ |
| ४७ | हिरण्यकेशोरजसो | १ | ५ |
| ६३२ | हिरण्यगर्भःसमवर्तता | ८ | ७ |
| २७९ | हिरण्यत्वङ्मधुवर्णोघृ | ४ | ४ |
| २३८ | हिरण्यदन्तंशुचिवर्णं | ३ | ८ |
| २७५ | हिरण्यनिर्णिगयोअ | ४ | ३ |
| ११ | हिरण्यपाणिमूतये | १ | २ |
| २१ | हिरण्यपाणिःसविता | १ | ३ |
| १९१ | हिरण्यपाणिःसविता | ३ | ३ |
| ६५६ | हिरण्ययीअरणीयं | ८ | ८ |
| ४०० | हिरण्ययीवांरभिः | ५ | ८ |
| २२६ | हिरण्ययेनपुरुभू | ३ | ७ |
| ४०० | हिरण्ययेनरथेन | ५ | ८ |
| ४१ | हिरण्ययेभिःपविभिः | १ | ५ |
| २७४ | हिरण्यरूपमुषसोव्यु | ४ | ३ |
| १५२ | हिरण्यरूपःसहिरण्य | २ | ७ |
| १०७ | हिरण्यशृंगोयोअस्य | २ | ३ |
| ६४५ | हिरण्यस्तूपःसवितर्य | ८ | ८ |
| ७७ | हिरण्यहस्तमश्विनारा | १ | ८ |
| २१ | हिरण्यहस्तोअसुरः | १ | ३ |
| १०६ | हिङ्कृण्वतीवसुपत्नी | २ | ३ |

# क्ष



# ज्ञ



इति

# वैदिकयन्त्रालय अजमेर को विक्रय पुस्तकों का सूचीपत्र व बेचने के नियम ॥

( १ ) सब पुस्तकें रोक दाम पेशगी भेजने पर या वी. पी. द्वारा भेजी जावेंगी ( २ ) वेदों पर ( जिल्द की कीमत व सुनहरी वेदों को छोड़ ) ४ सेट पर २०) १० पर ) और १०० पर ३०) सैकड़ा और शेष सब पुस्तकों पर १०) रुपये वा इस से अधिक पुस्तक मंगवाने वालों को २० ) रु० सैकड़े के हिसाब से कमीशन के पुस्तक अधिक भेजे गे अर्थात् १०) में १२) की पुस्तकें, १००) रोक भेजने पर १२०) की पुस्तकें भेजी गी ( ३ ) १००) से ऊपर के खरीददारों को कमीशन अधिक दिया जावेगा ( ४ ) मह- पूरे ऋग्वेदभाष्य और यजुर्वेदभाष्य को छोड़ सब पुस्तकों का अलग लिया जावेगा— कर भाष्य के अङ्कों का भी ( ५ ) बिके हुए पुस्तक वापिस न लिये जावेंगे ( ६ ) बड़ा पत्र मंगवाने के लिये और अन्य पत्र और मूल्य आदि नीचे लिखे पते से भेजें ॥

| | मूल्य. | डा. |
|---|---|---|
| दभाष्य अङ्क १ से २७२½ | ५४) | |
| मंडल | | |
| । १ के ४ अ० तक | ६।।।) | |
| १ के ५ से ८ अ० तक | ६।=) | |
| १ के दूसरे अष्टक से | | |
| १ के अन्त तक | ६।।-) | |
| २ के अन्त तक | ४-) | |
| ३ के अन्त तक | ५।।=) | |
| ४ के अन्त तक | ५।।≡) | |
| ५ के अन्त तक | ६।।≡) | |
| ६ के अन्त तक | ७।=) | |
| ७ के ५ वें अष्टक के | | |
| ५ वें अ० से ३ रे वर्ग | | |
| के २ रे मंत्र तक | ४।।।=) | |
| द का आगे का शेष मूल भाग | १) | |
| दभाष्य का नमूना | )।। | )।। |

| | मूल्य. | डा. |
|---|---|---|
| यजुर्वेदभाष्य सम्पूर्ण | २४) | |
| भाग अ० से अ० तक | | |
| १ला १ से १० तक | ६।=) | |
| २रा ११ से २० तक | ६) | |
| ३रा २१ से ३० तक | ५।) | |
| ४था ३१ से ४० तक | ३।=) | |
| **चारों मूलवेद :—** | | |
| बढ़िया कागज पर स्वर्णाक्षरों में | | |
| अति उत्तम अतलस की सुजिल्द | २५) | ।।≡) |
| बढ़िया कागज पर बिना जिल्द | ५।।) | ।।)।। |
| साधारण कागज पर बिना जिल्द | ५) | ।≡)।। |
| बढ़िया जिल्द के २) अलग | | |
| साधारण जिल्द के १।) अलग | | |
| चारोंवेदों की अनुक्रमणिका | १।।) | =)।। |
| शतपथ ब्राह्मण सम्पूर्ण | ३।।) | |
| ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका | २।।) | ≡) |

| | मूल्य. | डा. |
|---|---|---|
| ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका सजिल्द | ३) | ।) |
| वेदाङ्गप्रकाश सम्पूर्ण (१४भाग) | ५॥≡)॥ | ।≡)॥ |
| वेदाङ्गप्रकाश का ब्यौरा:— | | |
| वर्णोच्चारण शिक्षा | -) | )॥ |
| सन्धिविषय | ।≡) | )॥ |
| नामिक | ।=) | )॥ |
| कारकीय | ।) | )॥ |
| सामासिक | ।=) | )॥ |
| स्त्रैणताद्धित | १) | -) |
| अव्ययार्थ | =)॥ | )॥ |
| सौवर | =)॥ | )॥ |
| आख्यातिक | १।=) | =)॥ |
| पारिभाषिक | ≡)॥ | )॥ |
| धातुपाठ | ।≡) | )॥ |
| गणपाठ | ।-) | )॥ |
| उणादिकोष | ॥) | -) |
| निघण्टु | ।=) | )॥ |
| निरुक्त | १) | -)॥ |
| अष्टाध्यायीमूल | ।-) | )॥ |
| संस्कृतवाक्यप्रबोध | ≡) | )॥ |
| व्यवहारभानु | ≡) | )॥ |
| हवनमन्त्र | )॥ | )॥ |
| भ्रमोच्छेदन | )॥। | ॥ |
| अनुभ्रमोच्छेदन | )॥। | )॥ |
| शास्त्रार्थ मेला चांदापुर नागरी | -) | )॥ |
| शास्त्रार्थ मेला चांदापुर उर्दू | -)॥ | )॥ |
| शास्त्रार्थ काशी | -) | )॥ |
| शास्त्रार्थ फीरोजाबाद | ≡) | )॥ |

| | मूल्य. |
|---|---|
| वेदविरुद्ध मतखण्डन | =) |
| वेदान्तिध्वान्तनिवारण नागरी | -) |
| वेदान्तिध्वान्तनिवारण अङ्गरेजी | -)॥ |
| आर्य्योद्देश्यरत्नमाला नागरी | -) |
| आर्य्योद्देश्यरत्नमाला मरहटी | -) |
| गोकरुणानिधि | -) |
| स्वामीनारायणमतखं० संस्कृत गुज. | -)। |
| स्वामीनारायणमतखं० सं० नागरी | -)॥ |
| स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश नागरी | )॥ |
| स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश अङ्गरेजी | )। |
| आर्य्याभिविनय | ।) |
| आर्य्याभिविनय सजिल्द | ।=) |
| भ्रान्तिनिवारण | -)। |
| पञ्चमहायज्ञविधि | ≡)॥ |
| पञ्चमहायज्ञविधि साधारण जिल्द | ।-)। |
| पञ्चमहायज्ञविधि बढ़िया जिल्द | ।=) |
| आर्य्यसमाज के नियमोपनियम | )। |
| सत्यार्थप्रकाश साधा० कागज नागरी | २) |
| सत्यार्थप्रकाश साधा० सजिल्द | ,, २॥) |
| सत्यार्थप्रकाश बढ़िया | ,, २॥) |
| सत्यार्थप्रकाश बढ़िया सजिल्द | ,, ३) |
| सत्यार्थप्रकाश बङ्ग भाषा में | १॥) |
| संस्कारविधि | १) |
| संस्कारविधि सजिल्द | १॥=) |
| स्वीकारपत्र | )। |

आर्य्यसमाज के नियम नागरी में ए
कार की स्याही में १) सैकड़ा, रङ्ग
स्याही में तथा सुनहरी २।) सैकड़ा, अ
में सफैद कागज पर ॥) सैकड़ा ॥

ओ३म्

# ॥ ऋग्वेदसंहिता ॥

ऋष्यादिसंवलिता ।

वैदिकयन्त्रालयस्थपण्डितैर्बहुसंहितानुसारेण

संशोधिता ।


अजमेरीय वैदिक यन्त्रालये

मुद्रिता

सृष्ट्यब्दाः १९७२९४९००१

सं० १९५७ वि०

॥ ओ३म् ॥

# ॥ ऋग्वेदः ॥

## ॥ संहितापाठः ॥

——:○:○*○:○:——

॥ १ ॥ १-६ मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ ष-
जः स्वरः ॥

॥ १ ॥ अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॒त्विज॑म् । होता॑रं रत्न॒धात॑मम् ॥ १ ॥
ग्निः पूर्वे॑भि॒र्ऋषि॑भि॒रीड्यो॒ नूत॑नैरु॒त । स दे॒वाँ एह व॑क्षति ॥ २ ॥ अ॒ग्निना॑ र॒यि-
श्नव॒त्पोष॑मे॒व दि॒वेदि॑वे । य॒शसं॑ वी॒रव॑त्तमम् ॥ ३ ॥ अग्ने॒ यं य॒ज्ञम॑ध्व॒रं वि॒श्वतः॑ प-
भूरसि॑ । स इद्दे॒वेषु॑ गच्छति ॥ ४ ॥ अ॒ग्निर्होता॑ क॒विक्र॑तुः स॒त्यश्चि॒त्रश्र॑वस्तमः ।
वो दे॒वेभि॒रा ग॑मत् ॥ ५ ॥ १ ॥ यद॒ङ्ग दा॒शुषे॒ त्वमग्ने॑ भ॒द्रं क॑रि॒ष्यसि॑ । तवेत्तं-
त्यम॑ङ्गिरः ॥ ६ ॥ उप॑ त्वाग्ने दि॒वेदि॑वे॒ दोषा॑वस्तर्धि॒या व॒यं । नमो॒ भर॑न्त॒ एम॑-
॥ ७ ॥ राज॑न्तमध्व॒राणां॑ गो॒पामृ॒तस्य॒ दीदि॑विम् । वर्ध॑मान॒ं स्वे दमे॑ ॥ ८ ॥ स
पि॒तेव॑ सू॒नवेऽग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व । सच॑स्वा नः स्व॒स्तये॑ ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ २ ॥ १-९ मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ देवता-१-३ वायुः । ४-६ इन्द्रवायू ।
-९ मित्रावरुणौ ॥ छन्दः-१, २ पिपीलिका मध्या निचृद् गायत्री । ६ निचृद्
यत्री । ३-५, ७-९ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २ ॥ वाय॒वा या॑हि दर्शते॒मे सोमा॒ अरं॑कृताः । तेषां॑ पाहि श्रु॒धी हव॑म् ॥१॥
यं उ॒क्थेभि॑र्जरन्ते॒ त्वामच्छा॑ जरि॒तारः॑ । सु॒तसो॑मा अह॒र्विदः॑ ॥ २ ॥ वायो॒ तव॑
ञ्च॒ती धेना॑ जिगाति दा॒शुषे॑ । उ॒रू॒ची सोम॑पीतये ॥ ३ ॥ इन्द्र॑वायू इ॒मे सु॒ता उप॒
योभि॒रा ग॑तम् । इन्द॑वो वामु॒शन्ति॒ हि ॥ ४ ॥ वाय॒विन्द्र॑श्च चेतथः सु॒ताना॑ वाजि-
वसू । तावा या॑त॒मुप॑ द्र॒वत् ॥ ५ ॥ ३ ॥ वाय॒विन्द्र॑श्च सु॒न्व॒त आ या॑त॒मुप॑ नि-
तम् । म॒क्ष्वि१॒॑त्था धि॒या न॑रा ॥ ६ ॥ मि॒त्रं हु॑वे पू॒तद॑क्षं॒ वरु॑णं च रि॒शाद॑सम् । धि-

यं घृताचीं साधन्ता ॥ ७ ॥ ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा । क्रतुं बृहन्त
शाथे ॥ ८ ॥ कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अपसम् ॥९॥

॥ ३ ॥ १-१२ मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ देवता-१-३ अश्विनौ । ४—६
७-९ विश्वे देवाः । १०-१२ सरस्वती ॥ छन्दः-२ निचृद् गायत्री । ४,
पिपीलिका मध्या निचृद् गायत्री । १, ३, ५-१०, १२ गायत्री ॥ षड्जः स्व

॥३॥ अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती । पुरुभुजा चनस्यतम् ॥
अश्विना पुरुदंससा नरा शवीरया धिया । धिष्ण्या वनतं गिरः ॥ २ ॥ दस्रा युवा
सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः । आ यातं रुद्रवर्तनी ॥ ३ ॥ इन्द्रा याहि चित्रभानो
इमे त्वायवः । अण्वीभिस्तना पूतासः ॥ ४ ॥ इन्द्रा याहि धियेषितो विप्र
सुतावतः । उप ब्रह्माणि वाघतः ॥ ५ ॥ इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि ह
। सुते दधिष्व नश्चनः ॥ ६ ॥ ५ ॥ ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ
दाश्वांसो दाशुषः सुतम् ॥ ७ ॥ विश्वे देवासो अप्तुरः सुतमा गन्त तूर्णयः ।
इव स्वसराणि ॥ ८ ॥ विश्वे देवासो अस्रिध एहिमायासो अद्रुहः । मेधं जु
वन्हयः ॥ ९ ॥ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धिया
॥ १० ॥ चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनां । यज्ञं दधे सरस्वती ॥ १
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति ॥१२॥६।

॥ ४ ॥ १-१० मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-३ विराड्
यत्री । १० निचृद् गायत्री । १, २, ४-९ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४ ॥ सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे । जुहूमसि द्यविद्यवि ॥
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब गोदा इद्रेवतो मदः ॥ २ ॥ अथ
अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् । मा नो अति ख्य आ गहि ॥ ३ ॥ प
विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम् । यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥ ४ ॥ उत ब्रुवन्तु
निदो निरन्यतश्चिदारत । दधाना इन्द्र इद्दुवः ॥ ५ ॥७॥ उत नः सुभगाँ अरि
चेयुर्दस्म कृष्टयः । स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ॥६॥ एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृ
दनम् । पतयन्मन्दयत्सखम् ॥ ७ ॥ अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः । प्र
वाजेषु वाजिनम् ॥ ८ ॥ तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो । धनाना
सातये ॥ ९ ॥ यो रायो३ वनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा । तस्मा इन्द्राय ग
॥ १० ॥ ८ ॥

॥ ५ ॥ १–१० मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ विराड् गायत्री । ३ पिपीलिकामध्या निचृद् गायत्री । ५–७, ९ निचृद् गायत्री । ८ पादनिचृद् गायत्री । २ आर्च्युष्णिक् । ४, १० गायत्री ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ ५ ॥ आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत । सखायः स्तोमवाहसः ॥१॥ पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् । इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥ २ ॥ स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरन्ध्याम् । गमद्वाजेभिरा स नः ॥ ३ ॥ यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः । तस्मा इन्द्राय गायत ॥४॥ सुतपाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये । सोमासो दध्याशिरः ॥ ५ ॥ ९ ॥ त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः । इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ॥ ६ ॥ आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः । शं ते सन्तु प्रचेतसे ॥ ७ ॥ त्वां स्तोमा अवीवृधन्त्वामुक्था शतक्रतो । त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥ ८॥ अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम् । यस्मिन्विश्वानि पौंस्या ॥ ९ ॥ मा नो मर्ता अभि द्रुहन्तनूनामिन्द्र गिर्वणः । ईशानो यवया वधम् ॥ १० ॥ १० ॥

॥ ६ ॥ १–१० मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ देवता–१–३ इन्द्रः । ४, ६, ८, ९, मरुतः । ५, ७ मरुत इन्द्रश्च । १० इन्द्रः ॥ छन्दः–२ विराड् गायत्री । ४, ८ निचृद् गायत्री । १, ३, ५–७, ९, १० गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६ ॥ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥ १ ॥ युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥ २ ॥ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥ ३ ॥ आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे । दधाना नाम यज्ञियम् ॥ ४ ॥ वीळु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः । अविन्द उस्रिया अनु ॥ ५ ॥ ११ ॥ देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः । महामनूषत श्रुतम् ॥ ६ ॥ इन्द्रेण सं हि दृक्षसे सञ्जग्मानो अबिभ्युषा । मन्दू समानवर्चसा ॥ ७ ॥ अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति । गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥ ८ ॥ अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि । समस्मिन्नृञ्जते गिरः ॥९॥ इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि । इन्द्रं महो वा रजसः ॥ १० ॥ १२ ॥

॥ ७ ॥ १–१० मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–२, ४ निचृद्गायत्री । ८, १० पिपीलिकामध्या निचृद् गायत्री । ९ पादनिचृद् गायत्री । १, ३, ५–७ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७ ॥ इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः । इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ १ ॥ इन्
इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा । इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ २ ॥ इन्द्रो दीर्घा
चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि । वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥ ३ ॥ इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्र
प्रधनेषु च । उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥४॥ इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे । यु
वृत्रेषु वज्रिणम् ॥ ५॥ १३ ॥ स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि । अस्मभ्य
मप्रतिष्कुतः ॥ ६ ॥ तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः । न विन्धे अस्
सुष्टुतिम् ॥ ७ ॥ वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा । ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥८
य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति । इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ ९ ॥ इन्द्रं वो विश्
तस्परि हवामहे जनेभ्यः । अस्माकमस्तु केवलः ॥ १० ॥ १४ ॥ २ ॥

॥ ८ ॥ १–१० मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ५, ८, नि
चृद् गायत्री । २ प्रतिष्ठा गायत्री । १० वर्धमाना गायत्री । ३, ४, ६, ७, ९ गायत्री
षड्जः स्वरः ॥

॥ ८ ॥ एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् । वर्षिष्ठमूतये भर ॥ १
नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै । त्वोतासो न्यर्वता ॥ २ ॥ इन्द्र त्व
तास आ वयं वज्रं घना ददीमहि । जयेम सं युधि स्पृधः ॥ ३ ॥ वयं शूरेभि
रस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयं । सासह्याम पृतन्यतः ॥ ४ ॥ महाँ इन्द्रः परश्च
महित्वमस्तु वज्रिणे । द्यौर्न प्रथिना शवः ॥ ५ ॥ १५ ॥ समोहे वा य आश
नरस्तोकस्य सनितौ । विप्रासो वा धियायवः ॥ ६ ॥ यः कुक्षिः सोमपात
समुद्र इव पिन्वते । उर्वीरापो न काकुदः ॥ ७ ॥ एवा ह्यस्य सूनृता विरप्
गोमती मही । पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ८ ॥ एवा हि ते विभूतय ऊतय इ
मावते । सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥ ९ ॥ एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्य
इन्द्राय सोमपीतये ॥ १० ॥ १६ ॥

॥ ९ ॥ १–१० मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ३, ७, १० नि
गायत्री । ५, ६ पिपीलिकामध्या निचृद् गायत्री । २, ४, ८, ९ गायत्री ॥ षड्जः स्व

॥ ९ ॥ इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महाँ अभिष्टिरोज
॥ १ ॥ एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने । चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥ २
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे । सचैषु सवनेष्वा ॥ ३ ॥ अस
मिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत । अजोषा वृषभं पतिम् ॥ ४ ॥ सं चोदय

र्वाश्वाधं इन्द्र वरेण्यम् । असदित्ते विभु प्रभु ॥ ५ ॥ १७ ॥ अस्मान्त्सु तत्र
दयेन्द्र राये रभस्वतः । तुविद्युम्न यशस्वतः ॥ ६ ॥ सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे
श्रवो बृहत् । विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥७॥ अस्मे धेहि श्रवो बृहद्द्युम्नं सहस्रसा-
म् । इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥८॥ वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् ।
म गन्तारमूतये ॥ ९ ॥ सुतेसुते न्योकसे बृहद्बृहत एदरिः । इन्द्राय शूषमर्चति
१० ॥ १८ ॥

॥ १० ॥ १–१२ मधुच्छन्दा ऋषिः ॥ इन्द्रोदेवता ॥ छन्दः–१–३, ५,
विराडनुष्टुप् । ८ निचृदनुष्टुप् ४ । भुरिगुष्णिक् । ७, ९–१२ अनुष्टुप् ॥
न्धारः स्वरः ॥ ४ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १० ॥ गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः । ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत
द्वंशमिव येमिरे ॥ १ ॥ यत्सानोः सानुमारुहद्भूर्यस्पष्ट कर्त्वम् । तदिन्द्रो अर्थं चे-
ते यूथेन वृष्णिरेजति ॥ २ ॥ युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा । अथा
इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर ॥ ३ ॥ एहि स्तोमाँ अभि स्वराभि गृणीह्या
। ब्रह्म च नो वसो सचेन्द्र यज्ञं च वर्धय ॥ ४ ॥ उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं
नि॒ष्षिधे । शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत्सख्येषु च ॥ ५ ॥ तमित्सखित्व
महे तं राये तं सुवीर्ये । स शक्र उत नः शकदिन्द्रो वसु दयमानः ॥ ६ ॥ १९॥
विवृतं सुनिरजमिन्द्र त्वादातमिद्यशः । गवामप व्रजं वृधि कृणुष्व राधो
द्रिवः ॥ ७ ॥ नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः । जेषः स्वर्वतीरपः
गा अस्मभ्यं धूनुहि ॥ ८ ॥ आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं नू चिद्दधिष्व मे गिरः ।
द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजश्चिदन्तरम् ॥ ९ ॥ विद्मा हि त्वा वृषन्तमं वाजेषु हव-
श्रुतम् । वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं सहस्रसातमाम् ॥ १० ॥ आ तू न इन्द्र कौशिक
न्दसानः सुतं पिब । नव्यमायुः प्र सू तिर कृधी सहस्रसामृषिम् ॥ ११ ॥ परि
। गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः
१२ ॥ २० ॥

॥ ११ ॥ १–८ जेता माधुच्छन्दस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ अनुष्टुप्
न्दः ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ११ ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः । रथीतमं रथीनां वाजा-
सत्पतिं पतिम् ॥ १ ॥ सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते । त्वामभि

प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् ॥ २ ॥ पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः ।
वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥ ३ ॥ पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा
यत । इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ ४ ॥ त्वं वलस्य गो
पावरद्रिवो बिलम् । त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः ॥ ५ ॥ तवा
रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् । उपातिष्ठन्त गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ॥
मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः । विदुष्टे तस्य मेधिरास्तेषां श्रवांसि
॥ ७ ॥ इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनूषत । सहस्रं यस्य रातय उत वा
भूयसीः ॥ ८ ॥ २१ ॥ ३ ॥

॥ १२ ॥ १-१२ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ ग
छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १२ ॥ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य सु
॥ १ ॥ अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् । हव्यवाहं पुरुप्रियम्
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे । असि होता न ईड्यः ॥ ३ ॥
शतो वि बोधय यदग्ने यासि दूत्यम् । देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ ४ ॥ घृत
दीदिवः प्रति ष्म रिषतो दह । अग्ने त्वं रक्षस्विनः ॥ ५ ॥ अग्निनाग्नि
मिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा । हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥ ६ ॥ २२ ॥ कविमग्निमुप
सत्यधर्माणमध्वरे । देवममीवचातनम् ॥ ७ ॥ यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव
र्यति । तस्य स्म प्राविता भव ॥ ८ ॥ यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आवि
ति । तस्मै पावक मृळय ॥ ९ ॥ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ इहा वह
यज्ञं हविश्च नः ॥ १० ॥ स नः स्तवान आ भर गायत्रेण नवीयसा
वीरवतीमिषम् ॥ ११ ॥ अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं
जुषस्व नः ॥ १२ ॥ २३ ॥

॥ १३ ॥ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ १ इध्मः समिद्धो वाग्निः । २
नपात् । ३ नराशंसः । ४ इळः । ५ बर्हिः । ६ देवीर्द्वारः । ७ उषासान
८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ । ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः । १० त
११ वनस्पतिः । १२ स्वाहाकृतयः ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १३ ॥ सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक
च ॥ १ ॥ मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुहि वीतये ॥

शंसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम् ॥ ३ ॥ अग्ने सुखतमे
देवाँ ईळित आ वह । असि होता मनुर्हितः ॥ ४ ॥ स्तृणीत बर्हिरानुषग्घृ-
ष्ठं मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम् ॥ ५ ॥ वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवी-
श्चतः । अद्या नूनं च यष्टवे ॥ ६ ॥२४॥ नक्तोषासा सुपेशसास्मिन्यज्ञ उप
। इदं नो बर्हिरासदे ॥ ७ ॥ ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी । यज्ञं
यक्षतामिमम् ॥ ८ ॥ इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः । बर्हिः सीद-
स्त्रिधः ॥ ९ ॥ इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये । अस्माकमस्तु केवलः
१० ॥ अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः । प्र दातुरस्तु चेतनम् ॥ ११ ॥
हा यज्ञं कृणोतनेन्द्राय यज्वनो गृहे । तत्र देवाँ उप ह्वये ॥ १२ ॥ २५ ॥

॥ १४ ॥ १-१२ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ गायत्री
ः ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १४ ॥ ऐभिरग्ने दुवो गिरो विश्वेभिः सोमपीतये । देवेभिर्याहि यक्षि च
। आ त्वा कण्वा अहूषत गृणन्ति विप्र ते धियः । देवेभिरग्न आ गहि ॥२॥
वायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम् । आदित्यान्मारुतं गणम् ॥३॥ प्र वो भ्रि-
इन्दवो मत्सरा मादयिष्णवः । द्रप्सा मध्वश्चमूषदः ॥४॥ ईळते त्वामवस्यवः
वासो वृक्तबर्हिषः । हविष्मन्तो अरङ्कृतः ॥ ५ ॥ घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा व-
वह्नयः । आ देवान्त्सोमपीतये ॥ ६ ॥ २६ ॥ तान्यजत्राँ ऋतावृधोऽग्ने प-
तस्कृधि । मध्वः सुजिह्व पायय ॥ ७ ॥ ये यजत्रा य ईड्यास्ते ते पिबन्तु जि-
। मधोरग्ने वषट्कृति ॥ ८ ॥ आकीं सूर्यस्य रोचनाद्विश्वान्देवाँ उषर्बुधः ।
होतेह वक्षति ॥ ९ ॥ विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्न इन्द्रेण वायुना । पिबा मि-
धामभिः ॥ १० ॥ त्वं होता मनुर्हितोऽग्ने यज्ञेषु सीदसि । सेमं नो अध्वरं
॥११॥ युक्ष्वा ह्यरुषी रथे हरितो देव रोहितः । ताभिर्देवाँ इहा वह ॥१२॥२७॥

॥ १५ ॥ १-१२ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवता—ऋतवः । १ इन्द्रः । २
ः ३ त्वष्टा । ४ अग्निः । ५ इन्द्रः । ६ मित्रावरुणौ । ७-१० । द्रवि-
दाः । ११ अश्विनौ । १२ अग्निः ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १५ ॥ इन्द्र सोमं पिब ऋतुना त्वा विशन्त्विन्दवः । मत्सरासस्तदोकसः
॥ मरुतः पिबत ऋतुना पोत्राद्यज्ञं पुनीतन । यूयं हि ष्ठा सुदानवः ॥ २ ॥
यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिब ऋतुना । त्वं हि रत्नधा असि ॥ ३ ॥

अग्ने देवाँ इहा वह सादया योनिषु त्रिषु । परि भूष पिब ऋतुना ॥ ४ ॥
ह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु । तवेद्धि सख्यमस्तृतम् ॥५ ॥ युवं द
तव्रत मित्रावरुण दूळभम् । ऋतुना यज्ञमाशाथे ॥६॥ २८॥ द्रविणोदा द्रवि
ग्रावहस्तासो अध्वरे । यज्ञेषु देवमीळते ॥ ७॥ द्रविणोदा ददातु नो वसूनि
शृण्विरे । देवेषु ता वनामहे ॥ ८ ॥ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च ति
नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥ ९ ॥ यत्त्वा तुरीयमृतुभिर्द्रविणोदो यजामहे । अध स्म
ददिर्भव ॥ १० ॥ अश्विना पिबतं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता । ऋतुना यज्ञव
॥ ११ ॥ गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरसि । देवान्देवयते यज ॥ १२ ॥

॥ १६ ॥ १–९ मेधातिथिः काण्वः ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्
षड्ज स्वरः ॥

॥१६॥ आ त्वा वहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये । इन्द्र त्वा सूरचक्षसः
इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः । इन्द्रं सुखतमे रथे ॥ २ ॥ इन्द्रं प्र
वामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं सोमस्य पीतये ॥३॥ उप नः सुतमा गहि ह
रिन्द्र केशिभिः । सुते हि त्वा हवामहे ॥ ४ ॥ सेमं नः स्तोममा गह्युपेदं सवनं स
गौरो न तृषितः पिब ॥ ५ ॥ ३० ॥ इमे सोमास इन्दवः सुतासो अधि ब
ताँ इन्द्र सहसे पिब ॥ ६ ॥ अयं ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शन्तमः ।
सोमं सुतं पिब ॥ ७ ॥ विश्वमित्सवनं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति । वृत्रहा
पीतये ॥ ८ ॥ सेमं नः काममा पृण गोभिरश्वैः शतक्रतो । स्तवाम त्वा स्
॥ ९ ॥ ३१ ॥

॥ १७ ॥ १–९ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रावरुणौ देवते ॥ छन्
यवमध्या विराड् गायत्री । ४ पादनिचृद् गायत्री । ५ भुरिगार्ची गायत्री । ६
गायत्री । ८ पिपीलिकामध्या निचृद् गायत्री । १, ३, ७, ९ गायत्री ॥
स्वरः ॥

॥ १७ ॥ इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आ वृणे । ता नो मृळात ईदृशे
गन्तारा हि स्थोऽवसे हवं विप्रस्य मावतः । धर्तारा चर्षणीनाम् ॥ २ ॥ अनु
तर्पयेथामिन्द्रावरुण राय आ । ता वां नेदिष्ठमीमहे ॥३॥ युवाकु हि शचीनां
सुमतीनां । भूयाम वाजदाव्नाम् ॥ ४ ॥ इन्द्रः सहस्रदाव्नां वरुणः शंस्यानाम् ।

त्युक्थ्यः ॥ ५ ॥ ३२ ॥ तयोरिदवसा वयं सनेम नि च धीमहि । स्यादुत प्र-
नम् ॥ ६ ॥ इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय राधसे । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृतम्
७॥ इन्द्रावरुण नू नु वां सिषासन्तीषु धीष्वा । अस्मभ्यं शर्म यच्छतम् ॥ ८ ॥ प्र
मश्नोतु सुष्टुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे । यामृधाथे सधस्तुतिम् ॥ ६ ॥ ३३ ॥ ४ ॥

॥ १८ ॥ १-६ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवता-१-३ ब्रह्मणस्पतिः ।
ब्रह्मणस्पतिरिन्द्रश्च सोमश्च । ५ बृहस्पतिदक्षिणे । ६—८ सदसस्पतिः । ६
सस्पतिर्नाराशंसो वा ॥ छन्दः—१ विराड् गायत्री । ३, ६, ८ पिपीलि-
मध्या निचृद्गायत्री । ४ निचृद्गायत्री । ५ पादनिचृद्गायत्री । २, ७, ६ गायत्री ॥
जः स्वरः ॥

॥ १८ ॥ सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते । कक्षीवन्तं य औशिजः ॥१॥
रेवान्यो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः । स नः सिषक्तु यस्तुरः ॥ २॥ मा नः
मो अररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य । रक्षा णो ब्रह्मणस्पते ॥ ३ ॥ स घा वीरो
रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः । सोमो हिनोति मर्त्यम् ॥ ४ ॥ त्वं तं ब्रह्मणस्पते
म इन्द्रश्च मर्त्यम् । दक्षिणा पात्वंहसः ॥ ५ ॥ ३४ ॥ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमि-
स्य काम्यम् । सनिं मेधामयासिषम् ॥ ६ ॥ यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चि-
त्न । स धीनां योगमिन्वति ॥ ७॥ आदृध्नोति हविष्कृतिं प्राञ्चं कृणोत्यध्वरम् ।
त्रा देवेषु गच्छति ॥ ८ ॥ नराशंसं सुधृष्टममपश्यं सप्रथस्तमम् । दिवो न स-
खसम् ॥ ६ ॥ ३५ ॥

॥ १६ ॥ १—६ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवता—अग्निर्मरुतश्च ॥
न्दः—२ निचृद्गायत्री । ६ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री । १, ३—८ गायत्री ॥
ड्जः स्वरः ॥

॥ १६ ॥ प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे । मरुद्भिरग्न आ गहि
१ ॥ नहि देवो न मर्त्यो महस्तव क्रतुं परः । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ २ ॥ ये महो
सो विदुर्विश्वे देवासो अद्रुहः । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ३ ॥ य उग्रा अर्कमा-
वुरनाधृष्टास ओजसा । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ४ ॥ ये शुभ्रा घोरवर्पसः सु-
त्रासो रिशादसः । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ५ ॥ ३६ ॥ ये नाकस्याधि रोचने
वि देवास आसते । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ६ ॥ य ईङ्खयन्ति पर्वतान् तिरः स-
द्रमर्णवम् । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥७॥ आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस्तिरः समुद्रमोजसा ।

मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ८ ॥ अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु । मरुद्भि
आ गहि ॥ ९ ॥ ३७ ॥ १ ॥

॥ २० ॥ १-८ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवता-ऋभवः ॥ छन्द
विराड् गायत्री । ४ निचृद्गायत्री । ५, ८ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री । १
६, ७ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २० ॥ अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रेभिरासया । अकारि रत्नध
॥ १ ॥ य इन्द्राय वचोयुजा ततक्षुर्मनसा हरी । शमीभिर्यज्ञमाशत ॥ २ ॥
नासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम् । तक्षन्धेनुं सबर्दुघाम् ॥ ३ ॥ युवाना पि
पुनः सत्यमन्त्रा ऋजूयवः । ऋभवो विष्ट्यक्रत ॥ ४ ॥ सं वो मदासो अग्मते
च मरुत्वता । आदित्येभिश्च राजभिः ॥ ५ ॥ १ ॥ उत त्यं चमसं नवं त्व
वस्य निष्कृतम् । अकर्त चतुरः पुनः ॥ ६ ॥ ते नो रत्नानि धत्तन त्रिरा सा
सुन्वते । एकमेकं सुशस्तिभिः ॥ ७ ॥ अधारयन्त वह्नयोऽभजन्त सुकृत्यया ।
देवेषु यज्ञियम् ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ २१ ॥ १-६ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवते-इन्द्राग्नी ॥ छन्दः-२
लिकामध्या निचृद्गायत्री । ५ निचृद्गायत्री । १, ३, ४, ६ गायत्री ॥ षड्जः स्व

॥ २१ ॥ इहेन्द्राग्नी उप ह्वये तयोरित्स्तोममुश्मसि । ता सोमं सोमपातमा
ता यज्ञेषु प्र शंसतेन्द्राग्नी शुम्भता नरः । ता गायत्रेषु गायत ॥ २ ॥ ता मि
प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे । सोमपा सोमपीतये ॥ ३ ॥ उग्रा सन्ता हवाम
पेदं सवनं सुतम् । इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ॥ ४ ॥ ता महान्ता सदस्पती इन्द्राग्नी
उब्जतम् । अप्रजाः सन्त्वत्रिणः ॥ ५ ॥ तेन सत्येन जागृतमधि प्रचेतुने पदे । इन
शर्म यच्छतम् ॥ ६ ॥ ३ ॥

॥ २२ ॥ १-२१ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवता—१-४ अश्वि
५-८ सविता । ९, १० अग्निः । ११ देव्यः । १२ इन्द्राणीवरुणान्यग्ना
१३, १४ द्यावापृथिव्यौ । १५ पृथिवी । १६ विष्णुर्देवो वा । १७-२१ विष्
छन्दः—१-३, ८, १२, १७, १८ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री । ६, १९
चृद्गायत्री । १५ विराड् गायत्री । ४, ५, ७, ९—११, १३, १४, १६,
२१ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २२ ॥ प्रातर्युजा वि बोधयाश्विनावेह गच्छताम् । अस्य सोमस्य पीतये
१ ॥ या सुरथा रथीतमोभा देवा दिविस्पृशा । अश्विना ता हवामहे ॥ २ ॥
वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥ ३ ॥ नहि वाम-
दूरके यत्रा रथेन गच्छथः । अश्विना सोमिनो गृहम् ॥ ४ ॥ हिरण्यपाणि-
ये सवितारमुप ह्वये । स चेत्ता देवता पदम् ॥ ५ ॥ ४ ॥ अपां नपातमवसे स-
ारमुप स्तुहि । तस्य व्रतान्युश्मसि ॥ ६ ॥ विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य
सः । सवितारं नृचक्षसम् ॥ ७ ॥ सखाय आ नि षीदत सविता स्तोम्यो नु
। दाता राधांसि शुम्भति ॥ ८ ॥ अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप ।
ारं सोमपीतये ॥ ९ ॥ आ ग्ना अग्न इहावसे होत्रां यविष्ठ भारतीम् । वरूत्रीं
णां वह ॥ १० ॥ ५ ॥ अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः । अच्छिन्न-
त्राः सचन्ताम् ॥ ११ ॥ इहेन्द्राणीमुप ह्वये वरुणानीं स्वस्तये । अग्नायीं सो-
तये ॥ १२ ॥ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरी-
ः ॥ १३ ॥ तयोरिद्घृतवत्पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः । गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे
४ ॥ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथः ॥ १५ ॥ ६ ॥
देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः ॥ १६ ॥
विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूळ्हमस्य पांसुरे ॥ १७ ॥ त्रीणि पदा
चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् ॥ १८ ॥ विष्णोः कर्मा-
पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ १९ ॥ तद्विष्णोः परमं
सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥ २० ॥ तद्विप्रासो विपन्यवो जा-
सः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ २१ ॥ ७ ॥

॥ २३ ॥ १—२४ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवता–१ वायुः । २, ३
ायू । ४–६ मित्रावरुणौ । ७–९ इन्द्रो मरुत्वान् । १०–१२ विश्वे देवाः ।
–१५ पूषा । १६—२२ आपः । २३–२४ अग्निः ॥ छन्दः—१—१८
त्री । १९ पुरउष्णिक् । २० अनुष्टुप् । २१ प्रतिष्ठा । २२–२४ अनुष्टुप् ॥
—१–१८, २१ षड्जः । १९ ऋषभः । २०, २२—२४ गान्धारः ॥

॥ २३ ॥ तीव्राः सोमास आ गह्याशीर्वन्तः सुता इमे । वायो तान्प्रस्थिता-
॥ १ ॥ उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ २ ॥
वायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये । सहस्राक्षा धियस्पती ॥ ३ ॥ मित्रं वयं

हवामहे वरुणं सोमपीतये । जज्ञाना पूतदक्षसा ॥ ४ ॥ ऋतेन यावृतावृधा
ज्योतिषस्पती । ता मित्रावरुणा हुवे ॥ ५ ॥ ८ ॥ वरुणः प्राविता भुवा
विश्वाभिरूतिभिः । करतां नः सुराधसः ॥ ६ ॥ मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा
पीतये । सजूर्गणेन तृम्पतु ॥ ७ ॥ इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः
श्वे मम श्रुता हवम् ॥ ८ ॥ हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा । मा नो
ईशत ॥ ९ ॥ विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये । उग्रा हि पृश्निमातरः॥
९ ॥ जयतामिव तन्यतुर्मरुतामेति धृष्णुया । यच्छुभं याथना नरः ॥ ११ ॥
राद्विद्युतस्पर्यतो जाता अवन्तु नः । मरुतो मृळयन्तु नः ॥ १२ ॥ आ पूषञ्चि
र्हिषमाघृणे धरुणं दिवः । आजा नष्टं यथा पशुम् ॥ १३ ॥ पूषा राजानमाघृणिरप
गुहा हितम् । अविन्दच्चित्रबर्हिषम् ॥ १४ ॥ उतो स मह्यमिन्दुभिः षड्युक्ताँ अ
षिधत् । गोभिर्यवं न चर्कृषत् ॥ १५ ॥ १० ॥ अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो
रीयताम् । पृञ्चतीर्मधुना पयः ॥ १६ ॥ अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह
नो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥ १७ ॥ अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः । सिन्ध
कर्त्वं हविः ॥ १८ ॥ अप्स्व१न्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये । देवा भव
जिनः ॥ १९ ॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च वि
शम्भुवमापश्च विश्वभेषजीः ॥ २० ॥ ११ ॥ आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३
ज्योक् च सूर्यं दृशे ॥ २१ ॥ इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि । यद्वा
भिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम् ॥ २२ ॥ आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस
पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ॥ २३ ॥ सं माग्ने वर्चसा सृ
प्रजया समायुषा । विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात्सह ऋषिभिः ॥ २४ ॥ १२

॥ २४ ॥ १-१५ शुनःशेप आजीगर्तिः कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरात ऋ
देवता—१ प्रजापतिः । २ अग्निः । ३-५ सविता भगो वा । ६-१५ वरु
छन्दः—१, २, ६-१५ त्रिष्टुप् । ३-५ गायत्री ॥ स्वरः—१, २, ६-१५
३-५ षड्जः ॥

॥ २४ ॥ कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम । को
मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ १ ॥ अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृ
मनामहे चारु देवस्य नाम । स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं
च ॥ २ ॥ अभि त्वा देव सवितरीशानं वार्याणाम् । सदावन्भागमीमहे ॥

श्चिद्धि ते इत्था भर्गः शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे ॥ ४ ॥ भर्ग-
ऋस्य ते वयमुदशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे ॥ ५ ॥ १३ ॥ नहि ते
त्रं न सहो न मन्युं वयश्चनामी पतयन्त आपुः । नेमा आपो अनिमिषं चर-
र्नि ये वातस्य प्रमिनन्त्यभ्वम् ॥ ६ ॥ अबुध्ने राजा वरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं
ते पूतदक्षः । नीचीनाः स्थुरुपरि बुध्न एषामस्मे अन्तर्निहिताः केतवः स्युः
७ ॥ उरुं हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ । अपदे पादा प्रति-
तवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित् ॥ ८ ॥ शतं ते राजन्भिषजः सहस्रमुर्वी
भीरा सुमतिष्टे अस्तु । बाधस्व दूरे निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुग्ध्य-
त् ॥ ९ ॥ अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा नक्तं ददृश्रे कुह चिद्दिवेयुः । अद-
यानि वरुणस्य व्रतानि विचाकशच्चन्द्रमा नक्तमेति ॥ १० ॥ १४ ॥ तत्त्वा या-
ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बो-
रुशंस मा न आयुः प्र मोषीः ॥ ११ ॥ तदिन्नक्तं तद्दिवा मह्यमाहुस्तदयं के-
हृद आ वि चष्टे । शुनःशेपो यमह्वद्गृभीतः सो अस्मान्राजा वरुणो मुमोक्तु
१२ ॥ शुनःशेपो ह्यह्वद्गृभीतस्त्रिष्वादित्यं द्रुपदेषु बद्धः । अवैनं राजा वरुणः
सृज्याद्विद्वाँ अदब्धो वि मुमोक्तु पाशान् ॥ १३ ॥ अव ते हेळो वरुण नमो-
रव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः । क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः
तानि ॥ १४ ॥ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा
यमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥ १५ ॥ १५ ॥

॥ २५ ॥ १–२१ शुनः शेप आजीगर्तिर्ऋषिः ॥ वरुणो देवता ॥ गा-
त्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २५ ॥ यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम् । मिनीमसि द्यविद्यवि
१ ॥ मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः । मा हृणानस्य मन्यवे ॥ २ ॥ वि
ळीकाय ते मनो रथीरश्वं न सन्दितम् । गीर्भिर्वरुण सीमहि ॥ ३ ॥ परा हि मे
मन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये । वयो न वसतीरुप ॥ ४ ॥ कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं
रामहे । मृळीकायोरुचक्षसम् ॥ ५ ॥ १६ ॥ तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युः-
च्छतः । धृतव्रताय दाशुषे ॥ ६ ॥ वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम् । वेद नावः
मुद्रियः ॥ ७ ॥ वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः । वेदा य उपजायते ॥ ८ ॥ वेद
तस्य वर्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः । वेदा ये अध्यासते ॥ ९ ॥ नि षसाद धृतव्रतो वरुणः

पुस्त्या३ स्वा । साम्रा॑ज्याय सुक्रतुः ॥ १० ॥ १७ ॥ अतो विश्वान्यद्भुता
कि॒त्वाँ अ॒भि प॑श्यति । कृतानि॒ या च॒ कर्त्वा॑ ॥ ११ ॥ स नो॑ वि॒श्वाहा॑ सु
रादि॒त्यः सु॒पथा॑ करत् । प्र ण॒ आयूं॑षि तारिषत् ॥ १२ ॥ बिभ्र॑द्द्रा॒पिं हि॒र
वरु॑णो वस्त नि॒र्णिज॑म् । परि॒ स्पशो॒ नि षे॑दिरे ॥ १३ ॥ न यं दिप्स॑न्ति दि॒प्
न द्रुह्वा॑णो॒ जना॑नाम् । न दे॒वम॒भिमा॑तयः ॥ १४ ॥ उ॒त यो मानु॑षे॒ष्वा यश॑श्च॒क्रे
साम्या । अ॒स्माक॑मु॒दरे॒ष्वा ॥ १५ ॥ १८ ॥ परा॑ मे यन्ति धी॒तयो॒ गावो॑ न ग
ती॒रनु॑ । इ॒च्छन्ती॑रुरु॒चक्ष॑सम् ॥ १६ ॥ सं नु वो॑चावहै॒ पुन॒र्यतो॑ मे॒ मध्वाभृ॑तम् ।
तेव॒ क्षद॑से प्रि॒यम् ॥ १७ ॥ दर्शं॒ नु वि॒श्वद॑र्शतं॒ दर्शं॒ रथ॒मधि॒ क्षमि॑ । ए॒ता ज
मे॒ गिरः॑ ॥ १८ ॥ इ॒मं मे॑ वरुण श्रुधी॒ हव॑म॒द्या च॑ मृळय । त्वाम॑व॒स्युरा च॑के ॥१
त्वं विश्व॑स्य मेधिर दि॒वश्च॒ ग्मश्च॑ राजसि । स याम॑नि॒ प्रति॑ श्रुधि ॥२०॥ उदु
मु॑मुग्धि नो॒ वि पाशं॒ मध्य॒मं चृ॑त । अवा॑ध॒मानि॑ जी॒वसे॑ ॥२१॥ १९॥

॥ २६ ॥ १–१० शुनःशेप आजीगर्तिर्ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–
८, ९ आर्ची उष्णिक् । २, ६, निचृद्गायत्री । ३ प्रतिष्ठा गायत्री । ४, १०
यत्री । ५, ७ विराड् गायत्री । स्वरः—१, ८, ९ ऋषभः २, ६, ३, ४,
५, ७ षड्जः ॥

॥ २६ ॥ वसि॑ष्वा॒ हि मि॑येध्य॒ वस्त्रा॑ण्यूर्जां पते । सेमं नो॑ अध्व॒रं य॑ज ॥ १
नि नो॒ होता॒ वरे॑ण्यः॒ सदा॑ यविष्ठ॒ मन्म॑भिः । अग्ने॑ दि॒वित्म॑ता॒ वचः॑ ॥ २ ॥
हि ष्मा॑ सूनवे॑ पि॒तापिर्य॑ज॒त्याप॒ये॑ । सखा॑ स॒ख्ये॑ वरे॑ण्यः ॥ ३ ॥ आ नो॑ ब
रि॒शाद॑सो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा । सीद॑न्तु॒ मनु॑षो यथा ॥ ४ ॥ पूर्व्य॑ होतर॒स्य
मन्द॑स्व स॒ख्यस्य॑ च । इ॒मा उ॒ षु श्रु॑धी॒ गिरः॑ ॥ ५ ॥ २० ॥ यच्चि॒द्धि शश्
तना॑ दे॒वन्दे॑वं॒ यजा॑महे । त्वे इद्धू॑यते ह॒विः ॥ ६ ॥ प्रि॒यो नो॑ अस्तु वि॒श्पति॒र्हो
म॒न्द्रो वरे॑ण्यः । प्रि॒याः स्व॒ग्नयो॑ व॒यम् ॥ ७ ॥ स्व॒ग्नयो॒ हि वार्यं॑ दे॒वासो॑ दधि॒रे
नः । स्व॒ग्नयो॑ मनामहे ॥ ८ ॥ अथा॑ न उ॒भये॑षा॒ममृ॑त॒ मर्त्या॑नाम् । मि॒थः स॑न्तु
शस्तयः ॥ ९ ॥ विश्वे॑भिरग्ने अ॒ग्निभि॑रि॒मं य॒ज्ञमि॒दं वचः॑ । चनो॑ धाः सह
यहो ॥ १० ॥ २१ ॥

॥ २७ ॥ १–१३ शुनःशेप आजीगर्तिर्ऋषिः ॥ देवता–१–१२ अग्नि
१३ विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१–१२ गायत्री । १३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–
षड्जः १३ धैवतः ॥

॥ २७ ॥ अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः । सम्राजन्तम-
राणाम् ॥ १ ॥ स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः । मीढ्वाँ अस्माकं ब-
ात् ॥ २ ॥ स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः । पाहि सदमिद्विश्वायुः ॥३॥
मू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् । अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥ ४ ॥ आ नो भज
मेष्वा वाजेषु मध्यमेषु । शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥ ५ ॥ २२ ॥ विभक्तासि चि-
ानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ । सद्यो दाशुषे क्षरसि ॥६॥ यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु
जुनाः । स यन्ता शश्वतीरिषः ॥७॥ नकिरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित् । वाजो अ-
श्रवाय्यः ॥८॥ स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता । विप्रेभिरस्तु सनिता ॥९॥
ाबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय । स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥१०॥२३॥ स नो
ाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः । धिये वाजाय हिन्वतु ॥११॥ स रेवाँ इव विश्पति-
र्व्यः केतुः शृणोतु नः । उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ॥ १२ ॥ नमो महद्भ्यो नमो अ-
केभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः । यजाम देवान्यदि शक्नवाम मा ज्यायसः
समा वृक्षि देवाः ॥ १३ ॥ २४ ॥

॥ २८ ॥ १–९ शुनःशेप आजीगर्तिर्ऋषिः ॥ इन्द्रयज्ञसोमा देवताः ॥
न्दः–१–६ अनुष्टुप् । ७–९ गायत्री ॥ स्वरः–१–६ गान्धारः ७–९ षड्जः ॥

॥ २८ ॥ यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ऊर्ध्वो भवति सोतवे । उलूखलसुतानामवेद्वि-
जल्गुलः ॥ १ ॥ यत्र द्वाविव जघनाधिषवण्या कृता । उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र
ल्गुलः ॥ २ ॥ यत्र नार्यपच्यवमुपच्यवं च शिक्षते । उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र
ल्गुलः ॥ ३ ॥ यत्र मन्थां विबध्नते रश्मीन्यमितवा इव । उलूखलसुतानामवे-
न्द्र जल्गुलः ॥ ४ ॥ यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उलूखलक युज्यसे । इह द्युमत्तमं वद
यतामिव दुन्दुभिः ॥ ५ ॥ २५ ॥ उत स्म ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित् ।
थो इन्द्राय पातवे सुनु सोममुलूखल ॥ ६ ॥ आयजी वाजसातमा ता ह्युच्चा
जर्भृतः । हरी इवान्धांसि बप्सता ॥ ७ ॥ ता नो अद्य वनस्पती ऋष्वावृष्वेभिः
तृभिः । इन्द्राय मधुमत्सुतम् ॥ ८ ॥ उच्छिष्टं चम्वोर्भर सोमं पवित्र आ सृज । नि
हि गोरधि त्वचि ॥ ९ ॥ २६ ॥

॥ २९ ॥ १—७ शुनःशेप आजीगर्तिर्ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ पङ्क्ति-
छन्दः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ २९ ॥ यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ता इव स्मसि । आ तू न इन्द्र शं-

सय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ १ ॥ शिप्रिन्वाजानां पते शचीवस
दंसना । आ तू नं इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ॥ २॥ नि ष
पया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने। आ तू नं इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सह
तुवीमघ ॥ ३॥ ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः। आ तू नं इन्द्र शं
गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ४ ॥ समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पाप
मुया । आ तू नं इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ५
पताति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि । आ तू नं इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रि
सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ६ ॥ सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्वम् । आ तू नं इ
शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ७ ॥ २७॥

॥ ३० ॥ १—२२ शुनःशेप आजिगर्तिर्ऋषिः ॥ देवता—१-१६ इन्द्र
१७-१९ अश्विनौ । २०-२२ उषाः ॥ छन्दः—१-१०, १२-१५, १७-
गायत्री। ११ पादनिचृद्गायत्री। १६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१-२२ षड्जः १६ धैवतश्च

॥ ३० ॥ आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् । मंहिष्ठं सिञ्च
न्दुभिः ॥ १ ॥ शतं वा यः शुचीनां सहस्रं वा समाशिराम् । एदु निम्नं न री
॥ २ ॥ सं यन्मदाय शुष्मिण एना ह्यस्योदरे । समुद्रो न व्यचो दधे ॥ ३ ॥
यमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम् । वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ ४ ॥ स्तोत्रं राध
पते गिर्वाहो वीर यस्य ते । विभूतिरस्तु सूनृता ॥ ५ ॥ २८ ॥ ऊर्ध्वस्तिष्ठ
ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो । समन्येषु ब्रवावहै ॥ ६ ॥ योगेयोगे तवस्तरं व
वाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये॥ ७ ॥ आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरू
भिः। वाजेभिरुप नो हवम् ॥ ८ ॥ अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । यं ते
पिता हुवे ॥ ९ ॥ तं त्वा वयं विश्ववारा शास्महे पुरुहूत । सखे वसो ज
तृभ्यः ॥ १० ॥ २९ ॥ अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपाव्नाम् । सखे व
न्त्सखीनाम् ॥ ११ ॥ तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्रिन्तथा कृणु । यथा त
श्मसीष्टये ॥ १२ ॥ रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो य
मदेम ॥ १३ ॥ आ घ त्वावान्त्मनाप्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः । ऋणोरक्षं
चक्र्योः ॥ १४ ॥ आ यद्दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम् । ऋणोरक्षं न श
भिः ॥ १५॥ ३० ॥ शश्वदिन्द्रः पोप्रुथद्भिर्जिगाय नानदद्भिः शाश्वसद्भिर्धना
स नो हिरण्यरथं दंसनावान्त्स नः सनिता सनये स नोऽदात् ॥ १६ ॥ आ

श्वावत्येषा यातं शवीरया । गोमदस्रा हिरण्यवत् ॥ १७ ॥ समानयोजनो
गं रथो दस्रावमर्त्यः । समुद्रे अश्विनेयते ॥ १८ ॥ न्यघ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं
स्य येमथुः । परि द्यामन्यदीयते ॥ १९ ॥ कस्त उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अ-
। कं नक्षसे विभावरि ॥ २० ॥ वयं हि ते अमन्मह्यान्तादा पराकात् । अश्वे
चित्रे अरुषि ॥ २१ ॥ त्वं त्येभिरा गहि वाजेभिर्दुहितर्दिवः । अस्मे रयिं नि
य ॥ २२ ॥ ३१ ॥ ६ ॥

॥ ३१ ॥ १—१८ हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥
ः— १-७, ९-१५, १७ जगती । ८, १६, १८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-७,
-१५, १७ निषादः । ८, १६, १८ धैवतः ॥

॥ ३१ ॥ त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा ।
व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ १ ॥ त्वमग्ने प्रथमो
रस्तमः कविर्देवानां परि भूषसि व्रतम् । विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो द्विमाता
ः कतिधा चिदायवे ॥ २ ॥ त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन आविर्भव सुक्रतूया
स्वते । अरेजेतां रोदसी होतृवूर्येऽसघ्नोर्भारमयजो महो वसो ॥ ३ ॥ त्वमग्ने
धामवाशयः पुरूरवसे सुकृते सुकृत्तरः । श्वात्रेण यत्पित्रोर्मुच्यसे पर्या त्वा
नयन्नापरं पुनः ॥ ४ ॥ त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन उद्यतस्रुचे भवसि श्रवाय्यः ।
ाहुतिं परि वेदा वषट्कृतिमेकायुरग्रे विश आविवासति ॥ ५ ॥ ३२ ॥ त्व-
वृजिनवर्तनिं नरं सक्मन्पिपर्षि विदथे विचर्षणे । यः शूरसाता परितक्म्ये
दभ्रेभिश्चित्समृता हंसि भूयसः ॥ ६ ॥ त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं द-
श्रवसे दिवेदिवे । यस्तातृषाण उभयाय जन्मने मयः कृणोषि प्रय आ च
॥ ७ ॥ त्वं नो अग्ने सनये धनानां यशसं कारुं कृणुहि स्तवानः । ऋ-
कर्मापसा नवेन देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ॥ ८ ॥ त्वं नो अग्ने पित्रोरु-
आ देवो देवेष्वनवद्य जागृविः । तनूकृद्बोधि प्रमतिश्च कारवे त्वं कल्याण वसु
मोपिषे ॥ ९ ॥ त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस्त्वं वयस्कृत्तव जामयो वयम् । सं
ायः शतिनः सं सहस्रिणः सुवीरं यन्ति व्रतपामदाभ्य ॥ १० ॥ ३३ ॥ त्वामग्ने
मायुमायवे देवा अकृण्वन्नहुषस्य विश्पतिम् । इळामकृण्वन्मनुषस्य शासनीं
र्यत्पुत्रो ममकस्य जायते ॥ ११ ॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष
श्च वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषं रक्षमाणस्तव व्रते ॥ १२ ॥

त्वमग्ने यज्यवे पायुरन्तरोऽनिषङ्गाय चतुरक्ष इध्यसे । यो रातहव्योऽवृकाय
यसे कीरेश्चिन्मन्त्रं मनसा वनोषि तम् ॥ १३ ॥ त्वमग्न उरुशंसाय वाघते
यद्रेक्णः परमं वनोषि तत् । आध्रस्य चित्प्रमतिरुच्यसे पिता प्र पाकं शास्
दिशो विदुष्टरः ॥ १४ ॥ त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं वर्मेव स्यूतं परि पासि वि
तः । स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृज्जीवयाजं यजते सोपमा दिवः ॥ १५ ॥ इ
इमामग्ने शरणिं मीमृषो न इममध्वानं यमगाम दूरात् । आपिः पिता प्र
सोम्यानां भृमिरस्यृषिकृन्मर्त्यानाम् ॥ १६ ॥ मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो
यातिवत्सदने पूर्ववच्छुचे । अच्छ याह्या वहा दैव्यं जनमा सादय बर्हिषि
च प्रियम् ॥ १७ ॥ एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व शक्ती वा यत्ते चकृमा
वा । उत प्र णेष्यभि वस्यो अस्मान्त्सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या ॥१८॥

॥ ३२ ॥ १–१५ हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ त्रि
छन्दः ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ३२ ॥ इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
हन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम् ॥ १ ॥ अहन्नहिं पर्वते शि
णं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष । वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समु
जग्मुरापः ॥ २ ॥ वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य । आ
कं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम् ॥ ३ ॥ यदिन्द्राहन्प्रथमजामही
न्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः । आत्सूर्यं जनयन्द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न
विवित्से ॥ ४ ॥ अहन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रो वज्रेण महता वधेन । स्कन्धा
कुलिशेना विवृक्णाहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः ॥ ५ ॥ ३६ ॥ अयोद्धेव
आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम् । नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुज
पिपिष इन्द्रशत्रुः ॥ ६ ॥ अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रमधि सानौ जघ
वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन्पुरुत्रा वृत्रो अशयद्व्यस्तः ॥ ७ ॥ नदं न
ममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः । याश्चिद्वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत्
महिः पत्सुतः शीर्बभूव ॥ ८ ॥ नीचावया अभवद्वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव
भार । उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद्दानुः शये सहवत्सा न धेनुः ॥ ९ ॥ अ
न्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम् । वृत्रस्य निण्यं वि चर
पो दीर्घं तम आशयदिन्द्रशत्रुः ॥ १० ॥ ३७ ॥ दासपत्नीरहिगोपा अति

था आपः पणिनेव गावः। अपां बिलमपिहितं यदासीद्वृत्रं जघन्वाँ अप तद्व-
:॥ ११ ॥ अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः। अजयो
अजयः शूर सोममवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून् ॥ १२ ॥ नास्मै विद्युन्न तन्य-
सिषेध न यां मिहमकिरद्ध्रादुनिं च। इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चोतापरीभ्यो
वा वि जिग्ये ॥ १३ ॥ अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यत्ते जघ्नुषो भीरग-
त्। नव च यन्नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि ॥ १४ ॥
द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः। सेदु राजा क्षयति
णीनामरान्न नेमिः परि ता बभूव ॥ १५ ॥ ३८ ॥ २ ॥

॥ ३३ ॥ १—१५ हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥
दः—१, २, ४, ८, ६, १२, १३ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ६, १० त्रिष्टुप्। ५,
११ विराट् त्रिष्टुप्। १४, १५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—१३ धैवतः।
, १५ पञ्चमः ॥

॥ ३३ ॥ एतायामोप गव्यन्त इन्द्रमस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति। अनामृणः
वेदादस्य रायो गवां केतं परमावर्जते नः ॥ १ ॥ उपेदहं धनदामप्रतीतं जुष्टां
श्येनो वसतिं पतामि। इन्द्रं नमस्यन्नुपमेभिरर्कैर्यः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन्
२ ॥ नि सर्वसेन इषुधीँरसक्त समर्यो गा अजति यस्य वष्टि। चोष्कूयमाण
भूरि वामं मा पणिर्भूरस्मदधि प्रवृद्ध ॥ ३ ॥ वधीर्हि दस्युं धनिनं घनेनँ ए-
रन्नुपशाकेभिरिन्द्र। धनोरधि विषुणक्ते व्यायन्नयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः
४ ॥ परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्रायज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः। प्र यद्दिवो
वः स्थातरुग्र निरव्रताँ अधमो रोदस्योः ॥ ५ ॥ १ ॥ अयुयुत्सन्ननवद्यस्य
ामयातयन्त क्षितयो नवग्वाः। वृषायुधो न वध्रयो निरष्टाः प्रवद्भिरिन्द्राच्चित-
आयन् ॥ ६ ॥ त्वमेतान्रुदतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे। अवादहो
आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः ॥ ७ ॥ चक्राणासः परीणहं पृ-
्या हिरण्येन मणिना शुम्भमानाः। न हिन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पशो
धात्सूर्येण ॥ ८ ॥ परि यदिन्द्र रोदसी उभे अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम्।
न्यमानाँ अभि मन्यमानैर्निर्ब्रह्मभिरधमो दस्युमिन्द्र ॥ ६ ॥ न ये दिवः पृथि-
अन्तमापुर्न मायाभिर्धनदां पर्यभूवन्। युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रो निर्ज्योतिषा
सो गा अदुक्षत् ॥ १० ॥ २ ॥ अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्यावर्धत मध्य आ

नाव्यानाम् । सध्रीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नभि द्यून् ॥ ११
न्याविध्यदिलीबिशस्य दृळ्हा वि शृङ्गिणमभिनच्छुष्णमिन्द्रः । यावत्तरो मघवन्य
दोजो वज्रेण शत्रुमवधीः पृतन्युम् ॥ १२ ॥ अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रू
तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत् । सं वज्रेणासृजद्वृत्रमिन्द्रः प्र स्वां मतिमतिरच्छ
दानः ॥ १३ ॥ आवः कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन्प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्यु
शफच्युतो रेणुर्नक्षत द्यामुच्छ्वैत्रेयो नृषाह्याय तस्थौ ॥ १४ ॥ आवः शमं
तुग्र्यासु क्षेत्रजेषे मघवञ्छ्वित्र्यं गाम् । ज्योक् चिदत्र तस्थिवांसो अक्रञ्छत्रू
मधरा वेदनाकः ॥ १५ ॥ ३ ॥

॥ ३४ ॥ १-१२ हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥
छन्दः—१, ६ विराड् जगती । २, ३, ७, ८ । निचृज्जगती ५, १०, ११
गती ४ । भुरिक् त्रिष्टुप् । १२ निचृत् त्रिष्टुप् । ९ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—
५-८, १०, ११ निषादः ४, १२, ९ पञ्चमः ॥

॥ ३४ ॥ त्रिश्चिन्नो अद्या भवतं नवेदसा विभुर्वां याम उत रातिरश्विना
वोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससोऽभ्यायंसेन्या भवतं मनीषिभिः ॥ १ ॥ त्रयः प
मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः । त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आ
त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा ॥ २ ॥ समाने अहन्त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं
धुना मिमिक्षतम् । त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्
॥ ३ ॥ त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम् । त्रिर्नान्द्यं वह
श्विना युवं त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम् ॥४॥ त्रिर्नो रयिं वहतमश्विन
त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं धियः । त्रिः सौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नस्त्रिष्ठं वां सू
हितारुहद्रथम् ॥५॥ त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु
मद्भ्यः । ओमानं शंयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती ॥ ६ ॥
त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् । तिस्रो नास
रथ्या परावत आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छतम् ॥ ७ ॥ त्रिरश्विना सिन्धु
सप्तमातृभिस्त्रय आहावास्त्रेधा हविष्कृतम् । तिस्रः पृथिवीरुपरि प्रवा दिवो
रक्षेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम् ॥ ८ ॥ क्व त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व त्रयो वन्धु
सनीळाः । कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः ॥ ९ ॥
नासत्या गच्छतं हूयते हविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः । युवोर्हि पूर्वं सवितो

मृताय चित्रं घृतवन्तमिष्यति ॥ १० ॥ आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभि-
तं मधुपेयमश्विना । प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा
११ ॥ आ नो अश्विना त्रिवृता रथेनार्वाञ्चं रयिं वहतं सुवीरम् । शृण्वन्ता
मवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ ३५ ॥ १–११ हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः ॥ देवताः—१ अग्निर्मित्राव-
णौ रात्रिः सविता । २–११ सविता ॥ छन्दः—१ विराड् जगती । ९ निचृ-
गती । २, ५, १०, ११, विराट् त्रिष्टुप् ३, ४, ६ त्रिष्टुप् ७, ८ भुरिक् पङ्क्तिः ॥
रः—१, ९ निषादः । २, ५, १०, ११, ३, ४, ६ धैवतः ७, ८ पञ्चमः ॥

॥ ३५ ॥ ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे । ह्वयामि रात्रीं
तो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये ॥ १ ॥ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो
वेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्
२ ॥ याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम् । आ देवो
ति सविता परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमानः ॥ ३ ॥ अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हि-
यशम्यं यजतो बृहन्तम् । आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं
ानः ॥ ४ ॥ वि जनाञ्छ्यावाः शितिपादो अख्यन्रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः ।
वद्विशः सवितुर्दैव्यस्योपस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः ॥ ५ ॥ तिस्रो द्यावः स-
तुर्द्वा उपस्थाँ एका यमस्य भुवने विराषाट् । आणिं न रथ्यममृताधि तस्थुरिह
ीतु य उ तच्चिकेतत् ॥ ६ ॥ ६ ॥ वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद्गभीरवेपा असुरः
नीथः । क्वे३दानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान ॥ ७ ॥ अष्टौ व्य-
यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् । हिरण्याक्षः सविता देव आ-
दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ॥ ८ ॥ हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे द्यावा-
थिवी अन्तरीयते । अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति
९ ॥ हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ् । अपसेधन्र-
सो यातुधानानस्थाद्देवः प्रतिदोषं गृणानः ॥ १० ॥ ये ते पन्थाः सवितः पू-
सोऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे । तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो
धि च ब्रूहि देव ॥ ११ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ३६ ॥ १–२० घोर ऋषिः १–२० अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, १२ भुरि-
ुष्टुप् । २ निचृत्सतः पङ्क्तिः ४ निचृत्पङ्क्तिः । १०, १४ निचृद्विष्टारपङ्क्तिः । १८

विष्टारपङ्क्तिः । २० सतः पङ्क्तिः । ३, ११ निचृत्पथ्या बृहती । ५, १६ निचृद्बृह
६ भुरिग् बृहती ७ बृहती । ८ स्वराड् बृहती । ९ निचृदुपरिष्टाद्बृहती ।
उपरिष्टाद्बृहती । १५ विराट् पथ्याबृहती । १७ विराडुपरिष्टाद्बृहती । १९ प
बृहती ॥ स्वरः—१, १२ गान्धारः । २, ४, १०, १४, १८, २० पञ्चमः
११, ५, १६, ६-९, १३, १५, १७, १९ मध्यमः ॥

॥ ३६ ॥ प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम् । अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिर
यं सीमिदन्य ईळते ॥ १ ॥ जनासो अग्निं दधिरे सहोवृधं हविष्मन्तो विधेम ते । स
नो अद्य सुमना इहाविता भवा वाजेषु सन्त्य ॥ २ ॥ प्र त्वा दूतं वृणीमहे हो
विश्ववेदसं । महस्ते सतो वि चरन्त्यर्चयो दिवि स्पृशन्ति भानवः ॥ ३ ॥
सस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा सं दूतं प्रत्नमिन्धते । विश्वं सो अग्ने जयति
धनं यस्ते ददाश मर्त्यः ॥ ४ ॥ मन्द्रो होता गृहपतिरग्ने दूतो विशामसि
विश्वा संगतानि व्रता ध्रुवा यानि देवा अकृण्वत ॥ ५ ॥ ८ ॥ त्वे इदग्ने
भगे यविष्ठ्य विश्वमा हूयते हविः । स त्वं नो अद्य सुमना उतापरं यक्षि
न्त्सुवीर्या ॥ ६ ॥ तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते । होत्राभिरग्निं म
समिन्धते तितिर्वांसो अति स्रिधः ॥ ७ ॥ घ्नन्तो वृत्रमतरन्रोदसी अप उरु
याय चक्रिरे । भुवत्कण्वे वृषा द्युम्न्याहुतः क्रन्ददश्वो गविष्टिषु ॥ ८ ॥ सं
दस्व महाँ असि शोचस्व देववीतमः । वि धूममग्ने अरुषं मियेध्य सृज प्र
दर्शतम् ॥ ९ ॥ यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन । यं कण्व
ध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः ॥ १० ॥ ९ ॥ यमग्निं मेध्यातिथिः कण्व
ऋतादधि तस्य प्रेषो दीदियुस्तमिमा ऋचस्तमग्निं वर्धयामसि ॥ ११ ॥ रायस्
स्वधावोऽस्ति हि तेऽग्ने देवेष्वाप्यम् । त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो
महाँ असि ॥ १२ ॥ ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता । ऊर्ध्वो
स्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥ १३ ॥ ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि के
विश्वं समत्रिणं दह । कृधी न ऊर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः ॥ १
पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः । पाहि रीषत उत वा जिघांसतो
द्भानो यविष्ठ्य ॥ १५ ॥ १० ॥ घनेव विष्वग्वि जह्यराव्णस्तपुर्जम्भ यो अ
ध्रुक् । यो मर्त्यः शिशीते अत्यक्तुभिर्मा नः स रिपुरीशत ॥ १६ ॥ अग्नि
सुवीर्यमग्निः कण्वाय सौभगम् । अग्निः प्रावन्मित्रोत मेध्यातिथिमग्निः
उपस्तुतम् ॥ १७ ॥ अग्निना तुर्वशं यदुं परावत उग्रादेवं हवामहे । अग्निर्न

ास्त्वं बृहद्रथं तुर्वीतिं दस्यवे सहः ॥ १८ ॥ नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय
वते । दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥ १९ ॥ त्वेषासो
नेरमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये । रक्षस्विनः सदमिद्यातुमावतो विश्वं
ात्रिणं दह ॥ २० ॥ ११ ॥

॥ ३७ ॥ १-१५ कण्वो घौर ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः--१, २, ४,
-८, १२ गायत्री । ३, ६, ११, १४ निचृद् गायत्री । ५ विराड् गायत्री । १०,
पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री १३ पादनिचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३७ ॥ क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम् । कण्वा अभि प्र गायत
१ ॥ ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिरञ्जिभिः । अजायन्त स्वभानवः
२ ॥ इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान् । नि यामञ्चित्रमृञ्जते ॥ ३ ॥
वः शर्धाय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत ॥ ४ ॥ प्र शंसा
ष्वघ्न्यं क्रीळं यच्छर्धो मारुतम् । जम्भे रसस्य वावृधे ॥ ५ ॥ १२ ॥ को वो व-
ष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः । यत्सीमन्तं न धूनुथ ॥ ६ ॥ नि वो या-
य मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे । जिहीत पर्वतो गिरिः ॥ ७ ॥ येषामज्मेषु पृ-
वी जुजुर्वां इव विश्पतिः । भिया यामेषु रेजते ॥ ८ ॥ स्थिरं हि जानमेषां वयो
तुर्निरेतवे । यत्सीमनु द्विता शवः ॥ ९ ॥ उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा अज्मे-
त्नत । वाश्रा अभिज्ञु यातवे ॥ १० ॥ १३ ॥ त्यं चिद्घा दीर्घं पृथुं मिहो न-
तममृध्रम् । प्र च्यावयन्ति यामभिः ॥ ११ ॥ मरुतो यद्ध वो बलं जनाँ अचु-
वीतन । गिरीँरचुच्यवीतन ॥ १२ ॥ यद्ध यान्ति मरुतः सं ह ब्रुवतेऽध्वन्ना । शृणोति
श्चिदेषाम् ॥ १३ ॥ प्र यात शीभमाशुभिः सन्ति कण्वेषु वो दुवः । तत्रो षु
दयाध्वै ॥ १४ ॥ अस्ति हि ष्मा मदाय वः स्मसि ष्मा वयमेषाम् । विश्वं चिदा-
र्जीवसे ॥ १५ ॥ १४ ॥

॥ ३८ ॥ १—१५ कण्वो घौर ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः–१, ८, ११,
, १५, ४, गायत्री । २, ६, ७, ९, १० निचृद्गायत्री । ३ पादनिचृद्-
यत्री । ५, १२ पिपीलिका मध्या निचृत् । १४ यवमध्या विराड् गायत्री ॥
्जः स्वरः ॥

॥ ३८ ॥ कद्ध नूनं कधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः । दधिध्वे वृक्तबर्हिषः
१ ॥ क्व नूनं कद्वो अर्थं गन्ता दिवो न पृथिव्याः । क्व वो गावो न रण्यन्ति

॥ २ ॥ क्व वः सुम्ना नव्यांसि मरुतः क्व सुविता । क्वो३ विश्वानि सौभगा ॥ ३
यद्यूयं पृश्निमातरो मर्तासः स्यातन । स्तोता वो अमृतः स्यात् ॥ ४ ॥ मा वो मृ
न यवसे जरिता भूदजोष्यः । पथा यमस्य गादुप ॥ ५ ॥ १५ ॥ मो षु णः परापरा
र्ऋतिर्दुर्हणा वधीत् । पदीष्ट तृष्णया सह ॥ ६ ॥ सत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्
ञ्चिदा रुद्रियासः । मिहं कृण्वन्त्यवाताम् ॥ ७ ॥ वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं
माता सिषक्ति । यदेषां वृष्टिरसर्जि ॥ ८ ॥ दिवा चित्तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनो
वाहेन । यत्पृथिवीं व्युन्दन्ति ॥ ९ ॥ अध स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्म पार्थिवम्
अरेजन्त प्र मानुषाः ॥ १० ॥ १६ ॥ मरुतो वीळुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु ।
तेमखिद्रयामभिः ॥ ११ ॥ स्थिरा वः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एषाम् । सु
स्कृता अभीशवः ॥ १२ ॥ अच्छा वदा तना गिरा जरायै ब्रह्मणस्पतिम् । अ
मित्रं न दर्शतम् ॥ १३ ॥ मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततनः । गाय गाय
मुक्थ्यम् ॥ १४ ॥ वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युमर्किणम् । अस्मे वृद्धा अ
न्निह ॥ १५ ॥ १७ ॥

॥ ३९ ॥ १—१० कण्वो घौर ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१,
९ पथ्याबृहती । ७ उपरिष्टाद्विराड् बृहती । २, ८, १० विराट् सतः पङ्क्ति
४, ६, निचृत्सतः पङ्क्तिः । ३ अनुष्टुप् । स्वरः—१, ५, ९, ७, मध्यमः ।
८, १०, ४, ६, पञ्चमः । ३ गान्धारः ॥

॥ ३९ ॥ प्र यदित्था परावतः शोचिर्न मानमस्यथ । कस्य क्रत्वा मरुतः
स्य वर्पसा कं याथ कं ह धूतयः ॥ १ ॥ स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू
प्रतिष्कभे । युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः ॥ २ ॥ परा
यत्स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु । वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतान्
॥ ३ ॥ नहि वः शत्रुर्विविदे अधि द्यवि न भूम्यां रिशादसः । युष्माकमस्तु
विषी तना युजा रुद्रासो नू चिदाधृषे ॥ ४ ॥ प्र वेपयन्ति पर्वतान्वि विञ्चन्ति
नस्पतीन् । प्रो आरत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा ॥ ५ ॥ १८
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति रोहितः । आ वो यामाय पृथिवी चिदश्रोद
भयन्त मानुषाः ॥ ६ ॥ आ वो मक्षू तनाय कं रुद्रा अवो वृणीमहे । गन्ता
नोऽवसा यथा पुरेत्था कण्वाय बिभ्युषे ॥ ७ ॥ युष्मेषितो मरुतो मर्त्येषित
यो नो अभ्व ईषते । वि तं युयोत शवसा व्योजसा वि युष्माकाभिरूतिभिः ॥

सामि हि प्रयज्यवः कण्वं दद प्रचेतसः । असामिभिर्मरुत आ नं ऊतिभिर्गन्ता
ष्टं न विद्युतः ॥ ९ ॥ असाम्योजो बिभृथा सुदानवोऽसामि धूतयः शवः । ऋ-
द्विषे मरुतः परिमन्यव इषुं न सृजत द्विषम् ॥ १० ॥ १९ ॥

॥ ४० ॥ १—८ कण्वो घौर ऋषिः ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ छन्दः—२, १, ८
चृदुपरिष्टाद्बृहती । ५ पथ्याबृहती । ३, ७ आर्चीत्रिष्टुप् । ४, ६ शतः पङ्क्ति-
चृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ८, ५ मध्यमः । ३, ७ धैवतः । ४, ६ पञ्चमः ॥

॥ ४० ॥ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे । उप प्र यन्तु मरुतः सुदा-
इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥ १ ॥ त्वामिद्धि सहसस्पुत्र मर्त्यं उपब्रूते धने हिते ।
वीर्यं मरुत आ स्वश्व्यं दधीत यो व आचके ॥ २ ॥ प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र दे-
तु सूनृता । अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥ ३ ॥ यो
घते ददाति सूनरं वसु स धत्ते अक्षिति श्रवः । तस्मा इळां सुवीरामा यजाम-
सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥ ४ ॥ प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम् । यस्मिन्निन्द्रो
रुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे ॥ ५ ॥ २० ॥ तमिद्वोचेमा विदथे-
शम्भुवं मन्त्रं देवा अनेहसम् । इमां च वाचं प्रतिहर्यथा नरो विश्वेद्वामा वो
श्नवत् ॥ ६ ॥ को देवयन्तमश्नवज्जनं को वृक्तबर्हिषम् । प्रप्र दाश्वान्पस्त्याभिर-
थतान्तर्वावत्क्षयं दधे ॥ ७ ॥ उप क्षत्रं पृञ्चीत हन्ति राजभिर्भये चित्सुक्षितिं
। नास्य वर्ता न तरुता महाधने नार्भे अस्ति वज्रिणः ॥ ८ ॥ २१ ॥

॥ ४१ ॥ १-९ कण्वो घौर ऋषिः ॥ देवता—१-३, ७-९ वरुणमित्रार्यमणः ।
-६ आदित्याः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ८, गायत्री । २, ३, ६ विराड् गायत्री । ७,
निचृद्गायत्री ॥ १-९ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४१ ॥ यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा । नू चित्स दभ्यते जनः
१ ॥ यं बाहुतेव पिप्रति पान्ति मर्त्यं रिषः । अरिष्टः सर्व एधते ॥ २ ॥ वि
र्गा वि द्विषः पुरो घ्नन्ति राजान एषाम् । नयन्ति दुरिता तिरः ॥ ३ ॥ सुगः
था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ॥ ४ ॥ यं यज्ञं
था नर आदित्या ऋजुना पथा । प्र वः स धीतये नशत् ॥ ५ ॥ २२ ॥ स
नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना । अच्छा गच्छत्यस्तृतः ॥ ६ ॥ कथा राधा-
सखायः स्तोमं मित्रस्यार्यम्णः । महि प्सरो वरुणस्य ॥ ७ ॥ मा वो घ्नन्तं

मा शपन्तं प्रति वोचे देवयन्तम् । सुम्नैरिद्व आ विवासे ॥ ८ ॥ चतुरश्चिद्ददम
द्विभीयादा निधातोः । न दुरुक्ताय स्पृहयेत् ॥ ६ ॥ २३ ॥

॥ ४२ ॥ १–१० कण्वो घौर ऋषिः ॥ पूषा देवता ॥ छन्दः १, ६
चृद्गायत्री । २, ३, ५–८, १० गायत्री ४ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ।

॥ ४२ ॥ सं पूषन्नध्वनस्तिर व्यंहो विमुचो नपात् । सक्ष्वा देव प्र णस
॥ १ ॥ यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेव आदिदेशति । अप स्म तं पथो जहि ॥
अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमधि स्रुतेरज ॥ ३ ॥ त्वं तस्य
याविनोऽघशंसस्य कस्य चित् । पदाभि तिष्ठ तपुषिम् ॥ ४ ॥ आ तत्ते
मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे । येन पितॄनचोदयः ॥ ५ ॥ २४ ॥ अधा नो वि
सौभग हिरण्यवाशीमत्तम । धनानि सुषणा कृधि ॥ ६ ॥ अति नः सश्चतो
सुगा नः सुपथा कृणु । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ७ ॥ अभि सूयवसं नय न
ज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ८ ॥ शग्धि पूर्धि प्र यंसि च शिशी
भास्युदरम् । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ६ ॥ न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीम
वसूनि दस्ममीमहे ॥ १० ॥ २५ ॥

॥ ४३ ॥ १–६ कण्वो घौर ऋषिः ॥ देवता–१, २, ४–६ रुद्रः । ३ मि
रुणौ । ७–६ सोमः ॥ छन्दः– १–४, ७, ८ गायत्री ५ विराड्गायत्र
पादनिचृद्गायत्री । ६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः १–८ षड्जः । ६ गान्धारः ॥

॥ ४३ ॥ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शन्तमं हृदे ॥
यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे । यथा तोकाय रुद्रियम् ॥
यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ॥ ३ ॥
थपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् । तच्छंयोः सुम्नमीमहे ॥ ४ ॥ यः शुक्र
सूर्यो हिरण्यमिव रोचते । श्रेष्ठो देवानां वसुः ॥ ५ ॥ २६ ॥ शं नः करत
सुगं मेषाय मेष्ये । नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ ६ ॥ अस्मे सोम श्रियमधि नि
शतस्य नृणाम् । महि श्रवस्तुविनृम्णम् ॥ ७ ॥ मा नः सोम परिबाधो मारा
जुहुरन्त । आ न इन्द्रो वाजे भज ॥ ८ ॥ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धा
तस्य । मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ॥ ६ ॥ २७ ॥ ८ ॥

॥ ४४ ॥ १–१४ प्रस्कण्व ऋषिः ॥ देवता १–१४ अग्निः ॥ छन्दः
५ उपरिष्टाद्विराड्बृहती ३ निचृदुपरिष्टाद्बृहती ७, ११ निचृत्पथ्याबृ

भुरिग्बृहती १३ पथ्याबृहती च २, ४, ६, ८,१४ विराट् सतः पङ्क्तिः १०
ड्विस्तारपङ्क्तिः । ६ आर्ची त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ५, ३, ७, ११—१३ मध्यमः
४,६,८, १४, १०पञ्चमः । ६ धैवतः ॥

॥ ४४ ॥ अग्ने॒ विव॑स्वदु॒षस॑श्चि॒त्रं राधो॑ अमर्त्य। आ दा॒शुषे॑ जातवेदो वहा
त्या दे॒वाँ उ॑ष॒र्बुधः॑ ॥ १ ॥ जुष्टो॒ हि दू॒तो असि॑ हव्य॒वाह॒नोऽग्ने॑ र॒थीर॑ध्व॒रा-
म् । स॒जूर॒श्विभ्या॑मु॒षसा॑ सु॒वीर्य॑म॒स्मे धे॑हि॒ श्रवो॑ बृ॒हत् ॥ २ ॥ अ॒द्या दू॒तं वृ॑णी-
वसु॑म॒ग्निं पु॑रुप्रि॒यम् । धू॒मके॑तुं॒ भाऋ॑जीकं॒ व्यु॑ष्टिषु य॒ज्ञाना॑मध्वर॒श्रिय॑म् ॥ ३ ॥
यवि॑ष्ठ॒मति॑थिं॒ स्वाहु॑तं॒ जुष्टं॒ जना॑य दा॒शुषे॑ । दे॒वाँ अच्छा॒ यात॑वे जा॒तवे॑दसम॒-
मी॑ळे॒ व्यु॑ष्टिषु ॥ ४ ॥ स्त॒वि॒ष्यामि॒ त्वाम॒हं विश्व॑स्यामृत भोजन । अग्ने॑ त्रा॒-
म॒मृतं॑ मियेध्य॒ यजि॑ष्ठं हव्यवाहन ॥ ५ ॥ २८ ॥ सु॒शंसो॑ बोधि गृण॒ते य॑वि-
मधु॑जिह्वः॒ स्वाहु॑तः । प्रस्क॑ण्वस्य प्रति॒रन्नायु॑र्जी॒वसे॑ नम॒स्या दैव्यं॒ जन॑म् ॥६॥
॑रं वि॒श्ववे॑दसं॒ सं हि त्वा॒ विश॑ इ॒न्धते॑ । स आ व॑ह पुरुहूत॒ प्रचे॑त॒सोऽग्ने॑ दे॒-
इ॒ह द्र॒वत् ॥ ७ ॥ स॒वि॒तार॑मु॒षस॑म॒श्विना॒ भग॑म॒ग्निं व्यु॑ष्टिषु॒ क्षपः॑ । कण्वा॑स-
सु॒तसो॑मास इन्धते हव्य॒वाहं॑ स्वध्वर ॥ ८ ॥ पति॒र्ह्य॑ध्व॒राणा॒मग्ने॑ दू॒तो वि॒-
सि॑ । उ॒ष॒र्बुध॒ आ व॑ह॒ सोम॑पीतये दे॒वाँ अ॒द्य स्व॒र्दृशः॑ ॥ ९ ॥ अग्ने॒ पूर्वा॒ अ-
सो॑ विभावसो दी॒देथ॑ वि॒श्वद॑र्शतः । असि॒ ग्रामे॑ष्ववि॒ता पु॒रोहि॒तोऽसि॑ य॒ज्ञेषु
षः ॥ १० ॥ २९ ॥ नि त्वा॑ य॒ज्ञस्य॒ साध॑न॒मग्ने॒ होता॑रमृ॒त्विज॑म् । म॒नु॒ष्वद्दे॑व
हि॒ प्रचे॑तसं जी॒रं दू॒तमम॑र्त्यम् ॥ ११ ॥ यद्दे॒वानां॑ मित्रमहः पु॒रोहि॑तोऽन्त॑रो
सि दू॒त्य॑म् । सिन्धो॑रिव॒ प्रस्व॑नितास ऊ॒र्मयो॒ऽग्नेर्भ्रा॑जन्ते अ॒र्चयः॑ ॥ १२ ॥ श्रु॒धि
कर्ण वह्नि॑भिर्दे॒वैर॑ग्ने स॒याव॑भिः । आ सी॑दन्तु ब॒र्हिषि॑ मि॒त्रो अ॑र्य॒मा प्रा॑त॒र्या-
सो अध्व॒रम् ॥ १३ ॥ शृ॒ण्वन्तु॒ स्तोमं॑ म॒रुतः॑ सु॒दान॑वोऽग्निजि॒ह्वा ऋ॑ता॒वृधः॑ ।
तु सोमं॒ वरु॑णो धृ॒तव्र॑तो॒ऽश्विभ्या॑मु॒षसा॑ स॒जूः ॥ १४ ॥ ३० ॥

॥ ४५ ॥ १—१० प्रस्कण्वः काण्व ऋषिः॥ १—१० अग्निर्देवा देवताः ॥
:—१ भुरिगुष्णिक् । ५ उष्णिक् । २, ३, ७, ८ अनुष्टुप् । ४ निचृदनुष्टुप् ।
६, १० विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५ ऋषभः । २—४,६—१० गान्धारः ॥

॥ ४५ ॥ त्वम॑ग्ने॒ वसूँ॑रि॒ह रु॒द्राँ आ॑दि॒त्याँ उ॒त । यजा॑ स्वध्व॒रं जनं॒ मनु॑जातं
घृ॒तप्रुषम् ॥ १ ॥ श्रु॒ष्टी॒वानो॒ हि दा॒शुषे॑ दे॒वा अ॑ग्ने॒ विचे॑तसः । तान्रो॑हिदश्व गिर्व-
त्रय॑स्त्रिंशत॒मा व॑ह ॥ २ ॥ प्रि॒य॒मे॒ध॒वद॑त्रि॒वज्जात॑वेदो विरूप॒वत् । अ॒ङ्गि॒र॒स्वन्म॑-

ह्विवत् प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् ॥ ३ ॥ महिकेरव ऊतये प्रियमेधा अहूषत । र
न्तमध्वराणामग्निं शुक्रेण शोचिषा ॥ ४ ॥ घृताहवन सन्त्येमा उ षु श्रुधी गि
याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा ॥ ५ ॥ ३१ ॥ त्वां चित्रश्रवस्तम ह
विन्तु जन्तवः । शोचिष्केशं पुरुप्रियाग्ने हव्याय वोळ्हवे ॥ ६ ॥ नि त्वा हो
रमृत्विजं दधिरे वसुवित्तमम् । श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं विप्रा अग्ने दिविष्टिषु ॥
आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः सुतसोमा अभि प्रयः । बृहद्भा बिभ्रतो हविरग्ने म
दाशुषे ॥ ८ ॥ प्रातर्याव्णः सहस्कृत सोमपेयाय सन्त्य । इहाद्य दैव्यं जनं ब
र्हिरा सादया वसो ॥ ९ ॥ अर्वाञ्चं दैव्यं जनमग्ने यक्ष्व सहूतिभिः । अयं सोम
दानवस्तं पात तिरोअह्न्यम् ॥ १० ॥ ३२ ॥

॥ ४६ ॥ १–१५ प्रस्कण्वः काण्व ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः
१० विराड्गायत्री ३, ११, ६, १२, १४, गायत्री । ५, ७, ९, १३, १५,
४, ८, निचृद्गायत्री ॥ १–१५ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४६ ॥ एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना
॥ १ ॥ या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम् । धिया देवा वसुविदा ॥
वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि । यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥ ३ ॥
विषा जारो अपां पिपर्ति पपुरिर्नरा । पिता कुटस्य चर्षणिः ॥ ४ ॥ आदारो
मतीनां नासत्या मतवचसा । पातं सोमस्य धृष्णुया ॥ ५ ॥ ३३ ॥ या नः
परदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम् ॥ ६ ॥ आ नो न
मतीनां यातं पाराय गन्तवे । युञ्जाथामश्विना रथम् ॥ ७ ॥ अरित्रं वां दिवस
तीर्थे सिन्धूनां रथः । धिया युयुज्र इन्दवः ॥ ८ ॥ दिवस्कण्वास इन्दवो वसु
न्धूनां पदे । स्वं वव्रिं कुह धित्सथः ॥ ९ ॥ अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्
व्यख्यज्जिह्वयासितः ॥ १० ॥ ३४ ॥ अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया ।
दर्शि वि स्रुतिर्दिवः ॥ ११ ॥ तत्तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति । मदे
मस्य पिप्रतोः ॥ १२ ॥ वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा । मनुष्वच्
आ गतम् ॥ १३ ॥ युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् । ऋतावनथो अक्तु
॥ १४ ॥ उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम् । अविद्रियाभिरूतिभिः
॥ १५ ॥ ३५ ॥ ३ ॥

॥ ४७ ॥ १–१० प्रस्कण्वः काण्व ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१,

वृत्पथ्या बृहती । ३, ७ पथ्या बृहती । ६ विराड् पथ्या बृहती । २, ६, ८
वृत्सतः पङ्क्तिः । ४, १० सतः पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ५, ३, ७, ६ मध्यमः २,
८, ४, १० पञ्चमः ॥

॥ ४७ ॥ अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम ऋतावृधा । तमश्विना पिबतं ति-
रोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥१॥ त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा रथेना यातमश्विना
ण्वासो वां ब्रह्म कृण्वन्त्यध्वरे तेषां सु शृणुतं हवम् ॥ २ ॥ अश्विना मधुमत्तमं
तं सोममृतावृधा । अथाद्य दस्रा वसु बिभ्रता रथे दाश्वांसमुप गच्छतम् ॥ ३ ॥
षधस्थे बर्हिषि विश्ववेदसा मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् । कण्वासो वां सुतसोमा अ-
द्यवो युवां हवन्ते अश्विना ॥ ४ ॥ याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना ।
भिः ष्वस्माँ अवतं शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ॥ ५ ॥ १ ॥ सुदासे दस्रा
बिभ्रता रथे पृक्षो वहतमश्विना । रयिं समुद्रादुत वा दिवस्पर्यस्मे धत्तं पुरु-
हम् ॥ ६ ॥ यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे । अतो रथेन सुवृता
आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ ७ ॥ अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो व-
तु सवनेदुप । इषं पृञ्चन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिः सीदतं नरा ॥ ८ ॥ तेन
सत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा येन शश्वदूहथुर्दाशुषे वसु मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ९ ॥
थेभिरर्वागवसे पुरूवसू अर्कैश्च नि ह्वयामहे । शश्वत्कण्वानां सदसि प्रिये हि
सोमं पपथुरश्विना ॥ १० ॥ २ ॥

॥ ४८ ॥ १–१६ प्रस्कण्व ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः–१, ३, ७, ९
राड् पथ्या बृहती ५, ११, १३ निचृत् पथ्या बृहती च १२ बृहती १५ पथ्या
ती ४, ६, १४ विराड् सतः पङ्क्तिः २, १०, १६ निचृत्सतः पङ्क्तिः ८ पङ्क्तिः
रः–१, ३, ७, ९, ५, ११, १३, १२, १५ मध्यमः ४, ६, १४, २, १०, १६,
पञ्चमः ॥

॥ ४८ ॥ सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः । सह द्युम्नेन बृहता विभा-
रि राया देवि दास्वती ॥ १ ॥ अश्वावतीर्गोमतीर्विश्वसुविदो भूरि च्यवन्त व-
वे । उदीरय प्रति मा सूनृता उषश्चोद राधो मघोनाम् ॥ २ ॥ उवासोषा उच्छाच्च
देवी जीरा रथानाम् । ये अस्या आचरणेषु दध्रिरे समुद्रे न श्रवस्यवः ॥ ३ ॥
ो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः । अत्राह तत्कण्व एषां कण्व-
ो नाम गृणाति नृणाम् ॥ ४ ॥ आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुञ्जती । ज-

रयन्ती वृजनं पुद्वदीयत उत्पातयति पक्षिणः ॥ ५ ॥ ३ ॥ वि या सृजति स
न्यं१र्थिनः पुदं न वेत्योदती । वयो नकिष्टे पप्तिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनी
॥ ६ ॥ एषायुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि । शतं रथेभिः सुभगोषा
वि यात्यभि मानुषान् ॥ ७ ॥ विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणो
सूनरी । अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्त्रिधः ॥ ८ ॥ उष
भाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः । आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभगं व्युच्छन्ती
विष्टिषु ॥ ९ ॥ विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरि । सा नो
थेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघे हवम् ॥ १० ॥ ४ ॥ उषो वाजं हि वंस्व
श्चित्रो मानुषे जने । तेना वह सुकृतो अध्वराँ उप ये त्वा गृणन्ति वन्हयः ॥१
विश्वान्देवाँ आ वह सोमपीतयेऽन्तरिक्षादुषस्त्वम् । सास्मासु धा गोमदश्वावदुक
१मुषो वाजं सुवीर्यम् ॥ १२ ॥ यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदृक्षत । सा
रयिं विश्ववारं सुपेशसमुषा ददातु सुग्म्यम् ॥ १३ ॥ ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्वे
तये जुहूरेऽवसे महि । सा नः स्तोमाँ अभि गृणीहि राधसोषः शुक्रेण शोचि
॥ १४ ॥ उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः । प्र नो यच्छतादवृकं
छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः ॥ १५ ॥ सं नो राया बृहता विश्वपेशसा मिमि
समिळाभिरा । सं द्युम्नेन विश्वतुरोषो महि सं वाजैर्वाजिनीवति ॥ १५ ॥

॥ ४९ ॥ १—४ प्रस्कण्वः काण्व ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ निचृदनुष्टुप् छन्द
गान्धारः स्वरः ॥

॥ ४९ ॥ उषो भद्रेभिरा गहि दिवश्चिद्रोचनादधि । वहन्त्वरुणप्सव
त्वा सोमिनो गृहम् ॥ १ ॥ सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्त्वम् । तेना
वसं जनं प्रावाद्य दुहितर्दिवः ॥ २ ॥ वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपच्चतुष्पदर्जुनि ।
प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥ ३ ॥ व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि
चनम् । तां त्वामुषर्वसूयवो गीर्भिः कण्वा अहूषत ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ ५० ॥ १—१३ प्रस्कण्वः काण्व ऋषिः ॥ सूर्यो देवता ॥ छन्दः—
६ निचृद्गायत्री । २, ४, ८, ९ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री । ३ गायत्री
यवमध्या विराड्गायत्री । ७ विराड्गायत्री १०, ११ निचृदनुष्टुप् । १२,
अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—९ षड्जः १०—१३ गान्धारः ॥

॥ ५० ॥ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ।

ा त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः । सूराय विश्वचक्षसे ॥ २ ॥ अदृश्र-
य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥ ३ ॥ तरणिर्विश्व-
ातो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचनम् ॥ ४ ॥ प्रत्यङ् देवानां विशः
यङ्ङुदेषि मानुषान् । प्रत्यङ्विश्वं स्वर्दृशे ॥ ५ ॥ ७ ॥ येना पावक चक्षसा भु-
यन्तं जनाँ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥ ६ ॥ वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहा मिमानो
क्तुभिः । पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥ ७ ॥ सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य ।
चिष्केशं विचक्षण ॥ ८ ॥ अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः । ताभि-
ति स्वयुक्तिभिः ॥ ९ ॥ उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा
मगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ १० ॥ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् । हृद्रोगं
सूर्य हरिमाणं च नाशय ॥ ११ ॥ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि ।
ो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि ॥ १२ ॥ उदगादयमादित्यो विश्वेन स-
ा सह । द्विषन्तं मह्यं रन्धयन्मो अहं द्विषते रधम् ॥ १३ ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ ५१ ॥ १—१५ सव्य आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
९, १० जगती । २, ५, ८ विराड् जगती । ११—१३ निचृज्जगती ३,
भुरिक् त्रिष्टुप् ६, ७ त्रिष्टुप् १४, १५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ९,
, ५, ११—१३, ८ निषादः । ३, ४, ६, ७, १४, १५ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५१ ॥ अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् । य-
द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ १ ॥ अभीमवन्वन्त्स्व-
ष्टिमूतयोऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् । इन्द्रं दक्षास ऋभवो मदच्युतं शत-
जवनी सूनृतारुहत् ॥ २ ॥ त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोतात्रये शतदुरेषु
तुवित् । ससेन चिद्विमदायावहो वस्वाजावद्रिं वावसानस्य नर्तयन् ॥ ३ ॥
पामपिधानावृणोरपाधारयः पर्वते दानुमद्वसु । वृत्रं यदिन्द्र शवसावधीरहिमा-
सूर्यं दिव्यारोहयो दृशे ॥ ४ ॥ त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये
धि शुप्तावजुह्वत । त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वाविथ
॥ ५ ॥ त्वं कुत्सं शुष्णहत्येष्वाविथारन्धयोऽतिथिग्वाय शम्बरम् । महान्तं
र्बुदं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहत्याय जज्ञिषे ॥ ६ ॥ त्वे विश्वा तविषी
ध्र्यग्घिता तव राधः सोमपीथाय हर्षते । तव वज्रश्चिकिते बाह्वोर्हितो वृश्चा श-
व विश्वानि वृष्ण्या ॥ ७ ॥ वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया
दव्रतान् । शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन

॥ ८ ॥ अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रतानाभूभिरिन्द्रः श्नथयन्ननाभुवः । वृद्धस्य चि
तो द्यामिनक्षतः स्तवानो वम्रो वि जघान संदिहः ॥ ६ ॥ तक्षद्यत्त उशना
हंसा सहो वि रोदसी मज्मना बाधते शवः । आ त्वा वातस्य नृमणो मन
आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः ॥ १० ॥ १० ॥ मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ
चङ्क्रू वङ्कुतराधि तिष्ठति । उग्रो ययिं निरपः स्रोतसासृजद्वि शुष्णस्य दृं
ऐरयत्पुरः ॥ ११ ॥ आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु
न्दसे । इन्द्र यथा सुतसोमेषु चाकनोऽनर्वाणं श्लोकमा रोहसे दिवि ॥ १
अददा अर्भां महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते । मेनाभवो वृषण
सुक्रतो विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या ॥ १३ ॥ इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके
ज्रेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः । अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयुरिन्द्र इद्रायः क्षयति प्र
॥ १४ ॥ इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुष्माय तवसेऽवाचि । अस्मिन्निन्
जने सर्ववीराः स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्त्स्याम ॥ १५ ॥ ११ ॥

॥ ५२ ॥ १–१५ सव्य आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–
भुरिक् त्रिष्टुप् । ७ त्रिष्टुप् । ६, १० स्वराट् त्रिष्टुप् । १२, । १३, १५ निचृत् त्रि
२–४ निचृज्जगती । ५, १४ जगती । ६, ११ विराड् जगती ॥ स्वरः–१,
१०, १२, १३, १५ धैवतः । २–६, ११, १४, निषादः ॥

॥ ५२ ॥ त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभ्वः साकमीरते ।
न वाजं हवनस्यदं रथमेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥ १ ॥ स पर्वतो न ध
ष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषु वावृधे । इन्द्रो यद्वृत्रमवधीन्नदीवृतमुब्जन्नर्णांसि
षाणो अन्धसा ॥ २ ॥ स हि द्वरो द्वरिषु वव्र ऊधनि चन्द्रबुध्नो मदवृद्धो मन
भिः । इन्द्रं तमह्वे स्वपस्यया धिया मंहिष्ठरातिं स हि पप्रिरन्धसः ॥ ३ ॥ आ
पृणन्ति दिवि सद्मबर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अभिष्टयः । तं वृत्रहत्ये अनु तस
तयः शुष्मा इन्द्रमवाता अहुतप्सवः ॥ ४ ॥ अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रघ्वी
प्रवणे सस्रुरूतयः । इन्द्रो यद्वज्री धृषमाणो अन्धसा भिनद्वलस्य परिधीँरिव
॥ ५ ॥ १२ ॥ परीं घृणा चरति तित्विषे शवोऽपो वृत्वी रजसो बुध्नमाशयत् । वृ
यत्प्रवणे दुर्गृभिश्वनो निजघन्थ हन्वोरिन्द्र तन्यतुम् ॥ ६ ॥ ह्रदं न हि त्वा न्यृषन्
यो ब्रह्माणीन्द्र तव यानि वर्धना । त्वष्टा चित्ते युज्यं वावृधे शवस्ततक्ष व
भिभूत्योजसम् ॥ ७ ॥ जघन्वाँ उ हरिभिः संभृतक्रतविन्द्र वृत्रं मनुषे गातुयन्न

च्छथा बाह्वोर्वज्रमायसमधारयो दिव्या सूर्यं दृशे ॥ ८ ॥ बृहत्स्वश्चन्द्रममंव-
क्थ्यंमकृण्वत भियसा रोहणं दिवः । यन्मानुषप्रधना इन्द्रमूतयः स्वर्नृषाचो
तोऽमदन्ननु ॥ ९ ॥ द्यौश्चिदस्यामवाँ अहेः स्वनादयोयवीद्भियसा वज्र इन्द्र
। वृत्रस्य यद्बद्बधानस्य रोदसी मदे सुतस्य शवसाभिनच्छिरः ॥ १० ॥ १३ ॥
न्विन्द्र पृथिवी दशभुजिरहानि विश्वा ततनन्त कृष्टयः । अत्राह ते मघवन्वि-
ं सहो द्यामनु शवसा बर्हणा भुवत् ॥ ११ ॥ त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः
भूत्योजा अवसे धृषन्मनः । चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेष्या
वम् ॥ १२ ॥ त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋष्ववीरस्य बृहतः पतिर्भूः । वि-
माप्रा अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमद्धा नकिरन्यस्त्वावान् ॥ १३ ॥ न यस्य द्या-
पृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः । नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य
यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक् ॥ १४ ॥ आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन्नाजौ
श्वे देवासो अमदन्ननु त्वा । वृत्रस्य यद्भृष्टिमता वधेन नि त्वमिन्द्र प्रत्यानं
न्थ ॥ १५ ॥ १४ ॥

॥ ५३ ॥ १–११ सव्य आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ३ नि-
ज्जगती । २ भुरिग्जगती । ४ जगती । ५, ७ विराड्जगती । ६, ८, ९ त्रिष्टुप् ।
० भुरिक् त्रिष्टुप् । ११ सतः पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–५, ७ निषादः ६, ८–१० धैवतः
१ पञ्चमः ॥

॥ ५३ ॥ न्यू३षु वाचं प्र महे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः । नू
द्धि रत्नं ससतामिवाविदन्न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते ॥ १ ॥ दुरो अश्वस्य
इन्द्र गोरसि दुरो यवस्य वसुन इनस्पतिः । शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः
खा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि ॥ २ ॥ शचीव इन्द्र पुरुकृद्द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चे-
ते वसु । अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः ॥ ३ ॥
भिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानो अमतिं गोभिरश्विना । इन्द्रेण दस्युं
यन्त इन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषा रभेमहि ॥ ४ ॥ समिन्द्र राया समिषा रभेमहि
वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः । सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वा-
या रभेमहि ॥ ५ ॥ १५ ॥ ते त्वा मदा अमदन्तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्र-
येषु सत्पते । यत्कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः ॥ ६ ॥
ा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा । नम्या यदिन्द्र सख्या

परावर्ति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम् ॥ ७ ॥ त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधी
जिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी । त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता
जिश्वना ॥ ८ ॥ त्वमेताञ्जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः । षष्टिं स
नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥ ९ ॥ त्वमाविथ सुश्रवसं
त्रोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम् । त्वमस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे
अरन्धनायः ॥ १० ॥ य उदृचीन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम ।
स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ॥ ११ ॥ १६ ॥

॥ ५४ ॥ १-११ सव्य आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
४, १० विराड्जगती । २, ३, ५ निचृज्जगती । ७ जगती । ६ विराट्त्रिष्टु
८, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । स्वरः—१-५, १०, ७ निषादः । ६, ८, ९, ११ धैवत

॥ ५४ ॥ मा नो अस्मिन्मघवन्पृत्स्वंहसि नहि ते अन्तः शवसः परीण
अक्रन्दयो नद्यो३रोरुवद्वना कथा न क्षोणीर्भियसा समारत ॥ १ ॥ अर्चा श
शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभि ष्टुहि । यो धृष्णुना शवसा रोदसी
वृषा वृषत्वा वृषभो न्यृञ्जते ॥ २ ॥ अर्चा दिवे बृहते शूष्यं१ वचः स्वक्षत्रं
धृषतो धृषन्मनः । बृहच्छ्रवा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां वृषभो रथो हि
॥ ३ ॥ त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयोऽव त्मना धृषता शम्बरं भिनत् । यन्मायिनो
न्दिनो मन्दिना धृषच्छितां गभस्तिमशनिं पृतन्यसि ॥ ४ ॥ नि यद्वृणक्षि श
नस्य मूर्धनि शुष्णस्य चिद्व्रन्दिनो रोरुवद्वना । प्राचीनेन मनसा बर्हणावता य
चित्कृणवः कस्त्वा परि ॥ ५ ॥ १७ ॥ त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीतिं
य्यं शतक्रतो । त्वं रथमेतशं कृत्व्ये धने त्वं पुरो नवतिं दम्भयो नव ॥ ६
घा राजा सत्पतिः शूशुवज्जनो रातहव्यः प्रति यः शासमिन्वति । उक्था व
अभिगृणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिवः ॥ ७ ॥ असमं क्षत्रमसमा म
प्रसोमपा अपसा सन्तु नेमे । ये त इन्द्र ददुषो वर्धयन्ति महि क्षत्रं स्थविरं वृष्ण
॥ ८ ॥ तुभ्येदेते बहुला अद्रिदुग्धाश्चमूषदश्चमसा इन्द्रपानाः । व्यश्नुहि तर्पया
ममेषामथा मनो वसुदेयाय कृष्व ॥ ९ ॥ अपामतिष्ठद्धरुणह्वरं तमोऽन्तर्वृत्रस्य
रेषु पर्वतः । अभीमिन्द्रो नद्यो वव्रिणा हिता विश्वा अनुष्ठाः प्रवणेषु जिघ्नते ॥
स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मे महि क्षत्रं जनाषाळिन्द्र तव्यम् । रक्षा च नो मघोनः
सूरीन्राये च नः स्वपत्या इषे धाः ॥ ११ ॥ १८ ॥

॥ ५५ ॥ १–८ सव्य आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ४ ज
ती। २, ५–७ निचृज्जगती । ३, ८ विराड्जगती ॥ १—८ निषादः स्वरः॥

॥ ५५ ॥ दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मह्ना पृथिवी चन प्रति । भीमस्तु-
मान्चर्षणिभ्य आतपः शिशीते वज्रं तेजसे न वंसगः ॥ १ ॥ सो अर्णवो न
ः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः । इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते
ात्स युध्म ओजसा पनस्यते ॥ २ ॥ त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य
णामिरज्यसि । प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ॥ ३ ॥
इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् । वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो
। क्षेमेण धेनां मघवा यदिन्वति ॥ ४ ॥ स इन्महानि समिथानि मज्मना कृणोति
म ओजसा जनेभ्यः । अधा चन श्रद्दधति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते
म् ॥ ५ ॥ १९ ॥ स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्ष्मया वृधान ओजसा
ाशयन् । ज्योतींषि कृण्वन्नवृकाणि यज्यवेऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत् ॥ ६ ॥
नाय मनः सोमपावन्नस्तु तेऽर्वाञ्चा हरी वन्दनश्रुदा कृधि । यमिष्ठासः सा-
यो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभ्नुवन्ति भूर्णयः ॥ ७ ॥ अप्रक्षितं वसु बि-
र्षि हस्तयोरषाळ्हं सहस्तन्वि श्रुतो दधे । आवृतासोऽवतासो न कर्तृभिस्तनूषु
क्रतव इन्द्र भूरयः ॥ ८ ॥ २० ॥

॥ ५६ ॥ १–६ सव्य आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३,
निचृज्जगती । २ जगती । ५ त्रिष्टुप् । ६ भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–४
षादः । ५, ६ धैवतः ॥

॥ ५६ ॥ एष प्र पूर्वीरव तस्य चम्रिषोऽत्यो न योषामुदयंस्त भुर्वणिः ।
मह पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम् ॥ १ ॥ तं गूर्तयो ने-
षः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः । पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो
रिं न वेना अधि रोह तेजसा ॥ २ ॥ स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न
जते तुजा शवः । येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि
॥ ३ ॥ देवी यदि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः । यो धृ-
ना शवसा बाधते तम इयर्ति रेणुं बृहदर्हरिष्वणिः ॥ ४ ॥ वि यत्तिरो धरु-
न्च्युतं रजोऽतिष्ठिपो दिव आतासु बर्हणा । स्वर्मीळ्हे यन्मद इन्द्र हर्ष्याह-
त्रं निरपामौब्जो अर्णवम् ॥ ५ ॥ त्वं दिवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र

सदनेषु माहिनः । त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाष्यास
॥ ६ ॥ २१ ॥

॥ ५७ ॥ १–६ सव्य आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१,
४ जगती । ३ विराट् । ६ निचृज्जगती । ५ भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-
६ निषादः । ५ मध्यमः ॥

॥ ५७ ॥ प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे । अ
मिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् ॥ १ ॥ अध ते वि
मनु हासदिष्टय आपो निम्नेव सवना हविष्मतः । यत्पर्वते न समशीत हर्यत
न्द्रस्य वज्रः श्नथिता हिरण्ययः ॥ २ ॥ अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो
शुभ्र आ भरा पनीयसे । यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो
यसे ॥ ३ ॥ इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः ॥ ४ ॥ भूरि त
वीर्यं१तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन्काममा पृण । अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इ
ते पृथिवी नेम ओजसे ॥ ५ ॥ त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वश
कर्तिथ । अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ॥
२२ ॥ १० ॥

॥ ५८ ॥ १–६ नोधा गौतम ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ५ जग
२ विराड् जगती । ४ निचृज्जगती । ३ त्रिष्टुप् । ६, ७, ९ निचृत् त्रिष्टुप् । ८
राड् त्रिष्टुप् । स्वरः–१, ५, २, ४ निषादः । ३, ६–९ धैवतः ॥

॥ ५८ ॥ नू चित्सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यद्दूतो अभवद्विवस्वत
वि साधिष्ठेभिः पथिभी रजो मम आ देवताता हविषा विवासति ॥ १ ॥
स्वमद्म युवमानो अजरस्तृष्वविष्यन्नतसेषु तिष्ठति । अत्यो न पृष्ठं प्रुषितस्य रो
दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत् ॥ २ ॥ क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता
षत्तो रयिषाळमर्त्यः । रथो न विक्ष्वृञ्जसान आयुषु व्यानुषग्वार्या देव ऋण
॥ ३ ॥ वि वातजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुहूभिः सृण्या तुविष्वणिः । तृषु
दग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ॥ ४ ॥ तपुर्जम्भो वन आ
तचोदितो यूथे न साह्वाँ अव वाति वंसगः । अभिव्रजन्नक्षितं पाजसा रजः स
तुश्चरथं भयते पतत्रिणः ॥ ५ ॥ २३ ॥ दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न

थं जनेभ्यः । होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने ॥ ६ ॥
ारं सप्त जुह्वो३यजिष्ठं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु । अग्निं विश्वेषामरतिं व-
ां सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ॥ ७ ॥ अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तो-
यो मित्रमहः शर्म यच्छ । अग्ने गृणन्तमंहस उरुष्योर्जो नपात्पूर्भिरायसीभिः
ः॥ भवा वरूथं गृणते विभावो भवा मघवन्मघवद्भ्यः शर्म । उरुष्याग्ने अंहसो
न्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ ९ ॥ २४ ॥

॥ ५९ ॥ १–७ नोधा गौतम ऋषिः ॥ अग्निर्वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः– १ नि-
् त्रिष्टुप् । २, ४ विराट् त्रिष्टुप् । ५—७ त्रिष्टुप् । ३ पङ्क्तिः ॥ स्वरः– १,
४, ५–७ धैवतः । ३ पञ्चमः ॥

॥ ५९ ॥ वया इदग्ने अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते । वैश्वानर
भिरसि क्षितीनां स्थूणेव जनाँ उपमिद्ययन्थ ॥ १ ॥ मूर्धा दिवो नाभिरग्निः
व्या अथाभवदरती रोदस्योः । तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्यो-
दार्याय ॥ २ ॥ आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि ।
पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा ॥ ३ ॥ बृहती इव सूनवे रोदसी
होता मनुष्यो३ न दक्षः । स्वर्वते सत्यशुष्माय पूर्वीर्वैश्वानराय नृतमाय
ः ॥ ४ ॥ दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्र रिरिचे महित्वम् । राजा कृ-
नामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ॥ ५ ॥ प्र नू महित्वं वृषभस्य
यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते । वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वाँ अधूनोत्काष्ठा अव
रं भेत् ॥ ६ ॥ वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो विभावा ।
वनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान् ॥ ७ ॥ २५ ॥

॥ ६० ॥ १–५ नोधा गौतम ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः– १ विराट्
ुप् । ३, ५ त्रिष्टुप् । २, ४ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ३, ५ धैवतः । २,
ञ्चमः ॥

॥ ६० ॥ वह्निं यशसं विदथस्य केतुं सुप्राव्यं दूतं सद्योअर्थम् । द्विजन्मानं
मिव प्रशस्तं रातिं भरद्भृगवे मातरिश्वा ॥ १ ॥ अस्य शासुरुभयासः सचन्ते
ष्मन्त उशिजो ये च मर्ताः । दिवश्चित्पूर्वो न्यसादि होता पृच्छ्यो विश्पति-
 वेधाः ॥ २ ॥ तं नव्यसी हृद आ जायमानमस्मत्सुकीर्तिर्मधुजिह्वमश्याः ।

यमृत्विजों वृजने मानुषासः प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त ॥ ३ ॥ उशिक्प
वसुर्मानुषेषु वरेण्यो होताधायि विक्षु । दमूना गृहपतिर्दम आँ अग्निर्भुवद्र
रयीणाम् ॥ ४ ॥ तं त्वां वयं पतिमग्ने रयीणां प्र शंसामो मतिभिर्गोतमा
आशुं न वाजम्भरं मर्जयन्तः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ ५ ॥ २६ ॥

॥ ६१ ॥ १-१६ नोधा गौतम ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-
१४, १६ विराट् त्रिष्टुप् । २, ७, ९, निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ४, ६, ८, १०
पङ्क्तिः । ५, १५ विराट् पङ्क्तिः । ११ भुरिक् पङ्क्तिः । १३ निचृत्पङ्क्तिः । स्वर
१, १४, १६, २, ७, ९ धैवतः । ३-६, ८, १०-१३, १५ पञ्चमः ॥

॥ ६१॥ अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय । ऋ
षमायाध्रिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा ॥ १ ॥ अस्मा इदु प्रय इव
मि भराम्याङ्गूषं बाधे सुवृक्ति । इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये
मर्जयन्त ॥ २ ॥ अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षां भराम्याङ्गूषमास्येन । मंहिष्ठम
क्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै ॥ ३ ॥ अस्मा इदु स्तोमं सं हि
रथं न तष्टेव तत्सिनाय । गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधि
॥ ४ ॥ अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वा३ समञ्जे । वीरं दानौकसं वन्
पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम् ॥ ५ ॥ २७ ॥ अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद्वज्रं स्वप
स्वर्यं१ रणाय । वृत्रस्य चिद्विदद्येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता कियेधाः ॥ ६
स्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवाञ्चार्वन्ना । मुषायद्विष्णुः पचतं
यान्विध्यद्वराहं तिरो अद्रिमस्ता ॥ ७ ॥ अस्मा इदु ग्नाश्चिद्देवपत्नीरिन्द्राय
हिहत्य ऊवुः । परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः ॥
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् । स्वराळिन्द्रो दम
विश्वगूर्तः स्वरिरमत्रो ववक्षे रणाय ॥९॥ अस्येदेव शवसा शुषन्तं वि वृश्चद्व
वृत्रमिन्द्रः । गा न व्राणा अवनीरमुञ्चदभि श्रवो दावने सचेताः ॥ १० ॥ २
अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद्वज्रेण सीमयच्छत् । ईशानकृद्दाशुषे दश
न्तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः ॥ ११ ॥ अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्र
शानः कियेधाः । गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेष्यन्नर्णांस्यपां चरध्यै ॥ १२ ॥ अस्ये
ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः । युधे यदिष्णान आयुधान्यृघायम
निरिणाति शत्रून् ॥१३॥ अस्येदु भिया गिरयश्च दृळहा द्यावा च भूमा जनुषस्तु

वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद्वीर्याय नोधाः ॥ १४ ॥ अस्मा इदु
नु दाय्येषामेको यद्वव्ने भूरेरीशानः । प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्व्ये सुष्विमा
न्द्रः ॥ १५ ॥ एवा ते हारियोजना सुवृक्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन् ।
विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ १६ ॥ २६ ॥ ४ ॥

॥ ६२ ॥ १—१३ नोधा गौतम ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४,
विराडार्षी त्रिष्टुप् । २, ५, ६ निचृदार्षीत्रिष्टुप् । १०—१३ आर्षी त्रिष्टुप् ।
७, ८ भुरिगार्षी पङ्क्तिः । स्वरः—१, २, ४—६, ६—१३ धैवतः । ३,
८ पञ्चमः ॥

॥ ६२ ॥ प्र मन्महे शवसानाय शूषमाङ्गूषं गिर्वणसे अङ्गिरस्वत् । सुवृ-
भिः स्तुवत ऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय ॥ १ ॥ प्र वो महे महि नमो भ-
माङ्गूष्यं शवसानाय साम । येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा
न्दन् ॥ २ ॥ इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ विदत्सरमा तनयाय धासिम् । बृहस्पतिर्भि-
द्रिं विदद्गाः समुस्रियाभिर्वावशन्त नरः ॥ ३ ॥ स सुष्टुभा स स्तुभा सप्त विप्रैः
णाद्रिं स्वर्यो३नवग्वैः । सरण्युभिः फलिगमिन्द्र शक्र वलं रवेण दरयो द-
ः ॥ ४ ॥ गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म वि वरुषसा सूर्येण गोभिरन्धः । वि भूम्या
थय इन्द्र सानु दिवो रज उपरमस्तभायः ॥ ५ ॥ १ ॥ तदु प्रयक्षतममस्य कर्म
स्य चारुतममस्ति दंसः । उपह्वरे यदुपरा अपिन्वन्मध्वर्णसो नद्य१ श्चतस्रः
॥ द्विता वि वव्रे सनजा सनीळे अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः । भगो न मेने
व्योमन्धारयद्रोदसी सुदंसाः ॥ ७ ॥ सनाद्दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा
ी स्वेभिरेवैः । कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या ॥ ८ ॥ स-
सख्यं स्वपस्यमानः सूनुर्दाधार शवसा सुदंसाः । आमासु चिद्दधिषे पक्वम-
पयः कृष्णासु रुशद्रोहिणीषु ॥ ६ ॥ सनात्सनीळा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते
ताः सहोभिः । पुरू सहस्रा जनयो न पत्नीर्दुवस्यन्ति स्वसारो अह्रयाणम् ॥ १० ॥
॥ सनायुवो नमसा नव्यो अर्कैर्वसूयवो मतयो दस्म दद्रुः । पतिं न पत्नीरु-
रुशन्तं स्पृशन्ति त्वा शवसावन्मनीषाः ॥ ११ ॥ सनादेव तव रायो गभस्तौ
ीयन्ते नोप दस्यन्ति दस्म । द्युमाँ असि क्रतुमाँ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीव-
नः शचीभिः ॥ १२ ॥ सनायते गोतम इन्द्र नव्यमतक्षद्ब्रह्म हरियोजनाय ।
थाय नः शवसान नोधाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ १३ ॥ ३ ॥

॥ ६३ ॥ १—६ नोधा गौतम ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१,
भुरिगार्षी पङ्क्तिः। ३ विराट् पङ्क्तिः। २,४ विराट् त्रिष्टुप्। ५ भुरि
जगती। ६ स्वराडार्षी बृहती ॥ स्वरः—१, ७—६, ३ पञ्चमः। २, ४
तः ५ निषादः। ६ मध्यमः ॥

॥ ६३ ॥ त्वं म॒हाँ इ॑न्द्र॒ यो ह॒ शुष्मै॒र्द्यावा॑ जज्ञा॒नः पृ॑थि॒वी अमे॑ धाः। यद्ध॑ ते॒
गि॒रय॑श्चि॒द्भ्वा॑ भि॒या दृ॒ळ्हासः॑ कि॒रणा॒ नैज॑न् ॥ १ ॥ आ यद्धरी॑ इन्द्र॒ विव्र॑ता॒
वज्रं॑ जरि॒ता बा॒ह्वोर्धा॑त्। येना॑विहर्यतक्रतो अ॒मित्रा॒न्पुर॑ इ॒ष्णासि॑ पुरुहूत पू॒र्वीः ॥
त्वं स॒त्य इ॑न्द्र धृ॒ष्णुरे॒तान्त्वमृ॑भु॒क्षा नर्य॒स्त्वं षाट्। त्वं शुष्णं॑ वृ॒जने॑ पृ॒क्ष
यू॒ने कुत्सा॑य द्यु॒मते॒ सचा॑हन् ॥ ३ ॥ त्वं ह॒ त्यदि॑न्द्र॒ चोदीः॒ सखा॑ वृ॒त्रं यद्
न्वृ॑षकर्मन्नु॒भ्नाः। यद्ध॑ शूर वृषमणः परा॒चैर्वि दस्यूँ॒र्योना॒वकृ॑तो वृथा॒षाट् ॥
त्वं ह॒ त्यदि॑न्द्रा॒रिष॑ण्यन्दृ॒ळ्हस्य॑ चि॒न्मर्ता॑ना॒मजु॑ष्टौ। व्य१॒॑स्मदा काष्ठा॒ अर्व॑
र्घ॒नेव॑ वज्रिञ्छ्नथि॒ह्यमित्रा॑न् ॥ ५ ॥ ४ ॥ त्वां ह॒ त्यदि॑न्द्रा॒र्णसा॑तौ॒ स्व॑र्मीळ्
आ॒जा हव॑न्ते। तव॑ स्वधाव इ॒यमा स॑म॒र्य ऊ॒तिर्वाजे॑ष्वत॒साय्या॑ भूत् ॥ ६
ह॒ त्यदि॑न्द्र स॒प्त युध्य॒न्पुरो॑ वज्रिन्पुरु॒कुत्सा॑य दर्दः। ब॒र्हिर्न यत्सु॒दासे॒ वृथा॒
रा॑ज॒न्वरि॑वः पू॒रवे॑ कः ॥ ७ ॥ त्वं त्यां न॑ इन्द्र देव चि॒त्रामिष॒मापो॒ न पी॑प
रि॑ज्मन्। यया॑ शूर॒ प्रत्य॒स्मभ्यं॒ यंसि॒ त्मन॒मूर्जं॒ न वि॒श्वध॒ क्षर॑ध्यै ॥ ८ ॥
रि त इन्द्र॒ गोत॑मेभि॒र्ब्रह्मा॒ण्योक्ता॒ नम॑सा॒ हरि॑भ्याम्। सु॒पेश॑सं॒ वाज॒मा भ॑रा न
त॒र्म॑क्षू धि॒याव॑सुर्जगम्यात् ॥ ६ ॥ ५ ॥

॥ ६४ ॥ १—१५ नोधा गौतम ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१,
६ विराड् जगती। २, ३, ५, ७, १०—१३ निचृज्जगती। ८, १४ जगती
निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—१४ निषादः। १५ धैवतः ॥

॥ ६४ ॥ वृष्णे॒ शर्धा॑य॒ सुम॑खाय वे॒धसे॒ नोधः॑ सुवृ॒क्तिं प्र भ॑रा म॒रुद्भ्
अ॒पो न धीरो॒ मन॑सा सु॒हस्त्यो॒ गिरः॒ सम॑ञ्जे वि॒दथे॑ष्वा॒भुवः॑ ॥ १ ॥ ते
दि॒व ऋ॒ष्वास॑ उ॒क्षणो॑ रु॒द्रस्य॒ मर्या॒ असु॑रा अरे॒पसः॑। पा॒व॒कासः॒ शुच॑यः
इ॒व सत्वा॑नो॒ न द्र॒प्सिनो॑ घो॒रव॑र्पसः ॥ २ ॥ युवा॑नो रु॒द्रा अ॒जरा॑ अभो॒ग्घनो
व॒क्षुरध्रि॑गावः॒ पर्व॑ता इव। दृ॒ळ्हा चि॒द्विश्वा॒ भुव॑नानि॒ पार्थि॑वा॒ प्र च्याव॑यन्ति
व्यानि॑ म॒ज्मना॑ ॥ ३ ॥ चि॒त्रैर॒ञ्जिभि॒र्वपु॑षे॒ व्य॑ञ्जते॒ वक्षः॑सु रु॒क्माँ अधि॑
शुभे। अंसे॑ष्वेषां॒ नि मि॑मृक्षुरृ॒ष्टयः॑ सा॒कं ज॑ज्ञिरे स्व॒धया॑ दि॒वो नरः॑ ॥

ानकृतो धुनयो रिशादसो वातान्विद्युतस्तविषीभिरक्रत। दुहन्त्यूधर्दिव्यानि धू-
ी भूमिं पिन्वन्ति पयसा परिज्रयः॥५॥६॥ पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदानवः
ो घृतवद्विदथेष्वाभुवः। अत्यं न मिहे वि नयन्ति वाजिनमुत्सं दुहन्ति स्तनयन्तम-
तम्॥६॥ महिषासो मायिनश्चित्रभानवो गिरयो न स्वतवसो रघुष्यदः। मृगा
हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविषीरयुग्ध्वम्॥७॥ सिंहा इव नानदति
ेतसः पिशा इव सुपिशो विश्ववेदसः। क्षपो जिन्वन्तः पृषतीभिर्ऋष्टिभिः समि-
बाधः शवसाहिमन्यवः॥८॥ रोदसी आ वदता गणश्रियो नृषाचः शूराः
साहिमन्यवः। आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शता विद्युन्न तस्थौ मरुतो रथेषु वः॥९॥
श्ववेदसो रयिभिः समोकसः संमिश्लासस्तविषीभिर्विरप्शिनः। अस्तार इषुं
धेरे गभस्त्योरनन्तशुष्मा वृषखादयो नरः॥१०॥७॥ हिरण्ययेभिः पविभिः
ोवृध उज्जिघ्नन्त आपथ्यो३ न पर्वतान्। मखा अयासः स्वसृतो ध्रुवच्युतो दुध्र-
ो मरुतो भ्राजदृष्टयः॥११॥ घृषुं पावकं वनिनं विचर्षणिं रुद्रस्य सूनुं हवसा
ामसि। रजस्तुरं तवसं मारुतं गणमृजीषिणं वृषणं सश्चत श्रिये॥१२॥ प्र
स मर्तः शवसा जनाँ अति तस्थौ व ऊती मरुतो यमावत। अर्वद्भिर्वाजं भरते
ा नृभिरापृच्छ्यं क्रतुमा क्षेति पुष्यति॥१३॥ चर्कृत्यं मरुतः पृत्सु दुष्टरं
न्तं शुष्मं मघवत्सु धत्तन। धनस्पृतमुक्थ्यं विश्वचर्षणिं तोकं पुष्येम तनयं शतं
ाः॥१४॥ नू ष्ठिरं मरुतो वीरवन्तमृतीषाहं रयिमस्मासु धत्त। सहस्रिणं
तिनं शूशुवांसं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥१५॥८॥११॥

॥६५॥ १—५ पराशर ऋषिः॥ अग्निर्देवता॥ छन्दः—१—३, ५
चृत्पङ्क्तिः। ४ विराट् पङ्क्तिः॥ पञ्चमः स्वरः॥

॥६५॥ पश्वा न तायुं गुहा चतन्तं नमो युजानं नमो वहन्तम्। सजोषा धीराः
रन्नु ग्मन्नुप त्वा सीदन्विश्वे यजत्राः॥१॥ ऋतस्य देवा अनु व्रता गुर्भुवत्प-
ष्टिर्द्यौर्न भूम। वर्धन्तीमापः पन्वा सुशिश्विमृतस्य योना गर्भे सुजातम्॥२॥पु-
र्न रण्वा क्षितिर्न पृथ्वी गिरिर्न भुज्म क्षोदो न शंभु। अत्यो नाज्मन्त्सर्गप्रतक्तः
न्धुर्न क्षोदः क ईं वराते॥३॥ जामिः सिन्धूनां भ्रातेव स्वस्रामिभ्यान्न राजा
ान्यत्ति। यद्वातजूतो वना व्यस्थादग्निर्ह दाति रोमा पृथिव्याः॥४॥ श्वसि-
प्सु हंसो न सीदन् क्रत्वा चेतिष्ठो विशामुषर्भुत्। सोमो न वेधा ऋतप्रजातः
शुर्न शिश्वा विभुर्दूरेभाः॥५॥९॥

॥ ६६ ॥ १—५ पराशरः शाक्त्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—
पङ्क्तिः । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ३ निचृत्पङ्क्तिः । ४, ५ विराट् पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वर

॥ ६६ ॥ रयिर्न चित्रा सूरो न संदृगायुर्न प्राणो नित्यो न सूनुः । तक्
भूर्णिर्वना सिषक्ति पयो न धेनुः शुचिर्विभावा ॥ १ ॥ दाधार क्षेममोको न र
यवो न पक्वो जेता जनानाम् । ऋषिर्न स्तुभ्वा विक्षु प्रशस्तो वाजी न प्रीतो
दधाति ॥ २ ॥ दुरोकशोचिः क्रतुर्न नित्यो जायेव योनावरं विश्वस्मै । चित्रो
दस्राट् श्वेतो न विक्षु रथो न रुक्मी त्वेषः समत्सु ॥ ३ ॥ सेनेव सृष्टामं दधात्यस
विद्युत्त्वेषप्रतीका । यमो ह जातो यमो जनित्वं जारः कनीनां पतिर्जनीनाम् ॥ ४
वश्चराथा वयं वसत्यास्तं न गावो नक्षन्त इद्धम् । सिन्धुर्न क्षोदः प्र नीचीरै
नवन्त गावः स्वर्दृशीके ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ ६७ ॥ १—५ पराशरः शाक्त्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—
पङ्क्तिः । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ३ निचृत्पङ्क्तिः । ४, ५ विराट् पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वर

॥ ६७ ॥ वनेषु जायुर्मर्तेषु मित्रो वृणीते श्रुष्टिं राजेवाजुर्यम् । क्षेमो न स
क्रतुर्न भद्रो भुवत्स्वाधीर्होता हव्यवाट् ॥ १ ॥ हस्ते दधानो नृम्णा विश्वा
देवान्धाद्गुहा निषीदन् । विदन्तीमत्र नरो धियन्धा हृदा यत्तष्टान्मन्त्राँ अशंसन् ॥
अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः । प्रिया पदानि प
नि पाहि विश्वायुरग्ने गुहा गुहं गाः ॥ ३ ॥ य ईं चिकेत गुहा भवन्तमा यः स
धारामृतस्य । वि ये चृतन्त्यृता सपन्त आदिद्वसूनि प्र ववाचास्मै ॥ ४ ॥ वि
वीरुत्सु रोधन्महित्वोत प्रजा उत प्रसूष्वन्तः । चित्तिरपां दमे विश्वायुः सद्मेव
राः संमाय चक्रुः ॥ ५ ॥ ११ ॥

॥ ६८ ॥ १—५ पराशरः शाक्त्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—
४ निचृत् पङ्क्तिः । २, ३, ५ पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ६८ ॥ श्रीणन्नुप स्थाद्दिवं भुरण्युः स्थातुश्चरथमक्तून्व्यूर्णोत् । परि
षामेको विश्वेषां भुवद्देवो देवानां महित्वा ॥ १ ॥ आदित्ते विश्वे क्रतुं जुषन्त शुष्काद
जीवो जनिष्ठाः । भजन्त विश्वे देवत्वं नाम ऋतं सपन्तो अमृतमेवैः ॥ २ ॥
तस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः । यस्तुभ्यं दाशाद्यो वा
शिक्षात्तस्मै चिकित्वान्रयिं दयस्व ॥ ३ ॥ होता निषत्तो मनोरपत्ये स चिन्न

ं पतीं र॒यी॒णां । इ॒च्छन्त॒ रेतो॒ मि॒थस्त॒नूषु॒ सं जा॑नत॒ स्वैर्दक्षै॒रमू॑राः ॥ ४ ॥
तु॒र्न पु॒त्राः क्रतुं॑ जुषन्त॒ श्रोष॒न्ये अ॑स्य॒ शासं॑ तु॒रासः॑ । वि राय॑ और्णो॒द्दुरः॑ पु-
तुः पि॒पेश॒ नाकं॑ स्तृ॒भि॒र्दमू॑नाः ॥ ५ ॥ १२ ॥

॥ ६९ ॥ १-५ पराशरः शक्तिपुत्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ प-
ः।२,३ निचृत्पङ्क्तिः । ४ भुरिक्पङ्क्तिः । ५ विराट्पङ्क्तिः॥ १—५ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ६९ ॥ शु॒क्रः शु॑शु॒क्वाँ उ॒षो न जा॒रः प॒प्रा स॑मी॒ची दि॒वो न ज्योतिः॑ ।
ऐ प्रजा॑तः॒ क्रत्वा॑ बभूथ॒ भुवो॑ दे॒वानां॑ पि॒ता पु॒त्रः सन् ॥ १ ॥ वे॒धा अदृ॑प्तो अ॒-
र्वि॑जा॒नन्नूध॒र्न गोनां॒ स्वाद्मा॑ पितू॒नाम् । जने॒ न शेव॑ आ॒हूर्यः॒ सन्मध्ये॒ निष॑त्तो
वो दु॑रो॒णे ॥ २ ॥ पु॒त्रो न जा॒तो र॒ण्वो दु॑रो॒णे वा॒जी न प्री॒तो विशो॒ वि
रीत् । विशो॒ यदह्वे॒ नृभिः॒ सनी॑ळा अ॒ग्निर्दे॑व॒त्वा विश्वा॑न्यश्याः ॥ ३ ॥ नकि॑ष्ट
ा व्र॒ता मि॑नन्ति॒ नृभ्यो॒ यदे॒भ्यः श्रु॒ष्टिं च॒कर्थ॑ । तत्तु॒ ते॒ दंसो॒ यदह॑न्त्स॒मानै॒र्नृ-
र्यद्यु॒क्तो वि॒वे रपां॑सि ॥ ४ ॥ उ॒षो न जा॒रो वि॒भावो॒स्रः सञ्ज्ञा॑तरूप॒श्चिके॑तदस्मै ।
ना॒ वह॑न्तो॒ दुरो॒ व्यृ॑ण्व॒न्नव॑न्त॒ विश्वे॒ स्व॒१॒॑र्दृशी॑के ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ ७० ॥ १-६ पराशरऋषिः॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ४ विराट्पङ्क्तिः ।
पङ्क्तिः । ३, ५ निचृत् पङ्क्तिः । ६ याजुषी पङ्क्तिः ॥ १—६ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ७० ॥ व॒नेम॑ पू॒र्वीर॒र्यो म॑नी॒षा अ॒ग्निः सु॒शोको॒ विश्वा॑न्यश्याः । आ दै॒-
ानि व्र॒ता चि॑कि॒त्वाना मानु॑षस्य॒ जन॑स्य॒ जन्म॑ ॥ १ ॥ गर्भो॒ यो अ॒पां गर्भो॒
ाना॒ं गर्भ॑श्च स्था॒तां गर्भ॑श्च॒रथा॑म् । अद्रौ॑ चिदस्मा अ॒न्तर्दु॑रो॒णे वि॒शां न वि-
ो अ॒मृतः॑ स्वा॒धीः ॥ २ ॥ स हि क्ष॒पावाँ॑ अ॒ग्नी र॑यी॒णां दाश॒द्यो अ॑स्मा अरं॑
क्तैः । ए॒ता चि॑कित्वो॒ भूमा॒ नि पा॑हि दे॒वानां॒ जन्म॒ मर्तां॑श्च वि॒द्वान् ॥ ३ ॥
र्न्यं पू॒र्वीः क्ष॒पो विरू॑पाः स्था॒तुश्च॒ रथ॑मृतप्र॑वीतम् । अरा॑धि॒ होता॒ स्व॒१॒॑र्निष॑त्तः
ण्वन्विश्वा॑न्यपां॑सि स॒त्या ॥ ४ ॥ गोषु॒ प्रश॑स्तिं॒ वने॑षु धिषे॒ भर॑न्त॒ विश्वे॑ ब॒लिं
र्णः । वि त्वा॒ नरः॑ पुरु॒त्रा स॑पर्यन्पि॒तुर्न जिव्रे॒र्वि वेदो॑ भरन्त ॥ ५ ॥ सा॒धुर्न
ुरस्ते॑व॒ शूरो॒ यातै॑व भी॒मस्त्वे॒षः स॒मत्सु॑ ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ ७१ ॥ १-१० पराशर ऋषिः ॥ अग्निर्देवता॥ छन्दः-१, ६, ७ त्रि-
् २, ५ निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ४, ८, १० विराट् त्रिष्टुप् । ९ भुरिक्पङ्क्तिः ॥
रः-१-८, १० धैवतः । ९ पञ्चमः ॥

॥ ७१ ॥ उप प्र जिन्वन्नुशतीरुशन्तं पतिं न नित्यं जनयः सनीळाः । सारः श्यावीमरुषीमजुषञ्चित्रमुच्छन्तीमुषसं न गावः ॥ १ ॥ वीळु चिद्दृळ्हा तरो न उक्थैरद्रिं रुजन्नङ्गिरसो रवेण । चक्रुर्दिवो बृहतो गातुमस्मे अहः स्व विदुः केतुमुस्राः ॥ २ ॥ दधन्नृतं धनयन्नस्य धीतिमादिदर्यो दिधिष्वो विभृत्र अतृष्यन्तीरपसो यन्त्यच्छा देवाञ्जन्म प्रयसा वर्धयन्तीः ॥ ३ ॥ मथीद्यदीं भृतो मातरिश्वा गृहेगृहे श्येतो जेन्यो भूत् । आदीं राज्ञे न सहीयसे सचा स दूत्यं भृगवाणो विवाय ॥ ४ ॥ महे यत्पित्र ईं रसं दिवे करव त्सरत्पृशन्य कित्वान् । सृजदस्ता धृषता दिद्युमस्मै स्वायां देवो दुहितरि त्विषिं धात् ॥ १५ ॥ स्व आ यस्तुभ्यं दम आ विभाति नमो वा दाशादुशतो अनु द्यून् । अग्ने वयो अस्य द्विबर्हा यासद्राया सरथं यं जुनासि ॥ ६ ॥ अग्निं विश्वा भि पृक्षः सचन्ते समुद्रं न स्रवतः सप्त यह्वीः । न जामिभिर्वि चिकिते वयो विदा देवेषु प्रमतिं चिकित्वान् ॥ ७ ॥ आ यदिषे नृपतिं तेज आनट् शुचि निषिक्तं द्यौरभीके । अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं स्वाध्यं जनयत्सूदयच्च ॥ ८ मनो न योऽध्वनः सद्य एत्येकः सत्रा सूरो वस्व ईशे । राजाना मित्रावरुणा पाणी गोषु प्रियममृतं रक्षमाणा ॥ ९ ॥ मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि प्र म ष्ठा अभि विदुष्कविः सन् । नभो न रूपं जरिमा मिनाति पुरा तस्या अभिश रधीहि ॥ १० ॥ १६ ॥

॥ ७२ ॥ १–१० पराशर ऋषिः । अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ५, ६ विराट् त्रिष्टुप् । ४, १० त्रिष्टुप् । ७ निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ८ भुरिक्पङ्क्तिः स्वरः–१, २, ४—७, ६, १० धैवतः । ३, ८ पञ्चमः ॥

॥ ७२ ॥ नि काव्या वेधसः शश्वतस्कर्हस्ते दधानो नर्या पुरूणि । अ भुवद्रयिपती रयीणां सत्रा चक्राणो अमृतानि विश्वा ॥ १ ॥ अस्मे वत्सं षन्तं न विन्दन्निच्छन्तो विश्वे अमृता अमूराः । श्रमयुवः पदव्यो धियंधास्त पदे परमे चार्वग्नेः ॥ २ ॥ तिस्रो यदग्ने शरदस्त्वामिच्छुचिं घृतेन शुचयः पर्यान् । नामानि चिद्दधिरे यज्ञियान्यसूदयन्त तन्वः सुजाताः ॥ ३ ॥ आ दसी बृहती वेविदानाः प्र रुद्रिया जभ्रिरे यज्ञियासः । विदन्मर्तो नेमधिता चि त्वानग्निं पदे परमे तस्थिवांसम् ॥ ४ ॥ संजानाना उप सीदन्नभिज्ञु पत्नीवन्तो नम नमस्यन् । रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः ॥ ५ १७ ॥ त्रिः सप्त यद्गुह्यानि त्वे इत्पदाविदन्निहिता यज्ञियासः । तेभी रक्षन्ते

सजोषाः पशूञ्च स्थातृञ्चरथं च पाहि ॥६॥ विद्वाँ अग्ने वयुनानि क्षितीनां
नुषक् शुरुधो जीवसे धाः । अन्तर्विद्वाँ अध्वनो देवयानानतन्द्रो दूतो अभवो
र्वाट् ॥ ७ ॥ स्वाध्यो दिव आ सप्त यह्वी रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन् । वि-
व्यं सरमा दृळ्हमूर्वं येना नु कं मानुषी भोजते विट् ॥ ८ ॥ आ ये विश्वा
त्यानि तस्थुः कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम् । मह्ना महद्भिः पृथिवी वि तस्थे
। पुत्रैरदितिर्धायसे वेः ॥ ९ ॥ अधि श्रियं नि दधुश्चारुमस्मिन्दिवो यदक्षी
ता अकृण्वन् । अध क्षरन्ति सिन्धवो न सृष्टाः प्र नीचीरग्ने अरुषीरजानन्
१० ॥ १८ ॥

॥ ७३ ॥ १—१० पराशर ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २, ४,
७, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ६ त्रिष्टुप् । ८ विराट्त्रिष्टुप् ॥ १–१० धैवतः स्वरः ॥

॥ ७३ ॥ रयिर्न यः पितृवित्तो वयोधाः सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शासुः ।
नशीरतिथिर्न प्रीणानो होतेव सद्म विधतो वि तारीत् ॥ १ ॥ देवो न यः
वेता सत्यमन्मा क्रत्वा निपाति वृजनानि विश्वा । पुरुप्रशस्तो अमतिर्न सत्य
त्मेव शेवो दिधिषाय्यो भूत् ॥ २ ॥ देवो न यः पृथिवीं विश्वधाया उपक्षेति
मित्रो न राजा । पुरः सदः शर्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी ॥ ३ ॥
त्वा नरो दम आ नित्यमिद्धमग्ने सचन्त क्षितिषु ध्रुवासु । अधि द्युम्नं नि द-
र्भूस्मिन्भवा विश्वायुर्धरुणो रयीणाम् ॥ ४ ॥ वि पृक्षो अग्ने मघवानो
युर्वि सूरयो ददतो विश्वमायुः । सनेम वाजं समिथेष्वर्यो भागं देवेषु श्रवसे
नाः ॥ ५ ॥ १९ ॥ ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः स्मदूध्नीः पीपयन्त द्युभक्ताः ।
वतः सुमतिं भिक्षमाणा वि सिन्धवः समया सस्रुरद्रिम् ॥ ६ ॥ त्वे अग्ने सु-
भिक्षमाणा दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः । नक्ता च चक्रुरुषसा विरूपे कृष्णं च
मरुणं च सं धुः ॥ ७ ॥ यान्राये मर्तान्त्सुषूदो अग्ने ते स्याम मघवानो वयं
छायेव विश्वं भुवनं सिसक्ष्यापप्रिवान्रोदसी अन्तरिक्षम् ॥ ८ ॥ अर्वद्भिरग्ने
तो नृभिर्नृन्वीरैर्वीरान्वनुयामा त्वोताः । ईशानासः पितृवित्तस्य रायो वि सूरयः
हिमा नो अश्युः ॥ ९ ॥ एता ते अग्न उचथानि वेधो जुष्टानि सन्तु मनसे हृदे
शकेम रायः सुधुरो यमं तेऽधि श्रवो देवभक्तं दधानाः ॥ १० ॥ २० ॥ १२ ॥

॥ ७४ ॥ १–९ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ८,
निचृद्गायत्री । ३, ५, ६ गायत्री । ४, ७ विराड्गायत्री ॥ १–९ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७४ ॥ उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये । आरे अस्मे च शृ
॥ १ ॥ यः स्नीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु । अरक्षद्दाशुषे गयम् ॥
उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि । धनञ्जयो रणेरणे ॥ ३ ॥ यस्य दूतो
सि क्षये वेषि हव्यानि वीतये । दस्मत्कृणोष्यध्वरम् ॥ ४ ॥ तमित्सुहव्यम
सुदेवं सहसो यहो । जना आहुः सुबर्हिषम् ॥ ५ ॥ २१ ॥ आ च वहासि
इह देवाँ उप प्रशस्तये । हव्या सुश्चन्द्र वीतये ॥ ६ ॥ न योरुपब्दिरश्व्यः श
रथस्य कच्चन । यदग्ने यासि दूत्यम् ॥ ७ ॥ त्वोतो वाज्यह्रयोऽभि पूर्वस्मादप
प्र दाश्वाँ अग्ने अस्थात् ॥ ८ ॥ उत द्युमत्सुवीर्यं बृहदग्ने विवाससि । देवे
देव दाशुषे ॥ ९ ॥ २२ ॥

॥ ७५ ॥ १–५ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ ग
त्री २, ४, ५ निचृद्गायत्री । ३ विराड् गायत्री ॥ १–५ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७५ ॥ जुषस्व सप्रथस्तमं वचो देवप्सरस्तमम् । हव्या जुह्वान आसनि ॥
अथा ते अङ्गिरस्तमाग्ने वेधस्तम प्रियम् । वोचेम ब्रह्म सानसि ॥ २ ॥ कस्ते
मिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः । को ह कस्मिन्नसि श्रितः ॥ ३ ॥ त्वं जामिर्ज
नामग्ने मित्रो असि प्रियः । सखा सखिभ्य ईड्यः ॥ ४ ॥ यजा नो मित्राव
यजा देवाँ ऋतं बृहत् । अग्ने यक्षि स्वं दमम् ॥ ५ ॥ २३ ॥

॥ ७६ ॥ १–५ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१,
निचृत् त्रिष्टुप् । २, ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ १–५ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७६ ॥ का त उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शंतमा का मनीषा । को
यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम ॥ १ ॥ एह्यग्न इह होता
षीदादब्धः सु पुरएता भवा नः । अवतां त्वा रोदसी विश्वमिन्वे यजा महे
मनसाय देवान् ॥ २ ॥ प्र सु विश्वान्रक्षसो धक्ष्यग्ने भवा यज्ञानामभिश
पावा । अथा वह सोमपतिं हरिभ्यामातिथ्यमस्मै चकृमा सुदाव्ने ॥ ३ ॥ प्रजावता
वचसा वह्निरासा च हुवे नि च सत्सीह देवैः । वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र
प्रयन्तर्जनितर्वसूनाम् ॥ ४ ॥ यथा विप्रस्य मनुषो हविर्भिर्देवाँ अयजः क
कविः सन् । एवा होतः सत्यतर त्वमद्याग्ने मन्द्रया जुह्वा यजस्व ॥ ५ ॥ २

॥ ७७ ॥ १–५ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ नि
ङ्क्तिः । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१ पञ्चमः । २–५ धैव

॥ ७७ ॥ कथा दाशेमाग्नये कास्मै देवजुष्टोच्यते भामिने गीः । यो मर्त्ये-
ते ऋतावा होता यजिष्ठ इत्कृणोति देवान् ॥ १ ॥ यो अध्वरेषु शंतम ऋ-
होता तमू नमोभिरा कृणुध्वम् । अग्निर्यद्वेर्मर्ताय देवान्त्स चा बोधाति म-
यजाति ॥ २ ॥ स हि क्रतुः स मर्यः स साधुर्मित्रो न भूदद्भुतस्य रथीः ।
धेषु प्रथमं देवयन्तीर्विश उप ब्रुवते दस्ममारीः ॥ ३ ॥ स नो नृणां नृतमो
दा अग्निर्गिरोऽवसा वेतु धीतिम् । तना च ये मघवानः शविष्ठा वाजप्रसूता
न्त मन्म ॥ ४ ॥ एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा विप्रेभिरस्तोष्ट जातवेदाः । स
द्युम्नं पीपयत्स वाजं स पुष्टिं याति जोषमा चिकित्वान् ॥ ५ ॥ २५ ॥

॥ ७८ ॥ १—५ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ १—५ गायत्री
ः ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७८ ॥ अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे । द्युम्नैरभि प्र णोनु-
॥ १ ॥ तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्कामो दुवस्यति । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः
॥ तमु त्वा वाजसातममङ्गिरस्वद्धवामहे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥ ३ ॥ तमु
वृत्रहन्तमं यो दस्यूँरवधूनुषे द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥ ४ ॥ अवोचाम रहूगणा
ये मधुमद्वचः । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥ ५ ॥ २६ ॥

॥ ७९ ॥ १—१२ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१
द् त्रिष्टुप् २, ३ निचृत् त्रिष्टुप् । ४ आर्ष्युष्णिक् । ५, ६ निचृदार्ष्युष्णिक् ।
८, १०, ११ निचृद्गायत्री । ९, १२ गायत्री ॥ स्वरः—१—३ धैवतः ।
–६ ऋषभः । ७—१२ षड्जः ॥

॥ ७९ ॥ हिरण्यकेशो रजसो विसारेऽहिर्धुनिर्वात इव ध्रजीमान् । शुचिभ्राजा
सो नवेदा यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः ॥ १ ॥ आ ते सुपर्णा अमिनन्तँ एवैः
गो नोनाव वृषभो यदीदन् । शिवाभिर्न स्मयमानाभिरागात्पतन्ति मिहः स्तन-
यभ्रा ॥ २ ॥ यदीमृतस्य पयसा पियानो नयन्नृतस्य पथिभी रजिष्ठैः । अ-
मित्रो वरुणः परिज्मा त्वचं पृञ्चन्त्युपरस्य योनौ ॥ ३ ॥ अग्ने वाजस्य गो-
ईशानः सहसो यहो । अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः ॥ ४ ॥ स इधानो व-
कविरग्निरीळेन्यो गिरा । रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि ॥ ५ ॥ क्षपो राजन्नुत
ाग्ने वस्तोरुतोषसः । स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥ ६ ॥ २७ ॥ अवा नो
ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि । विश्वासु धीषु वन्द्य ॥ ७ ॥ आ नो अग्ने रयिं

भर सत्रासाहं वरेण्यं । विश्वासु पृत्सु दुष्टरम् ॥ ८ ॥ आ नो अग्ने सुचेतुना
विश्वायुपोषसम् । मार्डीकं धेहि जीवसे ॥ ९ ॥ प्र पूतास्तिग्मशोचिषे वाचो
तमाग्नये । भरस्व सुम्नयुर्गिरः ॥ १० ॥ यो नो अग्नेऽभिदासत्यन्ति दूरे प
सः । अस्माकमिद्वृधे भव ॥ ११ ॥ सहस्राक्षो विचर्षणिरग्नी रक्षांसि सेध
होता गृणीत उक्थ्यः ॥ १२ ॥ २८ ॥

॥ ८० ॥ १—१६ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
११ निचृदास्तारपङ्क्तिः । ५, ६, ९, १०, १३ १४ विराट्पङ्क्तिः । २–४, ७,
१५ भुरिग् बृहती ८, १६ बृहती ॥ स्वरः—१, ११, ५, ६, ९, १०, १३,
पञ्चमः । २—४, ७, १२, १५, ८, १६ मध्यमः ॥

॥ ८० ॥ इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् । शविष्ठ वज्रिन्नो
पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १ ॥ स त्वामदद्वृषा मदः स
श्येनाभृतः सुतः । येना वृत्रं निरद्भ्यो जघन्थ वज्रिन्नोजसार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते । इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं
अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ३ ॥ निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्रं जघन्थ निर्दिवः । सृज
रुत्वतीरव जीवधन्या इमा अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ४ ॥ इन्द्रो वृत्रस्य दो
सानुं वज्रेण हीळितः । अभिक्रम्याव जिघ्नतेऽपः सर्माय चोदयन्नर्चन्ननु स
ज्यम् ॥ ५ ॥ २९ ॥ अधि सानौ नि जिघ्नते वज्रेण शतपर्वणा । मन्दान
अन्धसः सखिभ्यो गातुमिच्छत्यर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ६ ॥ इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवो
वज्रिन्वीर्यम् । यद्ध त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ७ ॥
वज्रासो अस्थिरन्नवतिं नाव्या अनु । महत्त इन्द्र वीर्यं बाह्वोस्ते बलं हितमर्चन्ननु
राज्यम् ॥ ८ ॥ सहस्रं साकमर्चत परि ष्टोभत विंशतिः । शतैनमन्वनोनवुरिन्द्राय
ह्मोद्यतमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ९ ॥ इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं निरहन्त्सहसा सहः । महत्त
पौंस्यं वृत्रं जघन्वाँ असृजदर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १० ॥ ३० ॥ इमे चित्तव मन्यवे
भियसा मही । यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥
न वेपसा न तन्यतेन्द्रं वृत्रो वि बीभयत् । अभ्येनं वज्र आयसः सहस्रभृष्टि
तार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १२ ॥ यद्वृत्रं तव चाशनिं वज्रेण समयोधयः । अहिं
जिघांसतो दिवि ते बद्बधे शवोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १३ ॥ अभिष्टने ते
द्रिवो यत्स्था जगच्च रेजते । त्वष्टा चित्तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भियार्चन्ननु

र्ज्यम् ॥ १४ ॥ नुहि नु यादंधीमसीन्द्रं को वीर्यां परः । तस्मिन्नृम्णमुत क्रतुं
ा ओजांसि सं दधुरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १५ ॥ यामथर्वा मनुष्पिता दध्यङ्
ग्रमत्नत । तस्मिन्ब्रह्माणि पूर्वथेन्द्र उक्था समंग्मतार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १६ ॥
॥ ५ ॥

॥ ८१ ॥ १–६ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ इन्द्रोदेवता ॥ छन्दः—१, ७,
विराट् पङ्क्तिः । ३–६, ६ निचृदास्तारपङ्क्तिः । २ भुरिग् बृहती ॥ स्वरः—१,
-६ पञ्चमः । २ मध्यमः ॥

॥ ८१ ॥ इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः । तमिन्महत्स्वाजिषूतेमर्भे
ामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ॥१॥ असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि परादृदिः ।
सि दुभ्रस्यं चिद्वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु ॥ २ ॥ यदुदी-
ा आजयों धृष्णवे धीयते धना । युक्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽ-
ाँ इन्द्र वसौ दधः ॥ ३ ॥ क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृधे शवः । श्रिय
ृष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवान्दधे हस्तयोर्वज्रमायसम् ॥ ४ ॥ आ पप्रौ पा-
र्थिवं रजो बद्बधे रोचना दिवि । न त्वावाँ इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यतेऽति
श्वं ववक्षिथ ॥ ५ ॥ १ ॥ यो अर्यो मर्तभोजनं पराददाति दाशुषे । इन्द्रो अ-
भ्यं शिक्षतु वि भजा भूरि ते वसु भक्षीय तव राधसः ॥ ६ ॥ मदेमदे हि नो
देर्यूथा गवामृजुक्रतुः सं गृभाय पुरू शतोभयाहस्त्या वसु शिशीहि राय आ
र ॥ ७ ॥ मादयस्व सुते सचा शवसे शूर राधसे । विद्मा हि त्वा पुरूवसुमुप
मान्त्ससृज्महेऽथा नोऽविता भव ॥ ८ ॥ एते त इन्द्र जन्तवो विश्वं पुष्यन्ति
र्यम् । अन्तर्हि ख्यो जनानामर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेद आ भर॥ ६ ॥ २ ॥

॥ ८२ ॥ १–६ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ४ नि,
दास्तारपङ्क्तिः । २, ३, ५ विराडास्तारपङ्क्तिः । ६ विराड् जगती ॥ स्वरः–१–५
ञ्चमः । ६ निषादः ॥

॥ ८२ ॥ उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथा इव । यदा नः सूनृतावतः
र आदर्थयास इद्योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ १ ॥ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधू-
त । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ २ ॥
सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि । प्र नूनं पूर्णवन्धुरः स्तुतो याहि वशाँ अनु योजा

न्विन्द्र ते हरी ॥ ३ ॥ स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविन्दम् । यः पा
हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ ४ ॥ युक्तस्ते अस्तु
दक्षिण उत सव्यः शतक्रतो । तेन जायामुप प्रियां मन्दानो याह्यन्धसो योजा नि
न्द्र ते हरी ॥ ५ ॥ युनज्मि ते ब्रह्मणा केशिना हरी उप प्र याहि दधिषे ग
स्त्योः । उत्त्वा सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण्वान्वज्रिन्त्समु पत्न्यामदः ॥६॥ ३

॥ ८३ ॥ १–६ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ३
४, ५ निचृज्जगती । २ जगती । ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः– १–५ निषादः । ६ धैवतः

॥ ८३ ॥ अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः
तमित्पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः ॥ १ ॥ आपो
देवीरुप यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति विततं यथा रजः । प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति दे
ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव ॥ २ ॥ अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं वचो यतस्रुचा मिथुना
सपर्यतः । असंयत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते ॥ ३ ॥ आ
ङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यया । सर्वं पणेः समविन्द
भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः ॥ ४ ॥ यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रत
वेन आजनि । आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजा
॥ ५ ॥ बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय वृज्यतेऽर्को वा श्लोकमाघोषते दिवि । ग्रावा
वदति कारुरुक्थ्यस्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति ॥ ६ ॥ ४ ॥

॥ ८४ ॥ १–२० गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ३
निचृदनुष्टुप् । २ विराडनुष्टुप् । ६ भुरिगुष्णिक् । ७–९ उष्णिक् । १०,
विराडास्तारपङ्क्तिः । ११ आस्तारपङ्क्तिः । २० पङ्क्तिः । १३–१५ निचृद
यत्री । १६ निचृत्त्रिष्टुप् । १७ विराट् त्रिष्टुप् । १८ त्रिष्टुप् । १९ आर्ची
ष्टुप् ॥ स्वरः–१–५ गान्धारः । ६–९ ऋषभः । १०–१२, २० पञ्चम
१३–१५ षड्जः । १६–१९ धैवतः ॥

॥ ८४ ॥ असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि । आ त्वा पृणक्त्विन्द्रि
रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ १ ॥ इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम् । ऋषीं
च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् ॥ २ ॥ आ तिष्ठ वृत्रहन्रथं युक्ता ते ब्रह्म
हरी । अर्वाचीनं सुते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ॥ ३ ॥ इममिन्द्र सुतं पिब ज

मर्मर्त्यं मदम् । शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन्धारा ऋतस्य सादने ॥ ४ ॥ इन्द्राय नूनम-
तोक्थानि च ब्रवीतन । सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ॥ ५ ॥ ५ ॥
किष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे । नकिष्ट्वानु मज्मना नकिः स्वश्व आनशे
६ ॥ य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे । ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग
७ ॥ कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् । कदा नः शुश्रवद्गिर इन्द्रो
ङ्ग ॥ ८ ॥ यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति । उग्रं तत्पत्यते
व इन्द्रो अङ्ग ॥ ९ ॥ स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः । या इन्द्रे-
सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १० ॥ ६ ॥ ता अस्य
शनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः । प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं
स्वीरनु स्वराज्यम् ॥ ११ ॥ ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः । व्रता-
स्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १२ ॥ इन्द्रो दधीचो अ-
थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः । जघान नवतीर्नव ॥ १३ ॥ इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः
तेष्वपश्रितम् । तद्विदच्छर्यणावति ॥ १४ ॥ अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपी-
यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ १५ ॥ ७ ॥ को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य
मीवतो भामिनो दुर्हृणायून् । आसन्निषून्हृत्स्वसो मयोभून्य एषां भृत्यामृण-
त्स जीवात् ॥ १६ ॥ क ईषते तुज्यते को बिभाय को मंसते सन्तमिन्द्रं को
न्ति । कस्तोकाय क इभायोत रायेऽधि ब्रवत्तन्वे३को जनाय ॥ १७ ॥ को
ग्निमीट्टे हविषा घृतेन स्रुचा यजाता ऋतुभिर्ध्रुवेभिः । कस्मै देवा आ वहानाशु
होम को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः ॥ १८ ॥ त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ
र्यम् । न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ १९ ॥ मा ते रा-
सि मा त ऊतयो वसोऽस्मान्कदा चना दभन् । विश्वा च न उपमिमीहि मानुष
नि चर्षणिभ्य आ ॥ २० ॥ ८ ॥ १३ ॥

॥ ८५ ॥ १-१२ गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१, २,
११ जगती । ३, ७, ८ निचृज्जगती । ४, ६, १० विराड्जगती । ५ वि-
ट् त्रिष्टुप् । १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-११ निषादः । ५, १२ धैवतः ॥

॥ ८५ ॥ प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो यामन्रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।
दसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु घृष्वयः ॥ १ ॥ त उक्षि-
सो महिमानमाशत दिवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सदः । अर्चन्तो अर्कं जनयन्त

इन्द्रियमधि श्रियो दधिरे पृश्निमातरः ॥ २ ॥ गोमातरो यच्छुभयन्ते अञ्जि
स्तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः । बाधन्ते विश्वमभिमातिनमप वर्त्मान्येषामनु रीय
घृतम् ॥ ३ ॥ वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजस
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा वृषव्रातासः पृषतीरयुग्ध्वम् ॥ ४ ॥ प्र यद्रथेषु पृषतीरयु
वाजे अद्रिं मरुतो रंहयन्तः । उतारुषस्य वि ष्यन्ति धाराश्चर्मेवोदभिर्व्युन्दन्ति
॥ ५ ॥ आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो रघुपत्वानः प्र जिगात बाहुभिः । सीद
बर्हिरुरु वः सदस्कृतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः ॥ ६ ॥ ६ ॥ तेऽवर्धन्त स्व
वसो महित्वना नाकं तस्थुरुरु चक्रिरे सदः । विष्णुर्यद्धावद्वृषणं मदच्युतं व
न सीदन्नधि बर्हिषि प्रिये ॥ ७ ॥ शूरा इवेद्युयुधयो न जग्मयः श्रवस्यवो न
तनासु येतिरे । भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो राजान इव त्वेषसंदृशो नरः ॥
त्वष्टा यद्वज्रं सुकृतं हिरण्ययं सहस्रभृष्टिं स्वपा अवर्तयत् । धत्त इन्द्रो नर्यपा
कर्तवेऽहन्वृत्रं निरपामौब्जदर्णवम् ॥ ६ ॥ ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं त ओजसा दादृह
चिद्भिभिदुर्वि पर्वतम् । धमन्तो वाणं मरुतः सुदानवो मदे सोमस्य रण्यानि
क्रिरे ॥ १० ॥ जिह्मं नुनुद्रेऽवतं तया दिशासिञ्चन्नुत्सं गोतमाय तृष्णजे ।
गच्छन्तीमवसा चित्रभानवः कामं विप्रस्य तर्पयन्त धामभिः ॥ ११ ॥ या वः
र्मं शशमानाय सन्ति त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि । अस्मभ्यं तानि मरुतो
यन्त रयिं नो धत्त वृषणः सुवीरम् ॥ १२ ॥ १० ॥

॥ ८६ ॥ १—१० गोतमो राहूगण ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—
४, ८, ६ गायत्री । २, ३, ७ पिपीलिका मध्या निचृद्गायत्री । ५, ६, १०
चृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ८६ ॥ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो ज
॥ १ ॥ यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम् । मरुतः शृणुता हवम् ॥ २
उत वा यस्य वाजिनोऽनु विप्रमतक्षत । स गन्ता गोमति व्रजे ॥ ३ ॥ अस्य
रस्य बर्हिषि सुतः सोमो दिविष्टिषु । उक्थं मदश्च शस्यते ॥ ४ ॥ अस्य श्रोषन्
भुवो विश्वा यश्चर्षणीरभि । सूरं चित्सस्रुषीरिषः ॥ ५ ॥ ११ ॥ पूर्वीभिर्हि ददाशि
शरद्भिर्मरुतो वयम् । अवोभिश्चर्षणीनाम् ॥ ६ ॥ सुभगः स प्रयज्यवो मरुतो अ
मर्त्यः । यस्य प्रयांसि पर्षथ ॥ ७ ॥ शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवस
विदा कामस्य वेनतः ॥ ८ ॥ यूयं तत्सत्यशवस आविष्कर्त महित्वना । विध्य

ता रक्षः ॥ ९ ॥ गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम् । ज्योतिष्कर्ता य-
सि ॥ १० ॥ १२ ॥

॥ ८७ ॥ १—६ गोतमो राहूगणपुत्र ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः–१,
५ विराड् जगती । ३ जगती । ६ निचृज्जगती । ४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–३,
६ निषादः । ४ धैवतः ॥

॥ ८७ ॥ प्रत्वक्षसः प्रतवसो विरप्शिनोऽनानता अविथुरा ऋजीषिणः ।
तमासो नृतमासो अञ्जिभिर्व्यानज्रे के चिदुस्रा इव स्तृभिः ॥ १ ॥ उपह्वरेषु
चिध्वं ययिं वयं इव मरुतः केन चित्पथा । श्चोतन्ति कोशा उप वो रथेष्वा
मुक्षता मधुवर्णमर्चते ॥ २ ॥ प्रैषामज्मेषु विथुरेव रेजते भूमिर्यामेषु यद्ध युञ्जते
। ते क्रीळयो धुनयो भ्राजदृष्टयः स्वयं महित्वं पनयन्त धूतयः॥ ३ ॥ स हि
पृत्पृषदश्वो युवा गणोऽया ईशानस्तविषीभिरावृतः । असि सत्य ऋणयावा-
द्योऽस्या धियः प्राविताथा वृषा गणः ॥ ४ ॥ पितुः प्रत्नस्य जन्मना वदामसि
मस्य जिह्वा प्र जिगाति चक्षसा । यदीमिन्द्रं शम्यृक्वाण आशतादिन्नामानि
यानि दधिरे ॥ ५ ॥ श्रियसे कं भानुभिः सं मिमिक्षिरे ते रश्मिभिस्त ऋ-
भिः सुखादयः । ते वाशीमन्त इष्मिणो अभीरवो विद्रे प्रियस्य मारुतस्य
म्नः ॥ ६ ॥ १३ ॥

॥ ८८ ॥ १–६ गोतमो राहूगणपुत्र ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः–१
ः । २ भुरिक्पङ्क्तिः । ५ निचृत्पङ्क्तिः । ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ विराट्त्रिष्टुप् । ६
वृद्बृहती ॥ स्वरः–१, २, ५ पञ्चमः । ३, ४ धैवतः । ६ मध्यमः ॥

॥ ८८ ॥ आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्कै रथेभिर्यात ऋष्टिमद्भिरश्वपर्णैः । आ
ष्ठया न इषा वयो न पप्तता सुमायाः ॥ १ ॥ तेऽरुणेभिर्वरमा पिशङ्गैः शुभे कं
न्ति रथतूर्भिरश्वैः । रुक्मो न चित्रः स्वधितीवान्पव्या रथस्य जङ्घनन्त भूम
२ ॥ श्रिये कं वो अधि तनूषु वाशीर्मेधा वना न कृणवन्त ऊर्ध्वा । युष्मभ्यं कं
तः सुजातास्तुविद्युम्नासो धनयन्ते अद्रिम् ॥ ३ ॥ अहानि गृध्राः पर्या व आ-
मां धियं वार्कार्यां च देवीम् । ब्रह्म कृण्वन्तो गोतमासो अर्कैरूर्ध्वं नुनुद्र उ-
धिं पिबध्यै ॥ ४ ॥ एतत्त्यन्न योजनमचेति सस्वर्ह यन्मरुतो गोतमो वः । प-
न्हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान्विधावतो वराहून् ॥ ५ ॥ एषा स्या वो मरुतोऽनुभर्त्री
ति ष्टोभति वाघतो न वाणी । अस्तोभयद्वृथासामनु स्वधां गभस्त्योः ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ ८९ ॥ १-१० गोतमो राहूगणपुत्र ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥ छन्द
५ निचृज्जगती । २, ३, ७ जगती । ४ भुरिक् त्रिष्टुप् । ८ विराट् त्रिष्टुप् । ९
त्रिष्टुप् । ६ स्वराड् बृहती ॥ स्वरः-१-३, ५, ७ निषादः । ४, ८-१० धै
६ मध्यमः ॥

॥ ८९ ॥ आ नो॑ भ॒द्राः क्रत॑वो यन्तु वि॒श्वतोऽद॑ब्धासो॒ अप॑रीतास उ॒द्भि
दे॒वा नो॒ यथा॒ सद॒मिद्वृ॒धे अस॒न्नप्रा॑युवो रक्षि॒तारो॑ दि॒वेदि॑वे ॥ १ ॥ दे॒वानां
सु॑म॒तिर्ऋ॑जूय॒तां दे॒वानां॑ रा॒तिर॒भि नो॒ नि व॑र्तताम् । दे॒वानां॑ स॒ख्यमुप॑ सेदिम
दे॒वा न॒ आयुः॒ प्र ति॑रन्तु जी॒वसे॑ ॥ २ ॥ तान्पूर्व॑या नि॒विदा॑ हूमहे व॒यं भ
त्रमदि॑तिं॒ दक्ष॑म॒स्रिध॑म् । अ॒र्य॒मणं॒ वरु॑णं॒ सोम॑म॒श्विना॒ सर॑स्वती नः सुभगा॒
स्करत् ॥ ३ ॥ तन्नो॒ वातो॑ मयो॒भु वा॑तु भेष॒जं तन्मा॒ता पृ॑थि॒वी तत्पि॒ता द्यौः
ग्रावा॑णः सोम॒सुतो॑ मयो॒भुव॒स्तद॑श्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥ ४ ॥ तमीशा
गत॒स्त॒स्थुष॒स्पतिं॑ धियञ्जि॒न्वमव॑से हूमहे व॒यम् । पूषा नो॒ यथा॒ वेद॑सामस॑द्वृ॒धे र
पा॒युरद॑ब्धः स्व॒स्तये॑ ॥ ५ ॥ १५ ॥ स्व॒स्ति न॒ इन्द्रो॑ वृ॒द्धश्र॑वाः स्व॒स्ति नः
वि॒श्ववे॑दाः । स्व॒स्ति न॒स्तार्क्ष्यो॒ अरि॑ष्टनेमिः स्व॒स्ति नो॒ बृह॒स्पति॑र्दधातु ॥ ६
षद॑श्वा म॒रुतः॒ पृश्नि॑मातरः शुभं॒याया॑नो वि॒दथे॑षु जग्म॑यः । अ॒ग्नि॒जि॒ह्वा मन॑
र॑चक्षसो॒ विश्वे॑ नो दे॒वा अव॒सा ग॑मन्नि॒ह ॥ ७ ॥ भ॒द्रं कर्णे॑भिः शृणुयाम दे
प॑श्येमा॒क्षभि॒र्यज॑त्राः । स्थि॒रैरङ्गै॑स्तुष्टु॒वांस॑स्त॒नूभि॒र्व्य॑शेम दे॒वहि॑तं॒ यदायुः॑ ॥ ८
तमिन्नु॒ श॒रदो॒ अन्ति॑ देवा॒ यत्रा॑ नश्च॒क्रा ज॒रसं॑ त॒नूना॑म् । पु॒त्रासो॒ यत्र॑ पि॒तरो
व॑न्ति॒ मा नो॑ म॒ध्या री॑रिष॒तायु॒र्गन्तोः॑ ॥ ९ ॥ अदि॑ति॒र्द्यौरदि॑तिर॒न्तरि॑क्षमा
मा॒ता स पि॒ता स पु॒त्रः । विश्वे॑ दे॒वा अदि॑तिः॒ पञ्च॒ जना॒ अदि॑तिर्जा॒तमदि
नि॑त्वम् ॥ १० ॥ १६ ॥

॥ ९० ॥ १-९ गोतमो राहूगणपुत्र ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥
छन्दः—१, ८ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री । २, ७ गायत्री । ३ पिप
कामध्या विराड्गायत्री । ४ विराड् गायत्री । ५, ६ निचृद् गायत्री च । ९
त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-८ षड्जः । ९ गान्धारः ॥

॥ ९० ॥ ऋ॒जु॒नी॒ती नो॒ वरु॑णो मि॒त्रो न॑यतु वि॒द्वान् । अ॒र्य॒मा दे॒वैः स॒ज
॥ १ ॥ ते हि वस्वो॒ वस॑वाना॒स्ते अप्र॑मूरा॒ महो॑भिः । व्र॒ता र॑क्षन्ते वि॒श्वाहा॑ ॥
ते अ॒स्मभ्यं॒ शर्म॑ यंसन्न॒मृता॒ मर्त्ये॑भ्यः । बाध॑माना॒ अप॒ द्विषः॑ ॥ ३ ॥ वि नः

तार्य चियन्त्विन्द्रो मरुतः । पूषा भगो वन्द्यासः ॥ ४ ॥ उत नो धियो गोअ-
पूषन्विष्णवेवयावः । कर्ता नः स्वस्तिमतः ॥ ५ ॥ १७ ॥ मधु वाता ऋतायते मधु
न्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ ६ ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः ।
द्यौरस्तु नः पिता ॥ ७ ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भ-
नः ॥ ८ ॥ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा शं न इन्द्रो बृहस्प-
शं नो विष्णुरुरुक्रमः ॥ ९ ॥ १८ ॥

॥ ९१ ॥ १–२३ गोतमो राहूगणपुत्र ऋषिः ॥ सोमो देवता ॥ छन्दः–१,
४ स्वराट्पङ्क्तिः । २ पङ्क्तिः । १८, २० भुरिक्पङ्क्तिः । २२ विराट्पङ्क्तिः । ५
निचृद्गायत्री । ६, ८, ९, ११ निचृद्गायत्री । ७ वर्धमाना गायत्री । १०, १२
त्री । १३, १४ विराड्गायत्री । १५, १६ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री । १७
ष्णिक् । १९, २१, २३, निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–४, १८, २०, २२
। ५–१६ षड्जः । १७ ऋषभः । १९, २१, २३ धैवतः ॥

॥ ९१ ॥ त्वं सोम प्र चिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम् । तव
ती पितरो न इन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः ॥ १ ॥ त्वं सोम क्रतुभिः सु-
स्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः । त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युम्न्यभवो
ाः ॥ २ ॥ राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरं तव सोम धाम । शुचि-
सि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम ॥ ३ ॥ या ते धामानि दिवि
थिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु । तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेळन्राजन्त्सोम
हव्या गृभाय ॥ ४ ॥ त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा । त्वं भद्रो
क्रतुः ॥ ५ ॥ १९ ॥ त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तो-
नस्पतिः ॥ ६ ॥ त्वं सोम महे भगं त्वं यून ऋतायते । दक्षं दधासि जीव-
७ ॥ त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः । न रिष्येत्त्वावतः सखा
॥ सोम यास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति दाशुषे । ताभिर्नोऽविता भव ॥ ९ ॥
यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि । सोम त्वं नो वृधे भव ॥ १० ॥ २० ॥
गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः । सुमृळीको न आ विश ॥ ११ ॥ ग-
ानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव ॥ १२ ॥ सोम
न्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा । मर्य इव स्व ओक्ये ॥ १३ ॥ यः सोम
ये तव दारणदेव मर्त्यः । तं दक्षः सचते कविः ॥ १४ ॥ उरुष्या णो अभि-

शंस्तेः सोम नि पाह्यंहंसः । सखा सुशेव एधि नः ॥ १५ ॥ २१ ॥ आ प्य
समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ १६ ॥ आ
स्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः । भवा नः सुश्रवस्तमः सखा वृधे ॥
सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः । आप्यायमानो
ताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व ॥ १८ ॥ या ते धामानि हविषा य
ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् । गयस्फानः प्रतरणः सुवीरोऽवीरहा प्र
सोम दुर्यान् ॥ १९ ॥ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं दद
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥ २० ॥ २२ ॥ अषाळ
त्सु पृतनासु पप्रिं स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम् । भरेषुजां सुक्षितिं सुश्रवसं
त्वामनु मदेम सोम ॥ २१ ॥ त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजन
गाः । त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥ २२ ॥ देवे
मनसा देव सोम रायो भागं सहसावन्नभि युध्य । मा त्वा तनदीशिषे वी
भयेभ्यः प्र चिकित्सा गविष्टौ ॥ २३ ॥ २३ ॥

॥ ९२ ॥ १–१८ गोतमो राहूगणपुत्र ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्द
२ निचृज्जगती । ३ जगती । ४ विराड् जगती । ५, ७, १२ विराट् त्रिष्
१० निचृत्त्रिष्टुप् । ८, ९, त्रिष्टुप् । ११ भुरिक्पङ्क्तिः । १३ निचृत्परोष्णि
१४, १५ विराट्परोष्णिक् । १६, १७, १८ उष्णिक् ॥ स्वरः–१–४ निष
५–१०, १२ धैवतः । ११ पञ्चमः । १३–१८ ऋषभः ॥

॥ ९२ ॥ एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते
ष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः ॥ १ ॥ उ
भरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत । अक्रन्नुषासो वयुनानि
रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः ॥ २ ॥ अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन यो
परावतः । इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते ॥ ३
धि पेशांसि वपते नृतूरिवापोर्णुते वक्ष उस्रेव बर्जहम् । ज्योतिर्विश्वस्मै भु
कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः ॥ ४ ॥ प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि
ष्ठते बाधते कृष्णमभ्वम् । स्वरुं न पेशो विदथेष्वञ्जञ्चित्रं दिवो दुहिता
मश्रेत् ॥ ५ ॥ २४ ॥ अतारिष्म तमसस्पारमस्योषा उच्छन्ती वयुना कृणोति
छन्दो न स्मयते विभाती सुप्रतीका सौमनसायाजीगः ॥ ६ ॥ भास्वती ने

ानां दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः । प्रजावतो नृवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्राँ
मासि वाजान् ॥ ७ ॥ उषस्तमश्यां यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं रयिमश्वबुध्यम् ।
ंससा श्रवसा या विभासि वाजप्रसूता सुभगे बृहन्तम् ॥ ८ ॥ विश्वानि देवी
नाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति । विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती वि-
स्य वाचमविदन्मनायोः ॥ ९ ॥ पुनःपुनर्जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि
म्भमाना । श्वघ्नीव कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः ॥१०॥२५॥
ूर्ण्वती दिवो अन्ताँ अबोध्यप स्वसारं सनुतर्युयोति । प्रमिनती मनुष्या युगानि
षा जारस्य चक्षसा वि भाति ॥ ११ ॥ पशून्न चित्रा सुभगा प्रथाना सिन्धुर्न
ोद उर्विया व्यश्वैत् । अमिनती दैव्यानि व्रतानि सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना
१२ ॥ उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति । येन तोकं च तनयं च धाम-
॥ १३ ॥ उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि । रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति
१४ ॥ युक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः । अथा नो विश्वा सौभ-
न्या वह ॥ १५ ॥ २६ ॥ अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद्दस्रा हिरण्यवत् । अर्वा-
थं समनसा नि यच्छतम् ॥ १६ ॥ यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय च-
थुः । आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ॥ १७ ॥ एह देवा मयोभुवा दस्रा हिर-
ण्यवर्तनी । उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये ॥ १८ ॥ २७ ॥

॥ ९३ ॥ १—१२ गोतमो राहूगणपुत्र ऋषिः ॥ अग्नीषोमौ देवते ॥
न्दः—१ अनुष्टुप् । ३ विराडनुष्टुप् । २ भुरिगुष्णिक् । ४ स्वराट् पङ्क्तिः । ५,
निचृत् त्रिष्टुप् । ६ विराट् त्रिष्टुप् । ८ स्वराट् त्रिष्टुप् । १२ त्रिष्टुप् । ९, १०,
१ गायत्री ॥ स्वरः—१, ३ गान्धारः । २ ऋषभः । ४ पञ्चमः । ५–८, १२
वतः । ९, १०, ११ षड्जः ॥

॥ ९३ ॥ अग्नीषोमाविमं सु मे शृणुतं वृषणा हवम् । प्रति सूक्तानि हर्यतं
वतं दाशुषे मयः ॥ १ ॥ अग्नीषोमा यो अद्य वामिदं वचः सपर्यति । तस्मै धत्तं
वीर्यं गवां पोषं स्वश्व्यम् ॥ २ ॥ अग्नीषोमा य आहुतिं यो वां दाशाद्धविष्कृ-
म् । स प्रजया सुवीर्यं विश्वमायुर्व्यश्नवत् ॥ ३ ॥ अग्नीषोमा चेति तद्वीर्यं वां य-
ुष्णीतमवसं पणिं गाः । अवातिरतं बृसयस्य शेषोऽविन्दतं ज्योतिरेकं बहुभ्यः
॥ युवमेतानि दिवि रोचनान्यग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम् । युवं सिन्धूँरभिशस्तेर-
ादग्नीषोमावमुञ्चतं गृभीतान् ॥ ५ ॥ आन्यं दिवो मातरिश्वा जभारामथ्नाद-

न्यं परि श्येनो अद्रेः । अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधानोरुं यज्ञाय चक्रथुरु लो
॥ ६ ॥ २८ ॥ अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं वृषणा जुषेथाम् । सु
र्माणा स्ववसा हि भूतमथा धत्तं यजमानाय शं योः ॥ ७ ॥ यो अग्नीषोमा हवि
सपर्याद्देवद्रीचा मनसा यो घृतेन । तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय म
शर्म यच्छतम् ॥ ८ ॥ अग्नीषोमा सवेदसा सहूती वनतं गिरः । सं देवत्रा बभूवथुः ॥
अग्नीषोमावनेन वां यो वां घृतेन दाशति । तस्मै दीदयतं बृहत् ॥ १० ॥ अग्नीषोमाविम
नो युवं हव्या जुजोषतम् । आ यातमुप नः सचा ॥ ११ ॥ अग्नीषोमा पिपृ
वतो न आ प्यायन्तामुस्रिया हव्यसूदः । अस्मे बलानि मघवत्सु धत्तं कृणुतं
अध्वरं श्रुष्टिमन्तम् ॥ १२ ॥ २६ ॥ १४ ॥

९४ ॥ १–१६ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ४,
७, ९, १० निचृज्जगती । १२, १३, १४ विराड् जगती । २, ३, १६ त्रिष्टु
६ स्वराट् त्रिष्टुप् । ११ भुरिक् त्रिष्टुप् । ८ निचृत् त्रिष्टुप् । १५ भुरिक् पङ्क्ति
स्वरः–१, ४, ५, ७, ९, १०, १२–१४ निषादः । २, ३, १६, ६, ११
धैवतः । १५ पञ्चमः ॥

॥ ९४ ॥ इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया । भद्रा
नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ १ ॥ यस्मै त्वमायजसे स साध
नवा क्षेति दधते सुवीर्यम् । स तूताव नैनमश्नोत्यंहतिरग्ने सख्ये मा रिषामा
तव ॥ २ ॥ शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् । त्व
दित्याँ आ वह तान्ह्युश्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ३ ॥ भरामेध्मं
णवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् । जीवातवे प्रतरं साधया
योऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ४ ॥ विशां गोपा अस्य चरन्ति जन्तवो द्विपच्च य
चतुष्पदक्तुभिः । चित्रः प्रकेत उषसो महाँ अस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ५ ॥
त्वमध्वर्युरुत होतासि पूर्व्यः प्रशास्ता पोता जनुषा पुरोहितः । विश्वा विद्वाँ आ
ज्या धीर पुष्यस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ६ ॥ यो विश्वतः सुप्रतीकः सदृङ्
दूरे चित्सन्तळिदिवाति रोचसे । रात्र्याश्चिदन्धो अति देव पश्यस्यग्ने सख्ये मा
षामा वयं तव ॥ ७ ॥ पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथोऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः ।
जानीतोत पुष्यता वचोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ८ ॥ वधैर्दुःशंसाँ अप दू
जहि दूरे वा ये अन्ति वा के चिदत्रिणः । अथा यज्ञाय गृणते सुगं कृध्यग्ने स

रिषामा वयं तव ॥ ६ ॥ यदयुक्था अरुषा रोहिता रथे वातजूता वृषभस्येव ते
: । आदिन्वसि वनिनो धूमकेतुनाग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥१०॥ ३१॥
स्वनादुत बिभ्युः पतत्रिणो द्रप्सा यत्ते यवसादो व्यस्थिरन् । सुगं तत्ते ताव-
यो रथेभ्योऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ११ ॥ अयं मित्रस्य वरुणस्य
सेऽवयातां मरुतां हेळो अद्भुतः । मृळा सु नो भूत्वेषां मनः पुनरग्ने सख्ये मा
ामा वयं तव ॥ १२ ॥ देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारु-
रे । शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ १३ ॥ तत्ते
यत्समिद्धः स्वे दमे सोमाहुतो जरसे मृळयत्तमः । दधासि रत्नं द्रविणं च दा-
ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ १४ ॥ यस्मै त्वं सुद्रविणो ददाशोनागा-
मदिते सर्वताता । यं भद्रेण शवसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम ॥ १५ ॥
त्वमग्ने सौभगत्वस्य विद्वानस्माकमायुः प्र तिरेह देव । तन्नो मित्रो वरुणो मा-
न्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ १६ ॥ ३२ ॥ ६ ॥

॥ ६५ ॥ १–११ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ सत्यगुणविशिष्टोऽग्निः शुद्धो-
र्वा देवता ॥ छन्दः–१, ३ विराट् त्रिष्टुप् । २, ७, ८, ११ त्रिष्टुप् । ४, ५, ६, १०
चृत्त्रिष्टुप् । ९ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–८, १०, ११ धैवतः । ९ पञ्चमः ॥

॥ ६५ ॥ द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते । हरिरन्यस्यां भवति
धावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः ॥ १ ॥ दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त गर्भमतन्द्रासो यु-
यो विभृत्रम् । तिग्मानीकं स्वयशसं जनेषु विरोचमानं परि षीं नयन्ति ॥ २ ॥ त्रीणि
ना परि भूषन्त्यस्य समुद्र एकं दिव्येकमप्सु । पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानामृतून्प्रशास-
दधावनुष्ठु ॥ ३ ॥ क इमं वो निण्यमा चिकेत वत्सो मातृर्जनयत स्वधाभिः । बह्वीनां
र्भो अपसामुपस्थान्महान्कविर्निश्चरति स्वधावान् ॥४॥ आविष्ट्यो वर्धते चारुरासु
ह्मानामूर्ध्वः स्वयशा उपस्थे । उभे त्वष्टुर्बिभ्यतुर्जायमानात्प्रतीची सिंहं प्रति जोषयेते
५ ॥ १ ॥ उभे भद्रे जोषयेते न मेने गावो न वाश्रा उप तस्थुरेवैः । स दक्षा-
दक्षपतिर्बभूवाञ्जन्ति यं दक्षिणतो हविर्भिः ॥ ६ ॥ उद्यंयमीति सवितेव
हू उभे सिचौ यतते भीम ऋञ्जन् । उच्छुक्रमत्कमजते सिमस्मान्नवा मातृभ्यो
ना जहाति ॥ ७ ॥ त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्चानः सदने गोभिरद्भिः ।
विर्बुध्ने परि मर्मृज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव ॥ ८ ॥ उरु ते ज्रयः प-
ति बुध्नं विरोचमानं महिषस्य धाम । विश्वेभिरग्ने स्वयशोभिरिद्धोऽदब्धेभिः

पायुभिः पाह्यस्मान् ॥ ९ ॥ धन्वन्त्स्रोतः कृणुते गातुमूर्मिं शुक्रैरूर्मिभिरभि नं
क्षाम् । विश्वा सनानि जठरेषु धत्तेऽन्तर्नवासु चरति प्रसूषु ॥ १० ॥ एवा
अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि । तन्नो मित्रो वरुणो मामह
मदितिः सिंधुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ११ ॥ २ ॥

॥ ९६ ॥ १—९ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ द्रविणोदा अग्निः शुद्धो
र्वा देवता ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ९६ ॥ स प्रत्नथा सहसा जायमानः सद्यः काव्यानि बळधत्त विश्
आपश्च मित्रं धिषणा च साधन्देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ १ ॥ स पू
निविदा कव्यतायोरिमाः प्रजा अजनयन्मनूनाम् । विवस्वता चक्षसा द्यामप
देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ २ ॥ तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीर
तमृञ्जसानम् । ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ३
स मातरिश्वा पुरुवारपुष्टिर्विदद्गातुं तनयाय स्वर्वित् । विशां गोपा जनिता र
स्योर्देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ४ ॥ नक्तोषासा वर्णमामेम्याने धाप
शिशुमेकं समीची । द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्वि भाति देवा अग्निं धारयन्द्र
णोदाम् ॥ ५ ॥ ३ ॥ रायो बुध्नः संगमनो वसूनां यज्ञस्य केतुर्मन्मसाधनो वे
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ६ ॥ नू च पुर
सदनं रयीणां जातस्य च जायमानस्य च क्षाम् । सतश्च गोपां भवतश्च भूरे
अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ७ ॥ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनर
प्र यंसत् । द्रविणोदा वीरवतीमिषं नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः ॥ ८ ॥ ए
नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि । तन्नो मित्रो वरुणो म
हतामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ९ ॥ ४ ॥

॥ ९७ ॥ १—८ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ७, ८ पि
लिकामध्यानिचृद् गायत्री । २, ४, ५ गायत्री । ३, ६ निचृद्गायत्री च ॥ षड्जः स्वर

॥ ९७ ॥ अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुग्ध्या रयिम् । अप नः शोशुचद
॥ १ ॥ सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे । अप नः शोशुचदघम् ॥ २
प्र यद्भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकासश्च सूरयः । अप नः शोशुचदघम् ॥ ३ ॥ प्र य
अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम् । अप नः शोशुचदघम् ॥ ४ ॥ प्र यदग्
सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः । अप नः शोशुचदघम् ॥ ५ ॥ त्वं हि विश

ुख विश्वतः परिभूरसि । अप नः शोशुचदघम् ॥ ६ ॥ द्विषो नो विश्वतो-
ाति नावेव पारय । अप नः शोशुचदघम् ॥ ७ ॥ स नः सिन्धुमिव नावयाति
ा स्वस्तये । अप नः शोशुचदघम् ॥ ८ ॥ ५ ॥

॥ ९८ ॥ १—३ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ अग्निर्वैश्वानरो देवता ॥
दः—१ विराट् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ३ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ९८ ॥ वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः । इतो
तो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण ॥ १ ॥ पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृ-
व्यां पृष्टो विश्वा ओषधीरा विवेश । वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः स नो दिवा
रिषः पातु नक्तम् ॥ २ ॥ वैश्वानर तव तत्सत्यमस्त्वस्मान्रायो मघवानः सच-
ाम् तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ३ ॥ ६ ॥

॥ ९९ ॥ १ कश्यपो मारीचिपुत्र ऋषिः ॥ अग्निर्जातवेदा देवता ॥ निचृत्
ष्टुप् छन्दः ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ९९ ॥ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः । स नः
दति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ १ ॥ ७ ॥

॥ १०० ॥ १—१९ वृषागिरो महाराजस्य पुत्रभूता वार्षागिरा ऋज्राश्वाम्ब-
सहदेवभयमानसुराधसऋषयः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५ पङ्क्तिः । २,
, १७ स्वराट् पङ्क्तिः । ६, १०, १६ भुरिक् पङ्क्तिः । ३, ४, ११, १८
ाट् त्रिष्टुप् । ७, ८, ९, १२, १४, १५, १९ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१,
५, १३, १७, ६, १०, १६ पञ्चमः । ३, ४, ११, १२, १८, ७-९, १४,
, १९ धैवतः ॥

॥ १०० ॥ स यो वृषा वृष्ण्येभिः समोका महो दिवः पृथिव्याश्च सम्राट् ।
ोनसत्वा हव्यो भरेषु मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १ ॥ यस्यानाप्तः सूर्यस्ये-
यामो भरेभरे वृत्रहा शुष्मो अस्ति । वृषन्तमः सखिभिः स्वेभिरेवैर्मरुत्वान्नो
त्विन्द्र ऊती ॥ २ ॥ दिवो न यस्य रेतसो दुघानाः पन्थासो यन्ति शवसापर-
ाः । तरद्द्वेषाः सासहिः पौंस्येभिर्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ ३ ॥ सो अङ्-
ोभिरङ्गिरस्तमो भूद्वृषा वृषभिः सखिभिः सखा सन् । ऋग्मिभिर्ऋग्मी गातुभि-
ष्ठो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ ४ ॥ स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋभ्वा नृषाह्ये सासह्वाँ

अमित्रान् । सनीळेभिः श्रवस्यानि तूर्वन्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ ५ ॥ व
स मन्युमीः समदनस्य कर्तास्माकेभिर्नृभिः सूर्यं सनत् । अस्मिन्नहन्त्सत्पतिः पुरु
मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ ६ ॥ तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षित
कृण्वत त्राम् । स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ ७
तमप्सन्त शवस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय । सो अन्धे चित्तमसि ज्यो
र्विदन्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ ८ ॥ स सव्येन यमति व्राधतश्चित्स दक्षि
संगृभीता कृतानि । स कीरिणा चित्सनिता धनानि मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊ
॥ ९ ॥ स ग्रामेभिः सनिता स रथेभिर्विदे विश्वाभिः कृष्टिभिर्न्व१द्य । स पौं
भिरभिभूरशस्तीर्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १० ॥ ६ ॥ स जामिभिर्यत्
जाति मीळ्हेऽजामिभिर्वा पुरुहूत एवैः । अपां तोकस्य तनयस्य जेषे मरुत्व
भवत्विन्द्र ऊती ॥ ११ ॥ स वज्रभृद्दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेताः शत
ऋभ्वा । चम्रीषो न शवसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १
तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत्स्वर्षा दिवो न त्वेषो रवथः शिमीवान् । तं सचन्ते
नयस्तं धनानि मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १३ ॥ यस्याजस्रं शवसा मा
क्थं परिभुजद्रोदसी विश्वतः सीम् । स पारिषत्क्रतुभिर्मन्दसानो मरुत्वान्नो
त्विन्द्र ऊती ॥ १४ ॥ न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शवसो अन्तमाप
स प्ररिक्वा त्वक्षसा क्ष्मो दिवश्च मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १५ ॥ १
रोहिच्छ्यावा सुमदंशुर्ललामीर्द्युक्षा राय ऋज्राश्वस्य । वृषण्वन्तं बिभ्रती
रथं मन्द्रा चिकेत नाहुषीषु विक्षु ॥ १६ ॥ एतत्त्यत्त इन्द्र वृष्ण उक्थं वार्षा
अभि गृणन्ति राधः । ऋज्राश्वः प्रष्टिभिरम्बरीषः सहदेवो भयमानः सुराधाः ॥ १
दस्यूञ्छिम्यूँश्च पुरुहूत एवैर्हत्वा पृथिव्यां शर्वा नि बर्हीत् । सनत्क्षेत्रं सखिभिः श्वि
भिः सनत्सूर्यं सनदपः सुवज्रः ॥ १८ ॥ विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिह्
सनुयाम वाजम् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत
॥ १९ ॥ ११ ॥

॥ १०१ ॥ १—११ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
४ निचृज्जगती । २, ५, ७ विराड् जगती । ३ भुरिक् त्रिष्टुप् । ६ स्वराड
ष्टुप् । ८, १० निचृत् त्रिष्टुप् । ९, ११ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ७
षादः ३, ६, ८—११ धैवतः ॥

॥ १०१ ॥ प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना ।
स्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ॥ १ ॥ यो व्यंसं जाहृषा-
मन्युना यः शम्बरं यो अहन्पिप्रुमव्रतम् । इन्द्रो यः शुष्णमशुषं न्यावृणङ्म-
न्तं सख्याय हवामहे ॥ २ ॥ यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं महद्यस्य व्रते वरुणो
य सूर्यः । यस्येन्द्रस्य सिन्धवः सश्चति व्रतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ॥ ३ ॥
अश्वानां यो गवां गोपतिर्वशी य आरितः कर्मणिकर्मणि स्थिरः । वीळोश्चि-
द्रो यो असुन्वतो वधो मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ॥ ४ ॥ यो विश्वस्य जगतः
गतस्पतिर्यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत् । इन्द्रो यो दस्यूँरधराँ अवातिरन्मरुत्वन्तं
ख्याय हवामहे ॥ ५ ॥ यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभिर्यो धावद्भिर्हूयते यश्च जि-
भिः । इन्द्रं यं विश्वा भुवनाभि संदधुर्मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ॥ ६ ॥ १२ ॥
णामेति प्रदिशा विचक्षणो रुद्रेभिर्योषा तनुते पृथु ज्रयः । इन्द्रं मनीषा अ-
र्चति श्रुतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ॥ ७ ॥ यद्वा मरुत्वः परमे सधस्थे य-
मे वृजने मादयासे । अत आ याह्यध्वरं नो अच्छा त्वाया हविश्चकृमा सत्य-
ः ॥ ८ ॥ त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा सुदक्ष त्वाया हविश्चकृमा ब्रह्मवाहः । अधा
त्वः सगणो मरुद्भिरस्मिन्यज्ञे बर्हिषि मादयस्व ॥ ९ ॥ मादयस्व हरिभिर्ये
न्द्र वि ष्यस्व शिप्रे वि सृजस्व धेने । आ त्वा सुशिप्र हरयो वहन्तूशन्हव्यानि
नो जुषस्व ॥ १० ॥ मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य गोपा वयमिन्द्रेण सनुयाम वा-
। तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ११ ॥ १३ ॥

॥ १०२ ॥ १—११ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१,
ती । ३, ५—८ निचृज्जगती । २, ४, ९ स्वराट् त्रिष्टुप् । १०, ११ निचृत्
ुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५—८, निषादः २, ४, ९—११ धैवतः ॥

॥ १०२ ॥ इमां ते धियं प्र भरे महो महीमस्य स्तोत्रे धिषणा यत्त आनजे ।
त्सवे च प्रसवे च सासहिमिन्द्रं देवासः शवसामदन्ननु ॥ १ ॥ अस्य श्रवो नद्यः
बिभ्रति द्यावाक्षामा पृथिवी दर्शतं वपुः । अस्मे सूर्याचन्द्रमसाभिचक्षे श्रद्धे
मिन्द्र चरतो वितर्तुरम् ॥ २ ॥ तं स्मा रथं मघवन्प्राव सातये जैत्रं यं ते अनु-
ाम संगमे । आजा न इन्द्र मनसा पुरुष्टुत त्वायद्भ्यो मघवञ्छर्म यच्छ नः
३ ॥ वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरेभरे । अस्मभ्यमिन्द्र व-
ः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन्वृष्ण्या रुज ॥ ४ ॥ नाना हि त्वा हवमाना जना इमे

धनानां धर्तरवसा विपन्यवः । अस्माकं स्मा रथमा तिष्ठ सातये जैत्रं हीन्द्र निभृत
स्तव ॥ ५ ॥ १४ ॥ गोजिता बाहू अमितक्रतुः सिमः कर्मन्कर्मञ्छतमूतिः खजङ्क
कल्प इन्द्रः प्रतिमानमोजसाथा जना वि ह्वयन्ते सिषासवः ॥ ६ ॥ उत्ते शतान्मघ
भूयस उत्सहस्राद्रिरिचे कृष्टिषु श्रवः । अमात्रं त्वा धिषणा तित्विषे मह्यधा वृ
जिघ्नसे पुरन्दर ॥ ७ ॥ त्रिविष्टिधातु प्रतिमानमोजसस्तिस्रो भूमीर्नृपते त्रीणि रो
अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथाशत्रुरिन्द्र जनुषा सनादसि ॥ ८ ॥ त्वां देवेषु
हवामहे त्वं बभूथ पृतनासु सासहिः । सेमं नः कारुमुपमन्युमुद्भिदमिन्द्रः कृणो
सवे रथं पुरः ॥ ९ ॥ त्वं जिगेथ न धना रुरोधिथार्भेष्वाजा मघवन्महत्सु च
मुग्रमवसे सं शिशीमस्यथा न इन्द्र हवनेषु चोदय ॥ १० ॥ विश्वाहेन्द्रो अधि
नो अस्त्वपरिह्वृताः सनुयाम वाजम् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः
पृथिवी उत द्यौः ॥ ११ ॥ १५ ॥

॥ १०३ ॥ १—८ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः
३, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४ विराट् त्रिष्टुप् । ७, ८ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्व

॥ १०३ ॥ तत्त इन्द्रियं परमं पराचैरधारयन्त कवयः पुरेदम् । क्षमेद
दिव्य१न्यदस्य समी पृच्यते समनेव केतुः ॥ १ ॥ स धारयत्पृथिवीं पप्रथ
ज्रेण हत्वा निरपः ससर्ज । अहन्नहिमभिनद्रौहिणं व्यहन्व्यंसं मघवा शचीभिः
स जातूभर्मा श्रद्दधान ओजः पुरो विभिन्दन्नचरद्वि दासीः । विद्वान्वज्रिन्दस्य
तिमस्यार्यं सहो वर्धया द्युम्नमिन्द्र ॥ ३ ॥ तदूचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्
घवा नाम बिभ्रत् । उपप्रयन्दस्युहत्याय वज्री यद्ध सूनुः श्रवसे नाम दधे ॥
तदस्येदं पश्यता भूरि पुष्टं श्रदिन्द्रस्य धत्तन वीर्याय । स गा अविन्दत्सो अ
दश्वान्त्स ओषधीः सो अपः स वनानि ॥ ५ ॥ १६ ॥ भूरिकर्मणे वृषभाय
सत्यशुष्माय सुनवाम सोमम् । य आदृत्या परिपन्थीव शूरोऽयज्वनो विभज
वेदः ॥ ६ ॥ तदिन्द्र प्रेव वीर्यं चकर्थ यत्ससन्तं वज्रेणाबोधयोऽहिम् । अनु त
नीर्हृषितं वयश्च विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा ॥ ७ ॥ शुष्णं पिप्रुं कुयवं वृत्र
यदावधीर्वि पुरः शम्बरस्य । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृ
उत द्यौः ॥ ८ ॥ १७ ॥

॥ १०४ ॥ १–९ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ प

, ४, ५ स्वराट् पङ्क्तिः। ६ भुरिक् पङ्क्तिः। ३, ७ त्रिष्टुप्। ८, ९ निचृत् त्रिष्टुप्॥
रः-१, २, ४-६ पञ्चमः। ३, ७-९ धैवतः॥

॥ १०४ ॥ योनिष्ट इन्द्र निषदे अकारि तमा नि षीद स्वानो नार्वा। वि-
च्या वयोऽवसायाश्वान्दोषा वस्तोर्वहीयसः प्रपित्वे ॥१॥ ओ त्ये नर इन्द्रमूतये
र्नु चित्तान्त्सद्यो अध्वनो जगम्यात्। देवासो मन्युं दासस्य श्चम्नन्ते न आ व-
न्त्सुविताय वर्णम् ॥ २ ॥ अव त्मना भरते केतवेदा अव त्मना भरते फेनमु-
न्। क्षीरेण स्नातः कुयवस्य योषे हते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः ॥ ३ ॥ यु-
प नाभिरुपरस्यायोः प्र पूर्वाभिस्तिरते राष्टि शूरः। अञ्जसी कुलिशी वीरपत्नी पयो
न्वाना उदभिर्भरन्ते ॥ ४ ॥ प्रति यत्स्या नीथादर्शि दस्योरोको नाच्छा सदनं
ानती गात्। अध स्मा नो मघवञ्चर्कृतादिन्मा नो मघेव निष्षपी परा दाः॥५॥
८॥ स त्वं न इन्द्र सूर्ये सो अप्स्वनागास्त्व आ भज जीवशंसे। मान्तरां भु-
मा रीरिषो नः श्रद्धितं ते महत इन्द्रियाय ॥ ६ ॥ अधा मन्ये श्रत्ते अस्मा अ-
यि वृषा चोदस्व महते धनाय। मा नो अकृते पुरुहूत योनाविन्द्र क्षुध्यद्भ्यो वय
ासुतिं दाः ॥ ७ ॥ मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा नः प्रिया भोजनानि प्र
षीः। आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भेन्मा नः पात्रा भेत्सहजानुषाणि ॥ ८॥
र्वाङेहि सोमकामं त्वाहुरयं सुतस्तस्य पिबा मदाय। उरुव्यचा जठर आ वृषस्व
तेव नः शृणुहि हूयमानः ॥ ९ ॥ १९ ॥

॥ १०५ ॥ १-१९ आप्त्यस्त्रित ऋषिः आङ्गिरसः कुत्सो वा ॥ विश्वे देवा
वता ॥ छन्दः-१, २, १२, १६, १७ निचृत्पङ्क्तिः। ३, ४, ६, ९, १५, १८
िराट्पङ्क्तिः। ८, १० स्वराट् पङ्क्तिः। ११, १४ पङ्क्तिः। ५ निचृद्बृहती। ७
ुरिग्बृहती। १३ महाबृहती। १९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः-१-४, ६, ८-१२,
४-१८ पञ्चमः। ५, ७, १३ मध्यमः। १९ धैवतः॥

॥ १०५ ॥ चन्द्रमा अप्स्व१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि। न वो हिरण्यनेमयः
दं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी॥ १ ॥ अर्थमिद्वा उ अर्थिन आ जा-
ा युवते पतिम्। तुञ्जाते वृष्ण्यं पयः परिदाय रसं दुहे वित्तं मे अस्य रोदसी
२ ॥ मो षु देवा अदः स्व१रव पादि दिवस्परि। मा सोम्यस्य शंभुवः शूने
ूम कदा चन वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ३ ॥ यज्ञं पृच्छाम्यवमं स तद्दूतो वि
ोचति। क्व ऋतं पूर्व्यं गतं कस्तद्बिभर्ति नूतनो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ४ ॥

अमी ये देवाः स्थन त्रिष्वा रोचने दिवः । कद्व ऋतं कदनृतं क्व प्रत्ना व आ
तिर्वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ५ ॥ २० ॥ कद्व ऋतस्य धर्णसि कद्वरुणस्य च
णं । कदर्यम्णो महस्पथाति क्रामेम दूढ्यो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ६ ॥ अहं
अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानि चित् । तं मा व्यन्त्याध्यो वृको न तृष्णजं
वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ७ ॥ सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः । मूषो
शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ८ ॥ अ
ये सप्त रश्मयस्तत्रा मे नाभिरातता । त्रितस्तद्वेदाप्त्यः स जामित्वाय रेभति
मे अस्य रोदसी ॥ ९ ॥ अमी ये पञ्चोक्षणो मध्ये तस्थुर्महो दिवः । देवत्रा
प्रवाच्यं सध्रीचीना नि वावृतुर्वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १० ॥ २१ ॥ सुप
ण एत आसते मध्य आरोधने दिवः । ते सेधन्ति पथो वृकं तरन्तं यह्वतीरपो
मे अस्य रोदसी ॥ ११ ॥ नव्यं तदुक्थ्यं हितं देवासः सुप्रवाचनम् । ऋतमर्ष
सिन्धवः सत्यं तातान सूर्यो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १२ ॥ अग्ने तव त्यदु
देवेष्वस्त्याप्यम् । स नः सत्तो मनुष्वदा देवान्यक्षि विदुष्टरो वित्तं मे अस्य
दसी ॥ १३ ॥ सत्तो होता मनुष्वदा देवाँ अच्छा विदुष्टरः । अग्निर्हव्या सुषू
देवो देवेषु मेधिरो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १४ ॥ ब्रह्मा कृणोति वरुणो ग
विदं तमीमहे । व्यूर्णोति हृदा मतिं नव्यो जायतामृतं वित्तं मे अस्य रो
॥ १५ ॥ २२ ॥ असौ यः पन्था आदित्यो दिवि प्रवाच्यं कृतः । न स
अतिक्रमे तं मर्तासो न पश्यथ वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १६ ॥ त्रितः कूपेऽव
तो देवान्हवत ऊतये । तच्छुश्राव बृहस्पतिः कृण्वन्नंहूरणादुरु वित्तं मे अस्य
दसी ॥ १७ ॥ अरुणो मा सकृद्वृकः पथा यन्तं ददर्श हि । उज्जिहीते निचा
तष्टेव पृष्ट्यामयी वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १८ ॥ एनाङ्गूषेण वयमिन्द्रव
ऽभि ष्याम वृजने सर्ववीराः । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृ
वी उत द्यौः ॥ १९ ॥ २३ ॥ १५ ॥

॥ १०६ ॥ १–७ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥ छन्द
१–६ जगती । ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–६ निषादः । ७ धैवतः ॥

॥ १०६ ॥ इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये मारुतं शर्धो अदितिं हवामहे ।
न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ १ ॥ त आदित्या
गंता सर्वतातये भूत देवा वृत्रतूर्येषु शम्भुवः । रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्म

[अ]हंसो निष्पिपर्तनः ॥ २ ॥ अर्वन्तु नः पितरः सुप्रवाचना उत देवी देवपुत्रे ऋतावृधा ।
[र]थं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ३ ॥ नराशंसं वाजिनं
[वा]जयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे । रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो
[अ]ंहसो निष्पिपर्तन ॥ ४ ॥ बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत्ते मनुर्हितं तदीमहे । रथं
[न] दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ५ ॥ इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं
[श]चीपतिं काटे निबाळ्ह ऋषिरह्वदूतये । रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो
[अ]ंहसो निष्पिपर्तन ॥ ६ ॥ देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छ-
[न्] । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ७ ॥ २४ ॥

॥ १०७ ॥ १—३ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥ छन्दः–१
[वि]राट्त्रिष्टुप् । २ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् च ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १०७ ॥ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृळयन्तः । आ
[व]ोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ॥ १ ॥ उप नो देवा अव-
[स]ा गमन्त्वङ्गिरसां सामभिः स्तूयमानाः । इन्द्र इन्द्रियैर्मरुतो मरुद्भिरादित्यैर्नो अ-
[दि]तिः शर्म यंसत् ॥ २ ॥ तन्न इन्द्रस्तद्वरुणस्तदग्निस्तदर्यमा तत्सविता चनो
[धा]त् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥३॥ २५ ॥

॥ १०८ ॥ १–१३ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः—
[१], ८, १२ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ३, ६, ११ विराट् त्रिष्टुप् । ७, ९, १०, १३
[त्रि]ष्टुप् । ४ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ पङ्क्ति ॥ स्वरः–१–३, ६–१३ धैवतः । ४, ५ पञ्चमः ॥

॥ १०८ ॥ य इन्द्राग्नी चित्रतमो रथो वामभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।
[ते]ना यातं सरथं तस्थिवांसाथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ १ ॥ यावदिदं भुवनं
[वि]श्वमस्त्युरुव्यचा वरिमता गभीरम् । तावाँ अयं पातवे सोमो अस्त्वरमिन्द्राग्नी
[म]नसे युवभ्याम् ॥ २ ॥ चक्राथे हि सध्र्य१ङ्नाम भद्रं सध्रीचीना वृत्रहणा उत
[स्थ]ः । ताविन्द्राग्नी सध्र्यञ्चा निषद्या वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम् ॥ ३ ॥
[स]मिद्धेष्वग्निष्वानजाना यतस्रुचा बर्हिरु तिस्तिराणा । तीव्रैः सोमैः परिषिक्तेभि-
[र]र्वागेन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ॥ ४ ॥ यानीन्द्राग्नी चक्रथुर्वीर्याणि यानि रू-
[प]ाण्युत वृष्ण्यानि । या वां प्रत्नानि सख्या शिवानि तेभिः सोमस्य पिबतं सु-
[त]स्य ॥ ५ ॥ २६ ॥ यदब्रवं प्रथमं वां वृणानो३ऽयं सोमो असुरैर्नो विहव्यः । तां

सत्यां श्रद्धामभ्या हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ६ ॥ यदिन्द्राग्नी मद
स्वे दुरोणे यद्ब्रह्मणि राजनि वा यजत्रा । अतः परि वृषणावा हि यातमथा
मस्य पिबतं सुतस्य ॥ ७ ॥ यदिंद्राग्नी यदुषु तुर्वशेषु यद्द्रुह्युष्वनुषु पूरुषु स्थ
अतः परि वृषणा वा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ८ ॥ यदिन्द्रा
अवमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यां परमस्यां मुत स्थः । अतः परि वृषणावा हि य
मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ६ ॥ यदिन्द्राग्नी परमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्
मवमस्यामुत स्थः । अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥१
यदिंद्राग्नी दिवि ष्ठो यत्पृथिव्यां यत्पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु । अतः परि वृषणावा
यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ११ ॥ यदिन्द्राग्नी उदिता सूर्यस्य म
दिवः स्वधया मादयेथे । अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सु
स्य ॥ १२ ॥ एवेन्द्राग्नी पपिवांसा सुतस्य विश्वास्मभ्यं सं जयतं धनानि । त
मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ १३ ॥ २७ ॥

॥ १०६ ॥ १–८ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः–
३, ४, ६, ८ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ५ त्रिष्टुप् । ७ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः

॥ १०६ ॥ वि ह्यख्यं मनसा वस्य इच्छन्निन्द्राग्नी ज्ञास उत वा सजातान्
नान्या युवत्प्रमतिरस्ति मह्यं स वां धियं वाजयन्तीमतक्षम् ॥ १ ॥ अश्रवं हि
रिदावत्तरा वां विजामातुरुत वा घा स्यालात् । अथा सोमस्य प्रयती युवभ्या
न्द्राग्नी स्तोमं जनयामि नव्यम् ॥ २ ॥ मा च्छेद्म रश्मीँरिति नाधमानाः पितॄ
शक्तीरनुयच्छमानाः । इन्द्राग्निभ्यां कं वृषणो मदन्ति ता ह्यद्री धिषणाया उ
स्थे ॥ ३ ॥ युवाभ्यां देवी धिषणा मदायेन्द्राग्नी सोममुशती सुनोति । तावश्वि
भद्रहस्ता सुपाणी आ धावतं मधुना पृङ्क्तमप्सु ॥ ४ ॥ युवामिन्द्राग्नी वसु नो
भागे तवस्तमा शुश्रव वृत्रहत्ये । तावासद्या बर्हिषि यज्ञे अस्मिन्प्र चर्षणी मादये
सुतस्य ॥ ५ ॥ २८ ॥ प्र चर्षणिभ्यः पृतनाहवेषु प्र पृथिव्या रिरिचाथे दिवश्च
प्र सिन्धुभ्यः प्र गिरिभ्यो महित्वा प्रेन्द्राग्नी विश्वा भुवनात्यन्या ॥ ६ ॥ आ भर
शिक्षतं वज्रबाहू अस्माँ इन्द्राग्नी अवतं शचीभिः । इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य येभि
सपित्वं पितरो न आसन् ॥ ७ ॥ पुरंदरा शिक्षतं वज्रहस्तास्माँ इन्द्राग्नी अव
भरेषु । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ८ ॥ २९

॥ ११० ॥ १–६ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः—

जगती । २, ३, ७ विराड् जगती । ६, ८ निचृज्जगती । ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ६
ष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-८ निषादः । ५, ६ धैवतः ॥

॥ ११० ॥ तृतं मे अपस्तदु तायते पुनः स्वादिष्ठा धीतिरुचथाय शस्यते ।
यं समुद्र इह विश्वदेव्यः स्वाहाकृतस्य समु तृप्णुत ऋभवः ॥ १ ॥ आभोगयं प्र य-
च्छन्त एतनापाकाः प्राञ्चो मम के चिदापयः । सौधन्वनासश्चरितस्य भूमनाग-
त सवितुर्दाशुषो गृहम् ॥२॥ तत्सविता वोऽमृतत्वमासुवदगोह्यं यच्छ्रवयन्त एतन ।
चिच्चमसमसुरस्य भक्षणमेकं सन्तमकृणुता चतुर्वयम् ॥३॥ विष्ट्वी शमी तरणि-
र्वाघतो मर्तासः सन्तो अमृतत्वमानशुः । सौधन्वना ऋभवः सूरचक्षस सं-
रे समपृच्यन्त धीतिभिः ॥ ४ ॥ क्षेत्रमिव वि ममुस्तेजनेनँ एकं पात्रमृभवो जे-
नम् । उपस्तुता उपमं नाधमाना अमर्त्येषु श्रव इच्छमानाः ॥ ५ ॥ ३० ॥ आ
षामन्तरिक्षस्य नृभ्यः स्रुचेव घृतं जुहवाम विद्मना । तरणित्वाये पितुरस्य स-
र ऋभवो वाजमरुहन्दिवो रजः ॥ ६ ॥ ऋभुर्न इन्द्रः शवसा नवीयानृभुर्वा-
भिर्वसुभिर्वसुर्ददिः । युष्माकं देवा अवसाहनि प्रियेऽभि तिष्ठेम पृत्सुतीरसुन्वताम्
॥ ७ ॥ मिश्चर्मण ऋभवो गामपिंशत सं वत्सेनासृजता मातरं पुनः । सौधन्वनासः
स्यया नरो जिव्री युवाना पितराकृणोतन ॥ ८ ॥ वाजेभिर्नो वाजसातावविड्-
भुमाँ इन्द्र चित्रमा दर्षि राधः । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः
वी उत द्यौः ॥ ९ ॥ ३१ ॥

॥ १११ ॥ १-५ कुत्स आङ्गिरसः ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः-१-४
ती । ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१-४ निषादः । ५ धैवतः ॥

॥ १११ ॥ तक्षन्रथं सुवृतं विद्मनापसस्तक्षन्हरी इन्द्रवाहा वृषण्वसू । तक्ष-
तृभ्यामृभवो युवद्वयस्तक्षन्वत्साय मातरं सचाभुवम् ॥ १ ॥ आ नो यज्ञाय त-
ऋभुमद्वयः क्रत्वे दक्षाय सुप्रजावतीमिषम् । यथा क्षयाम सर्ववीरया विशा
: शर्धाय धासथा स्विन्द्रियम् ॥२॥ आ तक्षत सातिमस्मभ्यमृभवः सातिं रथाय
तिमर्वते नरः । सातिं नो जैत्रीं सं महेत विश्वहा जामिमजामिं पृतनासु सक्ष-
म् ॥ ३ ॥ ऋभुक्षणमिन्द्रमा हुव ऊतय ऋभून्वाजान्मरुतः सोमपीतये । उभा
ावरुणा नूनमश्विना ते नो हिन्वन्तु सातये धिये जिषे ॥ ४ ॥ ऋभुर्भराय सं
ातु सातिं समर्यजिद्वाजो अस्माँ अविष्टु । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः
न्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥ ३२ ॥

॥ ११२ ॥ १–२५ कुत्स अङ्गिरस ऋषिः ॥ आदिमे मन्त्रे प्रथमपादस्य
द्यावापृथिव्यौ द्वितीयस्य अग्निः शिष्टस्य सूक्तस्याश्विनौ देवते ॥ छन्दः– १,
६, ७, १३, १५, १७, १८, २०, २१, २२ निचृज्जगती । ४, ८, ६,
१२, १४, १६, २३ जगती । १६ विराड् जगती । ३, ५, २४ विराट् त्रि
१० भुरिक् त्रिष्टुप् । २५ त्रिष्टुप् च ॥ स्वरः–१, २, ४, ६–६, ११–२३ निषा
३, ५, १०, २४, २५ धैवतः ॥

॥ ११२ ॥ ईळे द्यावापृथिवी पूर्वचित्तयेऽग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये । य
भरेकारमंशाय जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १ ॥ युवोर्दानाय
भरा असश्चतो रथमा तस्थुर्वचसं न मन्तवे । याभिर्धियोऽवथः कर्मन्निष्टये ता
षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २ ॥ युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो
मृतस्य मज्मना । याभिर्धेनुमस्वं पिन्वथो नरा ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना
॥ ३ ॥ याभिः परिज्मा तनयस्य मज्मना द्विमाता तूर्षु तरणिर्विभूषति । य
स्त्रिमन्तुरभवद्विचक्षणस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ४ ॥ याभी रेभं
वृतं सितमद्भ्य उदन्दनमैरयतं स्वर्दृशे । याभिः कण्वं प्र सिषासन्तमावतं ता
षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ५ ॥ ३३ ॥ याभिरन्तकं जसमानमारणे भुज्युं
भिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः । याभिः कर्कन्धुं वय्यं च जिन्वथस्ताभिरू षु ऊति
श्विना गतम् ॥ ६ ॥ याभिः शुचन्तिं धनसां सुषंसदं तप्तं घर्ममोम्यावन्तमत्र
याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ७ ॥ या
शचीभिर्वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृथः । याभिर्वर्तिकां ग्रसि
ममुञ्चतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ८ ॥ याभिः सिन्धुं मधुमन्तमस
वसिष्ठं याभिरजरावजिन्वतम् । याभिः कुत्सं श्रुतर्यं नर्यमावतं ताभिरू षु ऊ
भिरश्विना गतम् ॥ ६ ॥ याभिर्विश्पलां धनसामथर्व्यं सहस्रमीळ्ह आजाव
न्वतम् । याभिर्वशमश्व्यं प्रेणिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १
॥ ३४ ॥ याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशो अक्ष
कक्षीवन्तं स्तोतारं याभिरावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ११ ॥ य
रसां क्षोदसोद्नः पिपिन्वथुरनश्वं याभी रथमावतं जिषे । याभिस्त्रिशोक उ
उदाजत ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १२ ॥ याभिः सूर्यं परियाथः
वति मन्धातारं क्षैत्रपत्येष्वावतम् । याभिर्विप्रं प्र भरद्वाजमावतं ताभिरू षु ऊ
भिरश्विना गतम् ॥ १३ ॥ याभिर्महामतिथिग्वं कशोजुवं दिवोदासं शंबरहत्य

म् । याभिः पूर्भिद्ये त्रसदस्युमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १४ ॥
भिर्वम्रं विपिपानमुपस्तुतं कलिं याभिर्वित्तजानिं दुवस्यथः । याभिर्व्यश्वमुत
मावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १५ ॥ ३५ ॥ याभिर्नरा शयवे या-
त्रये याभिः पुरा मनवे गातुमीषथुः । याभिः शारीराजतं स्यूमरश्मये ताभि-
षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १६ ॥ याभिः पठर्वा जठरस्य मज्मनाग्निर्नादीदे-
इद्धो अज्मन्ना । याभिः शर्यातमवथो महाधने ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना
म् ॥ १७ ॥ याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथोऽग्रं गच्छथो विवरे गोअर्णसः ।
भिर्मनुं शूरमिषा समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १८ ॥ याभिः
ीर्विमदाय न्यूहथुरा घ वा याभिररुणीरशिक्षतम् । याभिः सुदास ऊहथुः
व्यं१न्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १९ ॥ याभिः शंताती भवथो ददा-
भुज्युं याभिरवथो याभिरध्रिगुम् । ओम्यावतीं सुभरामृतस्तुभं ताभिरू षु
तिभिरश्विना गतम् ॥ २० ॥ ३६ ॥ याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवे या-
यूनो अर्वन्तमावतम् । मधु प्रियं भरथो यत्सरड्भ्यस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना
म् ॥ २१ ॥ याभिर्नरं गोषुयुधं नृषाह्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः ।
भी रथाँ अवथो याभिरर्वतस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २२ ॥ याभिः
समार्जुनेयं शतक्रतू प्र तुर्वीतिं प्र च दभीतिमावतम् । याभिर्ध्वसन्तिं पुरुषन्ति-
तं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २३ ॥ अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे
नो दस्रा वृषणा मनीषाम् । अद्यूत्येऽवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वा-
तौ ॥ २४ ॥ द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः । तन्नो
ो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ २५ ॥ ३७ ॥ ७ ॥

॥ ११३ ॥ १–२० कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ १–२० उषा देवता ।
ीयस्यार्द्धर्चस्य रात्रिरपि ॥ छन्दः—१, ३, ६, १२, १७ निचृत् त्रिष्टुप् । ६
ष्टुप् । ७, १८–२० विराड् त्रिष्टुप् । २, ५ स्वराट् पङ्क्तिः । ४, ८, १०, ११,
, १६ भुरिक् पङ्क्तिः । १३, १४ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, १२, ६,
६, १७–२० धैवतः । २, ५, ४, ८, १०, ११, १३–१६ पञ्चमः ॥

॥ ११३ ॥ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा ।
प्रसूता सवितुः सवायँ एवा रात्र्युषसे योनिमारैक् ॥ १ ॥ रुशद्वत्सा रुशती
्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः । समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं

चरत आमिनाने ॥ २ ॥ समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशि
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे ॥ ३ ॥ भास्वती
सूनृतानामचेति चित्रा वि दुरो न आवः । प्राप्या जगद्व्यु नो रायो अख्य
अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥ ४ ॥ जिह्मश्ये चरितवे मघोन्याभोगय इष्टये रा
त्वं । दभ्रं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥ ५ ॥
क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै । विसदृशा जीविता
प्रचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥ ६ ॥ एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि
च्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः । विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सु
व्युच्छ ॥ ७ ॥ परायतीनामन्वेति पाथ आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् । व्यु
न्ती जीवमुदीरयन्त्युषा मृतं कं चन बोधयन्ती ॥ ८ ॥ उषो यदग्निं समिधे च
वि यदावश्चक्षसा सूर्यस्य । यन्मानुषान्यक्ष्यमाणाँ अजीगस्तद्देवेषु चकृषे भद्र
॥ ९ ॥ कियात्या यत्समया भवाति या व्यूषुर्याश्च नूनं व्युच्छान् । अनु
कृपते वावशाना प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति ॥ १० ॥ २ ॥ ईयुष्टे ये पूर्व
मपश्यन्व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः । अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याभूदो ते यन्ति
अपरीषु पश्यान् ॥ ११ ॥ यावयद्द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता
न्ती । सुमङ्गलीर्बिभ्रती देववीतिमिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ ॥ १२ ॥ शश्
रोषा व्युवास देव्यथो अद्येदं व्यावो मघोनी । अथो व्युच्छादुत्तराँ अनु द्
रामृता चरति स्वधाभिः ॥ १३ ॥ व्यञ्जिभिर्दिव आतास्वद्यौदप कृष्णां
र्णिजं देव्यावः । प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वैरोषा याति सुयुजा रथेन ॥ १४ ॥
वहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना ईयुषीणामुपमा शश्व
विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वैत् ॥ १५ ॥ ३ ॥ उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादप
गात्तम आ ज्योतिरेति । आरैक्पन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त
॥ १६ ॥ स्यूमना वाच उदियर्ति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः ।
तदुच्छ गृणते मघोन्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् ॥ १७ ॥ या गोमतीः
सर्ववीरा व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय । वायोरिव सूनृतानामुदर्के ता अश्वदा
वत्सोमसुत्वा ॥ १८ ॥ माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्बृहती वि भा
प्रशस्तिकृद्ब्रह्मणे नो व्युच्छा नो जने जनय विश्ववारे ॥ १९ ॥ यच्चित्रमप्न
वहन्तीजानाय शशमानाय भद्रम् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः
पृथिवी उत द्यौः ॥ २० ॥ ४ ॥

॥ ११४ ॥ १-११ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ रुद्रो देवता ॥ छन्दः—१
ती । २, ७ निचृज्जगती । ३, ६, ८, ९ विराड् जगती च । १०, ४, ५, ११
रेक् त्रिष्टुप् निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—३, ६—९ निषादः । ४, ५, १०,
१ धैवतः ॥

॥ ११४ ॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः । यथा
मसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ १ ॥ मृळा नो रुद्रोत नो
स्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते । यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम
रुद्र प्रणीतिषु ॥ २ ॥ अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र-
द्वः । सुम्नायन्निद्विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हविः ॥ ३ ॥ त्वेषं
यं रुद्रं यज्ञसाधं वंकुं कविमवसे नि ह्वयामहे । आरे अस्मद्दैव्यं हेळो अस्यतु सुम-
मिद्वयमस्या वृणीमहे ॥ ४ ॥ दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेषं रूपं नमसा नि
यामहे । हस्ते बिभ्रद्भेषजा वार्याणि शर्म वर्म छर्दिरस्मभ्यं यंसत् ॥ ५ ॥ ५ ॥
दं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् । रास्वा च नो अ-
त मर्तभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृळ ॥ ६ ॥ मा नो महान्तमुत मा नो अ-
कं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् । मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः
यास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ ७ ॥ मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा
अश्वेषु रीरिषः । वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे
८ ॥ उप ते स्तोमान्पशुपा इवाकरं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नमस्मे । भद्रा हि ते
मतिर्मृळयत्तमाथा वयमव इत्ते वृणीमहे ॥ ९ ॥ आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर
म्नमस्मे ते अस्तु । मृळा च नो अधि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विब-
ः ॥ १० ॥ अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हवं रुद्रो मरुत्वान् ।
नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ११ ॥ ६ ॥

॥ ११५ ॥ १—६ कुत्स आङ्गिरस ऋषिः ॥ सूर्यो देवता ॥ छन्दः—१,
, ६ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ११५ ॥ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्या-
पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ १ ॥ सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां
र्यो न योषामभ्येति पश्चात् । यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय
द्रम् ॥ २ ॥ भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः । नमस्यन्तो

दि॒व आ पृ॒ष्ठम॑स्थुः॒ परि॒ द्यावा॑पृथि॒वी य॑न्ति स॒द्यः ॥३॥ तत्सूर्य॑स्य दे॒व॒त्वं तन्म॑हि॒
म॒ध्या कर्तो॒र्वित॑तं॒ सं ज॑भार । य॒देदयु॑क्त ह॒रितः॑ स॒धस्था॒दाद्रात्री॒ वास॑स्तनुते
मस्मै॑ ॥ ४ ॥ तन्मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्याभि॒चक्षे॒ सूर्यो॑ रू॒पं कृ॑णुते॒ द्योरु॒पस्थे॑ । अन॒
म॒न्यद्रु॒शद॑स्य॒ पाजः॑ कृ॒ष्णम॒न्यद्ध॒रित॒: सं भ॑रन्ति ॥ ५ ॥ अ॒द्या दे॑वा॒ उदि॑ता
र्य॑स्य॒ निरंह॑सः पिपृ॒ता निर॑व॒द्यात् । तन्नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो मामहन्ता॒मदि॑तिः॒ सि
पृथि॒वी उ॒त द्यौः ॥ ६ ॥ ७ ॥ १६ ॥

॥ ११६ ॥ १—२५ कक्षीवानृषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१,
२२, २३ विराट् त्रिष्टुप् । २, ८, ६, १२, १३, १४, १५, १८, २०,
२५ निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ४, ५, ७, २१ त्रिष्टुप् । ६, १६, १६ भुरिक् पङ्क्ति
११ पङ्क्तिः । १७ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—५, ७—१०, १२—
१८, २०—२५ धैवतः । ६, ११, १६, १७, १६ पञ्चमः ॥

॥ ११६ ॥ नास॑त्याभ्यां ब॒र्हिरि॑व॒ प्र वृ॑ञ्जे॒ स्तोमाँ॑ इयर्म्य॒भ्रियेव॒ वात॒
याव॒र्भगा॑य वि॒मदा॑य जा॒यां से॑ना॒जुवा॒ न्यू॑हतू॒ रथे॑न ॥ १ ॥ वी॒ळुप॒त्मभि॑राशुहे॒
भिर्वा॑ दे॒वानां॑ वा जू॒तिभि॒: शाश॑दाना । तद्रास॑भो नासत्या स॒हस्र॑मा॒जा य॒म
प्र॒धने॑ जिगाय ॥ २ ॥ तुग्रो॑ ह भु॒ज्युम॑श्विनोदमे॒घे र॒यिं न कश्चि॑न्ममृ॒वाँ अवा॑हा
तमू॑हथुर्नौ॒भिरा॑त्म॒न्वती॑भिरन्तरि॒क्षप्रुद्भि॒रपो॑दकाभिः ॥ ३ ॥ ति॒स्रः क्षप॒स्त्रिरहा॑
व्रज॑द्भि॒र्नास॑त्या भु॒ज्युमू॑हथुः पत॒ङ्गैः । स॒मु॒द्रस्य॒ धन्व॑न्ना॒र्द्रस्य॑ पा॒रे त्रि॒भी रथै॑ः श॒
पद्भि॒: षळ॑श्वैः ॥ ४ ॥ अ॒ना॒र॒म्भ॒णे तद॑वीरयेथामनास्था॒ने अ॑ग्रभ॒णे स॑मु॒द्रे ।
द॑श्विना ऊ॒हथु॑र्भु॒ज्युमस्तं॑ श॒तारि॑त्रां॒ नाव॑मातस्थि॒वांस॑म् ॥ ५ ॥ ८ ॥ यम॑श्वि
द॒दथु॑: श्वे॒तमश्व॑म॒घाश्वा॑य॒ शश्व॒दित्स्व॒स्ति । तद्वां॑ दा॒त्रं महि॑ की॒र्तेन्यं॑ भूत्पै॒द्वो वा॒
स॒द॒मिद्धव्यो॑ अ॒र्यः ॥ ६ ॥ यु॒वं न॑रा स्तुव॒ते प॑ज्रि॒याय॑ क॒क्षीव॑ते अरदतं॒ पुरं॑धि
म् । का॒रो॒त॒राच्छ॒फादश्व॑स्य॒ वृष्ण॑: श॒तं कु॒म्भाँ अ॑सिञ्चतं॒ सुरा॑याः ॥ ७ ॥ हि॒
ना॒ग्निं घ्रं॒सम॑वारयेथां पि॒तुम॑ती॒मूर्ज॑मस्मा अधत्तं । ऋ॒बीसे॒ अत्रि॑मश्वि॒नाव॑नीत॒मुन्नि
न्यथु॒: सर्व॑गणं स्व॒स्ति ॥ ८ ॥ परा॑व॒तं ना॑सत्यानुदेथामु॒च्चाबु॑ध्नं चक्रथुर्जि॒ह्मबा॑रम्
क्षर॒न्नापो॒ न पा॒यना॑य रा॒ये स॒हस्रा॑य॒ तृष्य॑ते॒ गोत॑मस्य ॥९॥ जुजु॒रुषो॑ नासत्यो॒
व॒व्रिं प्रामु॑ञ्चतं द्रा॒पिमि॑व॒ च्यवा॑नात् । प्राति॑रतं जहि॒तस्यायु॑र्दस्रा॒दित्पति॑मकृणु॒
क॒नीना॑म् ॥ १० ॥ ६ ॥ तद्वां॑ नरा॒ शंस्यं॒ राध्यं॑ चाभि॒ष्टिम॑न्नासत्या॒ वरू॑थम्
यद्वि॒द्वांसा॑ नि॒धिमि॒वाप॑गूळ्ह॒मुद्द॑र्श॒तादू॒पथु॒र्वन्द॑नाय ॥ ११ ॥ तद्वां॑ नरा स॒नये॒ दं

प्रमाविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम्। दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वामश्वस्य शीर्ष्णा
यदीमुवाच ॥ १२ ॥ अजोहवीन्नासत्या करा वां महे यामन्पुरुभुजा पुरंन्धिः।
तं तच्छासुरिव वध्रिमत्या हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम् ॥ १३ ॥ आस्नो वृकस्य
वर्तिकामभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम्। उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमा-
मकृणुतं विचक्षे ॥ १४ ॥ चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परित-
म्यायाम्। सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम् ॥ १५ ॥
० ॥ शतं मेषान्वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं पितान्धं चकार। तस्मा अक्षी नासत्या
विचक्ष आधत्तं दस्रा भिषजावनर्वन् ॥ १६ ॥ आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य का-
र्ष्मेवातिष्ठदर्वता जयन्ती। विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या
सचेथे ॥ १७ ॥ यदयातं दिवोदासाय वर्तिर्भरद्वाजायाश्विना हयन्ता। रेवदुवाह
सचनो रथो वां वृषभश्च शिंशुमारश्च युक्ता ॥ १८ ॥ रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यमायुः
सुवीर्यं नासत्या वहन्ता। आ जह्नावीं समनसोप वाजैस्त्रिरह्नो भागं दधतीमयातम्
॥ १९ ॥ परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सीं सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः। विभिन्दुना
नासत्या रथेन वि पर्वताँ अजरयू अयातम् ॥ २० ॥ ११ ॥ एकस्या वस्तोरावतं
रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा। निरहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवसो वृष-
णावरातीः ॥ २१ ॥ शरस्य चिदार्चत्कस्यावतादा नीचादुच्चा चक्रथुः पातवे वाः।
शयवे चिन्नासत्या शचीभिर्जसुरये स्तर्यं पिप्यथुर्गाम् ॥ २२ ॥ अवस्यते स्तुवते कृ-
ष्णियाय ऋजूयते नासत्या शचीभिः। पशुं न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वं दद-
थुर्विश्वकाय ॥ २३ ॥ दश रात्रीरशिवेना नव द्यूनवनद्धं श्नथितमप्स्वन्तः। वि-
प्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्तमुन्निन्यथुः सोममिव स्रुवेण ॥ २४ ॥ प्र वां दंसांस्यश्विनाव-
वोचमस्य पतिः स्यां सुगवः सुवीरः। उत पश्यन्नश्नुवन्दीर्घमायुरस्तमिवेज्जरिमाणं
जगम्याम् ॥ २५ ॥ १२ ॥

॥ ११७ ॥ १–२५ कक्षीवानृषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१ निचृत् पङ्क्तिः।
६, २२ विराट् पङ्क्तिः। २१, २५, ११ भुरिक् पङ्क्तिः। २, ४, ७, १२, १६, १७,
१८, १९ निचृत् त्रिष्टुप्। ८, ९, १०, १३—१५, २०, २३ विराट् त्रिष्टुप्। ३,
५, २४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, ११, २१, २२, २५ पञ्चमः। २–५ ७–१०,
१२–२०, २३, २४ धैवतः ॥

॥ ११७ ॥ मध्वः सोमस्याश्विना मदाय प्रत्नो होता विवासते वां। बर्हिष्मती

रातिर्विश्रिता गीरिषा यातं नासत्योप वाजैः ॥ १ ॥ यो वामश्विना मनसो ज
यात्रथः स्वश्वो विश आजिगाति । येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं तेन नरा व
रस्मभ्यं यातम् ॥ २ ॥ ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्यमृबीसादत्रिं मुञ्चथो गणेन
मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ॥ ३ ॥ अश्वं न गू
मश्विना दुरेवैरृषिं नरा वृषणा रेभमप्सु । सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिर्न
जूर्यन्ति पूर्व्या कृतानि ॥ ४ ॥ सुषुप्वांसं न निरृतेरुपस्थे सूर्यं न दस्रा तम
क्षियन्तम् । शुभे रुक्मं न दर्शतं निखातमुदूपथुरश्विना वन्दनाय ॥ ५ ॥ १३
तद्वां नरा शंस्यं पज्रियेण कक्षीवता नासत्या परिज्मन् । शफादश्वस्य वाजि
जनाय शतं कुम्भाँ असिञ्चतं मधूनाम् ॥ ६ ॥ युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय वि
ष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय । घोषायै चित्पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावद
॥ ७ ॥ युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं महः क्षोणस्याश्विना कण्वाय । प्रवाच्यं त
षणा कृतं वां यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् ॥ ८ ॥ पुरू वर्पांस्यश्विना दधाना
पेदव ऊहथुराशुमश्वम् । सहस्रसां वाजिनमप्रतीतमहिहनं श्रवस्य१न्तरुत्रम् ॥ ९
एतानि वां श्रवस्या सुदानू ब्रह्माङ्गूषं सदनं रोदस्योः । यद्वां पज्रासो अश्वि
हवन्ते यातमिषा च विदुषे च वाजं ॥ १० ॥ १४ ॥ सूनोर्मानेनाश्विना गृणा
वाजं विप्राय भुरणा रदन्ता । अगस्त्ये ब्रह्मणा वावृधाना सं विश्पलां नासत्
रिणीतम् ॥ ११ ॥ कुह यान्ता सुष्टुतिं काव्यस्य दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा
हिरण्यस्येव कलशं निखातमुदूपथुर्दशमे अश्विनाहन् ॥ १२ ॥ युवं च्यवानमश्वि
जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः । युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया ना
त्यावृणीत ॥ १३ ॥ युवं तुग्राय पूर्व्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना । युवं
ज्युमर्णसो निः समुद्राद्विभिरूहथुर्ऋज्रेभिरश्वैः ॥ १४ ॥ अजोहवीदश्विना तौग्र
वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् । निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृष
स्वस्ति ॥ १५ ॥ १५ ॥ अजोहवीदश्विना वर्तिका वामास्नो यत्सीममुञ्चतं वृकस्य । वि
युषा ययथुः सान्वद्रेर्जातं विष्वाचो अहतं विषेण ॥ १६ ॥ शतं मेषान्वृक्ये मामहानं त
प्रणीतमशिवेन पित्रा । आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विच
॥ १७ ॥ शुनमन्धाय भरमह्वयत्सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति । जारः कनीन इव च
दान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान् ॥ १८ ॥ मही वामूतिरश्विना मयोभूरुत स्रामं धिष्ण
सं रिणीथः । अथा युवामिदह्वयत्पुरंधिरागच्छतं सीं वृषणाववोभिः ॥ १९ ॥ अध
दस्रा स्तर्य१न्विषक्तामपिन्वतं शयवे अश्विना गाम् । युवं शचीभिर्विमदाय जायांन्य

हमित्रस्य योषाम् ॥ २० ॥ १६ ॥ यवं वृकेणाश्विना वपन्तेषं दुहन्ता मनुषाय
। अभि दस्युं बकुरेणा धमन्तोरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय ॥ २१ ॥ आथर्वणा-
विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् । स वां मधु प्र वोचदृतायन्त्वाष्ट्रं यद्द-
पिकक्ष्यं वाम् ॥ २२ ॥ सदा कवी सुमतिमा चके वां विश्वा धियो अश्वि-
ावतं मे । अस्मे रयिं नासत्या बृहन्तमपत्यसाचं श्रुत्यं रराथाम् ॥ २३ ॥
यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वध्रिमत्या अदत्तम् । त्रिधा ह श्यावमश्वि-
र्कस्तमुज्जीवसं ऐरयतं सुदानू ॥ २४ ॥ एतानि वामश्विना वीर्याणि प्र पूर्व्या-
यवोऽवोचन् । ब्रह्म कृण्वन्तो वृषणा युवभ्यां सुवीरासो विदथमा वदेम
५ ॥ १७ ॥

॥ ११८ ॥ १–११ कक्षीवानृषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१, ११ भुरिक्
। २, ५, ७ त्रिष्टुप् । ३, ६, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ८ विराट् त्रिष्टुप् ॥
– १, ११, पञ्चमः । २–१० धैवतः ॥

॥ ११८ ॥ आ वां रथो अश्विना श्येनपत्वा सुमृळीकः स्ववां यात्वर्वाङ् ।
र्त्यस्य मनसो जवीयान्त्रिवन्धुरो वृषणा वातरंहाः ॥ १ ॥ त्रिवन्धुरेण त्रि-
रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् । पिन्वतं गा जिन्वतमर्वतो नो वर्धयतम-
ा वीरमस्मे ॥ २ ॥ प्रवद्यामना सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः ।
ङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठाहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः ॥ ३ ॥ आ वां श्ये-
ं अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः पतङ्गाः । ये अप्तुरो दिव्यासो न-
अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ॥ ४ ॥ आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र जुष्ट्वी न-
हिता सूर्यस्य । परि वामश्वा वपुषः पतङ्गा वयो वहन्त्वरुषा अभीके
॥ १८ ॥ उद्वन्दनमैरतं दंसनाभिरुद्रेभं दस्रा वृषणा शचीभिः । निष्टौग्र्यं
थः समुद्रात्पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम् ॥ ६ ॥ युवमत्रयेऽवनीताय तप्तमूर्ज-
नमश्विनावधत्तम् । युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुषाणा
॥ युवं धेनुं शयवे नाधितायापिन्वतमश्विना पूर्व्याय । अमुञ्चतं वर्तिका-
 निः प्रति जङ्घां विश्पलाया अधत्तम् ॥ ८ ॥ युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूतम-
मश्विनादत्तमश्वम् । जोहूत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं सहस्रसां वृषणं वीड्वङ्गम् ॥ ९ ॥
ां नरा स्ववसे सुजाता हवामहे अश्विना नाधमानाः । आ न उप वसुमता
गिरो जुषाणा सुविताय यातम् ॥ १० ॥ आ श्येनस्य जवसा नूतनेनास्मे

यातं नासत्या सजोषाः । हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया
व्युष्टौ ॥ ११ ॥ १६ ॥

॥ ११६ ॥ १-१० कक्षीवान्दैर्घतमसऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्द
४, ६ निचृज्जगती । ३, ७, १० जगती । ८ विराड्जगती । २, ५, ९
त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१, ४, ६-८, ३, १० निषादः । २, ५, ९ धैवतः ॥

॥ ११६ ॥ आ वां रथं पुरुमायं मनोजुवं जीराश्वं यज्ञियं जीवसे हुवे
हस्रकेतुं वनिनं शतद्वसुं श्रुष्टीवानं वरिवोधामभि प्रयः ॥ १ ॥ ऊर्ध्वा धीति
त्यस्य प्रयामन्यधायि शस्मन्त्समयन्त आ दिशः । स्वदामि घर्मं प्रति यन्त्यूत
वामूर्जानी रथमश्विनारुहत् ॥ २ ॥ सं यन्मिथः पस्पृधानासो अग्मत शुभे
अमिता जायवो रणे । युवोरह प्रवणे चेकिते रथो यदश्विना वहथः सूरि
॥ ३ ॥ युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ ।
वर्तिर्वृषणा विजेन्यन्१दिवोदासाय महि चेति वामवः ॥ ४ ॥ युवोरश्विना
युवायुजं रथं वाणी येमतुरस्य शर्ध्यम् । आ वां पतित्वं सख्याय जग्मुषी
णीत जेन्या युवां पती ॥ ५ ॥ २० ॥ युवं रेभं परिषूतेरुरुष्यथो हिमेन घर्म
तप्तमत्रये । युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा ॥ ६
वन्दनं निर्ऋतं जरण्यया रथं न दस्रा करणा समिन्वथः । क्षेत्रादा विप्रं
विपन्यया प्र वामत्र विधते दंसना भुवत् ॥ ७ ॥ अगच्छतं कृपमाणं परावति
तुः स्वस्य त्यजसा निबाधितम् । स्वर्वतीरित ऊतीर्युवोरह चित्रा अभीके अ
भिष्टयः ॥ ८ ॥ उत स्या वां मधुमन्मक्षिकारपन्मदे सोमस्यौशिजो हुवन्यति
दध्यङ्चो मन आ विवासथोऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं वदत् ॥ ९ ॥ युवं पे
रुवारमश्विना स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुवस्यथः । शर्यैरभिद्युं पृतनासु दुष्टरं च
मिन्द्रमिव चर्षणीसहम् ॥ १० ॥ २१ ॥

॥ १२० ॥ १—१२ औशिजपुत्रः कक्षीवानृषिः ॥ अश्विनौ दे
छन्दः-१ । १२ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री । २ भुरिग्गायत्री । १० ग
११ पिपीलिकामध्याविराड्गायत्री । ३ स्वराट् ककुबुष्णिक् । ५ आर्ष्युष्णि
६ विराडार्ष्युष्णिक् । ८ भुरिगुष्णिक् । ४ आर्ष्यनुष्टुप् । ७ स्वराडार्ष्यनुष्टु
भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः-१, २, १०-१२ षड्जः । ३, ५, ६, ८ ऋषभः ।
९ गान्धारः ॥

॥ १२० ॥ का राधद्धोत्राश्विना वां को वां जोष उभयोः । कथा विधात्य-
ाः ॥ १ ॥ विद्वांसाविद्दुरः पृच्छेदविद्वानित्थापरो अचेताः । नू चिन्नु मर्ते
॥ २ ॥ ता विद्वांसा हवामहे वां ता नो विद्वांसा मन्म वोचेतमद्य । प्रार्च-
ानो युवाकुः ॥ ३ ॥ वि पृच्छामि पाक्याऽन देवान्वषट्कृतस्याद्भुतस्य दस्रा ।
च सह्यसो युवं च रभ्यसो नः ॥ ४ ॥ प्र या घोषे भृगवाणे न शोभे यया
यजति पज्रियो वाम् । प्रैषयुर्न विद्वान् ॥ ५ ॥ २२ ॥ श्रुतं गायत्रं तकवा-
हं चिद्धि रिरेभाश्विना वाम् । आक्षी शुभस्पती दन् ॥ ६ ॥ युवं ह्यास्तं महो
वा यन्निरततंसतम् । ता नो वसू सुगोपा स्यातं पातं नो वृकादघायोः ॥७॥
स्मै धातमभ्यमित्रिणे नो माकुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवो गुः । स्तनाभुजो अ-
वीः ॥ ८ ॥ दुहीयन्मित्रधितये युवाकु राये च नो मिमीतं वाजवत्यै । इषे
ो मिमीतं धेनुमत्यै ॥ ६ ॥ अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः । तेनाहं
चाकन ॥ १० ॥ अयं समह मा तनूह्याते जनाँ अनु । सोमपेयं सुखो रथः
१ ॥ अध स्वप्नस्य निर्विदेऽभुञ्जतश्च रेवतः । उभा ता बस्रि नश्यतः ॥१२॥
३ ॥ १७ ॥

॥१२१ ॥ १–१५ औशिजः कक्षीवानृषि ॥ विश्वेदेवा इन्द्रश्च देवता ॥
ः–१, ७, १३, भुरिक् पङ्क्तिः । २, ८, १० त्रिष्टुप् । ३, ४, ६, १२ १४,
विराट् त्रिष्टुप् । ५, ६, ११ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, ७, १३ पञ्चमः ।
, ८–१२, १४, १५ धैवतः ॥

॥ १२१ ॥ कदित्था नॄँः पात्रं देवयतां श्रवद्गिरो अङ्गिरसां तुरण्यन् । प्र य-
द्विश आ हर्म्यस्योरु क्रंसते अध्वरे यजत्रः ॥ १ ॥ स्तम्भीद्ध द्यां स धरुणं
यदृभुर्वाजाय द्रविणं नरो गोः । अनु स्वजां महिषश्चक्षत व्रां मेनामश्वस्य परि
गोः ॥ २ ॥ नक्षद्धवमरुणीः पूर्व्यं राट् तुरो विशामङ्गिरसामनु द्यून् । तक्ष-
नियुतं तस्तम्भद्यां चतुष्पदे नर्याय द्विपादे ॥ ३ ॥ अस्य मदे स्वर्यं दा ऋ-
पीवृतमुस्रियाणामनीकम् । यद्ध प्रसर्गे त्रिककुम्निवर्तदप द्रुहो मानुषस्य दुरो
४ ॥ तुभ्यं पयो यत्पितरावनीतां राधः सुरेतस्तुरणे भुरण्यू । शुचि
रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः ॥ ५ ॥ २४ ॥ अध प्र ज-
रर्णिममत्तु प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः । इन्दुर्येभिराष्ट स्वेदुहव्यैः स्रुवेण
चञ्जरणाभि धाम ॥ ६ ॥ स्विध्मा यद्वनधितिरपस्यात्सूरो अध्वरे परि रोध-

ना गोः। यद्ध प्रभासि कृत्व्याँ अनु द्यूननर्विंशे पश्विषे तुरायं॥ ७॥ अष्टा
दिव आवो हरी इह द्युम्नासाहमभि योधान उत्सं। हरिं यत्ते मन्दिनं दुक्
गोरभसमद्रिभिर्वाताप्यम्॥ ८॥ त्वमायसं प्रति वर्तयो गोर्दिवो अश्मानमुपनी
भ्वां। कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्वञ्छुष्णमनन्तैः परियासि वधैः॥ ९॥ पुरा
रस्तमसो अपीतेस्तमद्रिवः फलिगं हेतिमस्य। शुष्णस्य चित्परिहितं यदोजो
वस्परि सुग्रथितं तदादः॥ १०॥ २५॥ अनु त्वा मही पाजसी अचक्रे द्य
चामा मदतामिन्द्र कर्मन्। त्वं वृत्रमाशयानं सिरासु महो वज्रेण सिष्वपो व
॥ ११॥ त्वमिन्द्र नर्यो याँ अवो नॄन्तिष्ठा वातस्य सुयुजो वहिष्ठान्। यं ते
व्य उशना मन्दिनं दाद्वृत्रहणं पार्यं ततक्ष वज्रम्॥ १२॥ त्वं सूरो हरितो
यो नॄन्भरंश्चक्रमेतशो नायमिन्द्र। प्रास्य पारं नवतिं नाव्यानामपि कर्तमव
ऽयज्यून्॥ १३॥ त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः पाहि वज्रिवो दुरिताद्भ
प्र नो वाजान्रथ्यो३अश्वबुध्यानिषे यन्धि श्रवसे सूनृतायै॥ १४॥ मा सा ते
स्मत्सुमतिर्वि दसद्वाजप्रमहः समिषो वरन्त। आ नो भज मघवन्गोष्वर्यो मं
स्ते सधमादः स्याम॥ १५॥ २६॥ ८॥ १॥

॥ १२२॥ १-१५ कक्षीवानृषिः॥ विश्वेदेवा देवता॥ छन्दः-१,५,
भुरिक् पङ्क्तिः। ४ निचृत्पङ्क्तिः। ३,१५ स्वराट्पङ्क्तिः। ६ विराट्पाङ्क्ति २, ९,
१३ विराट् त्रिष्टुप्। ८, १२ निचृत् त्रिष्टुप् ७, ११ त्रिष्टुप्॥ स्वर
३-६, १४, १५ पञ्चमः। २, ७-१३ धैवतः॥

॥ १२२॥ प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो यज्ञं रुद्राय मीळ्हुषे भरध्वम्
वो अस्तोष्यसुरस्य वीरैरिषुध्येव मरुतो रोदस्योः॥ १॥ पत्नीव पूर्वहूतिं व
ध्या उषासानक्ता पुरुधा विदाने। स्तरीर्नात्कं व्युतं वसाना सूर्यस्य श्रिया सु
हिरण्यैः॥ २॥ ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा ममत्तु वातो अपां वृषण्वान्। शि
तमिन्द्रापर्वता युवं नस्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः॥ ३॥ उत त्या मे य
श्वेतनायै व्यन्ता पान्तौशिजो हुवध्यै। प्र वो नपातमपां कृणुध्वं प्र मातरा र
नस्यायोः॥ ४॥ आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नंश
वः पूष्णे दावन आँ अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः॥ ५॥ १॥ श्रुतं मे मित्र
णा हवेमोत श्रुतं सदने विश्वतः सीम्। श्रोतु नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः सुक्षेत्रा
न्धुरद्भिः॥ ६॥ स्तुषे सा वां वरुण मित्र रातिर्गवां शता पृक्षयामेषु पज्रे।

प्रियर॑थे दधा॑नाः स॒द्यः पु॒ष्टिं नि॑रुन्धा॒नासो॑ अग्मन् ॥ ७ ॥ अ॒स्य स्तु॑षे महि॑-
स्य॒ राध॒ः सचा॑ सनेम॒ नहु॑षः सु॒वीरा॑ः । जनो॒ यः प॒ज्रेभ्यो॑ वा॒जिनी॑वा॒नश्वा॑व-
र॒थिनो॒ मह्यं॑ सू॒रिः ॥ ८ ॥ जनो॒ यो मि॑त्रावरुणावभि॒ध्रुग॒पो न वां॑ सु॒नोत्य॑क्ष्ण-
ुक् । स्व॒यं स यक्ष्मं॒ हृद॑ये॒ नि ध॑त्त॒ आप॒ यदीं॒ होत्रा॑भिर्ऋ॒तावा॑ ॥ ९ ॥ स व्रा-
नहु॑षो॒ दंसु॑जूत॒ः शर्ध॑स्तरो न॒रां गू॒र्तश्र॑वाः । विसृ॑ष्टरातिर्याति बाळ्ह॒सृत्वा॒ वि-
सु पृ॒त्सु सद॒मिच्छूर॑ः ॥ १० ॥ २ ॥ अध॒ ग्मन्ता॒ नहु॑षो॒ हवं॑ सू॒रेः श्रोता॑ रा-
नो अ॒मृत॑स्य मन्द्राः । न॒भो॒जुवो॒ यन्नि॑र॒वस्य॒ राध॒ः प्रश॑स्तये महि॒ना रथ॑वते
११ ॥ ए॒तं शर्धं॑ धाम॒ यस्य॑ सू॒रेरित्य॑वोच॒न्दश॑तयस्य॒ नंशे॑ । द्यु॒म्नानि॒ येषु॑ व॒-
ाती रा॒रन्विश्वे॑ सन्वन्तु प्रभृ॒थेषु॒ वाजं॑ ॥ १२ ॥ मन्दा॑महे॒ दश॑तयस्य धा॒सेर्द्विर्य-
ञ्च॒ बिभ्र॑तो॒ यन्त्यन्ना॑ । किमि॒ष्टाश्व॑ इ॒ष्टर॑श्मिरे॒त ई॑शा॒नास॒स्तरु॑ष ऋञ्जते॒ नॄन्
१३ ॥ हिर॑ण्यकर्णं मणिग्रीव॒मर्ण॒स्तन्नो॒ विश्वे॑ वरिवस्यन्तु दे॒वाः । अ॒र्यो गिर॑ः
आ ज॒ग्मुषी॑रो॒स्राश्चा॑कन्तू॒भये॑ष्व॒स्मे ॥ १४ ॥ च॒त्वारो॑ मा मश॒र्शार॑स्य॒ शिश्व॒-
यो राज्ञ॒ आय॑वसस्य जि॒ष्णोः । रथो॑ वां मित्रावरुणा दी॒र्घाप्साः॒ स्यूम॑गभस्तिः॒
ो नाद्यौत् ॥ १५ ॥ ३ ॥

॥ १२३ ॥ १—१३ दीर्घतमसः पुत्रः कक्षीवानृषिः ॥ उषा देवता ॥
न्दः—१, ३, ६, ७, ९, १०, १३ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४, ८, १२ निचृत्
ष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् । ११ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—४, ६–१०, १२, १३
तः । ५, ११ पञ्चमः ॥

॥ १२३ ॥ पृ॒थू रथो॒ दक्षि॑णाया अयो॒ज्यैनं॑ दे॒वासो॑ अ॒मृता॑सो अस्थुः । कृ॒-
ाद॒र्दस्थाद॒र्या॑ वि॒हाया॒श्चिकि॑त्सन्ती॒ मानु॑षाय॒ क्षया॑य ॥ १ ॥ पूर्वा॒ विश्व॑स्मा॒द्भुव॑-
दबोधि॒ जय॑न्ती॒ वाजं॑ बृह॒ती सनु॑त्री । उ॒च्चा व्य॑ख्यद्युव॒तिः पु॑न॒र्भूरोषा॑ अगन्प्र-
ा पू॒र्वहू॑तौ ॥ २ ॥ यद॒द्य भा॒गं वि॒भजा॑सि॒ नृभ्य॒ उषो॑ देवि मर्त्य॒त्रा सु॑जाते ।
ो नो॒ अत्र॑ सवि॒ता दमू॑ना॒ अना॑गसो वोचति॒ सूर्या॑य ॥ ३ ॥ गृ॒हङ्गृ॑हमह॒ना या॒-
च्छा॑ दि॒वेदि॑वे॒ अधि॒ नामा॒ दधा॑ना । सिषा॑सन्ती द्योत॒ना शश्व॒दागा॒दग्र॑मग्र॒मि-
जते॒ वसू॑नाम् ॥ ४ ॥ भग॑स्य॒ स्वसा॒ वरु॑णस्य जा॒मिरुष॑ः सूनृते प्रथ॒मा ज॑रस्व ।
धा स द॑घ्या॒ यो अ॒घस्य॑ धा॒ता जये॑म॒ तं दक्षि॑णया॒ रथे॑न ॥ ५ ॥ ४ ॥ उदी॑-
ां सू॒नृता॒ उत्पुर॑न्धी॒रुद॒ग्नय॑ः शुशुचा॒नासो॑ अस्थुः । स्पा॒र्हा वसू॑नि॒ तम॒साप॑गूळ्हा-
ष्कृण्वन्त्यु॒षसो॑ विभा॒तीः ॥ ६ ॥ अपा॒न्यदेत्य॒भ्य१॒॑न्यदे॑ति॒ विषु॑रूपे॒ अह॑नी॒ सं-

चरेते । परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाकरद्यौदुषाः शोशुचता रथेन॥ ७ ॥ सदृश
सदृशीरिदु श्वो दीर्घं सचन्ते वरुणस्य धाम । अनवद्यास्त्रिंशतं योजनान्येकैका
परि यन्ति सद्यः ॥ ८ ॥ जानन्त्यह्नः प्रथमस्य नाम शुक्रा कृष्णादजनिष्ट
तीची । ऋतस्य योषा न मिनाति धामाहरहर्निष्कृतमाचरन्ती ॥ ९ ॥ कन्ये
न्वा शाशदानाँ एषि देवि देवमियक्षमाणम् । संस्मयमाना युवतिः पुरस्ता
वक्षांसि कृणुषे विभाती ॥ १० ॥ ५ ॥ सुसङ्काशा मातृमृष्टेव योषावि
कृणुषे दृशे कम् । भद्रा त्वमुषो वितरं व्युच्छ न तत्ते अन्या उषसो नशन्त ॥ १
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्ववारा यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य । परा च यन्ति पुन
यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः ॥ १२ ॥ ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना
भद्रं क्रतुमस्मासु धेहि । उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छास्मासु रायो मघवत्सु च
॥ १३ ॥ ९ ॥

॥ १२४ ॥ १—१३ कक्षीवान्दैर्घतमस ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः
३, ६, ९, १० निचृत् त्रिष्टुप् । ४, ७, ११ त्रिष्टुप् । १२ विराट्त्रिष्टुप् । २,
भुरिक् पङ्क्तिः । ५ पङ्क्तिः । ८ विराट् पङ्क्तिश्च ॥ स्वरः—१, ३, ६, ९—१
७ धैवतः । २, १३, ५, ८ पञ्चमः ॥

॥ १२४ ॥ उषा उच्छन्ती समिधाने अग्ना उद्यन्त्सूर्य उर्विया ज्योतिर
देवो नो अत्र सविता न्वर्थं प्रासावीद्द्विपत्प्र चतुष्पदित्यै ॥ १ ॥ अमिनती दै
व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि । ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथ
व्यद्यौत् ॥ २ ॥ एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्त
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ३ ॥ उपो अदर्शि
शुन्ध्युवो न वक्षो नोधा इवाविरकृत प्रियाणि । अद्मसन्न ससतो बोधयन्ती शश
मागात्पुनरेयुषीणाम् ॥ ४ ॥ पूर्वे अर्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृ
केतुम् । व्यु प्रथते वितरं वरीय ओभा पृणन्ती पित्रोरुपस्था ॥ ५ ॥ ७ ॥ ए
पुरुतमा दृशे कं नाजामिं न परि वृणक्ति जामिम् । अरेपसा तन्वा शाश
नार्भादीषते न महो विभाती ॥ ६ ॥ अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगि
नये धनानाम् । जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः
स्वसा स्वस्रे ज्यायस्यै योनिमारैगपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्येव । व्युच्छन्ती रश्मिभि
सूर्यस्याञ्ज्यङ्क्ते समनगा इव व्राः ॥ ८ ॥ आसां पूर्वासामहसु स्वसॄणामपरा

ाति प॒श्चात् । ताः प्र॑त्न॒वन्नव्य॑सीर्नू॒नम॒स्मे रे॒वदु॑च्छन्तु सु॒दिना॑ उ॒षास॑: ॥९॥
ोधयोषः पृ॒ण॒तो म॑घो॒न्यबु॑ध्यमानाः प॒णय॑: ससन्तु । रे॒वदु॑च्छ म॒घव॑द्भ्यो म-
ने रे॒वत्स्तो॒त्रे सू॑नृते जा॒रय॑न्ती ॥ १० ॥ ८ ॥ अवे॒यम॑श्वैद्युव॒तिः पु॒रस्ता॑द्युङ्क्ते
मरु॒णाना॒मनी॑कम् । वि नू॒नमु॑च्छा॒दस॑ति॒ प्र के॒तुर्गृ॒हंगृ॑हमुप॑ तिष्ठाते अ॒ग्निः ॥११॥
वयं॑श्चिद्व॒स॒तेर॑पप्त॒न्नर॑श्च ये पि॑तु॒भाजो॒ व्यु॑ष्टौ । अमा स॒ते व॑हसि॒ भूरि॑ वा-
र्शं देवि दा॒शुषे॒ मर्त्या॑य ॥ १२ ॥ अस्तो॑ढ्वं स्तोम्या॒ ब्रह्म॑णा मेऽवी॑वृधध्वमुश-
ुषासः । यु॒ष्माकं॑ देवी॒रव॑सा सनेम सह॒स्रिणं॑ च श॒तिनं॑ च॒ वाज॑म् ॥ १३॥९ ॥

॥ १२५ ॥ १–७ कक्षीवान्दैर्घतमस ऋषिः ॥ दम्पती देवते ॥ छन्दः–१, ३,७
ुप् । २, ६ निचृत् त्रिष्टुप् । ४,५ जगती ॥ स्वरः–१–३, ६, ७ धैवतः । ४,
निषादः ॥

॥ १२५ ॥ प्रा॒ता रत्नं॑ प्रात॒रित्वा॑ दधाति॒ तं चि॑कि॒त्वान्प्र॑ति॒गृह्या नि ध॑त्ते ।
प्र॒जां व॒र्धय॑मान॒ आयू॑ रा॒यस्पोषे॑ण सचते सु॒वीर॑: ॥ १ ॥ सु॒गुर॑सत्सुहि॒र॒ण्यः
श्वो॑ बृ॒हद॑स्मै॒ वय॒ इन्द्रो॑ दधाति । यस्त्वा॒यन्तं॒ वसु॑ना प्रातरित्वो मु॒क्षीज॑येव॒ प-
ुत्सि॒नाति॑ ॥ २ ॥ आय॑म॒द्य सु॒कृतं॑ प्रा॒तरि॒च्छन्नि॒ष्टेः पु॒त्रं वसु॑मता॒ रथे॑न । अं॒शोः
पा॑यय मत्स॒रस्य॑ क्ष॒यद्वी॑रं वर्धय सू॒नृता॑भिः ॥ ३ ॥ उप॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वो
ाभुवं॑ ई॒जा॒नं च॑ य॒क्ष्यमा॑णं च धे॒नव॑: । पृ॒णन्तं॑ च॒ पपु॑रिं च श्रव॒स्यवो॑ घृ॒तस्य॒
ा उप॑ यन्ति वि॒श्वत॑: ॥ ४ ॥ नाक॑स्य पृ॒ष्ठे अधि॑ तिष्ठति श्रि॒तो यः पृ॒णाति॒
ह दे॒वेषु॑ गच्छति । तस्मा॒ आपो॑ घृ॒तम॑र्षन्ति॒ सिन्ध॑व॒स्तस्मा॑ इ॒यं दक्षि॑णा पिन्व-
सदा॑ ॥ ५ ॥ दक्षि॑णावता॒मिदि॒मानि॑ चि॒त्रा दक्षि॑णावतां दि॒वि सूर्या॑सः । द-
णावन्तो अ॒मृतं॑ भजन्ते॒ दक्षि॑णावन्त॒: प्र ति॑रन्त॒ आयु॑: ॥ ६ ॥ मा पृ॒णन्तो॒ दु-
मेन॒ आर॒न्मा जा॑रिषुः सू॒रय॑: सुव्र॒तास॑: । अ॒न्यस्तेषां॑ परि॒धिर॑स्तु॒ कश्चि॒दपृ॑-
तम॒भि सं य॑न्तु॒ शोका॑: ॥ ७ ॥ १० ॥

॥१२६॥ १–५ कक्षीवान् । ६ भावयव्यः । ७ रोमशा ब्रह्मवादिनीचर्षिः ॥
ांसो देवता ॥ छन्दः–१, २, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् । ६, ७ अनुष्टुप् ॥
ः–१, ३, ४, ५ धैवतः । ६, ७ गान्धारः ॥

॥ १२६ ॥ अम॑न्दा॒न्स्तोमा॒न्प्र भ॑रे मनी॒षा सिन्धा॒वधि॑ क्षिय॒तो भा॒व्यस्य॑ ।
मे॑ स॒हस्र॒मर्मि॑मीत स॒वान॒तूर्तो॒ राजा॒ श्रव॑ इ॒च्छमा॑नः ॥ १ ॥ श॒तं रा॒ज्ञो नाध॑-

मानस्य निष्कान्छतमश्वान्प्रयतान्सद्य आदम् । शतं कक्षीवाँ असुरस्य गोनां
वि श्रवोऽजरमा ततान ॥ २ ॥ उप मा श्यावाः स्वनयेन दत्ता वधूमन्तो दश
थासो अस्थुः । षष्टिः सहस्रमनु गव्यमागात्सनत्कक्षीवाँ अभिपित्वे अह्नाम् ॥
चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणाः सहस्रस्याग्रे श्रेणिं नयन्ति । मदच्युतः कृशना
अत्यान्कक्षीवन्त उदमृक्षन्त पज्राः ॥ ४ ॥ पूर्वामनु प्रयतिमाददे वस्त्रीन्युक्ताँ
ष्टावरिधायसो गाः । सुबन्धवो ये विश्या इव व्रा अनस्वन्तः श्रव ऐषन्त पज्राः ।
आगधिता परिगधिता या कशीकेव जङ्गहे । ददाति मह्यं यादुरी याशूनां
ज्या शता ॥ ६ ॥ उपोप मे परा मृश मा मे दभ्राणि मन्यथाः । सर्वाहम
रोमशा गन्धारीणामिवाविका ॥ ७ ॥ ११ ॥ १८ ॥

॥ १२७ ॥ १–११ परुच्छेप ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ३
६ अष्टिः । ४, ७, ११ भुरिगष्टिः । ५, ६ अत्यष्टिः । १० भुरिगति शक्वरी ॥ स्व
१–४, ७–६, ११ मध्यमः । ५, ६ गान्धारः । १० पञ्चमः ॥

॥ १२७ ॥ अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जा
दसम् । य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा । घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिष
ह्वानस्य सर्पिषः ॥ १ ॥ यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर्वि प्रे
शुक्र मन्मभिः । परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् । शोचिष्केशं वृषणं यमि
विशः प्रावन्तु जूतये विशः ॥ २ ॥ स हि पुरू चिदोजसा विरुक्मता दीद्यानो
वति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः । वीळु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्वनेव यत्स्थिरं ।
षहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते ॥ ३ ॥ दृळ्हा चिदस्मा अनु दुर्यथा
तेजिष्ठाभिररणिभिर्दाष्ट्यवसेऽग्नये दाष्ट्यवसे । प्र यः पुरूणि गाहते तक्षद्वनेव
चिषा । स्थिरा चिदन्ना नि रिणात्योजसा नि स्थिराणि चिदोजसा ॥ ४ ॥ तमस्य पृ
परासु धीमहि नक्तं यः सुदर्शतरो दिवातरादप्रायुषे दिवातरात् । आदस्यायु
णवद्वीळु शर्म न सूनवे । भक्तमभक्तमवो व्यन्तो अजरा अग्नयो व्यन्तो अजराः ॥
१२ ॥ स हि शर्धो न मारुतं तुविष्वणिरप्नस्वतीषूर्वरास्विष्टनिरार्तनास्विष्टनिः । अ
द्व्यान्याददिर्यज्ञस्य केतुरर्हणा । अध स्मास्य हर्षतो हृषीवतो विश्वे जुषन्त पन्था
शुभे न पन्थाम् ॥ ६ ॥ द्विता यदीं कीस्तासो अभिद्यवो नमस्यन्त उपवोचन्त भृगवो
थ्नन्तो दाशा भृगवः । अग्निरीशे वसूनां शुचिर्यो धर्णिरेषाम् । प्रियाँ अपिधी
निषीष्ट मेधिर आ वनिषीष्ट मेधिरः ॥ ७ ॥ विश्वासां त्वा विशां पतिं हव

सां समानं दम्पतिं भुजे सत्यगिर्वाहसं भुजे । अतिथिं मानुषाणां पितुर्न यस्यासया ।
ो च विश्वे अमृतास आ वयो हव्या देवेष्वा वयः ॥८॥ त्वमग्ने सहसा सह न्तमः शु-
न्तमो जायसे देवतातये रयिर्न देवतातये । शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम
क्रतुः । अध स्मा ते परि चरन्त्यजर श्रुष्टीवानो नाजर ॥९॥ प्र वो महे सहसा
स्वत उषर्बुधे पशुषे नाग्नये स्तोमो बभूत्वग्नये । प्रति यदीं हविष्मान्विश्वासु क्षासु
वि । अग्रे रेभो न जरत ऋषूणां जूर्णि होत ऋषूणाम् ॥१०॥ स नो नेदिष्ठं ददृ-
न आ भराग्ने देवेभिः सचनाः सुचेतुना महो रायः सुचेतुना । महि शविष्ठ नस्कृधि
ञ्चे भुजे अस्यै । महिस्तोतृभ्यो मघवन्त्सुवीर्यं मथीरुग्रो न शवसा ॥११॥१३॥

॥ १२८ ॥ १–८ परुच्छेप ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ निचृदत्यष्टिः ।
४, ६, ८ विराडत्यष्टिः । २ भुरिगष्टिः । ५, ७ निचृदष्टिः ॥ स्वरः–१, ३,
६, ८ गान्धारः । २, ५, ७ मध्यमः ॥

॥१२८॥ अयं जायत मनुषो धरीमणि होता यजिष्ठ उशिजामनु व्रतमग्निः स्वमनु
म् । विश्वश्रुष्टिः सखीयते रयिरिव श्रवस्यते । अदब्धो होता नि षददिळस्पदे
वीत इळस्पदे ॥१॥ तं यज्ञसाधमपि वातयामस्यृतस्य पथा नमसा हविष्मता दे-
ता हविष्मता । स न ऊर्जामुपाभृत्यया कृपा न जूर्यति । यं मातरिश्वा मनवे
वतो देवं भाः परावतः ॥ २ ॥ एवेन सद्यः पर्येति पार्थिवं मुहुर्गी रेतो वृषभः
नैक्रदद्धद्रेतः कनिक्रदत् । शतं चक्षाणो अक्षभिर्देवो वनेषु तुर्वणिः । सदो दधान
रेषु सानुष्वग्निः परेषु सानुषु ॥३॥ स सुक्रतुः पुरोहितो दमेदमेऽग्निर्यज्ञस्याध्वरस्य
ति क्रत्वा यज्ञस्य चेतति । क्रत्वा वेधा इषूयते विश्वा जातानि पस्पशे । यतो घृतश्री-
थिरजायत वह्निर्वेधा अजायत ॥४॥ क्रत्वा यदस्य तविषीषु पृञ्चतेऽग्नेरवेण मरुतां
भोज्येषिराय न भोज्या । स हि ष्मा दानमिन्वति वसूनां च मज्मना । स
त्रासते दुरितादभिह्रुतः शंसादघादभिह्रुतः ॥ ५ ॥ १४ ॥ विश्वो विहाया अ-
र्वसुर्दधे हस्ते दक्षिणे तरणिर्न शिश्रथच्छ्रवस्यया न शिश्रथत् । विश्वस्मा इदि-
यते देवत्रा हव्यमोहिषे । विश्वस्मा इत्सुकृते वारमृण्वत्यग्निर्द्वारा व्यृण्वति
६ ॥ स मानुषे वृजने शन्तमो हितोऽग्निर्यज्ञेषु जेन्यो न विश्पतिः प्रियो यज्ञेषु
पतिः । स हव्या मानुषाणामिळा कृतानि पत्यते । स नस्त्रासते वरुणस्य धू-
हो देवस्य धूर्तेः ॥ ७ ॥ अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं न्ये-
हव्यवाहं न्येरिरे । विश्वायुं विश्ववेदसं होतारं यजतं कविम् । देवासो रण्व-
से वसूयवो गीर्भी रण्वं वसूयवः ॥ ८ ॥ १५ ॥

॥ १२९ ॥ १–११ परुच्छेप ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, २
चृदत्यष्टिः । ३, विराडत्यष्टिः । ४ अष्टिः । ६, ११ भुरिगष्टिः । १० निचृदष्टि
५ भुरिगतिशक्वरी । ७ स्वराडतिशक्वरी । ८, ९ स्वराट् शक्वरी ॥ स्वरः–१-
गान्धारः । ४, ६, १०, ११ मध्यमः । ५, ७ पञ्चमः । ८, ९ धैवतः ॥

॥ १२९ ॥ यं त्वं रथमिन्द्र मेधसातयेऽपाका सन्तमिषिर प्रणयसि प्रान
नयसि । सद्यश्चित्तमभिष्टये करो वशश्च वाजिनम् । सास्माकमनवद्य तूतुजान
धसामिमां वाचं न वेधसाम् ॥ १ ॥ स श्रुधि यः स्मा पृतनासु कासु चिद्
य्यं इन्द्र भरहूतये नृभिरसि प्रतूर्तये नृभिः । यः शूरैः स्वः सनिता यो
वाजं तरुता । तमीशानास इरधन्त वाजिनं पृक्षमत्यं न वाजिनम् ॥ २ ॥ द
हि ष्मा वृषणं पिन्वसि त्वचं कं चिद्यावीररुं शूर मर्त्यं परिवृणक्षि मर्त्य
इन्द्रोत तुभ्यं तद्दिवे तद्रुद्राय स्वयशसे । मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृ
काय सप्रथः ॥ ३ ॥ अस्माकं व इन्द्रमुश्मसीष्टये सखायं विश्वायुं प्रासहं
वाजेषु प्रासहं युजम् । अस्माकं ब्रह्मोतयेऽवा पृत्सुषु कासु चित् । नहि त्वा श
स्तरते स्तृणोषि यं विश्वं शत्रुं स्तृणोषि यम् ॥ ४ ॥ नि षू नमातिमतिं कय
चित्तेजिष्ठाभिररणिभिर्नोतिभिरुग्राभिरुग्रोतिभिः । नेषि णो यथा पुरानेनाः
मन्यसे । विश्वानि पूरोरप पर्षि वह्निरासा वह्निर्नो अच्छ ॥ ५ ॥ १८ ॥ प्र त
चेयं भव्यायेन्दवे हव्यो न य इषवान्मन्म रेजति रक्षोहा मन्म रेजति । स्वयं
अस्मदा निदो वधैरजेत दुर्मतिम् । अव स्रवेदघशंसोऽवतरमव क्षुद्रमिव स्र
॥ ६ ॥ वनेम तद्धोत्रया चितन्त्या वनेम रयिं रयिवः सुवीर्यं रण्वं सन्तं सु
र्यम् । दुर्मन्मानं सुमन्तुभिरेमिषा पृचीमहि । आ सत्याभिरिन्द्रं द्युम्नहूतिभिर्य
द्युम्नहूतिभिः ॥ ७ ॥ प्रप्रा वो अस्मे स्वयशोभिरूती परिवर्ग इन्द्रो दुर्मतीनां
रीमन्दुर्मतीनाम् । स्वयं सा रिषयध्यै या न उपेषे अत्रैः । हतेमसन्न वक्षति चि
जूर्णिर्न वक्षति ॥ ८ ॥ त्वं न इन्द्र राया परीणसा याहि पथाँ अनेहसा
याह्यरक्षसा । सचस्व नः पराक आ सचस्वास्तमीक आ । पाहि नो दूरादाराद
ष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ॥ ९ ॥ त्वं न इन्द्र राया तरूषसोग्रं चित्त्वा मह
सक्षदवसे महे मित्रं नावसे । ओजिष्ठ त्रातरविता रथं कं चिदमर्त्य । अन्यम
द्रिरिषेः कं चिदद्रिवो रिरिक्षन्तं चिदद्रिवः ॥ १० ॥ पाहि न इन्द्र सुष्टुत स्रि
ऽवयाता सदमिद्दुर्मतीनां देवः सन्दुर्मतीनाम् । हन्ता पापस्य रक्षसस्त्राता विप्र
मावतः । अधा हि त्वा जनिता जीजनद्वसो रक्षोहणं त्वा जीजनद्वसो ॥ ११ ॥ १

॥ १३० ॥ १–१० परुच्छेप ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ५ भु-
ष्टिः । २, ३, ६, ९ स्वराडष्टिः । ४, ८ अष्टिः । ७ निचृदत्यष्टिः । १०
ाट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–६, ८, ९ मध्यमः । ७ गान्धारः । १० धैवतः ॥

॥ १३० ॥ एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पतिरस्तं रा-
सत्पतिः । हवामहे त्वा वयं प्रयस्वन्तः सुते सचा । पुत्रासो न पितरं वाज-
तये मंहिष्ठं वाजसातये ॥ १ ॥ पिबा सोममिन्द्र सुवानमद्रिभिः कोशेन सिक्त-
तं न वंसगस्तातृषाणो न वंसगः । मदाय हर्यताय ते तुविष्टमाय धायसे । आ
यच्छन्तु हरितो न सूर्यमहा विश्वेव सूर्यम् ॥ २ ॥ अविन्दद्दिवो निहितं गुहा
धिं वेर्न गर्भं परिवीतमश्मन्यनन्ते अन्तरश्मनि । व्रजं वज्री गवामिव सिषास-
ङ्गिरस्तमः । अपावृणोदिष इन्द्रः परीवृता द्वार इषः परीवृताः ॥ ३ ॥ दादृहा-
वज्रमिन्द्रो गभस्त्योः क्षद्मेव तिग्ममसनाय सं श्यदहिहत्याय सं श्यत् । सं-
व्यान ओजसा शवोभिरिन्द्र मज्मना । तष्टेव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसि परश्वेव
वृश्चसि ॥ ४ ॥ त्वं वृथा नद्य इन्द्र सर्तवेऽच्छा समुद्रमसृजो रथाँ इव वाज-
ो रथाँ इव । इत ऊतीरयुञ्जत समानमर्थमक्षितम् । धेनूरिव मनवे विश्वदोह-
जनाय विश्वदोहसः ॥ ५ ॥ १८ ॥ इमां ते वाचं वसूयन्त आयवो रथं न
रः स्वपा अतक्षिषुः सुम्नाय त्वामतक्षिषुः । शुम्भन्तो जेन्यं यथा वाजेषु विप्र
जिनं । अत्यमिव शवसे सातये धना विश्वा धनानि सातये ॥ ६ ॥ भिनत्पुरो
तिमिन्द्र पूरवे दिवोदासाय महि दाशुषे नृतो वज्रेण दाशुषे नृतो । अतिथि-
ाय शम्बरं गिरेरुग्रो अवाभरत् । महो धनानि दयमान ओजसा विश्वा धना-
ोजसा ॥७॥ इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं प्रावद्विश्वेषु शतमूतिराजिषु स्वर्मीळ्हे-
ाजिषु । मनवे शासदव्रतान्त्वचं कृष्णामरन्धयत् । दक्षन्न विश्वं ततृषाणमोषति
र्शसानमोषति ॥ ८ ॥ सूरश्चक्रं प्र वृहज्जात ओजसा प्रपित्वे वाचमरुणो मुषा-
ीशान आ मुषायति । उशना यत्परावतोऽजगन्नूतये कवे । सुम्नानि विश्वा
ुषेव तुर्वणिरहा विश्वेव तुर्वणिः ॥ ९ ॥ स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्नुक्थैः पुरां दर्तः
युभिः पाहि शग्मैः । दिवोदासेभिरिन्द्र स्तवानो वावृधीथा अहोभिरिव द्यौः
१० ॥ १९ ॥

॥ १३१ ॥ १–७ परुच्छेप ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, २ निचृदत्य-
ः । ४ विराडत्यष्टिः । ३, ५, ६, ७ भुरिगष्टिः ॥ स्वरः–१, २, ४, गान्धारः ।
५–७ मध्यमः ॥

॥ १३१ ॥ इन्द्राय हि द्यौरसुरो अनम्नतेन्द्राय मही पृथिवी वरीमभिर्द्युम्
साता वरीमभिः । इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दधिरे पुरः । इन्द्राय विश्
सवनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा ॥ १ ॥ विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्ज
समानमेकं वृषमण्यवः पृथक् स्वः सनिष्यवः पृथक् । तं त्वा नावं न पर्षणिं
षस्य धुरि धीमहि । इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयवः स्तोमेभिरिन्द्रमायवः ॥ २
वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त
निःसृजः । यद्गव्यन्ता द्वा जना स्व१र्यन्ता समूहसि । आविष्करिक्रद्वृषणं स
भुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥ ३ ॥ विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र श
दीरवातिरः सासहानो अवातिरः । शासस्तमिन्द्र मर्त्यमयज्युं शवसस्पते । महीम
ष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः ॥ ४ ॥ आदित्ते अस्य वीर्य
चर्किरन्मदेषु वृषन्नुशिजो यदाविथ सखीयतो यदाविथ । चकर्थ कारमेभ्यः
नासु प्रवन्तवे । ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत ॥ ५ ॥
नो अस्या उषसो जुषेत ह्य१र्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः स्वर्षाता हवीमभि
यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिञ्चिकेतसि । आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रु
नवीयसः ॥ ६ ॥ त्वं तमिन्द्र वावृधानो अस्मयुरमित्रयन्तं तुविजात मर्त्यं वज्रे
शूर मर्त्यम् । जहि यो नो अघायति शृणुष्व सुश्रवस्तमः । रिष्टं न यामन्नप
दुर्मतिर्विश्वाप भूतु दुर्मतिः ॥ ७ ॥ २० ॥

॥ १३२ ॥ १—६ परुच्छेप ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१,
५, ६ विराडत्यष्टिः । २ भुरिगतिशक्वरी । ४ निचृदष्टिः ॥ स्वरः—१, ३,
६ गान्धारः । २ पञ्चमः । ४ मध्यमः ॥

॥ १३२ ॥ त्वया वयं मघवन्पूर्व्ये धन इन्द्रत्वोताः सासह्याम पृतन्यतो
नुयाम वनुष्यतः । नेदिष्ठे अस्मिन्नहन्यधि वोचा नु सुन्वते । अस्मिन्यज्ञे वि
येमा भरे कृतं वाजयन्तो भरे कृतम् ॥ १ ॥ स्वर्जेषे भर आप्रस्य वक्मन्युषर्बुधः
स्मिन्नञ्जसि क्राणस्य स्वस्मिन्नञ्जसि । अहन्निन्द्रो यथा विदे शीर्ष्णाशीर्ष्णा
प्रवाच्यः । अस्मत्रा ते सध्र्यक्सन्तु रातयो भद्रा भद्रस्य रातयः ॥ २ ॥
प्रयः प्रत्नथा ते शुशुक्वनं यस्मिन्यज्ञे वारमकृण्वत क्षयमृतस्य वारसि क्षयम् ।
तद्वोचेरध छितान्तः पश्यन्ति रश्मिभिः । स घा विदे अन्विन्द्रो गवेषणो ब
त्तिद्भ्यो गवेषणः ॥ ३ ॥ नू इत्था ते पूर्वथा च प्रवाच्यं यदङ्गिरोभ्योऽवृण

मिन्द्र शिक्षन्नप व्रजम् । ऐभ्यः समान्या दिशा स्मभ्यं जेषि योत्सि च । सु-
न्यों रन्धया कं चिदव्रतं हृणायन्तं चिदव्रतम् ॥ ४ ॥ सं यज्जनान् क्रतुभिः शूरं
युद्धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यक्षन्त श्रवस्यवः । तस्मा आयुः प्रजावदिद्बाधे
न्त्योजसा । इन्द्र ओक्यं दिधिषन्त धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ॥ ५ ॥
तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम् ।
चत्ताय छन्त्सद्गहनं यदिनक्षत् । अस्माकं शत्रून्परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट
वतः ॥ ६ ॥ २१ ॥

॥ १३३ ॥ १—७ परुच्छेप ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् ।
३ निचृदनुष्टुप् । ४ स्वराडनुष्टुप् । ५ आर्षी गायत्री । ६ स्वराड् ब्राह्मीजगती ।
विराडष्टिः ॥ स्वरः—१ धैवतः । २—५ गान्धारः । ६ निषादः । ७ मध्यमः ॥

॥ १३३ ॥ उभे पुनामि रोदसी ऋतेन द्रुहो दहामि सं महीरनिन्द्राः । अ-
भ्य यत्र हता अमित्रा वैलस्थानं परि तृळ्हा अशेरन् ॥ १ ॥ अभिव्लग्या चि-
वः शीर्षा यातुमतीनाम् । छिन्धि वटूरिणा पदा महावटूरिणा पदा ॥ २ ॥
सां मघवञ्जहि शर्धो यातुमतीनाम् । वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके
३ ॥ यासां तिस्रः पञ्चाशतोऽभिव्लङ्गैरपावपः । तत्सु ते मनायति तकत्सु ते
यति ॥ ४ ॥ पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण । सर्वं रक्षो नि बर्हय
५ ॥ अवर्मह इन्द्र दादृहि श्रुधी नः शुशोच हि द्यौः क्षा न भीषाँ अद्रिवो घृ-
न्न भीषाँ अद्रिवः । शुष्मिन्तमो हि शुष्मिभिर्वधैरुग्रेभिरीयसे । अपूरुषघ्नो अप्र-
। शूर सत्वभिस्त्रिसप्तैः शूर सत्वभिः ॥ ६ ॥ वनोति हि सुन्वन्क्षयं परीणसः
न्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो देवानामव द्विषः । सुन्वान इत्सिषासति सहस्रा
त्यवृतः । सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ॥ ७ ॥ २२ ॥ १६ ॥

॥ १३४ ॥ १—६ परुच्छेप ऋषिः ॥ वायु देवता ॥ छन्दः—१, ३ नि-
त्यष्टिः ॥ २, ४ विराडत्यष्टिः । ५ अष्टिः । ६ विराडष्टिः ॥ स्वरः—१—४
न्धारः । ५, ६ मध्यमः ॥

॥ १३४ ॥ आ त्वा जुवो रारहाणा अभि प्रयो वायो वहन्त्विह पूर्वपीतये
मस्य पूर्वपीतये । ऊर्ध्वा ते अनु सूनृता मनस्तिष्ठतु जानती । नियुत्वता रथेना
हि दावने वायो मखस्य दावने ॥ १ ॥ मन्दन्तु त्वा मन्दिनो वायविन्दवोऽ-

स्मत्क्राणासः सुकृता अभिद्यवो गोभिः क्राणा अभिद्यवः । यद्ध क्राणा इ
दत्तं सचन्त ऊतयः । सध्रीचीना नियुतो दावने धिय उप ब्रुवत ईं धियः ॥ २
वायुर्युङ्क्ते रोहिता वायुररुणा वायू रथे अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे
बोधया पुरंधिं जार आ ससतीमिव । प्र चक्षय रोदसी वासयोषसः श्रवसे
सयोषसः ॥ ३ ॥ तुभ्यमुषासः शुचयः परावति भद्रा वस्त्रा तन्वते दंसु रश्मि
चित्रा नव्येषु रश्मिषु । तुभ्यं धेनुः सबर्दुघा विश्वा वसूनि दोहते । अजनयो मरु
वक्षणाभ्यो दिव आ वक्षणाभ्यः ॥ ४ ॥ तुभ्यं शुक्रासः शुचयस्तुरण्यवो मदेषु
ईषणन्त भुर्वण्यपामिषन्त भुर्वणि । त्वां त्सारी दसमानो भगमीट्टे तक्ववीये ।
विश्वस्माद्भुवनात्पासि धर्मणासुर्यात्पासि धर्मणा ॥ ५ ॥ त्वं नो वायवेषामपूर्व्यः
सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि सुतानां पीतिमर्हसि । उतो विहुत्मतीनां विशां व
र्षीणाम् । विश्वा इत्ते धेनवो दुह्र आशिरं घृतं दुह्रत आशिरम् ॥ ६ ॥ २३ ॥

॥ १३५ ॥ १-६ परुच्छेप ऋषिः ॥ वायुर्देवता ॥ छन्दः—१, ३ निचृदत्यष्टिः ।
२, ४ विराडत्यष्टिः । ५, ६ भुरिगष्टिः । ६, ८ निचृदष्टिः । ७ अष्टिः ॥ स्वरः
१–४ गान्धारः । ५–६ मध्यमः ॥

॥ १३५ ॥ स्तीर्णं बर्हिरुप नो याहि वीतये सहस्रेण नियुता नियुत्वते
तिनीभिर्नियुत्वते । तुभ्यं हि पूर्वपीतये देवा देवाय येमिरे । प्र ते सुतासो मधु
न्तो अस्थिरन्मदाय क्रत्वे अस्थिरन् ॥ १ ॥ तुभ्यायं सोमः परिपूतो अद्रि
स्पार्हा वसानः परि कोशमर्षति शुक्रा वसानो अर्षति । तवायं भाग आयुषु
मो देवेषु हूयते । वह वायो नियुतो याह्यस्मयुर्जुषाणो याह्यस्मयुः ॥ २ ॥ आ
नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्रिणीभिरुप याहि वीतये वायो हव्यानि वीतये
तवायं भाग ऋत्वियः सरश्मिः सूर्ये सचा । अध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वा
शुक्रा अयंसत ॥ ३ ॥ आ वां रथो नियुत्वान्वक्षदवसेऽभि प्रयांसि सुधिता
वीतये वायो हव्यानि वीतये । पिबतं मध्वो अन्धसः पूर्वपेयं हि वां हितम् । व
यवा चन्द्रेण राधसा गतमिन्द्रश्च राधसा गतम् ॥ ४ ॥ आ वां धियो ववृत्यु
ध्वराँ उपेममिन्दुं मर्मृजन्त वाजिनमाशुमत्यं न वाजिनम् । तेषां पिबतमस्मयू आ
नो गन्तमिहोत्या । इन्द्रवायू सुतानामद्रिभिर्युवं मदाय वाजदा युवम् ॥ ५ ॥ २४
इमे वां सोमा अप्स्वा सुता इहाध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो शुक्रा अयंसत
एते वामभ्यसृक्षत तिरः पवित्रमाशवः । युवायवोऽति रोमाण्यव्यया सोमा

यव्यया ॥ ६ ॥ अति वायो ससतो याहि शश्वतो यत्र ग्रावा वदति तत्र ग-
तं गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् । वि सूनृता ददृशे रीयते घृतमा पूर्णया नियुता याथो
ध्वरमिन्द्रश्च याथो अध्वरम् ॥ ७ ॥ अत्राह तद्वहेथे मध्व आहुतिं यमश्वत्थमुप-
ष्ठन्त जायवोऽस्मे ते सन्तु जायवः । साकं गावः सुवते पच्यते यवो न ते वा-
उप दस्यन्ति धेनवो नाप दस्यन्ति धेनवः ॥ ८ ॥ इमे ये ते सु वायो बाह्वोज-
ऽन्तर्नदी ते पतयन्त्युक्षणो महि व्राधन्त उक्षणः । धन्वञ्चिद्ये अनाशवो जीरा-
दगिरौकसः । सूर्यस्येव रश्मयो दुर्नियन्तवो हस्तयोर्दुर्नियन्तवः ॥ ९ ॥ २५ ॥

॥ १३६ ॥ १–७ परुच्छेप ऋषिः ॥ १–५ मित्रावरुणौ । ६–७ मन्त्रोक्ता
ता ॥ छन्दः–१, ३, ५, ६ स्वराडत्यष्टिः । २ निचृदष्टि । ४ भुरिगष्टिः । ७
ष्टुप् ॥ स्वरः–१, ३, ५, ६ गान्धारः । २, ४ मध्यमः । ७ धैवतः ॥

॥ १३६ ॥ प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां बृहन्नमो हव्यं मतिं भरता मृळयद्भ्यां
ादिष्ठं मृळयद्भ्याम् । ता सम्राजा घृतासुती यज्ञेयज्ञ उपस्तुता । अथैनोः क्षत्रं न
तश्चनाधृषे देवत्वं नू चिदाधृषे ॥ १ ॥ अदर्शि गातुरुरवे वरीयसी पन्था ऋत-
 समयंस्त रश्मिभिश्चक्षुर्भगस्य रश्मिभिः । द्युक्षं मित्रस्य सादनमर्यम्णो वरुणस्य
। अथा दधाते बृहदुक्थ्यं वय उपस्तुत्यं बृहद्वयः ॥ २ ॥ ज्योतिष्मतीमदितिं
रयत्क्षितिं स्वर्वतीमा सचेते दिवेदिवे जागृवांसा दिवेदिवे । ज्योतिष्मत्क्षत्रमा-
ते आदित्या दानुनस्पती । मित्रस्तयोर्वरुणो यातयज्जनोऽर्यमा यातयज्जनः
३ ॥ अयं मित्राय वरुणाय शन्तमः सोमो भूत्ववपानेष्वाभगो देवो देवेष्वाभ-
। तं देवासो जुषेरत विश्वे अद्य सजोषसः । तथा राजाना करथो यदीमह
तावाना यदीमहे ॥ ४ ॥ यो मित्राय वरुणायाविधज्जनोऽनर्वाणं तं परि पा-
 अंहसो दाश्वांसं मर्तमंहसः । तमर्यमाभि रक्षत्यृजूयन्तमनु व्रतम् । उक्थैर्य एं-
ः परिभूषति व्रतं स्तोमैराभूषति व्रतम् ॥ ५ ॥ नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां
त्राय वोचं वरुणाय मीळ्हुषे सुमृळीकाय मीळ्हुषे । इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्य-
णं भगम् । ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ॥ ६ ॥ ऊती
ानां वयमिन्द्रवन्तो मंसीमहि स्वयशसो मरुद्भिः । अग्निर्मित्रो वरुणः शर्म यंस-
 तदश्याम मघवानो वयं च ॥ ७ ॥ २६ ॥ १ ॥

॥ १३७ ॥ १–३ परुच्छेप ऋषिः । मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः–१ निचृच्छ-
री । २ विराट्शक्करी । ३ भुरिगतिशक्करी ॥ स्वरः–१, २ गान्धारः । ३ पञ्चमः ॥

॥ १३७ ॥ सुषुमा यातमद्रिभिर्गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो मत्सरा इ
आ राजाना दिविस्पृशास्मत्रा गन्तमुप नः । इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः
मांः शुक्रा गवाशिरः ॥ १ ॥ इम आ यातमिन्दवः सोमासो दध्याशिरः सुता
दध्याशिरः । उत वामुषसो बुधि साकं सूर्यस्य रश्मिभिः । सुतो मित्राय वरु
य पीतये चारुर्ऋताय पीतये ॥ २ ॥ तां वां धेनुं न वासरीमंशुं दुहन्त्यद्रि
सोमं दुहन्त्यद्रिभिः । अस्मत्रा गन्तमुप नोऽर्वाञ्चा सोमपीतये । अयं वां मित्र
रुणा नृभिः सुतः सोम आ पीतये सुतः ॥ ३ ॥ १ ॥

॥ १३८ ॥ १-४ परुच्छेप ऋषिः ॥ पूषा देवता ॥ छन्दः-१, ३ निचृ
त्यष्टिः । २ विराडत्यष्टिः । ४ भुरिगष्टिः ॥ स्वरः-१-३ गान्धारः । ४ मध्यमः

॥ १३८ ॥ प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य शस्यते महित्वमस्य तवसो न तन्
स्तोत्रमस्य न तन्दते । अर्चामि सुम्नयन्नहमन्त्यूतिं मयोभुवम् । विश्वस्य यो
आयुयुवे मखो देव आयुयुवे मखः ॥ १ ॥ प्र हि त्वा पूषन्नजिरं न यामनि स
मेभिः कृण्व ऋणवो यथा मृध उष्ट्रो न पीपरो मृधः । हुवे यत्त्वा मयोभुवं
सख्याय मर्त्यः । अस्माकमाङ्गूषान्द्युम्निनस्कृधि वाजेषु द्युम्निनस्कृधि ॥
यस्य ते पूषन्त्सख्ये विपन्यवः क्रत्वा चित्सन्तोऽवसा बुभुज्रिर इति क्रत्वा
भुज्रिरे । तामनु त्वा नवीयसीं नियुतं राय ईमहे । अहेळमान उरुशंस सरी
वाजेवाजे सरी भव ॥ ३ ॥ अस्या ऊ षु ण उप सातये भुवोऽहेळमानो र
अजाश्व श्रवस्यतामजाश्व । ओ षु त्वा ववृतीमहि स्तोमेभिर्दस्म साधुभिः ।
त्वा पूषन्नतिमन्य आघृणे न ते सख्यमपह्नुवे ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ १३९ ॥ १-११ परुच्छेप ऋषिः ॥ देवता- १ विश्वे देवाः । २ मित्र
रुणौ । ३-५ अश्विनौ । ६ इन्द्रः । ७ अग्निः । ८ मरुतः । ९ इन्द्राग्नी ।
बृहस्पतिः । ११ विश्वे देवाः ॥ छन्दः-१, १० निचृदष्टिः । २, ३ विराडष्टि
६ अष्टिः । ८ स्वराडत्यष्टिः । ४, ९ भुरिगत्यष्टिः । ७ अत्यष्टिः । ५ नि
द्बृहती । ११ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-३, ६, १० गान्धारः । ४, ५, ७-
मध्यमः । ११ पञ्चमः ॥

॥ १३९ ॥ अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु तच्छर्धो दि
वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे । यद्ध क्राणा विवस्वति नाभा सन्दायि नव्यसी ।

ूनु उप॑ यन्तु धी॒तयो॑ दे॒वाँ अच्छा न धी॒तय॑ः ॥ १ ॥ यद्ध त्यन्मि॑त्रावरुणावृ॒तद॒ध्या-
थे॒ अनृ॑तं॒ स्वेन॑ म॒न्युना॒ दक्ष॑स्य॒ स्वेन॑ म॒न्युना॑ । यु॒वोरि॒त्थाधि॒ सद्म॒स्वप॑श्याम
ण्यय॑ं । धी॒भिश्च॒न मन॑सा॒ स्वेभि॑र॒क्षभि॒ः सोम॑स्य॒ स्वेभि॑र॒क्षभि॑ः ॥ २ ॥ यु॒वां
मेभि॑र्दे॒वय॑न्तो॒ अश्विनाश्राव॑य॑न्त इ॒व श्लोक॑मा॒यवो॑ यु॒वां ह॒व्याभ्या॒३॑यवः॑ ।
र्विश्वा॒ अधि॒ श्रिय॒ः पृक्ष॑श्च विश्ववेदसा । प्रु॒षाय॑न्ते वां प॒वयो॑ हिर॒ण्यये॒ रथे॑
ा हिर॒ण्यये॑ ॥ ३ ॥ अचे॑ति दस्रा॒ व्यु॒१॑नाक॑मृण्वथो यु॒ञ्जते॑ वां रथ॒युजो॒ दि-
ष्टिष्वध्व॒स्मानो॒ दिवि॑ष्टिषु । अधि॑ वां॒ स्थाम॑ व॒न्धुरे॒ रथे॑ दस्रा हिर॒ण्यये॑ । प॒थेव॒
ावनुशास॑ता॒ रजोऽञ्ज॑सा॒ शास॑ता॒ रज॑ः ॥ ४ ॥ शची॑भिर्नः शचीवसू दिवा॒
ः दशस्यतम् । मा वां रा॒तिरुप॑ दस॒त्कदा॑ च॒नास्मद्रा॒तिः कदा॑ च॒न ॥ ५ ॥ ३ ॥
न्निन्द्र वृषपाण॒ास॒ इन्द॑व इ॒मे सु॒ता अद्रि॑षुतास उ॒द्भिद॒स्तुभ्यं॑ सु॒तास॑ उ॒द्भिद॑ः ।
त्वा॑ मन्दन्तु दा॒वने॑ म॒हे चि॒त्राय॒ राध॑से । गी॒र्भिर्गि॑र्वाहः॒ स्तव॑मान॒ आ ग॑हि
ळी॒को न॒ आ ग॑हि ॥ ६ ॥ ओ षू णो॑ अग्ने शृणुहि॒ त्वमी॑ळि॒तो दे॒वेभ्यो॑ ब्र-
से य॒ज्ञियो॑भ्यो॒ राज॑भ्यो य॒ज्ञियो॑भ्यः । यद्ध त्यामङ्गि॑रोभ्यो धे॒नुं दे॑वा॒ अद॑त्तन ।
तां दु॑हे अर्य॒मा क॒र्तरी॒ सचाँ॑ ए॒ष तां वे॑द मे॒ सचा॑ ॥ ७ ॥ मो षु वो॑ अ॒स्म-
भि तानि॒ पौंस्या॒ सना॑ भूवन्द्यु॒म्नानि॒ मोत जा॑रिषुर॒स्मत्पु॒रोत जा॑रिषुः । यद्व॑-
चि॒त्रं यु॒गेयु॑गे॒ नव्यं॒ घोषा॒दम॑र्त्यम् । अ॒स्मासु॒ तन्म॑रुतो॒ यच्च॑ दु॒ष्टरं॑ दि॒धृता॒ यच्च॑
रम् ॥ ८ ॥ द॒ध्यङ् ह॑ मे ज॒नुषं॒ पूर्वो॒ अङ्गि॑राः प्रि॒यमे॑धः॒ कण्वो॒ अत्रि॒र्मनु॑र्विदु-
मे॒ पूर्वे॒ मनु॑र्विदुः । तेषां॑ दे॒वेष्वाय॑तिर॒स्माकं॒ तेषु॒ नाभ॑यः । तेषां॑ प॒देन॒ मह्या
गि॒रेन्द्रा॒ग्नी आ न॑मे गि॒रा ॥ ९ ॥ होता॑ यक्षद्व॒निनो॑ वन्त॒ वार्यं॒ बृह॒स्पति॑-
ति वे॒न उ॒क्षभि॑ः पुरु॒वारे॑भिरु॒क्षभि॑ः । जगृ॒भ्मा दू॒रआ॑दिशं॒ श्लोक॒मद्रे॒रध॒ त्म-
। अधा॑रयदर॒रिन्दा॑नि सु॒क्रतु॑ः पु॒रू सद्मा॑नि सु॒क्रतु॑ः ॥ १० ॥ ये दे॑वासो दि॒-
का॑दश॒ स्थ पृ॑थि॒व्यामध्येका॑दश॒ स्थ । अ॒प्सु॒क्षितो॑ महि॒नैका॑दश॒ स्थ ते दे॑वासो
ामि॒मं जु॑षध्वम् ॥ ११ ॥ ४ ॥ २० ॥

॥ १४० ॥ १-१३ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, ५, ८
ती । २, ७, ११ विराड्जगती । ३, ४, ९ निचृज्जगती च । ६ भुरिक् त्रि-
। १०, १२ निचृत् त्रिष्टुप् । १३ पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-५, ७-९, ११ निषादः ।
१०, १२, धैवतः । १३ पञ्चमः ॥

॥ १४० ॥ वे॒दि॒षदे॑ प्रि॒यधा॑माय सु॒द्युते॑ धा॒सिमि॑व॒ प्र भ॑रा॒ योनि॑म॒ग्नये॑ ।

वस्त्रेणेव वासया मन्मना शुचिं ज्योतीरथं शुक्रवर्णं तमोहनम् ॥ १ ॥ अभि
जन्मा त्रिवृदन्नमृज्यते संवत्सरे वावृधे जग्धमी पुनः । अन्यस्यासा जिह्वया जे
वृषा न्यन्येन वनिनो मृष्ट वारणः ॥ २ ॥ कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य सक्षिता उ
तरेते अभि मातरा शिशुम् । प्राचाजिह्वं ध्वसयन्तं तृषुच्युतमा साच्यं कुपयं
धनं पितुः ॥ ३ ॥ मुमुक्ष्वो मनवे मानवस्यते रघुद्रुवः कृष्णसीतास ऊ जुवं
असमना अजिरासो रघुष्यदो वातजूता उप युज्यन्त आशवः ॥ ४ ॥ आदस्य
ध्वसयन्तो वृथेरते कृष्णमभ्वं महि वर्पः करिक्रतः । यत्सीं महीमवनिं प्राभि
मृशदभिश्वसन्स्तनयन्नेति नानदत् ॥ ५ ॥ ५ ॥ भूषन्न योऽधि बभ्रूषु नम्नते
षेव पत्नीरभ्येति रोरुवत् । ओजायमानस्तन्वश्च शुम्भते भीमो न शृङ्गा दविध
दुर्गृभिः ॥ ६ ॥ स संस्तिरो विष्टिरः सं गृभायति जानन्नेव जानतीर्नित्य
शये । पुनर्वर्धन्ते अपि यन्ति देव्यमन्यद्वर्पः पित्रोः कृण्वते सचा ॥ ७ ॥ तमग्र
केशिनीः सं हि रेभिर ऊर्ध्वास्तस्थुर्मम्रुषीः प्रायवे पुनः । तासां जरां प्रमुञ्चन्
नानदद्दसुं परं जनयञ्जीवमस्तृतम् ॥ ८ ॥ अधीवासं परि मातू रिहन्नह तुविग्रे
सत्वभिर्याति वि ज्रयः । वयो दधत्पद्वते रेरिहत्सदानु श्येनी सचते वर्तनी
॥ ९ ॥ अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिह्यध श्वसीवान्वृषभो दमूनाः । अवास्या शि
मतीरदीदेर्वर्मेव युत्सु परिजर्भुराणः ॥ १० ॥ ६ ॥ इदमग्ने सुधितं दुर्धिताधि
यादु चिन्मन्मनः प्रेयो अस्तु ते । यत्ते शुक्रं तन्वो रोचते शुचि तेनास्मभ्यं व
रत्नमा त्वम् ॥ ११ ॥ रथाय नावमुत नो गृहाय नित्यारित्रां पद्वतीं रास्यग्ने ।
स्माकं वीराँ उत नो मघोनो जनाँश्च या पारयाच्छर्म या च ॥ १२ ॥ अभी
अग्न उक्थमिज्जुगुर्या द्यावाक्षामा सिन्धवश्च स्वगूर्ताः । गव्यं यव्यं यन्तो दी
हेषं वरमरुण्यो वरन्त ॥ १३ ॥ ७ ॥

॥ १४१ ॥ १—१३ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,
३, ६, ११ जगती । ४, ७, ९, १० निचृज्जगती । ५ स्वराट् त्रिष्टुप् । ८
रिक् त्रिष्टुप् । १२ भुरिक् पङ्क्तिः । १३ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—४, ६,
९—११ निषादः । ५, ८ धैवतः । १२, १३ पञ्चमः ॥

॥ १४१ ॥ बळित्था तद्वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः सहसो यतो जा
यदीमुप ह्वरते साधते मतिर्ऋतस्य धेना अनयन्त सस्रुतः ॥ १ ॥ पृक्षो वपुः
तुमान्नित्य आ शये द्वितीयमा सप्तशिवासु मातृषु । तृतीयमस्य वृषभस्य दोहसे

प्रमतिं जनयन्त योषणः ॥ २ ॥ निर्यदीं बुध्नान्महिषस्य वर्पस ईशानासः शवसा
न्त सूरयः । यदीमनु प्रदिवो मध्व आधवे गुहा सन्तं मातरिश्वा मथायति ॥ ३ ॥
यत्पितुः परमान्नीयते पर्या पृक्षुधो वीरुधो दंसु रोहति । उभा उदस्य जनुषं य-
न्वत आदिद्यविष्ठो अभवद्घृणा शुचिः ॥ ४ ॥ आदिन्मातृराविशद्यास्वा शुचि-
हिंस्यमान उर्विया वि वावृधे । अनु यत्पूर्वा अरुहत्सनाजुवो नि नव्यसीष्ववं-
सु धावते ॥ ५ ॥ ८ ॥ आदिद्धोतारं वृणते दिविष्टिषु भगमिव पपृचानास
ञ्जते । देवान्यत्क्रत्वा मज्मना पुरुष्टुतो मर्तं शंसं विश्वधा वेति धायसे ॥ ६ ॥
यदस्थाद्यजतो वातचोदितो ह्वारो न वक्वा जरणा अनाकृतः । तस्य पत्मन्द-
षः कृष्णजंहसः शुचिजन्मनो रज आ व्यध्वनः ॥ ७ ॥ रथो न यातः शिक्वभिः
तो द्यामङ्गेभिररुषेभिरीयते । आदस्य ते कृष्णासो दक्षि सूरयः शूरस्येव त्वेष-
दीषते वयः ॥ ८ ॥ त्वया ह्यग्ने वरुणो धृतव्रतो मित्रः शाशद्रे अर्यमा सुदानवः ।
सीमनु क्रतुना विश्वथा विभुररान्न नेमिः परिभूरजायथाः ॥ ९ ॥ त्वमग्ने शा-
मानाय सुन्वते रत्नं यविष्ठ देवतातिमिन्वसि । तं त्वा नु नव्यं सहसो युवन्वयं
गं न कारे महिरत्न धीमहि ॥ १० ॥ अस्मे रयिं न स्वर्थं दमूनसं भगं दक्षं न
चासि धर्णसिम् । रश्मीरिव यो यमति जन्मनी उभे देवानां शंसमृत आ च
क्रतुः ॥ ११ ॥ उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो होता मन्द्रः शृणवच्चन्द्ररथः । स
नेषन्नेषतमैरमूरोऽग्निर्वामं सुवितं वस्यो अच्छ ॥ १२ ॥ अस्ताव्यग्निः शि-
वद्भिरर्कैः साम्राज्याय प्रतरं दधानः । अमी च ये मघवानो वयं च मिहं न सूरो
ति निष्टतन्युः ॥ १३ ॥ ९ ॥

॥ १४२ ॥ १—१३ दीर्घतमा ऋषिः ॥ देवता—१, २, ३, ४ अग्निः ।
बर्हिः । ६ देव्यो द्वारः । ७ उषासानक्ता । ८ दैव्यौ होतारौ । ९ सरस्वती-
भारत्यः । १० त्वष्टा । ११ वनस्पतिः । १२ स्वाहाकृतिः । १३ इन्द्रश्च ॥
न्दः—१, २, ५, ६, ८, ९ निचृदनुष्टुप् । ४ स्वराडनुष्टुप् । ३, ७, १०, ११,
२ अनुष्टुप् । १३ भुरिगुष्णिक् ॥ स्वरः—१—१२ गन्धारः । १३ ऋषभः ॥

॥ १४२ ॥ समिद्धो अग्न आ वह देवाँ अद्य यतस्रुचे । तन्तुं तनुष्व पूर्व्यं सु-
सोमाय दाशुषे ॥ १ ॥ घृतवन्तमुप मासि मधुमन्तं तनूनपात् । यज्ञं विप्रस्य मावतः
शशमानस्य दाशुषः ॥ २ ॥ शुचिः पावको अद्भुतो मध्वा यज्ञं मिमिक्षति । न-
राशंसस्त्रिरा दिवो देवो देवेषु यज्ञियः ॥ ३ ॥ ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रमिह

प्रियम् । इयं हि त्वा मतिर्ममाच्छा सुजिह्व वच्यते ॥ ४ ॥ स्तृणानासो यतस्रु
बर्हिर्यज्ञे स्वध्वरे । वृञ्जे देवव्यचस्तममिन्द्राय शर्म सप्रथः ॥ ५ ॥ वि श्रयन्तामृ
वृधः प्रयै देवेभ्यो महीः । पावकासः पुरुस्पृहो द्वारो देवीरसश्चतः ॥ ६ ॥ १०
आ भन्दमाने उपाके नक्तोषासा सुपेशसा । यह्वी ऋतस्य मातरा सीदतां ब
रा सुमत् ॥ ७ ॥ मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षता
सिध्रमद्य दिविस्पृशम् ॥ ८ ॥ शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती । इळा स
स्वती मही बर्हिः सीदन्तु यज्ञियाः ॥ ९ ॥ तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरु वारं पुरुत्मना । त्व
पोषाय वि ष्यतु राये नाभा नो अस्मयुः ॥ १० ॥ अवसृजन्नुप त्मना देवान्य
वनस्पते । अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः ॥ ११ ॥ पूषण्वते मरुत्वते
श्वदेवाय वायवे । स्वाहा गायत्रवेपसे हव्यमिन्द्राय कर्तन ॥ १२ ॥ स्वाहाकृता
गह्युप हव्यानि वीतये । इन्द्रा गहि श्रुधी हवं त्वां हवन्ते अध्वरे ॥ १३ ॥ १

॥ १४३ ॥ १–८ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ७ निचृ
गती । २, ३, ५ विराड्जगती । ४, ६ जगती च । ८ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१
निषादः । ८ धैवतः ॥

॥ १४३ ॥ प्र तव्यसीं नव्यसीं धीतिमग्नये वाचो मतिं सहसः सूनवे भरे
अपां नपाद्यो वसुभिः सह प्रियो होता पृथिव्यां न्यसीदद्दृत्वियः ॥ १ ॥ स ज
मानः परमे व्योमन्याविरग्निरभवन्मातरिश्वने । अस्य क्रत्वा समिधानस्य मज्म
प्र द्यावा शोचिः पृथिवी अरोचयत् ॥ २ ॥ अस्य त्वेषा अजरा अस्य भान
सुसन्दृशः सुप्रतीकस्य सुद्युतः । भात्वक्षसो अत्यक्तुर्न सिन्धवोऽग्ने रेजन्ते अस
अजराः ॥ ३ ॥ यमेरिरे भृगवो विश्ववेदसं नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्मना
अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे य एको वस्वो वरुणो न राजति ॥ ४ ॥ न
वराय मरुतामिव स्वनः सेनेव सृष्टा दिव्या यथाशनिः । अग्निर्जम्भैस्तिगितैरत्ति
वीति योधो न शत्रून्त्स वना न्यृञ्जते ॥ ५ ॥ कुविन्नो अग्निरुचथस्य वीरसद्वसु
विद्वसुभिः काममावरत् । चोदः कुवित्तुतुज्यात्सातये धियः शुचिप्रतीकं तमया धि
गृणे ॥ ६ ॥ घृतप्रतीकं व ऋतस्य धूर्षदमग्निं मित्रं न समिधान ऋञ्जते । इन्धा
अक्रो विदथेषु दीद्यच्छुक्रवर्णामुदु नो यंसते धियम् ॥ ७ ॥ अप्रयुच्छन्नप्रयुच्छ
रग्ने शिवेभिर्नः पायुभिः पाहि शग्मैः । अदब्धेभिरदृपितेभिरिष्टेऽनिमिषद्भिः प
पाहि नो जाः ॥ ८ ॥ १२ ॥

॥ १४४ ॥ १–७ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३, ४, ५, ७ [नि]चृज्जगती । २ जगती । ६ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–५, ७ निषादः । ६ पञ्चमः ॥

॥ १४४ ॥ एति प्र होता व्रतमस्य माययोर्ध्वां दधानः शुचिपेशसं धियम् । [अ]भि स्रुचः क्रमते दक्षिणावृतो या अस्य धाम प्रथमं ह निंसते ॥ १ ॥ अभीमृ[त]स्य दोहना अनूषत योनौ देवस्य सदने परीवृताः । अपामुपस्थे विभृतो यदा[व]सदध स्वधा अधयद्याभिरीयते ॥ २ ॥ युयूषतः सवयसा तदिद्वपुः समानमर्थं [वि]तरित्रता मिथः । आदीं भगो न हव्यः समस्मदा वोळ्हुर्न रश्मीन्त्समयंस्त सा[र]थिः ॥ ३ ॥ यमीं द्वा सवयसा सपर्यतः समाने योना मिथुना समोकसा । दिवा [न] नक्तं पलितो युवाजनि पुरू चरन्नजरो मानुषा युगा ॥ ४ ॥ तमीं हिन्वंति [धी]तयो दश व्रिशो देवं मर्तास ऊतये हवामहे । धनोरधि प्रवत आ स ऋण्वत्य[भि]व्रजद्भिर्वयुना नवाधित ॥ ५ ॥ त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि त्वं पार्थिवस्य पशुपा [इ]व त्मना । एनी त एते बृहती अभिश्रिया हिरण्ययी वक्वरी बर्हिराशाते ॥ ६ ॥ अग्ने जुषस्व प्रति हर्य तद्वचो मन्द्र स्वधाव ऋतजात सुक्रतो । यो विश्वतः प्रत्य[]ङ्ङसि दर्शतो रण्वः सन्दृष्टौ पितुमाँ इव क्षयः ॥ ७ ॥ १३ ॥

॥ १४५ ॥ १–५ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ विराड्[ज]गती । २, ५ निचृज्जगती च । ३ । ४ भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, २, ५ नि[ष]ादः । ३, ४ धैवतः ॥

॥ १४५ ॥ तं पृच्छता स जगामा स वेद स चिकित्वाँ ईयते सा न्वीयते । [त]स्मिन्त्सन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्टयः स वाजस्य शवसः शुष्मिणस्पतिः ॥ १ ॥ त[मि]त्पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत् । न मृष्यते [प्र]थमं नापरं वचोऽस्य क्रत्वा सचते अप्रदृपितः ॥ २ ॥ तमिद्गच्छन्ति जुह्वस्तम[र्व]तीर्विश्वान्येकः शृणवद्वचांसि मे । पुरुप्रैषस्ततुरिर्यज्ञसाधनोऽच्छिद्रोतिः शिशु[रा]दत्त सं रभः ॥ ३ ॥ उपस्थायं चरति यत्समारत सद्यो जातस्तत्सार युज्येभिः । [अ]भि श्वान्तं मृशते नान्द्ये मुदे यदीं गच्छन्त्युशतीरपिष्ठितम् ॥ ४ ॥ स ईं मृगो [अ]प्यो वनर्गुरुप त्वच्युपमस्यां नि धायि । व्यब्रवीद्वयुना मर्त्येभ्योऽग्निर्विद्वाँ ऋ[त]चिद्धि सत्यः ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ १४६ ॥ १–५ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २ विराट्[]त्रिष्टुप् । ३, ५ त्रिष्टुप् । ४ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १४६ ॥ त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिं गृणीषेऽनूनमग्निं पित्रोरुपस्थे । निषत्तम
स्य । चरतो ध्रुवस्य विश्वा दिवो रोचनापप्रिवांसम् ॥ १ ॥ उक्षा महाँ अ
ववक्ष एने अजरस्तस्थावितऊतिर्ऋष्वः । उर्व्याः पदो नि दधाति सानौ रि
न्त्यूधो अरुषासो अस्य ॥ २ ॥ समानं वत्समभि सञ्चरन्ती विष्वग्धेनू वि चरत
सुमेके । अनपवृज्याँ अध्वनो मिमाने विश्वान्केताँ अधि महो दधाने ॥ ३ ॥ धी
रासः पदं कवयो नयन्ति नाना हृदा रक्षमाणा अजुर्यम् । सिषासन्तः पर्यपश्य
न्त सिन्धुमाविरेभ्यो अभवत्सूर्यो नॄन् ॥ ४ ॥ दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु जेन्
ईळेन्यो महो अर्भाय जीवसे । पुरुत्रा यदभवत्सूरहैभ्यो गर्भेभ्यो मघवा विश्व
दर्शतः ॥ ५ ॥ १५ ॥

॥ १४७ ॥ १–५ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३, ४,
निचृत् त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १४७ ॥ कथा ते अग्ने शुचयन्त आयोर्ददाशुर्वाजेभिराशुषाणाः । उ
यत्तोके तनये दधाना ऋतस्य सामन्रणयन्त देवाः ॥ १ ॥ बोधा मे अस्य वच
यविष्ठ मंहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः । पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारु
तन्वं वन्दे अग्ने ॥ २ ॥ ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरिताद
क्षन् । ररक्ष तान्त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ॥ ३ ॥ यो
अग्ने अररिवाँ अघायुररातीवा मर्चयति द्वयेन । मन्त्रो गुरुः पुनरस्तु सो अस
अनु मृक्षीष्ट तन्वं दुरुक्तैः ॥ ४ ॥ उत वा यः सहस्य प्रविद्वान्मर्तो मर्तं मर्चय
द्वयेन । अतः पाहि स्तवमान स्तुवन्तमग्ने माकिर्नो दुरिताय धायीः ॥ ५ ॥ १६

॥ १४८ ॥ १–५ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २ पङ्क्तिः
५ स्वराट् पङ्क्तिः । ३, ४ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, २, ५ पञ्चमः । ३, ४ धैवतः

॥ १४८ ॥ मथीद्यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं विश्वदेव्यम् ।
यं दधुर्मनुष्यासु विक्षु स्वर्णं चित्रं वपुषे विभावम् ॥ १ ॥ ददानमित्र ददभ
मन्माग्निर्वरूथं मम तस्य चाकन् । जुषन्त विश्वान्यस्य कर्मोपस्तुतिं भरमाण
कारोः ॥ २ ॥ नित्ये चिन्नु यं सदने जगृभ्रे प्रशस्तिभिर्दधिरे यज्ञियासः । प्र
नयन्त गृभयन्त इष्टावश्वासो न रथ्यो रारहाणाः ॥ ३ ॥ पुरूणि दस्मो नि
णाति जम्भैराद्रोचते वन आ विभावा । आदस्य वातो अनु वाति शोचिरस्

र्षीमसनामनु द्यून् ॥ ४ ॥ न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्तं रेषणा रेषयन्ति ।
न्धा अपश्या न दभन्नभिख्या नित्यास ईं प्रेतारो अरक्षन् ॥ ५ ॥ १७ ॥

॥ १४९ ॥ १-५ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१ भुरिगनु-
ष्टुप् । २, ४ निचृदनुष्टुप् । ५ विराडनुष्टुप् । ३ उष्णिक् ॥ स्वरः-१, २, ४,
गान्धारः । ३ ऋषभः ॥

॥ १४९ ॥ महः स राय एषते पतिर्दन्निन इनस्य वसुनः पद आ । उप
जन्तमद्रयो विधन्नित् ॥ १ ॥ स यो वृषा नरां न रोदस्योः श्रवोभिरस्ति जी-
पीतसर्गः । प्र यः सस्राणः शिश्रीत योनौ ॥ २ ॥ आ यः पुरं नार्मिणीमदी-
दत्यः कविर्नभन्यो३नार्वा । सूरो न रुरुक्वाञ्छतात्मा ॥ ३ ॥ अभि द्विजन्मा त्री
चनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात् । होता यजिष्ठो अपां सधस्थे ॥ ४ ॥
यं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या । मर्तो यो अस्मै सुतु-
ो ददाश ॥ ५ ॥ १८ ॥

॥ १५० ॥ १-३ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, ३ भुरि-
गायत्री । २ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः-१, ३ षड्जः । २ ऋषभः ॥

॥ १५० ॥ पुरु त्वा दाश्वान्वोचेऽरिरग्ने तव स्विदा । तोदस्येव शरण आ
हस्य ॥ १ ॥ व्यनिनस्य धनिनः प्रहोषे चिदररुषः । कदा चन प्रजिगतो अदे-
योः ॥ २ ॥ स चन्द्रो विप्र मर्त्यो महो व्राधन्तमो दिवि । प्रप्रेत्ते अग्ने वनुषः
याम ॥ ३ ॥ १९ ॥

॥ १५१ ॥ १-९ दीर्घतमा ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः-१ भुरिक्
त्रिष्टुप् । २, ३, ४, ५ विराट् जगती । ६, ७ जगती । ८, ९ निचृज्जगती च ॥
वरः-१ धैवतः । २-९ निषादः ॥

॥ १५१ ॥ मित्रं न यं शिम्या गोषु गव्यवः स्वाध्यो विदथे अप्सु जीजन-
। अरेजेतां रोदसी पाजसा गिरा प्रति प्रियं यजतं जनुषामवः ॥ १ ॥ यद्ध
यद्वां पुरुमीळ्हस्य सोमिनः प्र मित्रासो न दधिरे स्वाभुवः । अध क्रतुं विदतं
ातुमर्चत उत श्रुतं वृषणा पस्त्यावतः ॥ २ ॥ आ वां भूषन्क्षितयो जन्म रोद-
्योः प्रवाच्यं वृषणा दक्षसे महे । यदीमृताय भरथो यदर्वते प्र होत्रया शिम्या

वीथो अध्वरम् ॥ ३ ॥ प्र सा क्षितिरसुर या महिं प्रिय ऋतावानावृतमा घोष
बृहत् । युवं दिवो बृहतो दक्षमाभुवं गां न धुर्युप युञ्जाथे अपः ॥ ४ ॥ म
अत्रे महिना वारमृण्वथोऽरेणवस्तुज आ सद्मन्धेनवः । स्वरन्ति ता उपरताति
र्येमा निम्रुचं उषसस्तक्वीरिव ॥ ५ ॥ २० ॥ आ वामृताय केशिनीरनूषत मि
यत्र वरुण गातुमर्चथः । अव त्मना सृजतं पिन्वतं धियो युवं विप्रस्य मन्मना
रज्यथः ॥ ६ ॥ यो वां यज्ञैः शशमानो ह दाशति कविर्होता यजति मन्मसाधनः
उपाह तं गच्छथो वीथो अध्वरमच्छा गिरः सुमतिं गन्तमस्मयू ॥ ७ ॥ युवां य
प्रथमा गोभिरञ्जत ऋतावाना मनसो न प्रयुक्तिषु । भरन्ति वां मन्मना संय
गिरोऽदृप्यता मनसा रेवदाशाथे ॥ ८ ॥ रेवद्वयो दधाथे रेवदाशाथे नरा माय
भिरितऊति माहिनम् । न वां द्यावोऽहभिर्नोत सिन्धवो न देवत्वं पणयो नान
मघम् ॥ ९ ॥ २१ ॥

॥ १५२ ॥ १—७ दीर्घतमा ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१,
४, ५, ६ त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् । ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १५२ ॥ युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः ।
वातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ॥ १ ॥ एतच्चन त्वो वि चि
तदेषां सत्यो मन्त्रः कविशस्त ऋघावान् । त्रिरश्रिं हन्ति चतुरश्रिरुग्रो देवनिदो
प्रथमा अजूर्यन् ॥ २ ॥ अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद्वां मित्रावरुणा चिकेत
गर्भो भारं भरत्या चिदस्य ऋतं पिपर्त्यनृतं नि तारीत् ॥ ३ ॥ प्रयन्तमित्परि ज
कनीनां पश्यामसि नोपनिपद्यमानम् । अनवपृग्णा वितता वसानं प्रियं मित्र
वरुणस्य धाम ॥४॥ अनश्वो जातो अनभीशुरर्वा कनिक्रदत्पतयदूर्ध्वसानुः ।
चित्तं ब्रह्म जुजुषुर्युवानः प्र मित्रे धाम वरुणे गृणन्तः ॥ ५ ॥ आ धेनवो माम
यमवन्तीर्ब्रह्मप्रियं पीपयन्त्सस्मिन्नूधन् । पित्वो भिक्षेत वयुनानि विद्वानासावि
सन्नदितिमुरुष्येत् ॥६॥ आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं नमसा देवाववसा ववृत्याम
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु सह्या अस्माकं वृष्टिर्दिव्या सुपारा ॥ ७ ॥ २२ ॥

॥ १५३ ॥ १–४ दीर्घतमा ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः–१,
निचृत् त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् । ४ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–३ धैवतः । ४ पञ्चमः

॥ १५३ ॥ यजामहे वां महः सजोषा हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः । घ

स्नू अध यद्वामस्मे अध्वर्यवो न धीतिभिर्भरन्ति ॥ १ ॥ प्रस्तुतिर्वां धाम न प्रयु-
रयामि मित्रावरुणा सुवृक्तिः । अनक्ति यद्वां विदथेषु होता सुम्नं वां सूरिर्वृ-
णावियक्षन् ॥ २ ॥ पीपाय धेनुरदितिर्ऋताय जनाय मित्रावरुणाहविर्दे । हि-
ति यद्वां विदथे सपर्यन्त्स रातहव्यो मानुषो न होता ॥ ३ ॥ उत वां विक्षु म-
स्वन्धो गाव आपश्च पीपयन्त देवीः । उतो नो अस्य पूर्व्यः पतिर्दन्वीतं पातं
स उस्रियायाः ॥ ४ ॥ २३ ॥

॥ १५४ ॥ १–६ दीर्घतमा ऋषिः ॥ विष्णुर्देवता ॥ छन्दः–१, २, वि-
ट्त्रिष्टुप् । ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १५४ ॥ विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥१॥ प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण
गो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि वि-
॥ २ ॥ प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे । य इदं दीर्घं
यतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः ॥ ३ ॥ यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्य-
यमाणा स्वधया मदन्ति । य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि
श्वा ॥ ४ ॥ तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति । उरु-
स्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ॥ ५ ॥ ता वां वास्तू-
श्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः । अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः पर-
पदमव भाति भूरि ॥ ६ ॥ २४ ॥

॥ १५५ ॥ १–६ दीर्घतमा ऋषिः ॥ विष्णुर्देवता ॥ छन्दः–१, ३, ६
रिक् त्रिष्टुप् ।४ स्वराट् त्रिष्टुप् ।५ निचृत् त्रिष्टुप् । २ निचृज्जगती ॥ स्वरः–१,
–६ धैवतः । २ निषादः ॥

॥ १५५ ॥ प्र वः पान्तमन्धसो धियायते महे शूराय विष्णवे चार्चत । या
नुनि पर्वतानामदाभ्या महस्तस्थतुरर्वतेव साधुना ॥ १ ॥ त्वेषमित्था समरणं
मीवतोरिन्द्राविष्णू सुतपा वामुरुष्यति । या मर्त्याय प्रतिधीयमानमित्कृशानो-
तुरसनामुरुष्यथः ॥ २ ॥ ता ईं वर्धन्ति मह्यस्य पौंस्यं नि मातरा नयति रेतसे
। दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ॥ ३ ॥ तत्तदिद-
पौंस्यं गृणीमसीनस्य त्रातुरवृकस्य मीळ्हुषः । यः पार्थिवानि त्रिभिरिद्विगाम-

भिरुरुक्रमिष्ठोरुगायाय जीवसे ॥ ४ ॥ द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशोऽभिख्याय म
भुरण्यति । तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतयन्तः पतत्रिणः ॥ ५ ॥
तुभिः साकं नवतिं च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीँरवीविपत् । बृहच्छरीरो विमि
ऋक्वभिर्युवाकुमारः प्रत्येत्याहवम् ॥ ६ ॥ २५ ॥

॥ १५६ ॥ १–५ दीर्घतमा ऋषिः ॥ विष्णुर्देवता ॥ छन्दः– १ निचृ
ष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ५ स्वराट् त्रिष्टुप् । ३ निचृज्जगती । ४ जगत
स्वरः–१, २, ५, धैवतः । ३, ४ निषादः ॥

॥ १५६ ॥ भवा मित्रो न शेव्यो घृतासुतिर्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथ
अधा ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता ॥ १ ॥ यः पूर्व
वेधसे नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे ददाशति । यो जातमस्य महतो महि ब्रव
श्रवोभिर्युज्यं चिदभ्यसत् ॥ २ ॥ तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथा विद ऋतस्य गर्भं
नुषा पिपर्तन । आस्य जानन्तो नाम चिद्विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भज
॥ ३ ॥ तमस्य राजा वरुणस्तमश्विना क्रतुं सचन्त मारुतस्य वेधसः । दाधा
क्षमुत्तममहर्विदं व्रजं च विष्णुः सखिवाँ अपोर्णुते ॥ ४ ॥ आ यो विवाय
थाय दैव्य इन्द्राय विष्णुः सुकृते सुकृत्तरः । वेधा अजिन्वत्त्रिषधस्थ आर्यमृ
भागे यजमानमाभजत् ॥ ५ ॥ २६ ॥ २१ ॥

॥ १५७ ॥ १–६ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१ त्रिष्
५ निचृत्त्रिष्टुप् । ६ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४ जगती । ३ निचृज्जगती ॥ स्वरः–
५, ६ धैवतः । २, ३, ४ निषादः ॥

॥ १५७ ॥ अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्युषाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषा ।
युञ्जातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद्देवः सविता जगत्पृथक् ॥ १ ॥ यद्युञ्जाथे वृषण
श्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम् । अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं ध
शूरसाता भजेमहि ॥ २ ॥ अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनो
सुष्टुतः । त्रिवन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद्द्विपदे चतुष्पदे ॥ ३ ॥
न ऊर्जं वहतमश्विना युवं मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम् । प्रायुस्तारिष्टं नी
पांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा ॥ ४ ॥ युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थो
विश्वेषु भुवनेष्वन्तः । युवमग्निं च वृषणावपश्च वनस्पतींरश्विनावैरयेथाम् ॥ ५

हं स्थो भिषजा भेषजेभिरथो ह स्थो रथ्या३राथ्येभिः। अथो ह क्षत्रमधि धत्थ
यो वां हविष्मान्मनसा ददाश ॥ ६ ॥ २७ ॥ २ ॥

॥ १५८ ॥ १–६ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१, ४, ५
वृत् त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ३ भुरिक् पङ्क्तिः। ६ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः–१, २, ४,
वतः। ३ पञ्चमः। ६ गान्धारः॥

॥ १५८ ॥ वसू रुद्रा पुरुमन्तू वृधन्ता दशस्यतं नो वृषणावभिष्टौ। दस्रा ह
क्णं औचथ्यो वां प्र यत्सस्राथे अकवाभिरूती ॥ १ ॥ को वां दाशत्सुमतये
स्यै वसू यद्धेथे नमसा पदे गोः। जिगृतमस्मे रेवतीः पुरंधीः कामप्रेणेव म-
चरन्ता ॥ २ ॥ युक्तो ह यद्वां तौग्र्याय पेरुर्वि मध्ये अर्णसो धायि पज्रः।
वामवः शरणं गमेयं शूरो नाज्म पतयद्भिरेवैः ॥ ३ ॥ उपस्तुतिरौचथ्यमुरुष्ये-
मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम्। मा मामेधो दशतयश्चितो धाक् प्र यद्वां ब-
त्मनि खादति क्षाम् ॥ ४ ॥ न मा गरन्नद्यो मातृतमा दासा यदीं सुसमुब्ध-
र्धुः। शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत्स्वयं दास उरो अंसावपि ग्ध ॥ ५ ॥ दी-
मा मामतेयो जुजुर्वान्दशमे युगे। अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ १५९ ॥ १–५ दीर्घतमा ऋषिः ॥ द्यावापृथिव्यौ देवते ॥ छन्दः–१ वि-
जगती। २, ३, ५ निचृज्जगती। ४ जगती च ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ १५९ ॥ प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी ऋतावृधा मही स्तुषे विदथेषु प्रचेतसा।
भिर्ये देवपुत्रे सुदंससेत्था धिया वार्याणि प्रभूषतः ॥ १ ॥ उत मन्ये पितुर-
मनो मातुर्महि स्वतवस्तद्धवीमभिः। सुरेतसा पितरा भूम चक्रतुरुरु प्रजाया
तं वरीमभिः ॥ २ ॥ ते सूनवः स्वपसः सुदंससो मही जज्ञुर्मातरा पूर्वचित्तये।
तुश्च सत्यं जगतश्च धर्मणि पुत्रस्य पाथः पदमद्वयाविनः ॥ ३ ॥ ते मायिनो
रे सुप्रचेतसो जामी सयोनी मिथुना समोकसा। नव्यंनव्यं तन्तुमा तन्वते दिवि
द्रे अन्तः कवयः सुदीतयः ॥ ४ ॥ तद्राधो अद्य सवितुर्वरेण्यं वयं देवस्य प्र-
मना महे। अस्मभ्यं द्यावापृथिवी सुचेतुना रयिं धत्तं वसुमन्तं शतग्विनम्
५ ॥ २ ॥

॥ १६० ॥ १–५ दीर्घतमा ऋषिः ॥ द्यावापृथिव्यौ देवते ॥ छन्दः–१ वि-
जगती। २, ३, ४, ५ निचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ १६० ॥ ते हि द्यावापृथिवी विश्वशम्भुव ऋतावरी रजसो धारयत
सुजन्मनी धिषणे अन्तरीयते देवो देवी धर्मणा सूर्यः शुचिः ॥ १ ॥ उरुव्य
महिनी असश्चता पिता माता च भुवनानि रक्षतः । सुधृष्टमे वपुष्ये न रो
पिता यत्सीमभि रूपैरवासयत् ॥ २ ॥ स वह्निः पुत्रः पित्रोः पवित्रवान्पुनाति
भुवनानि मायया । धेनुं च पृश्निं वृषभं सुरेतसं विश्वाहा शुक्रं पयो
दुक्षत ॥ ३ ॥ अयं देवानामपसामपस्तमो यो जजान रोदसी विश्वशम्
वि यो ममे रजसी सुक्रतूययाजरेभिः स्कम्भनेभिः समानृचे ॥ ४ ॥ ते नो गृ
महिनी महि श्रवः क्षत्रं द्यावापृथिवी धासथो बृहत् । येनाभि कृष्टीस्ततनाम वि
पनाय्यमोजो अस्मे समिन्वतम् ॥ ५ ॥ ३ ॥

॥ १६१ ॥ १–१४ दीर्घतमा ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः–१
जगती । २, ५, ६, ८, १२ निचृज्जगती । ७, १० जगती च । ३ निचृ
ष्टुप् । ४, १३ भुरिक् त्रिष्टुप् । ६ स्वराट् त्रिष्टुप् । ११ त्रिष्टुप् । १४ स्वराट्प
स्वरः–१, २, ५–८, १०, १२ निषादः । ३, ४, १३, ६, ११ धैवतः
पञ्चमः ॥

॥ १६१ ॥ किमु श्रेष्ठः किं यविष्ठो न आजगन्किमीयते दूत्यं१ कद्यदू
न निन्दिम चमसं यो महाकुलोऽग्ने भ्रातर्द्रुण इद्भूतिमूदिम ॥ १ ॥ एकं
चतुरस्कृणोतन तद्वो देवा अब्रुवन्तद्व आगमम् । सौधन्वना यद्येवा करिष्यथ
देवैर्यज्ञियासो भविष्यथ ॥ २ ॥ अग्निं दूतं प्रति यदब्रवीतनाश्वः कर्त्वो रथ
कर्त्वः । धेनुः कर्त्वा युवशा कर्त्वा द्वा तानि भ्रातरनु वः कृत्व्येमसि ॥ ३
कृवांस ऋभवस्तदपृच्छत क्वेदभूद्यः स्य दूतो न आजगन् । यदावाख्यच्चमस
तुरः कृतानादित्त्वष्टा ग्नास्वन्तर्न्यानजे ॥ ४ ॥ हनामैनाँ इति त्वष्टा यदब्रवी
ये देवपानमनिन्दिषुः । अन्या नामानि कृण्वते सुते सचाँ अन्यैरेनान्कन्या३ना
स्परत् ॥ ५ ॥ ४ ॥ इन्द्रो हरी युयुजे अश्विना रथं बृहस्पतिर्विश्वरूपामुपा
ऋभुर्विभ्वा वाजो देवाँ अगच्छत स्वपसो यज्ञियं भागमैतन ॥ ६ ॥ निश्चर्मण
मरिणीत धीतिभिर्या जरन्ता युवशा ताकृणोतन । सौधन्वना अश्वादश्वम
युक्त्वा रथमुप देवाँ अयातन ॥ ७ ॥ इदमुदकं पिबतेत्यब्रवीतनेदं वा घा
मुञ्जनेजनम् । सौधन्वना यदि तन्नेव हर्यथ तृतीये घा सवने मादयाध्वै ॥
आपो भूयिष्ठा इत्येको अब्रवीदग्निर्भूयिष्ठ इत्यन्यो अब्रवीत् । वधर्यन्तीं ब

ौं अब्रवीद्धता वदन्तश्च्चमसाँ अपिंशत ॥ ९ ॥ श्रोणामेकं उदकं गामवाजति मांसमेकः पिंशति सूनयाभृतं । आ निम्रुचः शकृदेको अपाभरत्किं स्वित्पुत्रेभ्यः पितरा उपावतुः ॥१०॥५॥ उद्वत्स्वस्मा अकृणोतना तृणं निवत्स्वपः स्वपस्यया नरः । गोह्यस्य यदसस्तना गृहे तदद्येदमृभवो नानु गच्छथ ॥ ११ ॥ सम्मील्य यद्भुवना पर्यसर्पत क्व स्वित्तात्या पितरा व आसतुः । अशपत यः करस्नं व आददे यः प्राब्रवीत्प्रो तस्मा अब्रवीतन ॥ १२ ॥ सुषुप्वांस ऋभवस्तदपृच्छतागोह्य क इदं नो अबूबुधत् । श्वानं बस्तो बोधयितारमब्रवीत्संवत्सर इदमद्या व्यख्यत ॥ १३ ॥ दिवा यान्ति मरुतो भूम्याग्निरयं वातो अन्तरिक्षेण याति । अद्भिर्याति वरुणः समुद्रैर्युष्माँ इच्छन्तः शवसो नपातः ॥ १४ ॥ ६ ॥

॥ १६२ ॥ १—२२ दीर्घतमा ऋषिः ॥ मित्रादयो लिङ्गोक्ता देवता ॥ छन्दः—१, २, ६, १०, १७, २० निचृत् त्रिष्टुप् । ४, ७, ८, १८ त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् । ६, ११, २१ भुरिक् त्रिष्टुप् । १२ स्वराट् त्रिष्टुप् । १३, १४ भुरिक् पङ्क्तिः । १५, १६, २२ स्वराट् पङ्क्तिः । १६ विराट् पङ्क्तिः । ३ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, २, ४—१२, १७, १८, २०, २१ धैवतः। १३—१६, १६, २२ पञ्चमः । ३ निषादः ॥

॥ १६२ ॥ मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन् । यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तेः प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि ॥ १ ॥ यन्निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य रातिं गृभीतां मुखतो नयन्ति । सुप्राङजो मेम्यद्विश्वरूप इन्द्रापूष्णोः प्रियमप्येति पाथः ॥ २ ॥ एष च्छागः पुरो अश्वेन वाजिना पूष्णो भागो नीयते विश्वदेव्यः । अभिप्रियं यत्पुरोळाशमर्वता त्वष्टेदेनं सौश्रवसाय जिन्वति ॥ ३ ॥ यद्धविष्यमृतुशो देवयानं त्रिर्मानुषाः पर्यश्वं नयन्ति । अत्रा पूष्णः प्रथमो भाग एति यज्ञं देवेभ्यः प्रतिवेदयन्नजः ॥ ४ ॥ होताध्वर्युरावया अग्निमिन्धो ग्रावग्राभ उत शंस्ता सुविप्रः । तेन यज्ञेन स्वरङ्कृतेन स्विष्टेन वक्षणा आ पृणध्वम् ॥ ५ ॥ ॥ यूपव्रस्का उत ये यूपवाहाश्चषालं ये अश्वयूपाय तक्षति । ये चार्वते पचनं सम्भरन्त्युतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्वतु ॥ ६ ॥ उप प्रागात्सुमन्मेऽधायि मन्म देवानामाशा उप वीतपृष्ठः । अन्वेनं विप्रा ऋषयो मदन्ति देवानां पुष्टे चकृमा सुबन्धुम् ॥ ७ ॥ यद्वाजिनो दाम सन्दानमर्वतो या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य । यद्वा घास्य प्रभृतमास्ये तृणं सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥ ८ ॥ यदश्वस्य क्रविषो

मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति । यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा
ते अपि देवेष्वस्तु ॥ ६ ॥ यदूवध्यमुदरस्यापवाति य आमस्य क्रविषो गन्
अस्ति । सुकृता तच्छमितारः कृण्वन्तूत मेधं शृतपाकं पचन्तु ॥ १० ॥ ८ ॥ य
गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलं निहतस्यावधावति । मा तद्भूम्यामा श्रिषन्
तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु ॥ ११ ॥ ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं य
माहुः सुरभिर्निर्हरेति । ये चार्वतो मांसभिक्षामुपासत उतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्व
॥ १२ ॥ यन्नीक्षणं मांस्पचन्या उखाया या पात्राणि यूष्ण आसेचनानि । उ
ष्मण्यापिधाना चरूणामङ्काः सूनाः परि भूषन्त्यश्वम् ॥ १३ ॥ निक्रमणं नि
दनं विवर्तनं यच्च पड्बीशमर्वतः । यच्च पपौ यच्च घासिं जघास सर्वा ता ते अपि दे
ष्वस्तु ॥ १४ ॥ मा त्वाग्निर्ध्वनयीद्धूमगन्धिर्मोखा भ्राजन्त्यभि विक्त जघ्रिः
इष्टं वीतमभिगूर्तं वषट्कृतं तं देवासः प्रति गृभ्णन्त्यश्वम् ॥ १५ ॥ ६ ॥ यद
श्वाय वास उपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै । सन्दानमर्वन्तं पड्बीशं प्रि
देवेष्वा यामयन्ति ॥ १६ ॥ यत्ते सादे महसा शूकृतस्य पार्ष्ण्या वा कशया
तुतोद । स्रुचेव ता हविषो अध्वरेषु सर्वा ता ते ब्रह्मणा सूदयामि ॥ १७ ॥
तुस्त्रिंशद्वाजिनो देवबन्धोर्वङ्क्रिरश्वस्य स्वधितिः समेति । अच्छिद्रा गात्रा व
ना कृणोत परुष्परुरनुघुष्या वि शस्त ॥ १८ ॥ एकस्त्वष्टुरश्वस्या विशस्ता
यन्तारा भवतस्तथ ऋतुः । या ते गात्राणामृतुथा कृणोमि ताता पिण्डानां
जुहोम्यग्नौ ॥ १९ ॥ मा त्वा तपत्प्रिय आत्माप्रियन्तं मा स्वधितिस्तन्व आ
ष्ठिपत्ते । मा ते गृध्नुरविशस्तातिहाय छिद्रा गात्राण्यसिना मिथू कः ॥ २०
न वा उ एतन्म्रियसे न रिष्यसि देवाँ इदेषि पथिभिः सुगेभिः । हरी ते युञ्
पृषती अभूतामुपास्थाद्वाजी धुरि रासभस्य ॥ २१ ॥ सुगव्यं नो वाजी स्वश्
पुंसः पुत्राँ उत विश्वापुषं रयिम् । अनागास्त्वं नो अदितिः कृणोतु क्षत्रं नो
श्वो वनतां हविष्मान् ॥ २२ ॥ १० ॥

॥ १६३ ॥ १—१३ दीर्घतमा ऋषिः ॥ अश्वोऽग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,६,७,
त्रिष्टुप् । २ भुरिक् त्रिष्टुप् । ३, ८ विराट् त्रिष्टुप् । ५,६,११ निचृत् त्रिष्टुप् ।
१०,१२ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—३,५—६,११,१३ धैवतः । ४,१०,१२ पञ्चम

॥ १६३ ॥ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य
क्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥ १ ॥ यमेन दत्तं त्रित ए

युनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत् । गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वस-
निरतष्ट ॥ २ ॥ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । अ-
सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥३॥ त्रीणि त आहुर्दिवि
न्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यंतः समुद्रे । उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा त आहुः परमं
नित्रम् ॥ ४ ॥ इमा ते वाजिन्नवमार्जनानीमा शफानां सनितुर्निधाना । अत्रा
भद्रा रशना अपश्यमृतस्य या अभिरक्षन्ति गोपाः ॥ ५ ॥ ११ ॥ आत्मानं ते
नसारादजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम् । शिरो अपश्यं पथिभिः सुगेभिर-
णुभिर्जेहमानं पतत्रि ॥ ६ ॥ अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं जिगीषमाणमिष आ पदे
ोः । यदा ते मर्तो अनु भोगमानळादिद्ग्रसिष्ठ ओषधीरजीगः ॥ ७ ॥ अनु त्वा
थो अनु मर्यो अर्वन्ननु गावोऽनु भगः कनीनाम् । अनु व्रातासस्तव सख्यमीयुर-
देवा ममिरे वीर्यं ते ॥ ८ ॥ हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य पादा मनोजवा अवर इ-
द्र आसीत् । देवा इदस्य हविरद्यमायन्यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत् ॥ ९ ॥ ई-
र्मान्तासः सिलिकमध्यमासः सं शूरणासो दिव्यासो अत्याः । हंसा इव श्रेणिशो
तन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः ॥ १० ॥ १२ ॥ तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन्तव
चित्तं वात इव ध्रजीमान् । तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति
॥ ११ ॥ उप प्रागाच्छसनं वाज्यर्वा देवद्रीचा मनसा दीध्यानः । अजः पुरो नी-
ते नाभिरस्यानु पश्चात्कवयो यन्ति रेभाः ॥ १२ ॥ उप प्रागात्परमं यत्सधस्थ-
र्वाँ अच्छा पितरं मातरं च । अद्या देवाञ्जुष्टतमो हि गम्या अथा शास्ते दाशु-
वार्याणि ॥ १३ ॥ १३ ॥

॥ १६४ ॥ १-५२ दीर्घतमा ऋषिः ॥ देवता-१-४१ विश्वेदेवाः । ४२[१]
ाक् । ४२[२] आपः । ४३[१] शकधूमः । ४३[२] सोमः । ४४ अग्निः सूर्यो वायुश्च ।
५ वाक् । ४६, ४७ सूर्यः । ४८ संवत्सरात्मा कालः । ४९ सरस्वती । ५०
ाध्याः । ५१ सूर्यः पर्जन्यो वा अग्नयो वा । ५२ सरस्वान् सूर्यो वा ॥ छन्दः-१, ९,
७, ३५, ४०, ५० विराट् त्रिष्टुप् ३, ४, ५, ६, ७, ८, ११, १८, २६, ३१,
३, ३४, ३७, ४३, ४६, ४७, ४९, निचृत् त्रिष्टुप् । २, १०, १३, १६, १७,
९, २१, २४, २८, ३२, ५२ त्रिष्टुप् । १४, ३९, ४१, ४४, ४५ भुरिक् त्रि-
ष्टुप् १२, १५, २३ जगती । २९, ३६ निचृज्जगती । २० भुरिक् पङ्क्तिः । २२,
५, ४८ स्वराट् पङ्क्तिः । ३०, ३८ पङ्क्तिः । ४२ भुरिक् बृहती । ५१ विराड-

नुष्टुप् ॥ स्वरः—१—११, १३, १४, १६—१६, २१, २४, २६—२८, ३१—३
३७, ३६—४१, ४३—४७, ४६, ५०, ५२ धैवतः । १२, १५, २३, २६,
निषादः । २०, २२, २५, ४८, ३०, ३८ पञ्चमः । ४२, ५१ गान्धारः ॥

॥ १६४ ॥ अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्पतिं सप्तपुत्रम् ॥ १ ॥ सप्त युञ्ज
रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा । त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा
श्वा भुवनाधि तस्थुः ॥ २ ॥ इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः सप्तचक्रं सप्त वहन्त्य
श्वाः । सप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते यत्र गवां निहिता सप्त नाम ॥ ३ ॥ को दद
प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति । भूम्या असुरसृगात्मा क्व स्वित्
विद्वांसमुप गात्प्रष्टुमेतत् ॥ ४ ॥ पाकः पृच्छामि मनसाविजानन्देवानामेना निहि
पदानि । वत्से बष्कयेऽधि सप्त तन्तून्वि तत्निरे कवय ओतवा उ ॥ ५ ॥ १४
अचिकित्वाञ्चिकितुषश्चिदत्र कवीन्पृच्छामि विद्मने न विद्वान् । वि यस्तस्तम्
षळिमा रजांस्यजस्य रूपे किमपि स्विदेकम् ॥ ६ ॥ इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदा
वामस्य निहितं पदं वेः । शीर्ष्णः क्षीरं दुह्रते गावो अस्य वव्रिं वसाना उद
पदापुः ॥ ७ ॥ माता पितरमृत आ बभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे । सा बी
त्सुर्गर्भरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकमीयुः ॥ ८ ॥ युक्ता मातासीद्धुरि द
णाया अतिष्ठद्गर्भो वृजनीष्वन्तः । अमीमेद्वत्सो अनु गामपश्यद्विश्वरूप्यं त्रिषु
जनेषु ॥ ९ ॥ तिस्रो मातॄस्त्रीन्पितॄन्बिभ्रदेक ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमव ग्लापयन्ति ।
न्त्रयन्ते दिवो अमुष्य पृष्ठे विश्वविदं वाचमविश्वमिन्वाम् ॥ १० ॥ १५ ॥ द्वा
शारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य । आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र स
शतानि विंशतिश्च तस्थुः ॥ ११ ॥ पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः
अर्धे पुरीषिणम् । अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षळर आहुरर्पितम् ॥१
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना तस्थुर्भुवनानि विश्वा । तस्य नाक्षस्तप्यते
रिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः ॥ १३ ॥ सनेमि चक्रमजरं वि वावृत उत्त
नायां दश युक्ता वहन्ति । सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि वि
॥ १४ ॥ साकञ्जानां सप्तथमाहुरेकजं षळिद्यमा ऋषयो देवजा इति । तेषा
ष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपशः ॥ १५ ॥ १६ ॥ स्त्रि
सतीस्ताँ उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षण्वान्न वि चेतदन्धः । कविर्यः पुत्रः स ई
चिकेत यस्ता विजानात्स पितुष्पितासत् ॥१६ ॥ अवः परेण पर एनावरेण प

सं बिभ्रती गौरुदस्थात् । सा कद्रीची कं स्विदर्धं परागात्क्व स्वित्सूते नहि यूथे
न्तः ॥ १७ ॥ अवः परेण पितरं यो अस्यानुवेद पर एनावरेण । कवीयमानः
इह प्र वोचद्देवं मनः कुतो अधि प्रजातम् ॥ १८ ॥ ये अर्वाञ्चस्ताँ उ पराच
हुर्ये पराञ्चस्ताँ उ अर्वाच आहुः । इन्द्रश्च या चक्रथुः सोम तानि धुरा न युक्ता
सो वहन्ति ॥ १९ ॥ द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते ।
योरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति ॥ २० ॥ १७ ॥ यत्रा सु-
र्णा अमृतस्य भागमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति । इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स
धीरः पाकमत्रा विवेश ॥ २१ ॥ यस्मिन्वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते
धि विश्वे । तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाद्वग्रे तन्नोन्नशद्यः पितरं न वेद ॥२२॥ यद्गा-
त्रे अधि गायत्रमाहितं त्रैष्टुभाद्वा त्रैष्टुभं निरतक्षत । यद्वा जगज्जगत्याहितं पदं य
तद्विदुस्ते अमृतत्वमानशुः ॥२३॥ गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कमर्केण साम त्रैष्टुभेन वा-
म् । वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदाक्षरेण मिमते सप्त वाणीः ॥२४॥ जगता सिन्धुं दि-
स्तभायद्रथन्तरे सूर्यं पर्यपश्यत् । गायत्रस्य समिधस्तिस्र आहुस्ततो मह्ना प्र रिरिचे
हित्वा ॥ २५ ॥१८ ॥ उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम् ।
ष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचम् ॥ २६ ॥ हिङ्कृण्वती
सुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात् । दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्ध-
महते सौभगाय ॥२७॥ गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्ङकृणोन्मातवा उ । सृ-
णं घर्ममभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः ॥२८॥ अयं स शिङ्क्ते येन गौर-
वृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता । सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद्भवन्ती
ते वव्रिमौहत ॥२९॥ अनच्छये तुरगातु जीवमेजद्ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम् । जीवो मृ-
यं चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ॥ ३० ॥ १९ ॥ अपश्यं गोपाम-
पद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् । स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ व-
र्वर्ति भुवनेष्वन्तः ॥ ३१ ॥ य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरु-
न्नु तस्मात् । स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निरृतिमा विवेश ॥ ३२ ॥
र्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम् । उत्तानयोश्चम्वो३र्यो-
रन्तरत्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात् ॥ ३३ ॥ पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृ-
मि यत्र भुवनस्य नाभिः । पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः
मं व्योम ॥ ३४ ॥ इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।
यं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम ॥ ३५ ॥ २० ॥

सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि । ते धीतिभिर्मन
ते विपश्चितः परिभुवः परि भवन्ति विश्वतः ॥ ३६ ॥ न वि जानामि यदिवे
मस्मि निण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि । यदा मागन्प्रथमजा ऋतस्यादिद्वाचो
श्नुवे भागमस्याः ॥ ३७ ॥ अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना स
निः । ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्ता न्यन्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम् ॥ ३८
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः । यस्तन्न वेद कि
करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥ ३९ ॥ सूयवसाद्भगवती हि भूया अ
वयं भगवन्तः स्याम । अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचर
॥ ४० ॥ २१ ॥ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पद
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ॥ ४१ ॥ तस्याः समुद्रा अधि
क्षरन्ति तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्रः[1] । ततः क्षरत्यक्षरं तद्विश्वमुप जीवति[2] ॥४
शकमयं धूममारादपश्यं विषूवता पर एनावरेण[1] । उक्षाणं पृश्निमपचन्त वी
स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्[2] ॥ ४३ ॥ त्रयः केशिन ऋतुथा वि चक्षते स
त्सरे वपत एक एषाम् । विश्वमेको अभि चष्टे शचीभिर्ध्राजिरेकस्य ददृशे न
पम् ॥ ४४ ॥ चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिण
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥ ४५ ॥ इन्द्रं
त्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् । एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्
ग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ ४६ ॥ २२ ॥ कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अ
वसाना दिवमुत्पतन्ति । त आववृत्रन्त्सदनादृतस्यादिद्घृतेन पृथिवी व्युद्यते ॥४
द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत । तस्मिन्त्साकं त्रिशता
शङ्कवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः ॥ ४८ ॥ यस्ते स्तनः शशयो यो मयो
न विश्वा पुष्यसि वार्याणि । यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः सरस्वति तमिह
तवे कः ॥ ४९ ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते
नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ५० ॥ समानमेत
कमुच्चैत्यव चाहभिः । भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः ॥ ५१
दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम् । अभीपतो वृष्टिभिस्त
न्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि ॥ ५२ ॥ २३ ॥ २२ ॥

॥ १६५ ॥ १-१५ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ३,

११, १२, विराट् त्रिष्टुप् । २, ८, ६ त्रिष्टुप् । १३ निचृत् त्रिष्टुप् ६, ७,
, १४, भुरिक् पङ्क्तिः । १५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–५, ८, ६, ११–१३
तः । ६, ७, १०, १४, १५ पञ्चमः ॥

॥ १६५ ॥कया शुभा सर्वयसः सनीलाः समान्या मरुतः सं मिमिक्षुः ।
ा मती कुत एतास एतेऽर्चन्ति शुष्मं वृषणो वसूया ॥ १ ॥ कस्य ब्रह्माणि
षुर्युवानः को अध्वरे मरुत आ ववर्त । श्येनाँ इव ध्रजतो अन्तरिक्षे केन महा
सा रीरमाम ॥ २ ॥ कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था ।
पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्ते अस्मे ॥ ३ ॥ ब्रह्माणि मे
यः शं सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः । आशासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा
वहतस्ता नो अच्छ ॥ ४ ॥ अतो वयमन्तमेभिर्युजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वः१ शु-
मानाः । महोभिरेताँ उप युज्महे न्विन्द्र स्वधामनु हि नो बभूथ ॥ ५ ॥ २४ ॥
स्यावो मरुतः स्वधासीद्यन्मामेकं समधत्ताहिहत्ये । अहं ह्यु१ग्रस्तविषस्तुविष्मा-
श्वस्य शत्रोरनमं वधस्नैः ॥ ६ ॥ भूरि चकर्थ युज्येभिरस्मे समानेभिर्वृषभ
स्येभिः । भूरीणि हि कृणवामा शविष्ठेन्द्र क्रत्वा मरुतो यद्वशाम ॥ ७ ॥ वधीं
मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान् । अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः
ा अपश्चकर वज्रबाहुः ॥ ८ ॥अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता
दानः । न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ॥ ६ ॥
स्य चिन्मे विभ्व१स्त्वोजो या नु दधृष्वान्कृणवै मनीषा । अहं ह्यु१ग्रो मरुतो
दानो यानि च्यवमिन्द्र इदीश एषाम् ॥ १० ॥ २५ ॥ अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो
यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र । इन्द्राय वृष्णे सुमखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे
भिः ॥ ११ ॥ एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः । सञ्च-
ा मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे छदयाथा च नूनम् ॥ १२॥ को न्वत्र मरुतो
महे वः प्र यातन सखीँरच्छा सखायः । मन्मानि चित्रा अपिवातयन्त एषां भूत
दा प्र ऋतानाम् ॥ १३ ॥ आ यद्दुवस्याद्दुवसे न कारुरस्माञ्चक्रे मान्यस्य
ा । ओ षु वर्त्त मरुतो विप्रमच्छेमा ब्रह्माणि जरिता वो अर्चत् ॥ १४॥ एष
स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः । एषा यासीष्ट तन्वे वयां
द्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १५ ॥ २६ ॥ ३॥

॥ १६६ ॥ १–१५ ॥ मैत्रावरुणोऽगस्त्य ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः–

१, २, ८ जगती । ३, ५, ६, १२, १३ निचृज्जगती । ४ विराड् जगत
७, ९, १० भुरिक् त्रिष्टुप् । ११ विराट् त्रिष्टुप् । १४ त्रिष्टुप् । १५ पङ्क्तिः
स्वरः–१–६, ८, १२, १३ निषादः । ७, ९–११, १४ धैवतः । १५ पञ्चम

॥ १६६ ॥ तन्नु वोचाम रभसाय जन्मने पूर्वं महित्वं वृषभस्य केतवे । ऐ
धेव यामन्मरुतस्तुविष्वणो युधेव शक्रास्तविषाणि कर्तन ॥ १ ॥ नित्यं न सूनुं
बिभ्रत उप क्रीळन्ति क्रीळा विदथेषु घृष्वयः । नक्षन्ति रुद्रा अवसा नमस्विन
मर्धन्ति स्वतवसो हविष्कृतम् ॥ २ ॥ यस्मा ऊमासो अमृता अरासत रायस
च हविषा ददाशुषे । उक्षन्त्यस्मै मरुतो हिता इव पुरू रजांसि पयसा मयो
॥ ३ ॥ आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत प्र व एवासः स्वयतासो अध्रजन् ।
न्ते विश्वा भुवनानि हर्म्या चित्रो वो यामः प्रयतास्वृष्टिषु ॥ ४ ॥ यत्त्वेषय
नदयन्त पर्वतान्दिवो वा पृष्ठं नर्या अचुच्यवुः । विश्वो वो अज्मन्भयते वन
तीं रथीयन्तीव प्र जिहीत ओषधिः ॥ ५ ॥ १ ॥ यूयं न उग्रा मरुतः सुचेतुन
ष्टग्रामाः सुमतिं पिपर्तन । यत्रा वो दिद्युद्रदति क्रिविर्दती रिणाति पश्वः सुधि
बर्हणा ॥६ ॥प्र स्कम्भदेष्णा अनवभ्रराधसोऽलातृणासो विदथेषु सुष्टुत
अर्चन्त्यर्कं मदिरस्य पीतये विदुर्वीरस्य प्रथमानि पौंस्या ॥ ७ ॥ शतभु
भिस्तमभिह्रुतेरघात्पूर्भी रक्षता मरुतो यमावत । जनं यमुग्रास्तवसो विरप्शि
पाथना शंसात्तनयस्य पुष्टिषु ॥ ८ ॥ विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो मिथस्पृ
तविषाण्याहिता । अंसेष्वा वः प्रपथेषु खादयोऽक्षो वश्चक्रा समया वि व
॥ ९ ॥ भूरीणि भद्रा नर्येषु बाहुषु वक्षःसु रुक्मा रभसासो अञ्जयः । अंसेष्वे
पविषु क्षुरा अधि वयो न पक्षान्व्यनु श्रियो धिरे ॥ १० ॥ २ ॥ महान्तो
विभ्वो विभूतयो दूरेदृशो ये दिव्या इव स्तृभिः । मन्द्राः सुजिह्वाः स्वरितार
सभिः संमिश्ला इन्द्रे मरुतः परिष्टुभः ॥ ११ ॥ तद्वः सुजाता मरुतो महित
दीर्घं वो दात्रमदितेरिव व्रतम् । इन्द्रश्चन त्यजसा वि ह्रुणाति तज्जनाय
सुकृते अराध्वम् ॥ १२ ॥ तद्वो जामित्वं मरुतः परे युगे पुरू यच्छंसममृतास
वत आया धिया मनवे श्रुष्टिमाव्या साकं नरो दंसनैरा चिकित्रिरे ॥ १३ ॥
दीर्घं मरुतः शूशवाम युष्माकेन परीणसा तुरासः । आ यत्ततनन्वृजने जनास
भिर्यज्ञेभिस्तदभीष्टिमश्याम् ॥ १४ ॥ एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य
न्यस्य कारोः । एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १५ ॥

॥ १६७ ॥ १–११ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो मरुच्च देवता ॥ छन्दः–१, ४,
भुरिक् पङ्क्तिः । ७, ६ स्वराट् पङ्क्तिः । १० निचृत् पङ्क्तिः । ११ पङ्क्तिः । २, ३, ६,
निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, ४, ५, ७, ६–११ पञ्चमः । २, ३, ६, ८ धैवतः ॥

॥ १६७ ॥ सहस्रं त इन्द्रोतयो नः सहस्रमिषो हरिवो गूर्ततमाः । सहस्रं
रायो मादयध्यै सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः ॥ १ ॥ आ नोऽवोभिर्मरुतो या-
न्त्वच्छा ज्येष्ठेभिर्वा बृहद्दिवैः सुमायाः । अध यदेषां नियुतः परमाः समुद्रस्य चि-
द्धनयन्त पारे ॥ २ ॥ मिम्यक्ष येषु सुधिता घृताची हिरण्यनिर्णिगुपरा न ऋष्टिः ।
गुहा चरन्ती मनुषो न योषा सभावती विदथ्येव सं वाक् ॥ ३ ॥ परा शुभ्रा अ-
यासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः । न रोदसी अप नुदन्त घोरा जुषन्त
वृधं सख्याय देवाः ॥ ४ ॥ जोषद्यदीमसुर्या सचध्यै विषितस्तुका रोदसी नृमणाः ।
आ सूर्येव विधतो रथं गात्त्वेषप्रतीका नभसो नेत्या ॥ ५ ॥ ४ ॥ आस्थापय-
न्त युवतिं युवानः शुभे निमिश्लां विदथेषु पज्राम् । अर्को यद्वो मरुतो हविष्मा-
न्गायद्गाथं सुतसोमो दुवस्यन् ॥ ६ ॥ प्र तं विविक्मि वक्म्यो य एषां मरुतां महि-
मा सत्यो अस्ति । सचा यदीं वृषमणा अहंयुः स्थिरा चिज्जनीर्वहते सुभागाः ॥७॥
पान्ति मित्रावरुणाववद्याच्चयत ईमर्यमो अप्रशस्तान् । उत च्यवन्ते अच्युता ध्रुवा-
णि वावृध ईं मरुतो दातिवारः ॥ ८ ॥ नही नु वो मरुतो अन्त्यस्मे आरात्ताच्चि-
च्छवसो अन्तमापुः । ते धृष्णुना शवसा शूशुवांसोऽर्णो न द्वेषो धृषता परि ष्ठुः
॥ ६ ॥ वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा वयं श्वो वोचेमहि समर्ये । वयं पुरा महि च नो अनु
द्यून् तन्न ऋभुक्षा नरामनु ष्यात् ॥१०॥ एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य
मान्यस्य कारोः । एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥११॥५॥

॥ १६८ ॥ १–१० अगस्त्य ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः–१, ४ निचृज्ज-
गती । २, ५ विराट् त्रिष्टुप् । ३ स्वराट् त्रिष्टुप् । ६, ७ भुरिक् त्रिष्टुप् । ८ त्रि-
ष्टुप् । ६ निचृत् त्रिष्टुप् । १० पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ४ निषादः । २, ३, ५–६ धैवतः ।
१० पञ्चमः ॥

॥ १६८ ॥ यज्ञायज्ञा वः समना तुतुर्वणिर्धियंधियं वो देवया उ दधिध्वे ।
आ वोऽर्वाचः सुविताय रोदस्योर्महे ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥ १ ॥ वव्रासो न
ये स्वजाः स्वतवस इषं स्वरभिजायन्त धूतयः । सहस्रियासो अपां नोर्मय आसा
गावो वन्द्यासो नोक्षणः ॥ २ ॥ सोमासो न ये सुतास्तृप्तांशवो हृत्सु पीतासो

दुवसो नासंते। ऐषामंसेषु रम्भिणींव रारभे हस्तेषु खादिश्च कृतिश्च सं दधे॥ ३
अव स्वयुक्ता दिव आ वृथा ययुरमर्त्याः कशंया चोदत त्मनां। अरेणवस्तुविजा
अंचुच्यवुर्दृळ्हानि चिन्मरुतो भ्राजंदृष्टयः ॥ ४ ॥ को वोऽन्तर्मरुत ऋष्टिविद्यु
रेजंति त्मना हन्वेव जिह्वयां। धन्वच्युतं इषां न यामनि पुरुप्रैषा अहन्यो३ नैतं
॥ ५ ॥ ६ ॥ क्व स्विदस्य रजसो महस्परं क्वावरं मरुतो यस्मिन्नायय। यच्च्य
वयंथ विथुरेव संहितं व्यद्रिणा पतथ त्वेषमर्णवम् ॥ ६ ॥ सातिर्न वोऽमंवती स
र्वंती त्वेषा विपाका मरुतः पिपिष्वती। भद्रा वो रातिः पृणतो न दक्षिणा पृ
अयी असुर्येव जञ्जती ॥ ७ ॥ प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः पविभ्यो यदभ्रियां वा
चमुदीरयन्ति। अवं स्मयन्त विद्युतः पृथिव्यां यदी घृतं मरुतः प्रुष्णुवन्ति ॥ ८
असूत पृश्निर्महते रणाय त्वेषमयासां मरुतामनीकम्। ते सप्सरासोऽजनयन्ताभ्व
मादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ॥ ९ ॥ एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य
मान्यस्य कारोः। एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १० ॥ ७

॥ १६९ ॥ १—८ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३
रिक् पङ्क्तिः। २ पङ्क्तिः। ५, ६ स्वराट् पङ्क्तिः। ४ ब्राह्म्युष्णिक्। ७, ८ नि
त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–३, ५, ६ पञ्चमः। ४ ऋषभः। ७, ८ धैवतः ॥

॥ १६९ ॥ महश्चित्त्वमिन्द्र यत एतान्महश्चिदसि त्यजसो वरूता। स
वेधो मरुतां चिकित्वान्त्सुम्ना वनुष्व तव हि प्रेष्ठा ॥ १ ॥ अयुंजन्त इन्द्र वि
कृष्टीर्विदानासो निष्षिधो मर्त्यत्रा। मरुतां पृत्सुतिर्हासमाना स्वर्मीळ्हस्य प्रध
स्य सातौ ॥ २ ॥ अम्यक्सा त इन्द्र ऋष्टिरस्मे सनेम्यभ्वं मरुतो जुनन्ति।
ग्निश्चिद्धि ष्मातसे शुशुकानापो न द्वीपं दधति प्रयांसि ॥ ३ ॥ त्वं तू न इ
तं रयिं दा ओजिष्ठया दक्षिणयेव रातिम्। स्तुतश्च यास्ते चकनन्त वायोः स्त
न मध्वः पीपयन्त वाजैः ॥ ४ ॥ त्वे राय इन्द्र तोशतमाः प्रणेतारः कस्य चि
तायोः। ते षु णो मरुतो मृळयन्तु ये स्मा पुरा गातूयन्तीव देवाः ॥ ५ ॥ ८ ॥ प्र
प्र याहीन्द्र मीळ्हुषो नॄन्महः पार्थिवे सदने यतस्व। अध यदेषां पृथुबुध्नास एत
स्तीर्थे नार्यः पौंस्यानि तस्थुः ॥ ६ ॥ प्रति घोराणामेतानामयासां मरुतां शृण्व
आयतामुपब्दिः। ये मर्त्यं पृतनायन्तमूमैर्ऋणावानं न पतयन्त सर्गैः ॥ ७ ॥
मानेभ्य इन्द्र विश्वजन्या रदा मरुद्भिः शुरुधो गोअग्राः। स्तवानेभिः स्तवसे दे
देवैर्विद्यामेषं वृजनम् जीरदानुम् ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ १७० ॥ १—५ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ स्वराड-
ष्टुप् । २ अनुष्टुप् । ३ विराडनुष्टुप् । ४ निचृदनुष्टुप् । ५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥
वरः—१-४ गान्धारः । ५ पञ्चमः ॥

॥ १७० ॥ न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद्वेद यदद्भुतम् । अन्यस्य चित्तमभि संञ्चरे-
ण्यमुताधीतं वि नश्यति ॥ १ ॥ किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरो मरुतस्तव । तेभिः
कल्पस्व साधुया मा नः समरणे वधीः ॥ २ ॥ किं नो भ्रातरगस्त्य सखा सन्न-
ति मन्यसे । विद्मा हि ते यथा मनोऽस्मभ्यमिन्न दित्ससि ॥ ३ ॥ अरं कृण्वन्तु
वेदिं समग्निमिन्धतां पुरः । तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै ॥ ४ ॥ त्वमी-
शिषे वसुपते वसूनां त्वं मित्राणां मित्रपते धेष्ठः । इन्द्र त्वं मरुद्भिः सं वदस्वाध
प्राशान ऋतुथा हवींषि ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ १७१ ॥ १—६ अगस्त्य ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१, ५
निचृत् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ४, ६ विराट् त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१,
२, ४—६ धैवतः । ३ पञ्चमः ॥

॥ १७१ ॥ प्रति व एना नमसाहमेमि सूक्तेन भिक्षे सुमतिं तुराणाम् ।
रराणता मरुतो वेद्याभिर्नि हेळो धत्त वि मुचध्वमश्वान् ॥ १ ॥ एष वः स्तोमो
मरुतो नमस्वान्हृदा तष्टो मनसा धायि देवाः । उपेमा यात मनसा जुषाणा यूयं
हि ष्ठा नमस इद्वृधासः ॥ २ ॥ स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तूत स्तुतो मघवा शम्भ-
विष्ठः । ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वनान्यहानि विश्वा मरुतो जिगीषा ॥ ३ ॥ अ-
स्मादहं तविषादीषमाण इन्द्राद्भिया मरुतो रेजमानः । युष्मभ्यं हव्या निशिता-
न्यासन्तान्यारे चकृमा मृळता नः ॥ ४ ॥ येन मानासश्चितयन्त उस्रा व्युष्टिषु
शवसा शश्वतीनाम् । स नो मरुद्भिर्वृषभ श्रवो धा उग्र उग्रेभिः स्थविरः सहोदाः
॥ ५ ॥ त्वं पाहीन्द्र सहीयसो नॄन्भवा मरुद्भिरवयातहेळाः । सुप्रकेतेभिः सास-
हिर्दधानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६ ॥ ११ ॥

॥ १७२ ॥ १-३ अगस्त्य ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१ विराड्
गायत्री । २, ३ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १७२ ॥ चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र ऊती सुदानवः । मरुतो अहिभानवः
॥ १ ॥ आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः । आरे अश्मा यमस्यथ ॥ २ ॥
तृणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क्त सुदानवः । ऊर्ध्वान्नः कर्त जीवसे ॥ ३ ॥ १२ ॥

॥ १७३ ॥ १-१३ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ५, १
पङ्क्तिः । ६, ९, १०, १२ भुरिक् पङ्क्तिः । २, ८ विराट् त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप्
७, १३ निचृत् त्रिष्टुप् । ४ बृहती ॥ स्वरः-१, ५, ११, ६, ९, १०, १२ पञ्चमः
२, ८, ३, ७, १३ धैवतः । ४ मध्यमः ॥

॥ १७३ ॥ गाय॒त्साम॑ नभ॒न्यं१॒ यथा॒ वेरर्चा॑म॒ तद्वा॑वृधा॒नं स्व॑र्वत् । गा
धे॒नवो॑ ब॒र्हिष्यद॑ब्धा॒ आ यत्स॒द्मानं॑ दि॒व्यं विवा॑सान् ॥ १ ॥ अर्च॒द्वृषा॒ वृषं॑भिः
स्वेदु॑हव्यैर्मृ॒गो नाश्नो॒ अति॒ यज्जु॑गु॒र्यात् । प्र म॑न्द॒युर्म॒नां गू॑र्त॒ होता॒ भर॑ते॒ मर्यो
मिथु॒ना यज॑त्रः ॥ २ ॥ नक्ष॒द्धोता॒ परि॒ सद्म॑ मि॒ता यन्भर॒द्गर्भ॒मा श॒रदः॑ पृथि॒व्याः
क्रन्द॒दश्वो॒ नय॑मानो रु॒वद्गौर॒न्तर्दू॒तो न रोद॑सी च॒रद्वाक् ॥ ३ ॥ ता क॒र्माष॑तर
स्मै॒ प्र च्यौ॒त्नानि॑ दे॒वय॑न्तो भरन्ते । जुजो॑ष॒दिन्द्रो॑ द॒स्मव॑र्चा॒ नास॑त्येव॒ सुग्म्यो
रथे॒ष्ठाः ॥ ४ ॥ तमु॑ ष्टु॒हीन्द्रं॒ यो ह॒ सत्वा॒ यः शूरो॑ म॒घवा॒ यो र॑थे॒ष्ठाः । प्र॒ती
च॒श्चिद्योधी॑या॒न्वृष॑ण्वान्वव॒व्रुष॑श्चि॒त्तम॑सो॒ विह॒न्ता ॥ ५ ॥ १३ ॥ प्र यदि॒त्था
म॑हि॒ना नृभ्यो॒ अस्त्यरं॒ रोद॑सी क॒क्ष्ये॒३ नास्मै॑ । सं वि॑व्य॒ इन्द्रो॑ वृ॒जनं॒ न भूमा॒ भर्ति॑
स्व॒धावाँ॑ ओप॒शमि॑व॒ द्याम् ॥ ६ ॥ स॒मत्सु॑ त्वा शूर स॒ताम॑ुरा॒णं प्र॑प॒थिन्त॑मं परि
तं॑स॒यध्यै॑ । स॒जोष॑स॒ इन्द्रं॒ मदे॑ क्षो॒णीः सू॒रिं चि॒द्ये अ॑नु॒मद॑न्ति॒ वाजैः॑ ॥ ७
ए॒वा हि ते॒ शं सव॑ना समु॒द्र आपो॒ यत्त॑ आ॒सु मद॑न्ति दे॒वीः । विश्वा॑ ते॒ अ
जोष्या॑ भूद्गौः सू॒रींश्चि॒द्यदि॑ धि॒षा वेषि॒ जना॑न् ॥ ८ ॥ असा॑म॒ यथा॑ सुष॒खा
एन॑ स्वभि॒ष्टयो॑ न॒रां न शंसैः॑ । अस॒द्यथा॑ न॒ इन्द्रो॑ वन्दने॒ष्ठास्तु॒रो न कर्म॒ नय
मान उ॒क्था ॥ ९ ॥ विष्प॑र्धसो न॒रां न शंसै॑र॒स्माका॑स॒दिन्द्रो॒ वज्र॑हस्तः । मि॒त्र
यु॒वो न पूर्प॑तिं॒ सुशि॑ष्टौ मध्या॒युव॒ उप॑ शिक्षन्ति य॒ज्ञैः ॥ १० ॥ १४ ॥ य॒ज्ञो
ष्मेन्द्रं॒ कश्चि॑द्दू॒न्धञ्जु॑हुरा॒णश्चि॒न्मन॑सा परि॒यन् । ती॒र्थे नाच्छा॑ ताततृषा॒णमोक
दी॒र्घो न सि॒ध्रमा कृ॑णो॒त्यध्वा॑ ॥ ११ ॥ मो षू ण॑ इन्द्रा॒त्र पृ॒त्सु दे॒वैरस्ति॒ हि ष्म
ते शुष्मिन्नव॒याः । म॒हश्चि॒द्यस्य॑ मी॒ळ्हुषो॑ य॒व्या ह॒विष्म॑तो म॒रुतो॒ वन्द॑ते॒ गीः ॥ १२
ए॒ष स्तोम॑ इन्द्र॒ तुभ्य॑म॒स्मे ए॒तेन॑ गा॒तुं ह॑रिवो विदो नः । आ नो॑ ववृत्याः
वि॒ताय॑ देव वि॒द्यामे॒षं वृ॒जनं॑ जी॒रदा॑नुम् ॥ १३ ॥ १५ ॥

॥ १७४ ॥ १-१० अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१ निचृत्
पङ्क्तिः । २, ३, ६, ८, १० भुरिक् पङ्क्तिः । ४ स्वराट् पङ्क्तिः । ५, ७, ९ पङ्क्तिः
पञ्चमः स्वरः ॥

॥ १७४ ॥ त्वं राजेन्द्र ये च देवा रक्षा नॄन्पाह्यसुर त्वमस्मान् । त्वं सत्प-
मघवा नस्तरुत्रस्त्वं सत्यो वसवानः सहोदाः ॥ १ ॥ दनो विश इन्द्र मृध्रवाचः
यत्पुरः शर्म शारदीं दर्त् । ऋणोरपो अनवद्यार्णा यूने वृत्रं पुरुकुत्साय र-
ः ॥ २ ॥ अजा वृत इन्द्र शूरपत्नीर्द्यां च येभिः पुरुहूत नूनम् । रक्षो अग्नि-
षं तूर्वयाणं सिंहो न दमे अपांसि वस्तोः॥ ३ ॥ शेषन्नु त इन्द्र सस्मिन्योनौ
स्तये पवीरवस्य मह्ना । सृजदर्णांस्यव यद्युधा गास्तिष्ठद्धरी धृषता मृष्ट वाजान्
४ ॥ वह कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन्त्स्यूमन्यू ऋज्रा वातस्याश्वा । प्र सूरश्चक्रं
तादभीकेऽभि स्पृधो यासिषद्वज्रबाहुः॥ ५ ॥ १६ ॥ जघन्वाँ इन्द्र मित्रेरूञ्चो-
वृद्धो हरिवो अदाशून् । प्र ये पश्यन्नर्यमणं सचायोस्त्वया शूर्ता वहमाना
त्यम् ॥ ६ ॥ रपत्कविरिन्द्रार्कसातौ क्षां दासायोपबर्हणीं कः । करत्तिस्रो म-
दानुचित्रा नि दुर्योणे कुयवाचं मृधि श्रेत् ॥ ७ ॥ सना ता त इन्द्र नव्या
ुः सहो नभोऽविरणायपूर्वीः । भिनत्पुरो न भिदो अदेवीर्ननमो वधरदेवस्य
ोः ॥ ८ ॥ त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः । प्र यत्समु-
ति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति ॥ ९ ॥ त्वमस्माकमिन्द्र विश्वध स्या
कतमो नरां नृपाता । स नो विश्वासां स्पृधां सहोदा विद्यामेषं वृजनं जीर-
ुम् ॥ १० ॥ १७ ॥

॥ १७५ ॥ १–६ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ स्वराडनुष्टुप् ।
विराडनुष्टुप् । ५ अनुष्टुप् । ३ निचृत् त्रिष्टुप् । ६ भुरिक् त्रिष्टुप् । ४ उष्णि-
॥ स्वरः–१, २, ५ गान्धारः । ३, ६ धैवतः । ४ ऋषभः ॥

॥ १७५ ॥ मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः । वृषा ते वृ-
इन्दुर्वाजी सहस्रसातमः ॥ १ ॥ आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः ।
वाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाळमर्त्यः ॥ २ ॥ त्वं हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो
म् । सहावान्दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा ॥ ३ ॥ मुषाय सूर्यं कवे चक्र-
ान ओजसा । वह शुष्णाय वधं कुत्सं वातस्याश्वैः ॥ ४ ॥ शुष्मिन्तमो हि
दो द्युम्निन्तम उत क्रतुः । वृत्रघ्ना वरिवोविदा मंसीष्ठा अश्वसातमः ॥ ५ ॥
पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मयइवापो न तृष्यते बभूथ । तामनु त्वा निविदं
हवीमि विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६ ॥ १८ ॥

॥ १७६ ॥ १–६ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ४ अनुष्टुप्

२ निचृदनुष्टुप् ३। विराडनुष्टुप्। ५ भुरिगुष्णिक्। ६ भुरिक् त्रिष्टुप्॥ स्व
१-४ गान्धारः। ५ ऋषभः। ६ धैवतः॥

॥ १७६ ॥ मत्सि नो वस्यइष्टय इन्द्रमिन्दो वृषा विश। ऋघायमाण इन्व
शत्रुमन्ति न विन्दसि ॥ १ ॥ तस्मिन्ना वेशया गिरो य एकश्चर्षणीनाम्।
नुस्वधा यमुप्यते यवं न चर्कृषद्वृषा ॥ २ ॥ यस्य विश्वानि हस्तयोः पञ्च क्षिती
वसु। स्पाशयस्व यो अस्मध्रुग्दिव्येवाशनिर्जहि ॥ ३ ॥ असुन्वन्तं समं जहि
णाशं यो न ते मयः। अस्मभ्यमस्य वेदनं दद्धि सूरिश्चिदोहते ॥ ४ ॥ अ
यस्य द्विबर्हसोऽर्केषु सानुषगसत्। आजाविन्द्रस्येन्दो प्रावो वाजेषु वाजिनम्।
॥ यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मयइवापो न तृष्यते बभूथ। तामनु त्वा नि
जोहवीमि विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६ ॥ १९ ॥

॥ १७७ ॥ १-५ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, २ नि
त्रिष्टुप्। ३ त्रिष्टुप्। ४ भुरिक् त्रिष्टुप्। ५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः- १-४ धै
तः। ५ पञ्चमः ॥

॥ १७७ ॥ आ चर्षणिप्रा वृषभो जनानां राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्र
स्तुतः श्रवस्यन्नवसोप मद्रिग्युक्त्वा हरी वृषणा याह्यर्वाङ् ॥ १ ॥ ये ते वृष
वृषभास इन्द्र ब्रह्मयुजो वृषरथासो अत्याः। ताँ आ तिष्ठ तेभिरा याह्यर्वाङ् ह
महे त्वा सुत इन्द्र सोमे ॥ २ ॥ आ तिष्ठ रथं वृषणं वृषा ते सुतः सोमः परि
क्ता मधूनि। युक्त्वा वृषभ्यां वृषभ क्षितीनां हरिभ्यां याहि प्रवतोप मद्रिक् ॥
अयं यज्ञो देवया अयं मियेध इमा ब्रह्माण्ययमिन्द्र सोमः। स्तीर्णं बर्हिरा तु
क्र प्र याहि पिबा निषद्य वि मुचा हरी इह ॥ ४ ॥ ओ सुष्टुत इन्द्र याह्यर्वा
ब्रह्माणि मान्यस्य कारोः। विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विद्यामेषं वृजनं जी
दानुम् ॥ ५ ॥ २० ॥

॥ १७८ ॥ १—५ अगस्त्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, २ भु
क् पङ्क्तिः। ३, ४ निचृत् त्रिष्टुप्। ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः- १, २ पञ्चमः
३, ४, ५ धैवतः ॥

॥ १७८ ॥ यद्ध स्या त इन्द्र श्रुष्टिरस्ति यया बभूथ जरितृभ्य ऊती।
नः कामं महयन्तमा धग्विश्वा ते अश्यां पर्याप आयोः ॥ १ ॥ न घा राजेन्द्र

न्त्रो या नु स्वसारा कृणवन्त योनौ। आपश्चिदस्मै सुतुका अवेषन्गमन्न इन्द्रः
ऱ्या वयश्च ॥ २ ॥ जेता नृभिरिन्द्रः पृत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमानस्य कारोः।
र्ता रथं दाशुष उपाक उद्यन्ता गिरो यदि च त्मना भूत् ॥ ३ ॥ एवा नृभि-
न्द्रः सुश्रवस्या प्रखादः पृक्षो अभि मित्रिणो भूत्। समर्य इषः स्तवते विवाचि
ाकरो यजमानस्य शंसः॥ ४ ॥ त्वया वयं मघवन्निन्द्र शत्रूनभि ष्याम महतो
यमानान्। त्वं त्राता त्वमु नो वृधे भूर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ५ ॥ २१॥

॥ १७६ ॥ १–६ लोपामुद्राऽगस्त्यौ ऋषिः॥ दम्पती देवता॥ छन्दः–१, ४
ष्टुप्। २, ३ निचृत् त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप्। ५ निचृद्बृहती॥ स्वरः–१–४, ६
तः। ५ मध्यमः॥

॥ १७६ ॥ पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा दोषा वस्तोरुषसो जरयन्तीः। मिनाति
यं जरिमा तनूनामप्यू नु पत्नीर्वृषणो जगम्युः ॥ १ ॥ ये चिद्धि पूर्व ऋतसाप
सन्त्साकं देवेभिरवदन्नृतानि। ते चिदवासुर्नह्यन्तमापुः समू नु पत्नीर्वृषभिर्ज-
ग्मुः ॥ २ ॥ न मृषा श्रान्तं यदवन्ति देवा विश्वा इत्स्पृधो अभ्यश्नवाव। ज-
येदत्र शतनीथमाजिं यत्सम्यञ्चा मिथुनावभ्यजाव ॥ ३ ॥ नदस्य मा रुधतः
म आगन्नित आजातो अमुतः कुतश्चित्। लोपामुद्रा वृषणं नीरिणाति धीरमधीरा
ति श्वसन्तम् ॥४॥ इमं नु सोममन्तितो हृत्सु पीतमुप ब्रुवे। यत्सीमागश्चकृमा त-
मृळतु पुलुकामो हि मर्त्यः ॥ ५ ॥ अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं ब-
मिच्छमानः। उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम॥६॥ २२॥ २३॥

॥ १८० ॥ १–१० अगस्त्य ऋषिः॥ अश्विनौ देवते॥ छन्दः–१, ४, ७
चृत् त्रिष्टुप्। ३, ५, ६, ८ विराट् त्रिष्टुप्। १० त्रिष्टुप्। २, ६ भुरिक्
ङ्क्तिः॥ स्वरः–१, ३—८, १० धैवतः। २, ६ पञ्चमः॥

॥ १८० ॥ युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद्वां पर्यर्णांसि दीयत्। हि-
ययां वां पवयः प्रुषायन्मध्वः पिबन्ता उषसः सचेथे ॥ १ ॥ युवमत्यस्याव न-
ो यद्विपत्मनो नर्यस्य प्रयज्योः। स्वसा यद्वां विश्वगूर्ती भराति वाजायेट्टे म-
ाविषे च ॥ २ ॥ युवं पय उस्रियायामधत्तं पक्वमामायामव पूर्व्यं गोः। अन्त-
निनो वामृतप्सू ह्वारो न शुचिर्यजते हविष्मान् ॥ ३ ॥ युवं ह घर्मं मधुमन्तम
ऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेषे। तद्वां नरावश्विना पश्वइष्टी रथ्येव चक्रा प्रति य

न्ति मध्वः ॥ ४ ॥ आ वां दानाय ववृतीय दस्रा गोरोहेण तौग्र्यो न जिव्रि
अपः क्षोणी सचते माहिना वां जूर्णो वामक्षुरंहसो यजत्रा ॥ ५ ॥ २३ ॥ नि
युवेथे नियुतः सुदानू उप स्वधाभिः सृजथः पुरंधिम् । प्रेषद्वेषद्वातो न सूरिरा
ददे सुव्रतो न वाजम् ॥ ६ ॥ वयं चिद्धि वां जरितारः सत्या विपन्यामहे वि
णिर्हितावान् । अधा चिद्धि ष्माश्विनावनिन्द्या पाथो हि ष्मा वृषणावन्तिदे
॥ ७ ॥ युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु द्यून्विरुद्रस्य प्रस्रवणस्य सातौ अगस्त्यो नरां
प्रशस्तः काराधुनीव चितयत्सहस्रैः ॥ ८ ॥ प्र यद्वहेथे महिना रथस्य प्र स्य
याथो मनुषो न होता । धत्तं सूरिभ्य उत वा स्वश्व्यं नासत्या रयिषाचः स्याम ॥
तं वां रथं वयमद्या हुवेम स्तोमैरश्विना सुविताय नव्यं । अरिष्टनेमिं परि द्या
यानं विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १० ॥ २४ ॥

॥ १८१ ॥ १–९ अगस्त्य ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ३ वि
त्रिष्टुप् । २, ४, ६, ७, ८, ९ निचृत् त्रिष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः

॥ १८१ ॥ कदु प्रेष्ठाविषां रयीणामध्वर्यन्ता यदुन्निनीथो अपाम् । अयं
यज्ञो अकृत प्रशस्तिं वसुधिती अवितारा जनानाम् ॥ १ ॥ आ वामश्वासः
यः पयस्पा वातरंहसो दिव्यासो अत्याः । मनोजुवो वृषणो वीतपृष्ठा एह स्वर
अश्विना वहन्तु ॥ २ ॥ आ वां रथोऽवनिर्न प्रवत्वान्त्सृप्रवन्धुरः सुविताय गम्य
वृष्णः स्थातारा मनसो जवीयानहम्पूर्वो यजतो धिष्ण्या यः ॥ ३ ॥ इहेह ज
समेवावशीतामरेपसा तन्वा३नामभिः स्वैः । जिष्णुर्वामन्यः सुमखस्य सूरि
अन्यः सुभगः पुत्र ऊहे ॥ ४ ॥ प्र वां निचेरुः ककुहो वशाँ अनु पिशङ्गरूप
दनानि गम्याः । हरी अन्यस्य पीपयन्त वाजैर्मथ्ना रजांस्यश्विना वि घोषैः
॥ २५ ॥ प्र वाँ शरद्वान्वृषभो न निष्षाट् पूर्वीरिषश्चरति मध्व इष्णन् । ए
न्यस्य पीपयन्त वाजैर्वेषन्तीरूर्ध्वा नद्यो न आगुः ॥ ६ ॥ असर्जि वां स्थ
वेधसा गीर्बाळ्हे अश्विना त्रेधा क्षरन्ती । उपस्तुतावतं नाधमानं यामन्नयाम
णुतं हवं मे ॥ ७ ॥ उत स्या वां रुशतो वप्ससो गीस्त्रिबर्हिषि सदसि पिन्वते
वृषा वां मेघो वृषणा पीपाय गोर्न सेके मनुषो दशस्यन् ॥ ८ ॥ युवां पूषेवा
ना पुरंधिरग्निमुषां न जरते हविष्मान् । हुवे यद्वां वरिवस्या गृणानो विद्या
वृजनं जीरदानुम् ॥ ९ ॥ २६ ॥

॥ १८२ ॥ १–८ अगस्त्य ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ५

ुज्जगती । ३ जगती । ४ विराड् जगती । २ स्वराड् त्रिष्टुप् । ६, ८ स्वरा-
ङ्क्तिः ॥ स्वरः-१, ३-५, ७ निषादः । २, ६, ८ पञ्चमः ॥

॥ १८२ ॥ अभूँदिदं वयुनमो षु भूँषता रथो वृषँण्वान्मदँता मनीषिणः ।
ञ्जिन्वा धिष्ण्यां विश्पलावसू दिवो नपाता सुकृते शुचिव्रता ॥ १ ॥ इन्द्र-
हि धिष्ण्या मरुत्तमा दस्रा दंसिष्ठा रथ्या रथीतमा । पूर्णं रथं वहेथे मध्व
चितं तेनं दाश्वांसमुप याथो अश्विना ॥ २ ॥ किमत्र दस्रा कृणुथः किमासा-
नो यः कश्चिदहविर्महीयते । अति क्रमिष्टं जुरतं पणेरसुं ज्योतिर्विप्राय कृ-
वचस्यवे ॥ ३ ॥ जम्भयंतमभितो रायतः शुनो हतं मृधो विदथुस्तान्यश्विना ।
वाचं जरितू रत्निनीं कृतमुभा शंसं नासत्यावतं मम ॥ ४ ॥ युवमेतं चक्रथुः
धुषु प्लवमात्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्र्याय कम् । येनं देवत्रा मनसा निरूहथुः सुप-
पेतथुः क्षोदसो महः ॥ ५ ॥ २७ ॥ अवविद्धं तौग्र्यमप्स्व१न्तरनारम्भणे
मे प्रविद्धम् । चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा उदश्विभ्यामिषिताः पारयन्ति
॥ कः स्विद्वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्र्यो नाधितः पर्यषस्वजत् ।
मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ॥ ७ ॥ तद्वां नरा
त्यावनु ष्याद्यद्वां मानास उचथमवोचन् । अस्मादद्य सदसः सोम्यादा वि-
षं वृजनं जीरदानुम् ॥ ८ ॥ २८ ॥

॥ १८३ ॥ १-६ अगस्त्य ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः-१, ४, ६
ुप् । २, ३ निचृत् त्रिष्टुप् । ५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-४, ६ धैवतः ।
ञ्चमः ॥

॥ १८३ ॥ तं युञ्जाथां मनसो यो जवीयान् त्रिबन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः ।
पयाथः सुकृतो दुरोणं त्रिधातुना पतथो विर्न पर्णैः ॥ १ ॥ सुवृद्रथो वर्तते
भि क्षां यत्तिष्ठथः क्रतुमन्तानु पृक्षे । वपुर्वपुष्या सचतामियं गीर्दिवो दुहित्रो-
सचेथे ॥ २ ॥ आ तिष्ठतं सुवृतं यो रथो वामनु व्रतानि वर्तते हविष्मान् ।
नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ॥ ३ ॥ मा वां वृको मा वृ-
दधर्षीन्मा परि वर्क्तमुत माति धक्तम् । अयं वां भागो निहित इयं गीर्दस्रा-
वां निधयो मधूनाम् ॥ ४ ॥ युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रिर्दस्रा हवतेऽवसे
ष्मान् । दिशं न दिष्टामृजूयेव यन्ता मे हवं नासत्योप यातम् ॥ ५ ॥ अता-

रिष्म तमसस्पारमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि। एह यातं पथिभिर्दे
नैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६ ॥ २९ ॥ ४ ॥

॥ १८४ ॥ १–६ अगस्त्य ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१ पङ्क्ति
भुरिक् पङ्क्तिः। ५, ६ निचृत् पङ्क्तिः। २, ३ विराट् त्रिष्टुप्॥ स्वरः–१, ४, ५,
ञ्चमः। २, ३ धैवतः ॥

॥ १८४ ॥ ता वामद्य तावपरं हुवेमोच्छन्त्यामुषसि वह्निरुक्थैः। नासत्या
चित्सन्तावर्यो दिवो नपाता सुदास्तराय ॥ १ ॥ अस्मे ऊ षु वृषणा मादये
त्पणींर्हतमूर्म्या मदन्ता। श्रुतं मे अच्छोक्तिभिर्मतीनामेष्टा नरा निचेतारा च
॥ २ ॥ श्रिये पूषन्निषुकृतेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः। वच्यन्ते वां क
अप्सु जाता युगा जूर्णेव वरुणस्य भूरेः ॥ ३ ॥ अस्मे सा वां माध्वी राति
स्तोमं हिनोतं मान्यस्य कारोः। अनु यद्वां श्रवस्या सुदानू सुवीर्याय चर्षणयो
दन्ति ॥ ४ ॥ एष वां स्तोमो अश्विनावकारि मानेभिर्मघवाना सुवृक्ति। या
र्तिस्तनयाय त्मने चागस्त्ये नासत्या मदन्ता ॥ ५ ॥ अतारिष्म तमसस्पार
प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि। एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जी
नुम् ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ १८५ ॥ १–११ अगस्त्य ऋषिः ॥ द्यावापृथिव्यौ देवते ॥ छन्दः–
६, ७, ८, १०, ११ त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ४, ५, ९ निचृत् त्रि
धैवतः स्वरः ॥

॥ १८५ ॥ कतरा पूर्वा कतरापरायोः कथा जाते कवयः को वि वेद।
त्मना बिभृतो यद्ध नाम वि वर्तेते अहनी चक्रियेव ॥ १ ॥ भूरिं द्वे अचरन्ती
रन्तं पद्वन्तं गर्भमपदी दधाते। नित्यं न सूनुं पित्रोरुपस्थे द्यावा रक्षतं पृथि
अभ्वात् ॥ २ ॥ अनेहो दात्रमदितेरनर्वं हुवे स्वर्वदवधं नमस्वत्। तद्रोदसी ज
जरित्रे द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥३॥ अतप्यमाने अवसावन्ती अनु
रोदसी देवपुत्रे। उभे देवानामुभयेभिरह्नां द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥
सङ्गच्छमाने युवती समन्ते स्वसारा जामी पित्रोरुपस्थे। अभिजिघ्रन्ती भुवनस्य
द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ५ ॥ २ ॥ उर्वी सद्मनी बृहती ऋतेन हु
वानामवसा जनित्री। दधाते ये अमृतं सुप्रतीके द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अ

॥ उर्वी पृथ्वी बहुले दूरेअन्ते उप ब्रुवे नमसा यज्ञे अस्मिन् । दधाते ये सुभगे
तूर्ती द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ७ ॥ देवान्वा यच्चकृमा कच्चिदागः
यं वा सदमिज्जास्पतिं वा । इयं धीर्भूया अवयानमेषां द्यावा रक्षतं पृथिवी
अभ्वात् ॥ ८ ॥ उभा शंसा नर्या मामविष्टामुभे मामूती अवसा सचेताम् । भूरि
र्यः सुदास्तरायेषा मदन्त इषयेम देवाः ॥ ९ ॥ ऋतं दिवे तदवोचं पृथिव्या
अश्रावाय प्रथमं सुमेधाः । पातामवद्याद्दुरिताद्भीके पिता माता च रक्षतामवोभिः
० ॥ इदं द्यावापृथिवी सत्यमस्तु पितर्मातर्यदिहोपब्रुवे वाम् । भूतं देवानामवमे
भिर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ११ ॥ ३ ॥

॥ १८६ ॥ १–११ अगस्त्य ऋषिः ॥ विश्वेदेवा देवता ॥ छन्दः–१, ८,
त्रिष्टुप् । २, ४ निचृत् त्रिष्टुप् । ११ भुरिक् त्रिष्टुप् । ३, ५, ७ भुरिक् प-
। ६ पङ्क्तिः । १० स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, २, ४, ८, ९, ११ धैवतः ।
५, ७, ६, १० पञ्चमः ॥

॥ १८६ ॥ आ न इळाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु । अ-
यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ॥१॥ आ नो विश्व आ-
गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः । भुवन्यथा नो विश्वे वृधासः क-
षाहा विथुरं न शवः ॥ २ ॥ प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषेऽग्निं शस्तिभिस्तुर्वणिः
षाः । असद्यथा नो वरुणः सुकीर्तिरिषश्च पर्षदरिगूर्तः सूरिः ॥ ३ ॥ उप
ष नमसा जिगीषोषासानक्ता सुदुघेव धेनुः । समाने अहन्विमिमानो अर्कं
रूपे पयसि सस्मिन्नूधन् ॥ ४ ॥ उत नोऽहिर्बुध्न्यो३ मयस्कः शिशुं न पिप्युषी-
ति सिन्धुः । येन नपातमपां जुनाम मनोजुवो वृषणो यं वहन्ति ॥ ५ ॥
॥ उत न ईं त्वष्टा गन्त्वच्छा स्मत्सूरिभिरभिपित्वे सजोषाः । आ वृत्रहेन्द्र-
णिप्रास्तुविष्टमो नरां न इह गम्याः ॥ ६ ॥ उत न ईं मतयोऽश्वयोगाः शि-
गावस्तरुणं रिहन्ति । तमीं गिरो जनयो न पत्नीः सुरभिष्टमं नरां नसन्त
॥ उत न ईं मरुतो वृद्धसेनाः स्मद्रोदसी समनसः सदन्तु । पृषदश्वासोऽ-
ी न रथा रिशादसो मित्रयुजो न देवाः ॥ ८ ॥ प्र नु यदेषां महिना चिकित्रे
ञ्जते प्रयुजस्ते सुवृक्ति । अध यदेषां सुदिने न शरुर्विश्वमेरिणं प्रुषायन्त सेनाः
॥ प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं प्र पूषणं स्वतवसो हि सन्ति । अद्वेषो विष्णु-
ऋभुक्षा अच्छा सुम्नाय ववृतीय देवान् ॥ १० ॥ इयं सा वो अस्मे दीधि-

तिर्यजत्रा अपिशाणीं च सदनी च भूयाः । नि या देवेषु यतते वसूयुर्विध
वृजनं जीरदानुम् ॥ ११ ॥ ५ ॥

॥ १८७ ॥ १–११ अगस्त्य ऋषिः ॥ ओषधयो देवता ॥ छन्दः–१
ष्णिक् । ६, ७ भुरिगुष्णिक् । २, ८ निचृद् गायत्री । ४ विराड् गायत्री ।
१० गायत्री च । ३, ५ निचृदनुष्टुप् । ११ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः–१, ६, ७
षभः । २, ८, ४, ६, १० षड्जः । ३, ५, ११ गान्धारः ॥

॥ १८७ ॥ पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् । यस्य त्रितो व्यो
वृत्रम् । विपर्वमर्दयत् ॥१॥ स्वादो पितो मधो पितो वयं त्वा ववृमहे । अस्मा
विता भव ॥२॥ उप नः पितवा चर शिवः शिवाभिरूतिभिः । मयोभुरद्विषे
सखा सुशेवो अद्वयाः ॥ ३ ॥ तव त्ये पितो रसा रजांस्यनु विष्ठिताः । दिवि
ता इव श्रिताः ॥ ४ ॥ तव त्ये पितो ददतस्तव स्वादिष्ठ ते पितो । प्र स्वाद्म
रसानां तुविग्रीवा इवेरते ॥ ५ ॥ ६ ॥ त्वे पितो महानां देवानां मनो हित
अकारि चारु केतुना तवाहिमवसावधीत् ॥ ६ ॥ यददो पितो अजगन्विवस्व
तानाम् । अत्रा चिन्नो मधो पितोऽरं भक्षाय गम्याः ॥ ७ ॥ यददामोषध
परिंशमारिशामहे । वातापे पीव इद्भव ॥ ८ ॥ यत्ते सोम गवाशिरो य
शिरो भजामहे । वातापे पीव इद्भव ॥ ९ ॥ करम्भ ओषधे भव पीवो वृक्क
दारथिः । वातापे पीव इद्भव ॥ १० ॥ तं त्वा वयं पितो वचोभिर्गावो न ह
सुषूदिम । देवेभ्यस्त्वा सधमादमस्मभ्यं त्वा सधमादम् ॥ ११ ॥ ७ ॥

॥ १८८ ॥ १–११ अगस्त्य ऋषिः ॥ आप्रियो देवता ॥ छन्दः–१, ३
६, ७, १० निचृद्गायत्री । २, ४, ८, ९, ११ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १८८ ॥ समिद्धो अद्य राजसि देवो देवैः सहस्रजित् । दूतो हव्या
विवह ॥ १ ॥ तनूनपादृतं यते मध्वा यज्ञः समज्यते । दधत्सहस्रिणीरिषः ॥
आजुह्वानो न ईड्यो देवाँ आ वक्षि यज्ञियान् । अग्ने सहस्रसा असि ॥३॥ प्रा
बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन् । यत्रादित्या विराजथ ॥४॥ विराट् सम्राड्वि
प्रभ्वीर्बह्वीश्च भूयसीश्च याः । दुरो घृतान्यक्षरन् ॥ ५ ॥ ८ ॥ सुरुक्मे हि
पेशसाधि श्रिया विराजतः । उषासावेह सीदताम् ॥ ६ ॥ प्रथमा हि सुवा
होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमम् ॥ ७ ॥ भारतीळे सरस्वति या

र्वी उपब्रुवे । ता नश्चोदयत श्रिये ॥ ८ ॥ त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः पशून्विश्वा-
समानजे । तेषां नः स्फातिमा यज ॥ ९ ॥ उप त्मन्या वनस्पते पाथो देवेभ्यः
ज । अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् ॥ १० ॥ पुरोगा अग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते ।
ाहाकृतीषु रोचते ॥ ११ ॥ ९ ॥

॥ १८९ ॥ १–८ अगस्त्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ४, ८ नि-
त् त्रिष्टुप् । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ३, ५, ६, स्वराट् पङ्क्तिः । ७ पङ्क्तिः ॥
वरः–१, ४, ८ धैवतः । २, ३, ५–७ पञ्चमः ॥

॥ १८९ ॥ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
योध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम ॥ १ ॥ अग्ने त्वं पारया
व्यो अस्मान्त्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा । पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तो-
ाय तनयाय शं योः ॥ २ ॥ अग्ने त्वमस्मद्युयोध्यमीवा अनग्नित्रा अभ्यमन्त
ष्टीः । पुनरस्मभ्यं सुवितायं देव क्षां विश्वेभिरमृतेभिर्यजत्र ॥ ३ ॥ पाहि नो
ग्ने पायुभिरजस्रैरुत प्रिये सदन आ शुशुक्वान् । मा ते भयं जरितारं यविष्ठ
नं विदन्मापरं सहस्वः ॥ ४ ॥ मा नो अग्नेऽव सृजो अघायाविष्यवे रिपवे दु-
छुनायै । मा दत्वते दशते मादते नो मा रीषते सहसावन्परा दाः ॥ ५ ॥
० ॥ वि घ त्वावाँ ऋतजात यंसद्गृणानो अग्ने तन्वे वरूथम् । विश्वाद्रिरिक्षो-
त वा निनित्सोरभिह्रुतामसि हि देव विष्पट् ॥ ६ ॥ त्वं ताँ अग्न उभयान्वि
द्वान्वेषि प्रपित्वे मनुषो यजत्र । अभिपित्वे मनवे शास्यो भूर्मर्मृजेन्य उशिग्भि-
क्रः ॥ ७ ॥ अवोचाम निवचनान्यस्मिन्मानस्य सूनुः सहसाने अग्नौ । वयं
हस्रमृषिभिः सनेम विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ८ ॥ ११ ॥

॥ १९० ॥ १–८ अगस्त्य ऋषिः ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ३
चृत् त्रिष्टुप् । ४, ८ त्रिष्टुप् । ५, ६, ७ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १९० ॥ अनर्वाणं वृषभं मन्द्रजिह्वं बृहस्पतिं वर्धया नव्यमर्कैः । गाथान्यः
रुचो यस्य देवा आशृण्वन्ति नवमानस्य मर्ताः ॥ १ ॥ तमृत्विया उप वाचः
चन्ते सर्गो न यो देवयतामसर्जि । बृहस्पतिः स ह्यञ्जो वरांसि विभ्वाभवत्स-
ते मातरिश्वा ॥ २ ॥ उपस्तुतिं नमस उद्यतिं च श्लोकं यंसत्सवितेव प्र बाहू ।
स्य क्रत्वाहन्यो यो अस्ति मृगो न भीमो अरक्षसस्तुविष्मान् ॥ ३ ॥ अस्य

श्लोको द्विवीयते पृथिव्यामत्यो न यंसद्यक्षभृद्विचेताः । मृगाणां न हेतयो यन्ति
चेमा बृहस्पतेराहिमायाँ अभिद्यून् ॥ ४॥ ये त्वा देवोस्रिकं मन्यमानाः पापा भद्र
मुपजीवंति पज्राः । न दूढ्ये३अनु ददासि वामं बृहस्पते चयस इत्पियारुम् ॥ ५॥
१२ ॥ सुप्रैतुः सूयवसो न पन्था दुर्नियन्तुः परिप्रीतो न मित्रः । अनर्वाणो अभि
ये चक्षते नोऽपीवृता अपोर्णुवन्तो अस्थुः ॥ ६ ॥ सं यं स्तुभोऽवनयो न यन्ति
समुद्रं न स्रवतो रोधचक्राः । स विद्वाँ उभयं चष्टे अन्तर्बृहस्पतिस्तर आपश्च गृ
ध्रः ॥ ७ ॥ एवा महस्तुविजातस्तुविष्मान्बृहस्पतिर्वृषभो धायि देवः । स नः
स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ८ ॥ १३ ॥

॥ १६१ ॥ १-१६ अगस्त्य ऋषिः ॥ अबोषधि सूर्या देवता ॥ छन्दः—
उष्णिक् । २ भुरिगुष्णिक् । ३, ७ स्वराडुष्णिक् । १३ विराडुष्णिक् । ४, ६
१४ विराडनुष्टुप् । ५, ८, १५ निचृदनुष्टुप् ६ अनुष्टुप् । १०, ११ निचृत् ब्राह्म्य
नुष्टुप् । १२ विराड् ब्राह्म्यनुष्टुप् । १६ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—३, ७, १
ऋषभः । ४—६, ८—१२, १४—१६ गान्धारः ॥

॥ १६१ ॥ कङ्कतो न कङ्कतोऽथो सतीनकङ्कतः । द्वाविति प्लुषी इति न्य
दृष्टा अलिप्सत ॥ १ ॥ अदृष्टान्हन्त्यायत्यथो हन्ति परायती । अथो अवघ्न
हन्त्यथो पिनष्टि पिंषती ॥ २ ॥ शरासः कुशरासो दर्भासः सैर्या उत । मौञ्ज
अदृष्टा वैरिणाः सर्वे साकं न्यलिप्सत ॥ ३ ॥ नि गावो गोष्ठे असदन्नि मृगास
अविक्षत । नि केतवो जनानां न्य१दृष्टा अलिप्सत ॥ ४ ॥ एत उ त्ये प्रत्यदृश्र
न्प्रदोषं तस्करा इव । अदृष्टा विश्वदृष्टाः प्रतिबुद्धा अभूतन ॥ ५ ॥ १४ ॥ द्यौ
पिता पृथिवी माता सोमो भ्रातादितिः स्वसा । अदृष्टा विश्वदृष्टास्तिष्ठतेळय
सु कम् ॥ ६ ॥ ये अंस्या ये अङ्ग्याः सूचीका ये प्रकङ्कताः । अदृष्टाः
चनेह वः सर्वे साकं नि जस्यत ॥ ७ ॥ उत्पुरस्तात्सूर्य एति विश्वदृष्टो अ
ष्टहा । अदृष्टान्त्सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः ॥ ८ ॥ उदपप्तदसौ सूर्यः
विश्वानि जूर्वन् । आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा ॥ ९ ॥ सूर्ये विष
संजामि दृतिं सुरावतो गृहे । सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामारे अस्य योज
हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ॥ १० ॥ १५ ॥ इयत्तिका शकुन्तिका सका
घास ते विषम् । सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामारे अस्य योजनं हरिष्ठा
त्वा मधुला चकार ॥ ११ ॥ त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका विषस्य पुष्यमक्षन् ।

त्रु न मरन्ति नो वयं मरामारे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार
१२ ॥ नवानां नवतीनां विषस्य रोपुषीणाम् । सर्वासामग्रभं नामारे अस्य
जनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ॥ १३ ॥ त्रिः सप्त मयूर्यः सप्त स्वसारो
ग्रुवः । तास्ते विषं वि जभ्रिर उदकं कुम्भिनीरिव ॥ १४ ॥ इयत्तकः कुषुम्भ-
स्तकं भिनद्म्यश्मना । ततो विषं प्र वावृते पराचीरनु संवतः ॥ १५ ॥ कुषुम्भ-
स्तदब्रवीद्गिरेः प्रवर्तमानकः । वृश्चिकस्यारसं विषमरसं वृश्चिक ते विषम् ॥ १६ ॥
६ ॥ २४ ॥ १ ॥

॥ इति प्रथमं मण्डलं समाप्तम् ॥

---

ओ३म्

# अथ द्वितीयं मण्डलम्

॥ १ ॥ १—१६ आङ्गिरसः शौनहोत्रो भार्गवो गृत्समद ऋषिः ॥ अग्नि
देवता ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः । ६ भुरिक् पङ्क्तिः । १३ स्वराट् पङ्क्तिः । २, १५ वि
राड् जगती । १६ निचृज्जगती । ३, ५, ८, १० निचृत् त्रिष्टुप् । ४, ६, ११
१२, १४ भुरिक् त्रिष्टुप् । ७ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—२-८, १०-१२, १४
१६ धैवतः । १, ६, १३ पञ्चमः ॥

॥ १ ॥ त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमश्मनस्परि । त्वं व
भ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः ॥ १ ॥ तवाग्ने होत्रं तव पो
मृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः । तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चा
गृहपतिश्च नो दमे ॥ २ ॥ त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुरुगायो
मस्यः । त्वं ब्रह्मा रयिविद्ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरन्ध्या ॥ ३ ॥ त्वमग्ने रा
वरुणो धृतव्रतस्त्वं मित्रो भवसि दस्म ईड्यः । त्वमर्यमा सत्पतिर्यस्य सम्भुजं त्वमं
विदथे देव भाजयुः ॥ ४ ॥ त्वमग्ने त्वष्टा विधते सुवीर्यं तव ग्नावो मित्रमहः स
जात्यम् । त्वमाशुहेमा ररिषे स्वश्व्यं त्वं नरां शर्धो असि पुरूवसुः ॥ ५ ॥ १७
त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे । त्वं वातैररुणैर्या
शङ्गयस्त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मना ॥ ६ ॥ त्वमग्ने द्रविणोदा अरङ्कृ
त्वं देवः सविता रत्नधा असि । त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस्ते
विधत् ॥ ७ ॥ त्वामग्ने दम आ विश्पतिं विशस्त्वां राजानं सुविदत्रमृञ्जते
त्वं विश्वानि स्वनीक पत्यसे त्वं सहस्राणि शता दश प्रति ॥ ८ ॥ त्वाम
पितरमिष्टिभिर्नरस्त्वां भ्रात्राय शम्या तनूरुचम् । त्वं पुत्रो भवसि यस्तेऽविधत्त
सखा सुशेवः पास्याधृषः ॥९॥ त्वमग्न ऋभुराके नमस्यस्त्वं वाजस्य क्षुमतो रा
ईशिषे । त्वं वि भास्यनु दक्षि दावने त्वं विशिक्षुरसि यज्ञमातनिः ॥ १० ॥ १८

ग्ने अदितिर्देव दाशुषे त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा । त्वमळा शतहिमासि
से त्वं वृत्रहा वसुपते सरस्वती ॥ ११ ॥ त्वमग्ने सुभृत उत्तमं वयस्तव स्पार्हे
आ सन्दृशि श्रियः । त्वं वाजः प्रतरणो बृहन्नसि त्वं रयिर्बहुलो विश्वतस्पृथुः
१२ ॥ त्वामग्न आदित्यास आस्यं त्वां जिह्वां शुचयश्चक्रिरे कवे । त्वां राति-
वो अध्वरेषु सश्चिरे त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ॥ १३ ॥ त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो
हं आसा देवा हविरदन्त्याहुतम् । त्वया मर्तासः स्वदन्त आसुतिं त्वं गर्भो
धां जज्ञिषे शुचिः ॥ १४ ॥ त्वं तान्त्सं च प्रति चासि मज्मनाग्ने सुजात प्र च
रिच्यसे । पृक्षो यदत्र महिना वि ते भुवदनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे ॥ १५ ॥
स्तोतृभ्यो गोअग्रामश्वपेशसमग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः । अस्माञ्च तांश्च प्र
नेषि वस्य आ बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १६ ॥ १९ ॥

॥ २ ॥ १–१३ गृत्समद ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ७, १२
ाद् जगती । ४ जगती । ५, ६, ९, १३ निचृज्जगती । ३, ८, १०, ११ भु-
् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः– १, २, ४–७, ९, १२, १३ निषादः । ३, ८, १०, ११
तः ॥

॥ २ ॥ यज्ञेन वर्धत जातवेदसमग्निं यजध्वं हविषा तना गिरा । समिधानं सु-
सं स्वर्णरं द्युक्षं होतारं वृजनेषु धूर्षदम् ॥ १ ॥ अभि त्वा नक्तीरुषसो ववाशि-
वत्सं न स्वसरेषु धेनवः । दिव इवेदरतिर्मानुषा युगा क्षपो भासि पुरुवार
तः ॥ २ ॥ तं देवा बुध्ने रजसः सुदंससं दिवस्पृथिव्योररतिं न्येरिरे । रथमिव
शुक्रशोचिषमग्निं मित्रं न क्षितिषु प्रशंस्यम् ॥ ३ ॥ तमुक्षमाणं रजसि स्व आ
चन्द्रमिव सुरुचं ह्वार आ दधुः । पृश्न्याः पतरं चितयन्तमक्षभिः पाथो न
जनसी उभे अनु ॥ ४ ॥ स होता विश्वं परि भूत्वध्वरं तमु हव्यैर्मनुष ऋ-
ते गिरा । हिरिशिप्रो वृधसानासु जर्भुरद्द्यौर्न स्तृभिश्चितयद्रोदसी अनु ॥ ५ ॥
॥ स नो रेवत्समिधानः स्वस्तये सन्ददस्वान्रयिमस्मासु दीदिहि । आ नः कृ-
व सुविताय रोदसी अग्ने हव्या मनुषो देव वीतये ॥ ६ ॥ दा नो अग्ने बृहतो
सहस्रिणो दुरो न वाजं श्रुत्या अपा वृधि । प्राची द्यावापृथिवी ब्रह्मणा कृधि
र्ण शुक्रमुषसो वि दिद्युतः ॥ ७ ॥ स इधान उषसो राम्या अनु स्वर्ण दी-
रुषेण भानुना । होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो राजा विशामतिथिश्चारुरायवे
॥ एवा नो अग्ने अमृतेषु पूर्व्य धीष्पीपाय बृहद्दिवेषु मानुषा । दुहाना धेनु-

वृजनेषु कारवे त्मना शतिनं पुरुरूपमिषणि ॥ ९ ॥ वयमग्ने अर्वता वा सुवीर्यं
ह्मणा वा चितयेमा जनाँ अति । अस्माकं द्युम्नमधि पञ्च कृष्टिषूच्चा स्वर्ण शु
चीत दुष्टरम् ॥ १० ॥ स नो बोधि सहस्य प्रशंस्यो यस्मिन्त्सुजाता इषयन्त
रयः । यमग्ने यज्ञमुपयन्ति वाजिनो नित्ये तोके दीदिवांसं स्वे दमे ॥ ११ ॥
भयासो जातवेदः स्याम ते स्तोतारो अग्ने सूरयश्च शर्मणि । वस्वो रायः
श्चन्द्रस्य भूयसः प्रजावतः स्वपत्यस्य शग्धि नः ॥ १२ ॥ यो स्तोतृभ्यो गोअ
श्वपेशसमग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः । अस्माञ्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ बृ
देम विदथे सुवीराः ॥ १३ ॥ २१ ॥

॥ ३ ॥ १–११ गृत्समद ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २ विराट्
ष्टुप् । ३, ५, ६ भुरिक् त्रिष्टुप् । ४, ९, ११ निचृत् त्रिष्टुप् । ८, १० त्रिष्टुप्
जगती ॥ स्वरः—१–६, ८–११ धैवतः । ७ निषादः ॥

॥ ३ ॥ समिद्धो अग्निर्निहितः पृथिव्यां प्रत्यङ् विश्वानि भुवनान्यस्थात् । हो
पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो देवान्यजत्वग्निरर्हन् ॥ १ ॥ नराशंसः प्रति धा
न्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः । घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्मूर्धन्यज्ञस्य
मनक्तु देवान् ॥ २ ॥ ईळितो अग्ने मनसा नो अर्हन्देवान्यक्षि मानुषात्पूर्वो अ
स आ वह मरुतां शर्धो अच्युतमिन्द्रं नरो बर्हिषदं यजध्वम् ॥ ३ ॥ देव ब
र्धमानं सुवीरं स्तीर्णं राये सुभरं वेद्यस्याम् । घृतेनाक्तं वसवः सीदतेदं विश्वे देवा आ
दित्या यज्ञियासः ॥ ४ ॥ वि श्रयन्तामुर्विया हूयमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा नमोभि
व्यचस्वतीर्वि प्रथन्तामजुर्या वर्णं पुनाना यशसं सुवीरम् ॥ ५ ॥ २२ ॥ साध्वपां
सनता न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते । तन्तुं ततं संवयन्ती समीची
ज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती ॥ ६ ॥ दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर ऋजु यक्ष
समृचा वपुष्टरा । देवान्यजन्तावृतुथा समञ्जतो नाभा पृथिव्या अधि सानुषु
॥ ७ ॥ सरस्वती साधयन्ती धियं न इळा देवी भारती विश्वतूर्तिः । तिस्रो दे
स्वधया बर्हिरेदमच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य ॥ ८ ॥ पिशङ्गरूपः सुभरो वयोध
श्रुष्टी वीरो जायते देवकामः । प्रजां त्वष्टा विष्यतु नाभिमस्मे अथा देवानामप्ये
पाथः ॥ ९ ॥ वनस्पतिरवसृजन्नुप स्थादग्निर्हविः सूदयाति प्र धीभिः । त्रिधा
मक्तं नयतु प्रजानन्देवेभ्यो दैव्यः शमितोप हव्यम् ॥ १० ॥ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य
योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम । अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ व
हव्यम् ॥ ११ ॥ २३ ॥

॥ ४ ॥ १—९ सोमाहुतिर्भार्गव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ८
राट् पङ्क्तिः । २, ३, ५, ६, ७ आर्षी पङ्क्तिः । ४ ब्राह्मयुष्णिक् । ९ निचृत्त्रि-
र् ॥ स्वरः—१—३, ५—८ पञ्चमः । ४ ऋषभः । ९ धैवतः ॥

॥ ४ ॥ हुवे वः सुद्योत्मानं सुवृक्तिं विशामग्निमतिथिं सुप्रयसम् । मित्र
यो दिधिषाय्यो भूदेव आदेवे जने जातवेदाः ॥ १ ॥ इमं विधन्तो अपां स-
स्थे द्वितादधुर्भृगवो विक्ष्वा३योः । एष विश्वान्यभ्यस्तु भूमा देवानामग्निररतिर्जी-
श्वः ॥ २ ॥ अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रियं धुः क्षेष्यन्तो न मित्रम् । स
दयदुशतीरूर्म्या आ दक्षाय्यो यो दास्वते दम आ ॥ ३ ॥ अस्य रण्वा स्व-
व पुष्टिः सन्दृष्टिरस्य हियानस्य दक्षोः । वि यो भरिभ्रदोषधीषु जिह्वामत्यो न
थ्यो दोधवीति वारान् ॥ ४ ॥ आ यन्मे अभ्वं वनदः पनन्तोशिग्भ्यो नामि-
त वर्णम् । स चित्रेण चिकिते रंसु भासा जुजुर्वा यो मुहुरा युवा भूत् ॥५॥२४॥
यो वना तातृषाणो न भाति वार्ण पथा रथ्येव स्वानीत् । कृष्णाध्वा तपू
वाश्चिकेत द्यौरिव स्मयमानो नभोभिः ॥६॥ स यो व्यस्थादभि दक्षदुर्वीं पशुर्नैति
युरगोपाः । अग्निः शोचिष्माँ अतसान्युष्णन्कृष्णव्यथिरस्वदयन्न भूम ॥७॥ नू
पूर्वस्यावसो अधीतौ तृतीये विदथे मन्म शंसि । अस्मे अग्ने संयद्वीरं बृहन्तं क्षुमन्तं
जं स्वपत्यं रयिं दाः ॥८॥ त्वया यथा गृत्समदासो अग्ने गुहा वन्वन्त उपराँ
भि ष्युः । सुवीरासो अभिमातिषाहः स्मत्सूरिभ्यो गृणते तद्वयो धाः ॥९॥२५॥

॥ ५ ॥ १—८ सोमाहुतिर्भार्गवः ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,
६ निचृदनुष्टुप् । २, ४, ५ अनुष्टुप् । ८ विराडनुष्टुप् । ७ भुरिगुष्णिक्
रः—१—६, ८ गान्धारः । ७ निषादः ॥

॥ ५ ॥ होताजनिष्ट चेतनः पिता पितृभ्य ऊतये । प्रयक्षञ्जेन्यं वसु शकेम
जिनो यमम् ॥ १ ॥ आ यस्मिन्त्सप्त रश्मयस्तता यज्ञस्य नेतरि । मनुष्वद्दैव्य-
ष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति ॥ २ ॥ दधन्वे वा यदीमनु वोचद्ब्रह्माणि वेरु तत् । परि
श्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभवत् ॥ ३ ॥ साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता
तुनाजनि । विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते ॥ ४ ॥ ता अस्य वर्ण-
युवो नेष्टुः सचन्त धेनवः । कुवित्तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः ॥५॥
दी मातुरुप स्वसा घृतं भरन्त्यस्थित । तासामध्वर्युरागतौ यवो वृष्टीव मोदते ॥६॥
: स्वाय धायसे कृणुतामृत्विगृत्विजम् । स्तोमं यज्ञं चादरं वनेमा ररिमा वयम्

॥ ७ ॥ यथा विद्वाँ अरं करद्विश्वेभ्यो यजतेभ्यः । अयमग्ने त्वे अपि यं
चकृमा वयम् ॥ ८ ॥ २६ ॥

॥ ६ ॥ १–८ सोमाहुतिर्भार्गव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३,
८ गायत्री । २, ४, ६ निचृद्गायत्री । ७ विराट् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६ ॥ इमां मे अग्ने समिधमिमामुपसदं वनेः । इमा ऊ षु श्रुधी गि
॥ १ ॥ अया ते अग्ने विधेमोर्जो नपादश्वमिष्टे । एना सूक्तेन सुजात ॥ २
तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं द्रविणस्युं द्रविणोदः । सपर्येम सपर्यवः ॥३॥ स बोधि
रिर्मघवा वसुपते वसुदावन् । युयोध्य१स्मद्द्वेषांसि ॥ ४॥ स नो वृष्टिं दिवस्परि
नो वाजमनर्वाणम् । स नः सहस्रिणीरिषः ॥ ५ ॥ ईळानायावस्यवे यविष्ठ दूत
गिरा । यजिष्ठ होतरा गहि ॥ ६ ॥ अन्तर्ह्यग्न ईयसे विद्वाञ्जन्मोभया कवे ।
तो जन्येव मित्र्यः ॥ ७ ॥ स विद्वाँ आ च पिप्रयो यक्षि चिकित्व आनुषक् ।
चास्मिन्त्सत्सि बर्हिषि ॥ ८ ॥ २७ ॥

॥ ७ ॥ १–६ सोमाहुतिर्भार्गव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २,
निचृद्गायत्री । ४ त्रिपाद्गायत्री । ५ विराट् पिपीलिका मध्या । ६ वि
गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७ ॥ श्रेष्ठं यविष्ठ भारताग्ने द्युमन्तमा भर । वसो पुरुस्पृहं रयिम् ॥
मा नो अरातिरीशत देवस्य मर्त्यस्य च । पर्षि तस्या उत द्विषः ॥ २ ॥ वि
उत त्वया वयं धारा उदन्या इव । अति गाहेमहि द्विषः ॥ ३ ॥ शुचिः पा
वन्द्योऽग्ने बृहद्वि रोचसे । त्वं घृतेभिराहुतः ॥ ४ ॥ त्वं नो असि भारताग्ने व
भिरुक्षभिः । अष्टापदीभिराहुतः ॥ ५ ॥ द्र्वन्नः सर्पिरासुतिः प्रत्नो होता वरेण्य
सहसस्पुत्रो अद्भुतः ॥ ६ ॥ २८ ॥

॥ ८ ॥ १–६ गृत्समद ऋषिः॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ गायत्री । २ नि
पिपीलि का मध्या गायत्री । ३,५ निचृद्गायत्री । ४ विराड् गायत्री । ६ निचृ
ष्टुप् ॥ स्वरः–१–५ षड्जः । ६ गान्धारः ॥

॥ ८ ॥ वाजयन्निव नू रथान्योगाँ अग्नेरुप स्तुहि । यशस्तमस्य मीळ्हुषः ॥
यः सुनीथो ददाशुषेऽजुर्यो जरयन्नरिं चारुप्रतीक आहुतः ॥ २ ॥ य उ श्रिया

वा दोषोषसि प्रशस्यते । यस्य व्रतं न मीयते ॥ ३ ॥ आ यः स्व१र्ण भानुना
त्रो विभात्यर्चिषा । अञ्जानो अजरैरभि ॥४॥ अत्रिमनु स्वराज्यमग्निमुक्थानि
वृधुः । विश्वा अधि श्रियो दधे ॥५॥ अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य देवानामूतिभिर्वयम् ।
रिष्यन्तः सचेमह्यभि ष्याम पृतन्यतः ॥ ६ ॥ २६ ॥ ५ ॥

॥ ९ ॥ १–६ गृत्समद ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३ त्रिष्टुप् । ४
राट् त्रिष्टुप् । ५, ६ निचृत् त्रिष्टुप् । २ पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१,३–६ धैवतः ।
पञ्चमः ॥

॥ ९ ॥ नि होता होतृषदने विदानस्त्वेषो दीदिवाँ असदत्सुदक्षः । अदब्ध-
व्रतप्रमतिर्वसिष्ठः सहस्रम्भरः शुचिजिह्वो अग्निः ॥ १ ॥ त्वं दूतस्त्वमु नः प-
पास्त्वं वस्य आ वृषभ प्रणेता । अग्ने तोकस्य नस्तने तनूनामप्रयुच्छन्दीद्यद्बो-
गोपाः ॥ २ ॥ विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे । यस्माद्यो-
रुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवींषि जुहुरे समिद्धे ॥ ३ ॥ अग्ने यजस्व हविषा य-
यान्श्रुष्टी देष्णमभि गृणीहि राधः । त्वं ह्यसि रयिपती रयीणां त्वं शुक्रस्य व-
सो मनोता ॥ ४ ॥ उभयं ते न क्षीयते वसव्यं दिवेदिवे जायमानस्य दस्म ।
धि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्य रायः ॥ ५ ॥ सैनानीकेन सु-
दत्रो अस्मे यष्टा देवाँ आयजिष्ठः स्वस्ति । अदब्धो गोपा उत नः परस्पा अग्ने
मदुत रेवद्दिदीहि ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ १० ॥ १–६ गृत्समद ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ६, विराट्
ष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् । ४ निचृत् त्रिष्टुप् । ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–४, ६ धैवतः ।
पञ्चमः ॥

॥ १० ॥ जोहूत्रो अग्निः प्रथमः पितेवेळस्पदे मनुषा यत्समिद्धः । श्रियं
सानो अमृतो विचेता मर्मृजेन्यः श्रवस्य१ः स वाजी ॥ १ ॥ श्रूया अग्निश्चित्र-
तुर्हवं मे विश्वाभिर्गीर्भिरमृतो विचेताः । श्यावा रथं वहतो रोहिता वोतारुषा-
चक्रे विभृत्रः ॥ २ ॥ उत्तानायामजनयन्त्सुषूतं भुवदग्निः पुरुपेशासु गर्भः । शि-
णायां चिदक्तुना महोभिरपरीवृतो वसति प्रचेताः ॥ ३ ॥ जिघर्म्यग्निं हविषा
तेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा । पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तं व्यचिष्ठमन्नै रभ-
दृशानं ॥ ४ ॥ आ विश्वतः प्रत्यञ्चं जिघर्म्यरक्षसा मनसा तज्जुषेत । मर्यश्रीः
स्पृहयद्वर्णो अग्निर्नाभिमृशे तन्वा३ जर्भुराणः ॥ ५ ॥ ज्ञेया भागं सहसानो वरे-

ण त्वादूतासो मनुवद्वदेम । अनूनमग्निं जुह्वा वचस्या मधुपृचं धनसा जोहवी
॥ ६ ॥ २ ॥

॥ ११ ॥ १–२१ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ८,
१३, १९, २० पङ्क्तिः । २, ६, भुरिक् पङ्क्तिः । ३, ४, ६, ११, १२, १४,
निचृत् पङ्क्तिः । ७ विराट् पङ्क्तिः । ५, १६, १७ स्वराट् बृहती भुरिग् बृहत
१५ बृहती । २१ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–४, ६—१४, १८—२० पञ्चमः ।
१६, १७, १५ मध्यमः । २१ धैवतः ॥

॥ ११ ॥ श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः स्याम ते दावने वसूनाम् । इमा
त्वामूर्जो वर्धयंति वसूयवः सिन्धवो न क्षरन्तः ॥ १ ॥ सृजो महीरिन्द्र या अपि
परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः । अमर्त्यं चिद्दासं मन्यमानमवाभिनदुक्थैर्वावृध
॥२॥ उक्थेष्विन्नु शूर येषु चाकन्स्तोमेष्विन्द्र रुद्रियेषु च । तुभ्येदेता यासु मन्दस
प्र वायवे सिस्रते न शुभ्राः ॥३॥ शुभ्रं नु ते शुष्मं वर्धयन्तः शुभ्रं वज्रं बाह्वोर्दधान
शुभ्रस्त्वमिन्द्र वावृधानो अस्मे दासीर्विशः सूर्येण सह्याः ॥ ४ ॥ गुहा हितं
गूळ्हमप्स्वपीवृतं मायिनं क्षियन्तम् । उतो अपो द्यां तस्तभ्वांसमहन्नहिं शूर वी
ण ॥ ५ ॥ ३ ॥ स्तवा नु त इन्द्र पूर्व्या महान्युत स्तवाम नूतना कृतानि । स
वज्रं बाह्वोरुशन्तं स्तवा हरी सूर्यस्य केतू ॥ ६ ॥ हरी नु त इन्द्र वाजयन्ता
श्चुतं स्वारमस्वार्ष्टाम् । वि समना भूमिरप्रथिष्टारंस्त पर्वतश्चित्सरिष्यन् ॥ ७ ॥
पर्वतः साद्यप्रयुच्छन्त्सं मातृभिर्वावशानो अक्रान् । दूरे पारे वाणीं वर्धयन्त इ
षितां धमनिं पप्रथन्नि ॥ ८ ॥ इन्द्रो महां सिन्धुमाशयानं मायाविनं वृत्रमस्फुर
अरेजेतां रोदसी भियाने कनिक्रदतो वृष्णो अस्य वज्रात् ॥ ९ ॥ अरोरवीद्वृष
अस्य वज्रोऽमानुषं यन्मानुषो निजूर्वात् । नि मायिनो दानवस्य माया अपाद
त्पपिवान्त्सुतस्य ॥ १० ॥ ४ ॥ पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दि
सुतासः । पृणन्तस्ते कुक्षी वर्धयन्त्वित्था सुतः पौर इन्द्रमाव ॥ ११ ॥ त्वे इन
प्यभूम विप्रा धियं वनेम ऋतया सपन्तः । अवस्यवो धीमहि प्रशस्तिं सद्यस्ते
यो दावने स्याम ॥ १२ ॥ स्याम ते त इन्द्र ये त ऊती अवस्यव ऊर्जं वर्धयन्त
शुष्मिन्तमं यं चाकनाम देवास्मे रयिं रासि वीरवन्तम् ॥ १३ ॥ रासि क्षयं रा
मित्रमस्मे रासि शर्ध इन्द्र मारुतं नः । सजोषसो ये च मन्दसानाः प्र वाय
पान्त्यग्रणीतिम् ॥ १४ ॥ व्यन्त्विन्नु येषु मन्दसानस्तृपत्सोमं पाहि द्रह्यदिन्द्र

मान्त्सु पृत्स्वा तंरुत्रावर्धयो द्यां बृहद्भिर्कैः ॥ १५ ॥ ५ ॥ बृहन्त इन्नु ये ते
त्रोक्थेभिर्वा सुम्नमाविवासान् । स्तृणानासो बर्हिः पस्त्यावत्त्वोता इदिन्द्र वा-
ग्मन् ॥ १६ ॥ उग्रेष्विन्नु शूर मन्दसान स्त्रिकंद्रुकेषु पाहि सोममिन्द्र । प्रदो-
च्छ्मश्रुषु प्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम् ॥ १७ ॥ धिष्वा शवः शूर
वृत्रमवाभिनद्दानुमौर्णवाभम् । अपावृणोर्ज्योतिरार्याय नि सव्यतः सादि द-
रिन्द्र ॥ १८ ॥ सनेम ये त ऊतिभिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून् ।
मभ्यं तत्त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरन्धयः साख्यस्य त्रिताय ॥ १९ ॥ अस्य सुवानस्य
दनस्त्रितस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः । अवर्तयत्सूर्यो न चक्रं भिनद्वलमिन्द्रो
ङ्गिरस्वान् ॥ २० ॥ नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
त्वां स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ २१ ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ १२ ॥ १–१५ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१–५, १२–१५
ष्टुप् । ६–८, १०, ११ निचृत् त्रिष्टुप् । ९ भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १२ ॥ यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत् । यस्य
माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः ॥ १ ॥ यः पृथिवीं व्य-
नामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात् । यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो
मस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः ॥ २ ॥ यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून्यो गा उदा-
पधा वलस्य । यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः ॥ ३ ॥
मा विश्वाच्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः । श्वघ्नीव यो जिगीवां
लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः ॥ ४ ॥ यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोर-
माहुर्नैषो अस्तीत्येनम् । सो अर्यः पुष्टीर्विज इवामिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास
ः ॥ ५ ॥ ७ ॥ यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य
रेः । युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः ॥ ६ ॥
याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः । यः सूर्यं य
सं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥ ७ ॥ यं क्रन्दसी संयती विह्व-
परेऽवर उभया अमित्राः । समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास
ः ॥ ८ ॥ यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते । यो
र्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः ॥ ९ ॥ यः शश्वतो म-
ो दधानानमन्यमानाञ्छर्वा जघान । यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्यो-

हन्ता स जनास इन्द्रः ॥ १० ॥ ८ ॥ यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश
शरद्यन्वविन्दत् । ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन
॥ ११ ॥ यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून् । यो रौहिण
मस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः ॥ १२ ॥ द्यावा चिदस्मै पृथिवी नम
शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते । यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जन
इन्द्रः ॥ १३ ॥ यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती । य
ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः ॥ १४ ॥ यः सुन्वते पच
दुध्र आ चिद्वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः । वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः
वीरासो विदथमा वदेम ॥ १५ ॥ ९ ॥

॥ १३ ॥ १–१३ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २,
१०, ११, १२ भुरिक् त्रिष्टुप् । ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । ९, १३ त्रिष्टुप् । ४
चृज्जगती । ५, ६ विराट् जगती ॥ स्वरः–१–३, ७–१३ धैवतः । ४–६ निषादः

॥ १३ ॥ ऋतुर्जनित्री तस्या अपस्परि मक्षू जात आविशद्यासु वर्धते ।
दोहना अभवत्पिप्युषी पयोऽंशोः पीयूषं प्रथमं तदुक्थ्यम् ॥ १ ॥ सध्रीमा यं
परि बिभ्रतीः पयो विश्वप्स्न्याय प्र भरन्त भोजनम् । समानो अध्वा प्रवताम
ष्यदे यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ॥ २ ॥ अन्वेको वदति यद्ददाति तद्रूपा
नन्तदपा एक ईयते । विश्वा एकस्य विनुदस्तितिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास
क्थ्यः ॥ ३ ॥ प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते । असि
न्दंष्ट्रैः पितुरत्ति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ॥ ४ ॥ अधाकृणोः
थिवीं सन्दृशे दिवे यो धौतीनामहिहन्नारिणक्पथः । तं त्वा स्तोमेभिरुदभिर्न
जिनं देवं देवा अजनन्त्सास्युक्थ्यः ॥ ५ ॥ १० ॥ यो भोजनं च दयसे च
नमार्द्रादा शुष्कं मधुमद्दुदोहिथ । सः शेवधिं नि दधिषे विवस्वति विश्वस्यैक ईशि
सास्युक्थ्यः ॥६॥ यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणाधि दाने व्य१वनीरधारयः । यश्चास
अजनो दिद्युतो दिव उरुरूर्वाँ अभितः सास्युक्थ्यः ॥७॥ यो नार्मरं सहवसुं निहन्तवे
क्षाय च दासवेशाय चावहः । ऊर्जयन्त्या अपरिविष्टमास्यमुतैवाद्य पुरुकृत्सास्युक्थ
॥ ८ ॥ शतं वा यस्य दश साकमाद्य एकस्य श्रुष्टौ यद्ध चोदमाविथ । अर
दस्यून्त्समुनब्दभीतये सुप्राव्यो अभवः सास्युक्थ्यः ॥९॥ विश्वेदनु रोधना अ
पौंस्यं ददुरस्मै दधिरे कृत्नवे धनम् । षळस्तभ्ना विष्टिरः पञ्च सन्दृशः परि

वः सास्युक्थ्यः ॥१०॥ ११ ॥ सुप्रवाचनं तव वीर वीर्यं१ं यदेकेन क्रतुना वि-
वसु । जातूष्ठिरस्य प्र वयः सहस्वतो या चकर्थ सेन्द्र विश्वास्युक्थ्यः ॥११॥
मयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वय्याय च स्रुतिम् । नीचा सन्तमुदनयः प-
जं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थ्यः ॥ १२ ॥ अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः
र्थयस्व बहु ते वसव्यम् । इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून्बृहद्वदेम विदथे सुवी-
॥ १३ ॥ १२ ॥

॥ १४ ॥ १-१२ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ३, ४, ६, १०,
त्रिष्टुप् । २, ६, ८, निचृत् त्रिष्टुप् । ७ विराट् त्रिष्टुप् । ५ निचृत्पङ्क्तिः । ११
रिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः- १-४, ६-१०, १२ धैवतः । ५, ११ पञ्चमः ॥

॥ १४ ॥ अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोममामत्रेभिः सिञ्चता मद्यमन्धः । कामी
वीरः सदमस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तदिदेष वष्टि ॥ १ ॥ अध्वर्यवो यो अपो
वांसं वृत्रं जघानाशन्येव वृक्षम् । तस्मा एतं भरत तद्वशायँ एष इन्द्रो अर्हति
तिमस्य ॥ २ ॥ अध्वर्यवो यो दृभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं वः ।
मा एतमन्तरिक्षे न वातमिन्द्रं सोमैरोर्णुत जूर्न वस्त्रैः ॥ ३ ॥ अध्वर्यवो य उ-
जघान नव चख्वांसं नवतिं च बाहून् । यो अर्बुदमव नीचा बबाधे तमिन्द्रं सोमस्य
हिनोत ॥ ४ ॥ अध्वर्यवो यः स्वश्नं जघान यः शुष्णमशुषं यो व्यंसम् । यः
नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहोत ॥ ५ ॥ अध्वर्यवो यः शतं
म्बरस्य पुरो बिभेदाश्मनेव पूर्वीः । यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपद्भरता सो-
स्मै ॥ ६ ॥ १३ ॥ अध्वर्यवो यः शतमा सहस्रं भूम्या उपस्थेऽवपज्जघन्वान् ।
संस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान्न्यवृणग्भरता सोममस्मै ॥७॥ अध्वर्यवो यन्नरः का-
ध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तदिन्द्रे । गभस्तिपूतं भरत श्रुतायेन्द्राय सोमं य-
वो जुहोत ॥ ८ ॥ अध्वर्यवः कर्तना श्रुष्टिमस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम् ।
णो हस्त्यमभि वावशे व इन्द्राय सोमं मदिरं जुहोत ॥ ९ ॥ अध्वर्यवः पयसो-
था गोः सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् । वेदाहमस्य निभृतं म एतद्दित्सन्तं भू-
यजतश्चिकेत ॥ १० ॥ अध्वर्यवो यो दिव्यस्य वस्वो यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य
जा । तमूर्दरं न पृणता यवेनेन्द्रं सोमेभिस्तदपो वो अस्तु ॥ ११ ॥ अस्मभ्यं
सो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् । इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यू-
हद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १२ ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ १—१० गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ भुरिक् पङ्क्तिः। ७ स्वराट् पङ्क्तिः। २, ४, ५, ६, ९, १० त्रिष्टुप्। ३ निचृत् त्रिष्टुप्। ८ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः। २—६, ८—१० धैवतः ॥

॥ १५ ॥ प्र घा न्वस्य महतो महानि सत्या सत्यस्य करणानि वोचम्। त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्यास्य मदे अहिमिन्द्रो जघान ॥ १ ॥ अवंशे द्यामस्तभायद्बृहन्तमा रोदसी अपृणदन्तरिक्षम्। स धारयत्पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ २ ॥ सद्मेव प्राचो वि मिमाय मानैर्वज्रेण खान्यतृणन्नदीनाम्। वृथासृजत्पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ३ ॥ स प्रवोळ्हॄन्परिगत्या दभीतेर्विश्वमधागायुधमिद्धे अग्नौ। सं गोभिरश्वैरसृजद्रथेभिः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ४ ॥ स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात्सो अस्नातॄनपारयत्स्वस्ति। त उत्स्नाय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ५ ॥ १५ ॥ सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्महित्वा वज्रेणान उषसः सं पिपेष। अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन्त्सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ६ ॥ स विद्वाँ अपगोहं कनीनामाविर्भवन्नुदतिष्ठत्परावृक्। प्रति श्रोणः स्थाद्व्य१नगचष्ट सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ७ ॥ भिनद्वलमङ्गिरोभिर्गृणानो वि पर्वतस्य दृंहितान्यैरत्। रिणग्रोधांसि कृत्रिमाण्येषां सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ८ ॥ स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं धुनिं च जघन्थ दस्युं प्र दभीतिमावः। रम्भी चिदत्र विविदे हिरण्यं सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ९ ॥ नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी। शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १० ॥ १६ ॥

॥ १६ ॥ १—९ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ७ जगती। ३ विराट् जगती। ४, ५, ६, ८ निचृज्जगती च। २ भुरिक्त्रिष्टुप्। ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३—८ निषादः। २, ९ धैवतः ॥

॥ १६ ॥ प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुतिमग्नाविव समिधाने हविर्भरे। इन्द्रमजुर्यं जरयन्तमुक्षितं सनाद्युवानमवसे हवामहे ॥ १ ॥ यस्मादिन्द्राद्बृहतः किं चनेमृते विश्वान्यस्मिन्त्सम्भृताधि वीर्या। जठरे सोमं तन्वी३सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि क्रतुम् ॥ २ ॥ न क्षोणीभ्यां परिभ्वे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः। न ते वज्रमन्वश्नोति कश्चन यदाशुभिः पतसि योजना पुरु ॥ ३ ॥ विश्वे ह्यस्मै यजताय धृष्णवे क्रतुं भरन्ति वृषभाय सश्चते। वृषा यज

षां विदुष्टरः पिबेन्द्र सोमं वृषभेण भानुना ॥ ४ ॥ वृष्णः कोशः पवते मध्व
मिर्वृषभान्नाय वृषभाय पातवे । वृषणाध्वर्यू वृषभासो अद्रयो वृषणं सोमं वृष-
य सुष्वति ॥ ५ ॥ १७ ॥ वृषा ते वज्र उत ते वृषा रथो वृषणा हरी वृषभा-
युधा । वृष्णो मदस्य वृषभ त्वमीशिष इन्द्र सोमस्य वृषभस्य तृप्णुहि ॥ ६ ॥
ते नावं न समने वचस्युवं ब्रह्मणा यामि सवनेषु दाधृषिः । कुविन्नो अस्य व-
निबोधिषदिन्द्रमुत्सं न वसुनः सिचामहे ॥ ७ ॥ पुरा सम्बाधादभ्या ववृ-
नो धेनुर्न वत्सं यवसस्य पिप्युषी । सकृत्सु ते सुमतिभिः शतक्रतो सं पत्नी-
र्न वृषणो नसीमहि ॥ ८ ॥ नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा
नी । शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ९ ॥ १८ ॥

॥ १७ ॥ १-९ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५, ६ वि-
ट् जगती । २, ४ निचृज्जगती । ३, ७ भुरिक् त्रिष्टुप् । ९ त्रिष्टुप् । ८ नि-
पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४-६, निषादः । ३, ७, ९, धैवतः । ८ पञ्चमः ॥

॥ १७ ॥ तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्चत शुष्मा यदस्य प्रत्नथोदीरते । विश्वा य-
त्रा सहसा परीवृता मदे सोमस्य दंहितान्यैरयत् ॥ १ ॥ स भूतु यो ह प्रथ-
य धायस ओजो मिमानो महिमानमातिरत् । शूरो यो युत्सु तन्वं परिव्यत शी-
ण द्यां महिना प्रत्यमुञ्चत ॥ २ ॥ अधाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद्यदस्याग्रे ब्रह्म-
शुष्ममैरयः । रथेष्ठेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरयः सिस्रते सध्र्यक् पृथक्
३ ॥ अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्मनेशानकृत्प्रवया अभ्यवर्धत । आद्रोदसी
तिषा वह्निरातनोत्सीव्यन्तमांसि दुधिता समव्ययत् ॥ ४ ॥ स प्राचीनान्प-
दंहदोजसाधराचीनमकृणोदपामपः । अधारयत्पृथिवीं विश्वधायसमस्तभ्ना-
यया द्यामवस्रसः ॥ ५ ॥ १९ ॥ सास्मा अरं बाहुभ्यां यं पिताकृणोद्विश्व-
दा जनुषो वेदसस्परि । येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्यै वज्रेण हत्व्यवृण-
विष्वणिः ॥ ६ ॥ अमाजूरिव पित्रोः सचा सती समानादा सदसस्त्वामिये भ-
। कृधि प्रकेतमुप मास्या भर दद्धि भागं तन्वो येन मामहः ॥ ७ ॥ भोजं त्वा-
न्द्र वयं हुवेम ददिष्ट्वमिन्द्रापांसि वाजान् । अविड्ढीन्द्र चित्रया न ऊती कृधि
न्निन्द्र वस्यसो नः ॥ ८ ॥ नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा
नी । शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ९ ॥ २० ॥

॥ १८ ॥ १-९ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः । ४,

८ भुरिक् पङ्क्तिः । ५, ६ स्वराट् पङ्क्तिः । ७ निचृत् पङ्क्तिः । २, ३, ९ त्रिष्टुप्
स्वरः-१, ४-८ पञ्चमः । २, ३, ९ धैवतः ॥

॥ १८ ॥ प्राता रथो नवो योजि सस्निश्चतुर्युगस्त्रिकशः सप्तरश्मिः । द
रित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्यो भूत् ॥ १ ॥ सास्मा अरं प्रथमं
द्वितीयमुतो तृतीयं मनुषः स होता । अन्यस्या गर्भमन्य ऊ जनन्त सो अन्ये
सचते जेन्यो वृषा ॥ २ ॥ हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योजमायै सूक्तेन वचसा नवे
मो षु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन्यजमानासो अन्ये ॥ ३ ॥ आ द्वा
हरिभ्यामिन्द्र याह्या चतुर्भिरा षड्भिर्हूयमानः । आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयमयं सु
सुमख मा मृधस्कः ॥ ४ ॥ आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वाङा चत्वारिंशता ह
भिर्युजानः । आ पञ्चाशता सुरथेभिरिन्द्रा षष्ट्या सप्तत्या सोमपेयम् ॥५॥ २
आशीत्या नवत्या याह्यर्वाङा शतेन हरिभिरुह्यमानः । अयं हि ते शुनहोत्रेषु स
इन्द्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ॥ ६ ॥ मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा विश्वा हरी
धिष्वा रथस्य । पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथास्मिञ्छूर सवने मादयस्व ॥ ७ ॥ न
इन्द्रेण सख्यं वि योषदस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत । उप ज्येष्ठे वरूथे गभ
प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम ॥ ८ ॥ नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र
क्षिणा मघोनी । शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवी
॥ ९ ॥ २२ ॥

॥ १९ ॥ १—९ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २,
८ विराट् त्रिष्टुप् । ९ त्रिष्टुप् । ३ पङ्क्तिः । ५, ७ भुरिक् पङ्क्तिः । ४ निचृत् पङ्क्ति
स्वरः—१, २, ६, ८, ९ धैवतः । ३—५, ७ पञ्चमः ॥

॥ १९ ॥ अपाय्यस्यान्धसो मदाय मनीषिणः सुवानस्य प्रयसः । य
न्निन्द्रः प्रदिवि वावृधान ओको दधे ब्रह्मण्यन्तश्च नरः ॥ १ ॥ अस्य मन्द
मध्वो वज्रहस्तोऽहिमिन्द्रो अर्णोवृतं वि वृश्चत् । प्र यद्वयो न स्वसराण्यच्छा
यांसि च नदीनां चक्रमन्त ॥ २ ॥ स माहिन इन्द्रो अर्णो अपां प्रैरयदहिहा
समुद्रम् । अजनयत्सूर्यं विदद्गा अक्तुनाह्नां वयुनानि साधत् ॥ ३ ॥ सो अप्रती
मनवे पुरूणीन्द्रो दाशद्दाशुषे हन्ति वृत्रम् । सद्यो यो नृभ्यो अतसाय्यो भूत्प
धानेभ्यः सूर्यस्य सातौ ॥ ४ ॥ स सुन्वत इन्द्रः सूर्यमा देवो रिणङ्मर्त्य
स्तवान् । आ यद्रयिं गुहदवद्यमस्मै भरदंशं नैतशो दशस्यन् ॥ ५ ॥ २३

न्धयत्स॒दिवः सार॑थये॒ शुष्ण॑म॒शुषं॒ कुय॑वं॒ कुत्सा॑य । दिवो॑दासाय नव॒तिं च॒ नवे-
पुरो॒ व्यै॑र॒च्छम्ब॑रस्य ॥ ६ ॥ ए॒वा त॑ इन्द्रो॒चथ॑महेम श्र॒व॒स्या न त्मना॑ वा॒जय॑न्तः ।
याम॒ तत्सा॑प्तमाशुषा॒णा न॒नमो॒ वध॒रदे॑वस्य पी॒योः ॥ ७ ॥ ए॒वा ते॑ गृत्सम॒दाः
मन्मा॑व॒स्यवो॒ न व॒युना॑नि तक्षुः । ब्र॒ह्म॒ण्यन्त॑ इन्द्र ते॒ नवी॑य॒ इष॒मूर्जं॑ सुक्षि॒तिं
म्नमश्युः ॥ ८ ॥ नूनं सा ते॒ प्रति॒ वरं॑ जरि॒त्रे दु॑ही॒यदि॑न्द्र दक्षिणा म॒घोनी॑ ।
क्षा स्तोतृभ्यो॒ माति॒ धग्भगो॑ नो बृहद्व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीरा॑ः ॥ ९ ॥ २४ ॥

॥ २० ॥ १–९ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ६, ८ विराट्
ष्टुप् । ९ त्रिष्टुप् । २ बृहती । ३ पङ्क्तिः । ४, ५, ७ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–
६, ८, ९ धैवतः । २ मध्यमः । ३–५, ७ पञ्चमः ॥

॥ २० ॥ व॒यं ते॑ वय॑ इन्द्र वि॒द्धि षु॒णः प्र भ॑रामहे वाज॒युर्न रथ॑म् । वि॒प॒न्यवो॒
ध्य॑तो मनी॒षा सु॒म्नमिय॑क्षन्त॒स्त्वाव॑तो॒ नॄन् ॥ १ ॥ त्वं न॑ इन्द्र॒ त्वाभि॑रू॒ती त्वा॑य॒तो
भिष्टि॒पासि॒ जना॑न् । त्वमि॒नो दा॒शुषो॑ वरू॒तेत्थाधी॑र॒भि यो नक्ष॑ति त्वा ॥ २ ॥ स
युवेन्द्रो॑ जो॒हूत्रः॒ सखा॑ शि॒वो न॒राम॑स्तु पा॒ता । यः शंस॑न्तं॒ यः श॑शमा॒नमू॒ती पच॑न्तं
स्तु॒वन्तं॑ च प्र॒णेष॑त् ॥ ३ ॥ तमु॑ स्तुष॒ इन्द्रं॒ तं गृ॑णीषे॒ यस्मि॒न्पुरा॑ वावृ॒धुः
श॒दुश्च॑ । स वस्वः॒ काम॑ं पीपरदिया॒नो ब्र॑ह्मण्य॒तो नूत॑नस्या॒योः ॥ ४ ॥ सो
ङ्गि॑रसामु॒चथा॑ जुजु॒ष्वान्ब्रह्मा॑ तूतो॒दिन्द्रो॑ गा॒तुमि॒ष्णन् । मु॒ष्णन्नु॒षसः॒ सूर्ये॑ण
वानश्व॑स्य चिच्छिश्नथत्पू॒र्व्याणि॑ ॥ ५ ॥ २५ ॥ स ह॑ श्रु॒त इन्द्रो॒ नाम॑ दे॒व ऊ॒र्ध्वो
न्मनु॑षे द॒स्मत॑मः । अव॑ प्रि॒यम॑र्श॒सा॒नस्य॑ सा॒ह्वाञ्छिरो॑ भरद्दा॒सस्य॑ स्व॒धावा॑न्
६ ॥ स वृ॑त्र॒हेन्द्रः॑ कृ॒ष्णयो॑नीः पुरन्द॒रो दासी॑रैरय॒द्वि । अज॑नय॒न्मन॑वे॒ क्षाम॒-
च॑ स॒त्रा शंस॑ं यज॑मानस्य तूतोत् ॥ ७ ॥ तस्मै॑ तव॒स्य१॒॑मनु॑ दायि स॒त्रेन्द्रा॑य दे॒-
भि॒रर्ण॑सातौ । प्रति॒ यद॑स्य॒ वज्रं॑ बा॒ह्वोर्धुर्ह॒त्वी दस्यू॒न्पुर॒ आय॑सी॒र्नि ता॑रीत् ॥ ८ ॥
सा ते॒ प्रति॒ वरं॑ जरि॒त्रे दु॑ही॒यदि॑न्द्र दक्षि॒णा म॒घोनी॑ । शिक्षा॑ स्तो॒तृभ्यो॒ माति॑
भगो॑ नो बृहद्व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीरा॑ः ॥ ९ ॥ २६ ॥

॥ २१ ॥ १–६ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, २ स्वराट्
ष्टुप् । ३, ६ त्रिष्टुप् । ४ विराट् जगती । ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः–१–३, ६
तः । ४, ५ निषादः ॥

॥ २१ ॥ वि॒श्व॒जिते॑ धन॒जिते॑ स्व॒र्जिते॑ सत्रा॒जिते॑ नृ॒जित॑ उर्वरा॒जिते॑ । अ॒श्व॒-

जितें गोजितें अब्जितें भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतम् ॥ १ ॥ अभिभुवेऽभि
ङ्गाय वन्वतेऽषाळ्हाय सहमानाय वेधसे । तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे न
इन्द्राय वोचत ॥ २ ॥ सत्रासाहो जनभक्षो जनंसहश्च्यवनो युध्मो अनु जोष
क्षितः । वृतञ्चयः सहुरिर्विक्ष्वारित इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या ॥ ३ ॥ अन
नुदो वृषभो दोधतो वधो गम्भीर ऋष्वो असमष्टकाव्यः । रध्रचोदः श्नथ
वीळितस्पृथुरिन्द्रः सुयज्ञ उषस स्वर्जनत् ॥ ४ ॥ यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे धि
हिन्वाना उशिजो मनीषिणः । अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वा
द्रविणान्याशत ॥५॥ इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ॥ ६ ॥ २७ ॥

॥ २२ ॥ १–४ गृत्समद ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ अष्टिः । २
चृदतिशक्वरी । ४ भुरिगतिशक्वरी । ३ स्वराट् शक्वरी ॥ स्वरः–१ मध्यमः ।
४ पञ्चमः । ३ धैवतः ॥

॥ २२ ॥ त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत्सोममपिबद्विष्णु
सुतं यथावशत् । स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमि
सत्य इन्दुः ॥ १ ॥ अध त्विषीमाँ अभ्योजसा क्रिविं युधाभवदा रोदसी अ
णादस्य मज्मना प्र वावृधे । अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत सैनं सश्चद्देवो देवं
त्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ २ ॥ साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृ
वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः । दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु सैनं सश्चद्देवो
सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ ३ ॥ तव त्यन्नर्यं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवा
कृतम् । यद्देवस्य शवसा प्रारिणा असुं रिणन्नपः । भुवद्विश्वमभ्यादेवमोजसा
दादूर्जं शतक्रतुर्विदादिषम् ॥ ४ ॥ २८ ॥ २ ॥

॥ २३ ॥ १–१९ गृत्समद ऋषि ॥ देवताः–१, ५, ९, ११, १७,
ब्रह्मणस्पतिः । २–४, ६–८, १०, १२–१६, १८ बृहस्पतिश्च ॥ छन्दः–१,
५, १०, ११, १२ जगती । २, ७, ८, ९, १३, १४, विराट् जगती । ३,
१६, १८ निचृज्जगती । १५, १७ भुरिक् त्रिष्टुप् । १९ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–
१४, १६, १८ निषादः । १५, १७, १९ धैवतः ॥

॥ २३ ॥ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।

राजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥ १ ॥ देवा-
त्ते असुर्ये प्रचेतसो बृहस्पते युज्ञियं भागमानशुः । उस्रा इव सूर्यो ज्योतिषा म-
विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि ॥ २ ॥ आ विबाध्या परिरापस्तमांसि च ज्यो-
भन्तं रथमृतस्य तिष्ठसि । बृहस्पते भीममंमित्रदम्भनं रक्षोहणं गोत्रभिदं स्व-
र्दम् ॥ ३ ॥ सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे जनं यस्तुभ्यं दाशान्न तमंहो अश्नवत् ।
ब्रह्मद्विषस्तपनो मन्युमीरसि बृहस्पते महि तत्ते महित्वनम् ॥ ४ ॥ न तमंहो न दु-
तं कुतश्चन नारातयस्तितिरुर्न द्वयाविनः । विश्वा इदस्माद्ध्वरसो वि बाधसे यं
गोपा रक्षसि ब्रह्मणस्पते ॥ ५ ॥ २९ ॥ त्वं नो गोपाः पथिकृद्विचक्षणस्तव
ार्य मतिभिर्जरामहे । बृहस्पते यो नो अभि ह्वरो दधे स्वा तं मर्मर्तु दुच्छुना ह-
वती ॥ ६ ॥ उत वा यो नो मर्चयादनागसोऽरातीवा मर्तः सानुको वृकः । बृ-
पते अप तं वर्तया पथः सुगं नो अस्यै देववीतये कृधि ॥ ७ ॥ त्रातारं त्वा
नां हवामहेऽवस्पर्तरधिवक्तारमस्मयुम् । बृहस्पते देवनिदो नि बर्हय मा दुरेवा उ-
सुम्नमुन्नशन् ॥ ८ ॥ त्वया वयं सुवृधा ब्रह्मणस्पते स्पार्हा वसु मनुष्या द-
महि । या नो दूरे तळितो या अरातयोऽभि सन्ति जम्भया ता अनप्नसः ॥ ९ ॥
या वयमुत्तमं धीमहे वयो बृहस्पते पप्रिणा सस्निना युजा । मा नो दुःशंसो
भिदिप्सुरीशत प्र सुशंसा मतिभिस्तारिषीमहि ॥ १० ॥ ३० ॥ अनानुदो वृष-
जग्मिराहवं निष्टप्ता शत्रुं पृतनासु सासहिः । असि सत्य ऋणया ब्रह्मण-
उग्रस्य चिद्दमिता वीळुहर्षिणः ॥ ११ ॥ अदेवेन मनसा यो रिषण्यति शा-
मुग्रो मन्यमानो जिघांसति । बृहस्पते मा प्रणक्तस्य नो वधो नि कर्म मन्युं दु-
स्य शर्धतः ॥ १२ ॥ भरेषु हव्यो नमसोपसद्यो गन्ता वाजेषु सनिता धनंधनम् ।
वा इदर्यो अभिदिप्स्वो३मृधो बृहस्पतिर्वि ववर्हा रथाँ इव ॥ १३ ॥ तेजिष्ठया
नी रक्षसस्तप ये त्वा निदे दधिरे दृष्टवीर्यम् । आविस्तत्कृष्व यदसत्त उक्थ्यं१ बृ-
ते वि परिरापो अर्दय ॥ १४ ॥ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्र-
जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ १५ ॥ ३१ ॥
नः स्तेनेभ्यो ये अभि द्रुहस्पदे निरामिणो रिपवोऽन्नेषु जागृधुः । आ देवा-
मोहंते वि वयो हृदि बृहस्पते न परः साम्नो विदुः ॥ १६ ॥ विश्वेभ्यो हि त्वा
नेभ्यस्परि त्वष्टाजनत्साम्नःसाम्नः कविः । स ऋणचिदृणया ब्रह्मणस्पति-
हन्ता मह ऋतस्य धर्तरि ॥ १७ ॥ तव श्रिये व्यजिहीत पर्वतो गवां गोत्र-
सृजो यदङ्गिरः । इन्द्रेण युजा तमसा परीवृतं बृहस्पते निरपामौब्जो अर्णवम्

॥ १८ ॥ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व । विश्वं तद्भ
यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १९ ॥ ३२ ॥ ६ ॥

॥ २४ ॥ १—१६ गृत्समद ऋषिः ॥ १—११, १३—१६ ब्रह्मण
स्पतिः । १२ ब्रह्मणस्पतिरिन्द्रश्च देवते ॥ छन्दः—१, ७, ९, ११ निचृज्ज
ती । १३ भुरिक् जगती । ६, ८, १४ जगती । १० स्वराड् जगती । २, ३ त्रि
ष्टुप् । ४, ५ स्वराट् त्रिष्टुप् । १२, १६ निचृत् त्रिष्टुप् । १५ भुरिक् त्रिष्टुप्
स्वरः—१, ४, ६—११, १३, १४ निषादः । २, ३, ५, १२, १५, १६ धैवतः

॥ २४ ॥ सेमामविड्ढि प्रभृतिं य ईशिषेऽया विधेम नवया महा गिरा । य
नो मीढ्वान्स्तवते सखा तव बृहस्पते सीषधः सोत नो मतिम् ॥ १ ॥ यो नन्त्व
न्यनमन्न्योजसोतादर्दर्मन्युना शम्बराणि वि । प्राच्यावयदच्युता ब्रह्मणस्पति
चाविशद्वसुमन्तं वि पर्वतम् ॥ २ ॥ तद्देवानां देवतमाय कर्त्वमश्रथ्नन्दृळ्हाव्रद
वीळिता । उद्गा आजदभिनद्ब्रह्मणा वलमगूहत्तमो व्यचक्षयत्स्वः ॥ ३ ॥
श्मास्यमवतं ब्रह्मणस्पतिर्मधुधारमभि यमोजसातृणत् । तमेव विश्वे पपिरे स्वर्दृ
बहु साकं सिसिचुरुत्समुद्रिणम् ॥ ४ ॥ सना ता का चिद्भुवना भवीत्वा मा
शरद्भिर्दुरो वरन्त वः । अयतन्ता चरतो अन्यदन्यदिद्या चकार वयुना ब्रह्म
स्पतिः ॥ ५ ॥ १ ॥ अभिनक्षन्तो अभि ये तमानशुर्निधिं पणीनां परमं
हितम् । ते विद्वांसः प्रतिचक्ष्यानृता पुनर्यत उ आयन्तदुदीयुराविशम् ॥ ६
ऋतावानः प्रतिचक्ष्यानृता पुनरात आ तस्थुः कवयो महस्पथः । ते बाहुभ्यां
मितमग्निमश्मनि नकिः षो अस्त्यरणो जहुर्हि तम् ॥ ७ ॥ ऋतज्येन क्षि
ब्रह्मणस्पतिर्यत्र वष्टि प्र तदश्नोति धन्वना । तस्य साध्वीरिषवो याभिरस्यति
चक्षसो दृशये कर्णयोनयः ॥ ८ ॥ स संनयः स विनयः पुरोहितः स सुष्टुतः
युधि ब्रह्मणस्पतिः । चाक्ष्मो यद्वाजं भरते मती धनादित्सूर्यस्तपति तप्यतु
॥ ९ ॥ विभु प्रभु प्रथमं मेहनावतो बृहस्पतेः सुविदत्राणि राध्या । इमा सात
वेन्यस्य वाजिनो येन जना उभये भुञ्जते विशः ॥ १० ॥ २ ॥ योऽवरे वृ
विश्वथा विभुर्महामु रण्वः शवसा ववक्षिथ । स देवो देवान्प्रति पप्रथे पृथु वि
ता परिभूर्ब्रह्मणस्पतिः ॥ ११ ॥ विश्वं सत्यं मघवाना युवोरिदापश्चन प्र मि
न्ति व्रतं वाम् । अच्छेन्द्राब्रह्मणस्पती हविर्नोऽन्नं युजेव वाजिना जिगातम् ॥ १
उताशिष्ठा अनु शृण्वन्ति वह्नयः सभेयो विप्रो भरते मती धना । वीळुद्वेषा

ऋणमाददिः स ह वाजी संमिथे ब्रह्मणस्पतिः ॥ १३ ॥ ब्रह्मणस्पतेरभवद्य-
शं सत्यो मन्युर्महि कर्मा करिष्यतः । यो गा उदाजत्स दिवे वि चाभजन्म-
रीतिः शवसासरत्पृथक् ॥ १४ ॥ ब्रह्मणस्पते सुयमस्य विश्वहा रायः स्याम
यो३वयस्वतः । वीरेषु वीराँ उप पृङ्धि नस्त्वं यदीशानो ब्रह्मणा वेषि मे हवम्
१५ ॥ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व । विश्वं तद्भद्रं
वन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १६ ॥ ३ ॥

॥ २५ ॥ १–५ गृत्समद ऋषिः ॥ ब्रह्मणस्पतिर्देवता ॥ छन्दः–१, २ जगती ।
निचृज्जगती । ४, ५ विराड् जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ २५ ॥ इन्धानो अग्निं वनवद्वनुष्यतः कृतब्रह्मा शूशुवद्रातहव्य इत् । जा-
जातमति स प्र सर्स्रते यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ १ ॥ वीरेभिर्वीरान्वं-
द्वनुष्यतो गोभी रयिं पप्रथद्बोधति त्मना । तोकं च तस्य तनयं च वर्धते यंयं
कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ २ ॥ सिन्धुर्न क्षोदः शिमीवाँ ऋघायतो वृषेव वध्री-
वृष्ट्योजसा । अग्नेरिव प्रसितिर्नाह वर्तवे यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः
३ ॥ तस्मा अर्षन्ति दिव्या असश्चतः स सत्वभिः प्रथमो गोषु गच्छति ।
निभृष्टतविषिर्हन्त्योजसा यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ ४ ॥ तस्मा इद्विश्वे
यन्त सिन्धवोऽच्छिद्रा शर्म दधिरे पुरूणि । देवानां सुम्ने सुभगः स एधते
युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ ५ ॥ ४ ॥

॥ २६ ॥ १–४ गृत्समद ऋषिः ॥ ब्रह्मणस्पतिर्देवता ॥ छन्दः–१, ३
ती । २, ४ निचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ २६ ॥ ऋजुरिच्छंसो वनवद्वनुष्यतो देवयन्निददेवयन्तमभ्यसत् । सुप्रावी-
नवत्पृत्सु दुष्टरं यज्वेदयज्योर्वि भजाति भोजनम् ॥ १ ॥ यजस्व वीर प्र
हे मनायतो भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये । हविष्कृणुष्व सुभगो यथाससि ब्रह्म-
पतेरव आ वृणीमहे ॥ २ ॥ स इज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते
नृभिः । देवानां यः पितरमाविवासति श्रद्धामना हविषा ब्रह्मणस्पतिम् ॥ ३ ॥
अस्मै हव्यैर्घृतवद्भिरविधत्प्र तं प्राचा नयति ब्रह्मणस्पतिः । उरुष्यतीमंहसो
ती रिषो३ंहोश्चिदस्मा उरुचक्रिरद्भुतः ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ २७ ॥ १–१७ कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा ऋषिः ॥ आदित्यो देवता ॥

छन्दः—१, ३, ६, १३, १४, १५ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४, ५, ८, १२, १७ त्रिष्टुप् । ११, १६ विराट् त्रिष्टुप् । ७ भुरिक् पङ्क्तिः । ६, १० स्वराट् पङ्क्तिः । स्वरः—१–६, ८, ११–१७ धैवतः । ७, ६, १० पञ्चमः ॥

॥ २७ ॥ इमा गिरं आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद्राजभ्यो जुह्वा जुहोमि । शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः ॥ १ ॥ इमं स्तोमं सक्रतवो मे अद्य मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त । आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टाः ॥ २ ॥ त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः । अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति ॥ ३ ॥ धारयन्त आदित्यासो जगत्स्था देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः । दीर्घाधियो रक्षमाणा असुर्यमृतावानश्चयमाना ऋणानि ॥ ४ ॥ विद्यामादित्या अवसो वो अस्य यदर्यमन्भय आ चिन्मयोभु । युष्माकं मित्रावरुणा प्रणीतौ परि श्वभ्रेव दुरितानि वृज्याम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ सुगो हि वो अर्यमन्मित्र पन्था अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति । तेनादित्या अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म ॥ ६ ॥ पिपर्तु नो अदिती राजपुत्राति द्वेषांस्यर्यमा सुगेभिः । बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोप स्याम पुरुवीरा अरिष्टाः ॥ ७ ॥ तिस्रो भूमीर्धारयन् त्रीँरुत द्यून्त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम् । ऋतेनादित्या महि वो महित्वं तदर्यमन्वरुण मित्र चारु ॥ ८ ॥ त्री रोचना दिव्या धारयन्त हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः । अस्वप्नजो अनिमिषा अदब्धा उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय ॥ ९ ॥ त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा असुर ये च मर्ताः । शतं नो रास्व शरदो विचक्षेऽश्यामायूंषि सुधितानि पूर्वा ॥ १० ॥ ७ ॥ न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा । पाक्या चिद्वसवो धीर्या चिद्युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम् ॥ ११ ॥ यो राजभ्य ऋतनिभ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्टयश्च नित्याः । स रेवान्याति प्रथमो रथेन वसुदावा विदथेषु प्रशस्तः ॥ १२ ॥ शुचिरपः सूयवसा अदब्ध उप क्षेति वृद्धवयाः सुवीरः । नकिष्टं घ्नन्त्यन्तितो न दूराद्य आदित्यानां भवति प्रणीतौ ॥ १३ ॥ अदिते मित्र वरुणोत मृळ यद्वो वयं चकृमा कच्चिदागः । उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र मा नो दीर्घा अभि नशन्तमिस्राः ॥ १४ ॥ उभे अस्मै पीपयतः समीची दिवो वृष्टिं सुभगो नाम पुष्यन् । उभा क्षयावाजयन्याति पृत्सूभावर्धौ भवतः साधू अस्मै ॥ १५ ॥ या वो माया अभिद्रुहे यजत्रा पाशा आदित्या रिपवे विचृत्ताः । अश्वीव ताँ अति येषं रथेनारिष्टा उरावा शर्मन्त्स्याम

१६ ॥ माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाव्न आ विदं शूनमापेः । मा रायो
जन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १७ ॥ ८ ॥

॥ २८ ॥ १–११ कूर्मो गार्त्समदो वा ऋषिः ॥ वरुणो देवता ॥ छन्दः–
३, ६, ४ निचृत् त्रिष्टुप् । ५, ७, ११ त्रिष्टुप् । ८ विराट् त्रिष्टुप् । ९ भुरिक्
ष्टुप् । २, १० भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ३–९, ११ धैवतः । २, १० पञ्चमः ॥

॥ २८ ॥ इदं कवेरादित्यस्य स्वराजो विश्वानि सान्त्यभ्यस्तु मह्ना । अति
मन्द्रो यजथाय देवः सुकीर्तिं भिक्षे वरुणस्य भूरेः ॥ १ ॥ तव व्रते सुभगासः
याम स्वाध्यो वरुण तुष्टुवांसः । उपायन उषसां गोमतीनामग्नयो न जरमाणा
नु द्यून् ॥ २ ॥ तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्नुरुशंसस्य वरुण प्रणेतः । यूयं नः
त्रा अदितेरदब्धा अभि क्षमध्वं युज्याय देवाः ॥ ३ ॥ प्र सीमादित्यो असृज-
धर्ता ऋतं सिन्धवो वरुणस्य यन्ति । न श्राम्यन्ति न वि मुचन्त्येते वयो न पप्तू रघुया
रिज्मन् ॥ ४ ॥ वि मच्छ्रथाय रशनामिवाग ऋध्याम ते वरुण खामृतस्य । मा
न्तुश्छेदि वयतो धियं मे मा मात्रा शार्यपसः पुर ऋतोः ॥ ५ ॥ ९ ॥ अपो सु
यक्ष वरुण भियसं मत्सम्राळृतावोऽनु मा गृभाय । दामेव वत्साद्वि मुमुग्ध्यंहो
हि त्वदारे निमिषश्चनेशे ॥ ६ ॥ मा नो वधैर्वरुण ये त इष्टावेनः कृण्वन्तमसुर
ीणन्ति । मा ज्योतिषः प्रवसथानि गन्म वि षू मृधः शिश्रथो जीवसे नः ॥ ७ ॥
मः पुरा ते वरुणोत नूनमुतापरं तुविजात ब्रवाम । त्वे हि कं पर्वते न श्रितान्य-
च्युतानि दूळभ व्रतानि ॥ ८ ॥ पर ऋणा सावीरध मत्कृतानि माहं राजन्नन्य-
तेन भोजं । अव्युष्टा इन्नु भूयसीरुषास आ नो जीवान्वरुण तासु शाधि ॥ ९ ॥
ो मे राजन्युज्यो वा सखा वा स्वप्ने भयं भीरवे मह्यमाह । स्तेनो वा यो दिप्स-
ो नो वृको वा त्वं तस्माद्वरुण पाह्यस्मान् ॥ १० ॥ माहं मघोनो वरुण प्रिय-
य भूरिदाव्न आ विदं शूनमापेः । मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम वि-
थे सुवीराः ॥ ११ ॥ १० ॥

॥ २९ ॥ १–७ कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥
न्दः–१,४,५ निचृत् त्रिष्टुप् । २,६,७ त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २९ ॥ धृतव्रता आदित्या इषिरा आरे मत्कर्त रहसूरिवागः । शृण्वतो
ो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्वाँ अवसे हुवे वः ॥ १ ॥ यूयं देवाः प्रमतिर्यू-

यमोजो यूयं द्वेषांसि सनुतर्युयोत । अभिक्षत्तारो अभि च क्षमध्वमद्या च नो मृ
ळयतापरं च ॥ २ ॥ किमू नु वः कृणवामापरेण किं सनेन वसव आप्येन । यू
नो मित्रावरुणादिते च स्वस्तिमिन्द्रामरुतो दधात ॥ ३ ॥ हये देवा यूयमिदापय
स्थ ते मृळत नाधमानाय मह्यम् । मा वो रथो मध्यमवाळृते भून्मा युष्मावत्स्वा
पिषु श्रमिष्म ॥ ४ ॥ प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शशास
आरे पाशा आरे अघानि देवा मा माधि पुत्रे विमिव ग्रभीष्ट ॥ ५ ॥ अर्वाञ्च
अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम् । त्राध्वं नो देवा निजु
वृकस्य त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः ॥ ६ ॥ माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरि
दाव्न आ विदं शूनमापेः । मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सु
वीराः ॥ ७ ॥ ११ ॥

॥ ३० ॥ १-११ गृत्समद ऋषिः ॥ १-५, ७, ८, १० इन्द्रः । ६ इन्द्रा
सोमौ । ९ बृहस्पतिः । ११ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१, ३ भुरिक् पङ्क्तिः । २
८ निचृत् त्रिष्टुप् । ४, ५, ६, ७, ९ त्रिष्टुप् । १० विराट् त्रिष्टुप् । ११ भुरिक्
त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः । २, ४—११ धैवतः ॥

॥ ३० ॥ ऋतं देवाय कृण्वते सवित्र इन्द्रायाहिघ्ने न रमन्त आपः । अ
रहर्यात्यक्तुरपां कियात्या प्रथमः सर्ग आसाम् ॥ १ ॥ यो वृत्राय सिनमत्राभ
ष्यत्प्र तं जनित्री विदुष उवाच । पथो रदन्तीरनु जोषमस्मै दिवेदिवे धुनयो यन्त्य
र्थम् ॥ २ ॥ ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षेऽधा वृत्राय प्र वधं जभार । मिहं वसा
उप हीमदुद्रोत्तिग्मायुधो अजयच्छत्रुमिन्द्रः ॥ ३ ॥ बृहस्पते तपुषाश्नेव विध्य वृक
द्वरसो असुरस्य वीरान् । यथा जघन्थ धृषता पुरा चिदेवा जहि शत्रुमस्माकमि
न्द्र ॥ ४ ॥ अव क्षिप दिवो अश्मानमुच्चा येन शत्रुं मन्दसानो निजूर्वाः । तोक
स्य सातौ तनयस्य भूरेरस्माँ अर्धं कृणुतादिन्द्र गोनाम् ॥ ५ ॥ १२ ॥ प्र
क्रतुं वृहथो यं वनुथो रध्रस्य स्थो यजमानस्य चोदौ । इन्द्रासोमा युवमस्माँ अवि
ष्टमस्मिन्भयस्थे कृणुतमु लोकम् ॥ ६ ॥ न मा तमन्न श्रमन्नोत तन्द्रन्न वोचाम म
सुनोतेति सोमम् । यो मे पृणाद्यो ददद्यो निबोधाद्यो मा सुन्वन्तमुप गोभिराय
॥ ७ ॥ सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून् । त्यं चिच्छर्धन्
तविषीयमाणमिन्द्रो हन्ति वृषभं शण्डिकानाम् ॥ ८ ॥ यो नः सनुत्य उत वा जि
घत्नुरभिख्याय तं तिगितेन विध्य । बृहस्पत आयुधैर्जेषि शत्रून्द्रुहे रीषन्तं प

इ राजन् ॥ ९ ॥ अस्माकेभिः सत्वभिः शूर शूरैर्वीर्या कृधि यानि ते कर्त्वानि ।
र्गभूव्रन्नर्नुधूपितासो हत्वी तेषामा भरा नो वसूनि ॥ १० ॥ तं वः शर्धं मा-
सुम्नयुर्गिरोप ब्रुवे नमसा दैव्यं जनम् । यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा अप-
ाचं श्रुत्यं दिवेदिवे ॥ ११ ॥ १३ ॥

॥ ३१ ॥ १—७ गृत्समद ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥ छन्दः—१, २,
जगती । ३ विराट् जगती । ५ निचृज्जगती । ६ त्रिष्टुप् । ७ पङ्क्तिः ॥
ः—१–५ निषादः । ६ धैवतः । ७ पञ्चमः ॥

॥ ३१ ॥ अस्माकं मित्रावरुणावतं रथमादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा । प्र
यो न पप्तन्वस्मनस्परि श्रवस्यवो हृषीवन्तो वनर्षदः ॥ १ ॥ अध स्मा न उद-
सजोषसो रथं देवासो अभि विक्षु वाजयुम् । यदाशवः पद्याभिस्तित्रतो रजः
व्याः सानौ जङ्घनन्त पाणिभिः ॥ २ ॥ उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिर्दिवः
न मारुतेन सुक्रतुः । अनु नु स्थात्यवृकाभिरूतिभी रथं महे सनये वाजसातये
॥ उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिस्त्वष्टा ग्नाभिः सजोषा जूजुवद्रथम् । इळा
बृहद्दिवोत रोदसी पूषा पुरंन्धिरश्विनावधा पती ॥ ४ ॥ उत त्ये देवी सु-
मिथूदृशोषासानक्ता जगतामपीजुवा । स्तुषे यद्वां पृथिवि नव्यसा वचः स्था-
वयस्त्रिवया उपस्तिरे ॥ ५ ॥ उत वः शंसमुशिजामिव श्मस्यहिर्बुध्न्योऽज
ादुत । त्रित ऋभुक्षाः सविता चनो दधेऽपां नपादाशुहेमा धिया शमि ॥ ६ ॥
वो वश्म्युद्यता यजत्रा अतक्षन्नायवो नव्यसे सम् । श्रवस्यवो वाजं चकानाः
तर्न रथ्यो अह धीतिमश्याः ॥ ७ ॥ १४ ॥

॥ ३२ ॥ १—८ गृत्समद ऋषिः ॥ १ द्यावापृथिव्यौ । २, ३ इन्द्रस्त्वष्टा
४, ५ राका । ६, ७ सिनीवाली । ८ लिङ्गोक्ता देवता ॥ छन्दः—१ जगती ।
निचृज्जगती । ४, ५ विराट् जगती । २ त्रिष्टुप् । ६ अनुष्टुप् । ७ विराडनु-
। ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३–५ निषादः । २ धैवतः । ६–८ गान्धारः ॥

॥ ३२ ॥ अस्य मे द्यावापृथिवी ऋतायतो भूतमवित्री वचसः सिषासतः ।
रायुः प्रतरं ते इदं पुर उपस्तुते वसूयुर्वां महो दधे ॥ १ ॥ मा नो गुह्या रिप
ोरहन्दभन्मा न आभ्यो रीरधो दुच्छुनाभ्यः । मा नो वि यौः सख्या विद्धि
नः सुम्नायता मनसा तत्त्वेमहे ॥ २ ॥ अहेळता मनसा श्रुष्टिमा वह दुहानां धेनुं

पिप्युषीमसश्चतम् । पद्याभिराशुं वचसा च वाजिनं त्वां हिनोमि पुरुहूत विश्व
॥ ३ ॥ राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना । सीव्यत्व
सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् ॥ ४ ॥ यास्ते राके सु मत
सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि । ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपो
सुभगे रराणा ॥ ५ ॥ सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा । जुषस्व हव्यमाहु
प्रजां देवि दिदिड्ढि नः ॥ ६ ॥ या सुबाहुः स्वङ्गुरिः सुषूमा बहुसूवरी ।
स्यै विश्पत्न्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन ॥ ७ ॥ या गुङ्गूर्या सिनीवाली या रा
या सरस्वती । इन्द्राणीमह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्तये ॥ ८ ॥ १५ ॥ ३ ॥

॥ ३३ ॥ १—१५ गृत्समद ऋषिः ॥ रुद्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५,
१३, १४, १५ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ६, १०, ११ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ८ त्रिष्टु
२ । ७ पङ्क्तिः । १२ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३-६, ८—११, १३—
धैवतः । २, ७, १२ पञ्चमः ॥

॥ ३३ ॥ आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु मा नः सूर्यस्य सन्दृशो युयोथाः
अभि नो वीरो अर्वति क्षमेत प्र जायेमहि रुद्र प्रजाभिः ॥ १ ॥ त्वादत्तेभी
शन्तमेभिः शतं हिमा अशीय भेषजेभिः । व्य१स्मद्द्वेषो वितरं व्यंहो व्यमीवाश्च
तयस्वा विषूचीः ॥ २ ॥ श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो
पर्षि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती रपसो युयोधि ॥ ३ ॥ मा त्वा
चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती । उन्नो वीराँ अर्पय भेषजेभिर्भिषक्त
त्वा भिषजां शृणोमि ॥ ४ ॥ हवीमभिर्हवते यो हविर्भिरव स्तोमेभी रुद्रं दिषीय
ऋदूदरः सुहवो मा नो अस्यै बभ्रुः सुशिप्रो रीरधन्मनायै ॥ ५ ॥ १६ ॥ उन्
ममन्द वृषभो मरुत्वान्त्वक्षीयसा वयसा नाधमानम् । घृणीव छायामरपा अशी
विवासेयं रुद्रस्य सुम्नं ॥ ६ ॥ क्व१स्य ते रुद्र मृळयाकुर्हस्तो यो अस्ति भेषजो
लाषः । अपभर्ता रपसो दैव्यस्याभी नु मा वृषभ चक्षमीथाः ॥ ७ ॥ प्र बभ्र
वृषभाय श्वितीचे महो महीं सुष्टुतिमीरयामि । नमस्या कल्मलीकिनं नमोभिर्गृण
मसि त्वेषं रुद्रस्य नाम ॥ ८ ॥ स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः शुक्रेभिः पिपि
हिरण्यैः । ईशानादस्य भुवनस्य भूरेर्न वा उ योषद्रुद्रादसुर्यम् ॥ ९ ॥ अर्हन्
बिभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम् । अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं
वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति ॥ १० ॥ १७ ॥ स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भ

पहन्तुमुग्रम् । मृळा जरित्रे रुद्र स्तवानोऽन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः ॥ ११ ॥
ाराशिंचात्पितरं वन्दमानं प्रति नानाम रुद्रोपयन्तम् । भूरेर्दातारं सत्पतिं गृणीषे
तस्त्वं भेषजा रास्यस्मे ॥ १२ ॥ या वो भेषजा मरुतः शुचीनि या शन्तमा
णो या मयोभु । यानि मनुरवृणीता पिता नस्ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि
१३ ॥ परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः परि त्वेषस्य दुर्मतिर्मही गात् । अव स्थिरा म-
द्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ ॥ १४ ॥ एवा बभ्रो वृषभ चेकितान
ा देव न हृणीषे न हंसि । हवनश्रुन्नो रुद्रेह बोधि बृहद्वदेम विदथे सुवीराः
१५ ॥ १८ ॥

॥ ३४ ॥ १—१५ गृत्समद ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ८, ९
वृज्जगती । २, १०, ११, १२, १३ विराड्जगती । ४, ५, ६, ७, १४ जगती ।
निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—१४ निषादः । १५ धैवतः ॥

॥ ३४ ॥ धारावरा मरुतो धृष्ण्वोजसो मृगा न भीमास्तविषीभिरर्चिनः ।
नयो न शुशुचाना ऋजीषिणो भृमिं धमन्तो अप गा अवृण्वत ॥ १ ॥ द्यावो
स्तृभिश्चितयन्त खादिनो व्य१भ्रिया न द्युतयन्त वृष्टयः । रुद्रो यद्वो मरुतो
मवक्षसो वृषाजनि पृश्न्याः शुक्र ऊधनि ॥ २ ॥ उक्षन्ते अश्वाँ अत्याँ इवा-
षु नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः । हिरण्यशिप्रा मरुतो दविध्वतः पृक्षं याथ
तीभिः समन्यवः ॥ ३ ॥ पृक्षे ता विश्वा भुवना ववक्षिरे मित्राय वा सदमा
रदानवः । पृषदश्वासो अनवभ्रराधस ऋजिप्यासो न वयुनेषु धूर्षदः ॥ ४ ॥
न्वभिर्धेनुभी रप्शदूधभिरध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजदृष्टयः । आ हंसासो न स्व-
ाणि गन्तन मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः ॥ ५ ॥ १९ ॥ आ नो ब्रह्माणि म-
ः समन्यवो नरां न शंसः सवनानि गन्तन । अश्वामिव पिप्यत धेनुमूधनि क-
धियं जरित्रे वाजपेशसम् ॥ ६ ॥ तं नो दात मरुतो वाजिनं रथ आपानं ब्रह्म
तयद्दिवेदिवे । इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनिं मेधामरिष्टं दुष्टरं सहः ॥ ७ ॥
ञ्जते मरुतो रुक्मवक्षसोऽश्वान्रथेषु भग आ सुदानवः । धेनुर्न शिश्वे स्वसरे-
पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम् ॥ ८ ॥ यो नो मरुतो वृकताति मर्त्यो
र्दधे वसवो रक्षता रिषः । वर्तयत तपुषा चक्रियाभि तमव रुद्रा अशसो हन्त-
वधः ॥ ९ ॥ चित्रं तद्वो मरुतो याम चेकिते पृश्न्या यदूधरप्यापयो दुहुः ।
निदे नवमानस्य रुद्रियास्त्रितं जराय जुरतामदाभ्याः ॥ १० ॥ २० ॥ ता-
महो मरुत एवयाव्नो विष्णोरेषस्य प्रभृथे हवामहे । हिरण्यवर्णान्ककुहान्य-

तस्तुचो ब्रह्मण्यन्तः शंस्यं राधं ईमहे ॥ ११ ॥ ते दशंग्वाः प्रथमा यज्ञमूहिरे
नों हिन्वन्तूषसो व्युंष्टिषु । उषा न रामीररुणैरपोर्णुते महो ज्योतिषा शुचता गो
अर्णसा ॥ १२ ॥ ते क्षोणीभिररुणेभिर्नाञ्जिभी रुद्रा ऋतस्य सदनेषु वावृधुः
निमेघमाना अत्येन पाजसा सुश्चन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम् ॥ १३ ॥ ताँ इयान
महि वरूथमूतय उप घेदेना नमसा गृणीमसि । त्रितो न यान्पञ्च होतृनभिष्ट
आववर्तदवराञ्चक्रियावसे ॥ १४ ॥ यया रध्रं पारयथात्यंहो यया निदो मुञ्च
वन्दितारम् । अर्वाची सा मरुतो या व ऊतिरो षु वाश्रेव सुमतिर्जिगातु ॥ १५ ॥ २१

॥ ३५ ॥ १–१५ गृत्समद ऋषिः ॥ अपान्नपाद्देवता ॥ छन्दः–१, ४,
७, ९, १०, १२, १३, १५ निचृत्त्रिष्टुप् । ११ विराट् त्रिष्टुप् । १४ त्रिष्टुप्
२, ३, ८ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ४, ६, ७, ९–१५,
वतः । २, ३, ८, ५ पञ्चमः ॥

॥ ३५ ॥ उपेमसृक्षि वाजयुर्वचस्यां चनो दधीत नाद्यो गिरो मे । अपां
पादाशुहेमा कुवित्स सुपेशसस्करति जोषिषद्धि ॥ १ ॥ इमं स्वस्मै हृद आ
तष्टं मन्त्रं वोचेमकुविदस्य वेदत् । अपां नपादसुर्यस्य मह्ना विश्वान्यर्यो भुव
जजान ॥ २ ॥ समन्या यन्त्युप यन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यः पृणन्ति । तमू शु
शुचयो दीदिवांसमपां नपातं परि तस्थुरापः ॥ ३ ॥ तमस्मेरा युवतयो युवानं
मर्मृज्यमानाः परि यन्त्यापः । स शुक्रेभिः शिक्वभी रेवदस्मे दीदायानिध्मो घृत
र्णिगप्सु ॥ ४ ॥ अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय नारीर्देवाय देवीर्दिधिषन्त्यन्नम् । कृ
इवोप हि प्रसर्स्रे अप्सु स पीयूषं धयति पूर्वसूनाम् ॥ ५ ॥ २२ ॥ अश्वस्य
जनिमास्य च स्वर्द्रुहो रिषः सम्पृचः पाहि सूरीन् । आमासु पूर्षु परो अप्रमृ
नारातयो वि नशन्नानृतानि ॥ ६ ॥ स्व आ दमे सुदुघा यस्य धेनुः स्वधां पी
य सुभ्वन्नमत्ति । सो अपां नपादूर्जयन्नप्स्व१न्तर्वसुदेयाय विधते वि भाति ॥ ७
यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन ऋतावाजस्र उर्विया विभाति । वया इदन्या भुव
न्यस्य प्र जायन्ते वीरुधश्च प्रजाभिः ॥ ८ ॥ अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थं जिह्मा
मूर्ध्वो विद्युतं वसानः । तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्तीर्हिरण्यवर्णाः परि यन्ति य
॥ ९ ॥ हिरण्यरूपः स हिरण्यसन्दृगपां नपात्सेदु हिरण्यवर्णः । हिरण्यया
रि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै ॥ १० ॥ २३ ॥ तदस्यानीकमुत चारु ना
पीच्यं वर्धते नप्तुरपाम् । यमिन्धते युवतयः समित्था हिरण्यवर्णं घृतमन्नमस्य ॥ १

मै बहूनामवमाय सख्यें यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः । सं सानु मार्ज्मि दिधि-
मि बिल्मैर्दधाम्यन्नैः परि वन्द ऋग्भिः ॥ १२ ॥ स ईं वृषाजनयत्तासु गर्भं
ईं शिशुर्धयति तं रिहन्ति । सो अपां नपादनभिम्लातवर्णोऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष
१३ ॥ अस्मिन्पदे परमे तस्थिवांसमध्वस्माभिर्विश्वहा दीदिवांसम् । आपो नप्त्रे
मन्नं वहन्तीः स्वयमत्कैः परि दीयन्ति यह्वीः ॥ १४ ॥ अयांसमग्ने सुक्षितिं
ायायांसमु मघवद्भ्यः सुवृक्तिम् । विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे
ीराः ॥ १५ ॥ २४ ॥

॥ ३६ ॥ १–६ गृत्समद ऋषिः ॥ १ इन्द्रो मधुश्च । २ मरुतो माधवश्च । ३
ष्टा शुक्रश्च । ४ अग्निः शुचिश्च । ५ इन्द्रो नभश्च । ६ मित्रावरुणौ नभस्य-
देवता ॥ छन्दः–१, ४ स्वराट् त्रिष्टुप् । ५, ६ भुरिक् त्रिष्टुप् । २, ३ जगती ॥
रः–१, ४–६ धैवतः । २, ३ निषादः ॥

॥ ३६ ॥ तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ट गा अपोऽधुक्षन्त्सीमविभिरद्रिभिर्नरः ।
न्द्र स्वाहा प्रहुतं वषट्कृतं होत्रादा सोमं प्रथमो य ईशिषे ॥ १ ॥ यज्ञैः सम्मि-
ः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामञ्छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत । आसद्या बर्हिर्भरतस्य
वः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः ॥ २ ॥ अमेव नः सुहवा आ हि गन्त-
नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन । अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसस्त्वष्टर्देवेभि-
र्नेभिः सुमद्गणः ॥ ३ ॥ आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि चोशन्होतर्नि षदा
निषु त्रिषु । प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात्तव भागस्य तृप्णुहि
४ ॥ एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः । तुभ्यं सुतो
वन्तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत्पिब ॥ ५ ॥ जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य
सत्तो होता निविदः पूर्व्या अनु । अच्छा राजाना नम एत्यावृतं प्रशास्त्रादा
वतं सोम्यं मधु ॥ ६ ॥ २५ ॥ ७ ॥

॥ ३७ ॥ १–६ गृत्समद ऋषिः ॥ १–४ द्रविणोदाः । ५ अश्विनौ । ६
ग्निश्च देवता ॥ छन्दः–१, ५ निचृज्जगती । २ जगती । ३ विराड् जगती । ४,
भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ स्वर–१–३, ५ निषादः । ४, ६ धैवतः ॥

॥ ३७ ॥ मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसोऽध्वर्यवः स पूर्णां वष्ट्यासिचम् ।
स्मा एतं भरत तद्वशो ददिर्होत्रात्सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः ॥ १ ॥ यमु

पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो दुदिर्यो नाम पत्यते । अध्वर्युभिः प्रस्थितं सो
मधु पोत्रात्सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः ॥ २ ॥ मेद्यन्तु ते वह्नयो येभिरीयसे
रिषण्यन्वीळयस्वा वनस्पते । आयूया धृष्णो अभिगूर्या त्वं नेष्ट्रात्सोमं द्रविणो
पिब ऋतुभिः ॥ ३ ॥ अपाद्धोत्रादुत पोत्रादमत्तोत नेष्ट्रादजुषत प्रयो हितम् । तु
पात्रममृक्तममर्त्यं द्रविणोदाः पिबतु द्राविणोदसः ॥ ४ ॥ अर्वाञ्चमद्य यय्यं नृ
हणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् । पृङ्क्तं हवींषि मधुना हि कं गतमथा सो
पिबतं वाजिनीवसू ॥ ५ ॥ जोष्यग्ने समिधं जोष्याहुतिं जोषि ब्रह्म जन्यं जो
सुष्टुतिम् । विश्वेभिर्विश्वाँ ऋतुना वसो मह उशन्देवाँ उशतः पायया हविः ॥ ६ ॥

॥३८॥ १–११ गृत्समद ऋषिः ॥ सविता देवता ॥ छन्दः–१,५ निचृत् त्रिष्टु
२ त्रिष्टुप् । ३, ४, ६, १०, ११ विराट् त्रिष्टुप् । ७, ८ स्वराट् पङ्क्तिः । ९ भुरि
पङ्क्तिः ॥ स्वर–१–६, १०, ११ धैवतः । ७–९ पञ्चमः ॥

॥ ३८ ॥ उदु ष्य देवः सविता सवाय शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात् ।
देवेभ्यो वि हि धाति रत्नमथाभजद्वीतिहोत्रं स्वस्तौ ॥ १ ॥ विश्वस्य हि श्रुष्
देव ऊर्ध्वः प्र बाहवा पृथुपाणिः सिसर्ति । आपश्चिदस्य व्रत आ निमृग्रा अ
चिद्वातो रमते परिज्मन् ॥ २ ॥ आशुभिश्चिद्यान्वि मुचाति नूनमरीरमदतम
चिदेतोः । अह्यर्षूणां चिन्न्ययाँ अविष्यामनु व्रतं सवितुर्मोक्यागात् ॥ ३ ॥ पु
समव्यद्वितंतं वयन्ती मध्या कर्तोर्न्यधाच्छक्म धीरः । उत्संहायास्थाद्व्यृतूँरदध
रमतिः सविता देव आगात् ॥ ४ ॥ नानौकांसि दुर्यो विश्वमायुर्वि तिष्ठते प्रभ
शोको अग्नेः । ज्येष्ठं माता सूनवे भागमाधादन्वस्य केतमिषितं सवित्रा ॥५॥
समाववर्ति विष्ठितो जिगीषुर्विश्वेषां काममचरतामभूत् । शश्वाँ अपो विकृतं
त्व्यागादनु व्रतं सवितुर्दैव्यस्य ॥ ६ ॥ त्वया हितमप्यमप्सु भागं धन्वान्वा मृ
यसो वि तस्थुः । वनानि विभ्यो न किरस्य तानि व्रता देवस्य सवितुर्मिनन्ति ॥७
याद्राध्यं वरुणो योनिमप्यमनिशितं निमिषि जर्भुराणः । विश्वो मार्ताण्डो व्रज
पशुर्गात्स्थशो जन्मानि सविता व्याकः ॥ ८ ॥ न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो
तमर्यमा न मिनन्ति रुद्रः । नारातयस्तमिदं स्वस्ति हुवे देवं सवितारं नमोभि
॥ ९ ॥ भगं धियं वाजयन्तः पुरंधिं नराशंसो ग्नास्पतिर्नो अव्याः । आये
मस्य सङ्गथे रयीणां प्रिया देवस्य सवितुः स्याम ॥ १० ॥ अस्मभ्यं तदि
अद्भ्यः पृथिव्यास्त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात् । शं यत्स्तोतृभ्य आपये
वात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे ॥ ११ ॥ ३ ॥

॥ ३९ ॥ १—८ गृत्समद ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१ निचृ-
ष्टुप्। ३ विराट् त्रिष्टुप्। ४, ७, ८ त्रिष्टुप्। २ भुरिक् पङ्क्तिः। ५, ६ स्वराट्
ङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ७, ८ धैवतः। २, ५, ६ पञ्चमः ॥

॥ ३९ ॥ ग्रावा॑णेव॒ तदिदर्थं॑ जरेथे॒ गृध्रे॑व वृ॒क्षं नि॑धि॒मन्त॒मच्छ॑। ब्र॒ह्माणे॑व
दर्थ उक्थ॒शासा॑ दू॒तेव॒ हव्या॒ जन्या॑ पुरु॒त्रा ॥ १ ॥ प्रा॒त॒र्यावा॑णा र॒थ्ये॑व वी॒रा-
वं य॒मा वर॒मा सचे॑थे। मेने॑ इव त॒न्वा॒३॒॑ शुम्भ॑माने॒ दम्प॑तीव क्रतु॒विदा॒ जने॑षु ॥२॥
ङ्गे॑व नः प्रथ॒मा ग॑न्तम॒र्वाक् श॒फावि॑व॒ जर्भु॑राणा॒ तरो॑भिः। च॒क्र॒वा॒केव॒ प्रति॒ वस्तो॑-
स्रा॒र्वाञ्चा॑ यातं र॒थ्ये॑व शक्रा ॥ ३ ॥ ना॒वेव॑ नः पारयतं यु॒गेव॒ नभ्ये॑व न उप॒-
वे॑ प्र॒धीव॑। श्वाने॑व नो॒ अरि॑षण्या त॒नूनां॒ खृग॑लेव वि॒स्रसः॑ पातम॒स्मान् ॥४॥
तेवा॒जुर्या॑ न॒द्ये॑व री॒तिर॒क्षी इ॑व॒ चक्षु॒षा या॑तम॒र्वाक्। हस्ता॑विव त॒न्वे॒३॒॑ शम्भ॑विष्ठा
दे॑व नो नयतं॒ वस्यो॒ अच्छ॑ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ओष्ठा॑विव॒ मध्वा॒स्ने वद॑न्ता॒ स्तना॑-
व पिप्यतं॒ जी॒वसे॑ नः। नासे॑व नस्त॒न्वो॑ रक्षि॒तारा॒ कर्णा॑विव सु॒श्रुता॑ भूतम॒स्मे
६ ॥ हस्ते॑व श॒क्तिम॒भि स॑न्द॒दी नः॒ क्षामे॑व नः॒ सम॑जतं॒ रजां॑सि। इ॒मा गिरो॑
श्विना युष्म॒यन्तीः॒ क्ष्णोत्रे॑णेव॒ स्वधि॑ति॒ सं शि॑शीतम् ॥ ७ ॥ ए॒तानि॑ वामश्वि-
वर्ध॑नानि॒ ब्रह्म॒ स्तोमं॑ गृत्सम॒दासो॑ अक्रन्। तानि॑ नरा जुजुषा॒णोप॑ यातं बृह-
दे॑म वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑ ॥ ८ ॥ ५ ॥

॥ ४० ॥ १—६ गृत्समद ऋषिः ॥ १—६ सोमापूषणावदितिश्च देवता ॥
न्दः—१, ३ त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप्। ५, ६ निचृत् त्रिष्टुप्। ४ स्वराट् पङ्क्तिः ॥
रः—१—३, ५, ६ धैवतः। ४ पञ्चमः ॥

॥ ४० ॥ सोमा॑पूषणा॒ जन॑ना रयी॒णां जन॑ना दि॒वो जन॑ना पृथि॒व्याः। जा॒तौ
श्व॑स्य॒ भुव॑नस्य गो॒पौ दे॒वा अ॑कृण्वन्न॒मृत॑स्य॒ नाभि॑म् ॥ १ ॥ इ॒मौ दे॒वौ जाय॑मानौ
न्ते॒मौ तमां॑सि गूहता॒मजु॑ष्टा। आ॒भ्यामिन्द्रः॑ प॒क्वमा॒मास्व॒न्तः सोमा॒पूष॒भ्यां॑ जन-
स्रिया॑सु ॥ २ ॥ सोमा॑पूषणा॒ रज॑सो वि॒मानं॑ स॒प्तच॑क्रं॒ रथ॒मवि॑श्वमिन्वम्। वि॒षू॒-
मन॑सा यु॒ज्यमा॑नं॒ तं जि॑न्वथो वृषणा॒ पञ्च॑रश्मिम् ॥ ३ ॥ दि॒व्य१॒॑न्यः सद॑नं
उ॒च्चा पृ॑थि॒व्याम॒न्यो अध्य॒न्तरि॑क्षे। ताव॒स्मभ्यं॑ पुरु॒वारं॑ पु॒रु॒क्षुं रा॒यस्पोषं॒ वि
ता॑ नाभि॑म॒स्मे ॥ ४ ॥ विश्वा॑न्य॒न्यो भुव॑ना ज॒जान॒ विश्व॑म॒न्यो अ॑भि॒चक्षा॑ण
ति। सोमा॑पूषणा॒वव॑तं॒ धियं॑ मे यु॒वाभ्यां॒ विश्वाः॒ पृत॑ना जयेम ॥ ५ ॥ धियं॑ पू॒षा
न्वतु विश्वमि॒न्वो र॒यिं सोमो॑ रयि॒पति॑र्दधातु। अव॑तु दे॒व्यदि॑तिरन॒र्वा बृ॒हद्व॑-
म वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑ ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ ४१ ॥ १-२१ गृत्समद ऋषिः ॥ १, २ वायुः । ३ इन्द्रवायू । ४-
मित्रावरुणौ । ७-९ अश्विनौ । १०-१२ इन्द्रः । १३-१५ विश्वे देवाः । १६-१
सरस्वती । १९-२१ द्यावापृथिव्यौ हविर्धाने वा देवता ॥ छन्दः-१, ३, ४,
१०, ११, १३, १५, १९, २०, २१ गायत्री । २, ५, ९, १२, १४, निचृ
गायत्री । ७ त्रिपाद्गायत्री । ८ विराड् गायत्री । १६ अनुष्टुप् । १७ उष्णिक्
१८ बृहती ॥ स्वरः-१-१५, १९-२१ षड्जः । १६ गान्धारः । १७ ऋषभः
१८ मध्यमः ॥

॥ ४१ ॥ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि । नियुत्वान्त्सोमपीत
॥ १ ॥ नियुत्वान्वायवा गह्ययं शुक्रो अयामि ते । गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥ २
शुक्रस्याद्य गवाशिर इन्द्रवायू नियुत्वतः । आ यातं पिबतं नरा ॥ ३ ॥ अयं
मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम् ॥ ४ ॥ राजानावनभि
द्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आसाते ॥ ५ ॥७॥ ता सम्राजा घृतासुती आ
दित्या दानुनस्पती । सचेते अनवह्वरं ॥ ६ ॥ गोमदू षु नासत्याश्वावद्यातमश्विना
वर्ती रुद्रा नृपाय्यम् ॥ ७ ॥ न यत्परो नान्तर आदधर्षद्वृषण्वसू । दुःशंसो मर्त्य
रिपुः ॥ ८ ॥ ता न आ वोळ्हमश्विना रयिं पिशङ्गसन्दृशम् । धिष्ण्या वरि
विदम् ॥ ९ ॥ इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणि
॥ १० ॥ ८ ॥ इन्द्रश्च मृळयाति नो न नः पश्चादघं नशत् । भद्रं भवाति
पुरः ॥ ११ ॥ इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत् । जेता शत्रून्विचर्षणि
॥ १२ ॥ विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ॥१
तीव्रो वो मधुमाँ अयं शुनहोत्रेषु मत्सरः । एतं पिबत काम्यम् ॥ १४ ॥ इन्द्रज्ये
ष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् ॥ १५ ॥ ९ ॥ अम्बि
मे नदीतमे देवितमे सरस्वति । अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि ॥१
त्वे विश्वा सरस्वति श्रितायूंषि देव्याम् । शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदि
नः ॥ १७ ॥ इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति । या ते मन्म गृत्समदा
तावरि प्रिया देवेषु जुह्वति ॥ १८ ॥ प्रेतां यज्ञस्य शम्भुवा युवामिदा वृणीमहे
अग्निं च हव्यवाहनम् ॥ १९ ॥ द्यावा नः पृथिवी इमं सिध्रमद्य दिविस्पृश
यज्ञं देवेषु यच्छताम् ॥ २० ॥ आ वामुपस्थमद्रुहा देवाः सीदन्तु यज्ञियाः । इह
सोमपीतये ॥ २१ ॥ १० ॥

॥ ४२ ॥ १–३ गृत्समद ऋषिः ॥ कपिञ्जल इवेन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१,२,३
ष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४२ ॥ कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम् । सुमङ्गलश्च
कुने भवासि मा त्वा का चिदभिभा विश्व्या विदत् ॥ १ ॥ मा त्वा श्येन उ-
धीन्मा सुपर्णो मा त्वा विददिषुमान्वीरो अस्ता । पित्र्यामनु प्रदिशं कनिक्रद-
सुमङ्गलो भद्रवादी वदेह ॥ २ ॥ अव क्रन्द दक्षिणतो गृहाणां सुमङ्गलो भद्रवादी
कुन्ते । मा नः स्तेन ईशत माघशंसो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ ४३ ॥ १–३ गृत्समद ऋषिः ॥ कपिञ्जल इवेन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ ज-
ती । ३ निचृज्जगती । २ भुरिगतिशक्वरी ॥ स्वरः–१, ३ निषादः । २ पञ्चमः ॥

॥ ४३ ॥ प्रदक्षिणिदभि गृणन्ति कारवो वयो वदन्त ऋतुथा शकुन्तयः ।
भे वाचौ वदति सामगा इव गायत्रं च त्रैष्टुभं चानु राजति ॥ १ ॥ उद्गातेव श-
ने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि । वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्या
र्वतो नः शकुने भद्रमा वद विश्वतो नः शकुने पुण्यमा वद ॥ २ ॥ आवदंस्त्वं
कुने भद्रमा वद तूष्णीमासीनः सुमतिं चिकिद्धि नः । यदुत्पतन्वदसि कर्करि-
था बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ३ ॥ १२ ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ इति द्वितीयं मण्डलं समाप्तम् ॥

---

# अथतृतीय मण्डलम् ॥

---

॥ १ ॥ १–१३ गाथिनो विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१
३, ४, ५, ६, ११, १२, १५, १७, १९, २० निचृत्त्रिष्टुप् । २, ६, ७, १३, १
त्रिष्टुप् । १०, २१ विराट् त्रिष्टुप् । २२ ज्योतिष्मती त्रिष्टुप् । ८, १६, २
स्वराट् पङ्क्तिः । १८ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–७, ९–१५, १७, १९—२
धैवतः । ८, १६, १८, २३ पञ्चमः ॥

॥ १ ॥ सोमस्य मा तवसं वक्ष्यग्ने वह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै । देवाँ अच्छ
दीद्यद्युञ्जे अद्रिं शमाये अग्ने तन्वं जुषस्व ॥ १ ॥ प्राञ्चं यज्ञं चकृम वर्धत
गीः समिद्भिरग्निं नमसा दुवस्यन् । दिवः शशासुर्विदथा कवीनां गृत्साय चित्त
वसे गातुमीषुः ॥ २ ॥ मयो दधे मेधिरः पूतदक्षो दिवः सुबन्धुर्जनुषा पृथिव्याः
अविन्दन्नु दर्शतमप्स्व१न्तर्देवासो अग्निमपसि स्वसॄणाम् ॥ ३ ॥ अवर्धयन्त्सुभ
सप्त यह्वीः श्वेतं जज्ञानमरुषं महित्वा । शिशुं न जातमभ्यारुरश्वा देवासो अग्नि
जनिमन्वपुष्यन् ॥ ४ ॥ शुक्रेभिरङ्गै रज आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभि
पवित्रैः । शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियो मिमीते बृहतीरनूनाः ॥ ५ ॥ १३
वव्राजा सीमनदतीरदब्धा दिवो यह्वीरवसाना अनग्नाः । सना अत्र युवतयः स
योनीरेकं गर्भं दधिरे सप्त वाणीः ॥ ६ ॥ स्तीर्णा अस्य संहतो विश्वरूपा घृतस
योनौ स्रवथे मधूनाम् । अस्थुरत्र धेनवः पिन्वमाना मही दस्मस्य मातरा समीच
॥ ७ ॥ बभ्राणः सूनो सहसो व्यद्यौद्दधानः शुक्रा रभसा वपूंषि । श्चोतन्ति धार
मधुनो घृतस्य वृषा यत्र वावृधे काव्येन ॥ ८ ॥ पितुश्चिदूधर्जनुषा विवेद व्यस
धारा असृजद्वि धेनाः । गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिर्दिवो यह्वीभिर्न गुहा ब
भूव ॥ ९ ॥ पितुश्च गर्भं जनितुश्च बभ्रे पूर्वीरेको अधयत्पीप्यानाः । वृष्णे सपत्न
शुचये सबन्धू उभे अस्मै मनुष्ये३नि पाहि ॥ १० ॥ १४ ॥ उरौ महाँ अनिबाध
ववर्धापो अग्निं यशसः सं हि पूर्वीः । ऋतस्य योनावशयद्दमूना जामीनामग्नि
पसि स्वसॄणाम् ॥ ११ ॥ अक्रो न बभ्रिः समिथे महीनां दिदृक्षेयः सूनवे भाऋ

ीकः। उदुस्रिया जनिता यो जजानापां गर्भो नृतमो यह्वो अग्निः ॥ १२ ॥
ापां गर्भं दर्शतमोषधीनां वना जजान सुभगा विरूपम्। देवासश्चिन्मनसा सं हि
ग्मुः पनिष्ठं जातं तवसं दुवस्यन् ॥ १३ ॥ बृहन्त इद्भानवो भाऋजीकमग्निं स-
न्त विद्युतो न शुक्राः। गुहेव वृद्धं सदसि स्वे अन्तरपार ऊर्वे अमृतं दुहानाः
१४ ॥ ईळे च त्वा यजमानो हविर्भिरीळे सखित्वं सुमतिं निकामः। देवैरवो
ममीहि सं जरित्रे रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ॥ १५ ॥ १५ ॥ उपक्षेतारस्तव
प्रणीतेऽग्ने विश्वानि धन्या दधानाः। सुरेतसा श्रवसा तुञ्जमाना अभि ष्याम
तनायूँरदेवान् ॥ १६ ॥ आ देवानामभवः केतुरग्ने मन्द्रो विश्वानि काव्यानि
द्वान्। प्रति मर्ताँ अवासयो दमूना अनु देवान्रथिरो यासि साधन् ॥ १७ ॥
दुरोणे अमृतो मर्त्यानां राजा ससाद विदथानि साधन्। घृतप्रतीक उर्विया
द्यौदग्निर्विश्वानि काव्यानि विद्वान् ॥ १८ ॥ आ नो गहि सख्येभिः शिवे-
र्महान्महीभिरूतिभिः सरण्यन्। अस्मे रयिं बहुलं सन्तरुत्रं सुवाचं भागं यशसं
धी नः ॥ १९ ॥ एता ते अग्ने जनिमा सनानि प्र पूर्व्याय नूतनानि वोचं। महा-
त वृष्णे सवना कृतेमा जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदाः ॥ २० ॥ जन्मञ्जन्मन्
हितो जातवेदा विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्रः। तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे
ौमनसे स्याम ॥ २१ ॥ इमं यज्ञं सहसावन् त्वं नो देवत्रा धेहि सुक्रतो ररा-
ः। प्र यंसि होतर्बृहतीरिषो नोऽग्ने महि द्रविणमा यजस्व ॥ २२ ॥ इळामग्ने
रुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने
ा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ २३ ॥ १६ ॥

॥ २ ॥ १–१५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः–१,
, १० जगती। २, ४, ८, ६, ९, ११ विराड् जगती। ५, ७, १२, १३, १४,
५ निचृज्जगती च ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ २ ॥ वैश्वानराय धिषणामृतावृधे घृतं न पूतमग्नये जनामसि। द्विता हो-
ारं मनुषश्च वाघतो धिया रथं न कुलिशः समृण्वति ॥ १ ॥ स रोचयज्जनुषा
ोदसी उभे स मात्रोरभवत्पुत्र ईड्यः। हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितो दूळभो वि-
ामतिथिर्विभावसुः ॥ २ ॥ क्रत्वा दक्षस्य तरुषो विधर्मणि देवासो अग्निं जनयन्त
चित्तिभिः। रुरुचानं भानुना ज्योतिषा महामत्यं न वाजं सनिष्यन्नुप ब्रुवे ॥ ३ ॥
ा मन्द्रस्य सनिष्यन्तो वरेण्यं वृणीमहे अह्रयं वाजमृग्मियम्। रातिं भृगूणामु-

शिजं कविक्रतुमग्निं राजन्तं दिव्येन शोचिषा ॥ ४ ॥ अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो
जना वाजश्रवसमिह वृक्तबर्हिषः । यतस्रुचः सुरुचं विश्वदेव्यं रुद्रं यज्ञानां साध-
दिष्टिमपसाम् ॥ ५ ॥ १७ ॥ पावकशोचे तव हि क्षयं परि होतर्यज्ञेषु वृक्तबर्हिषो
नरः । अग्ने दुव इच्छमानास आप्यमुपासते द्रविणं धेहि तेभ्यः ॥ ६ ॥ आ रोदसी
अपृणदा स्वर्महज्जातं यदेनमपसो अधारयन् । सो अध्वराय परि णीयते कविर-
त्यो न वाजसातये चनोहितः ॥ ७ ॥ नमस्यत हव्यदातिं स्वध्वरं दुवस्यत दम्यं
जातवेदसम् । रथीर्ऋतस्य बृहतो विचर्षणिरग्निर्देवानामभवत्पुरोहितः ॥ ८ ॥
तिस्रो यह्वस्य समिधः परिज्मनोऽग्नेरपुनन्नुशिजो अमृत्यवः । तासामेकामदधुर्मर्त्ये
भुजमु लोकमु द्वे उप जामिमीयतुः ॥ ९ ॥ विशां कविं विश्पतिं मानुषीरिषः सं
सीमकृण्वन्त्स्वधितिं न तेजसे । स उद्वतो निवतो याति वेविषत्स गर्भमेषु भुवनेषु
दीधरत् ॥ १० ॥ १८ ॥ स जिन्वते जठरेषु प्रजज्ञिवान्वृषा चित्रेषु नानदन्न सिंहः ।
वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे ॥ ११ ॥ वैश्वानर
प्रत्नथा नाकमारुहद्दिवस्पृष्ठं भन्दमानः सुमन्मभिः । स पूर्ववज्जनयञ्जन्तवे धनं
समानमज्मं पर्येति जागृविः ॥ १२ ॥ ऋतावानं यज्ञियं विप्रमुक्थ्यमा यं दधे
मातरिश्वा दिवि क्षयम् । तं चित्रयामं हरिकेशमीमहे सुदीतिमग्निं सुविताय नव्यसे
॥ १३ ॥ शुचिं न यामन्निषिरं स्वर्दृशं केतुं दिवो रोचनस्थामुषर्बुधम् । अग्निं
मूर्धानं दिवो अप्रतिष्कुतं तमीमहे नमसा वाजिनं बृहत् ॥ १४ ॥ मन्द्रं होतारं
शुचिमद्वयाविनं दमूनसमुक्थ्यं विश्वचर्षणिम् । रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनु-
र्हितं सदमिद्राय ईमहे ॥ १५ ॥ १९ ॥

॥ ३ ॥ १–११ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः–१,
५ निचृज्जगती । २, ३, ४, ६, ८, ९ जगती । ७, १० विराट् जगती । ११
भुरिक् पङ्क्तिः । स्वरः–१–१० निषादः । ११ पञ्चमः ॥

॥ ३ ॥ वैश्वानराय पृथुपाजसे विपो रत्ना विधन्त धरुणेषु गातवे । अग्निर्हि
देवाँ अमृतो दुवस्यत्यथा धर्माणि सनता न दूदुषत् ॥ १ ॥ अन्तर्दूतो रोदसी
दस्म ईयते होता निषत्तो मनुषः पुरोहितः । क्षयं बृहन्तं परि भूषति द्युभिर्देवेभि-
रग्निरिषितो धियावसुः ॥ २ ॥ केतुं यज्ञानां विदथस्य साधनं विप्रासो अग्निं
महयन्त चित्तिभिः । अपांसि यस्मिन्नधि सन्दधुर्गिरस्तस्मिन्त्सुम्नानि यजमान आ
चके ॥ ३ ॥ पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम्

विवेश रोदसी भूरिवर्पसा पुरुप्रियो भन्दते धामभिः कविः ॥ ४ ॥ चन्द्रमग्निं च-
रथं हरिव्रतं वैश्वानरमप्सुषदं स्वर्विदम् । विगाहं तूर्णिं तविषीभिरावृतं भूर्णिं
सं इह सुश्रियं दधुः ॥ ५ ॥ २० ॥ अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च जन्तुभिस्तन्वानो
पुरुपेशसं धिया । रथीरन्तरीयते साधदिष्टिभिर्जीरो दमूना अभिशस्तिचातनः
६ ॥ अग्ने जरस्व स्वपत्य आयुन्यूर्जा पिन्वस्व समिषो दिदीहि नः । वयांसि
न्व बृहतश्च जागृव उशिग्देवानामसि सुक्रतुर्विपाम् ॥ ७ ॥ विश्पतिं यह्वमति-
नरः सदा यन्तारं धीनामुशिजं च वाघताम् । अध्वराणां चेतनं जातवेदसं
शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे ॥ ८ ॥ विभावा देवः सुरणः परि क्षितीरग्निर्ब-
शवसा सुमद्रथः । तस्य व्रतानि भूरिपोषिणो वयमुप भूषेम दम आ सुवृक्ति-
: ॥ ९ ॥ वैश्वानर तव धामान्या चके येभिः स्वर्विदभवो विचक्षण । जात
पृणो भुवनानि रोदसी अग्ने ता विश्वा परिभूरसि त्मना ॥ १० ॥ वैश्वान-
य दंसनाभ्यो बृहदरिणादेकः स्वपस्यया कविः । उभा पितरा महयन्नजायता-
द्यावापृथिवी भूरिरेतसा ॥ ११ ॥ २१ ॥

॥ ४ ॥ १—११ विश्वामित्र ऋषिः ॥ आप्रियो देवता ॥ छन्दः—१,
७ स्वराट् पङ्क्तिः । २, ३, ५ त्रिष्टुप् । ६, ८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ९
राट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ७ पञ्चमः । २, ३, ५, ६, ८—११ धैवतः ॥

॥ ४ ॥ समित्संमित्सुमना बोध्यस्मे शुचाशुचा सुमतिं रासि वस्वः । आ
देवान्यजथाय वक्षि सखा सखीन्त्सुमना यक्ष्यग्ने ॥ १ ॥ यं देवासस्त्रि-
रायजन्ते दिवेदिवे वरुणो मित्रो अग्निः । सेमं यज्ञं मधुमन्तं कृधी नस्तनूनपा-
तयोनिं विधन्तम् ॥ २ ॥ प्र दीधितिर्विश्ववारा जिगाति होतारमिळः प्रथमं य-
ध्यै । अच्छा नमोभिर्वृषभं वन्दध्यै स देवान्यक्षदिषितो यजीयान् ॥ ३ ॥ ऊ-
र्ध्वो वां गातुरध्वरे अकार्यूर्ध्वा शोचींषि प्रस्थिता रजांसि । दिवो वा नाभा न्य-
दि होता स्तृणीमहि देवव्यचा वि बर्हिः ॥ ४ ॥ सप्त होत्राणि मनसा वृणाना
वन्तो विश्वं प्रति यन्नृतेन । नृपेशसो विदथेषु प्र जाता अभी३मं यज्ञं वि चरन्त
र्वीः ॥ ५ ॥ २२ ॥ आ भन्दमाने उषसा उपाके उत स्मयेते तन्वा३ विरूपे ।
था नो मित्रो वरुणो जुजोषदिन्द्रो मरुत्वाँ उत वा महोभिः ॥ ६ ॥ दैव्या हो-
रा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति । ऋतं शंसन्त ऋतमित्त आ-
नु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः ॥ ७ ॥ आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्म-

नुष्येभिरग्निः । सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक् तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥ ८
तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व । यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्ष
युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥ ९ ॥ वनस्पतेऽव सृजोप देवानग्निर्हविः शमित
सूदयाति । सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद ॥ १०
आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः । बर्हिर्न आस्तामदिति
सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥ ११ ॥ २३ ॥

॥ ५ ॥ १—११ विश्वामित्र ऋषिः अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २, १
भुरिक् पङ्क्तिः । ३ पङ्क्तिः । ६ स्वराट् पङ्क्तिः । ४ त्रिष्टुप् । ५, ७, १० निचृत्त्रि
ष्टुप् । ८,९ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–३,६,११ पञ्चमः । ४,५, ७–१० धैवतः

॥ ५ ॥ प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानोऽबोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् । पृथुपाज
देवयद्भिः समिद्धोऽप द्वारा तमसो वह्निरावः ॥ १ ॥ प्रेद्वग्निर्वावृधे स्तोमेभिर्गी
र्भिः स्तोतॄणां नमस्य उक्थैः । पूर्वीर्ऋतस्य सन्दृशश्चकानः सं दूतो अद्यौ
षसो विरोके ॥ २ ॥ अधाय्यग्निर्मानुषीषु विक्ष्वपां गर्भो मित्र ऋतेन स
धन् । आ हर्यतो यजतः सान्वस्थादभूदु विप्रो हव्यो मतीनाम् ॥ ३ ॥ मित्र
अग्निर्भवति यत्समिद्धो मित्रो होता वरुणो जातवेदाः । मित्रो अध्वर्युरिषिरो
मूना मित्रः सिन्धूनामुत पर्वतानाम् ॥ ४ ॥ पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः पा
यह्वश्चरणं सूर्यस्य । पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्व
॥ ५ ॥ २४ ॥ ऋभुश्चक्र ईड्यं चारु नाम विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान्
ससस्य चर्म घृतवत्पदं वेस्तदिदग्नी रक्षत्यप्रयुच्छन् ॥ ६ ॥ आ योनिमग्निर्घृत
वन्तमस्थात्पृथुप्रगाणमुशन्तमुशानः । दीद्यानः शुचिर्ऋष्वः पावकः पुनः पुनर्मा
रा नव्यसी कः ॥ ७ ॥ सद्यो जात ओषधीभिर्ववक्षे यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन
आप इव प्रवता शुम्भमाना उरुष्यदग्निः पित्रोरुपस्थे ॥ ८ ॥ उदु ष्टुतः समिध
यह्वो अद्यौद्वर्ष्मन्दिवो अधि नाभा पृथिव्याः । मित्रो अग्निरीड्यो मातरिश्वा
तो वक्षद्यजथाय देवान् ॥ ९ ॥ उदस्तम्भीत्समिधा नाकमृष्वोऽग्निर्भवन्नुत्तमो र
चनानाम् । यदी भृगुभ्यः परि मातरिश्वा गुहा सन्तं हव्यवाहं समीधे ॥ १०
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध । स्यान्नः सूनुस्तनयो वि
जावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ११ ॥ २५ ॥

॥ ६ ॥ १–११ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ५ विरा

ष्टुप् । २, ७ त्रिष्टुप् । ३, ४, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । १० भुरिक् त्रिष्टुप् । ६, ११
रिक् पङ्क्तिः । ९ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–५, ७, ८, १० धैवतः । ६, ९,
१ पञ्चमः ॥

॥ ६ ॥ प्र कारवो मनना वच्यमाना देवद्रीचीं नयत देवयन्तः । दक्षिणा-
ड्वाजिनी प्राच्येति हविर्भरन्त्यग्नये घृताची ॥ १ ॥ आ रोदसी अपृणा जाय-
न उत प्र रिक्था अध नु प्रयज्यो । दिवश्चिदग्ने महिना पृथिव्या वच्यन्तां ते वह्नयः
जिह्वाः ॥ २ ॥ द्यौश्च त्वा पृथिवी यज्ञियासो नि होतारं सादयन्ते दमाय । यदी
शो मानुषीर्देवयन्तीः प्रयस्वतीरीळते शुक्रमर्चिः ॥ ३ ॥ महान्त्सधस्थे ध्रुव आ
षत्तोऽन्तर्द्यावा माहिने हर्यमाणः । आस्क्रे सपत्नी अजरे अमृक्ते सबर्दुघे उरु-
यस्य धेनू ॥ ४ ॥ व्रता ते अग्ने महतो महानि तव क्रत्वा रोदसी आ ततन्थ ।
दूतो अभवो जायमानस्त्वं नेता वृषभ चर्षणीनाम् ॥ ५ ॥ २६ ॥ ऋतस्य वा
शिना योग्याभिर्घृतस्नुवा रोहिता धुरि धिष्व । अथा वह देवान्देव विश्वान्त्स्व-
रा कृणुहि जातवेदः ॥ ६ ॥ दिवश्चिदा ते रुचयन्त रोका उषो विभातीरनु
सि पूर्वीः । अपो यदग्न उशधग्वनेषु होतुर्मन्द्रस्य पनयन्त देवाः ॥ ७ ॥ उरौ वा
अन्तरिक्षे मदन्ति दिवो वा ये रोचने सन्ति देवाः । ऊमा वा ये सुहवासो
त्रा आयेमिरे रथ्यो अग्ने अश्वाः ॥ ८ ॥ ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नाना-
वा विभवो ह्यश्वाः । पत्नीवतस्त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व
९ ॥ स होता यस्य रोदसी चिदुर्वी यज्ञंयज्ञमभि वृधे गृणीतः । प्राची अध्वरे-
तस्थतुः सुमेके ऋतावरी ऋतजातस्य सत्ये ॥ १० ॥ इळामग्ने पुरुदंसं सनिं
ः शश्वत्तमं हवमानाय साध । स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमति-
त्वस्मे ॥ ११ ॥ २७ ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ ७ ॥ १–११ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ६, ९, १०
ष्टुप् । २, ३, ४, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ८ स्वराट् पङ्क्तिः । ११ भुरिक् पङ्क्तिः ॥
रः—१–७, ९, १० धैवतः । ८, ११ पञ्चमः ॥

॥ ७ ॥ प्र य आरुः शितिपृष्ठस्य धासेरा मातरा विविशुः सप्त वाणीः । परिक्षिता
तरा सं चरेते प्र सर्स्राते दीर्घमायुः प्रयक्षे ॥ १ ॥ दिवक्षसो धेनवो वृष्णो अश्वा दे-
रा तस्थौ मधुमद्वहन्तीः । ऋतस्य त्वा सदसि क्षेमयन्तं पर्येका चरति वर्तनिं गौः ॥ २ ॥
ा सीमरोहत्सुयमा भवन्तीः पतिश्चिकित्वान्रयिविद्रयीणाम् । प्र नीलपृष्ठो अत-

सस्यं धासेस्ता अवासयत्पुरुधप्रतीकः ॥ ३ ॥ मर्हि त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्यं स्तंभू
मानं वहतो वहन्ति । व्यङ्गेभिर्दिद्युतानः सधस्थ एकामिव रोदसी आ विवेश ॥ ४
जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवमुत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति । दिवोरुचः सुरु
रोचमाना इळा येषां गण्या माहिना गीः ॥ ५ ॥ १ ॥ उतो पितृभ्यां प्रविदा
घोषं महो महद्भ्यामनयन्त शूषम् । उक्षा ह यत्र परि धानमक्तोरनु स्वं धाम
रितुर्ववक्ष ॥ ६ ॥ अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त विप्राः प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः
प्राञ्चो मदन्त्युक्षणो अजुर्या देवा देवानामनु हि व्रता गुः ॥ ७ ॥ दैव्या होता
प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति । ऋतं शंसन्त ऋतमित्त आहुरनु व्र
व्रतपा दीध्यानाः ॥ ८ ॥ वृषायन्ते महे अत्याय पूर्वीर्वृष्णे चित्राय रश्मयः
यामाः । देव होतर्मन्द्रतरश्चिकित्वान्महो देवान्रोदसी एह वक्षि ॥ ९ ॥ पृक्षप्रय
द्रविणः सुवाचः सुकेतव उषसो रेवदूषुः । उतो चिदग्ने महिना पृथिव्याः कृतं
देनः सं महे दशस्य ॥ १० ॥ इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमान
साध । स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ११ ॥ २ ॥

॥ ८ ॥ १–११ विश्वामित्र ऋषिः ॥ विश्वेदेवा देवता ॥ छन्दः–१,८,६,
निचृत्त्रिष्टुप् । २, ५, ६, ११ त्रिष्टुप् । ४ स्वराट् त्रिष्टुप् । ३, ७ स्वराडनुष्टुप्
स्वरः- १, २, ४–६, ८–११ धैवतः । ३, ७ गान्धारः ॥

॥ ८ ॥ अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो वनस्पते मधुना दैव्येन । यदूर्ध्वस्तिष्
द्रविणेह धत्ताद्यद्वा क्षयो मातुरस्या उपस्थे ॥ १ ॥ समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्
द्ब्रह्म वन्वानो अजरं सुवीरम् । आरे अस्मदमतिं बाधमान उच्छ्रयस्व महते सौ
गाय ॥ २ ॥ उच्छ्रयस्व वनस्पते वर्ष्मन्पृथिव्या अधि । सुमिती मीयमानो व
धा यज्ञवाहसे ॥ ३ ॥ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमान
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः ॥ ४ ॥ जातो जायते सु
नत्वे अह्नां समर्य आ विदथे वर्धमानः । पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा देवया
प्र उदियर्ति वाचम् ॥ ५ ॥ ३ ॥ यान्वो नरो देवयन्तो निमिम्युर्वनस्पते स्वधि
र्वा ततक्ष । ते देवासः स्वरवस्तस्थिवांसः प्रजावदस्मे दिधिषन्तु रत्नम् ॥
ये वृक्णासो अधि क्षमि निमितासो यतस्रुचः । ते नो व्यन्तु वार्यं देवत्रा
साधसः ॥ ७ ॥ आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्ष
सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम् ॥ ८ ॥ हंसा इव श्रे

यतानाः शुक्रा वसानाः स्वरवो न आगुः । उन्नीयमानाः कविभिः पुरस्ताद्दे-
देवानामपि यन्ति पाथः ॥ ९ ॥ शृङ्गाणीवेच्छृङ्गिणां सं ददृश्रे चषालवन्तः
स्वः पृथिव्याम् । बाघद्भिर्वा विहवे श्रोषमाणा अस्माँ अवन्तु पृतनाज्येषु ॥१०॥
स्पते शतवल्शो वि रोह सहस्रवल्शा वि वयं रुहेम । यं त्वामयं स्वधितिस्ते-
ानः प्रणिनाय महते सौभगाय ॥ ११ ॥ ४ ॥

॥ ९ ॥ १–९ विश्वामित्र ऋषिः अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ४ बृहती ।
५, ६, ७ निचृद्बृहती । ३, ८ विराड् बृहती । ९ स्वराड् पङ्क्ति ॥ स्वरः–१–८
यमः ॥ ९ पञ्चमः ॥

॥ ९ ॥ सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये । अपां नपातं सुभगं सुदीदितिं
तूर्तिमनेहसम् ॥ १ ॥ कायमानो वना त्वं यन्मातॄरजगन्नपः । न तत्ते अग्ने प्र-
निवर्तनं यद्दूरे सन्निहाभवः ॥ २ ॥ अति तृष्टं ववक्षिथाथैव सुमना असि ।
न्ये यन्ति पर्यन्य आसते येषां सख्ये असि श्रितः ॥ ३ ॥ ईयिवांसमति स्रि-
शश्वतीरति सश्चतः । अन्वीमविन्दन्निचिरासो अद्रुहो अप्सु सिंहमिव श्रितम्
४ ॥ ससृवांसमिव त्मनाग्निमित्था तिरोहितम् । ऐनं नयन्मातरिश्वा परावा-
देवेभ्यो मथितं परि ॥ ५ ॥ ५ ॥ तं त्वा मर्ता अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन ।
वान्यज्ञाँ अभिपासि मानुष तव क्रत्वा यविष्ठ्य ॥ ६ ॥ तद्भद्रं तव दंसना
ाय चिच्छदयति । त्वां यदग्ने पशवः समासते समिद्धमपिशर्वरे ॥ ७ ॥ आ
ता स्वध्वरं शीरं पावकशोचिषम् । आशुं दूतमजिरं प्रत्नमीड्यं श्रुष्टी देवं
र्यत ॥ ८ ॥ त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
तंन्घृतैरस्तृणन्बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥ ९ ॥ ६ ॥

॥ १० ॥ १–९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ५, ८
ाडुष्णिक् । ३ उष्णिक् । ४, ६, ७, ९ निचृदुष्णिक् । २ भुरिग् गायत्री ॥
ः–१, ३–९ ऋषभः । २ षड्जः ॥

॥ १० ॥ त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् । देवं मर्तास इन्धते स-
वरे ॥ १ ॥ त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने होतारमीळते । गोपा ऋतस्य दीदिहि स्वे दमे
२ ॥ स घा यस्ते ददाशति समिधा जातवेदसे । सो अग्ने धत्ते सुवीर्यं स
र्यति ॥ ३ ॥ स केतुरध्वराणामग्निर्देवेभिरा गमत् । अञ्जानः सप्त होतृभिर्ह-

विष्मते ॥ ४ ॥ प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत् । विपां ज्योतींषि बिभ्र
न वेधसे ॥ ५ ॥ ७ ॥ अग्निं वर्धन्तु नो गिरो यतो जायत उक्थ्यः । महे वाज
य द्रविणाय दर्शतः ॥ ६ ॥ अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान्देवयते यज । होता म
वि राजस्यति स्रिधः ॥ ७ ॥ स नः पावक दीदिहि द्युमदस्मे सुवीर्यम् । भवा स्त
तृभ्यो अन्तमः स्वस्तये ॥ ८ ॥ तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते
हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम् ॥ ९ ॥ ८ ॥

॥ ११ ॥ १–९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ५,
८ निचृद्गायत्री । ३, ९ विराड् गायत्री । ४, ६ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ११ ॥ अग्निर्होता पुरोहितोऽध्वरस्य विचर्षणिः । स वेद यज्ञमानुष
॥ १ ॥ स हव्यवाळमर्त्य उशिग्दूतश्चनोहितः । अग्निर्धिया समृण्वति ॥ २
अग्निर्धिया स चेतति केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः । अर्थं ह्यस्य तरणि ॥ ३ ॥ अग्निं स
सनश्रुतं सहसो जातवेदसम् । वह्निं देवा अकृण्वत ॥ ४ ॥ अदाभ्यः पुरएता
शामग्निर्मानुषीणाम् । तूर्णी रथः सदा नवः ॥ ५ ॥ ९ ॥ साह्वान्विश्वा अभियु
क्रतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥ ६ ॥ अभि प्रयांसि वाहसा दा
अश्नोति मर्त्यः । क्षयं पावकशोचिषः ॥ ७ ॥ परि विश्वानि सुधिताग्नेरश्याम
न्मभिः । विप्रासो जातवेदसः ॥ ८ ॥ अग्ने विश्वानि वार्या वाजेषु सनिषाम
त्वे देवास एरिरे ॥ ९ ॥ १० ॥

॥ १२ ॥ १–९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः–१, ३,
८, ९ निचृद्गायत्री । २, ४, ६ गायत्री । ७ यवमध्या विराड्गायत्री च ॥
ड्जः स्वरः ॥

॥ १२ ॥ इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् । अस्य पातं धि
षिता ॥ १ ॥ इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः । अया पातमिमं
तम् ॥ २ ॥ इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे । ता सोमस्येह तृम्पत
॥ ३ ॥ तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता । इन्द्राग्नी वाजसातमा ॥ ४
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः । इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥ ५ ॥ ११
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा ॥ ६ ॥ इन्द्राग
अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः । ऋतस्य पथ्या३ अनु ॥ ७ ॥ इन्द्राग्नी तविषा

सधस्थानि प्रयांसि च । युवोरप्तूर्यं हितम् ॥ ८ ॥ इन्द्राग्नी रोचना दिवः
वाजेषु भूषथः । तद्वां चेति प्र वीर्यम् ॥ ९ ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ १३ ॥ १-७ ॥ ऋषभो वैश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१
गुष्णिक् । २, ३, ५, ६, ७ निचृदनुष्टुप् । ४ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः-१ ऋ-
: । २-७ गान्धारः ॥

॥ १३ ॥ प्र वो देवायाग्नये बर्हिष्ठमर्चास्मै । गमद्देवेभिरा स नो यजिष्ठो
रा संदत् ॥ १ ॥ ऋतावा यस्य रोदसी दक्षं सचन्त ऊतयः । हविष्मन्तस्त-
ते तं संनिष्यन्तोऽवसे ॥ २ ॥ स यन्ता विप्र एषां स यज्ञानामथा हि षः । अग्निं तं
दुवस्यत दाता यो वनिता मघम् ॥ ३ ॥ स नः शर्माणि वीतयेऽग्निर्यच्छतु
मा । यतो नः प्रुष्णवद्वसु दिवि क्षितिभ्यो अप्स्वा ॥ ४ ॥ दीदिवांसमपू-
वस्वीभिरस्य धीतिभिः । ऋक्वाणो अग्निमिन्धते होतारं विश्पतिं विशाम्
॥ उत नो ब्रह्मन्नविष उक्थेषु देवहूतमः । शं नः शोचा मरुद्वृधोऽग्ने सहस्र-
मः ॥ ६ ॥ नू नो रास्व सहस्रवत्तोकवत्पुष्टिमद्वसु । द्युमदग्ने सुवीर्यं वर्षिष्ठ-
क्षितम् ॥ ७ ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ १—७ ऋषभो वैश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१,
निचृत् त्रिष्टुप् । २, ५ त्रिष्टुप् । ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् । ६ पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-५,
न्धारः । ६ पञ्चमः ॥

॥ १४ ॥ आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात्सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः ।
द्रथः सहसस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केशः पृथिव्यां पाजो अश्रेत् ॥ १ ॥ अ-
म ते नमउक्तिं जुषस्व ऋतावस्तुभ्यं चेतते सहस्वः । विद्वाँ आ वक्षि विदुषो
र्षत्सि मध्य आ बर्हिरूतये यजत्र ॥ २ ॥ द्रवतां त उषसा वाजयन्ती अग्ने
स्य पथ्याभिरच्छ । यत्सीमञ्जन्ति पूर्व्यं हविर्भिरा वन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे ॥ ३ ॥
रच तुभ्यं वरुणः सहस्वोऽग्ने विश्वे मरुतः सुम्नमर्चन् । यच्छोचिषा सहसस्पुत्र
अभि क्षितीः प्रथयन्त्सूर्यो नॄन् ॥ ४ ॥ वयं ते अद्य ररिमा हि काममुत्ता-
स्ता नमसोपसद्य । यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवानस्रेधता मन्मना विप्रो अग्ने
॥ त्वद्धि पुत्र सहसो वि पूर्वीर्देवस्य यन्त्यूतयो वि वाजाः । त्वं देहि सह-
रयिं नोऽद्रोघेण वचसा सत्यमग्ने ॥ ६ ॥ तुभ्यं दक्ष कविक्रतो यानीमा

देव मर्तासो अध्वरे अकर्म । त्वं विश्वस्य सुरथस्य बोधि सर्वं तदग्ने अमृत स्
देह ॥ ७ ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ १—७ उत्कीलः कात्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,
त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् । ६ निचृत् त्रिष्टुप् । २ पङ्क्तिः । ३, ७ भुरिक् पङ्क्तिः
स्वरः—१, ४–६ धैवतः । २, ३, ७ पञ्चमः ॥

॥ १५ ॥ वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः
सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्यामग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ ॥ १ ॥ त्वं नो अस्या उषसो
व्युष्टौ त्वं सूर उदिते बोधि गोपाः । जन्मेव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अ
तन्वा सुजात ॥ २ ॥ त्वं नृचक्षा वृषभानु पूर्वीः कृष्णास्वग्ने अरुषो वि भाहि
वसो नेषि च पर्षि चात्यंहः कृधी नो राय उशिजो यविष्ठ ॥ ३ ॥ अषाळ्
अग्ने वृषभो दिदीहि पुरो विश्वाः सौभगा सञ्जिगीवान् । यज्ञस्य नेता प्रथम
प्रायोर्जातवेदो बृहतः सुप्रणीते ॥ ४ ॥ अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरूणि देवाँ
च्छा दीद्यानः सुमेधाः । रथो न सस्निरभि वक्षि वाजमग्ने त्वं रोदसी नः
मेके ॥ ५ ॥ प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजा नग्ने त्वं रोदसी नः सु दोघे । देवे
देव सुरुचा रुचानो मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परि ष्ठात् ॥ ६ ॥ इळामग्ने पुरु
सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध । स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते
मतिर्भूत्वस्मे ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ १६ ॥ १–६ उत्कीलः कात्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,
भुरिगनुष्टुप् । २, ६ निचृत् पङ्क्तिः । ३ निचृद्बृहती । ४ भुरिक्बृहती ॥ स्वरः
१, ५ गान्धारः । २, ६ पञ्चमः ३, ४ मध्यमः ॥

॥ १६ ॥ अयमग्निः सुवीर्यस्येशे महः सौभगस्य । राय ईशे स्वपत्य
गोमत ईशे वृत्रहथानाम् ॥ १ ॥ इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं यस्मिन्रायः
वृधासः । अभि ये सन्ति पृतनासु दूढ्यो विश्वाहा शत्रुमादभुः ॥ २ ॥ स त्वं
रायः शिशीहि मीढ्वो अग्ने सुवीर्यस्य । तुविद्युम्न वर्षिष्ठस्य प्रजावतोऽनमीव
शुष्मिणः ॥ ३ ॥ चक्रिर्यो विश्वा भुवनाभि सासहिश्चक्रिर्देवेष्वा दुवः । आ देवेषु य
आ सुवीर्य आ शंस उत नृणाम् ॥ ४ ॥ मा नो अग्नेऽमतये मावीरतायै रीरधः । म
तायै सहसस्पुत्र मा निदेऽप द्वेषांस्या कृधि ॥ ५ ॥ शग्धि वाजस्य सुभग प्रजावतो

तो अध्वरे । सं राया भूयसा सृज मयोभुना तुविद्युम्न यशस्वता ॥ ६ ॥ १६ ॥

॥ १७ ॥ १-५ उत्कीलः कात्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, २ ष्टुप् । ४ विराट् त्रिष्टुप् । ५ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१, २, ५ धैवतः । ३ पञ्चमः ॥

॥ १७ ॥ समिध्यमानः प्रथमानु धर्मा समक्तुभिरज्यते विश्ववारः । शोचि-
शो घृतनिर्णिक्पावकः सुयज्ञो अग्निर्यजथाय देवान् ॥ १ ॥ यथायजो होत्र-
ने पृथिव्या यथा दिवो जातवेदश्चिकित्वान् । एवानेन हविषा यक्षि देवान्मनु-
यज्ञं प्र तिरेममद्य ॥ २ ॥ त्रीण्यायूंषि तव जातवेदस्तिस्र आजानीरुषसस्ते
ने । ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वानथा भव यजमानाय शं योः ॥ ३ ॥ अग्निं
ीतिं सुदृशं गृणन्तो नमस्यामस्त्वेड्यं जातवेदः । त्वां दूतमरतिं हव्यवाहं देवा
कृण्वन्नमृतस्य नाभिम् ॥ ४ ॥ यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्द्विता च सत्ता
धया च शम्भुः । तस्यानु धर्म प्र यजा चिकित्वोऽथा नो धा अध्वरं देववीतौ
५ ॥ १७ ॥

॥ १८ ॥ १-५ कतो वैश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, ३, त्रिष्टुप् । २, ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १८ ॥ भवा नो अग्ने सुमना उपेतौ सखेव सख्ये पितरेव साधुः । पुरु-
ा हि क्षितयो जनानां प्रति प्रतीचीर्दहतादरातीः ॥ १ ॥ तपो ष्वग्ने अन्तराँ
मित्राँ तपा शंसमररुषः परस्य । तपो वसो चिकितानो अचित्तान्वि ते तिष्ठन्ता-
रा अयासः ॥ २ ॥ इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय ।
वदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ॥ ३ ॥ उच्छोचिषा स-
स्पुत्र स्तुतो बृहद्वयः शशमानेषु धेहि । रेवदग्ने विश्वामित्रेषु शं योर्मर्मृज्मा ते
ं भूरि कृत्वः ॥ ४ ॥ कृधि रत्नं सुसनितर्धनानां स घेदग्ने भवसि यत्समिद्धः ।
तुर्दुरोणे सुभगस्य रेवत्सृप्रा करस्ना दधिषे वपूंषि ॥ ५ ॥ १८ ॥

॥ १९ ॥ १-५ कुशिकपुत्रो गाथी ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१ त्रि-
प् । २, ४, ५ विराट् त्रिष्टुप् । ३ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धै-
ः । ३ पञ्चमः ॥

॥ १९ ॥ अग्निं होतारं प्र वृणे मियेधे गृत्सं कविं विश्वविदममूरम् । स नो

यज्ञदेवताता यजीयाञ्चाये वाजाय वनते मघानि ॥ १ ॥ प्र तें अग्ने हविष्मतीमि
यर्म्यच्छा सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम् । प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः सं रातिभिर्
सुभिर्यज्ञमश्रेत् ॥ २ ॥ स तेजीयसा मनसा त्वोत उत शिक्ष स्वपत्यस्य शिक्षोः
अग्ने रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतयश्च वस्वः ॥ ३ ॥ भूरीणि हि त
दधिरे अनीकाग्ने देवस्य यज्यवो जनासः । स आ वह देवतातिं यविष्ठ शर्धो य
दद्य दिव्यं यजासि ॥ ४ ॥ यत्त्वा होतारमनजन्मियेधे निषादयन्तो यजथाय देवाः
स त्वं नो अग्नेऽवितेह बोध्यधि श्रवांसि धेहि नस्तनूषु ॥ ५ ॥ १९ ॥

॥ २० ॥ १—५ गाथी ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥ छन्दः—१ विरा
त्रिष्टुप् । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् त्रिष्टुप् । ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः

॥ २० ॥ अग्निमुषसमश्विना दधिक्रां व्युष्टिषु हवते वह्निरुक्थैः । सुज्योतिष
नः शृण्वन्तु देवाः सजोषसो अध्वरं वावशानाः ॥ १ ॥ अग्ने त्री ते वाजिना त्र
षधस्था तिस्रस्ते जिह्वा ऋतजात पूर्वीः । तिस्र उ ते तन्वो देववातास्ताभिर्नः पा
गिरो अप्रयुच्छन् ॥ २ ॥ अग्ने भूरीणि तव जातवेदो देव स्वधावोऽमृतस्य नाम
याश्च माया मायिनां विश्वमिन्व त्वे पूर्वीः संदधुः पृष्टबन्धो ॥ ३ ॥ अग्नि
र्नेता भग इव क्षितीनां दैवीनां देव ऋतुपा ऋतावा । स वृत्रहा सनयो विश्ववेद
पर्षद्विश्वाति दुरिता गृणन्तम् ॥ ४ ॥ दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं बृहस्पतिं स
वितारं च देवम् । अश्विना मित्रावरुणा भगं च वसून्रुद्राँ आदित्याँ इह हुवे ॥ ५ ॥ २०

॥ २१ ॥ १–५ कौशिको गाथी ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१,
त्रिष्टुप् । २, ३ अनुष्टुप् । ५ विराड् बृहती ॥ स्वरः–१, ४ धैवतः । २, ३ गा
न्धारः । ५ मध्यमः ॥

॥ २१ ॥ इमं नो यज्ञममृतेषु धेहीमा हव्या जातवेदो जुषस्व । स्तोकान
मग्ने मेदसो घृतस्य होतः प्राशान प्रथमो निषद्य ॥ १ ॥ घृतवन्तः पावक ते स्तोक
श्चोतन्ति मेदसः । स्वधर्मन्देववीतये श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ॥ २ ॥ तुभ्यं स्तोक
घृतश्चुतोऽग्ने विप्राय सन्त्य । ऋषिः श्रेष्ठः समिध्यसे यज्ञस्य प्राविता भव ॥ ३
तुभ्यं श्चोतन्त्यध्रिगो शचीवः स्तोकासो अग्ने मेदसो घृतस्य । कविशस्तो बृहत
भानुनागा हव्या जुषस्व मेधिर ॥ ४ ॥ ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद उद्भृतं प्र ते व
ददामहे । श्चोतन्ति ते वसो स्तोका अधि त्वचि प्रति तान्देवशो विहि ॥ ५ ॥ २१

॥ २२ ॥ १–५ गाथी ऋषिः ॥ पुरीष्या अग्नयो देवता ॥ छन्दः–१ त्रिष्टुप् ।
३ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ निचृत्पङ्क्तिः । ४ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः–१ धैवतः । २,
५ पञ्चमः । ४ ऋषभः ॥

॥ २२ ॥ अयं सो अग्निर्यस्मिन्त्सोममिन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः । स-
स्रिणं वाजमत्यं न सप्तिं ससवान्त्सन्त्स्तूयसे जातवेदः ॥ १ ॥ अग्ने यत्ते दिवि
र्वः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र । येनान्तरिक्षमुर्वाततन्थ त्वेषः स भानुर-
वो नृचक्षाः ॥ २ ॥ अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगास्यच्छा देवाँ ऊचिषे धिष्ण्या
। या रोचने परस्तात्सूर्यस्य याश्चावस्तादुपतिष्ठन्त आपः ॥ ३ ॥ पुरीष्यासो
ग्नयः प्रावणेभिः सजोषसः । जुषन्तां यज्ञमद्रुहोऽनमीवा इषो महीः ॥ ४ ॥ इ-
मग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध । स्यान्नः सूनुस्तनयो विजा-
ग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ५ ॥ २२ ॥

॥ २३ ॥ १–५ देवश्रवा देववातश्च भारतावृषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–
विराट् त्रिष्टुप् । २, ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २३ ॥ निर्मथितः सुधित आ सधस्थे युवा कविरध्वरस्य प्रणेता । जूर्य-
ग्निरजरो वनेष्वत्रा दधे अमृतं जातवेदाः ॥ १ ॥ अमन्थिष्टां भारता रेवदग्निं
श्रवा देववातः सुदक्षम् । अग्ने वि पश्य बृहताभि रायेषां नो नेता भवतादनु
॥ २ ॥ दश क्षिपः पूर्व्यं सीमजीजनन्त्सुजातं मातृषु प्रियम् । अग्निं स्तुहि
वातं देवश्रवो यो जनानामसद्वशी ॥ ३ ॥ नि त्वा दधे वर आ पृथिव्या इ-
यास्पदे सुदिनत्वे अह्नाम् । दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि
४ ॥ इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध । स्यान्नः सूनुस्तनयो
जावग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ५ ॥ २३ ॥

॥ २४ ॥ १–५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ निचृदनुष्टुप् । २
चृद्गायत्री । ३, ४, ५ गायत्री ॥ स्वरः–१ गान्धारः । २–५ षड्जः ॥

॥ २४ ॥ अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य । दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो धा
वाहसे ॥ १ ॥ अग्ने इळा समिध्यसे वीतिहोत्रो अमर्त्यः । जुषस्व सू नो अ-
रम् ॥ २ ॥ अग्ने द्युम्नेन जागृवे सहसः सूनवाहुत । एदं बर्हिः सदो मम ॥ ३ ॥

अग्ने विश्वैभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः । यज्ञेषु ये उ चायवः ॥ ४ ॥ अग्ने
दाशुषे रयिं वीरवन्तं परीणसं । शिशीहि नः सूनुमतः ॥ ५ ॥ २४ ॥

॥ २५ ॥ १–५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ १, २, ३, ४ अग्निः । ५ इन्द्रा
ग्नी देवते ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप् । २ अनुष्टुप् । ३, ४, ५ भुरिक् त्रिष्टुप्
स्वरः–१, २ ऋषभः ३—५ धैवतः ॥

॥ २५ ॥ अग्ने दिवः सूनुरसि प्रचेतास्तना पृथिव्या उत विश्ववेदा आ
ग्देवाँ इह यजा चिकित्वः ॥ १ ॥ अग्निः सनोति वीर्याणि विद्वान्त्सनोति
जममृताय भूषन् । स नो देवाँ एह वह पुरुक्षो ॥ २ ॥ अग्निर्द्यावापृथिवी विश्
जन्ये आ भाति देवी अमृते अमूरः । क्षयन्वाजैः पुरुश्चन्द्रो नमोभिः ॥ ३ ॥
ग्न इन्द्रश्च दाशुषो दुरोणे सुतावतो यज्ञमिहोप यातम् । अमर्धन्ता सोमपेयाय
वा ॥ ४ ॥ अग्ने अपां समिध्यसे दुरोणे नित्यः सूनो सहसो जातवेदः । स
स्थानि महयमान ऊती ॥ ५ ॥ २५ ॥

॥ २६ ॥ १–६ ८, ९ विश्वामित्रः । ७ आत्मा ऋषिः ॥ १–३ वैश्वानर
४–६ मरुतः । ७, ८ अग्निरात्मा वा । ९ विश्वामित्रोपाध्यायो देवता ॥ छन्द
१–६ जगती ७—९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–६ निषादः । ७—९ धैवतः ॥

॥ २६ ॥ वैश्वानरं मनसाग्निं निचाय्या हविष्मन्तो अनुषत्यं स्वर्विदम्
सुदानुं देवं रथिरं वसूयवो गीर्भी रण्वं कुशिकासो हवामहे ॥ १ ॥ तं शुभ्रमग्नि
मवसे हवामहे वैश्वानरं मातरिश्वानमुक्थ्यम् । बृहस्पतिं मनुषो देवतातये वि
श्रोतारमतिथिं रघुष्यदम् ॥ २ ॥ अश्वो न क्रन्दञ्जनिभिः समिध्यते वैश्वान
कुशिकेभिर्युगेयुगे । स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्व्यं दधातु रत्नममृतेषु जागृ
॥ ३ ॥ प्र यन्तु वाजास्तविषीभिरग्नयः शुभे सम्मिश्लाः पृषतीरयुक्षत । बृहदु
मरुतो विश्ववेदसः प्र वेपयन्ति पर्वताँ अदाभ्याः ॥ ४ ॥ अग्निश्रियो मरुतो
श्वकृष्टय आ त्वेषमुग्रमव ईमहे वयम् । ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः सिंहा
हेषक्रतवः सुदानवः ॥ ५ ॥ २६ ॥ व्रातंव्रातं गणङ्गणं सुशस्तिभिरग्नेर्भामं म
तामोज ईमहे । पृषदश्वासो अनवभ्रराधसो गन्तारो यज्ञं विदथेषु धीराः ॥ ६
अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् । अर्कस्त्रिधातू रज
विमानोऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम ॥ ७ ॥ त्रिभिः पवित्रैरपुपोद्ध्यर्कं हृदा

ं ज्योतिरनु प्रजानन् । वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिरादिद्द्यावापृथिवी पर्यपश्यत्
८ ॥ शतधारमुत्समक्षीयमाणं विपश्चितं पितरं वक्त्वानाम् । मेळिं मदन्तं पित्रो-
पस्थे तं रोदसी पिपृतं सत्यवाचम् ॥ ९ ॥ २७ ॥

॥ २७ ॥ १—१५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ १ ऋतवोऽग्निर्वा । २—१५ अ-
ग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ७, ८, ९, १०, १४, १५ निचृद्गायत्री । २, ३, ६,
१, १२ गायत्री । ४, ५, १३ विराट् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २७ ॥ प्र वो वाजा अभिद्यवो हविष्मन्तो घृताच्या । देवाञ्जिगाति सु-
म्नयुः ॥ १ ॥ ईळे अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम् । श्रुष्टीवानं धितावा-
नम् ॥ २ ॥ अग्ने शकेम ते वयं यमं देवस्य वाजिनः । अति द्वेषांसि तरेम ॥ ३ ॥
समिध्यमानो अध्वरे३ऽग्निः पावक ईड्यः । शोचिष्केशस्तमीमहे ॥ ४ ॥ पृथुपाजा
अमर्त्यो घृतनिर्णिक्स्वाहुतः । अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाट् ॥ ५ ॥ २८ ॥ तं सबाधो य-
तस्रुच इत्था धिया यज्ञवन्तः । आ चक्रुरग्निमूतये ॥ ६ ॥ होता देवो अमर्त्यः
पुरस्तादेति मायया । विदथानि प्रचोदयन् ॥ ७ ॥ वाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु
प्र णीयते । विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥ ८ ॥ धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा
दधे । दक्षस्य पितरं तना ॥ ९ ॥ नि त्वा दधे वरेण्यं दक्षस्येळा सहस्कृत । अ-
ग्ने सुदीतिमुशिजम् ॥ १० ॥ २९ ॥ अग्निं यन्तुरमप्तुरमृतस्य योगे वनुषः । विप्रा
वाजैः समिन्धते ॥ ११ ॥ ऊर्जो नपातमध्वरे दीदिवांसमुप द्यवि । अग्निमीळे क-
विक्रतुम् ॥ १२ ॥ ईळेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः । समग्निरिध्यते वृषा ॥ १३ ॥
वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः । तं हविष्मन्त ईळते ॥ १४ ॥ वृषणं
त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि । अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥ १५ ॥ ३० ॥

॥ २८ ॥ १—६ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ गाय-
त्री । २, ६ निचृद्गायत्री । ३ स्वराडुष्णिक् । ४ त्रिष्टुप् । ५ निचृज्जगती ॥
स्वरः—१, २, ६ षड्जः । ३ ऋषभः । ४ धैवतः । ५ निषादः ॥

॥ २८ ॥ अग्ने जुषस्व नो हविः पुरोळाशं जातवेदः । प्रातःसावे धियावसो
॥ १ ॥ पुरोळा अग्ने पचतस्तुभ्यं वा घा परिष्कृतः । तं जुषस्व यविष्ठ्य ॥ २ ॥
अग्ने वीहि पुरोळाशमाहुतं तिरोअह्न्यम् । सहसः सूनुरस्यध्वरे हितः ॥ ३ ॥ मा-
ध्यन्दिने सवने जातवेदः पुरोळाशमिह कवे जुषस्व । अग्ने यह्वस्य तव भागधेयं न

प्र मिनन्ति विदथेषु धीराः ॥ ४ ॥ अग्ने तृतीये सवने हि कानिषः पुरोळाशं सहसः सूनवाहुतम् । अथा देवेष्वध्वरं विपन्यया धा रत्नवन्तममृतेषु जागृविम् ॥ ५ ॥ अग्ने वृधान आहुतिं पुरोळाशं जातवेदः । जुषस्व तिरोअह्न्यम् ॥ ६ ॥ ३१ ॥

॥ २६ ॥ १—१६ विश्वामित्र ऋषिः ॥ १—४, ६—१६ अग्निः । ५ ऋत्विज अग्निर्वा देवता ॥ छन्दः—१, निचृदनुष्टुप् । ४ विराडनुष्टुप् । १०, १२ भुरिगनुष्टुप् । २ भुरिक् पङ्क्तिः । १३ स्वराट् पङ्क्तिः । ३, ५, ६ त्रिष्टुप् । ७, ८, ९, १६ निचृत् त्रिष्टुप् । ११, १४, १५ जगती ॥ स्वरः—१, ४, १०, १२ गान्धारः । २, १३ पञ्चमः । ३, ५—९, १६ धैवतः । ११, १४, १५ निषादः ॥

॥ २६ ॥ अस्तीदमधिमन्थनमस्ति प्रजननं कृतम् । एतां विश्पत्नीमा भराग्निं मन्थाम पूर्वथा ॥ १ ॥ अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इव सुधितो गर्भिणीषु । दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ २ ॥ उत्तानायामव भरा चिकित्वान्त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान । अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज इळायास्पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट ॥ ३ ॥ इळायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्या अधि । जातवेदो नि धीमह्यग्ने हव्याय वोळ्हवे ॥ ४ ॥ मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकम् । यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्तादग्निं नरो जनयता सुशेवम् ॥ ५ ॥ ३२ ॥ यदी मन्थन्ति बाहुभिर्वि रोचतेऽश्वो न वाज्यरुषो वनेष्वा । चित्रो न यामन्नश्विनोरनिवृतः परि वृणक्त्यश्मनस्तृणा दहन् ॥ ६ ॥ जातो अग्नी रोचते चेकितानो वाजी विप्रः कविशस्तः सुदानुः । यं देवास ईड्यं विश्वविदं हव्यवाहमदधुरध्वरेषु ॥ ७ ॥ सीद होतः स्व उ लोके चिकित्वान्त्सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ । देवावीर्देवान्हविषा यजास्यग्ने बृहद्यजमाने वयो धाः ॥ ८ ॥ कृणोत धूमं वृषणं सखायोऽस्रेधन्त इतन वाजमच्छ । अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवासो असहन्त दस्यून् ॥ ९ ॥ अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः । तं जानन्नग्न आ सीदाथा नो वर्धया गिरः ॥ १० ॥ ३३ ॥ तनूनपादुच्यते गर्भ आसुरो नराशंसो भवति यद्विजायते । मातरिश्वा यदमिमीत मातरि वातस्य सर्गो अभवत्सरीमणि ॥ ११ ॥ सुनिर्मथा निर्मथितः सुनिधा निहितः कविः । अग्ने स्वध्वरा कृणु देवान्देवयते यज ॥ १२ ॥ अजीजनन्नमृतं मर्त्यासोऽस्रेमाणं तरणिं वीळुजम्भम् । दश स्वसारो अग्रुवः समीचीः पुमांसं जातमभि सं रभन्ते ॥ १३ ॥ प्र सप्तहोता सनकादरोचत मातुरुपस्थे यदशोचदूधनि । न नि मिषति सुरणो दिवे-

दिवे यदसुरस्य जठरादजायत ॥ १४ ॥ अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद्विदुः । द्युम्नवद्ब्रह्म कुशिकास एरिर एकएको दमे अग्निं समीधिरे ॥ १५ ॥ यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्होतश्चिकित्वोऽवृणीमहीह । ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्ठाः प्रजानन्विद्वाँ उप याहि सोमम् ॥ १६ ॥ ३४ ॥ १ ॥ २ ॥

॥ ३० ॥ १—२२ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ९, १०, ११, १४, १७, २० निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ६, ८, १३, १९, २१, २२ त्रिष्टुप् । १२, १५ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ४, ७, १६, १८ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५, ६, ८—१५, १७, १९—२२ धैवतः । ३, ४, ७, १६, १८ पञ्चमः ॥

॥ ३० ॥ इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि । तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः ॥ १ ॥ न ते दूरे परमा चिद्रजांस्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् । स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ ॥ २ ॥ इन्द्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रातस्तुविकूर्मिर्ऋघावान् । यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु क्व त्या ते वृषभ वीर्याणि ॥ ३ ॥ त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युतान्येको वृत्रा चरसि जिघ्नमानः । तव द्यावापृथिवी पर्वतासोऽनु व्रताय निमितेव तस्थुः ॥ ४ ॥ उताभये पुरुहूत श्रवोभिरेको दृळ्हमवदो वृत्रहा सन् । इमे चिदिन्द्र रोदसी अपारे यत्संगृभ्णा मघवन्काशिरित्ते ॥ ५ ॥ १ ॥ प्र सू त इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून् । जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ॥ ६ ॥ यस्मै धायुरदधा मर्त्यायाभक्तं चिद्भजते गेह्यं सः । भद्रा त इन्द्र सुमतिर्घृताची सहस्रदाना पुरुहूत रातिः ॥ ७ ॥ सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तमहस्तमिन्द्र सं पिणक्कुणारुम् । अभि वृत्रं वर्धमानं पियारुमपादमिन्द्र तवसा जघन्थ ॥ ८ ॥ नि सामनामिषिरामिन्द्र भूमिं महीमपारां सदने ससत्थ । अस्तभ्नाद्द्यां वृषभो अन्तरिक्षमर्षन्त्वापस्त्वयेह प्रसूताः ॥ ९ ॥ अलातृणो वल इन्द्र व्रजो गोः पुरा हन्तोर्भयमानो व्यार । सुगान्पथो अकृणोन्निरजे गाः प्रावन्वाणीः पुरुहूतं धमन्तीः ॥ १० ॥ २ ॥ एको द्वे वसुमती समीची इन्द्र आ पप्रौ पृथिवीमुत द्याम् । उतान्तरिक्षादभि नः समीक इषो रथीः सयुजः शूर वाजान् ॥ ११ ॥ दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः । सं यदानळध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं कृणुते तत्त्वस्य ॥ १२ ॥ दिदृक्षन्त उषसो यामन्नक्तोर्विवस्वत्या महि चित्रमनीकम् । विश्वे जानन्ति महिना यदागादिन्द्रस्य कर्म

सुकृता पुरूणि ॥ १३ ॥ महि ज्योतिर्निहितं वक्षणास्वामा पक्वं चरति बिभ्रती गौः । विश्वं स्वाद्म सम्भृतमुस्रियायां यत्सीमिन्द्रो अदधाद्भोजनाय ॥ १४ ॥ इन्द्र दृह्य यामकोशा अभूवन्यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः । दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्गिणो रिपवो हन्त्वासः ॥ १५ ॥ ३ ॥ सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैर्जही न्येष्वशनिं तपिष्ठाम् । वृश्चेमधस्ताद्वि रुजा सहस्व जहि रक्षो मघवन्रन्धयस्व ॥ १६ ॥ उद्वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र वृश्चा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि । आ कीवतः सललूकं चकर्थ ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य ॥ १७ ॥ स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः सं यन्महीरिष आसत्सि पूर्वीः । रायो वन्तारो बृहतः स्यामास्मे अस्तु भग इन्द्र प्रजावान् ॥ १८ ॥ आ नो भर भगमिन्द्र द्युमन्तं नि ते देष्णस्य धीमहि प्ररेके । ऊर्व इव पप्रथे कामो अस्मे तमा पृण वसुपते वसूनाम् ॥ १९ ॥ इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च । स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ॥ २० ॥ आ नो गोत्रा दर्दृहि गोपते गाः समस्मभ्यं सनयो यन्तु वाजाः । दिवक्षा असि वृषभ सत्यशुष्मोऽस्मभ्यं सु मघवन्बोधि गोदाः ॥ २१ ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ २२ ॥ ४ ॥

॥ ३१ ॥ १—२२ विश्वामित्र कुशिको वा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, १४, १६ विराट् पङ्क्ति । ३, ६ भुरिक् पङ्क्तिः । २, ५, ९, १५, १७, १८, १९, २० निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ७, ८, १०, १२, २१, २२ त्रिष्टुप् । ११, १३ स्वराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ६, १४, १६ पञ्चमः । २, ४, ५, ७–१३, १५, १७–२२ धैवतः ॥

॥ ३१ ॥ शासद्वह्निर्दुहितुर्नप्त्यं गाद्विद्वाँ ऋतस्य दीधितिं सपर्यन् । पिता यत्र दुहितुः सेकमृञ्जन्त्सं शग्म्येन मनसा दधन्वे ॥ १ ॥ न जामये तान्वो रिक्थमारैक्चकार गर्भं सनितुर्निधानम् । यदी मातरो जनयन्त वह्निमन्यः कर्ता सुकृतोरन्य ऋन्धन् ॥ २ ॥ अग्निर्जज्ञे जुह्वा३रेजमानो महस्पुत्राँ अरुषस्य प्रयक्षे । महान्गर्भो मह्या जातमेषां मही प्रवृद्धर्यश्वस्य यज्ञैः ॥ ३ ॥ अभि जैत्रीरसचन्त स्पृधानं महि ज्योतिस्तमसो निरजानन् । तं जानतीः प्रत्युदायन्नुषासः पतिर्गवामभवदेक इन्द्रः ॥ ४ ॥ वीळौ सतीरभि धीरा अतृन्दन्प्राचाहिन्वन्मनसा सप्त विप्राः । विश्वामविन्दन्पथ्यामृतस्य प्रजानन्नित्ता नमसा विवेश ॥ ५ ॥ ५ ॥ विदद्यदी सरमा रुग्णमद्रेर्महि पाथः पूर्व्यं सध्र्यक्कः । अग्रं नयत्सुपद्यक्षराणामच्छा

रवं प्रथमा जानती गात् ॥ ६ ॥ अगच्छदु विप्रतमः सखीयन्नसूदयत्सुकृते ग-
र्भमद्रिः । ससान मर्यो युवभिर्मखस्यन्नथाभवदङ्गिराः सद्यो अर्चन् ॥ ७ ॥ सतः
सतः प्रतिमानं पुरोभूर्विश्वा वेद जनिमा हन्ति शुष्णम् । प्र णो दिवः पदवीर्गव्यु
रर्चन्त्सखा सखीँरमुञ्चन्निरवद्यात् ॥ ८ ॥ नि गव्यता मनसा सेदुरर्कैः कृण्वा-
नासो अमृतत्वाय गातुम् । इदं चिन्नु सदनं भूर्येषां येन मासाँ असिषासन्नृतेन
॥ ९ ॥ सम्पश्यमाना अमदन्नभि स्वं पयः प्रत्नस्य रेतसो दुघानाः । वि रोदसी
अतपद्घोष एषां जाते निःष्ठामदधुर्गोषु वीरान् ॥ १० ॥ ६ ॥ स जातेभिर्वृत्रहा
सेदु हव्यैरुदुस्रिया असृजदिन्द्रो अर्कैः । उरूच्यस्मै घृतवद्भरन्ती मधु स्वाद्म दुदुहे
जेन्या गौः ॥ ११ ॥ पित्रे चिच्चक्रुः सदनं समस्मै महि त्विषीमत्सुकृतो वि हि
ख्यन् । विष्कभ्नन्तः स्कम्भनेना जनित्री आसीना ऊर्ध्वं रभसं वि मिन्वन् ॥ १२ ॥
मही यदि धिषणा शिश्नथे धात्सद्योवृधं विभ्वं रोदस्योः । गिरो यस्मिन्ननवद्याः
समीचीर्विश्वा इन्द्राय तविषीरनुत्ताः ॥ १३ ॥ मह्या ते सख्यं वश्मि शक्तीरा वृ-
त्रघ्ने नियुतो यन्ति पूर्वीः । महि स्तोत्रमव आगन्म सूरेरस्माकं सु मघवन्बोधि गोपाः
॥ १४ ॥ महि क्षेत्रं पुरु श्चन्द्रं विविद्वानादित्सखिभ्यश्चरथं समैरत् । इन्द्रो नृभि-
रजनद्दीद्यानः साकं सूर्यमुषसं गातुमग्निम् ॥ १५ ॥ ७ ॥ अपश्चिदेष विभ्वो३द-
मूनाः प्र सध्रीचीरसृजद्विश्वश्चन्द्राः । मध्वः पुनानाः कविभिः पवित्रैर्द्युभिर्हिन्वन्त्य-
क्तुभिर्धनुत्रीः ॥ १६ ॥ अनु कृष्णे वसुधिती जिहाते उभे सूर्यस्य मंहना यजत्रे ।
परि यत्ते महिमानं वृजध्यै सखाय इन्द्र काम्या ऋजिप्याः ॥ १७ ॥ पतिर्भव
वृत्रहन्त्सूनृतानां गिरां विश्वायुर्वृषभो वयोधाः । आ नो गहि सख्येभिः शिवेभि-
र्महान्महीभिरूतिभिः सरण्यन् ॥ १८ ॥ तमङ्गिरस्वन्नमसा सपर्यन्नव्यं कृणोमि स-
न्यसे पुराजाम् । द्रुहो वि याहि बहुला अदेवीः स्वश्च नो मघवन्त्सातये धाः ॥ १९ ॥
मिहः पावकाः प्रतता अभूवन्त्स्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम् । इन्द्र त्वं रथिरः
पाहि नो रिषो मक्षूमक्षू कृणुहि गोजितो नः ॥ २० ॥ अदेदिष्ट वृत्रहा गोपति-
र्गा अन्तः कृष्णाँ अरुषैर्धामभिर्गात् । प्र सूनृता दिशमान ऋतेन दुरश्च विश्वा
अवृणोदप स्वाः ॥ २१ ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् २२ ॥ ८ ॥

॥ ३२ ॥ १—१७ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ३, ७, ८, ९, १७ त्रिष्टुप् ११, १२, १३, १४, १५ निचृत्त्रिष्टुप् । १६ विराट्

त्रिष्टुप् । ४, १० भुरिक् पङ्क्तिः । ५ निचृत्पङ्क्तिः । ६ विराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—३, ७—६, ११—१७ धैवतः । ४, ५, ६, १० पञ्चमः ॥

॥ ३२ ॥ इन्द्र सोमं सोमपते पिबेमं माध्यंन्दिनं सवनं चारु यत्ते । प्रप्रुथ्या शिप्रे मघवन्नृजीषिन्विमुच्या हरीं इह मादयस्व ॥ १ ॥ गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र शुक्रं पिबा सोमं ररिमा ते मदाय । ब्रह्मकृता मारुतेना गणेन सजोषा रुद्रैस्तृपदा वृषस्व ॥ २ ॥ ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्धन्नर्चन्त इन्द्र मरुतस्त ओजः । माध्यंन्दिने सवने वज्रहस्त पिबा रुद्रेभिः सगणः सुशिप्र ॥ ३ ॥ त इन्न्वस्य मधुमद्विविप्र इन्द्रस्य शर्धो मरुतो य आसन् । येभिर्वृत्रस्येषितो विवेदामर्मणो मन्यमानस्य मर्म ॥ ४ ॥ मनुष्वदिन्द्र सवनं जुषाणः पिबा सोमं शश्वते वीर्याय । स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः सरण्युभिरपो अर्णा सिसर्षि ॥ ५ ॥ ६ ॥ त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वाँ अत्याँ इव प्रासृजः सर्तवाजौ । शयानमिन्द्र चरता वधेन वव्रिवांसं परि देवीरदेवम् ॥ ६ ॥ यजाम इन्नमसा वृद्धमिन्द्रं बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् । यस्य प्रिये ममतुर्यज्ञियस्य न रोदसी महिमानं ममाते ॥ ७ ॥ इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे । दाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः ॥ ८ ॥ अद्रोघ सत्यं तव तन्महित्वं सद्यो यज्जातो अपिबो ह सोमम् । न द्याव इन्द्र तवसस्त ओजो नाहा न मासाः शरदो वरन्त ॥ ९ ॥ त्वं सद्यो अपिबो जात इन्द्र मदाय सोमं परमे व्योमन् । यद्ध द्यावापृथिवी आविवेशीरथाभवः पूर्व्यः कारुधायाः ॥ १० ॥ १० ॥ अहन्नहिं परिशयानमर्ण ओजायमानं तुविजात तव्यान् । न ते महित्वमनु भूदध द्यौर्यदन्यया स्फिग्या३ क्षामवस्थाः ॥ ११ ॥ यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भूदुत प्रियः सुतसोमो मियेधः । यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन्यज्ञस्ते वज्रमहिहत्य आवत् ॥ १२ ॥ यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे अर्वागैनं सुम्नाय नव्यसे ववृत्याम् । यः स्तोमेभिर्वावृधे पूर्व्येभिर्यो मध्यमेभिरुत नूतनेभिः ॥ १३ ॥ विवेष यन्मा धिषणा जजान स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमह्नः । अंहसो यत्र पीपरद्यथा नो नावेव यान्तमुभये हवन्ते ॥ १४ ॥ आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबध्यै । समु प्रिया आववृत्रन्मदाय प्रदक्षिणिदभि सोमास इन्द्रं ॥ १५ ॥ न त्वा गभीरः पुरुहूत सिन्धुर्नाद्रयः परि षन्तो वरन्त । इत्था सखिभ्य इषितो यदिन्द्रा दृळ्हं चिदरुजो गव्यमूर्वम् ॥ १६ ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ १७ ॥ ११ ॥

॥ ३३ ॥ १-१३ विश्वामित्र ऋषिः ॥ नद्यो देवता ॥ छन्दः-१ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः । ७ पङ्क्तिः । २, १० विराट् त्रिष्टुप् । ३, ८, ११, १२ त्रिष्टुप्। ४, ६, ९ निचृत्त्रिष्टुप्। १३ उष्णिक् ॥ स्वरः-१-१२ धैवतः। १३ ऋषभः॥

॥ ३३ ॥ प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वेऽइव विषिते हासमाने । गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते ॥ १ ॥ इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः । समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे ॥ २ ॥ अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म । वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु सञ्चरन्ती ॥ ३ ॥ एना वयं पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः । न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति ॥ ४ ॥ रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः । प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः ॥ ५ ॥ १२ ॥ इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम् । देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः ॥ ६ ॥ प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं१न्तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत् । वि वज्रेण परिषदो जघानायन्नापोऽयनमिच्छमानाः ॥ ७ ॥ एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि । उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते ॥ ८ ॥ ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन । नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः ॥ ९ ॥ आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन । नि ते नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते ॥ १० ॥ १३ ॥ यदङ्ग त्वा भरताः सन्तरेयुर्गव्यन्ग्राम इषित इन्द्रजूतः । अर्षादह प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम् ॥ ११ ॥ अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम् । प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभम् ॥ १२ ॥ उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत । मादुष्कृतौ व्येनसाघ्न्यौ शूनमारताम् ॥ १३ ॥ १४ ॥

॥ ३४ ॥ १-११ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, २, ११ त्रिष्टुप् । ४, ५, ७, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ९ विराट्त्रिष्टुप् । ३, ६, ८ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः- १, २, ४, ५, ७, ९-११ धैवतः । ३, ६, ८ पञ्चमः ॥

॥ ३४ ॥ इन्द्रः पूर्भिदातिरद्दासमर्कैर्विदद्वसुर्दयमानो वि शत्रून् । ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद्रोदसी उभे ॥ १ ॥ मखस्य ते तविषस्य प्र जूतिमिय-

मिवाचममृताय भूषन्। इन्द्र क्षितीनामसि मानुषीणां विशां दैवीनामुत पूर्वयावा ॥२॥
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्पणीतिः। अहन्व्यंसमुशधग्वने-
ष्वाविर्धेना अकृणोद्राम्याणाम् ॥ ३ ॥ इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोशि-
ग्भिः पृतना अभिष्टिः। प्रारोचयन्मनवे केतुमह्नामविन्दज्ज्योतिर्बृहते रणाय ॥ ४ ॥
इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद्दधानो नर्या पुरूणि। अचेतयद्धिय इमा जरि-
त्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम् ॥ ५ ॥ १५ ॥ महो महानि पनयन्त्यस्येन्द्रस्य
कर्म सुकृता पुरूणि। वृजनेन वृजिनान्त्सं पिपेष मायाभिर्दस्यूँरभिभूत्योजाः ॥६॥
युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः। विवस्वतः सदने अस्य
तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति ॥ ७ ॥ सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ससवां-
सं स्वरपश्च देवीः। ससान यः पृथिवीं द्यामुतेमामिन्द्रं मदन्त्यनु धीरणासः ॥८॥
ससानात्याँ उत सूर्यं ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम्। हिरण्ययमुत भोगं स-
सान हत्वी दस्यून्प्रार्यं वर्णमावत् ॥ ९ ॥ इन्द्र ओषधीरसनोदहानि वनस्पतीँरस-
नोदन्तरिक्षम्। बिभेद वलं नुनुदे विवाचोऽथाभवद्दमिताभिक्रतूनाम् ॥ १० ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ। शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं
वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ ११ ॥ १६ ॥

॥ ३५ ॥ १—११ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ७, १०, ११ त्रिष्टुप्। २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। ९ विराट्त्रिष्टुप्। ४ भुरिक् पङ्क्तिः। ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—३, ६—११ धैवतः। ४, ५ पञ्चमः ॥

॥ ३५ ॥ तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमाना याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ।
पिबास्यन्धो अभिसृष्टो अस्मे इन्द्र स्वाहा ररिमा ते मदाय ॥ १ ॥ उपाजिरा पु-
रुहूताय सप्ती हरी रथस्य धूर्ष्वा युनज्मि। द्रवद्यथा सम्भृतं विश्वतश्चिदुपेमं यज्ञमा
वहात इन्द्रम् ॥ २ ॥ उपो नयस्व वृषणा तपुष्पोतेमव त्वं वृषभ स्वधावः। ग्रसेता-
मश्वा वि मुचेह शोणा दिवेदिवे सदृशीरद्धि धानाः ॥ ३ ॥ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा
युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू। स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन्प्रजानन्विद्वाँ
उप याहि सोमम् ॥ ४ ॥ मा ते हरी वृषणा वीतपृष्ठा नि रीरमन्यजमानासो
अन्ये। अत्यायाहि शश्वतो वयं तेऽरं सुतेभिः कृणवाम सोमैः ॥ ५ ॥ १७ ॥ त-
वायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि। अस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्या
दधिष्वेमं जठर इन्दुमिन्द्र ॥ ६ ॥ स्तीर्णं ते बर्हिः सुत इन्द्र सोमः कृता धाना अ-

सेवे ते हरिभ्याम् । तदोकसे पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यं राता हवींषि ॥७॥ इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः समिन्द्र गोभिर्मधुमन्तमक्रन् । तस्यागत्या सुमना ऋष्व पाहि प्रजानन्विद्वान्पथ्या३ अनु स्वाः ॥ ८ ॥ याँ आभजो मरुत इन्द्र सोमे ये त्वामवर्धन्नभवन्गणस्ते । तेभिरेतं सजोषा वावशानो३ऽग्नेः पिब जिह्वया सोममिन्द्र ॥९॥ इन्द्र पिब स्वधया चित्सुतस्याग्नेर्वा पाहि जिह्वया यजत्र । अध्वर्योर्वा प्रयतं शक्र हस्ताद्धोतुर्वा यज्ञं हविषो जुषस्व ॥ १० ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ ११ ॥१८॥

॥ ३६ ॥ १—९, ११ विश्वामित्रः । १० घोर आङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ७, १०, ११ त्रिष्टुप् । २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । ९ विराट् त्रिष्टुप् । ४ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३, ६-११ धैवतः । ४, ५ पञ्चमः ॥

॥ ३६ ॥ इमामू षु प्रभृतिं सातये धाः शश्वच्छश्वदूतिभिर्यादमानः । सुतेसुते वावृधे वर्धनेभिर्यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतो भूत् ॥ १ ॥ इन्द्राय सोमाः प्रदिवो विदाना ऋभुर्येभिर्वृषपर्वा विहायाः । प्रयम्यमानान्प्रति षू गृभायेन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्णः ॥ २ ॥ पिबा वर्धस्व तव घा सुतास इन्द्र सोमासः प्रथमा उतेमे । यथापिबः पूर्व्याँ इन्द्र सोमाँ एवा पाहि पन्यो अद्या नवीयान् ॥ ३ ॥ महाँ अमत्रो वृजने विरप्श्यु१ग्रं शवः पत्यते धृष्ण्वोजः । नाह विव्याच पृथिवी चनैनं यत्सोमासो हर्यश्वममन्दन् ॥ ४ ॥ महाँ उग्रो वावृधे वीर्याय समाचक्रे वृषभः काव्येन । इन्द्रो भगो वाजदा अस्य गावः प्र जायन्ते दक्षिणा अस्य पूर्वीः ॥ ५ ॥ १९ ॥ प्र यत्सिन्धवः प्रसवं यथायन्नापः समुद्रं रथ्येव जग्मुः । अतश्चिदिन्द्रः सदसो वरीयान्यदीं सोमः पृणति दुग्धो अंशुः ॥ ६ ॥ समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तः । अंशुं दुहन्ति हस्तिनो भरित्रैर्मध्वः पुनन्ति धारया पवित्रैः ॥ ७ ॥ ह्रदा इव कुक्षयः सोमधानाः समीं विव्याच सवना पुरूणि । अन्ना यदिन्द्रः प्रथमा व्याश वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम् ॥ ८ ॥ आ तू भर माकिरेतत्परि ष्ठाद्विद्मा हि त्वा वसुपतिं वसूनाम् । इन्द्र यत्ते माहिनं दत्रमस्त्यस्मभ्यं तद्धर्यश्व प्र यन्धि ॥ ९ ॥ अस्मे प्र यन्धि मघवन्नृजीषिन्निन्द्र रायो विश्ववारस्य भूरेः । अस्मे शतं शरदो जीवसे धा अस्मे वीराञ्छश्वत इन्द्र शिप्रिन् ॥ १० ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ ११ ॥ २० ॥

॥ ३७ ॥ १—११ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ७ निचृद्गायत्री । २, ४, ५, ६, ८, ९, १० गायत्री । ११ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१० षड्जः । ११ ऋषभः ॥

॥ ३७ ॥ वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च । इन्द्र त्वा वर्तयामसि ॥ १ ॥ अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो । इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः ॥ २ ॥ नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे । इन्द्राभिमातिषाह्ये ॥ ३ ॥ पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥ ४ ॥ इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे । भरेषु वाजसातये ॥ ५ ॥ २१ ॥ वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो । इन्द्र वृत्राय हन्तवे ॥ ६ ॥ द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च । इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु ॥ ७ ॥ शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥ ८ ॥ इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे ॥ ९ ॥ अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥ १० ॥ अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः । उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि ॥ ११ ॥ २२ ॥

॥ ३८ ॥ १—१० प्रजापतिर्ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ६, १० त्रिष्टुप् । २, ३, ४, ५, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ७ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-६, ८-१० धैवतः । ७ पञ्चमः ॥

॥ ३८ ॥ अभि तष्टेव दीधया मनीषामत्यो न वाजी सुधुरो जिहानः । अभि प्रियाणि मर्मृशत्पराणि कवीँरिच्छामि सन्दृशे सुमेधाः ॥ १ ॥ इनोत पृच्छ जनिमा कवीनां मनोधृतः सुकृतस्तक्षत द्याम् । इमा उ ते प्रण्यो३ वर्धमाना मनोवाता अध नु धर्मणि ग्मन् ॥ २ ॥ नि षीमिदत्र गुह्या दधाना उत क्षत्राय रोदसी समञ्जन् । सं मात्राभिर्ममिरे येमुरुर्वी अन्तर्मही समृते धायसे धुः ॥ ३ ॥ आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः । महत्तद्वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ ॥ ४ ॥ असूत पूर्वो वृषभो ज्यायानिमा अस्य शुरुधः सन्ति पूर्वीः । दिवो नपाता विदथस्य धीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवो दधाथे ॥ ५ ॥ २३ ॥ त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि । अपश्यमत्र मनसा जगन्वान्व्रते गन्धर्वाँ अपि वायुकेशान् ॥ ६ ॥ तदिन्न्वस्य वृषभस्य धेनोरा नामभिर्ममिरे सक्म्यं गोः । अन्यदन्यदसुर्यं१ वसाना नि

मायिनो ममिरे रूपमस्मिन् ॥ ७ ॥ तदिन्न्वस्य सवितुर्नकिर्मे हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत् । आ सुष्टुती रोदसी विश्वमिन्वे अपीव योषा जनिमानि वव्रे ॥ ८ ॥ युवं प्रत्नस्य साधथो महो यद्दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम् । गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि ॥ ९ ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ १० ॥ २४ ॥ ३ ॥

॥ ३९ ॥ १–९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ९ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ४, ५, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ८ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ३–७, ९ धैवतः । २, ८ पञ्चमः ॥

॥ ३९ ॥ इन्द्रं मतिर्हृद आ वच्यमानाच्छा पतिं स्तोमतष्टा जिगाति । या जागृविर्विदथे शस्यमानेन्द्र यत्ते जायते विद्धि तस्य ॥ १ ॥ दिवश्चिदा पूर्व्या जायमाना वि जागृविर्विदथे शस्यमाना । भद्रा वस्त्राण्यर्जुना वसाना सेयमस्मे सनजा पित्र्या धीः ॥ २ ॥ यमा चिदत्र यमसूरसूत जिह्वाया अग्रं पतदा ह्यस्थात् । वपूंषि जाता मिथुना सचेते तमोहना तपुषो बुध्न एता ॥ ३ ॥ नकिरेषां निन्दिता मर्त्येषु ये अस्माकं पितरो गोषु योधाः । इन्द्र एषां दृंहिता माहिनावानुद्गोत्राणि ससृजे दंसनावान् ॥ ४ ॥ सखा ह यत्र सखिभिर्नवग्वैरभिज्ञ्वा सत्वभिर्गा अनुग्मन् । सत्यं तदिन्द्रो दशभिर्दशग्वैः सूर्यं विवेद तमसि क्षियन्तम् ॥ ५ ॥ २५ ॥ इन्द्रो मधु सम्भृतमुस्रियायां पद्वद्विवेद शफवन्नमे गोः । गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान् ॥ ६ ॥ ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन्नारे स्याम दुरितादभीके । इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः ॥ ७ ॥ ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु ष्यादारे स्याम दुरितस्य भूरेः । भूरि चिद्धि तुजतो मर्त्यस्य सुपारासो वसवो बर्हणावत् ॥ ८ ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ९ ॥ २६ ॥ २ ॥

॥ ४० ॥ १–९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१–४, ६–९ गायत्री । ५ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४० ॥ इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे । स पाहि मध्वो अन्धसः

॥ १ ॥ इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत । पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥ २ ॥ इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः । तिर स्तवान विश्पते ॥ ३ ॥ इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते । क्षयं चन्द्रास इन्दवः ॥ ४ ॥ दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम् । तव द्युक्षास इन्दवः ॥ ५ ॥ १ ॥ गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥ ६ ॥ अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे ॥ ७ ॥ अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् । इमा जुषस्व नो गिरः ॥ ८ ॥ यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे । इन्द्रेह तत आ गहि ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ ४१ ॥ १—९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ यवमध्या गायत्री । २, ३, ५, ९ गायत्री । ४, ७, ८ निचृद्गायत्री । ६ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४१ ॥ आ तू न इन्द्र मद्र्यग्घुवानः सोमपीतये हरिभ्यां याह्यद्रिवः ॥ १ ॥ सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक् । अयुज्रन्प्रातरद्रयः ॥ २ ॥ इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद । वीहि शूर पुरोळाशम् ॥ ३ ॥ रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन् । उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ ४ ॥ मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम् । इन्द्रं वत्सं न मातरः ॥ ५ ॥ ३ ॥ स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे । न स्तोतारं निदे करः ॥ ६ ॥ वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे । उत त्वमस्मयुर्वसो ॥ ७ ॥ मारे अस्मद्वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ्याहि । इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह ॥ ८ ॥ अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना । घृतस्नू बर्हिरासदे ॥ ९ ॥ ४ ॥

॥ ४२ ॥ १-९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ४, ५, ६, ७ गायत्री । २, ३, ८, ९ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४२ ॥ उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम् । हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः ॥ १ ॥ तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिःष्ठां ग्रावभिः सुतम् । कुविन्न्वस्य तृप्णवः ॥ २ ॥ इन्द्रमित्था गिरो ममाच्छागुरिषिता इतः । आवृते सोमपीतये ॥ ३ ॥ इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे । उक्थेभिः कुविदागमत् ॥ ४ ॥ इन्द्र सोमाः सुता इमे तान्दधिष्व शतक्रतो । जठरे वाजिनीवसो ॥ ५ ॥ ५ ॥ विद्मा हि

त्वां धनञ्जयं वाजेषु दधृषं कवे । अधा ते सुम्नमीमहे ॥ ६ ॥ इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब । आगत्या वृषभिः सुतम् ॥ ७ ॥ तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये३ सोमं चोदामि पीतये । एष रारन्तु ते हृदि ॥ ८ ॥ त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे । कुशिकासो अवस्यवः ॥ ९ ॥ ६ ॥

॥ ४३ ॥ १–८ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः- १, ३ विराट् पङ्क्तिः । २, ४, ६ निचृत् त्रिष्टुप् । ५ भुरिक् त्रिष्टुप् । ७, ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः- १, ३ पञ्चमः । २, ४–८ धैवतः ॥

॥ ४३ ॥ आ याह्यर्वाङुप वन्धुरेष्ठास्तवेदनु प्रदिवः सोमपेयम् । प्रिया सखाया वि मुचोप बर्हिस्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते ॥ १ ॥ आ याहि पूर्वीरति चर्षणीराँ अर्य आशिष उप नो हरिभ्याम् । इमा हि त्वा मतयः स्तोमतष्टा इन्द्र हवन्ते सख्यं जुषाणाः ॥ २ ॥ आ नो यज्ञं नमोवृधं सजोषा इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूयम् । अहं हि त्वा मतिभिर्जोहवीमि घृतप्रयाः सधमादे मधूनाम् ॥ ३ ॥ आ च त्वामेता वृषणा वहातो हरी सखाया सुधुरा स्वङ्गा । धानावदिन्द्रः सवनं जुषाणः सखा सख्युः शृणवद्वन्दनानि ॥ ४ ॥ कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद्राजानं मघवन्नृजीषिन् । कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः ॥ ५ ॥ आ त्वा बृहन्तो हरयो युजाना अर्वागिन्द्र सधमादो वहन्तु । प्र ये द्विता दिव ऋञ्जन्त्याताः सुसम्मृष्टासो वृषभस्य मूराः ॥ ६ ॥ इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्ण आ यं ते श्येन उशते जभार । यस्य मदे च्यावयसि प्र कृष्टीर्यस्य मदे अप गोत्रा ववर्थ ॥ ७ ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ८ ॥ ७ ॥

॥ ४४ ॥ १–५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, २ निचृद् बृहती । ३,५ बृहती । ४ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः–१,२,३,५ मध्यमः । ४ गान्धारः ॥

॥ ४४ ॥ अयं ते अस्तु हर्यतः सोम आ हरिभिः सुतः । जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ गह्या तिष्ठ हरितं रथम् ॥ १ ॥ हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं हर्यन्नरोचयः । विद्वांश्चिकित्वान्हर्यश्व वर्धस इन्द्र विश्वा अभि श्रियः ॥ २ ॥ द्यामिन्द्रो हरिधायसं पृथिवीं हरिवर्पसम् । अधारयद्धरितोर्भूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत् ॥ ३ ॥ जज्ञानो हरितो वृषा विश्वमा भाति रोचनम् । हर्यश्वो हरितं धत्त आयुधमा वज्रं

वाह्वोर्हरिम् ॥ ४ ॥ इन्द्रो हयन्तमर्जुनं वज्रं शुक्रैरभीवृतम् । अपावृणोद्धरिभिरद्रिभिः सुतमुद्गा हरिभिराजत ॥ ५ ॥ ८ ॥

॥ ४५ ॥ १–५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २ निचृद् बृहती । ३, ५ बृहती । ४ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ३, ५ मध्यमः । ४ गान्धारः ॥

॥ ४५ ॥ आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः । मा त्वा के चिन्नि यमन्विं न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ १ ॥ वृत्रखादो वलंरुजः पुरां दर्मो अपामजः । स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृळ्हा चिदारुजः ॥ २ ॥ गम्भीराँ उदधीँरिव क्रतुं पुष्यसि गा इव । प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्या इवाशत ॥ ३ ॥ आ नस्तुजं रयिं भराशं न प्रतिजानते । वृक्षं पक्वं फलमङ्कीव धूनुहीन्द्र सम्पारणं वसु ॥ ४ ॥ स्वयुरिन्द्र स्वराळसि स्मद्दिष्टिः स्वयशस्तरः । स वावृधान ओजसा पुरुष्टुत भवा नः सुश्रवस्तमः ॥ ५ ॥ ९ ॥

॥ ४६ ॥ १–५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ विराट् त्रिष्टुप् । २, ५ निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ४ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४६ ॥ युध्मस्य ते वृषभस्य स्वराज उग्रस्य यूनः स्थविरस्य घृष्वेः । अजूर्यतो वज्रिणो वीर्याणीन्द्र श्रुतस्य महतो महानि ॥ १ ॥ महाँ असि महिष वृष्ण्येभिर्धनस्पृदुग्र सहमानो अन्यान् । एको विश्वस्य भुवनस्य राजा स योधया च क्षयया च जनान् ॥ २ ॥ प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो अप्रतीतः । प्र मज्मना दिव इन्द्रः पृथिव्याः प्रोरोर्महो अन्तरिक्षादृजीषी ॥ ३ ॥ उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं विश्वव्यचसमवतं मतीनाम् । इन्द्रं सोमासः प्रदिवि सुतासः समुद्रं न स्रवत आ विशन्ति ॥ ४ ॥ यं सोममिन्द्र पृथिवीद्यावा गर्भं न माता बिभृतस्त्वाया । तं ते हिन्वन्ति तमु ते मृजन्त्यध्वर्यवो वृषभ पातवा उ ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ ४७ ॥ १–५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ३ निचृत् त्रिष्टुप् । ४ त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४७ ॥ मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय । आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मिं त्वं राजासि प्रदिवः सुतानाम् ॥ १ ॥ सजोषा इन्द्र

सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ २ ॥ उत ऋतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोममिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः । याँ आभजो मरुतो ये त्वान्वहन्वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः ॥ ३ ॥ ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन्ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ । ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सगणो मरुद्भिः ॥ ४ ॥ मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् । विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम ॥ ५ ॥ ११ ॥

॥ ४८ ॥ १-५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, २ निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ४ त्रिष्टुप् । ५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-४ धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ ४८ ॥ सद्यो ह जातो वृषभः कनीनः प्रभर्तुमावदन्धसः सुतस्य । साधोः पिब प्रतिकामं यथा ते रसाशिरः प्रथमं सोम्यस्य ॥ १ ॥ यज्जायथास्तदहरस्य कामेंऽशोः पीयूषमपिबो गिरिष्ठाम् । तं ते माता परि योषा जनित्री महः पितुर्दम आसिञ्चदग्रे ॥ २ ॥ उपस्थाय मातरमन्नमैट्ट तिग्ममपश्यदभि सोममूधः । प्रयावयन्नचरद्गृत्सो अन्यान्महानि चक्रे पुरुधप्रतीकः ॥ ३ ॥ उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा यथावशं तन्वं चक्र एषः । त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूयामुष्या सोममपिबच्चमूषु ॥ ४ ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ ५ ॥ १२ ॥

॥ ४९ ॥ १—५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ५ त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः । ३ पञ्चमः ॥

॥ ४९ ॥ शंसा महामिन्द्रं यस्मिन्विश्वा आ कृष्टयः सोमपाः काममव्यन् । यं सुक्रतुं धिषणे विभ्वतष्टं घनं वृत्राणां जनयन्त देवाः ॥ १ ॥ यं नु नकिः पृतनासु स्वराजं द्विता तरति नृतमं हरिष्ठाम् । इनतमः सत्वभिर्यो ह शूषैः पृथुज्रया अमिनादायुर्दस्योः ॥ २ ॥ सहावा पृत्सु तरणिर्नार्वा व्यानशी रोदसी मेहनावान् । भगो न कारे हव्यो मतीनां पितेव चारुः सुहवो वयोधाः ॥ ३ ॥ धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वो रथो न वायुर्वसुभिर्नियुत्वान् । क्षपां वस्ता जनिता सूर्यस्य विभक्ता भागं धिषणेव वाजम् ॥ ४ ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ ५० ॥ १-५ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, २, ४ निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ५ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५० ॥ इन्द्रः स्वाहा पिबतु यस्य सोम आगत्या तुम्रो वृषभो मरुत्वान् । ओरुव्यचाः पृणतामेभिरन्नैरास्य हविस्तन्व१ः काममृध्याः ॥ १ ॥ आ ते सपर्यू जवसे युनज्मि ययोरनु प्रदिवः श्रुष्टिमावः । इह त्वा धेयुर्हरयः सुशिप्र पिबा त्व१स्य सुषुतस्य चारोः ॥ २ ॥ गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे सुपारमिन्द्रं ज्यैष्ठ्याय धायसे गृणाना । मन्दानः सोमं पपिवाँ ऋजीषिन्त्समस्मभ्यं पुरुधा गा इषण्य ॥ ३ ॥ इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च । स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ॥४॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ ५१ ॥ १–१२ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–४, ७, ८, ९ त्रिष्टुप् । ५, ६ निचृत् त्रिष्टुप् । १, २, ३ निचृज्जगती । १०, ११ यवमध्या गायत्री । १२ विराट् गायत्री ॥ स्वरः–४–९ धैवतः । १–३ निषादः । १०–१२ षड्जः ।

॥ ५१ ॥ चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्य१मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत । वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणं दिवेदिवे ॥१॥ शतक्रतुमर्णवं शाकिनं नरं गिरो म इन्द्रमुप यान्ति विश्वतः । वाजसनिं पूर्भिदं तूर्णिमप्तुरं धामसाचमभिषाचं स्वर्विदम् ॥ २ ॥ आकरे वसोर्जरिता पनस्यतेऽनेहसः स्तुभ इन्द्रो दुवस्यति । विवस्वतः सदन आ हि पिप्रिये सत्रासाहमभिमातिहनं स्तुहि ॥ ३ ॥ नृणामु त्वा नृतमं गीर्भिरुक्थैरभि प्र वीरमर्चता सबाधः । सं सहसे पुरुमायो जिहीते नमो अस्य प्रदिव एक ईशे ॥ ४ ॥ पूर्वीरस्य निष्षिधो मर्त्येषु पुरू वसूनि पृथिवी बिभर्ति । इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो रयिं रक्षन्ति जीरयो वनानि ॥५॥१५॥ तुभ्यं ब्रह्माणि गिर इन्द्र तुभ्यं सत्रा दधिरे हरिवो जुषस्व । बोध्या३पिरवसो नूतनस्य सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः ॥ ६ ॥ इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः सुतस्य । तव प्रणीती तव शूर शर्मन्ना विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः ॥ ७ ॥ स वावशान इह पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः । जातं यत्त्वा परि देवा अभूषन्महे भराय पुरुहूत विश्वे ॥ ८ ॥ अप्तूर्ये मरुत आपिरेषोऽमन्दन्निन्द्रमनु दातिवाराः । तेभिः साकं पिबतु वृत्रखादः सुतं सोमं दाशुषः स्वे सधस्थे ॥ ९ ॥ इदं ह्यन्नोजसा सुतं राधानां पते । पिबात्व१स्य गिर्वणः ॥ १० ॥ यस्ते अनु स्वधामसत्सुते नि यच्छ तन्वम्

स त्वा ममत्तु सोम्यम् ॥११॥ प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः प्र बाहू शूर राधसे ॥ १२ ॥ १६ ॥

॥ ५२ ॥ १–८ विश्वामित्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ३, ४ गायत्री । २ निचृद्गायत्री । ६ जगती । ५, ७ निचृत् त्रिष्टुप् । ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–४ षड्जः । ६ निषादः । ५, ७, ८ धैवतः ॥

॥ ५२ ॥ धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् इन्द्र । प्रातर्जुषस्व नः ॥१॥ पुरोळाशं पचत्यं जुषस्वेन्द्रा गुरस्व च । तुभ्यं हव्यानि सिस्रते ॥ २ ॥ पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् ॥ ३ ॥ पुरोळाशं सनश्रुत प्रातःसावे जुषस्व नः । इन्द्र क्रतुर्हि ते बृहन् ॥४॥ माध्यंन्दिनस्य सवनस्य धानाः पुरोळाशमिन्द्र कृष्वेह चारुम् । प्र यत्स्तोता जरिता तूर्ण्यर्थो वृषायमाण उप गीर्भिरीट्टे ॥ ५ ॥ १७ ॥ तृतीये धानाः सवने पुरुष्टुत पुरोळाशमाहुतं मामहस्व नः । ऋभुमन्तं वाजवन्तं त्वा कवे प्रयस्वन्त उप शिक्षेम धीतिभिः ॥ ६ ॥ पूषण्वते ते चकृमा करम्भं हरिवते हर्यश्वाय धानाः । अपूपमद्धि सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ॥७॥ प्रति धाना भरत तूयमस्मै पुरोळाशं वीरतमाय नृणाम् । दिवेदिवे सदृशीरिन्द्र तुभ्यं वर्धन्तु त्वा सोमपेयाय धृष्णो ॥ ८ ॥ १८ ॥

॥ ५३ ॥ १–२४ विश्वामित्रः ऋषिः ॥ १ इन्द्रापर्वतौ । २–१४, २१–२४ इन्द्रः । १५, १६ वाक् । १७—२० रथाङ्गानि देवता ॥ छन्दः—१, ५, ६, २१ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ६, ७, १४, १७, १६, २३, २४ त्रिष्टुप् । ३, ४, ८, १५ स्वराट् त्रिष्टुप् । ११ भुरिक् त्रिष्टुप् । १२, २२ अनुष्टुप् । २० भुरिगनुष्टुप् । १०, १६ निचृज्जगती । १३ निचृद्गायत्री । १८ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१–६, ११, १४, १५, १७, १६, २१, २३, २४ धैवतः । १२, २२, २० गान्धारः । १० निषादः । १३ षड्जः । १८ मध्यमः ॥

॥ ५३ ॥ इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः । वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिळया मदन्ता ॥ १ ॥ तिष्ठा सु कं मघवन्मा परा गाः सोमस्य नु त्वा सुषुतस्य यक्षि । पितुर्न पुत्रः सिचमा रभे त इन्द्र स्वादिष्ठया गिरा शचीवः ॥ २ ॥ शंसावाध्वर्यो प्रति मे गृणीहीन्द्राय वाहः कृणवाव जुष्टम् । एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदाथा च भूदुक्थमिन्द्राय शस्तम् ॥ ३ ॥ जायेदस्तं

मघवन्त्सेदु योनिस्तदित्त्वा युक्ता हरयो वहन्तु। यदा कदा च सुनवाम सोममग्निष्ट्वा दूतो धन्वात्यच्छ ॥ ४ ॥ परा याहि मघवन्ना च याहीन्द्र भ्रातरुभयत्रा ते अर्थम्। यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो रासभस्य ॥ ५ ॥ १९ ॥ अपाः सोममस्तमिन्द्र प्र याहि कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते। यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत् ॥ ६ ॥ इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः। विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ॥ ७ ॥ रूपंरूपं मघवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वं१ परि स्वाम्। त्रिर्यद्दिवः परि मुहूर्तमागात्स्वैर्मन्त्रैरनृतुपा ऋतावा ॥ ८ ॥ महाँ ऋषिर्देवजा देवजूतोऽस्तभ्नात्सिन्धुमर्णवं नृचक्षाः। विश्वामित्रो यदवहत्सुदासमप्रियायत कुशिकेभिरिन्द्रः ॥ ९ ॥ हंसाइव कृणुथ श्लोकमद्रिभिर्मदन्तो गीर्भिरध्वरे सुते सचा। देवेभिर्विप्रा ऋषयो नृचक्षसो वि पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधु ॥ १० ॥ २० ॥ उप प्रेत कुशिकाश्चेतयध्वमश्वं राये प्र मुञ्चता सुदासः। राजा वृत्रं जङ्घनत्प्रागपागुदगथा यजाते वर आ पृथिव्याः ॥ ११ ॥ य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम्। विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम् ॥ १२ ॥ विश्वामित्रा अरासत ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे। करदिन्नः सुराधसः ॥ १३ ॥ किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुह्रे न तपन्ति घर्मम्। आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन्रन्धया नः ॥ १४ ॥ ससर्परीरमतिं बाधमाना बृहन्मिमाय जमदग्निदत्ता। आ सूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्यम् ॥ १५ ॥ २१ ॥ ससर्परीरभरत्तूयमेभ्योऽधि श्रवः पाञ्चजन्यासु कृष्टिषु। सा पक्ष्या३ नव्यमायुर्दधाना यां मे पलस्तिजमदग्नयो ददुः ॥ १६ ॥ स्थिरौ गावौ भवतां वीळुरक्षो मेषा वि वर्हि मा युगं वि शारि। इन्द्रः पातल्ये ददतां शरीतोररिष्टनेमे अभि नः सचस्व ॥ १७ ॥ बलं धेहि तनूषु नो बलमिन्द्रानळुत्सु नः। बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि ॥ १८ ॥ अभि व्ययस्व खदिरस्य सारमोजो धेहि स्पन्दने शिंशपायाम्। अक्ष वीळो वीळित वीळयस्व मा यामादस्मादव जीहिपो नः ॥ १९ ॥ अयमस्मान्वनस्पतिर्मा च हा मा च रीरिषत्। स्वस्त्या गृहेभ्य आवसा आ विमोचनात् ॥ २० ॥ २२ ॥ इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो अद्य याच्छ्रेष्ठाभिर्मघवञ्छूर जिन्व। यो नो द्वेष्ट्यधरः सस्पदीष्ट यमु द्विष्मस्तमु प्राणो जहातु ॥ २१ ॥ परशुं चिद्वि तपति शिम्बलं चिद्वि वृश्चति। उखा चिदिन्द्र येषन्ती प्रयस्ता फेनमस्यति ॥ २२ ॥ न सायकस्य चिकिते जनासो लोधं नयन्ति पशु मन्यमानाः। नावाजिनं वाजिना

हासयन्ति न गर्दभं पुरो अश्वान्नयन्ति ॥ २३ ॥ इम इन्द्र भरतस्य पुत्रा अपपित्वं चिकितुर्न प्रपित्वम् । हिन्वन्त्यश्वमरणं न नित्यं ज्यावाजं परि णयन्त्याजौ ॥२४॥ २३ ॥ ४ ॥

॥ ५४॥ १—२२ प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः । ९ भुरिक् पङ्क्तिः । १२ स्वराट् पङ्क्तिः । २, ३, ६, ८, १०, ११, १३, १४ त्रिष्टुप् । ४, ७, १५, १६, , १८, २०, २१ निचृत् त्रिष्टुप् । ५ स्वराट् त्रिष्टुप् । १७ भुरिक् त्रिष्टुप् । १९ , २२ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ९, १२ पञ्चमः । २—८, १०, ११, १३—२२ धैवतः ॥

॥ ५४ ॥ इमं महे विदथ्याय शूषं शश्वत्कृत्व ईड्याय प्र जभ्रुः । शृणोतु नो दम्येभिरनीकैः शृणोत्वग्निर्दिव्यैरजस्रः ॥ १ ॥ महि महे दिवे अर्चा पृथिव्यै कामो म इच्छञ्चरति प्रजानन् । ययोर्ह स्तोमे विदथेषु देवाः सपर्यवो मादयन्ते सचायोः ॥ २ ॥ युवोर्ऋतं रोदसी सत्यमस्तु महे षु णः सुविताय प्र भूतम् । इदं दिवे नमो अग्ने पृथिव्यै सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ॥ ३ ॥ उतो हि वां पूर्व्या आविविद्र ऋतावरी रोदसी सत्यवाचः । नरश्चिद्वां समिथे शूरसातौ ववन्दिरे पृथिवि वेविदानाः ॥ ४ ॥ को अद्धा वेद क इह प्र वोचद्देवाँ अच्छा पथ्या३ का समेति । ददृश्र एषामवमा सदांसि परेषु या गुह्येषु व्रतेषु ॥ ५ ॥ २४ ॥ कविर्नृचक्षा अभि षीमचष्ट ऋतस्य योना विघृते मदन्ती । नाना चक्राते सदनं यथा वेः समानेन क्रतुना संविदाने ॥ ६ ॥ समान्या वियुते दूरेअन्ते ध्रुवे पदे तस्थतुर्जागरूके । उत स्वसारा युवती भवन्ती आदु ब्रुवाते मिथुनानि नाम ॥ ७ ॥ विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तो महो देवान्बिभ्रती न व्यथेते । एजद्ध्रुवं पत्यते विश्वमेकं चरत्पतत्रि विषुणं वि जातम् ॥ ८ ॥ सना पुराणमध्येम्यारान्महः पितुर्जनितुर्जामि तन्नः । देवासो यत्र पनितार एवैरुरौ पथि व्युते तस्थुरन्तः ॥ ९ ॥ इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवीम्यृदूदराः शृण्वन्नग्निजिह्वाः । मित्रः सम्राजो वरुणो युवान आदित्यासः कवयः पप्रथानाः ॥ १० ॥ २५ ॥ हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्वस्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानः । देवेषु च सवितः श्लोकमश्रेरादस्मभ्यमा सुव सर्वतातिम् ॥ ११ ॥ सुकृत्सुपाणिः स्ववाँ ऋतावा देवस्त्वष्टावसे तानि नो धात् । पूषण्वन्त ऋभवो मादयध्वमूर्ध्वग्रावाणो अध्वरमतष्ट ॥ १२ ॥ विद्युद्रथा मरुत ऋष्टिमन्तो दिवो मर्या ऋतजाता अयासः । सरस्वती शृण्वन्यज्ञियासो धाता

र॒यिं स॒हवी॑रं तु॒रास॑: ॥ १३ ॥ विष्णुं॒ स्तोमा॑सः पुरुद॒स्मम॒र्का भग॑स्येव का॒रिणो॒
याम॑नि ग्मन् । उ॒रु॒क्र॒मः क॑कु॒हो यस्य॑ पू॒र्वीर्न म॑र्धन्ति यु॒व॒त॒यो॒ जनि॑त्रीः ॥ १४ ॥
इन्द्रो॒ विश्वै॑र्वी॒र्यै॒३॑ः पत्य॑मान उ॒भे आ प॑प्रौ॒ रोद॑सी महि॒त्वा । पु॒रं॒द॒रो वृ॑त्र॒हा धृ॒ष्णु-
षे॑णः सं॒गृ॒भ्या न॒ आ भ॑रा॒ भूरि॑ प॒श्वः ॥ १५ ॥ २६ ॥ नास॑त्या मे पि॒तरा॑
ब॒न्धु॒पृच्छा॑ सजा॒त्य॑म॒श्विनो॒श्चारु॒ नाम॑ । यु॒वं हि स्थो र॑यि॒दौ नो॑ र॒यी॒णां दा॒त्रं
र॑क्षे॒थे अक॑वै॒रद॑ब्धा ॥ १६ ॥ म॒हत्तद्वः॑ क॒व॒य॒श्चारु॒ नाम॒ यद्ध॑ देवा॒ भव॑थ॒ विश्व॒
इन्द्रे॑ । सख॑ ऋ॒भुभि॑ः पुरुहूत प्रि॒येभि॑रि॒मां धियं॑ सा॒तये॑ तक्षता नः ॥ १७ ॥ अ-
र्य॒मा णो॒ अदि॑तिर्य॒ज्ञिया॒सोऽद॑ब्धानि॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑ । यु॒योत॑ नो अनप॒त्यानि॒
गन्तो॑ः प्र॒जावा॑न्नः पशु॒माँ अ॑स्तु गा॒तुः ॥ १८ ॥ दे॒वानां॑ दू॒तः पु॑रु॒ध प्रसू॒तोऽना॑-
गान्नो वोचतु स॒र्वता॑ता । शृ॒णोतु॑ नः पृथि॒वी द्यौरु॒ताप॒ः सूर्यो॒ नक्ष॑त्रैरु॒र्व१॒॑न्तरि॑क्षम्
॥ १९ ॥ शृ॒ण्वन्तु॑ नो॒ वृष॑णः॒ पर्व॑तासो ध्रु॒वक्षे॑मास॒ इळ॑या॒ मद॑न्तः । आ॒दि॒त्यैर्नो॒
अदि॑तिः शृणोतु॒ यच्छ॑न्तु नो म॒रुत॑ः शर्म॑ भ॒द्रम् ॥ २० ॥ सदा॑ सु॒गः पि॑तु॒माँ अ॑
स्तु॒ पन्था॒ मध्वा॑ देवा॒ ओष॑धीः॒ सं पि॑पृक्त । भगो॑ मे अग्ने स॒ख्ये न मृ॑ध्या॒ उद्रा॒यो
अ॑श्यां॒ सद॑नं पुरु॒क्षोः ॥ २१ ॥ स्वद॑स्व ह॒व्या समिषो॑ दिदीह्यस्म॒द्र्य१॒॑क्सं मि॑मीहि॒
श्रवां॑सि । विश्वाँ॑ अग्ने पृ॒त्सु ताञ्जे॑षि॒ शत्रू॒नहा॒ विश्वा॑ सु॒मना॑ दीदिही नः ॥२२॥ २७॥

॥ ५५ ॥ १–२२ प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ऋषिः ॥ विश्वे देवाः । १
उषाः । २–१० अग्निः । ११ अहोरात्रौ । १२– १४ रोदसी । १५ रोदसी द्यु-
निशौ वा । १६ दिशः । १७–२२ इन्द्रः पर्जन्यात्मा त्वष्टा वाग्निश्च देवता ॥ छ-
न्दः—१, २, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १९, २२ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ८, १३,
१६, २१ त्रिष्टुप् । १४, १५, १८ विराट्त्रिष्टुप् । १७ भुरिक् त्रिष्टुप् । ३ भुरिक्
पङ्क्तिः । ५, २० स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ६–१९, २१, २२ धैवतः ।
३, ५, २० पञ्चमः ॥

॥ ५५ ॥ उ॒षस॑ः पू॒र्वा अध॒ यद्व्यू॒षुर्म॒हद्वि ज॑ज्ञे अ॒क्षरं॑ प॒दे गोः । व्र॒ता दे॒-
वाना॒मुप॒ नु प्र॒भूष॑न्म॒हद्दे॒वाना॑मसुर॒त्वमेक॑म् ॥ १ ॥ मो षू णो॒ अत्र॑ जुहुरन्त दे॒वा
मा पूर्वे॑ अग्ने पि॒तर॑ः पद॒ज्ञाः । पु॒रा॒ण्योः सद्म॑नोः के॒तुर॒न्तर्म॒हद्दे॒वाना॑मसुर॒त्वमेक॑म्
॥ २ ॥ वि मे॑ पुरु॒त्रा प॑तयन्ति॒ कामा॒ः शम्यच्छा॑ दीद्ये पू॒र्व्याणि॑ । समि॑द्धे अ॒ग्ना-
वृ॒तमिद्व॑देम म॒हद्दे॒वाना॑मसुर॒त्वमेक॑म् ॥ ३ ॥ स॒मा॒नो राजा॒ विभृ॑तः पुरु॒त्रा शये॑ श॒-
यासु॒ प्रयु॑तो॒ वनानु॑ । अ॒न्या व॒त्सं भर॑ति॒ क्षेति॑ मा॒ता म॒हद्दे॒वाना॑मसुर॒त्वमेक॑म् ॥४॥
आ॒क्षित्पू॒र्वास्वप॑रा अनू॒रुत्स॒द्यो जा॒तासु॒ तरु॑णीष्व॒न्तः । अ॒न्तर्व॑तीः सुवते॒ अप्र॑वीता

महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ ५ ॥ २८ ॥ शयुः पुरस्तादध नु द्विमाताबन्धनश्चरति वत्स एकः । मित्रस्य ता वरुणस्य व्रतानि महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ ६ ॥ द्विमाता होता विदथेषु सम्राळन्वग्रं चरति क्षेति बुध्नः । प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ ७ ॥ शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत् । अन्तर्मतिश्चरति निष्षिधं गोर्महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ ८ ॥ नि वेवेति पलितो दूत आस्वन्तर्महांश्चरति रोचनेन । वपूंषि बिभ्रदभि नो वि चष्टे महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ ९ ॥ विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः प्रिया धामान्यमृता दधानः । अग्निष्टा विश्वा भुवनानि वेद महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १० ॥ २९ ॥ नाना चक्राते यम्या वपूंषि तयोरन्यद्रोचते कृष्णमन्यत् । श्यावी च यदरुषी च स्वसारौ महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ ११ ॥ माता च यत्र दुहिता च धेनू सबर्दुघे धापयेते समीची । ऋतस्य ते सदस्यीळे अन्तर्महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १२ ॥ अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः । ऋतस्य सा पयसापिन्वतेळा महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १३ ॥ पद्या वस्ते पुरुरूपा वपूंष्यूर्ध्वा तस्थौ त्र्यविं रेरिहाणा । ऋतस्य सद्म वि चरामि विद्वान्महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १४ ॥ पदे इव निहिते दस्मे अन्तस्तयोरन्यद्गुह्यमाविरन्यत् । सध्रीचीना पथ्या सा विषूची महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १५ ॥ ३० ॥ आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः सबर्दुघाः शशया अप्रदुग्धाः । नव्यानव्या युवतयो भवन्तीर्महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १६ ॥ यदन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन्यूथे नि दधाति रेतः । स हि क्षपावान्त्स भगः स राजा महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १७ ॥ वीरस्य नु स्वश्व्यं जनासः प्र नु वोचाम विदुरस्य देवाः । षोळ्हा युक्ताः पञ्चपञ्चा वहन्ति महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १८ ॥ देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः पुपोष प्रजाः पुरुधा जजान । इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १९ ॥ मही समैरच्चम्वा समीची उभे ते अस्य वसुना न्यृष्टे । शृण्वे वीरो विन्दमानो वसूनि महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ २० ॥ इमां च नः पृथिवीं विश्वधाया उप क्षेति हितमित्रो न राजा । पुरःसदः शर्मसदो न वीरा महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ २१ ॥ निष्षिध्वरीस्त ओषधीरुतापो रयिं त इन्द्र पृथिवी बिभर्ति । सखायस्ते वामभाजः स्याम महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ २२ ॥ ३१ ॥ ३ ॥

॥ ५६ ॥ १—८ प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ऋषयः ॥ विश्वे देवा दे-

वता ॥ छन्दः—१, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् । ५, ७ त्रिष्टुप् । २ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३—८ धैवतः । २ पञ्चमः ॥

॥ ५६ ॥ न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि । न रोदसी अद्रुहा वेद्याभिर्न पर्वता निनमे तस्थिवांसः ॥ १ ॥ षड्भाराँ एको अचरन्बिभर्त्यृतं वर्षिष्ठमुप गाव आगुः । तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दर्श्येका ॥ २ ॥ त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूप उत त्र्युधा पुरुध प्रजावान् । त्र्यनीकः पत्यते माहिनावान्त्स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम् ॥ ३ ॥ अभीक आसां पदवीरबोध्यादित्यानामह्वे चारु नाम । आपश्चिदस्मा अरमन्त देवीः पृथग्व्रजन्तीः परि षीमवृञ्जन् ॥ ४ ॥ त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीनामुत त्रिमाता विदथेषु सम्राट् । ऋतावरीर्योषणास्तिस्रो अप्यास्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः ॥ ५ ॥ त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि दिवेदिव आ सुव त्रिर्नो अह्नः । त्रिधातु राय आ सुवा वसूनि भग त्रातर्धिषणे सातये धाः ॥ ६ ॥ त्रिरा दिवः सविता सोषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी । आपश्चिदस्य रोदसी चिदुर्वी रत्नं भिक्षन्त सवितुः सवाय ॥ ७ ॥ त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि त्रयो राजन्त्यसुरस्य वीराः । ऋतावान इषिरा दूळभासस्त्रिरा दिवो विदथे सन्तु देवाः ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ ५७ ॥ १—६ विश्वामित्र ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप् । २, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५७ ॥ प्र मे विविक्वाँ अविदन्मनीषां धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम् । सद्यश्चिद्या दुदुहे भूरि धासेरिन्द्रस्तदग्निः पनितारो अस्याः ॥ १ ॥ इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता दिवो न प्रीताः शशयं दुदुह्रे । विश्वे यदस्यां रणयन्त देवाः प्र वोऽत्र वसवः सुम्नमश्याम् ॥ २ ॥ या जामयो वृष्ण इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन् । अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति बिभ्रतं वपूंषि ॥ ३ ॥ अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके ग्राव्णो युजानो अध्वरे मनीषा । इमा उ ते मनवे भूरिवारा ऊर्ध्वा भवन्ति दर्शता यजत्राः ॥ ४ ॥ या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा अग्ने देवेषूच्यत उरूची । तयेह विश्वाँ अवसे यजत्राना सादय पायया चा मधूनि ॥ ५ ॥ या ते अग्ने पर्वतस्येव धारासश्चन्ती पीपयद्देव चित्रा । तामस्मभ्यं प्रमतिं जातवेदो वसो रास्व सुमतिं विश्वजन्याम् ॥ ६ ॥ २ ॥

॥ ५८ ॥ १—९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ८,

९ त्रिष्टुप् । २, ३, ४, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ६ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—५ ७—९ धैवतः । ६ पञ्चमः ॥

॥ ५८ ॥ धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहानान्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः । आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामोषसः स्तोमो अश्विनावजीगः ॥ १ ॥ सुयुग्वहन्ति प्रति वामृतेनोर्ध्वा भवन्ति पितरेव मेधाः । जरेथामस्मद्वि पणेर्मनीषां युवोरवश्चकृमा यातमर्वाक् ॥ २ ॥ सुयुग्भिरश्वैः सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः । किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठाहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः ॥ ३ ॥ आ मन्येथामा गतं कच्चिदेवैर्विश्वे जनासो अश्विना हवन्ते । इमा हि वां गोऋजीका मधूनि प्र मित्रासो न ददुरुस्रो अग्रे ॥ ४ ॥ तिरः पुरू चिदश्विना रजांस्याङ्गूषो वां मघवाना जनेषु । एह यातं पथिभिर्देवयानैर्दस्राविमे वां निधयो मधूनाम् ॥ ५ ॥ ३ ॥ पुराणमोकः सख्यं शिवं वां युवोर्नरा द्रविणं जह्नाव्याम् । पुनः कृण्वानाः सख्या शिवानि मध्वा मदेम सह नू समानाः ॥ ६ ॥ अश्विना वायुना युवं सुदक्षा नियुद्भिश्च सजोषसा युवाना । नासत्या तिरोअह्न्यं जुषाणा सोमं पिबतमस्रिधा सुदानू ॥ ७ ॥ अश्विना परि वामिषः पुरूचीरीयुर्गीर्भिर्यतमाना अमृध्राः । रथो ह वामृतजा अद्रिजूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ॥ ८ ॥ अश्विना मधुषुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातमा गतं दुरोणे । रथो ह वां भूरि वर्पः करिक्रत्सुतावतो निष्कृतमागमिष्ठः ॥ ९ ॥ ४ ॥

॥ ५९ ॥ १—९ विश्वामित्र ऋषिः ॥ मित्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ५ त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ भुरिक् पङ्क्तिः । ६, ९ निचृद्गायत्री । ७, ८ गायत्री ॥ स्वरः—१—३, ५ धैवतः । ४ पञ्चमः । ६—९ षड्जः ॥

॥ ५९ ॥ मित्रो जनान्यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम् । मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत ॥ १ ॥ प्र स मित्र मर्तो अस्तु प्रयस्वान्यस्त आदित्य शिक्षति व्रतेन । न हन्यते न जीयते त्वोतो नैनमंहो अश्नोत्यन्तितो न दूरात् ॥ २ ॥ अनमीवास इळया मदन्तो मितज्ञवो वरिमन्ना पृथिव्याः । आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तो वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम ॥ ३ ॥ अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः । तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ ४ ॥ महाँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेवः । तस्मा एतत्पन्यतमाय जुष्टमग्नौ मित्राय हविरा जुहोत ॥ ५ ॥ ५ ॥ मित्रस्य चर्ष-

णीधृतोऽवो देवस्य सानसि । द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ ६ ॥ अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः । अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ॥ ७ ॥ मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे । स देवान्विश्वान्बिभर्ति ॥ ८ ॥ मित्रो देवेष्वायुषु जनाय वृक्तब-र्हिषे । इष इष्टव्रता अकः ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ ६० ॥ १—७ विश्वामित्र ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः—१, २, ३ जगती। ४, ५ निचृज्जगती। ६ विराड् जगती। ७ भुरिग्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ६० ॥ इहेह वो मनसा बन्धुता नर उशिजो जग्मुरभि तानि वेदसा। याभिर्मायाभिः प्रतिजूतिवर्पसः सौधन्वना यज्ञियं भागमानश ॥ १ ॥ याभिः शचीभिश्चमसाँ अपिंशत यया धिया गामरिणीत चर्मणः । येन हरी मनसा निरतक्षत तेन देवत्वमृभवः समानश ॥ २ ॥ इन्द्रस्य सख्यमृभवः समानशुर्मनोर्नपातो अपसो दधन्विरे । सौधन्वनासो अमृतत्वमेरिरे विष्ट्वी शमीभिः सुकृतः सुकृत्यया ॥ ३ ॥ इन्द्रेण याथ सरथं सुते सचाँ अथो वशानां भवथा सह श्रिया । न वः प्रतिमै सुकृतानि वाघतः सौधन्वना ऋभवो वीर्याणि च ॥ ४ ॥ इन्द्र ऋभुभिर्वाजवद्भिः समुक्षितं सुतं सोममा वृषस्वा गभस्त्योः । धियेषितो मघवन्दाशुषो गृहे सौधन्वनेभिः सह मत्स्वा नृभिः ॥ ५ ॥ इन्द्र ऋभुमान्वाजवान्मत्स्वेह नोऽस्मिन्त्सवने शच्या पुरुष्टुत । इमानि तुभ्यं स्वसराणि येमिरे व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः ॥ ६ ॥ इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निह स्तोमं जरितुरुप याहि यज्ञियम्। शतं केतेभिरिषिरेभिरायवे सहस्रणीथो अध्वरस्य होमनि ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ६१ ॥ १—७ विश्वामित्र ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप्। ६ निचृत् त्रिष्टुप्। ३,४ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५, ६, ७ धैवतः। ३, ४ पञ्चमः ॥

॥ ६१ ॥ उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि । पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे ॥ १ ॥ उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती । आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये॥ २॥ उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः। समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व ॥३॥ अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी । स्वर्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद्दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः ॥ ४ ॥ अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम्। ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत्प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक्॥ ५ ॥ ऋतावरी

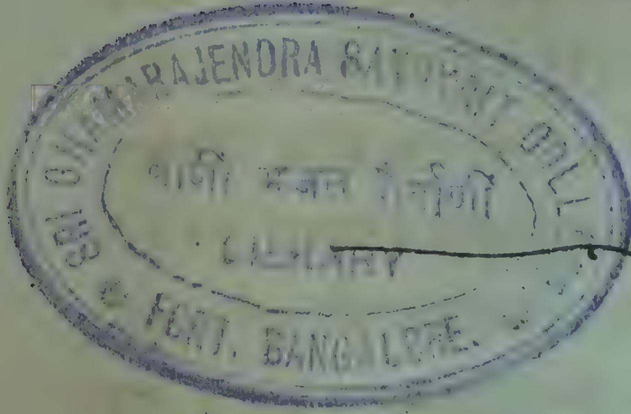
दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् । आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः ॥६॥ ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश । मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा ॥ ७ ॥ ८ ॥

॥६२॥ १–१५ विश्वामित्रः । १६–१८ विश्वामित्रो जमदग्निर्वा ऋषिः ॥ १–३ इन्द्रावरुणौ । ४–६ बृहस्पतिः । ७–९ पूषा । १०–१२ सविता । १३–१५ सोमः । १६–१८ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः–१ विराट् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ३ निचृत् त्रिष्टुप् । ४, ५, १०, ११, १६ निचृद् गायत्री । ६ त्रिपाद्गायत्री । ७, ८, ९, १२, १३, १४, १५, १७, १८ गायत्री ॥ स्वरः–१–३ धैवतः । ४–१८ षड्जः ॥

॥ ६२ ॥ इमा उ वां भृमयो मन्यमाना युवावते न तुज्या अभूवन् । क्व१त्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः ॥ १ ॥ अयमु वां पुरुतमो रयीयञ्छश्वत्तममवसे जोहवीति । सजोषाविन्द्रावरुणा मरुद्भिर्दिवा पृथिव्या शृणुतं हवं मे ॥ २ ॥ अस्मे तदिन्द्रावरुणा वसु ष्यादस्मे रयिर्मरुतः सर्ववीरः । अस्मान्वरूत्रीः शरणैरवन्त्वस्मान्होत्रा भारती दक्षिणाभिः ॥ ३ ॥ बृहस्पते जुषस्व नो हव्यानि विश्वदेव्य । रास्व रत्नानि दाशुषे ॥ ४ ॥ शुचिमर्कैर्बृहस्पतिमध्वरेषु नमस्यत । अनाम्योज आ चके ॥ ५ ॥ ९ ॥ वृषभं चर्षणीनां विश्वरूपमदाभ्यम् । बृहस्पतिं वरेण्यम् ॥ ६ ॥ इयं ते पूषन्नाघृणे सुष्टुतिर्देव नव्यसी । अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते ॥ ७ ॥ तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम् । वधूयुरिव योषणाम् ॥ ८ ॥ यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पूषाविता भुवत् ॥ ९ ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १० ॥ १० ॥ देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरन्ध्या । भगस्य रातिमीमहे ॥ ११ ॥ देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः । नमस्यन्ति धियेषिताः ॥ १२ ॥ सोमो जिगाति गातुविद्देवानामेति निष्कृतम् । ऋतस्य योनिमासदम् ॥ १३ ॥ सोमो अस्मभ्यं द्विपदे चतुष्पदे च पशवे । अनमीवा इषस्करत् ॥ १४ ॥ अस्माकमायुर्वर्धयन्नभिमातीः सहमानः । सोमः सधस्थमासदत् ॥ १५ ॥ आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥ १६ ॥ उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः । द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥ १७ ॥ गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् । पातं सोममृतावृधा ॥ १८ ॥ ११ ॥ ५ ॥ ३ ॥

॥ इति तृतीयं मण्डलं समाप्तम् ॥

# अथ चतुर्थमण्डलारम्भः ॥




॥ १ ॥ १—२० वामदेव ऋषिः ॥ १, ५—२० अग्निः । २-४ अग्नि र्वा वरुणश्च देवता ॥ छन्दः-१ स्वराडतिशक्वरी । २ अतिजगती । ३ अष्टिः । ४, ६ भुरिक् पङ्क्तिः । ५, १८, २० स्वराट् पङ्क्तिः । ७, ६, १५, १७, १६ विराट्त्रिष्टुप् । ८, १० ११, १२, १६ निचृत् त्रिष्टुप् । १३, १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः- १,४-७,६,१८,२० पञ्चमः । २ निषादः । ३ मध्यमः । ८,१०-१७,१६ धैवतः ॥

॥ १ ॥ त्वां ह्यग्ने सदमित्समन्यवो देवासो देवमरतिं न्येरिर इति क्रत्वा न्येरिरे । अमर्त्यं यजत मर्त्येष्वा देवमादेवं जनत प्रचेतसं विश्वमादेवं जनत प्रचेतसम् ॥ १ ॥ स भ्रातरं वरुणमग्न आ ववृत्स्व देवाँ अच्छा सुमती यज्ञवनसं ज्येष्ठं यज्ञवनसम् । ऋतावानमादित्यं चर्षणीधृतं राजानं चर्षणीधृतम् ॥ २ ॥ सखे सखायमभ्या ववृत्स्वाशुं न चक्रं रथ्येव रंह्यास्मभ्यं दस्म रंह्या । अग्ने मृळीकं वरुणे सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु । तोकाय तुजे शुशुचान शं कृध्यस्मभ्यं दस्म शं कृधि ॥ ३ ॥ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् ॥ ४ ॥ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि ॥ ५ ॥ १२ ॥ अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य सन्दृग्देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु । शुचि घृतं न तप्तमघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः ॥ ६ ॥ त्रिरस्य ता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनिमान्यग्नेः । अनन्ते अन्तः परिवीत आगाच्छुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः ॥७॥ स दूतो विश्वेदभि वष्टि सद्मा होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः । रोहिदश्वो वपुष्यो विभावा सदा रण्वः पितुमतीव संसत् ॥ ८ ॥ स चेतयन्मनुषो यज्ञबन्धुः प्र तं मह्या रशनया नयन्ति । स क्षेत्यस्य दुर्यासु साधन्देवो मर्तस्य सधनित्वमाप ॥ ६ ॥ स नो अग्निर्नयतु प्रजान-

अच्छा रत्नं देवभक्तं यदस्य । धिया यद्विश्वे अमृता अकृण्वन्द्यौष्पिता जनिता स-
त्यमुक्षन् ॥ १० ॥ १३ ॥ स जायत प्रथमः पस्त्यासु महो बुध्ने रजसो अस्य यो-
नौ । अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायोयुवानो वृषभस्य नीळे ॥ ११॥ प्र शर्ध आर्त
प्रथमं विपन्याँ ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे । स्पार्हो युवा वपुष्यो विभावा सप्त
प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे ॥ १२ ॥ अस्माकमत्र पितरो मनुष्या अभि प्र सेदुरृ-
तमाशुषाणाः । अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तरुदुस्रा आजन्नुषसो हुवानाः ॥१३॥
ते मर्मृजत ददृवांसो अद्रिं तदेषामन्ये अभितो वि वोचन् । पश्वयन्त्रासो अभि का-
रमर्चन्विदन्त ज्योतिश्चकृपन्त धीभिः ॥ १४ ॥ ते गव्यता मनसा दृध्रमुब्धं गा
येमानं परि षन्तमद्रिम् । दृळ्हं नरो वचसा दैव्येन व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः
॥ १५ ॥ १४ ॥ ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस्त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन् ।
तज्जानतीरभ्यनूषत व्रा आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः ॥ १६ ॥ नेशत्तमो दुधितं रो-
चत द्यौरुद्देव्या उषसो भानुरर्त । आ सूर्यो बृहतस्तिष्ठदज्राँ ऋजु मर्तेषु वृजिना
च पश्यन् ॥१७॥ आदित्पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्नादिद्रत्नं धारयन्त द्युभक्तम् । विश्वे
विश्वासु दुर्यासु देवा मित्र धिये वरुण सत्यमस्तु ॥ १८ ॥ अच्छा वोचेय शुशुचा-
नमग्निं होतारं विश्वभरसं यजिष्ठम् । शुच्यूधो अतृणन्न गवामन्धो न पूतं परि-
षिक्तमंशोः ॥ १९ ॥ विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम् । अ-
ग्निर्देवानामव आवृणानः सुमृळीको भवतु जातवेदाः ॥ २० ॥ १५ ॥

॥ २ ॥ १–२० वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, १९ पङ्क्तिः ।
१२ निचृत् पङ्क्तिः । १४ स्वराट् पङ्क्तिः । २, ४, ५, ६, ७, ९, १३, १५,
१७, १८, २० निचृत्त्रिष्टुप् । ३, १६ त्रिष्टुप् । ८, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः–१, १२, १४, १९ पञ्चमः । २—११, १३, १५–१८, २० धैवतः ॥

॥ २ ॥ यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि । होता यजिष्ठो
मह्ना शुचध्यै हव्यैरग्निर्मनुष ईरयध्यै ॥ १ ॥ इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य जातो
जाताँ उभयाँ अन्तरग्ने । दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्कान्वृषणः शुक्रांश्च
॥ २ ॥ अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू ऋतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा । अन्तरीयसे
अरुषा युजानो युष्मांश्च देवान्विश आ च मर्तान् ॥ ३ ॥ अर्यमणं वरुणं मित्र-
मेषामिन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत । स्वश्वो अग्ने सुरथः सुराधा एदु वह सुह-
विषे जनाय ॥ ४ ॥ गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदमिदप्रमृष्यः ।

इळांवाँ एषो असुर प्रजावांन्दीर्घो रयिः पृथुबुध्नः सभावांन् ॥ ५ ॥ १६ ॥
यस्त इध्मं जभरत्सिष्विदानो मूर्धानं वा ततपते त्वाया । भुवस्तस्य स्वतवाँः
पायुरग्ने विश्वस्मात्सीमघायत उरुष्य ॥ ६ ॥ यस्ते भरादन्नियते चिदन्नं निशि-
षन्मन्द्रमतिथिमुदीरत् । आ देवयुरिनधते दुरोणे तस्मिन्रयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान्
॥ ७ ॥ यस्त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात्प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान् । अश्वो
न स्वे दम आ हेम्यावान्तमंहसः पीपरो दाश्वांसम् ॥ ८ ॥ यस्तुभ्यमग्ने अमृताय
दाशद्दुवस्त्वे कृणवते यतस्रुक् । न स राया शशमानो वि योषन्नैनमंहः परि वर-
दघायोः ॥ ९ ॥ यस्य त्वमग्ने अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं रराणः । प्री-
तेदसद्धोत्रा सा यविष्ठासाम यस्य विधतो वृधासः ॥ १० ॥ १७ ॥ चित्तिमचित्तिं
चिनवद्वि विद्वान्पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान् । राये च नः स्वपत्याय देव दितिं
च रास्वादितिमुरुष्य ॥ ११ ॥ कविं शशासुः कवयोऽदब्धा निधारयन्तो दुर्या-
स्वायोः । अतस्त्वं दृश्याँ अग्न एतान्पड्भिः पश्येरद्भुताँ अर्य एवैः ॥ १२ ॥ त्व-
मग्ने वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते यविष्ठ । रत्नं भर शशमानाय घृष्वे
पृथुश्चन्द्रमवसे चर्षणिप्राः ॥ १३ ॥ अधा ह यद्वयमग्ने त्वाया पड्भिर्हस्तेभिश्चकृ-
मा तनूभिः । रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर्ऋतं येमुः सुध्य आशुषाणाः ॥ १४ ॥
अधा मातुरुषसः सप्त विप्रा जायेमहि प्रथमा वेधसो नॄन् । दिवस्पुत्रा अङ्गिरसो
भवेमाद्रिं रुजेम धनिनं शुचन्तः ॥ १५ ॥ १८ ॥ अधा यथा नः पितरः परासः
प्रत्नासो अग्न ऋतमाशुषाणाः । शुचीदयन्दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो
अरुणीरप व्रन् ॥ १६ ॥ सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तोऽयो न देवा जनिमा धमन्तः ।
शुचन्तो अग्निं ववृधन्त इन्द्रमूर्वं गव्यं परिषदन्तो अग्मन् ॥ १७ ॥ आ यूथेव क्षु-
मति पश्वो अख्यद्देवानां यज्जनिमान्त्युग्र । मर्तानां चिदुर्वशीरकृप्रन्वृधे चिदर्य उ-
परस्यायोः ॥ १८ ॥ अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्रन्नुषसो विभातीः । अ-
नूनमग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मृजतश्चारु चक्षुः ॥ १९ ॥ एता ते अग्न उ-
चथानि वेधोऽवोचाम कवये ता जुषस्व । उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो
रायः पुरुवार प्र यन्धि ॥ २० ॥ १९ ॥

॥३॥ १–१६ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ५, ८, १०, १२, १
निचृत्त्रिष्टुप् । २, १३, १४ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ७, ९ त्रिष्टुप् । ४ स्वराड् बृहती । ६, ११, १
पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–३, ५, ७,–१०, १२–१५, धैवतः । ४ मध्यमः । ६, ११, १६ पञ्चमः

॥ ३ ॥ आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः । अग्निं पुरा
तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् ॥ १ ॥ अयं योनिश्चकृमा यं वयं ते
जायेव पत्य उशती सुवासाः । अर्वाचीनः परिवीतो नि षीदेमा उ ते स्वपाक
प्रतीचीः ॥ २ ॥ आशृण्वते अदृपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृळीकाय वेधः । देवाय
शस्तिममृताय शंस ग्रावेव सोता मधुषुद्यमीळे ॥ ३ ॥ त्वं चिन्नः शम्या अग्ने
अस्या ऋतस्य बोध्यृतचित्स्वाधीः । कदा त उक्था सधमाद्यानि कदा भवन्ति
सख्या गृहे ते ॥ ४ ॥ कथा ह तद्वरुणाय त्वमग्ने कथा दिवे गर्हसे कन्न आगः ।
कथा मित्राय मीळ्हुषे पृथिव्यै ब्रवः कदर्यम्णे कद्भगाय ॥ ५ ॥ २० ॥ कद्धिष्ण्या-
सु वृधसानो अग्ने कद्वाताय प्रतवसे शुभंये । परिज्मने नासत्याय क्षे ब्रवः कदग्ने
रुद्राय नृघ्ने ॥ ६ ॥ कथा महे पुष्टिम्भराय पूष्णे कद्रुद्राय सुमखाय हविर्दे । क-
द्विष्णव उरुगायाय रेतो ब्रवः कदग्ने शरवे बृहत्यै ॥ ७ ॥ कथा शर्धाय मरुतामृ-
ताय कथा सूरे बृहते पृच्छ्यमानः । प्रति ब्रवोऽदितये तुराय साधा दिवो जात-
वेदश्चिकित्वान् ॥ ८ ॥ ऋतेन ऋतं नियतमीळ आ गोरामा सचा मधुमत्पक्वमग्ने ।
कृष्णा सती रुशता धासिनैषा जामर्येण पयसा पीपाय ॥ ९ ॥ ऋतेन हि ष्मा
वृषभश्चिदक्तः पुमाँ अग्निः पयसा पृष्ठ्येन । अस्पन्दमानो अचरद्वयोधा वृषा शु-
क्रं दुदुहे पृश्निरूधः ॥ १० ॥ २१ ॥ ऋतेनाद्रिं व्यसन्भिदन्तः समङ्गिरसो नवन्त
गोभिः । शुनं नरः परि षदन्नुषासमाविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ॥ ११ ॥ ऋतेन
देवीरमृता अमृक्ता अर्णोभिरापो मधुमद्भिरग्ने । वाजी न सर्गेषु प्रस्तुभानः प्र स-
दमित्स्रवितवे दधन्युः ॥ १२ ॥ मा कस्य यक्षं सदमिद्धुरो गा मा वेशस्य प्रमिन-
तो मापेः । मा भ्रातुरग्ने अनृजोर्ऋणं वेर्मा सख्युर्दक्षं रिपोर्भुजेम ॥ १३ ॥ रक्षा
णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः । प्रति ष्फुर वि रुज वीड्वंहो
जहि रक्षो महि चिद्वावृधानम् ॥ १४ ॥ एभिर्भव सुमना अग्ने अर्कैरिमान्त्स्पृश
मन्मभिः शूर वाजान् । उत ब्रह्माण्यङ्गिरो जुषस्व सं ते शस्तिर्देववाता जरेत
॥ १५ ॥ एता विश्वा विदुषे तुभ्यं वेधो नीथान्यग्ने निण्या वचांसि । निवचना
कवये काव्यान्यशंसिषं मतिभिर्विप्र उक्थैः ॥ १६ ॥ २२ ॥

॥ ४ ॥ १—१५ वामदेव ऋषिः ॥ अग्नी रक्षोहा देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ८ भुरिक् पङ्क्तिः । ९ स्वराट् पङ्क्तिः । १२ निचृत्पङ्क्तिः । ३, १०, ११, १५ निचृत् त्रिष्टुप् । ६ विराट् त्रिष्टुप् । ७, १३ त्रिष्टुप् । १४ स्वराड् बृहती ॥

स्वरः—१, २, ४, ५, ८, ९, १२ पञ्चमः । ३, ६, ७, १०, ११, १३, १५
धैवतः । १४ मध्यमः ॥

॥ ४ ॥ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ इभेन । तृष्वी-
मनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तव भ्रमास आशुया
पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः । तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसंन्दितो वि सृज वि-
ष्वगुल्काः ॥ २ ॥ प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः ।
यो नो दूरे अघशंसो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्ने तिष्ठ
प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतात्तिग्महेते । यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा
तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्या-
न्यग्ने । अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून् ॥५॥ २३॥
स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत् । विश्वान्यस्मै सुदि-
नानि रायो द्युम्नान्यर्यो वि दुरो अभि द्यौत् ॥ ६ ॥ सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदा-
नुर्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः । पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै
सुदिना सासदिष्टिः ॥ ७ ॥ अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक्सं ते वावाता ज-
रतामियं गीः । स्वश्वास्त्वा सुरथा मर्जयेमास्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून् ॥ ८ ॥
इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन्दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून् । क्रीळन्तस्त्वा सुमनसः
सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम् ॥ ९ ॥ यस्त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो अग्न
उपयाति वसुमता रथेन । तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस्त आतिथ्यमानुष-
ग्जुजोषत् ॥ १० ॥ २४ ॥ महो रुजामि बन्धुता वचोभिस्तन्मा पितुर्गोतमादु-
न्वियाय । त्वं नो अस्य वचसश्चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः ॥ ११ ॥
अस्वप्नजस्तरणयः सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः । ते पायवः सध्र्यञ्चो
निषद्याग्ने तव नः पान्त्वमूर ॥ १२ ॥ ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं
दुरितादरक्षन् । ररक्ष तान्त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ॥ १३ ॥
त्वया वयं सधन्य१स्त्वोतास्तव प्रणीत्यश्याम वाजान् । उभा शंसा सूदय सत्य-
तातेऽनुष्ठुया कृणुह्यह्रयाण ॥ १४ ॥ अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमं
शस्यमानं गृभाय । दहाशसो रक्षसः पाह्य१स्मान्द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्
॥ १५ ॥ २५ ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ १-१५ वामदेव ऋषिः ॥ वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः-१ विराट्

त्रिष्टुप् । २, ५, ६, ७, ८, ११ निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ४, ९, १२, १३, १५ त्रिष्टुप् । १०, १४ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९, ११-१३, १५ धैवतः । १०, १४ पञ्चमः ॥

॥ ५ ॥ वैश्वानराय मीळ्हुषे सजोषाः कथा दाशेमाग्नये बृहद्भाः । अनूनेन बृहता वक्षथेनोप स्तभायदुपमिन्न रोधः ॥ १ ॥ मा निन्दत य इमां मह्यं रातिं देवो ददौ मर्त्याय स्वधावान् । पाकाय गृत्सो अमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो यह्वो अग्निः ॥ २ ॥ साम द्विबर्हा महि तिग्मभृष्टिः सहस्ररेता वृषभस्तुविष्मान् । पदं न गोरपगूळ्हं विविद्वानग्निर्मह्यं प्रेदु वोचन्मनीषाम् ॥ ३ ॥ प्र ताँ अग्निर्बभसत्तिग्मजम्भस्तपिष्ठेन शोचिषा यः सुराधाः । प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि ॥४॥ अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः । पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदमजनता गभीरम् ॥ ५ ॥ १ ॥ इदं मे अग्ने कियते पावकामिनते गुरुं भारं न मन्म । बृहद्दधाथ धृषता गभीरं यह्वं पृष्ठं प्रयसा सप्तधातु ॥ ६ ॥ तमिन्न्वे३व समना समानमभि क्रत्वा पुनती धीतिरश्याः । ससस्य चर्मन्नधि चारु पृश्नेरग्रे रुप आरुपितं जबारु ॥ ७ ॥ प्रवाच्यं वचसः किं मे अस्य गुहा हितमुप निणिग्वदन्ति । यदुस्रियाणामप वारिव व्रन्पाति प्रियं रुपो अग्रं पदं वेः ॥ ८ ॥ इदमु त्यन्महि महामनीकं यदुस्रिया सचत पूर्व्यं गौः । ऋतस्य पदे अधि दीद्यानं गुहा रघुष्यद्रघुयद्विवेद ॥ ९ ॥ अध द्युतानः पित्रोः सचासामनुत गुह्यं चारु पृश्नेः । मातुष्पदे परमे अन्ति षद्गोर्वृष्णः शोचिषः प्रयतस्य जिह्वा ॥ १० ॥ २ ॥ ऋतं वोचे नमसा पृच्छ्यमानस्तवाशसा जातवेदो यदीदम् । त्वमस्य क्षयसि यद्ध विश्वं दिवि यदु द्रविणं यत्पृथिव्याम् ॥११॥ किं नो अस्य द्रविणं कद्ध रत्नं वि नो वोचो जातवेदश्चिकित्वान् । गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य रेकु पदं न निदाना अगन्म ॥ १२ ॥ का मर्यादा वयुना कद्ध वाममच्छा गमेम रघवो न वाजम् । कदा नो देवीरमृतस्य पत्नीः सूरो वर्णेन ततनन्नुषासः ॥ १३ ॥ अनिरेण वचसा फल्ग्वेन प्रतीत्येन कृधुनातृपासः । अधा ते अग्ने किमिहा वदन्त्यनायुधास आसता सचन्ताम् ॥ १४ ॥ अस्य श्रिये समिधानस्य वृष्णो वसोरनीकं दम आ रुरोच । रुशद्वसानः सुदृशीकरूपः क्षितिर्न राया पुरुवारो अद्यौत् ॥ १५ ॥ ३ ॥

॥ ६ ॥ १—११ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ५, ८, ११ विराट् त्रिष्टुप् । ७ निचृत्त्रिष्टुप् । १० त्रिष्टुप् । २, ४, ९ भुरिक् पङ्क्तिः । ६ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ८, १०, ११ धैवतः । २, ४, ६, ९ पञ्चमः ॥

॥ ६ ॥ ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य होतरग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान् । त्वं
हि विश्वमभ्यसि मन्म प्र वेधसश्चित्तिरसि मनीषाम् ॥ १ ॥ अमूरो होता न्यसादि
विक्ष्व१ग्निर्मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः । ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन्मेतेव धूमं स्तभायदुप
द्याम् ॥ २ ॥ यता सुजूर्णी रातिनी घृताची प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः । उदु स्व-
रुर्नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः ॥ ३ ॥ स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने
अग्ना ऊर्ध्वो अध्वर्युर्जुजुषाणो अस्थात् । पर्यग्निः पशुपा न होता त्रिविष्ट्येति प्र-
दिव उराणः ॥ ४ ॥ परि त्मना मितद्रुरेति होताग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा । द्र-
वन्त्यस्य वाजिनो न शोका भयन्ते विश्वा भुवना यदभ्राट् ॥ ५ ॥ ४ ॥ भद्रा ते
अग्ने स्वनीक संदृग्घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः । न यत्ते शोचिस्तमसा वरन्त न
ध्वस्मानस्तन्वी३ रेप आ धुः ॥ ६ ॥ न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरापितरा
नू चिदिष्टौ । अधा मित्रो न सुधितः पावकोऽग्निर्दीदाय मानुषीषु विक्षु ॥ ७ ॥
द्विर्यं पञ्च जीजनन्त्संवसानाः स्वसारो अग्निं मानुषीषु विक्षु । उषर्बुधमथर्यो३न
दन्तं शुक्रं स्वासं परशुं न तिग्मम् ॥ ८ ॥ तव त्ये अग्ने हरितो घृतस्ना रोहितास
ऋज्वञ्चः स्वञ्चः । अरुषासो वृषण ऋजुमुष्का आ देवतातिमह्वन्त दस्माः ॥ ९ ॥
ये ह त्ये ते सहमाना अयासस्त्वेषासो अग्ने अर्चयश्चरन्ति । श्येनासो न दुवस-
नासो अर्थं तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः ॥ १० ॥ अकारि ब्रह्म समिधान तुभ्यं
शंसात्युक्थं यजते व्यू धाः । होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्नमस्यन्त उशिजः शंस-
मायोः ॥ ११ ॥ ५ ॥

॥ ७ ॥ १–११ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ भुरिक् त्रि-
ष्टुप् । ७, १०, ११ त्रिष्टुप् । ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । २ स्वराडुष्णिक् । ३ निचृ-
दनुष्टुप् । ४, ६ अनुष्टुप् । ५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ७–११ धैवतः । २
ऋषभः । ३–६ गान्धारः ॥

॥ ७ ॥ अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः । यमप्न-
वानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे ॥ १ ॥ अग्ने कदा त आनुष-
ग्भुवद्देवस्य चेतनम् । अधा हि त्वा जगृभ्रिरे मर्तासो विक्ष्वीड्यम् ॥ २ ॥ ऋता-
वानं विचेतसं पश्यन्तो द्यामिव स्तृभिः । विश्वेषामध्वराणां हस्कर्तारं दमेदमे ॥३॥
आशुं दूतं विवस्वतो विश्वा यश्चर्षणीरभि । आ जभ्रुः केतुमायवो भृगवाणं वि-
शेविशे ॥ ४ ॥ तमीं होतारमानुषक्चिकित्वांसं नि षेदिरे । रण्वं पावकशो-

चिषं यजिष्ठं सप्त धामभिः ॥ ५ ॥ ६ ॥ तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतं अ-
श्रितम्। चित्रं सन्तं गुहा हितं सुवेदं कूचिदर्थिनम् ॥ ६ ॥ ससस्य यद्वियुता स-
स्मिन्नूधन्नृतस्य धामन्रणयन्त देवाः। महाँ अग्निर्नमसा रातहव्यो वेरध्वराय सद-
मिदृतावा ॥ ७ ॥ वेरध्वरस्य दूत्यानि विद्वानुभे अन्ता रोदसी सञ्चिकित्वान्।
दूत ईयसे प्रदिव उराणो विदुष्टरो दिव आरोधनानि ॥ ८ ॥ कृष्णं त एम रु-
शतः पुरो भाश्चरिष्ण्व१र्चिर्वपुषामिदेकम्। यदप्रवीता दधते ह गर्भं सद्यश्चिज्जातो
भवसीदु दूतः ॥ ९ ॥ सद्यो जातस्य ददृशानमोजो यदस्य वातो अनुवाति शो-
चिः। वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वां स्थिरा चिदन्ना दयते वि जम्भैः ॥ १० ॥ तृषु यदन्ना
तृषुणा ववक्ष तृषुं दूतं कृणुते यह्वो अग्निः। वातस्य मेळिं सचते निजूर्वन्नाशुं न
वाजयते हिन्वे अर्वा ॥ ११ ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ १—८ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ४, ५, ६ नि-
चृद्गायत्री। २, ३, ७ गायत्री। ८ भुरिग्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ८ ॥ दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा ॥ १ ॥
स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः। स देवाँ एह वक्षति ॥ २ ॥ स वेद
देव आनमं देवाँ ऋतायते दमे। दाति प्रियाणि चिद्वसु ॥ ३ ॥ स होता सेदु
दूत्यं चिकित्वाँ अन्तरीयते। विद्वाँ आरोधनं दिवः ॥ ४ ॥ ते स्याम ये अग्नये
ददाशुर्हव्यदातिभिः। य ईं पुष्यन्त इन्धते ॥ ५ ॥ ते राया ते सुवीर्यैः ससवांसो वि शृ-
ण्विरे। ये अग्ना दधिरे दुवः ॥ ६ ॥ अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः।
अस्मे वाजास ईरताम् ॥ ७ ॥ स विप्रश्चर्षणीनां शवसा मानुषाणाम्। अति क्षि-
प्रेव विध्यति ॥ ८ ॥ ८ ॥

॥ ९ ॥ १—८ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३, ४, गा-
यत्री। २, ६ विराड्गायत्री। ५ त्रिपाद्गायत्री। ७, ८ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ९ ॥ अग्ने मृळ महाँ असि य ईमा देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम्
॥ १ ॥ स मानुषीषु दूळभो विक्षु प्रावीरमर्त्यः। दूतो विश्वेषां भुवत् ॥ २ ॥ स
सद्म परि णीयते होता मन्द्रो दिविष्टिषु। उत पोता नि षीदति ॥ ३ ॥ उत ग्ना
अग्निरध्वर उतो गृहपतिर्दमे। उत ब्रह्मा नि षीदति ॥ ४ ॥ वेषि ह्यध्वरीयता-
मुपवक्ता जनानाम्। हव्या च मानुषाणाम् ॥ ५ ॥ वेषीद्वस्य दूत्यं१ यस्य जुजोषो

अध्वरम् । हव्यं मर्तस्य वोळ्हवे ॥ ६ ॥ अस्माकं जोष्यध्वरमस्माकं यज्ञमङ्गिरः । अस्माकं शृणुधी हवम् ॥ ७ ॥ परि ते दूळभो रथोऽस्माँ अश्नोतु विश्वतः । येन रक्षसि दाशुषः ॥ ८ ॥ ६ ॥

॥ १० ॥ १–८ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ गायत्री । २, ३, ४, ७ भुरिग्गायत्री । ५, ८ स्वराडुष्णिक् । ६ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः–१–४, ७ षड्जः । ५, ६, ८ ऋषभः ॥

॥ १० ॥ अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् । ऋध्यामा त ओहैः ॥१॥ अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः । रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ ॥२॥ एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ् स्वर्ण ज्योतिः । अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः ॥ ३ ॥ आभिष्टे अद्य गीर्भिर्गृणन्तोऽग्ने दाशेम । प्र ते दिवो न स्तनयन्ति शुष्माः ॥ ४ ॥ तव स्वादिष्ठाग्ने संदृष्टिरिदा चिदह्न इदा चिदक्तोः । श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके ॥ ५ ॥ घृतं न पूतं तनूररेपाः शुचि हिरण्यम् । तत्ते रुक्मो न रोचत स्वधावः ॥ ६ ॥ कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि द्वेषोऽग्न इनोषि मर्तात् । इत्था यजमानादृतावः ॥ ७ ॥ शिवा नः सख्या सन्तु भ्रात्राग्ने देवेषु युष्मे । सा नो नाभिः सदने सस्मिन्नूधन् ॥ ८ ॥ १० ॥ १ ॥

॥ ११ ॥ १–६ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ स्वराड्बृहती । ४ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, २, ५, ६ धैवतः । ३ ऋषभः । ४ पञ्चमः ॥

॥ ११ ॥ भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकमुपाक आ रोचते सूर्यस्य । रुशद्दृशे ददृशे नक्तया चिदरूक्षितं दृश आ रूपे अन्नम् ॥ १ ॥ वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां खं वेपसा तुविजात स्तवानः । विश्वेभिर्यद्वावनः शुक्र देवैस्तन्नो रास्व सुमहो भूरि मन्म ॥ २ ॥ त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास्त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि । त्वदेति द्रविणं वीरपेशा इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय ॥ ३ ॥ त्वद्वाजी वाजम्भरो विहाया अभिष्टिकृज्जायते सत्यशुष्मः । त्वद्रयिर्देवजूतो मयोभुस्त्वदाशुर्जूजुवाँ अग्ने अर्वा ॥ ४ ॥ त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो देवं मर्ता अमृत मन्द्रजिह्वम् । द्वेषोयुतमा विवासन्ति धीभिर्दमूनसं गृहपतिममूरम् ॥ ५ ॥ आरे अस्मदमतिमारे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि । दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित्सचसे स्वस्ति ॥ ६ ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ १—६ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ३, ४ भुरिक् पङ्क्तिः । ६ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५ धैवतः । ३, ४, ६ पञ्चमः ॥

॥ १२ ॥ यस्त्वामग्न इनधते यतस्रुक्त्रिस्ते अन्नं कृणवत्सस्मिन्नहन् । स सुद्युम्नैरभ्यस्तु प्रसक्षत्तव क्रत्वा जातवेदश्चिकित्वान् ॥ १ ॥ इध्मं यस्ते जभरच्छश्रमाणो महो अग्ने अनीकमा सपर्यन् । स इधानः प्रति दोषामुषासं पुष्यन्त्रयिं सचते घ्नन्नमित्रान् ॥ २ ॥ अग्निरीशे बृहतः क्षत्रियस्याग्निर्वाजस्य परमस्य रायः । दधाति रत्नं विधते यविष्ठो व्यानुषङ्मर्त्याय स्वधावान् ॥ ३ ॥ यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठाचित्तिभिश्चकृमा कच्चिदागः । कृधी ष्वस्माँ अदितेरनागान्व्येनांसि शिश्रथो विष्वगग्ने ॥ ४ ॥ महश्चिदग्न एनसो अभीक ऊर्वाद्देवानामुत मर्त्यानाम् । मा ते सखायः सदमिद्रिषाम यच्छा तोकाय तनयाय शं योः ॥ ५ ॥ यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः । एवो ष्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ॥ ६ ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ १—५ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १३ ॥ प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यद्विभातीनां सुमना रत्नधेयम् । यातमश्विना सुकृतो दुरोणमुत्सूर्यो ज्योतिषा देव एति ॥ १ ॥ ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद्द्रप्सं दविध्वद्गविषो न सत्वा । अनु व्रतं वरुणो यन्ति मित्रो यत्सूर्यं दिव्या रोहयन्ति ॥ २ ॥ यं सीमकृण्वन्तमसे विपृचे ध्रुवक्षेमा अनवस्यन्तो अर्थम् । तं सूर्यं हरितः सप्त यह्वीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति ॥ ३ ॥ वहिष्ठेभिर्विहरन्यासि तन्तुमवव्ययन्नसितं देव वस्म । दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य चर्मेवावाधुस्तमो अप्स्वन्तः ॥ ४ ॥ अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्ङुत्तानोऽव पद्यते न । कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम् ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ १—५ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निर्लिङ्गोक्ता देवता वा ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः । ३ स्वराट् पङ्क्तिः । २, ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः । २, ४, ५ धैवतः ॥

॥ १४ ॥ प्रत्यग्निरुषसो जातवेदा अख्यद्देवो रोचमाना महोभिः । आ

नासत्योरुगाया रथेनेमं यज्ञमुप नो यातमच्छ ॥ १ ॥ ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अ
श्रेज्ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वन् । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं वि सूर्यो
रश्मिभिश्चेकितानः ॥ २ ॥ आवहन्त्यरुणीर्ज्योतिषागान्मही चित्रा रश्मिभि
श्चेकिताना । प्रबोधयन्ती सुविताय देव्युषा ईयते सुयुजा रथेन ॥ ३ ॥ आ
वां वहिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ । इमे हि वां मधुपेयाय
सोमा अस्मिन्यज्ञे वृषणा मादयेथाम् ॥ ४ ॥ अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्
ङुत्तानोऽव पद्यते न । कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृत
पाति नाकम् ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ १–१० वामदेव ऋषिः ॥ १–६ अग्निः । ७, ८ सोमकः साह
देव्यः । ९, १० अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ४ गायत्री । २, ५, ६ विरा
गायत्री । ३, ७, ८, ९, १० निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १५ ॥ अग्निर्होता नो अध्वरे वाजी सन्परि णीयते । देवो देवेषु यज्ञियः
॥ १ ॥ परि त्रिविष्ट्यध्वरं यात्यग्नी रथीरिव । आ देवेषु प्रयो दधत् ॥ २
परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ ३ ॥ अयं य
सृञ्जये पुरो दैववाते समिध्यते । द्युमाँ अमित्रदम्भनः ॥ ४ ॥ अस्य घा वीर ई
तोऽग्नेरीशीत मर्त्यः । तिग्मजम्भस्य मीळ्हुषः ॥ ५ ॥ १५ ॥ तमर्वन्तं न सान
सिमरुषं न दिवः शिशुम् । मर्मृज्यन्ते दिवेदिवे ॥ ६ ॥ बोधद्यन्मा हरिभ्यां कु
मारः साहदेव्यः । अच्छा न हूत उदरम् ॥ ७ ॥ उत त्या यजता हरी कुमार
त्साहदेव्यात् । प्रयता सद्य आ ददे ॥ ८ ॥ एष वां देवावश्विना कुमारः साहदे
व्यः । दीर्घायुरस्तु सोमकः ॥ ९ ॥ तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम् । दी
र्घायुषं कृणोतन ॥ १० ॥ १६ ॥

॥ १६ ॥ १—२१ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४,
८, ९, १२, १९ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् । ७, १६, १७ विराट् त्रिष्टुप् ।
२१ निचृत्पङ्क्तिः । ५, १३, १४, १५ स्वराट् पङ्क्तिः । १०, ११, १८, २०
रिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६–८, ९, १२, १९, १६, १७, धैवतः ।
५, १०, ११, १३—१५, १८, २०, २१ पञ्चमः ॥

॥ १६ ॥ आ सत्यो यातु मघवाँ ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप नः । तस

इन्धः सुषुमा सुदत्तमिहाभिपित्वं करते गृणानः ॥ १ ॥ अवस्य शूराध्वनो ना-
न्तेऽस्मिन्नो अद्य सवने मन्दध्यै । शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म
॥ २ ॥ कविर्न निण्यं विदथानि साधन्वृषा यत्सेकं विपिपानो अर्चात् । दिव
इत्था जीजनत्सप्त कारुनह्ना चिच्चक्रुर्वयुना गृणन्तः ॥ ३ ॥ स्वर्यद्वेदि सुदृशीकम-
र्कैर्महि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः । अन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृ-
तमो अभिष्टौ ॥ ४ ॥ ववक्ष इन्द्रो अमितमृजीष्युभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यभि यो विश्वा भुवना बभूव ॥ ५ ॥ १७ ॥ विश्वानि
शक्रो नर्याणि विद्वानपो रिरेच सखिभिर्निकामैः । अश्मानं चिद्ये बिभिदुर्वचोभि-
र्व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः ॥ ६ ॥ अपो वृत्रं वव्रिवांसं पराहन्प्रावत्ते वज्रं पृथिवी
सचेताः । प्रार्णांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवञ्छवसा शूर धृष्णो ॥ ७ ॥ अपो
यदद्रिं पुरुहूत दर्दराविर्भुवत्सरमा पूर्व्यं ते । स नो नेता वाजमा दर्षि भूरिं गोत्रा
रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः ॥ ८ ॥ अच्छा कविं नृमणो गा अभिष्टौ स्वर्षाता मघव-
न्नाधमानम् । ऊतिभिस्तमिषणो द्युम्नहूतौ नि मायावानब्रह्मा दस्युरर्त ॥ ९ ॥
आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं भुवत्ते कुत्सः सख्ये निकामः । स्वे योनौ नि षदतं
सरूपा वि वां चिकित्सदृतचिद्ध नारी ॥ १० ॥ १८ ॥ यासि कुत्सेन सरथमव-
स्युस्तोदो वातस्य हर्योरीशानः । ऋज्रा वाजं न गध्यं युयूषन्कविर्यदहन्पार्याय
भूषात् ॥ ११ ॥ कुत्साय शुष्णमशुषं नि बर्हीः प्रपित्वे अह्नः कुयवं सहस्रा ।
सद्यो दस्यून्प्र मृण कुत्स्येन प्र सूरश्चक्रं वृहतादभीके ॥ १२ ॥ त्वं पिप्रुं मृगयं
शूशुवांसमृजिश्वने वैदथिनाय रन्धीः । पञ्चाशत्कृष्णा नि वपः सहस्रात्कं न
पुरो जरिमा वि दर्दः ॥ १३ ॥ सूर उपाके तन्वं दधानो वि यत्ते चेत्य-
मृतस्य वर्पः । मृगो न हस्ती तविषीमुषाणः सिंहो न भीम आयुधानि बिभ्रत्
॥ १४ ॥ इन्द्रं कामा वसूयन्तो अग्मन्त्स्वर्मीळ्हे न सवने चकानाः । श्रवस्यवः
शशमानास उक्थैरोको न रण्वा सुदृशीव पुष्टिः ॥ १५ ॥ १९ ॥ तमिद्व इन्द्रं
सुहवं हुवेम यस्ता चकार नर्या पुरूणि । यो मावते जरित्रे गध्यं चिन्मक्षू वाजं
भरति स्पार्हराधाः ॥ १६ ॥ तिग्मा यदन्तरशनिः पताति कस्मिञ्चिच्छूर मुहुके
जनानाम् । घोरा यदर्य समृतिर्भवात्यध स्मा नस्तन्वो बोधि गोपाः ॥ १७ ॥
भुवोऽविता वामदेवस्य धीनां भुवः सखावृको वाजसातौ । त्वामनु प्रमतिमा जं-
गन्मोरुशंसो जरित्रे विश्वध स्याः ॥ १८ ॥ एभिर्नृभिरिन्द्र त्वायुभिष्ट्वा मघवद्भि-
र्मघवन्विश्व आजौ । द्यावो न द्युम्नैरभि सन्तो अर्यः क्षपो मदेम शरदश्च पूर्वीः

॥ १९ ॥ एवेदिन्द्राय वृषभाय वृष्णे ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् । नू चिद्यथा न
सख्या वियोषदसन्न उग्रोऽविता तनूपाः ॥ २० ॥ नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इ
जरित्रे नद्यो३न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः स
दासाः ॥२१॥ २०॥

॥ १७ ॥ १-२१ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१ पङ्क्तिः । ७
९ भुरिक् पङ्क्तिः । १४, १६ स्वराट्पङ्क्तिः । १५ याजुषी पङ्क्तिः । २१ निचृत्प
ङ्क्तिः । २, १२, १३, १७, १८, १९ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ५, ६, ८, १०, १
त्रिष्टुप् । ४, २० विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१, ७, ९, १४-१६, २१ पञ्चमः
२-६, ८, १०-१३, १७—२० धैवतः ॥

॥ १७ ॥ त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ह क्षा अनु क्षत्रं मंहना मन्यत द्यौः । त्व
वृत्रं शवसा जघन्वान्त्सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानान् ॥ १ ॥ तव त्विषो जनि
मन्रेजत द्यौ रेजद्भूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः । ऋघायन्त सुभ्व१:पर्वतास आर्द
न्धन्वानि सरयन्त आपः ॥ २ ॥ भिनद्गिरिं शवसा वज्रमिष्णन्नाविष्कृण्वान
सहसान ओजः । वधीद्वृत्रं वज्रेण मन्दसानः सरन्नापो जवसा हतवृष्णीः ॥३॥
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौरिन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत् । य ईं जजान स्व
सुवज्रमनपच्युतं सदसो न भूम ॥ ४ ॥ य एक इच्च्यावयति प्र भूमा राजा कृ
ष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः । सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः॥५॥
२१ ॥ सत्रा सोमा अभवन्नस्य विश्वे सत्रा मदासो बृहतो मदिष्ठाः । सत्राभव
वसुपतिर्वसूनां दत्रे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः ॥ ६ ॥ त्वमध प्रथमं जायमानोऽ
मे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः । त्वं प्रति प्रवत आशयानमहिं वज्रेण मघवन्वि
वृश्चः ॥ ७ ॥ सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम् । हन्ता यो
वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥ ८ ॥ अयं वृतश्चातयते स
मीचीर्य आजिषु मघवा शृण्व एकः । अयं वाजं भरति यं सनोत्यस्य प्रियास
सख्ये स्याम ॥ ९ ॥ अयं शृण्वे अध जयन्नुत घ्नन्नयमुत प्र कृणुते युधा गाः
यदा सत्यं कृणुते मन्युमिन्द्रो विश्वं दृळ्हं भयत एजदस्मात् ॥ १० ॥ २२ ॥
समिन्द्रो गा अजयत्सं हिरण्या समश्विया मघवा यो ह पूर्वीः । एभिर्नृभिर्नृतमो
अस्य शाकै रायो विभक्ता सम्भरश्च वस्वः ॥ ११ ॥ कियत्स्विदिन्द्रो अध्येति
मातुः कियत्पितुर्जनितुर्यो जजान । यो अस्य शुष्मं मुहुकैरियर्ति वातो न जूतः स्तनय

त्रिर्भ्रैः ॥ १२ ॥ त्रियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोतीयर्ति रेणुं मघवा समोहं । विभञ्जनुरशनिमाँ इव द्यौरुत स्तोतारं मघवा वसौ धात् ॥ १३ ॥ अयं चक्रमिषणत्सूर्यस्य न्येतशं रीरमत्ससृमाणम् । आ कृष्ण ईं जुहुराणो जिघर्ति त्वचो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ॥ १४ ॥ असिक्न्यां यजमानो न होता ॥ १५ ॥ २३ ॥ गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः । जनीयन्तो जनिदामक्षितोतिमा च्यावयामोऽवते न कोशम् ॥ १६ ॥ त्राता नो बोधि ददृशान आपिरभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम् सखा पिता पितृतमः पितॄणां कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः ॥ १७ ॥ सखीयतामविता बोधि सखा गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः । वयं ह्या ते चकृमा सबाध आभिः शमीभिर्महयन्त इन्द्र ॥ १८ ॥ स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति । अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्मन्नकिर्देवा वारयन्ते न मर्ताः ॥ १९ ॥ एवा न इन्द्रो मघवा विरप्शी करत्सत्या चर्षणीधृदनर्वा । त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे अधि श्रवो माहिनं यज्जरित्रे ॥२०॥ नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ २१ ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ १–१३ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रादिती देवते ॥ छन्दः–१, ८, १२ त्रिष्टुप् । ५, ६, ७, ९, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । २ पङ्क्तिः । ३, ४ भुरिक् पङ्क्तिः । १३ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ५–१२ धैवतः । २–४, १३ पञ्चमः ॥

॥१८॥ अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे । अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरममुया पत्तवे कः ॥ १ ॥ नाहमतो निरया दुर्गहैतत्तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि । बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै ॥ २ ॥ परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गमानि । त्वष्टुर्गृहे अपिबत्सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्वोः सुतस्य ॥ ३ ॥ किं स ऋधक्कृणवद्यं सहस्रं मासो जभार शरदश्च पूर्वीः । नही न्वस्य प्रतिमानमस्त्यन्तर्जातेषूत ये जनित्वाः ॥ ४ ॥ अवद्यमिव मन्यमाना गुहाकरिन्द्रं माता वीर्येणा न्यृष्टम् । अथोदस्थात्स्वयमत्कं वसान आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ॥ ५ ॥ २५ ॥ एता अर्षन्त्यललाभवन्तीरृतावरीरिव सङ्क्रोशमानाः । एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति ॥ ६ ॥ किमु ष्विदस्मै निविदो भनन्तेन्द्रस्यावद्यं दिधिषन्त आपः । ममैतान्पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वि सिन्धून् ॥ ७ ॥

ममंचन त्वा युवतिः परास ममंचन त्वा कुषवा जगार । ममंश्चिदापः शिशवे म
मृड्युर्ममंश्चिदिन्द्रः सहसोदतिष्ठत् ॥ ८ ॥ ममंचन ते मघवन्व्यंसो निविविध्वा
अप हनू जघान । अधा निविद्ध उत्तरो बभूवाञ्छिरो दासस्य सं पिणग्वधे
॥ ९ ॥ गृष्टिः ससूव स्थविरं तवागामनाधृष्यं वृषभं तुम्रमिन्द्रम् । अरीळ्हं वत्स
चरथाय माता स्वयं गातुं तन्व इच्छमानम् ॥ १० ॥ उत माता महिषमन्ववेनदमी
त्वा जहति पुत्र देवाः । अथाब्रवीद्वृत्रमिन्द्रो हनिष्यन्त्सखे विष्णो वितरं वि क्र
मस्व ॥ ११ ॥ कस्ते मातरं विधवामचक्रच्छयुं कस्त्वामजिघांसच्चरन्तम् । कस्ते
देवो अधि मार्डीक आसीद्यत्प्राक्षिणाः पितरं पादगृह्य ॥ १२ ॥ अवर्त्या शुन
आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम् । अपश्यं जायाममहीयमानामधा मे
श्येनो मध्वा जभार ॥ १३ ॥ २६ ॥ ५ ॥

॥ १९ ॥ १-११ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, विराट्
त्रिष्टुप् । २, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ५, ८ त्रिष्टुप् । ४, ६ भुरिक् पङ्क्तिः । ७
१० पङ्क्तिः । ११ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-३, ५, ८, ९ धैवतः । ४, ६, ७, १०
११ पञ्चमः ॥

॥ १९ ॥ एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र विश्वे देवासः सुहवास ऊमाः । महामुभे
रोदसी वृद्धमृष्वं निरेकमिद्वृणते वृत्रहत्ये ॥ १ ॥ अवासृजन्त जिव्रयो न देवा
भुवः सम्राळिन्द्र सत्ययोनिः । अहन्नहिं परिशयानमर्णः प्र वर्तनीररदो विश्वधेनाः
॥ २ ॥ अतृप्णुवन्तं वियतमबुध्यमबुध्यमानं सुषुपाणमिन्द्र । सप्त प्रति प्रवत
आशयानमहिं वज्रेण वि रिणा अपर्वन् ॥ ३ ॥ अक्षोदयच्छवसा क्षाम बुध्नं
वार्ण वातस्तविषीभिरिन्द्रः । दृळ्हान्यौभ्नादुशमान ओजोऽवाभिनत्ककुभः प
र्वतानाम् ॥४ ॥ अभि प्र दद्रुर्जनयो न गर्भं रथा इव प्र ययुः साकमद्रयः । अ
तर्पयो विसृत उब्ज ऊर्मीन्त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून् ॥ ५ ॥ १ ॥ त्वं मही
मवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम् । अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणाँ
अकृणोरिन्द्र सिन्धून् ॥ ६ ॥ प्राग्रुवो नभन्वो३न वक्वा ध्वस्रा अपिन्वद्युवतीर्ऋ
तज्ञाः । धन्वान्यज्राँ अपृणक्तृषाणाँ अधोगिन्द्रः स्तर्यो३दंसुपत्नीः ॥ ७ ॥ पूर्वी
रुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वि सिन्धून् । परिष्ठिता अतृणद्बद्बधा
नाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या ॥ ८ ॥ वम्रीभिः पुत्रमग्रुवो अदानं निवेश
नाद्धरिव आ जभर्थ । व्यं१धो अख्यदहिमाददानो निर्भूदुखच्छित्समरन्त पर्व ॥९॥

प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्राविद्वाँ आह विदुषे करांसि । यथायथा वृष्ण्यानि स्वगूर्तापांसि राजन्नर्याविवेषीः ॥ १० ॥ नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥ २ ॥

॥ २० ॥ १—११ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ५ विराट् त्रिष्टुप् । ८, १० त्रिष्टुप् । २ पङ्क्तिः । ७, ६ स्वराट् पङ्क्तिः । ११ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३—६, ८, १० धैवतः । २, ७, ६, ११ पञ्चमः ॥

॥ २० ॥ आ न इन्द्रो दूरादा न आसादभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः सङ्गे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून् ॥ १ ॥ आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छार्वाचीनोऽवसे राधसे च । तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शीमं यज्ञमनु नो वाजसातौ ॥ २ ॥ इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र पुरो दधत्सनिष्यसि क्रतुं नः । श्वघ्नीव वज्रिन्त्सनये धनानां त्वया वयमर्य आजिञ्जयेम ॥ ३ ॥ उशन्नु षु णः सुमना उपाके सोमस्य नु सुषुतस्य स्वधावः । पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः समन्धसा ममदः पृष्ठ्येन ॥४॥ वि यो ररप्श ऋषिभिर्नवेभिर्वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता । मर्यो न योषामभि मन्यमानोऽच्छा विवक्मि पुरुहूतमिन्द्रम् ॥५॥ ३॥ गिरिर्न यः स्वतवाँ ऋष्व इन्द्रः सनादेव सहसे जात उग्रः । आदर्ता वज्रं स्थविरं न भीम उद्नेव कोशं वसुना न्यृष्टम् ॥६॥ न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति न राधस आमरीता मघस्य । उद्वावृषाणस्तविषीव उग्रास्मभ्यं दद्धि पुरुहूत रायः ॥७॥ ईक्षे रायः क्षयस्य चर्षणीनामुत व्रजमपवर्तासि गोनाम् । शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान्वस्वो राशिमभिनेतासि भूरिम् ॥८॥ कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कृणोति मुहु का चिदृष्वः । पुरु दाशुषे विचयिष्ठो अंहोऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे ॥ ९ ॥ मा नो मर्धीरा भरा दद्धि तन्नः प्र दाशुषे दातवे भूरि यत्ते । नव्ये देष्णे शस्ते अस्मिन्त उक्थे प्र ब्रवाम वयमिन्द्र स्तुवन्तः ॥ १० ॥ नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥ ४ ॥

॥ २१ ॥ १—११ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ७, १० भुरिक् पङ्क्तिः । ३ स्वराट् पङ्क्तिः । ११ निचृत् पङ्क्तिः । ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ६,

८ विराट् त्रिष्टुप् । ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ७, १०, ११ पञ्चमः । ४-६, ८, ९ धैवतः ॥

॥ २१ ॥ आ यात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः । वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीर्द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुष्यात् ॥ १ ॥ तस्येदिह स्तवथ वृष्ण्यानि तुविद्युम्नस्य तुविराधसो नॄन् । यस्य क्रतुर्विदथ्यो न सम्राट् साह्वान्तरुत्रो अभ्यस्ति कृष्टीः ॥ २ ॥ आ यात्विन्द्रो दिव आ पृथिव्या मक्षू समुद्रादुत वा पुरीषात् । स्वर्णरादवसे नो मरुत्वान् परावतो वा सदनादृतस्य ॥ ३ ॥ स्थूरस्य रायो बृहतो य ईशे तमु ष्टवाम विदथेष्विन्द्रम् । यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ ॥ ४ ॥ उप यो नमो नमसि स्तभायन्नियर्ति वाचं जनयन्यजध्यै । ऋञ्जसानः पुरुवार उक्थैरेन्द्रं कृण्वीत सदनेषु होता ॥ ५ ॥ ५ ॥ धिषा यदि धिषण्यन्तः सरण्यान्त्सदन्तो अद्रिमौशिजस्य गोहे । आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान्त्संवरणेषु वह्निः ॥ ६ ॥ सत्रा यदीं भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय । गुहा यदीमौशिजस्य गोहे प्र यद्धिये प्रायसे मदाय ॥ ७ ॥ वि यद्वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर्जिन्वे अपां जवांसि । विदद्गौरस्य गवयस्य गोहे यदी वाजाय सुध्यो वहन्ति ॥ ८ ॥ भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारा स्तुवते राध इन्द्र । का ते निषत्तिः किमु नो ममत्सि किं नोदुदु हर्षसे दातवा उ ॥ ९ ॥ एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्राड्ढन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः । पुरुष्टुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य ॥ १० ॥ नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥ ६ ॥ २ ॥

॥ २२ ॥ १-११ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ५, १० निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् । ६, ७ त्रिष्टुप् । ८ भुरिक् पङ्क्तिः । ९ स्वराट् पङ्क्तिः । ११ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-७, १० धैवतः । ८, ९, ११ पञ्चमः ॥

॥ २२ ॥ यन्न इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान्करति शुष्म्या चित् । ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्था यो अश्मानं शवसा बिभ्रदेति ॥ १ ॥ वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान् । श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णां यस्याः पर्वाणि सख्याय विव्ये ॥ २ ॥ यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः । दधानो वज्रं बाह्वोरुशन्तं द्याममेन रेजयत्प्र भूम ॥ ३ ॥ विश्वा रोधांसि

वतश्च पूर्वीर्द्यौर्क्षृष्वाज्जनिमन्नेजत क्षाः। आ मातरा भरति शुष्म्या गोर्नृवत्परि-
मन्नोनुवन्त वाताः॥४॥ ता तू त इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित्सवनेषु प्रवाच्या।
च्छूर धृष्णो धृषता दधृष्वानहिं वज्रेण शवसाविवेषीः ॥५॥७॥ ता तू ते
त्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊध्नः। अधा ह त्वद्वृषमणो
भयानाः प्र सिन्धवो जवसा चक्रमन्त॥६॥ अत्राह ते हरिवस्ता उ देवीरवो-
भिरिन्द्र स्तवन्त स्वसारः। यत्सीमनु प्र मुचो बद्बधाना दीर्घामनु प्रसितिं स्यन्द-
ध्यै॥७॥ पिपीळे अंशुर्मद्यो न सिन्धुरा त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः। अस्म-
क्शुशुचानस्य यम्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः॥८॥ अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि
येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि। अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वध-
नुषो मर्त्यस्य॥९॥ अस्माकमित्सु शृणुहि त्वमिन्द्रास्मभ्यं चित्राँ उप माहि वा-
ान्। अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरन्धीरस्माकं सु मघवन्बोधि गोदाः॥१०॥ नू
त इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः। अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धि-
स्याम रथ्यः सदासाः॥११॥८॥

॥२३॥ १-११ वामदेव ऋषिः॥ १-७, ११ इन्द्रः। ८-१० इन्द्र ऋत-
वो वा देवता॥ छन्दः—१, २, ३, ७, ८, ९ त्रिष्टुप्। ४, १० निचृत्त्रिष्टुप्।
, ६ भूरिक् पङ्क्तिः। ११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ७—१० धैवतः। ५,
, ११ पञ्चमः॥

॥२३॥ कथा महामवृधत्कस्य होतुर्यज्ञं जुषाणो अभि सोममूधः। पिबन्नुशानो
षमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय॥१॥ को अस्य वीरः सधमादमाप
मानंश सुमतिभिः को अस्य। कदस्य चित्रं चिकिते कदूती वृधे भुवच्छशमा-
स्य यज्योः॥२॥ कथा शृणोति हूयमानमिन्द्रः कथा शृण्वन्नवसामस्य वेद।
अस्य पूर्वीरुपमातयो ह कथैनमाहुः पपुरिं जरित्रे॥३॥ कथा सबाधः श-
मानो अस्य नशदभि द्रविणं दीध्यानः। देवो भुवन्नवेदा म ऋतानां नमो ज-
भ्वाँ अभि यज्जुजोषत्॥४॥ कथा कदस्या उषसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं
जोष। कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन्कामं सुयुजं ततस्रे॥५॥९॥
कमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः कदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम। श्रिये सुदृशो वपुरस्य
र्गाः स्व१र्ण चित्रतममिष आ गोः॥६॥ द्रुहं जिघांसन्ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते
ग्मा तुजसे अनीका। ऋणा चिद्यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो

वब्राधे ॥ ७ ॥ ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति । ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः ॥ ८ ॥ ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि सन्ति पुरूणि चन्द्रा वपुषे वपूंषि । ऋतेन दीर्घमिषणन्त पृक्ष ऋतेन गाव ऋतमा विवेशुः ॥ ९ ॥ ऋतं येमान ऋतमिद्वनोत्यृतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः । ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ऋताय धेनू परमे दुहाते ॥ १० ॥ नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥ १० ॥

॥ २४ ॥ १—११ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप् । ३, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ विराट्त्रिष्टुप् । २, ८ भुरिक् पङ्क्तिः । ६ स्वराट् पङ्क्तिः । ११ निचृत् पङ्क्तिः । १० निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३–५, ७, ९ धैवतः । २, ६, ८, ११ पञ्चमः । १० गान्धारः ॥

॥ २४ ॥ का सुष्टुतिः शवसः सूनुमिन्द्रमर्वाचीनं राधस आ ववर्तत् । ददिर्हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर्निष्षिधां नो जनासः ॥ १ ॥ स वृत्रहत्ये हव्यः स ईड्यः स सुष्टुत इन्द्रः सत्यराधाः । स यामन्ना मघवा मर्त्याय ब्रह्मण्यते सुष्वये वरिवो धात् ॥ २ ॥ तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत त्राम् । मिथो यत्त्यागमुभयासो अग्मन्नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ ॥ ३ ॥ क्रतूयन्ति क्षितयो योग उग्राशुषाणासो मिथो अर्णसातौ । सं यद्विशोऽववृत्रन्त युध्मा आदिन्नेम इन्द्रयन्ते अभीके ॥ ४ ॥ आदिद्ध नेम इन्द्रियं यजन्त आदित्पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात् । आदित्सोमो वि पपृच्यादसुष्वीनादिज्जुजोष वृषभं यजध्यै ॥ ५ ॥ ११ ॥ कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थेन्द्राय सोममुशते सुनोति । सध्रीचीनेन मनसाविवेनन्तमित्सखायं कृणुते समत्सु ॥ ६ ॥ य इन्द्राय सुनवत्सोममद्य पचात्पक्तीरुत भृज्जाति धानाः । प्रति मनायोरुचथानि हर्यन्तस्मिन्दधद्वृषणं शुष्ममिन्द्रः ॥७॥ यदा समर्यं व्यचेदृघावा दीर्घं यदाजिमभ्यख्यदर्यः । अचिक्रदद्वृषणं पत्न्यच्छा दुरोण आ निशितं सोमसुद्भिः ॥८॥ भूयसा वस्नमचरत्कनीयोऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन् । स भूयसा कनीयो नारिरेचीद्दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम् ॥९॥ क इमं दशभिर्ममेन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः । यदा वृत्राणि जङ्घनदथैनं मे पुनर्ददत् ॥१०॥ नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥ १२ ॥

॥ २५ ॥ १–८ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ निचृत् पङ्क्तिः । २, ८ स्वराट् पङ्क्तिः । ४, ६ भुरिक् पङ्क्तिः । ३, ५, ७ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः– १, २, ४, ६, ८ पञ्चमः । ३, ५, ७ धैवतः ॥

॥२५॥ को अद्य नर्यो देवकाम उशन्निन्द्रस्य सख्यं जुजोष । को वा महेऽवसे पार्याय समिद्धे अग्नौ सुतसोम ईट्टे ॥१॥ को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर्वा भवति वस्त उस्राः । क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती ॥ २ ॥ को देवानामवो अद्या वृणीते क आदित्याँ अदितिं ज्योतिरीट्टे । कस्याश्विनाविन्द्रो अग्निः सुतस्यांशोः पिबन्ति मनसाविवेनम् ॥ ३ ॥ तस्मा अग्निर्भारतः शर्म यंसज्ज्योक्पश्यात्सूर्यमुच्चरन्तम् । य इन्द्राय सुनवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम् ॥४॥ न तं जिनन्ति बहवो न दभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत् । प्रियः सुकृत्प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी ॥५॥ १३॥ सुप्राव्यः प्राशुषाळेष वीरः सुष्वेः पक्तिं कृणुते केवलेन्द्रः । नासुष्वेरापिर्न सखा न जामिर्दुष्प्राव्योऽवहन्तेदवाचः ॥ ६ ॥ न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रोऽसुन्वता सुतपाः सं गृणीते । आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्नं वि सुष्वये पक्तये केवलो भूत् ॥ ७ ॥ इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसिताश इन्द्रम् । इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते ॥ ८ ॥ १४ ॥

॥ २६ ॥ १–७ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ पङ्क्तिः । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ३, ७ स्वराट्पङ्क्तिः । ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ विराट्त्रिष्टुप् । ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–३, ७ पञ्चमः । ४–६ धैवतः ॥

॥ २६ ॥ अहं मनुरभवं सूर्यश्चाहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः । अहं कुत्समार्जुनेयं न्यृञ्जेऽहं कविरुशना पश्यता मा ॥ १ ॥ अहं भूमिमददामार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय । अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतमायन् ॥ २ ॥ अहं पुरो मन्दसानो व्यैरं नव साकं नवतीः शम्बरस्य । शततमं वेश्यं सर्वताता दिवोदासमतिथिग्वं यदावम् ॥ ३ ॥ प्र सु ष विभ्यो मरुतो विरस्तु प्र श्येनः श्येनेभ्य आशुपत्वा । अचक्रया यत्स्वधया सुपर्णो हव्यं भरन्मनवे देवजुष्टम् ॥ ४ ॥ भरद्यदि विरतो वेविजानः पथोरुणा मनोजवा असर्जि । तूयं ययौ मधुना सोम्येनोत श्रवो विविदे श्येनो अत्र ॥ ५ ॥ ऋजीपी श्येनो ददमानो अंशुं परावतः शकुनो मन्द्रं मदम् । सोमं भरद्दादृहाणो देवावान्दिवो अमुष्मादुत्तरादा-

दार्य ॥ ६ ॥ आदाय श्येनो अभरत्सोमं सहस्रं सवाँ अयुतं च साकम् । अत्रा पुरंन्धिरजहादरातीर्मदे सोमस्य मूरा अमूरः ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ २७ ॥ १–५ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४ निचृत् त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् । ५ निचृच्छकरी ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २७ ॥ गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वा । शतं मा पुर आयसीररक्षन्नध श्येनो जवसा निरदीयम् ॥ १ ॥ न घा स मामप जोषं जभाराभीमास त्वक्षसा वीर्येण । ईर्मा पुरंन्धिरजहादरातीरुत वातां अतरच्छूशुवानः ॥ २ ॥ अव यच्छ्येनो अस्वनीदध द्योर्वि यद्यदि वात ऊहुः पुरंन्धिम् । सृजद्यदस्मा अव ह क्षिपज्ज्यां कृशानुरस्ता मनसा भुरण्यन् ॥ ३ ॥ ऋजिप्य ईमिन्द्रावतो न भुज्युं श्येनो जभार बृहतो अधि ष्णोः । अन्तः पतत्पतत्र्यस्य पर्णमध यामनि प्रसितस्य तद्वेः ॥ ४ ॥ अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तमापिप्यानं मघवा शुक्रमन्धः । अध्वर्युभिः प्रयतं मध्वो अग्रमिन्द्रो मदाय प्रति धत्पिबध्यै शूरो मदाय प्रति धत्पिबध्यै ॥ ५ ॥ १६ ॥

॥ २८ ॥ १—५ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रासोमौ देवते ॥ छन्दः—१ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ विराट्त्रिष्टुप् । ४ त्रिष्टुप् । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ ३, ४ धैवतः । २, ५ पञ्चमः ॥

॥ २८ ॥ त्वा युजा तव तत्सोम सख्य इन्द्रो अपो मनवे सस्रुतस्कः । अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धूनपावृणोदपिहितेव खानि ॥ १ ॥ त्वा युजा नि खिदत्सूर्यस्येन्द्रश्चक्रं सहसा सद्य इन्दो । अधि ष्णुना बृहता वर्तमानं महो द्रुहो अप विश्वायु धायि ॥ २ ॥ अहन्निन्द्रो अदहदग्निरिन्दो पुरा दस्यून्मध्यन्दिनादभीके । दुर्गे दुरोणे क्रत्वा न यातां पुरू सहस्रा शर्वा नि बर्हीत् ॥ ३ ॥ विश्वस्मात्सीमधमाँ इन्द्र दस्यून्विशो दासीरकृणोरप्रशस्ताः । अबाधेथाममृणतं नि शत्रूनविन्देथामपचितिं वधत्रैः ॥ ४ ॥ एवा सत्यं मघवाना युवं तदिन्द्रश्च सोमोर्वमश्व्यं गोः । आदर्दृतमपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्चित्ततृदाना ॥ ५ ॥ १७ ॥

॥ २९ ॥ १—५ वामदेवऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ विराट् त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, २ त्रिष्टुप् । ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—३, ४ धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ २९ ॥ आ नः स्तुत उप वाजेभिरूती इन्द्र याहि हरिभिर्मन्दसानः । तिरश्चिदर्यः सवना पुरूण्याङ्गूषेभिर्गृणानः सत्यराधाः ॥ १ ॥ आ हि ष्मा याति नर्यश्चिकित्वान्हूयमानः सोतृभिरुप यज्ञम् । स्वश्वो यो अभीरुर्मन्यमानः सुष्वाणेभिर्मदति सं ह वीरैः ॥ २ ॥ श्रावयेदस्य कर्णा वाजयध्यै जुष्टामनु प्र दिशं मन्दयध्यै । उद्वावृषाणो राधसे तुविष्मान्करन्न इन्द्रः सुतीर्थाभयं च ॥ ३ ॥ अच्छा यो गन्ता नाधमानमूती इत्था विप्रं हवमानं गृणन्तम् । उप त्मनि दधानो धुर्याशून्त्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः ॥ ४ ॥ त्वोतासो मघवन्निन्द्र विप्रा वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः । भेजानासो बृहद्दिवस्य राय आकाय्यस्य दावने पुरुक्षोः ॥ ५ ॥ १८ ॥

॥ ३० ॥ १–२४ वामदेव ऋषिः ॥ १–८, १२—२४ इन्द्रः । ९–११ इन्द्र उषाश्च देवते ॥ छन्दः—१, ३, ५, ९, ११, १२, १६, १८, १९, २३ निचृद्गायत्री । २, १०, ७, १३, १४, १५, १७, २१, २२ गायत्री । ४, ६ विराड् गायत्री । २० पिपीलिकामध्या गायत्री । ८, २४ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—७, ९—२३ षड्जः । ८, २४ ऋषभः ॥

॥ ३० ॥ नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन् । नकिरेवा यथा त्वम् ॥ १ ॥ सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः । सत्रा महाँ असि श्रुतः ॥ २ ॥ विश्वे चनेदना त्वा देवास इन्द्र युयुधुः । यदहा नक्तमातिरः ॥ ३ ॥ यत्रोत बाधितेभ्यश्चक्रं कुत्साय युध्यते । मुषाय इन्द्र सूर्यम् ॥ ४ ॥ यत्र देवाँ ऋघायतो विश्वाँ अयुध्य एक इत् । त्वमिन्द्र वनूँरहन् ॥ ५ ॥ १९ ॥ यत्रोत मर्त्याय कमरिणा इन्द्र सूर्यम् । प्रावः शचीभिरेतशम् ॥ ६ ॥ किमादुतासि वृत्रहन्मघवन्मन्युमत्तमः । अत्राह दानुमातिरः ॥ ७ ॥ एतद्घेदुत वीर्यमिन्द्र चकर्थ पौंस्यम् । स्त्रियं यद्दुर्हणायुवं वधीर्दुहितरं दिवः ॥ ८ ॥ दिवश्चिद्घा दुहितरं महान्महीयमानाम् । उषासमिन्द्र सं पिणक् ॥ ९ ॥ अपोषा अनसः सरत्सम्पिष्टादह बिभ्युषी । नि यत्सीं शिश्नथद्वृषा ॥ १० ॥ २० ॥ एतदस्या अनः शये सुसम्पिष्टं विपाश्या । ससार सीं परावतः ॥ ११ ॥ उत सिन्धुं विबाल्यं वितस्थानामधि क्षमि । परि ष्ठा इन्द्र मायया ॥ १२ ॥ उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम् । पुरो यदस्य सम्पिणक् ॥ १३ ॥ उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि । अवाहन्निन्द्र शम्बरम् ॥ १४ ॥ उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि श-

तावधीः । अधि पञ्च प्रधीँरिव ॥ १५ ॥ २१ ॥ उत त्यं पुत्रमग्रुवः परावृक्तं शतक्रतुः । उक्थेष्विन्द्र आभजत् ॥ १६ ॥ उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपतिः । इन्द्रो विद्वाँ अपारयत् ॥ १७ ॥ उत त्या सद्य आर्या सरयोरिन्द्र पारतः । अर्णाचित्ररथावधीः ॥ १८ ॥ अनु द्वा जहिता नयोऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन् । न तत्ते सुम्नमष्टवे ॥ १९ ॥ शतमश्मन्मयीनां पुरामिन्द्रो व्यास्यत् । दिवोदासाय दाशुषे ॥ २० ॥ २२ ॥ अस्वापयद्दभीतये सहस्रा त्रिंशतं हथैः । दासानामिन्द्रो मायया ॥ २१ ॥ स घेदुतासि वृत्रहन्त्समान इन्द्र गोपतिः । यस्ता विश्वानि चिच्युषे ॥ २२ ॥ उत नूनं यदिन्द्रियं करिष्या इन्द्र पौंस्यम् । अद्या नकिष्टदा मिनत् ॥ २३ ॥ वामंवामं त आदुरे देवो ददात्वर्यमा । वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करूळती ॥ २४ ॥ २३ ॥

॥ ३१ ॥ १–१५ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ७, ८, ९, १०, १४ गायत्री । २, ६, १२, १३, १५ निचृद्गायत्री । ३ त्रिपाद्गायत्री । ४, ५ विराड्गायत्री । ११ पिपीलिकामध्या गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३१ ॥ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ १ ॥ कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः । दृळ्हा चिदारुजे वसु ॥ २ ॥ अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम् । शतं भवास्यूतिभिः ॥ ३ ॥ अभी न आ ववृत्स्व चक्रं न वृत्तमर्वतः । नियुद्भिश्चर्षणीनाम् ॥ ४ ॥ प्रवता हि क्रतूनामा हा पदेव गच्छसि । अभक्षि सूर्ये सचा ॥ ५ ॥ २४ ॥ सं यत्त इन्द्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे । अध त्वे अध सूर्ये ॥ ६ ॥ उत स्मा हि त्वामाहुरिन्मघवानं शचीपते । दातारमविदीधयुम् ॥ ७ ॥ उत स्मा सद्य इत्परि शशमानाय सुन्वते । पुरू चिन्मंहसे वसु ॥ ८ ॥ नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः । न च्यौत्नानि करिष्यतः ॥ ९ ॥ अस्माँ अवन्तु ते शतमस्मान्त्सहस्रमूतयः । अस्मान्विश्वा अभिष्टयः ॥ १० ॥ २५ ॥ अस्माँ इहा वृणीष्व सख्याय स्वस्तये । महो राये दिवित्मते ॥ ११ ॥ अस्माँ अविड्ढि विश्वहेन्द्र राया परीणसा । अस्मान्विश्वाभिरूतिभिः ॥ १२ ॥ अस्मभ्यं ताँ अपा वृधि व्रजाँ अस्तेव गोमतः । नवाभिरिन्द्रोतिभिः ॥ १३ ॥ अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः । गव्युरश्वयुरीयते ॥ १४ ॥ अस्माकमुत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य । वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि ॥ १५ ॥ २६ ॥

॥ ३२ ॥ १—२४ वामदेव ऋषिः ॥ १—२२ इन्द्रः । २३, २४ इन्द्राश्वौ देवते ॥ छन्दः—१, ८, ९, १०, १४, १६, १८, २२, २३ गायत्री । २, ४, ७ विराड्गायत्री । ३, ५, ६, १२, १३, १५, १९, २०, २१ निचृद्गायत्री । ११ पिपीलिकामध्या गायत्री । १७ पादनिचृद्गायत्री । २४ स्वराडार्ची गायत्री च ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३२ ॥ आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि । महान्महीभिरूतिभिः ॥ १ ॥
भृमिश्चिद्घासि तूतुजिरा चित्र चित्रिणीष्वा । चित्रं कृणोष्यूतये ॥ २ ॥ दभ्रे-
भिश्चिच्छशीयांसं हंसि व्राधन्तमोजसा । सखिभिर्ये त्वे सचा ॥ ३ ॥ व-
यमिन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः । अस्माँअस्माँ इदुदव ॥ ४ ॥ स नश्चि-
त्राभिरद्रिवोऽनवद्याभिरूतिभिः । अनाधृष्टाभिरा गहि ॥ ५ ॥ २७ ॥ भूयामो षु
त्वावतः सखाय इन्द्र गोमतः । युजो वाजाय घृष्वये ॥ ६ ॥ त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र वा-
जस्य गोमतः । स नो यन्धि महीमिषम् ॥ ७ ॥ न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्दि-
त्ससि स्तुतो मघम् । स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ॥ ८ ॥ अभि त्वा गोतमा गिरानू-
षत प्र दावने । इन्द्र वाजाय घृष्वये ॥ ९ ॥ प्र ते वोचाम वीर्या३ या मन्दसान
आरुजः । पुरो दासीरभीत्य ॥ १० ॥ २८ ॥ ता ते गृणन्ति वेधसो यानि च-
कर्थ पौंस्या । सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ ११ ॥ अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोम-
वाहसः । ऐषु धा वीरवद्यशः ॥ १२ ॥ यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम् ।
तं त्वा वयं हवामहे ॥ १३ ॥ अर्वाचीनो वसो भवास्मे सु मत्स्वान्धसः । सोमा-
नामिन्द्र सोमपाः ॥ १४ ॥ अस्माकं त्वा मतीनामा स्तोम इन्द्र यच्छतु । अर्वागा
वर्तया हरी ॥ १५ ॥ पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव
योषणाम् ॥ १६ ॥ २९ ॥ सहस्रं व्यतीनां युक्तानामिन्द्रमीमहे । शतं सोमस्य
खार्यः ॥ १७ ॥ सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामसि । अस्मत्रा राध एतु ते
॥ १८ ॥ दश ते कलशानां हिरण्यानामधीमहि । भूरिदा असि वृत्रहन् ॥ १९ ॥
भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर । भूरि घेदिन्द्र दित्ससि ॥ २० ॥ भू-
रिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन् । आ नो भजस्व राधसि ॥ २१ ॥ प्र ते बभ्रू
विचक्षण शंसामि गोषणो नपात् । माभ्यां गा अनु शिश्रथः ॥ २२ ॥ कनीन-
केव विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके । बभ्रू यामेषु शोभेते ॥ २३ ॥ अरं म उस्रयाम्णेऽ-
रमनुस्रयाम्णे । बभ्रू यामेष्वस्रिधा ॥ २४ ॥ ३० ॥ ६ ॥ ३ ॥

॥ ३३ ॥ १—११ वामदेव ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः—१ भुरिक्

त्रिष्टुप् । २, ४, ५, ११ त्रिष्टुप् । ३, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ७, ८ भुरिक् पङ्क्तिः ९ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः— १–६, १०, ११ धैवतः । ७–९ पञ्चमः ॥

॥ ३३ ॥ प्र ऋभुभ्यो दूतमिव वाचमिष्य उपस्तिरे श्वैतरीं धेनुमीळे । ये वातजूतास्तरणिभिरेवैः परि द्यां सद्यो अपसो बभूवुः ॥ १ ॥ यदारमक्रन्नृभवः पितृभ्यां परिविष्टी वेषणा दंसनाभिः । आदिद्देवानामुप सख्यमायन्धीरासः पुष्टिमवहन्मनायै ॥ २ ॥ पुनर्ये चक्रुः पितरा युवाना सना यूपेव जरणा शयाना । ते वाजो विभ्वाँ ऋभुरिन्द्रवन्तो मधुप्सरसो नोऽवन्तु यज्ञम् ॥ ३ ॥ यत्संवत्समृभवो गामरक्षन्यत्संवत्समृभवो मा अपिंशन् । यत्संवत्समभरन्भासो अस्यास्ताभिः शमीभिरमृतत्वमाशुः ॥ ४ ॥ ज्येष्ठ आह चमसा द्वा करेति कनीयान्त्रीन्कृणवामेत्याह । कनिष्ठ आह चतुरस्करेति त्वष्ट ऋभवस्तत्पनयद्वचो वः ॥ ५ ॥ १ ॥ सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुरनु स्वधामृभवो जग्मुरेताम् । विभ्राजमानांश्चमसाँ अहेवावेनत्त्वष्टा चतुरो ददृश्वान् ॥ ६ ॥ द्वादश द्यून्यदगोह्यस्यातिथ्ये रणन्नृभवः ससन्तः । सुक्षेत्राकृण्वन्ननयन्त सिन्धून्धन्वातिष्ठन्नोषधीर्निम्नमापः ॥ ७ ॥ रथं ये चक्रुः सुवृतं नरेष्ठां ये धेनुं विश्वजुवं विश्वरूपाम् । त आ तक्षन्त्वृभवो रयिं नः स्ववसः स्वपसः सुहस्ताः ॥ ८ ॥ अपो ह्येषामजुषन्त देवा अभि क्रत्वा मनसा दीध्यानाः । वाजो देवानामभवत्सुकर्मेन्द्रस्य ऋभुक्षा वरुणस्य विभ्वा ॥ ९ ॥ ये हरी मेधयोक्था मदन्त इन्द्राय चक्रुः सुयुजा ये अश्वा । ते रायस्पोषं द्रविणान्यस्मे धत्त ऋभवः क्षेमयन्तो न मित्रम् ॥ १० ॥ इदाह्नः पीतिमुत वो मदं धुर्न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः । ते नूनमस्मे ऋभवो वसूनि तृतीये अस्मिन्त्सवने दधात ॥ ११ ॥ २ ॥

॥ ३४ ॥ १–११ वामदेव ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः–१ विराट् त्रिष्टुप् । २ भुरिक् त्रिष्टुप् । ४, ६, ७, ८, ९ निचृत् त्रिष्टुप् । १० त्रिष्टुप् । ३ । ११ स्वराट् पङ्क्तिः । ५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, २, ४, ६—१० धैवतः । ३, ५, ११ पञ्चमः ॥

॥ ३४ ॥ ऋभुर्विभ्वा वाज इन्द्रो नो अच्छेमं यज्ञं रत्नधेयोप यात । इदा हि वो धिषणा देव्यह्नामधात्पीतिं सं मदा अग्मता वः ॥ १ ॥ विदानासो जन्मनो वाजरत्ना उत ऋतुभिर्ऋभवो मादयध्वम् । सं वो मदा अग्मत सं पुरन्धिः सुवीरामस्मे रयिमेरयध्वम् ॥ २ ॥ अयं वो यज्ञ ऋभवोऽकारि यमा मनुष्वत्प्रदिवो

दधिध्वे । प्र वोऽच्छा जुजुषाणासो अस्थुरभूत विश्वे अग्रियोत वाजाः ॥ ३ ॥
अभूदु वो विधते रत्नधेयमिदा नरो दाशुषे मर्त्याय । पिबत वाजा ऋभवो ददे
वो महि तृतीयं सवनं मदाय ॥ ४ ॥ आ वाजा यातोप न ऋभुक्षा महो नरो द्र-
विणसो गृणानाः । आ वः पीतयोऽभिपित्वे अह्नामिमा अस्तं नवस्व इव ग्मन्
॥ ५ ॥ ३ ॥ आ नपातः शवसो यातनोपेमं यज्ञं नमसा हूयमानाः । सजोषसः
सूरयो यस्य च स्थ मध्वः पात रत्नधा इन्द्रवन्तः ॥ ६ ॥ सजोषा इन्द्र वरुणेन
सोमं सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः । अग्रेपाभिर्ऋतुपाभिः सजोषा ग्नास्पत्नी-
भी रत्नधाभिः सजोषाः ॥ ७ ॥ सजोषस आदित्यैर्मादयध्वं सजोषस ऋभवः
पर्वतेभिः । सजोषसो दैव्येना सवित्रा सजोषसः सिन्धुभी रत्नधेभिः ॥८॥ ये अ-
श्विना ये पितरा य ऊती धेनुं ततक्षुर्ऋभवो ये अश्वा । ये अंसत्रा य ऋधग्रोदसी ये
विभ्वो नरः स्वपत्यानि चक्रुः ॥ ९ ॥ ये गोमन्तं वाजवन्तं सुवीरं रयिं धत्थ वसु-
मन्तं पुरुक्षुम् । ते अग्रेपा ऋभवो मन्दसाना अस्मे धत्त ये च रातिं गृणन्ति ॥१०॥
नापाभूत न वोऽतीतृषामानिःशस्ता ऋभवो यज्ञे अस्मिन् । समिन्द्रेण मदथ सं
मरुद्भिः सं राजभी रत्नधेयाय देवाः ॥ ११ ॥ ४ ॥

॥ ३५ ॥ १—९ वामदेव ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः–१,२,४,६,७,
९ निचृत् त्रिष्टुप् । ८ त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, २,
४,६-९ धैवतः । ३, ५ पञ्चमः ॥

॥ ३५ ॥ इहोप यात शवसो नपातः सौधन्वना ऋभवो माप भूत । अस्मि-
न्हि वः सवने रत्नधेयं गमन्त्विन्द्रमनु वो मदासः ॥१॥ आगन्नृभूणामिह रत्नधेय-
मभूत्सोमस्य सुषुतस्य पीतिः । सुकृत्यया यत्स्वपस्यया चँ एकं विचक्र चमसं चतुर्धा
॥ २ ॥ व्यकृणोत चमसं चतुर्धा सखे वि शिक्षेत्यब्रवीत । अथैत वाजा अमृत-
स्य पन्थां गणं देवानामृभवः सुहस्ताः ॥ ३ ॥ किंमयः स्विच्चमस एष आस यं
काव्येन चतुरो विचक्र । अथा सुनुध्वं सवनं मदाय पात ऋभवो मधुनः सोम्य-
स्य ॥ ४ ॥ शच्याकर्त पितरा युवाना शच्याकर्त चमसं देवपानम् । शच्या हरी
धनुतरावतष्टेन्द्रवाहावृभवो वाजरत्नाः ॥५॥५॥ यो वः सुनोत्यभिपित्वे अह्नां तीव्रं
वाजासः सवनं मदाय । तस्मै रयिमृभवः सर्ववीरमा तक्षत वृषणो मन्दसानाः॥६॥
प्रातः सुतमपिबो हर्यश्व माध्यन्दिनं सवनं केवलं ते । समृभुभिः पिबस्व रत्न-
धेभिः सखीँ याँ इन्द्र चकृषे सुकृत्या ॥ ७ ॥ ये देवासो अभवता सुकृत्या श्येना

इवेदधि दिवि निषेद । ते रत्नं धात शवसो नपातः सौधन्वना अभवतामृतास
॥ ८ ॥ यत्तृतीयं सवनं रत्नधेयमकृणुध्वं स्वपस्या सुहस्ताः । तदृभवः परिषि
व एतत्सं मदेभिरिन्द्रियेभिः पिबध्वम् ॥ ९ ॥ ६ ॥

॥ ३६ ॥ १-९ वामदेव ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः-१, ६,
स्वराट् त्रिष्टुप् । ९त्रिष्टुप् । २,३,४,५ विराट् । जगती । ७ जगती ॥ स्वरः-
६, ८, ९ धैवतः । २-५, ७ निषादः ॥

॥ ३६ ॥ अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो३ रथस्त्रिचक्रः परि वर्तते रजः
महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ ॥ १ ॥ रथं ये चक्रुः
सुवृतं सुचेतसोऽविह्वरन्तं मनसस्परि ध्यया । ताँ ऊ न्व१स्य सवनस्य पीतय आ
वो वाजा ऋभवो वेदयामसि ॥ २ ॥ तद्वो वाजा ऋभवः सुप्रवाचनं देवेषु विभ्वो
अभवन्महित्वनम् । जिव्री यत्सन्ता पितरा सनाजुरा पुनर्युवाना चरथाय तक्ष
॥ ३ ॥ एकं वि चक्र चमसं चतुर्वयं निश्चर्मणो गामरिणीत धीतिभिः । अथा
देवेष्वमृतत्वमानश श्रुष्टी वाजा ऋभवस्तद्व उक्थ्यम् ॥ ४ ॥ ऋभुतो रयिः
प्रथमश्रवस्तमो वाजश्रुतासो यमजीजनन्नरः । विभ्वतष्टो विदथेषु प्रवाच्यो
देवासोऽवथा स विचर्षणिः ॥ ५ ॥ ७ ॥ स वाज्यर्वा स ऋषिर्वचस्यया स
शूरो अस्ता पृतनासु दुष्टरः । स रायस्पोषं स सुवीर्यं दधे यं वाजो विभ्वाँ
ऋभवो यमाविषुः ॥ ६ ॥ श्रेष्ठं वः पेशो अधि धायि दर्शतं स्तोमो वाजा ऋभ
वस्तं जुजुष्टन । धीरासो हि ष्ठा कवयो विपश्चितस्तान्व एना ब्रह्मणा वेदयामसि
॥ ७ ॥ यूयमस्मभ्यं धिषणाभ्यस्परि विद्वांसो विश्वा नर्याणि भोजना । द्युमन्तं
वाजं वृषशुष्ममुत्तममा नो रयिमृभवस्तक्षता वयः ॥ ८ ॥ इह प्रजामिह रयिं र
राणा इह श्रवो वीरवत्तक्षता नः । येन वयं चितयेमात्यन्यान्तं वाजं चित्रमृभवो
ददा नः ॥ ९ ॥ ८ ॥

॥ ३७ ॥ १-८ वामदेव ऋषिः ॥ ऋभवो देवता ॥ छन्दः-१ विराट्
त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ३, ८ निचृत् त्रिष्टुप् । ४ पङ्क्तिः । ५, ७ अनुष्टुप् । ६
निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः-१-३, ८ धैवतः । ४ पञ्चमः । ५—७ ऋषभः ॥

॥ ३७ ॥ उप नो वाजा अध्वरमृभुक्षा देवा यात पथिभिर्देवयानैः । यथा
यज्ञं मनुषो विक्ष्वा३सु दधिध्वे रण्वाः सुदिनेष्वह्नाम् ॥ १ ॥ ते वो हृदे मनसे

सन्तु यज्ञा जुष्टासो अद्य घृतनिर्णिजो गुः । प्र वः सुतासो हरयन्त पूर्णाः क्रत्वे दक्षाय हर्षयन्त पीताः ॥ २ ॥ त्र्युदायं देवहितं यथा वः स्तोमो वाजा ऋभुक्षणो ददे वः । जुह्वे मनुष्वदुपरासु विक्षु युष्मे सचा बृहद्दिवेषु सोमम् ॥ ३ ॥ पीवोअश्वाः शुचद्रथा हि भूतायः शिप्रा वाजिनः सुनिष्काः । इन्द्रस्य सूनो शवसो नपातोऽनु वश्चेत्यग्रियं मदाय ॥ ४ ॥ ऋभुमृभुक्षणो रयिं वाजे वाजिन्तमं युजम् । इन्द्रस्वन्तं हवामहे सदासातममश्विनम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ सेदृभवो यमवथ यूयमिन्द्रश्च मर्त्यम् । स धीभिरस्तु सनिता मेधसाता सो अर्वता ॥ ६ ॥ वि नो वाजा ऋभुक्षणः पथश्चितन यष्टवे । अस्मभ्यं सूरयः स्तुता विश्वा आशास्तरीषणि ॥ ७ ॥ तं नो वाजा ऋभुक्षण इन्द्र नासत्या रयिम् । समश्वं चर्षणिभ्य आ पुरु शस्त मघत्तये ॥ ८ ॥ १० ॥

॥ ३८ ॥ १–१० वामदेव ऋषिः ॥ १ द्यावापृथिव्यौ । २–१० दधिक्रा देवता ॥ छन्दः–१, ४ विराट् पङ्क्तिः । ६ भूरिक् पङ्क्तिः । २, ३ त्रिष्टुप् । ५, ८, ९, १० निचृत् त्रिष्टुप् । ७ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, ४, ६ पञ्चमः । २, ३, ५, ७–१० धैवतः ॥

उतो हि वां दात्रा सन्ति पूर्वा या पूरुभ्यस्त्रसदस्युर्नितोशे । क्षेत्रासां ददथुरुर्वरासां घनं दस्युभ्यो अभिभूतिमुग्रम् ॥ १ ॥ उत वाजिनं पुरुनिष्षिध्वानं दधिक्रामु ददथुर्विश्वकृष्टिम् । ऋजिप्यं श्येनं प्रुषितप्सुमाशुं चर्कृत्यमर्यो नृपतिं न शूरम् ॥ २ ॥ यं सीमनु प्रवतेव द्रवन्तं विश्वः पूरुर्मदति हर्षमाणः । पड्भिर्गृध्यन्तं मेधयुं न शूरं रथतुरं वातमिव ध्रजन्तम् ॥ ३ ॥ यः स्मारुन्धानो गध्या समत्सु सनुतरश्चरति गोषु गच्छन् । आविर्ऋजीको विदथा निचिक्यत्तिरो अरतिं पर्याप आयोः ॥ ४ ॥ उत स्मैनं वस्त्रमथिं न तायुमनु क्रोशन्ति क्षितयो भरेषु । नीचायमानं जसुरिं न श्येनं श्रवश्चाच्छा पशुमच्च यूथम् ॥ ५ ॥ ११ ॥ उत स्मासु प्रथमः सरिष्यन्नि वेवेति श्रेणिभी रथानाम् । स्रजं कृण्वानो जन्यो न शुभ्वा रेणुं रेरिहत्किरणं ददश्वान् ॥ ६ ॥ उत स्य वाजी सहुरिर्ऋतावा शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये । तुरं यतीषु तुरयन्नृजिप्योऽधि भ्रुवोः किरते रेणुमृञ्जन् ॥ ७ ॥ उत स्मास्य तन्यतोरिव द्योर्ऋघायतो अभियुजो भयन्ते । यदा सहस्रमभि षीमयोधीद्दुर्वर्तुः स्मा भवति भीम ऋञ्जन् ॥ ८ ॥ उत स्मास्य पनयन्ति जना जूतिं कृष्टिप्रो अभिभूतिमाशोः । उतैनमाहुः समिथे वियन्तः परा दधिक्रा असरत्सहस्रैः ॥ ९ ॥ आ दधिक्राः शवसा पञ्च कृष्टीः सूर्य इव ज्योतिषा-

पर्स्तताान । सहस्रसाः शतसा वाज्यर्वा पृणक्तु मध्वा समिमा वचांसि ॥१०॥१२॥

॥ ३९ ॥ १-६ वामदेव ऋषिः ॥ दधिक्रा देवता ॥ छन्दः-१, ३, ५ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ४ स्वराट् पङ्क्तिः । ६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः-१, ३, ५, धैवतः । २, ४ पञ्चमः । ६ ऋषभः ॥

॥ ३९ ॥ आशुं दधिक्रां तमु नु ष्टवाम दिवस्पृथिव्या उत चर्किराम । उच्छन्तीर्मामुषसः सूदयन्त्वति विश्वानि दुरितानि पर्षन् ॥ १ ॥ महश्चर्कर्म्यर्वतः क्रतुप्रा दधिक्राव्णः पुरुवारस्य वृष्णः । यं पूरुभ्यो दीदिवांसं नाग्निं ददथुर्मित्रावरुणा ततुरिम् ॥ २ ॥ यो अश्वस्य दधिक्राव्णो अकारीत्समिद्धे अग्ना उषसो व्युष्टौ । अनागसं तमदितिः कृणोतु स मित्रेण वरुणेना सजोषाः ॥ ३ ॥ दधिक्राव्ण इष ऊर्जो महो यदमन्महि मरुतां नाम भद्रम् । स्वस्तये वरुणं मित्रमग्निं हवामह इन्द्रं वज्रबाहुम् ॥ ४ ॥ इन्द्रमिवेदुभये वि ह्वयन्त उदीराणा यज्ञमुपप्रयन्तः । दधिक्रामु सूदनं मर्त्याय ददथुर्मित्रावरुणा नो अश्वम् ॥ ५ ॥ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ ६ ॥ १३ ॥

॥ ४० ॥ १-५ वामदेवः ऋषिः ॥ १-४ दधिक्रावा । ५ सूर्यश्च देवता ॥ छन्दः-१ निचृत् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ३ स्वराट् त्रिष्टुप् । ४ भुरिक् त्रिष्टुप् । ५ निचृत् जगती ॥ स्वरः-१-४ धैवतः । ५ निषादः ॥

॥४०॥ दधिक्राव्ण इदु नु चर्किराम विश्वा इन्मामुषसः सूदयन्तु । अपामग्नेरुषसः सूर्यस्य बृहस्पतेराङ्गिरसस्य जिष्णोः ॥ १ ॥ सत्वा भरिषो गविषो दुवन्यसच्छ्रवस्यादिष उषसस्तुरण्यसत् । सत्यो द्रवो द्रवरः पतङ्गरो दधिक्रावेषमूर्जं स्वर्जनत् ॥ २ ॥ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनु वाति प्रगर्धिनः । श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः ॥ ३ ॥ उत स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां बद्धो अपिकक्ष आसनि । क्रतुं दधिक्रा अनु संतवीत्वत्पथामङ्कांस्यन्वापनीफणत् ॥ ४ ॥ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम् ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ ४१ ॥ १-११ वमदेव ऋषिः ॥ इन्द्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, ५, ९, ११ त्रिष्टुप् । २, ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ६ विराट् त्रिष्टुप् । ७ पङ्क्तिः । ८, १० स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-६, ९, ११ धैवतः । ७, ८, १० पञ्चमः ॥

॥ ४१ ॥ इन्द्रा को वां वरुणा सुम्नमाप स्तोमो हविष्मां अमृतो न होता । यो
वां हृदि क्रतुमां अस्मदुक्तः पस्पर्शदिन्द्रावरुणा नमस्वान् ॥ १ ॥ इन्द्रा ह यो व-
रुणा चक्र आपी देवौ मर्तः सख्याय प्रयस्वान् । स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रूनवो-
भिर्वा महद्भिः स प्र शृण्वे ॥ २ ॥ इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्ठेत्था नृभ्यः शश-
मानेभ्यस्ता । यदी सखाया सख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसा मादयैते ॥ ३ ॥
इन्द्रा युवं वरुणा दिद्युमस्मिन्नोजिष्ठमुग्रा नि वधिष्टं वज्रम् । यो नो दुरेवो वृक-
तिर्दभीतिस्तस्मिन्मिमाथामभिभूत्योजः ॥ ४ ॥ इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या धियः
प्रेतारा वृषभेव धेनोः । सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः
॥ ५ ॥ १५ ॥ तोके हिते तनय उर्वरासु सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये । इन्द्रा नो
अत्र वरुणा स्यातामवोभिर्दस्मा परितक्म्यायाम् ॥ ६ ॥ युवामिद्ध्यवसे पूर्व्या-
य परि प्रभूती गविषः स्वापी । वृणीमहे सख्याय प्रियाय शूरा मंहिष्ठा पितरेव
शम्भू ॥ ७ ॥ ता वां धियोऽवसे वाजयन्तीराजिं न जग्मुर्युवयूः सुदानू । श्रिये न
गाव उप सोममस्थुरिन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः ॥ ८ ॥ इमा इन्द्रं वरुणं मे म-
नीषा अग्मन्नुप द्रविणमिच्छमानाः । उपेमस्थुर्जोष्टार इव वस्वो रघ्वीरिव श्रवसो
भिक्षमाणाः ॥ ९ ॥ अश्व्यस्य त्मना रथ्यस्य पुष्टेर्नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।
ता चक्राणा ऊतिभिर्नव्यसीभिरस्मत्रा रायो नियुतः सचन्ताम् ॥ १० ॥ आ नो
बृहन्ता बृहतीभिरूती इन्द्र यातं वरुण वाजसातौ । यद्दिद्यवः पृतनासु प्रक्रीळान्त-
स्य वां स्याम सनितार आजेः ॥ ११ ॥ १६ ॥

॥ ४२ ॥ १-१० त्रसदस्युः पौरुकुत्स्य ऋषिः ॥ १-६ आत्मा । ७-१० इन्द्रा-
वरुणौ देवते ॥ छन्दः-१, २, ३, ४, ६, ९ निचृत् त्रिष्टुप् । ७ विराट् त्रिष्टुप् ।
८ भुरिक् त्रिष्टुप् । १० त्रिष्टुप् । ५ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१—४, ६—१०
धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ ४२ ॥ मम द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य विश्वायोर्विश्वे अमृता यथा नः । क्र-
तुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः ॥ १ ॥ अहं राजा वरुणो म-
ह्यं तान्यसुर्याणि प्रथमा धारयन्त । क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपम-
स्य वव्रेः ॥ २ ॥ अहमिन्द्रो वरुणस्ते महित्वोर्वी गभीरे रजसी सुमेके । त्वष्टेव
विश्वा भुवनानि विद्वान्त्समैरयं रोदसी धारयं च ॥ ३ ॥ अहमपो अपिन्वमुक्षमा-
णा धारयं दिवं सदन ऋतस्य । ऋतेन पुत्रो अदितेर्ऋतावोत त्रिधातु प्रथयद्वि

भूम ॥ ४ ॥ मां नरः स्वश्वा वाजयन्तो मां वृताः समरणे हवन्ते । कृणोम्याजिं मघवाहमिन्द्र इयर्मि रेणुमभिभूत्योजाः ॥ ५ ॥ १७ ॥ अहं ता विश्वा चकरं नकिर्मा दैव्यं सहो वरते अप्रतीतम् । यन्मा सोमासो ममदन्यदुक्थोभे भयेते रजसी अपारे ॥ ६ ॥ विदुष्टे विश्वा भुवनानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः । त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान्त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून् ॥ ७॥ अस्माकमत्र पितरस्त आसन्त्सप्त ऋषयो दौर्गहे बध्यमाने । त आयजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम् ॥ ८ ॥ पुरुकुत्सानी हि वामदाशद्धव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः। अथा राजानं त्रसदस्युमस्या वृत्रहणं ददथुरर्धदेवम् ॥ ९ ॥ राया वयं ससवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः । तां धेनुमिन्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम् ॥ १० ॥ १८ ॥

॥ ४३ ॥ १—७ पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रावृषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१ त्रिष्टुप् । २,३,५,६,७ निचृत् त्रिष्टुप् । ४ स्वराड् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–३, ५–७ धैवतः । ४ पञ्चमः ॥

॥ ४३ ॥ क उ श्रवत्कतमो यज्ञियानां वन्दारु देवः कतमो जुषाते । कस्येमां देवीममृतेषु प्रेष्ठां हृदि श्रेषाम सुष्टुतिं सुहव्याम् ॥ १ ॥ को मृळाति कतम आगमिष्ठो देवानामु कतमः शम्भविष्ठः । रथं कमाहुर्द्रवदश्वमाशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत ॥ २ ॥ मक्षू हि ष्मा गच्छथ ईवतो द्यूनिन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम् । दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शचिष्ठा ॥ ३ ॥ का वां भूदुपमातिः कया न आश्विना गमथो हूयमाना । को वां महश्चित्त्यजसो अभीक उरुष्यतं माध्वी दस्रा न ऊती ॥ ४ ॥ उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यत्समुद्रादभि वर्तते वाम् । मध्वा माध्वी मधु वां प्रुषायन्यत्सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्वाः ॥ ५ ॥ सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान्घृणा वयोऽरुषासः परि ग्मन् । तदू षु वामजिरं चेति यानं येन पती भवथः सूर्यायाः ॥ ६ ॥ इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना । उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् ॥७॥ १९ ॥

॥ ४४ ॥ १–७ पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रावृषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१, ३, ६, ७ निचृत् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ५ विराड् त्रिष्टुप् । ४ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–३, ५–७ धैवतः । ४ पञ्चमः ॥

॥ ४४ ॥ तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुज्रयमश्विना संगतिं गोः । यः सूर्यां वहति वन्धुरायुर्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम् ॥१॥ युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः । युवोर्वपुरभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत्ककुहासो रथे वाम् ॥ २ ॥ को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वार्कैः । ऋतस्य वा वनुषे पूर्व्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत् ॥ ३ ॥ हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम् । पिबाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय ॥ ४ ॥ आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन । मा वामन्ये नि यमन्देवयन्तः सं यद्ददे नाभिः पूर्व्या वाम् ॥ ५ ॥ नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्रा मिमाथामुभयेष्वस्मे । नरो यद्वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीळ्हासो अग्मन् ॥ ६ ॥ इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना । उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् ॥ ७ ॥ २० ॥

॥ ४५ ॥ १-७ वामदेव ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ३, ४ जगती । ५ निचृज्जगती । ६ विराड् जगती । २ भुरिक् त्रिष्टुप् । ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३–६ निषादः । २, ७ धैवतः ॥

॥ ४५ ॥ एष स्य भानुरुदियर्ति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि । पृक्षासो अस्मिन्मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुरीयो मधुनो वि रप्शते ॥ १ ॥ उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु । अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः ॥ २ ॥ मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिरुत प्रियं मधुने युञ्जाथां रथम् । आ वर्तनिं मधुना जिन्वथस्पथो दृतिं वहेथे मधुमन्तमश्विना ॥ ३ ॥ हंसासो ये वां मधुमन्तो अस्रिधो हिरण्यपर्णा उहुव उषर्बुधः । उदप्रुतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सवनानि गच्छथः ॥ ४ ॥ स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्नय उस्रा जरन्ते प्रति वस्तोरश्विना । यन्निक्तहस्तस्तरणिर्विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः ॥ ५ ॥ आकेनिपासो अहभिर्दविध्वतः स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः । सूरश्चिदश्वान्युयुजान ईयते विश्वाँ अनु स्वधया चेतथस्पथः ॥ ६ ॥ प्र वामवोचमश्विना धियंधा रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति । येन सद्यः परि रजांसि याथो हविष्मन्तं तरणिं भोजमच्छ ॥ ७ ॥ २१ ॥ ४ ॥

॥ ४६ ॥ १-७ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्रवायू देवते ॥ छन्दः-१ विराड् गा
यत्री । २, ३, ५, ६, ७ गायत्री । ४ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४६ ॥ अग्रं पिबा मधूनां सुतं वायो दिविष्टिषु । त्वं हि पूर्वपा असि
॥ १ ॥ शतेना नो अभिष्टिभिर्नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः । वायो सुतस्य तृम्पत
॥ २ ॥ आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः । वहन्तु सोमपीतये ॥ ३
रथं हिरण्यवन्धुरमिन्द्रवायू स्वध्वरं आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ॥ ४ ॥ रथे
पृथुपाजसा दाश्वांसमुप गच्छतम् । इन्द्रवायू इहा गतम् ॥ ५ ॥ इन्द्रवायू अयं सु
तस्तं देवेभिः सजोषसा । पिबतं दाशुषो गृहे ॥ ६ ॥ इह प्रयाणमस्तु वामिन्द्रवा
विमोचनम् । इह वां सोमपीतये ॥ ७ ॥ २२ ॥

॥ ४७ ॥ १—४ वामदेव ऋषिः ॥ १ वयुः । २—४ इन्द्रवायू देवते
छन्दः-१, ३ अनुष्टुप् । ४ निचृदनुष्टुप् । २ भुरिगुष्णिक् ॥ स्वरः-१, ३,
गान्धारः । २ ऋषभः ॥

॥ ४७ ॥ वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु । आ याहि सोम
पीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥ १ ॥ इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः
युवां हि यन्तीन्दवो निम्नमापो न सध्र्यक् ॥ २ ॥ वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सर
शवसस्पती । नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ॥ ३ ॥ या वां सन्ति पु
रुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा । अस्मे ता यज्ञवाहसेन्द्रवायू नि यच्छतम् ॥ ४ ॥ २३

॥ ४८ ॥ १-५ वामदेव ऋषिः ॥ वायुर्देवता ॥ छन्दः-१ निचृदनुष्टुप्
२ अनुष्टुप् । ३, ४, ५ भुरिगनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ४८ ॥ विहि होत्रा अवीता विपो न रायो अर्यः । वायवा चन्द्रेण रथेन
याहि सुतस्य पीतये ॥ १ ॥ निर्युवाणो अशस्तीर्नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः । वायव
चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये ॥ २ ॥ अनु कृष्णे वसुधिती येमाते विश्वपे
शसा । वायवा चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये ॥ ३ ॥ वहन्तु त्वा मनोयुजो युक्तास
नवतिर्नव । वायवा चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये ॥ ४ ॥ वायो शतं हरीण
युवस्व पोष्याणाम् । उत वा ते सहस्रिणो रथ आ यातु पाजसा ॥ ५ ॥ २४

॥ ४९ ॥ १—६ वामदेव ऋषिः ॥ इन्द्राबृहस्पती देवते ॥ छन्दः—
निचृद्गायत्री । २, ३, ४, ५, ६ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४९ ॥ इदं वामास्ये हविः प्रियमिन्द्राबृहस्पती । उक्थं मदश्च शस्यते ॥ १ ॥ अयं वां परि षिच्यते सोम इन्द्राबृहस्पती । चारुर्मदाय पीतये ॥ २ ॥ आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् । सोमपा सोमपीतये ॥ ३ ॥ अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम् । अश्वावन्तं सहस्रिणम् ॥ ४ ॥ इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ ५ ॥ सोममिन्द्राबृहस्पती पिबतं दाशुषो गृहे । मादयेथां तदोकसा ॥ ६ ॥ २५ ॥

॥ ५० ॥ १—११ वामदेव ऋषिः ॥ १—९ बृहस्पतिः । १०, ११ इन्द्राबृहस्पती देवते ॥ छन्दः—१-३, ६, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ४, ११ विराट् त्रिष्टुप् । ८, १० त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५० ॥ यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो अन्तान्बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण । तं प्रत्नास ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम् ॥ १ ॥ धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तो बृहस्पते अभि ये नस्ततस्रे । पृषन्तं सृप्रमदब्धमूर्वं बृहस्पते रक्षतादस्य योनिम् ॥ २ ॥ बृहस्पते या परमा परावदत आ त ऋतस्पृशो नि षेदुः । तुभ्यं खाता अवता अद्रिदुग्धा मध्वः श्चोतन्त्यभितो विरप्शम् ॥ ३ ॥ बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन् । सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत्तमांसि ॥ ४ ॥ स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज फलिगं रवेण । बृहस्पतिरुस्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद्वावशतीरुदाजत् ॥ ५ ॥ २६ ॥ एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः । बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ६ ॥ स इद्राजा प्रतिजन्यानि विश्वा शुष्मेण तस्थावभि वीर्येण । बृहस्पतिं यः सुभृतं बिभर्ति वल्गूयति वन्दते पूर्वभाजम् ॥ ७ ॥ स इत्क्षेति सुधित ओकसि स्वे तस्मा इळा पिन्वते विश्वदानीम् । तस्मै विशः स्वयमेवा नमन्ते यस्मिन्ब्रह्मा राजनि पूर्व एति ॥ ८ ॥ अप्रतीतो जयति सं धनानि प्रतिजन्यान्युत या सजन्या । अवस्यवे यो वरिवः कृणोति ब्रह्मणे राजा तमवन्ति देवाः ॥ ९ ॥ इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पतेऽस्मिन्यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू । आ वां विशन्त्विन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम् ॥ १० ॥ बृहस्पत इन्द्र वर्धतं नः सचा सा वां सुमतिर्भूत्वस्मे । अविष्टं धियो जिगृतं पुरन्धीर्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ॥ ११ ॥ २७ ॥ ७ ॥

॥ ५१ ॥ १—११ वामदेव ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१, ५, ८ त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ६, ७, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । २ पङ्क्तिः । १० भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३—९, ११ धैवतः । २, १० पञ्चमः ॥

॥ ५१ ॥ इदमु त्यत्पुरुतमं पुरस्ताज्ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात् । नूनं दि
वो दुहितरो विभातीर्गातुं कृणवन्नुषसो जनाय ॥ १ ॥ अस्थुरु चित्रा उषसः पु
रस्तान्मिता इव स्वरवोऽध्वरेषु । व्यू व्रजस्य तमसो द्वारोच्छन्तीरव्रञ्छुचयः पा
वकाः ॥ २ ॥ उच्छन्तीरद्य चितयन्त भोजान्राधोदेयायोषसो मघोनीः । अचि
अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानास्तमसो विमध्ये ॥ ३ ॥ कुवित्स देवीः सनय
नवो वा यामो बभूयादुषसो वो अद्य । येना नवग्वे अङ्गिरे दशग्वे सप्तास्ये रे
वती रेवदूष ॥ ४ ॥ यूयं हि देवीरृतयुग्भिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः
प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाच्चतुष्पाच्चरथाय जीवम् ॥ ५ ॥ १ ॥ क्व स्विदास
कतमा पुराणी यया विधाना विदधुरृभूणाम् । शुभं यच्छुभ्रा उषसश्चरन्ति न
वि ज्ञायन्ते सदृशीरजुर्याः ॥ ६ ॥ ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुरभिष्टिद्युम्ना
ऋतजातसत्याः यास्वीजानः शशमान उक्थैः । स्तुवञ्छंसन्द्रविणं सद्य आप ॥ ७
ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्समानतः समना पप्रथानाः । ऋतस्य देवीः सदसो
बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते ॥ ८ ॥ ता इन्न्वे३व समना समानीरमीतवर्णा
उषसश्चरन्ति । गूहन्तीरभ्वमसितं रुशद्भिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः ॥ ९
रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु देवीः । स्योनादा वः प्र
तिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ १० ॥ तद्वो दिवो दुहितरो विभातीरु
प ब्रुव उषसो यज्ञकेतुः । वयं स्याम यशसो जनेषु तद्द्यौश्च धत्तां पृथिवी च
देवी ॥ ११ ॥ २ ॥

॥ ५२ ॥ १—७ वामदेव ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः-१, २, ३, ४
६ निचृद्गायत्री । ५, ७ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५२ ॥ प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः । दिवो अदर्शि दु
हिता ॥ १ ॥ अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी । सखाभूदश्विनोरुषाः ॥ २
उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि । उतोषो वस्व ईशिषे ॥ ३ ॥ यावयद्द्वेषस
त्वा चिकित्वित्सूनृतावरि । प्रति स्तोमैरभुत्स्महि ॥ ४ ॥ प्रति भद्रा अदृक्षत गवां
सर्गा न रश्मयः । ओषा अप्रा उरु ज्रयः ॥ ५ ॥ आपप्रुषी विभावरि व्यावर्ज्यो
तिषा तमः । उषो अनु स्वधामव ॥ ६ ॥ आ द्यां तनोषि रश्मिभिरान्तरिक्षमुरु
प्रियम् । उषः शुक्रेण शोचिषा ॥ ७ ॥ ३ ॥

॥ ५३ ॥ १—७ वामदेव ऋषिः ॥ सविता देवता ॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृज्जगती । २ विराड् जगती । ४ स्वराड् जगती । ५ जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ५३ ॥ तद्देवस्य॑ सवि॒तुर्वार्यं॑ म॒हद्वृ॑णीमहे॒ असु॑रस्य॒ प्रचे॑तसः । छ॒र्दिर्येन॑ दा॒शुषे॒ यच्छ॑ति॒ त्मना॒ तन्नो॑ म॒हाँ उद॑यान्दे॒वो अ॒क्तुभिः॑ ॥ १ ॥ दि॒वो ध॒र्ता भुव॑नस्य प्र॒जाप॑तिः पि॒शङ्गं॑ द्रा॒पिं प्रति॑ मुञ्चते क॒विः । वि॒च॒क्ष॒णः प्र॒थय॑न्नापृ॒णन्नु॒र्व॑जीजन॒त्सवि॒ता सु॒म्नमु॒क्थ्य॑म् ॥ २ ॥ आप्रा॒ रजां॑सि दि॒व्यानि॒ पार्थि॑वा॒ श्लोकं॑ दे॒वः कृ॑णुते॒ स्वाय॒ धर्म॑णे । प्र बा॒हू अ॑स्राक्सवि॒ता सवी॑मनि निवे॒शय॑न्प्रसु॒वन्न॒क्तुभि॒र्जग॑त् ॥ ३ ॥ अदा॑भ्यो॒ भुव॑नानि प्र॒चाक॑शद्व्र॒तानि॑ दे॒वः स॑वि॒ताभि र॑क्षते । प्रास्रा॑ग्बा॒हू भुव॑नस्य प्र॒जाभ्यो॑ धृ॒तव्र॑तो म॒हो अज्म॑स्य राजति ॥ ४ ॥ त्रिर॒न्तरि॑क्षं सवि॒ता म॑हित्व॒ना त्री रजां॑सि परि॒भूस्त्रीणि॑ रोच॒ना । ति॒स्रो दिवः॑ पृथि॒वीस्ति॒स्र इ॑न्वति त्रि॒भिर्व्र॒तैर॒भि नो॑ रक्षति॒ त्मना॑ ॥ ५ ॥ बृ॒हत्सु॑म्नः प्रस॒वीता नि॒वेश॑नो॒ जग॑तः स्था॒तुरु॒भय॑स्य॒ यो व॒शी । स नो॑ दे॒वः स॑वि॒ता शर्म॑ यच्छत्व॒स्मे क्षया॑य त्रि॒वरू॑थ॒मंह॑सः ॥ ६ ॥ आग॑न्दे॒व ऋ॒तुभि॒र्वर्ध॑तु॒ क्षयं॒ दधा॑तु नः सवि॒ता सु॑प्र॒जामिषम् । स नः॑ क्ष॒पाभि॒रह॑भिश्च जिन्वतु प्र॒जाव॑न्तं र॒यिम॒स्मे समि॑न्वतु ॥ ७ ॥ ४ ॥

॥ ५४ ॥ १–६ वामदेव ऋषिः ॥ सविता देवता ॥ छन्दः–१ भुरिक् त्रिष्टुप् । २ निचृत् त्रिष्टुप् । ३, ४, ५ स्वराट् त्रिष्टुप् । ६ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५४ ॥ अभू॑द्दे॒वः स॑वि॒ता वन्द्यो॒ नु न॑ इ॒दानी॒मह्न॑ उप॒वाच्यो॒ नृभिः॑ । वि यो रत्ना॒ भज॑ति मान॒वेभ्यः॒ श्रेष्ठं॑ नो॒ अत्र॒ द्रवि॑णं॒ यथा॒ दध॑त् ॥ १ ॥ दे॒वेभ्यो॒ हि प्र॑थ॒मं य॒ज्ञियेभ्यो॑ऽमृत॒त्वं सु॒वसि॑ भा॒गमु॑त्त॒मम् । आदिद्दा॒मानं॑ सवित॒र्व्यू॑र्णुषेऽनू॒ची॒ना जी॑वि॒ता मानु॑षेभ्यः ॥ २ ॥ अचि॑त्ती॒ यच्च॑कृ॒मा दैव्ये॒ जने॑ दी॒नैर्दक्षैः॒ प्रभू॑ती पूरुष॒त्वता॑ । दे॒वेषु॑ च सवित॒र्मानु॑षेषु च॒ त्वं नो॒ अत्र॑ सुवता॒दना॑गसः ॥ ३ ॥ न प्र॒मिये॑ सवि॒तुर्दैव्य॑स्य॒ तद्यथा॒ विश्वं॒ भुव॑नं धारयि॒ष्यति॑ । यत्पृ॑थि॒व्या वरि॑म॒न्ना स्व॑ङ्गु॒रिर्वर्ष्म॑न्दि॒वः सु॒वति॑ स॒त्यम॑स्य॒ तत् ॥ ४ ॥ इन्द्र॑ज्येष्ठान्बृ॒हद्भ्यः॒ पर्व॑तेभ्यः॒ क्षयाँ॑ एभ्यः सुवसि प॒स्त्या॑वतः । यथा॑यथा प॒तय॑न्तो वियेमि॒र ए॒वैव त॑स्थुः सवितः स॒वाय॑ ते ॥ ५ ॥ ये ते॒ त्रिरह॑न्त्सवितः स॒वासो॑ दि॒वेदि॑वे॒ सौभ॑गमासु॒वन्ति॑ । इन्द्रो॒ द्यावा॑पृथि॒वी सिन्धु॑र॒द्भिरा॑दि॒त्यैर्नो॒ अदि॑तिः॒ शर्म॑ यंसत् ॥ ६ ॥ ५ ॥

॥ ५५ ॥ १—१० वामदेव ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवता ॥ छन्दः–१ त्रिष्टुप् । २, ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ५ भुरिक्पङ्क्तिः । ६, ७ स्वराट्पङ्क्तिः । ८, ९

विराड्गायत्री । १० गायत्री ॥ स्वरः—१, २, ४ धैवतः । ३, ५–७ पञ्चमः
८—१० षड्जः ॥

॥ ५५ ॥ को वस्त्राता वसवः को वरूता द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नः सहीयसो वरुण मित्र मर्तात्को वोऽध्वरे वरिवो धाति देवाः ॥ १ ॥ प्र ये धामानि पूर्व्याण्यर्चान्वि यदुच्छान्वियोतारो अमूराः । विधातारो वि ते दधुरजस्रा ऋतधीतयो रुरुचन्त दस्माः ॥ २ ॥ प्र पस्त्यामदितिं सिन्धुमर्कैः स्वस्तिमीळे सख्याय देवीम् । उभे यथा नो अहनी निपात उषासानक्ता करतामदब्धे ॥ ३ ॥ व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्थामिषस्पतिः सुवितं गातुमग्निः । इन्द्राविष्णू नृवदु षु स्तवाना शर्म नो यन्तममवद्वरूथम् ॥ ४ ॥ आ पर्वतस्य मरुतामवांसि देवस्य त्रातुरव्रि भगस्य । पात्पतिर्जन्यादंहसो नो मित्रो मित्रियादुत न उरुष्येत् ॥ ५ ॥६॥ नू रोदसी अहिना बुध्न्येन स्तुवीत देवी अप्येभिरिष्टैः । समुद्रं न संचरणे सनिष्यवो घर्मस्वरसो नद्यो अप व्रन् ॥६॥ देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् । नहि मित्रस्य वरुणस्य धासिमर्हामसि प्रमियं सान्वग्नेः ॥७॥ अग्निरीशे वसव्यस्याग्निर्महः सौभगस्य । तान्यस्मभ्यं रासते ॥ ८ ॥ उषो मघोन्या वह सूनृते वार्या पुरु । अस्मभ्यं वाजिनीवति ॥ ९ ॥ तत्सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । इन्द्रो नो राधसा गमत् ॥ १० ॥ ७ ॥

॥ ५६ ॥ १–७ वामदेव ऋषिः ॥ द्यावापृथिव्यौ देवते ॥ छन्दः–१, २ त्रिष्टुप् । ४ विराट् त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ निचृद्गायत्री । ६ विराड् गायत्री । ७ गायत्री ॥ स्वरः–१, २, ४, धैवतः । ३ पञ्चमः । ५–७ षड्जः ॥

॥ ५६ ॥ मही द्यावापृथिवी इह ज्येष्ठे रुचा भवतां शुचयद्भिरर्कैः । यत्सीं वरिष्ठे बृहती विमिन्वन्रुवद्धोक्षा पप्रथानेभिरेवैः ॥ १ ॥ देवी देवेभिर्यजते यजत्रैरमिनती तस्थतुरुक्षमाणे । ऋतावरी अद्रुहा देवपुत्रे यज्ञस्य नेत्री शुचयद्भिरर्कैः ॥ २ ॥ स इत्स्वपा भुवनेष्वास य इमे द्यावापृथिवी जजान । उर्वी गभीरे रजसी सुमेके अवंशे धीरः शच्या समैरत् ॥३॥ नू रोदसी बृहद्भिर्नो वरूथैः पत्नीवद्भिरिषयन्ती सजोषाः । उरूची विश्वे यजते नि पातं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ४ ॥ प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे । शुची उप प्रशस्तये ॥ ५ ॥ पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः । ऊह्याथे सनादृतम् ॥ ६ ॥ मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम् । परि यज्ञं नि षेदथुः ॥ ७ ॥ ८ ॥

॥ ५७ ॥ १-८ वामदेव ऋषिः ॥ १-३ क्षेत्रपतिः । ४ शुनः । ५,८ शुनासीरौ । ६, ७ सीता देवता ॥ छन्दः-१, ४, ६, ७ अनुष्टुप् । २, ३, ८ त्रिष्टुप् । ५, पुरउष्णिक् ॥ स्वरः-१, ४, ६, ७ गान्धारः । २, ३, ८ धैवतः । ५ ऋषभः ॥

॥ ५७ ॥ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि । गामश्वं पोषयित्न्वा स नो मृळातीदृशे ॥ १ ॥ क्षेत्रस्य पते मधुमन्तमूर्मिं धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व । मधुश्चुतं घृतमिव सुपूतमृतस्य नः पतयो मृळयन्तु ॥ २ ॥ मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम् । क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम ॥ ३ ॥ शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् । शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय ॥ ४ ॥ शुनासीराविमां वाचं जुषेथां यद्दिवि चक्रथुः पयः । तेनेमामुप सिञ्चतम् ॥ ५ ॥ अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा । यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलाससि ॥ ६ ॥ इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु । सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥ ७ ॥ शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः । शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम् ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ ५८ ॥ १---११ वामदेव ऋषिः ॥ अग्निः सूर्यो वाऽपो वा गावो वा घृतं वा देवताः ॥ छन्दः-१ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ८, ९, १० त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् पङ्क्तिः । ४ अनुष्टुप् । ६, ७ निचृदनुष्टुप् । ११ स्वराट् त्रिष्टुप् । ५ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः-१, २, ८, ९, १० धैवतः । ३ पञ्चमः । ४, ६, ७, ११ गान्धारः । ५ ऋषभः ॥

॥ ५८ ॥ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपांशुना सममृतत्वमानट् । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥ १ ॥ वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः । उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर एतत् ॥ २ ॥ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश ॥ ३ ॥ त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् । इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः ॥ ४ ॥ एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे । घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ॥ ५ ॥ १० ॥ सम्यक्स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः । एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः ॥ ६ ॥ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्र-

मियः पतयन्ति यह्वाः । घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः
पिन्वमानः ॥७॥ अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्
घृतस्य धाराः समिधो नसन्तता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥ ८ ॥ कन्या इ
वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभि चाकशीमि । यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृ
तस्य धारा अभि तत्पवन्ते ॥ ९ ॥ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्र
विणानि धत्त । इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥ १० ॥
धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि । अपामनीके समिथे
य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् ॥ ११ ॥ ११ ॥ ५ ॥ ४ ॥

॥ इति चतुर्थं मण्डलं समाप्तम् ॥

---

# अथ पञ्चमं मण्डलम् ॥

॥ १ ॥ १-१२ बुधगविष्ठिरावात्रेया ऋषी ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ७, १० त्रिष्टुप् । ५, ८ स्वराट् पङ्क्तिः । ९ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६, ७, १०-१२ धैवतः । ५, ८, ९ पञ्चमः ॥

॥ १ ॥ अबो॑ध्य॒ग्निः स॒मिधा॒ जना॑नां॒ प्रति॑ धे॒नुमि॑वाय॒तीमु॒षास॑म् । य॒ह्वा इ॑व॒ प्र व॒यामु॒ज्जिहा॑ना॒ः प्र भा॒नव॑ः सिस्रते॒ नाक॒मच्छ॑ ॥ १ ॥ अबो॑धि॒ होता॑ य॒जथा॑य दे॒वानू॒र्ध्वो अ॒ग्निः सु॒मना॑ः प्रा॒तर॑स्थात् । समि॑द्धस्य॒ रुश॑ददर्शि॒ पाजो॑ म॒हान्दे॒वस्तम॑सो॒ निर॑मोचि ॥ २ ॥ यदीं॑ ग॒णस्य॑ रश॒नामजी॑ग॒ः शुचि॑रङ्क्ते॒ शुचि॑भि॒र्गोभि॑र॒ग्निः । आद्दक्षि॑णा युज्यते वाज॒यन्त्यु॑त्ता॒नामू॒र्ध्वो अ॑धयज्जु॒हूभि॑ः ॥ ३ ॥ अ॒ग्निमच्छा॑ देव॒यतां॒ मनां॑सि॒ चक्षूं॑षीव॒ सूर्ये॒ सं च॑रन्ति । यदीं॒ सुवा॑ते उ॒षसा॒ विरू॑पे श्वे॒तो वा॒जी जा॑यते॒ अग्रे॒ अह्ना॑म् ॥ ४ ॥ जनि॑ष्ट॒ हि जेन्यो॒ अग्रे॒ अह्नां॑ हि॒तो हि॒तेष्व॑रु॒षो वने॑षु । दमे॑दमे स॒प्त रत्ना॒ दधा॑नो॒ऽग्निर्होता॒ नि ष॑सादा॒ यजी॑यान् ॥ ५ ॥ अ॒ग्निर्होता॒ न्य॑सीद॒द्यजी॑यानु॒पस्थे॑ मा॒तुः सु॑र॒भा उ॑ लो॒के । युवा॑ क॒विः पु॑रुनि॒ःष्ठ ऋ॒ताव॑ा ध॒र्ता कृ॑ष्टी॒नामु॒त मध्य॑ इ॒द्धः ॥ ६ ॥ १२ ॥ प्र णु त्यं विप्र॑मध्व॒रेषु॑ सा॒धुम॒ग्निं होता॑रमीळते॒ नमो॑भिः । आ यस्त॒तान॒ रोद॑सी ऋ॒तेन॒ नित्यं॑ मृजन्ति वा॒जिनं॑ घृ॒तेन॑ ॥ ७ ॥ मा॒र्जा॒ल्यो॑ मृज्यते॒ स्वे दमू॑नाः कविप्रश॒स्तो अति॑थिः शि॒वो न॑ः । स॒हस्र॑शृङ्गो वृष॒भस्तदो॑जा॒ विश्वाँ॑ अग्ने॒ सह॑सा॒ प्रास्य॒न्यान् ॥ ८ ॥ प्र स॒द्यो अ॑ग्ने॒ अत्ये॑ष्य॒न्याना॒विर्यस्मै॒ चारु॑तमो ब॒भूथ॑ । ई॒ळेन्यो॑ वपु॒ष्यो॑ वि॒भावा॑ प्रि॒यो वि॒शामति॑थि॒र्मानु॑षीणाम् ॥ ९ ॥ तुभ्यं॑ भरन्ति क्षि॒तयो॑ यविष्ठ ब॒लिम॑ग्ने॒ अन्ति॑त॒ ओत दू॒रात् । आ भन्दि॑ष्ठस्य सुम॒तिं चि॑किद्धि बृ॒हत्ते॑ अग्ने॒ महि॒ शर्म॑ भ॒द्रम् ॥ १० ॥ आद्य रथं॑ भानुमो भा॒नुम॑न्तमग्ने॒ तिष्ठ॑ यज॒तेभि॒ः सम॑न्तम् । वि॒द्वान्प॑थी॒नामु॒र्व१॒॑न्तरि॑क्ष॒मेह दे॒वान्ह॑वि॒रद्या॑य वक्षि ॥ ११ ॥ अवो॑चाम क॒वये॒ मेध्या॑य॒ वचो॑ व॒न्दारु॑ वृष॒भाय॒ वृष्णे॑ । गवि॑ष्ठिरो॒ नम॑सा॒ स्तोम॑म॒ग्नौ दि॒वी॑व रु॒क्मम॑रु॒व्यञ्च॑मश्रेत् ॥ १२ ॥ १३ ॥

॥ २ ॥ १, ३–८, १०—१२ कुमार आत्रेयो वृशो वा जार उभौ वा । २, ९ वृशो जार ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३, ७, ८ त्रिष्टुप् । ४, ५, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ११ विराट् त्रिष्टुप् । २ स्वराट् पङ्क्तिः । ९ भुरिक् पङ्क्तिः । १२ निचृदति जगती ॥ स्वरः–१, ३–५, ७—११ धैवतः । २, ९ पञ्चमः । १२ निषादः ॥

॥ २ ॥ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे । अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ ॥ १ ॥ कमेतं त्वं युवते कुमारं पेषी बिभर्षि महिषी जजान । पूर्वीर्हि गर्भः शरदो ववर्धापश्यं जातं यदसूत माता ॥ २ ॥ हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात्क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम् । ददानो अस्मा अमृतं विपृक्वत्किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः ॥ ३ ॥ क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरन्तं सुमद्यूथं न पुरु शोभमानम् । न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्नीरिद्युवतयो भवन्ति ॥ ४ ॥ के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर्न येषां गोपा अरणश्चिदास । य ईं जगृभुरव ते सृजन्त्वाजाति पश्व उप नश्चिकित्वान् ॥ ५ ॥ वसां राजानं वसतिं जनानामरातयो नि दधुर्मर्त्येषु । ब्रह्माण्यत्रेरव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु ॥ ६ ॥ १४ ॥ शुनश्चिच्छेपं निदितं सहस्राद्यूपादमुञ्चो अशमिष्ट हि षः । एवास्मदग्ने वि मुमुग्धि पाशान्होतश्चिकित्व इह तू निषद्य ॥ ७ ॥ हृणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच । इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ॥ ८ ॥ वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा । प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे ॥ ९ ॥ उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्नेस्तिग्मायुधा रक्षसे हन्तवा उ । मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः ॥ १० ॥ एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् । यदीदग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम ॥ ११ ॥ तुविग्रीवो वृषभो वावृधानोऽशत्र्व१र्यः समजाति वेदः । इतीममग्निममृता अवोचन्बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्धविष्मते मनवे शर्म यंसत् ॥१२॥१५॥

॥ ३ ॥ १–१२ वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ निचृत्पङ्क्तिः । ११ भुरिक् पङ्क्तिः । २, ३, ५, ९, १२ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, १० त्रिष्टुप् । ६ स्वराट् त्रिष्टुप् । ७, ८ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ११ पञ्चमः । २–१०, १२ धैवतः ॥

॥ ३ ॥ त्वमग्ने वरुणो जायसे यत्त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्धः । त्वे विश्वे सहसस्पुत्र देवास्त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय ॥ १ ॥ त्वमर्यमा भवसि यत्कनीनां नाम स्वधावन्गुह्यं बिभर्षि । अञ्जन्ति मित्रं सुधितं न गोभिर्यद्दम्पती समनसा कृणोषि ॥ २ ॥ तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त रुद्र यत्ते जनिम चारु चित्रम् । पदं यद्विष्णोरुपमं निधायि तेन पासि गुह्यं नाम गोनाम् ॥ ३ ॥ तव श्रिया सुदृशो देव देवाः पुरू दधाना अमृतं सपन्त । होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्दशस्यन्त उशिजः शंसमायोः ॥ ४ ॥ न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः । विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान् ॥ ५ ॥ वयमग्ने वनुयाम त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमानाः । वयं समर्ये विदथेष्वह्नां वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान् ॥ ६ ॥१६॥ यो न आगो अभ्येनो भरात्यधीदघमघशंसे दधात । जही चिकित्वो अभिशस्तिमेतामग्ने यो नो मर्चयति द्वयेन ॥ ७ ॥ त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः । संस्थे यदग्न ईयसे रयीणां देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः ॥ ८ ॥ अव स्पृधि पितरं योधि विद्वान्पुत्रो यस्ते सहसः सून ऊहे । कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नोऽग्ने कदा ऋतचिद्यातयासे ॥ ९ ॥ भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वसो यदि तज्जोषयासे । कुविद्देवस्य सहसा चकानः सुम्नमग्निर्वनते वावृधानः ॥ १० ॥ त्वमङ्ग जरितारं यविष्ठ विश्वान्यग्ने दुरिताति पर्षि । स्तेना अदृश्रन्रिपवो जनासोऽज्ञातकेता वृजिना अभूवन् ॥ ११ ॥ इमे यामासस्त्वद्रिगभूवन्वसवे वा तदिदागो अवाचि । नाहायमग्निरभिशस्तये नो न रीषते वावृधानः परा दात् ॥ १२ ॥ १७ ॥

॥ ४ ॥ १–११ वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, १०, ११ भुरिक् पङ्क्तिः । ४, ७ स्वराट् पङ्क्तिः । २, ९ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, ४, ७, १०, ११ पञ्चमः । २, ३, ५, ६, ८ ९ धैवतः ॥

॥ ४ ॥ त्वामग्ने वसुपतिं वसूनामभि प्र मन्दे अध्वरेषु राजन् । त्वया वाजं वाजयन्तो जयेमाभि ष्याम पृत्सुतीर्मर्त्यानाम् ॥ १ ॥ हव्यवाळग्निरजरः पिता नो विभुर्विभावा सुदृशीको अस्मे । सुगार्हपत्याः समिषो दिदीह्यस्मद्र्यक्सं मिमीहि श्रवांसि ॥ २ ॥ विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम् । नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे स देवेषु वनते वार्याणि ॥ ३ ॥ जुषस्वाग्न इळया सजोषा

यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य । जुषस्व नः समिधं जातवेद आ च देवान्हविरद्याय वक्षि
॥ ४ ॥ जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान् । विश्वा अग्ने अ-
भियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि ॥ ५ ॥ १८ ॥ वधेन दस्युं प्र हि चा-
तयस्व वयः कृण्वानस्तन्वे३स्वायै । पिपर्षि यत्सहसस्पुत्र देवान्त्सो अग्ने पाहि नृतम
वाजे अस्मान् ॥६॥ वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे । अस्मे रयिं
विश्ववारं समिन्वास्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि ॥ ७ ॥ अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व
सहसः सूनो त्रिषधस्थ हव्यम् । वयं देवेषु सुकृतः स्याम शर्मणा नस्त्रिवरूथेन पाहि
॥ ८ ॥ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिपर्षि । अग्ने अ-
त्रिवन्नमसा गृणानो३स्माकं बोध्यविता तनूनाम् ॥ ९ ॥ यस्त्वा हृदा कीरिणा म-
न्यमानोऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि । जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृ-
तत्वमश्याम् ॥ १० ॥ यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम् । अ-
श्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति ॥ ११ ॥ १९ ॥

॥ ५ ॥ १-११ वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः ॥ आप्रं देवता ॥ छन्दः-१, ५, ६, ७, ९, १० गायत्री । ३, ८ निचृद्गायत्री । ११ विराड्गायत्री । ४ पिपीलिकामध्या गायत्री । २ अर्च्युष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३—११ षड्जः । २ ऋषभः ॥

॥ ५ ॥ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ॥ १ ॥
नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः । कविर्हि मधुहस्त्यः ॥ २ ॥ ईळितो अग्न आ
वहेन्द्रं चित्रमिह प्रियम् । सुखै रथेभिरूतये ॥ ३ ॥ ऊर्णम्रदा वि प्रथस्वाभ्य१र्का
अनूषत । भवा नः शुभ्र सातये ॥ ४ ॥ देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं सुप्रायणा न ऊ-
तये । प्रप्र यज्ञं पृणीतन ॥ ५ ॥ २० ॥ सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा ।
दोषामुषासमीमहे ॥ ६ ॥ वातस्य पत्मन्नीळिता दैव्या होतारा मनुषः । इमं नो
यज्ञमा गतम् ॥७॥ इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः । बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः
॥ ८ ॥ शिवस्त्वष्टरिहा गहि विभुः पोष उत त्मना । यज्ञेयज्ञे न उदव ॥ ९ ॥ यत्र
वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि । तत्र हव्यानि गामय ॥ १० ॥ स्वाहाग्नये
वरुणाय स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः । स्वाहा देवेभ्यो हविः ॥ ११ ॥ २१ ॥

॥ ६ ॥ १—१० वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ८, ९ निचृत्पङ्क्तिः । २, ५ पङ्क्तिः । ७ विराट्पङ्क्तिः । ३, ४ स्वराड्बृहती । ६, १० भुरिग्बृहती ॥ स्वरः—१, २, ५, ७—९ पञ्चमः । ३, ४, ६, १० मध्यमः ॥

॥ ६ ॥ अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः । अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥ सो अग्निर्यो वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः । समर्वन्तो रघुद्रुवः सं सुजातासः सूरय इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ २ ॥ अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः । अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ३ ॥ आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् । यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ४ ॥ आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य शोचिषस्पते । सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ५ ॥ २२ ॥ प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् । ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यन्त्यानुषगिषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ६ ॥ तव त्ये अग्ने अर्चयो महि व्राधन्त वाजिनः । ये पत्वभिः शफानां व्रजा भुरन्त गोनामिषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ७ ॥ नवा नो अग्न आ भर स्तोतृभ्यः सुक्षितीरिषः । ते स्याम य आनृचुस्त्वादूतासो दमेदम इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ८ ॥ उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी श्रीणीष आसनि । उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ९ ॥ एवाँ अग्निमजुर्यमुर्गीर्भिर्यज्ञेभिरानुषक् । दधदस्मे सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १० ॥ २३ ॥

॥ ७ ॥ १—१० इष आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप् । २ अनुष्टुप् । ३ भुरिगनुष्टुप् । ४, ५, ८, ९ निचृदनुष्टुप् । ६, ७ स्वराडुष्णिक् । १० निचृद्बृहती ॥ स्वरः— १—५, ८, ९ गान्धारः । ६, ७ ऋषभः । १० मध्यमः ॥

॥ ७ ॥ सखायः सं वः सम्यञ्चमिषं स्तोमं चाग्नये । वर्षिष्ठाय क्षितीनामूर्जो नप्त्रे सहस्वते ॥ १ ॥ कुत्रा चिद्यस्य समृतौ रण्वा नरो नृषदने । अर्हन्तश्चिद्यमिन्धते संजनयन्ति जन्तवः ॥ २ ॥ सं यदिषो वनामहे सं हव्या मानुषाणाम् । उत द्युम्नस्य शवस ऋतस्य रश्मिमा ददे ॥ ३ ॥ स स्मा कृणोति केतुमा नक्तं चिद्दूर आ सते । पावको यद्वनस्पतीन्प्र स्मा मिनात्यजरः ॥ ४ ॥ अव स्म यस्य वेषणे स्वेदं पथिषु जुह्वति । अभीमह स्वजेन्यं भूमा पृष्ठेव रुरुहुः ॥ ५ ॥ २४ ॥ यं मर्त्यः पुरुस्पृहं विदद्विश्वस्य धायसे । प्र स्वादनं पितूनामस्ततातिं चिदायवे ॥ ६ ॥ स हि ष्मा धन्वाक्षितं दाता न दात्या पशुः । हिरिश्मश्रुः शुचिदन्नृभुरनिभृष्टतविषिः ॥ ७ ॥ शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत्प्र स्वधितीव रीयते । सुषूरसूत माता क्राणा

यदांनुशे भगंम् ॥ ८ ॥ आ यस्ते सर्पिरासुतेऽग्ने शमस्ति धायसे। ऐषुं द्युम्नमुत श्रवं आ चित्तं मर्त्येषु धाः ॥९॥ इति चिन्मन्युमध्रिजस्त्वादांतमा पशुं ददे। आदंग्ने अपृणतोऽत्रिः सासह्याद्दस्यूनिषः सासह्यान्नॄन् ॥ १० ॥ २५ ॥

॥ ८ ॥ १–७ इष आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ५ स्वराट्त्रिष्टुप्। २ भुरिक् त्रिष्टुप्। ३, ४, ७ निचृज्जगती। ६ विराड्जगती ॥ स्वरः–१, २, ५, धैवतः ॥ ३, ४, ६, ७ निषादः ॥

॥ ८ ॥ त्वामंग्न ऋतायवः समीधिरे प्रत्नं प्रत्नास ऊतये सहस्कृत। पुरुश्चन्द्रं यंजतं विश्वधायसं दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ॥ १ ॥ त्वामंग्ने अतिथिं पूर्व्यं विशः शोचिष्केशं गृहपतिं नि षेदिरे। बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पृतं सुशर्माणं स्ववसं जरद्विषम् ॥ २ ॥ त्वामंग्ने मानुषीरीळते विशो होत्राविदं विविचिं रत्नधातमम्। गुहा सन्तं सुभग विश्वदर्शतं तुविष्वणसं सुयजं घृतश्रियम् ॥ ३ ॥ त्वामंग्ने धर्णसिं विश्वधा वयं गीर्भिर्गृणन्तो नमसोपं सेदिम। स नो जुषस्व समिधानो अङ्गिरो देवो मर्तस्य यशसा सुदीतिभिः ॥ ४ ॥ त्वमंग्ने पुरुरूपो विशेविशे वयो दधासि प्रत्नथा पुरुष्टुत। पुरूण्यन्ना सहसा वि राजसि त्विषिः सा ते तित्विषाणस्य नाधृषे ॥ ५ ॥ त्वामंग्ने समिधानं यविष्ठ्य देवा दूतं चक्रिरे हव्यवाहनम्। उरुज्रयसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चक्षुर्दधिरे चोदयन्मति ॥ ६ ॥ त्वामंग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे। स वावृधान ओषधीभिरुक्षितोऽभि ज्रयांसि पार्थिवा वि तिष्ठसे ॥ ७ ॥ २६ ॥ ८ ॥ ३ ॥

॥ ९ ॥ १–७ गय आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ स्वराडुष्णिक्। ३, ४ भुरिगुष्णिक्। २ निचृदनुष्टुप्। ६ विराडनुष्टुप्। ५ स्वराड्बृहती। ७ पङ्क्तिः॥ स्वरः–१, ३, ४, ऋषभः। २, ६ गान्धारः। ५ मध्यमः। ७ पञ्चमः ॥

॥ ९ ॥ त्वामंग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते। मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक् ॥ १ ॥ अग्निर्होता दास्वतः क्षयस्य वृक्तबर्हिषः। सं यज्ञासश्चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः ॥ २ ॥ उत स्म यं शिशुं यथा नवं जनिष्टारणी। धर्तारं मानुषीणां विशामग्निं स्वध्वरम् ॥ ३ ॥ उत स्म दुर्गृभीयसे पुत्रो न ह्वार्याणाम्। पुरू यो दग्धासि वनाग्ने पशुर्न यवसे ॥ ४ ॥ अध स्म यस्यार्चयः सम्यक्संयन्ति धूमिनः। यदीमह त्रितो दिव्युप ध्मातेव धमति शिशीते ध्मातरी यथा ॥५॥ तवा-

इमंग्न ऊतिभिर्मित्रस्यं च प्रशंस्तिभिः । द्वेषोयुतो न दुरिता तुर्याम मर्त्यानाम् ॥ ६ ॥
तं नो अग्ने अभी नरो रयिं संहस्व आ भंर । स क्षेपयत्स पोषयद्भुवद्वाजंस्य सा-
तय उतैधि पृत्सु नो वृधे ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ १० ॥ १–७ गय आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ६ निचृदनुष्टुप् । ५ अनुष्टुप् । २, ३ भुरिगुष्णिक् । ४ स्वराड्बृहती । ७ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ५, ६ गान्धारः । २, ३ ऋषभः । ४ मध्यमः । ७ पञ्चमः ॥

॥ १० ॥ अग्न ओजिष्ठमाभंर द्युम्नमस्मभ्यंमध्रिगो । प्र नो राया परीणसा
रत्सि वाजाय पन्थाम् ॥ १ ॥ त्वं नो अग्ने अद्भुत क्रत्वा दक्षस्य मंहना । त्वे अ-
सुर्यं मारुंहत्क्राणा मित्रो न यज्ञियंः ॥ २ ॥ त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्ध-
य । ये स्तोमेभिः प्र सूरयो नरो मघान्यानशुः ॥ ३ ॥ ये अंग्ने चन्द्र ते गिरंः शु-
म्भन्त्यश्वंराधसः । शुष्मेभिः शुष्मिणो नरो दिवश्चिद्येषां बृहत्सुकीर्तिर्बोधति त्मना
॥ ४ ॥ तव त्ये अंग्ने अर्चयो भ्राजंन्तो यन्ति धृष्णुया । परिंज्मानो न विद्युतः
स्वानो रथो न वाजयुः ॥ ५ ॥ नू नो अग्न ऊतये सबाधसश्च रातये । अस्मा-
कासश्च सूरयो विश्वा आशास्तरीषणि ॥ ६ ॥ त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः
स्तवान आ भंर । होतर्विभ्वासहं रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो
वृधे ॥ ७ ॥ २ ॥

॥ ११ ॥ १–६ सुतम्भर आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३, ५ निचृज्जगती । २ जगती । ४, ६ विराड्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ११ ॥ जनंस्य गोपा अंजनिष्ट जागृंविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यंसे ।
घृतप्रंतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्विभाति भरतेभ्यः शुचिः ॥ १ ॥ यज्ञस्यं
केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधिरे । इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि
सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥ २ ॥ असंम्मृष्टो जायसे मात्रोः शुचिर्मन्द्रः क-
विरुदतिष्ठो विवस्वतः । घृतेन त्वावर्धयन्नग्न आहुत धूमस्ते केतुरंभवद्दिवि श्रितः
॥ ३ ॥ अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु साधुयाग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे । अग्निर्दूतो
अंभवद्धव्यवाहनोऽग्निं वृणाना वृणते कविक्रतुम् ॥ ४ ॥ तुभ्येदमंग्ने मधुमत्तमं
वचस्तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे । त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीरा पृणन्ति
शवसा वर्धयन्ति च ॥ ५ ॥ त्वामंग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं
वनेवने । स जायसे मथ्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥ ६ ॥ ३ ॥

॥ १२ ॥ १-६ सुतम्भर आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २ स्वराट्पङ्क्तिः । ३, ४, ५ त्रिष्टुप् । ६ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः । ३—६ धैवतः ॥

॥ १२ ॥ प्राग्नये॑ बृह॒ते य॒ज्ञिया॑य ऋ॒तस्य॒ वृष्णे॒ असु॑राय॒ मन्म॑ । घृ॒तं न य॒ज्ञ आ॒स्ये॒३॒॑ सुपू॑तं॒ गिरं॑ भरे वृष॒भाय॑ प्रती॒चीम् ॥ १ ॥ ऋ॒तं चि॑कित्व ऋ॒तमिच्चि॑कि॒द्ध्यृ॒तस्य॒ धारा॒ अनु॑ तृन्धि पू॒र्वीः । नाहं या॒तुं सह॑सा॒ न द्व॒येन॑ ऋ॒तं स॑पाम्यरु॒षस्य॒ वृष्णः॑ ॥ २ ॥ कया॑ नो अग्न ऋ॒तय॑न्नृ॒तेन॒ भुवो॒ नवे॑दा उ॒चथ॑स्य॒ नव्यः॑ । वेदा॑ मे दे॒व ऋ॑तु॒पा ऋ॑तू॒नां नाहं पतिं॑ सनि॒तुर॒स्य रा॒यः ॥ ३ ॥ के ते॑ अग्ने रि॒पवे॒ बन्ध॑नासः॒ के पा॒यवः॑ सनिषन्त द्यु॒मन्तः॑ । के धा॒सिम॑ग्ने॒ अनृ॑तस्य पान्ति॒ क आस॑तो॒ वच॑सः सन्ति गो॒पाः ॥ ४ ॥ सखा॑यस्ते॒ विषु॑णा अग्न ए॒ते शि॒वासः॒ सन्तो॒ अशि॑वा अभूवन् । अधू॑र्षत स्व॒यमे॒ते वचो॑भिरृजूय॒ते वृ॑जि॒नानि॑ ब्रु॒वन्तः॑ ॥ ५ ॥ यस्ते॑ अग्ने॒ नम॑सा य॒ज्ञमीट्ट॑ ऋ॒तं स पा॑त्यरु॒षस्य॒ वृष्णः॑ । तस्य॒ क्षयः॑ पृ॒थुरा सा॒धुरे॑तु प्र॒सर्स्रा॑णस्य॒ नहु॑षस्य॒ शेषः॑ ॥ ६ ॥ ४ ॥

॥ १३ ॥ १-६ सुतम्भर आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,४, ५ निचृद् गायत्री । २, ६ गायत्री । ३ विराड्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १३ ॥ अर्च॑न्तस्त्वा हवाम॒हेऽर्च॑न्तः॒ समि॑धीमहि । अग्ने॒ अर्च॑न्त ऊ॒तये॑ ॥ १ ॥ अ॒ग्नेः स्तोमं॑ मनामहे सि॒ध्रम॒द्य दि॑वि॒स्पृशः॑ । दे॒वस्य॑ द्रवि॒ण॒स्यवः॑ ॥ २ ॥ अ॒ग्निर्जु॑षत नो॒ गिरो॒ होता॒ यो मानु॑षे॒ष्वा । स य॑क्ष॒द्दैव्यं॒ जन॑म् ॥ ३ ॥ त्वम॑ग्ने स॒प्रथा॑ असि॒ जुष्टो॒ होता॒ वरे॑ण्यः । त्वया॑ य॒ज्ञं वि त॑न्वते ॥ ४ ॥ त्वाम॑ग्ने वाज॒सात॑मं॒ विप्रा॑ वर्धन्ति॒ सुष्टु॑तम् । स नो॑ रास्व सु॒वीर्य॑म् ॥ ५ ॥ अग्ने॑ ने॒मिर॒राँ इ॑व दे॒वांस्त्वं प॑रि॒भूर॑सि । आ राध॑श्चि॒त्रमृ॑ञ्जसे ॥ ६ ॥ ५ ॥

॥ १४ ॥ १-६ सुतम्भर आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, ४, ५, ६ निचृद् गायत्री । २ विराड्गायत्री । ३ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १४ ॥ अ॒ग्निं स्तोमे॑न बोधय समिधा॒नो अम॑र्त्यम् । ह॒व्या दे॒वेषु॑ नो दधत् ॥ १ ॥ तम॑ध्व॒रेष्वी॑ळते दे॒वं मर्ता॒ अम॑र्त्यम् । यजि॑ष्ठं॒ मानु॑षे॒ जने॑ ॥ २ ॥ तं हि शश्व॑न्त॒ ईळ॑ते स्रु॒चा दे॒वं घृ॑त॒श्चुता॑ । अ॒ग्निं ह॒व्याय॒ वोळ्ह॑वे ॥ ३ ॥ अ॒-

ग्निर्जातो अरोचत घ्नन्दस्यूञ्ज्योतिषा तमः । अविन्दद्गा अपः स्वः ॥ ४ ॥ अ-
ग्निमीळेन्यं कविं घृतपृष्ठं सपर्यत । वेतु मे शृणवद्धवम् ॥ ५ ॥ अग्निं घृतेन वा-
वृधुः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् । स्वाधीभिर्वचस्युभिः ॥ ६ ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ १५ ॥ १-५ धरुण आङ्गिरस ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, ५ स्वराट्पङ्क्तिः । २, ४ त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१, ५ पञ्चमः । २-४ धैवतः ॥

॥ १५ ॥ प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरं भरे यशसे पूर्व्याय । घृतप्रसत्तो अ-
सुरः सुशेवो रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः ॥ १ ॥ ऋतेन ऋतं धरुणं धा-
रयन्त यज्ञस्य शाके परमे व्योमन् । दिवो धर्मन्धरुणे सेदुषो नॄञ्जातैरजाताँ अभि
ये ननक्षुः ॥ २ ॥ अंहोयुवस्तन्वस्तन्वते वि वयो महद्दुष्टरं पूर्व्याय । स संवतो
नवजातस्तुतुर्यात्सिंहं न क्रुद्धमभितः परि ष्ठुः ॥ ३ ॥ मातेव यद्भरसे पप्रथानो
जनंजनं धायसे चक्षसे च । वयोवयो जरसे यद्दधानः परि त्मना विषुरूपो जि-
गासि ॥ ४ ॥ वाजो नु ते शवसस्पात्वन्तमुरुं दोघं धरुणं देव रायः । पदं न ता-
युर्गुहा दधानो महो राये चितयन्नत्रिमस्पः ॥ ५ ॥ ७ ॥

॥ १६ ॥ १—५ पूरुरात्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २, ३ विराट् त्रिष्टुप् । ४ भुरिगुष्णिक् । ५ बृहती ॥ स्वरः—१-३ धैवतः । ४ ऋषभः । ५ मध्यमः ॥

॥ १६ ॥ बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये । यं मित्रं न प्रशस्तिभिर्मर्ता-
सो दधिरे पुरः ॥ १ ॥ स हि द्युभिर्जनानां होता दक्षस्य बाह्वोः । वि हव्यमग्नि-
रानुषग्भगो न वारमृण्वति ॥ २ ॥ अस्य स्तोमे मघोनः सख्ये वृद्धशोचिषः ।
विश्वा यस्मिन्तुविष्वणि समर्ये शुष्ममादधुः ॥ ३ ॥ अधाह्यग्न एषां सुवीर्यस्य
मंहना । तमिद्यह्वं न रोदसी परि श्रवो बभूवतुः ॥ ४ ॥ नू न एहि वार्यमग्ने गृ-
णान आ भर । ये वयं ये च सूरयः स्वस्ति धामहे सचोतैधि पृत्सु नो वृधे ॥ ५ ॥ ८ ॥

॥ १७ ॥ १-५ पूरुरात्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१ भुरिगुष्णिक् । २ अनुष्टुप् । ३ निचृदनुष्टुप् । ४ विराडनुष्टुप् । ५ भुरिग्बृहती ॥ स्वरः-१ ऋषभः । २-४ गान्धारः । ५ मध्यमः ॥

॥ १७ ॥ आ यज्ञैर्देव मर्त्य इत्था तव्यांसमूतये । अग्निं कृते स्वध्वरे पूरुरी-
ळीतावसे ॥ १ ॥ अस्य हि स्वयशस्तर आसा विधर्मन्मन्यसे । तं नाकं चित्रशो-
चिषं मन्द्रं परो मनीषया ॥ २ ॥ अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा ।
दिवो न यस्य रेतसा बृहच्छोचन्त्यर्चयः ॥ ३ ॥ अस्य क्रत्वा विचेतसो दस्मस्य
वसु रथ आ । अधा विश्वासु हव्योऽग्निर्विक्षु प्र शस्यते ॥ ४ ॥ नू न इद्धि वा-
र्यमासा सचन्त सूरयः । ऊर्जो नपादभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तय उतैधि पृत्सु
नो वृधे ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ १८ ॥ १-५ द्वितो मृक्तवाहा आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—
१, ४ विराडनुष्टुप् । २ निचृदनुष्टुप् । ३ भुरिगुष्णिक् । ५ भुरिग्बृहती ॥
स्वरः—१, २, ४ गान्धारः । ३ ऋषभः । ५ मध्यमः ॥

॥ १८ ॥ प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः । विश्वानि यो अमर्त्यो
हव्या मर्तेषु रण्यति ॥ १ ॥ द्विताय मृक्तवाहसे स्वस्य दक्षस्य मंहना । इन्दुं स
धत्त आनुषक्स्तोता चित्ते अमर्त्य ॥ २ ॥ तं वो दीर्घायुशोचिषं गिरा हुवे मघो-
नाम् । अरिष्टो येषां रथो व्यश्वदावन्नीयते ॥ ३ ॥ चित्रा वा येषु दीधितिरासन्-
नुक्था पान्ति ये । स्तीर्णं बर्हिः स्वर्णरे श्रवांसि दधिरे परि ॥ ४ ॥ ये मे पञ्चा-
शतं ददुरश्वानां सधस्तुति । द्युमदग्ने महि श्रवो बृहत्कृधि मघोनां नृवदमृत नृ-
णाम् ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ १९ ॥ १—५ वव्रिरात्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ गाय-
त्री । २ निचृद्गायत्री । ३ अनुष्टुप् । ४ भुरिगुष्णिक् । ५ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—
१, २ षड्जः । ३ गान्धारः । ४ ऋषभः । ५ पञ्चमः ॥

॥१९ ॥ अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते प्र वव्रेर्वव्रिश्चिकेत । उपस्थे मातुर्वि चष्टे
॥ १ ॥ जुहुरे वि चितयन्तोऽनिमिषं नृम्णं पान्ति । आ दृळ्हां पुरं विविशुः ॥ २ ॥
आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो द्युमद्वर्धन्त कृष्टयः । निष्कग्रीवो बृहदुक्थ एना मध्वा न
वाजयुः ॥ ३ ॥ प्रियं दुग्धं न काम्यमजामि जाम्योः सचा । घर्मो न वाजजठ-
रोऽदब्धः शश्वतो दभः ॥ ४ ॥ क्रीळन्नो रश्म आ भुवः सं भस्मना वायुना वे-
विदानः । ता अस्य सन्धृषजो न तिग्माः सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः ॥५॥११॥

॥ २० ॥ १-४ प्रयस्वन्त आत्रेय ऋषयः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,
३ विराडनुष्टुप् । २ निचृदनुष्टुप् । ४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—३ गान्धारः । ४ पञ्चमः ॥

॥ २० ॥ यमग्ने वाजसातम त्वं चिन्मन्यसे रयिम् । तं नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम् ॥ १ ॥ ये अग्ने नेरयन्ति ते वृद्धा उग्रस्य शवसः । अप द्वेषो अप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिरे ॥ २ ॥ होतारं त्वा वृणीमहेऽग्ने दक्षस्य साधनम् । यज्ञेषु पूर्व्यं गिरा प्रयस्वन्तो हवामहे ॥ ३ । इत्था यथा त ऊतये सहसावन्दिवेदिवे । राय ऋताय सुक्रतो गोभिः ष्याम सधमादो वीरैः स्याम सधमादः ॥ ४ ॥ १२ ॥

॥ २१ ॥ १–४ सस आत्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप् । २ भुरिगुष्णिक् । ३ स्वराडुष्णिक् । ४ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१ गान्धारः । २, ३ ऋषभः । ४ मध्यमः ॥

॥ २१ ॥ मनुष्वत्त्वा नि धीमहि मनुष्वत्समिधीमहि । अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान्देवयते यज ॥ १ ॥ त्वं हि मानुषे जनेऽग्ने सुप्रीत इध्यसे । स्रुचस्त्वा यन्त्यानुषक्सुजात सर्पिरासुते ॥ २ ॥ त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत । सपर्यन्तस्त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते ॥ ३ ॥ देवं वो देवयज्ययाग्निमीळीत मर्त्यः । समिद्धः शुक्र दीदिह्यृतस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः ॥ ४ ॥ १३ ॥

॥ २२ ॥ १—४ विश्वसामात्रेय ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप् २, ३ स्वराडुष्णिक् । ४ बृहती ॥ स्वरः—१ गान्धारः । २, ३ ऋषभः । ४ मध्यमः ॥

॥ २२ ॥ प्र विश्वसामन्नत्रिवदर्चा पावकशोचिषे । यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि ॥ १ ॥ न्य१ग्निं जातवेदसम् दधाता देवमृत्विजम् । प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः ॥ २ ॥ चिकित्विन्मनसं त्वा देवं मर्तास ऊतये । वरेण्यस्य तेऽवसइयानासो अमन्महि ॥ ३ ॥ अग्ने चिकिद्ध्य१स्य न इदं वचः सहस्य । तं त्वा सुशिप्र दम्पते स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रयः ॥ ४ ॥ १४ ॥

॥ २३ ॥ १—४ द्युम्नो विश्वचर्षणिर्ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २ निचृदनुष्टुप् । ३ विराडनुष्टुप् । ४ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–३ धैवतः । ४ पञ्चमः ॥

॥ २३ ॥ अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्य प्रासहा रयिं । विश्वा यश्चर्षणीरभ्या१सा वाजेषु सासहत् ॥ १ ॥ तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर । त्वं हि सत्यो

अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः ॥ २ ॥ विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्त-
बर्हिषः । होतारं सद्मसु प्रियं व्यन्ति वार्या पुरु ॥ ३ ॥ स हि ष्मा विश्वचर्षणिर-
भिमाति सहो दधे । अग्न एषु क्षयेष्वा रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि
॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ २४ ॥ १—४ बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबधुर्विप्रबन्धुश्च गौपायना लौपायना
वा ऋषयः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २ पूर्वार्द्धस्य साम्नी बृहत्युत्तरार्द्धस्य
भुरिग्बृहती । ३, ४ पूर्वार्द्धस्योत्तरार्द्धस्य भुरिग्बृहती ॥ मध्यमः स्वरः ॥

॥ २४ ॥ अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः । वसुरग्निर्व-
सुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः ॥ १ ॥ २ ॥ स नो बोधि श्रुधी हवमु-
रुष्या णो अघायतः समस्मात् । तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे स-
खिभ्यः ॥ ३ ॥ ४ ॥ १६ ॥

॥ २५ ॥ १–६ वसूयव आत्रेया ऋषयः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ८
निचृदनुष्टुप् । २, ५, ६, ९ अनुष्टुप् । ३, ७ विराडनुष्टुप् । ४ भुरिगुष्णिक् ।
स्वरः–१–३, ५–६ धैवतः । ४ ऋषभः ॥

॥ २५ ॥ अच्छा वो अग्निमवसे देवं गासि स नो वसुः । रासत्पुत्र ऋषू-
णामृतावा पर्षति द्विषः ॥ १ ॥ स हि सत्यो यं पूर्वे चिद्देवासश्चिद्यमीधिरे । हो-
तारं मन्द्रजिह्वमित्सुदीतिभिर्विभावसुम् ॥ २ ॥ स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च
सुमत्या । अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य ॥ ३ ॥ अग्निर्देवेषु राजत्य-
ग्निर्मर्तेष्वाविशन् । अग्निर्नो हव्यवाहनोऽग्निं धीभिः सपर्यत ॥ ४ ॥ अग्निस्तु-
विश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम् । अतूर्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे ॥ ५ ॥ १७ ॥
अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाह यो युधा नृभिः । अग्निरत्यं रघुष्यदं जेतारमपरा-
जितम् ॥ ६ ॥ यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो । महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा
उदीरते ॥ ७ ॥ तव द्युमन्तो अर्चयो ग्रावेवोच्यते बृहत् । उतो ते तन्यतुर्यथा स्वानो
अर्त त्मना दिवः ॥ ८ ॥ एवाँ अग्निं वसूयवः सहसानं ववन्दिम । स नो विश्वा
अति द्विषः पर्षन्नावेव सुक्रतुः ॥ ९ ॥ १८ ॥

॥ २६ ॥ १–६ वसूयव आत्रेया ऋषयः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ६
गायत्री । २, ३, ४, ५, ६, ८, निचृद्गायत्री । ७ विराड्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २६ ॥ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ १ ॥ तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवाँ आ वीतये वह ॥ २ ॥ वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि। अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥ ३ ॥ अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये। होतारं त्वा वृणीमहे ॥ ४ ॥ यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह। देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ ५ ॥ १६ ॥ समिधानः सहस्रजिदग्ने धर्माणि पुष्यसि। देवानां दूत उक्थ्यः ॥ ६ ॥ न्यग्निं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्ठ्यम्। दधाता देवमृत्विजम् ॥७॥ प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः। स्तृणीत बर्हिरासदे ॥ ८ ॥ एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः। देवासः सर्वया विशा ॥ ६ ॥ २० ॥

॥ २७ ॥ १—६ त्र्यरुणस्त्रैवृष्णस्त्रसदस्युश्च पौरुकुत्स्य अश्वमेधश्च भारतोऽत्रिर्वा ऋषयः ॥ १—५ अग्निः। ६ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप्। ४ निचृदनुष्टुप्। ५, ६ भुरिगुष्णिक् ॥ स्वरः—१—३ धैवतः। ४ गान्धारः। ५, ६ ऋषभः ॥

॥ २७ ॥ अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः। त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानर त्र्यरुणश्चिकेत ॥ १ ॥ यो मे शता च विंशतिं च गोनां हरी च युक्ता सुधुरा ददाति। वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानोऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म ॥ २ ॥ एवा ते अग्ने सुमतिं चकानो नविष्ठाय नवमं त्रसदस्युः। यो मे गिरस्तुविजातस्य पूर्वीर्युक्तेनाभि त्र्यरुणो गृणाति ॥ ३ ॥ यो म इति प्रवोचत्यश्वमेधाय सूरये। दद‍ृचा सनिं यते ददन्मेधामृतायते ॥ ४ ॥ यस्य मा परुषाः शतमुद्धर्षयन्त्युक्षणः। अश्वमेधस्य दानाः सोमा इव त्र्याशिरः ॥ ५ ॥ इन्द्राग्नी शतदाव्न्यश्वमेधे सुवीर्यम्। क्षत्रं धारयतं बृहद्दिवि सूर्यमिवाजरम् ॥ ६॥२१॥

॥ २८ ॥ १—६ विश्ववारात्रेयी ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्। २, ४, ५, ६ विराट् त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २८ ॥ समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत्प्रत्यङ्ङुषसमुर्विया वि भाति। एति प्राची विश्ववारा नमोभिर्देवाँ ईळाना हविषा घृताची ॥ १ ॥ समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष्कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये। विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वस्यातिथ्यमग्ने नि च धत्त इत्पुरः ॥ २ ॥ अग्ने शर्ध महते सौभगाय तव द्युम्ना-

न्युंत्तमानि सन्तु । सं जांस्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि ॥३॥ समिद्धस्य प्रमहसोऽग्ने वन्दे तव श्रियम् । वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे ॥ ४ ॥ समिद्धो अग्न आहुत देवान्यक्षि स्वध्वर । त्वं हि हव्यवाळसि ॥ ५ ॥ आ जुहोता दुवस्यताग्निं प्रयत्यध्वरे । वृणीध्वं हव्यवाहनम् ॥ ६ ॥ २२ ॥

॥ २९ ॥ १—१५ गौरिवीतिः शाक्त्य ऋषिः ॥ १—८, ९[२]—१५ इन्द्रः । ९[१] इन्द्र उशना वा देवता ॥ छन्दः—१ भुरिक् पङ्क्तिः । ८ स्वराट्पङ्क्तिः । २, ४, ७ त्रिष्टुप् । ३, ५, ६, ९, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । १२, १३, १४, १५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१, ८ पञ्चमः । २-७, ९-१५ धैवतः ॥

॥ २९ ॥ त्र्यर्यमा मनुषो देवताता त्री रोचना दिव्या धारयन्त । अर्चन्ति त्वा मरुतः पूतदक्षास्त्वमेषामृषिरिन्द्रासि धीरः ॥ १ ॥ अनु यदीं मरुतो मन्दसानमार्चन्निन्द्रं पपिवांसं सुतस्य । आदत्त वज्रमभि यदहिं हन्नपो यह्वीरसृजत्सर्तवा उ ॥ २ ॥ उत ब्रह्माणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः । तद्धि हव्यं मनुषे गा अविन्ददहन्नहिं पपिवाँ इन्द्रो अस्य ॥ ३ ॥ आद्रोदसी वितरं वि ष्कभायत्संविव्यानश्चिद्भियसे मृगं कः । जिगर्तिमिन्द्रो अपजर्गुराणः प्रति श्वसन्तमव दानवं हन् ॥ ४ ॥ अध क्रत्वा मघवन्तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम् । यत्सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीरुपरा एतशे कः ॥ ५ ॥ २३ ॥ नव यदस्य नवतिं च भोगान्त्साकं वज्रेण मघवा विवृश्चत् । अर्चन्तीन्द्रं मरुतः सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसा बाधत द्याम् ॥ ६ ॥ सखा सख्ये अपचत्तूयमग्निरस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि । त्री साकमिन्द्रो मनुषः सरांसि सुतं पिबद्वृत्रहत्याय सोमम् ॥ ७ ॥ त्री यच्छता महिषाणामघो मास्त्री सरांसि मघवा सोम्यापाः । कारं न विश्वे अह्वन्त देवा भरमिन्द्राय यदहिं जघान ॥८॥ उशना यत्सहस्यै३रयातं गृहमिन्द्र जूजुवानेभिरश्वैः । वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन देवैरवनोर्ह शुष्णम् ॥ ९ ॥ प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद्वरिवो यातवेऽकः । अनासो दस्यूँरमृणो वधेन नि दुर्योण आवृणङ्मृध्रवाचः ॥ १० ॥ २४ ॥ स्तोमासस्त्वा गौरिवीतेरवर्धन्नरन्धयो वैदथिनाय पिप्रुम् । आ त्वामृजिश्वा सख्याय चक्रे पचन्पक्तीरपिबः सोममस्य ॥ ११ ॥ नवग्वासः सुतसोमास इन्द्रं दशग्वासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः । गव्यं चिदूर्वमपिधानवन्तं तं चिन्नरः शशमाना अप व्रन् ॥ १२ ॥ कथो नु ते परि चराणि विद्वान्वीर्या मघवन्या चकर्थ । या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम

॥ १३ ॥ एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्यपरीतो जनुषा वीर्येण । या चिन्नु वज्रिन्कृणवो दधृष्वान्न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः ॥ १४ ॥ इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म । वस्त्रेव भद्रा सुकृता वसूयू रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ॥ १५ ॥ २५ ॥

॥ ३० ॥ १–१५ बभ्रुरात्रेय ऋषिः ॥ इन्द्र ऋणञ्चयश्च देवता ॥ छन्दः–१—५, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । १० विराट् त्रिष्टुप् । ७, ११, १२ त्रिष्टुप् । ६, १३ पङ्क्तिः । १४ स्वराट्पङ्क्तिः । १५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—५, ७—१२ धैवतः । ६, १३–१५ पञ्चमः ॥

॥ ३० ॥ क्व१स्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं सुखरथमीयमानं हरिभ्याम् । यो राया वज्री सुतसोममिच्छन्तदोको गन्ता पुरुहूत ऊती ॥ १ ॥ अवाचचक्षं पदमस्य सस्वरुग्रं निधातुरन्वायमिच्छन् । अपृच्छमन्याँ उत ते म आहुरिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम ॥ २ ॥ प्र नु वयं सुते या ते कृतानीन्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः । वेददविद्वाञ्छृणवच्च विद्वान्वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः ॥ ३ ॥ स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित् । अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो गवामूर्वमुस्रियाणाम् ॥ ४ ॥ परो यत्त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत् । अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद्दासपत्नीः ॥ ५ ॥ २६ ॥ तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्कं सुन्वन्त्यन्धः । अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः ॥ ६ ॥ वि षू मृधो जनुषा दानमिन्वन्नहन्गवा मघवन्त्संचकानः । अत्रा दासस्य नमुचेः शिरो यदवर्तयो मनवे गातुमिच्छन् ॥ ७ ॥ युजं हि मामकृथा आदिदिन्द्र शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् । अश्मानं चित्स्वर्यं१ वर्तमानं प्र चक्रियेव रोदसी मरुद्भ्यः ॥ ८ ॥ स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे किं मा करन्नबला अस्य सेनाः । अन्तर्ह्यख्यदुभे अस्य धेने अथोप प्रैद्युधये दस्युमिन्द्रः ॥ ९ ॥ समत्र गावोऽभितोऽनवन्तेहेह वत्सैर्वियुता यदासन् । सं ता इन्द्रो असृजदस्य शाकैर्यदीं सोमासः सुषुता अमन्दन् ॥ १० ॥ २७ ॥ यदीं सोमा बभ्रुधूता अमन्दन्नरोरवीद्वृषभः सादनेषु । पुरन्दरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर्गवामददादुस्रियाणाम् ॥ ११ ॥ भद्रमिदं रुशमा अग्ने अक्रन्गवां चत्वारि ददतः सहस्रा । ऋणञ्चयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम् ॥ १२ ॥ सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रै रुशमासो अग्ने । तीव्रा इन्द्रममन्दुः सु-

तासोऽक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः ॥ १३ ॥ औच्छत्सा रात्री परितक्म्या याँ ऋणञ्चये राजनि रुशमानाम् । अत्यो न वाजी रघुरज्यमानो बभ्रुश्चत्वार्यसनत्सहस्रा ॥ १४ ॥ चतुःसहस्रं गव्यस्य पश्वः प्रत्यग्रभीष्म रुशमेष्वग्ने । घर्मश्चित्तप्तः प्रवृजे य आसीदयस्मयस्तम्वादाम विप्राः ॥ १५ ॥ २८ ॥

॥ ३१ ॥ १—१३ अवस्युरात्रेय ऋषिः ॥ १—८, १०-१३ इन्द्रः । ८, इन्द्रः कुत्सो वा । ८, इन्द्र उशना वा । ९ इन्द्रः कुत्सश्च देवता ॥ छन्दः—१, २, ५, ७, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ४, ६, १० त्रिष्टुप् । १३ विराट्त्रिष्टुप् । ८, १२ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-७, ९-११, १३ धैवतः । ८, १२ पञ्चमः ॥

॥ ३१ ॥ इन्द्रो रथाय प्रवतं कृणोति यमध्यस्थान्मघवा वाजयन्तम् । यूथेव पश्वो व्युनोति गोपा अरिष्टो याति प्रथमः सिषासन् ॥ १ ॥ आ प्र द्रव हरिवो मा वि वेनः पिशङ्गराते अभि नः सचस्व । नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्त्यमेनांश्चिज्जनिवतश्चकर्थ ॥ २ ॥ उद्यत्सहः सहस आजनिष्ट देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा । प्राचोदयत्सुदुघा वव्रे अन्तर्वि ज्योतिषा संववृत्वत्तमोऽवः ॥ ३ ॥ अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् । ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ ॥ ४ ॥ वृष्णे यत्ते वृषणो अर्कमर्चानिन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोषाः । अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेषिता अभ्यवर्तन्त दस्यून् ॥ ५ ॥ २९ ॥ प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन्या चकर्थ । शक्तीवो यद्विभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनवे दानुचित्राः ॥ ६ ॥ तदिन्नु ते करणं दस्म विप्राहिं यद्घ्नन्नोजो अत्रामिमीथाः । शुष्णस्य चित्परि माया अगृभ्णाः प्रपित्वं यन्नप दस्यूरसेधः ॥७॥ त्वमपो यदवे तुर्वशायारमयः सुदुघाः पार इन्द्र । उग्रमयातमवहो ह कुत्सं सं ह यद्वामुशनारन्त देवाः ॥ ८ ॥ इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेना वामत्या अपि कर्णे वहन्तु । निः षीमद्भ्यो धमथो निः षधस्थान्मघोनो हृदो वरथस्तमांसि ॥ ९ ॥ वातस्य युक्तान्त्सुयुजश्चिदश्वान्कविश्चिदेषो अजगन्नवस्युः । विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीमवर्धन् ॥ १० ॥ ३० ॥ सूरश्चिद्रथं परितक्म्यायां पूर्वं करदुपरं जूजुवांसम् । भरच्चक्रमेतशः सं रिणाति पुरो दधत्सनिष्यति क्रतुं नः ॥ ११ ॥ आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन् । वदन्ग्रावाव वेदिं भ्रियाते यस्य

जीरमध्वर्यवश्चरन्ति ॥ १२ ॥ ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मर्ता अमृत मो ते अंह आरन् । वावन्धि यज्यूँरुत तेषु धेह्योजो जनेषु येषु ते स्याम ॥ १३ ॥ ३१ ॥

॥ ३२ ॥ १-१२ गातुरात्रेय ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ७, ६, ११ त्रिष्टुप् । २, ३, ४, १०, १२ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ८ स्वराट् पङ्क्तिः । ६ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-४, ७, ६-१२ धैवतः । ५, ६, ८ पञ्चमः ॥

॥ ३२ ॥ अदर्दरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान्बद्बधानाँ अरम्णाः । महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजो वि धारा अव दानवं हन् ॥ १ ॥ त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्बधानाँ अरंह ऊधः पर्वतस्य वज्रिन् । अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वाँ इन्द्र तविषीमधत्थाः ॥ २ ॥ त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वधर्जघान तविषीभिरिन्द्रः । य एक इदप्रतिर्मन्यमान आदस्मादन्यो अजनिष्ट तव्यान् ॥ ३ ॥ त्यं चिदेषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम् । वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम् ॥ ४ ॥ त्यं चिदस्य क्रतुभिर्निषत्तममर्मणो विददिदस्य मर्म । यदीं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये धाः ॥ ५ ॥ त्यं चिदित्था कत्पयं शयानमसूर्ये तमसि वावृधानम् । तं चिन्मन्दानो वृषभः सुतस्योच्चैरिन्द्रो अपगूर्या जघान ॥ ६ ॥ ३२ ॥ उद्यदिन्द्रो महते दानवाय वधर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम् । यदीं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोरधमं चकार ॥ ७ ॥ त्यं चिदर्णं मधुपं शयानमसिन्वं वव्रं मह्याददुग्रः । अपादमत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणङ्मृध्रवाचम् ॥ ८ ॥ को अस्य शुष्मं तविषीं वरात एको धना भरते अप्रतीतः । इमे चिदस्य ज्रयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते ॥ ६ ॥ न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुशतीव येमे । सं यदोजो युवते विश्वमाभिरनु स्वधाव्ने क्षितयो नमन्त ॥ १० ॥ एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु । तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं दोषावस्तोर्हवमानास इन्द्रम् ॥ ११ ॥ एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि । किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निदधुः काममिन्द्र ॥ १२ ॥ ३३ ॥ १ ॥ २ ॥

॥ ३३ ॥ १—१० संवरणः प्राजापत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, २, ७ पङ्क्तिः । ३ निचृत्पङ्क्तिः । ४, १० भुरिक्पङ्क्तिः । ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः । ८ त्रिष्टुप् । ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः— १—७, १० पञ्चमः । ८, ६ धैवतः ॥

॥ ३३ ॥ महिं महे तवसें दीध्ये नृनिन्द्रांयेत्था तवसे अतंव्यान्। यो अस्मै
सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जनें समर्यश्चिकेत ॥ १ ॥ स त्वं न इन्द्र धियसानो अर्कै-
र्हरीणां वृषन्योक्त्रमश्रेः। या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षों अभि प्रार्यः सक्षि जनान्
॥ २ ॥ न ते त इन्द्राभ्य१स्मदृष्वायुक्तासो अब्रह्मता यदसंन्। तिष्ठा रथमधि
तं वज्रहस्ता रश्मिं देव यमसे स्वश्वः ॥ ३ ॥ पुरु यत्त इन्द्र सन्त्युक्था गवे च-
कर्थोर्वरासु युध्यन्। ततक्षे सूर्याय चिदोकसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित्
॥ ४ ॥ वयं ते त इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना याताश्च रथाः। आस्माञ्जगम्या-
दहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभृथेषु चारुः ॥ ५ ॥ १ ॥ पपृक्षेण्यमिन्द्र त्वे
ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः। स न एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे
तुविमघस्य दानम् ॥ ६ ॥ एवा न इन्द्रोतिभिरव पाहि गृणतः शूर कारून्। उत
त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुषुतस्य चारोः ॥ ७ ॥ उत त्ये मा पौ-
रुकुत्स्यस्य सूरेस्त्रसदस्योर्हिरणिनो रराणाः। वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य
गैरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु सश्चे ॥ ८ ॥ उत त्ये मा मारुताश्वस्य शोणाः क्रत्वाम-
घासो विदथस्य रातौ। सहस्रा मे च्यवतानो ददान आनूकमर्यो वपुषे नार्चत्
॥ ९ ॥ उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः। मह्ना रायः सं-
वरणस्य ऋषेर्व्रजं न गावः प्रयता अपि ग्मन् ॥ १० ॥ २ ॥

॥ ३४ ॥ १–९ संवरणः प्राजापत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ भुरिक्
त्रिष्टुप्। ६, ९, त्रिष्टुप्। २, ४, ५ निचृज्जगती। ३, ७, जगती। ८ विराड्जगती॥
स्वरः–१, ६, ९ धैवतः। २–५, ७, ८ निषादः ॥

॥ ३४ ॥ अजातशत्रुमजरा स्वर्वत्यनु स्वधामिता दस्ममीयते। सुनोतन प-
चत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुताय प्रतरं दधातन ॥ १ ॥ आ यः सोमेन जठरमपिप्रतामं-
न्दत मघवा मध्वो अन्धसः। यदीं मृगाय हन्तवे महावधः सहस्रभृष्टिमुशना वधं
यमत् ॥ २ ॥ यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अह।
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः ॥ ३ ॥ यस्यावधीत्पित-
रं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते। वेतीद्वस्य प्रयता यतङ्करो न किल्बिषा-
दीषते वस्व आकरः ॥ ४ ॥ न पञ्चभिर्दशभिर्वष्ट्यारभं नासुन्वता सचते पुष्यता
चन। जिनाति वेदमुया हन्ति वा धुनिरा देवयुं भजति गोमति व्रजे ॥ ५ ॥ ३ ॥
त्रित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजोऽसुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः। इन्द्रो विश्वस्य

दमिता विभीषणो यथावशंनयति दासमार्यः ॥ ६ ॥ समीं पणेरजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु । दुर्गे चन ध्रियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविषीमचुक्रुधत् ॥ ७ ॥ सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसाववेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभ्रिषु । युजं ह्यन्यमकृत प्रवेपन्युदीं गव्यं सृजते सत्वभिर्धुनिः ॥ ८ ॥ सहस्रसामाग्निवेशिं गृणीषे शत्रिमग्न उपमां केतुमर्यः । तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन्क्षत्रममवत्त्वेषमस्तु ॥ ९ ॥ ४ ॥

॥ ३५ ॥ १-८ प्रभूवसुराङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप् । ३ भुरिगनुष्टुप् । ७ अनुष्टुप् । २ भुरिगुष्णिक् । ४, ५, ६, स्वराडुष्णिक् । ८ भुरिग्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ७ गान्धारः । २, ४—६ ऋषभः । ८ मध्यमः ॥

॥ ३५ ॥ यस्ते साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर । अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दुष्टरम् ॥ १ ॥ यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूर सन्ति तिस्रः । यद्वा पञ्च क्षितीनामवस्तत्सु न आ भर ॥ २ ॥ आ तेऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे । वृषजूतिर्हि जज्ञिष आभूभिरिन्द्र तुर्वणिः ॥ ३ ॥ वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शवः । स्वक्षत्रं ते धृषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम् ॥ ४ ॥ त्वं तमिन्द्र मर्त्यममित्रयन्तमद्रिवः । सर्वरथा शतक्रतो नि याहि शवसस्पते ॥ ५ ॥ ५ ॥ त्वामिद्वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः । उग्रं पूर्वीषु पूर्व्यं हवन्ते वाजसातये ॥ ६ ॥ अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु । सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम् ॥ ७ ॥ अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरन्ध्या । वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे ॥ ८ ॥ ६ ॥

॥ ३६ ॥ १—६ प्रभूवसुराङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ६ त्रिष्टुप् । ३ जगती ॥ स्वरः—१, २, ४—६ धैवतः । ३ निषादः ॥

॥ ३६ ॥ स आ गमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतद्दातुं दामनो रयीणाम् । धन्वचरो न वंसगस्तृषाणश्चकमानः पिबतु दुग्धमंशुम् ॥ १ ॥ आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत्सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे । अनु त्वा राजन्नर्वतो न हिन्वन् गीर्भिर्मदेम पुरुहूत विश्वे ॥ २ ॥ चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते मनो भिया मे अमतेरिदद्रिवः । रथादधि त्वा जरिता सदावृध कुविन्नु स्तोषन्मघवन्पुरूवसुः ॥ ३ ॥ एष ग्रावेव

जरिता तं इन्द्रेयर्ति वाचं बृहदांशुषाणः । प्र सव्येनं मघवन्यंसि रायः प्र दक्षि-
णिद्धरिवो मा वि वेनः ॥ ४ ॥ वृषां त्वा वृषणं वर्धतु द्यौर्वृषा वृषभ्यां वहसे ह-
रिभ्याम् । स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषां वज्रिन्भरे धाः ॥ ५ ॥ यो रो-
हितौ वाजिनौ वाजिनीवान्त्रिभिः शतैः सचमानावदिष्ट । यूने समस्मै क्षितयो नमन्ता
श्रुतरथाय मरुतो दुवोया ॥ ६ ॥ ७ ॥

॥ ३७ ॥ १—५ अत्रिर्ऋषिः ॥ इन्द्रोदेवता ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः ।
२ विराट्त्रिष्टुप् । ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ पञ्चमः । २–५ धैवतः॥

॥ ३७ ॥ सं भानुना यतते सूर्यस्याजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चाः । तस्मा अमृध्रा
उषसो व्युच्छान्य इन्द्राय सुनवामेत्याह ॥ १ ॥ समिद्धाग्निर्वनवत्स्तीर्णबर्हिर्युक्त-
ग्रावा सुतसोमो जराते । ग्रावाणो यस्येषिरं वदन्त्ययदध्वर्युर्हविषाव सिन्धुम् ॥२॥
वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहाते महिषीमिषिराम् । आस्य श्रवस्याद्रथ आ
च घोषात्पुरू सहस्रा परि वर्तयाते ॥ ३ ॥ न स राजा व्यथते यस्मिन्निन्द्रस्तीव्रं
सोमं पिबति गोसखायम् । आ सत्वनैरजति हन्ति वृत्रं क्षेति क्षितीः सुभगो नाम
पुष्यन् ॥ ४ ॥ पुष्यात्क्षेमे अभि योगे भवात्युभे वृतौ संयती सं जयाति । प्रियः
सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति य इन्द्राय सुतसोमो ददाशत् ॥ ५ ॥ ८ ॥

॥ ३८ ॥ १—५ अत्रिर्ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप् । २, ३,
४ निचृदनुष्टुप् । ५ विराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ३८ ॥ उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो । अधा नो विश्व-
चर्षणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय ॥ १ ॥ यदीमिन्द्र श्रवाय्यमिषं शविष्ठ दधिषे । पप्रथे
दीर्घश्रुत्तमं हिरण्यवर्ण दुष्टरम् ॥ २ ॥ शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः
उभा देवावभिष्टये दिवश्च ग्मश्च राजथः ॥ ३ ॥ उतो नो अस्य कस्य चिद्दक्षस्य
तव वृत्रहन् । अस्मभ्यं नृम्णमा भरास्मभ्यं नृमणस्यसे ॥ ४ ॥ नू त आभिरभि-
ष्टिभिस्तव शर्मञ्छतक्रतो । इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः ॥ ५ ॥ ६ ।

॥ ३६ ॥ १—५ अत्रिर्ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप् ।
२, ३ निचृदनुष्टुप् । ४ स्वराडुष्णिक् । ५ बृहती ॥ स्वरः—१–३ गान्धारः । ४
ऋषभः । ५ मध्यमः ॥

॥ ३६ ॥ यदिन्द्र चित्र मेहनास्ति त्वादातमद्रिवः । राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ॥ १ ॥ यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर । विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावने ॥ २ ॥ यत्ते दित्सु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् । तेन दृळ्हा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये ॥ ३ ॥ मंहिष्ठं वो मघोनां राजानं चर्षणीनाम् । इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः ॥ ४ ॥ अस्मा इत्काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम् । तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ ४० ॥ १—६ अत्रिर्ऋषिः ॥ १—४ इन्द्रः । ५ सूर्यः । ६-६ अत्रिर्देवता ॥ छन्दः—१ निचृदुष्णिक् । २, ३ उष्णिक् । ६ स्वराडुष्णिक् । ४ त्रिष्टुप् । ५, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । ७ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—३, ६ ऋषभः । ४—६, ८ धैवतः । ७ पञ्चमः ॥

॥ ४० ॥ आ याह्यद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम ॥ १ ॥ वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम ॥ २ ॥ वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम ॥ ३ ॥ ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाट्छुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा । युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ्माध्यन्दिने सवने मत्सदिन्द्रः ॥ ४ ॥ यत्त्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः । अक्षेत्रविद्यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः ॥ ५ ॥ ११ ॥ स्वर्भानोरध यदिन्द्र माया अवो दिवो वर्तमाना अवाहन् । गूळ्हं सूर्यं तमसापव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणाविन्ददत्रिः ॥ ६ ॥ मा मामिमं तव सन्तमत्र इरस्या द्रुग्धो भियसा नि गारीत् । त्वं मित्रो असि सत्यराधास्तौ मेहावतं वरुणश्च राजा ॥ ७ ॥ ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः सपर्यन् कीरिणा देवान्नमसोपशिक्षन् । अत्रिः सूर्यस्य दिवि चक्षुराधात्स्वर्भानोरप माया अघुक्षत् ॥ ८ ॥ यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः । अत्रयस्तमन्वविन्दन्नह्यन्ये अशक्नुवन् ॥ ६ ॥ १२ ॥

॥ ४१ ॥ १—२० अत्रिर्ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, २, ६, १५, १८ त्रिष्टुप् । ४, १३ विराट्त्रिष्टुप् । ३, ७, ८, १४, १६ पङ्क्तिः । ५, ६, १०, ११, १२ भुरिक्पङ्क्तिः । २० याजुषी पङ्क्तिः । १६ जगती । १७ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, २, ४, ६, १३, १५, १८ धैवतः । ३, ५, ७—१२, १४, १६, २० पञ्चमः । १६, १७ निषादः ॥

॥ ४१ ॥ को नु वां मित्रावरुणावृतायन्दिवो वां महः पार्थिवस्य वा दे ।
ऋतस्य वा सदसि त्रासीथां नो यज्ञायते वां पशुषो न वाजान् ॥ १ ॥ ते नो
मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त । नमोभिर्वा ये दधते सुवृक्तिं
स्तोमं रुद्राय मीळ्हुषे सजोषाः ॥ २ ॥ आ वां येष्ठाश्विना हुवध्यै वातस्य
पत्मन्रथ्यस्य पुष्टौ । उत वा दिवो असुराय मन्म प्रान्धांसीव यज्यवे भरध्वम्
॥ ३ ॥ प्र सक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः । पूषा
भगः प्रभृथे विश्वभोजा आजिं न जग्मुराश्वश्वतमाः ॥ ४ ॥ प्र वो रयिं युक्ता-
श्वं भरध्वं राय एषेऽवसे दधीत धीः । सुशेव एवैरौशिजस्य होता ये व एवा
मरुतस्तुराणाम् ॥ ५ ॥ १३ ॥ प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्र देवं विप्रं पनिता-
रमर्कैः । इषुध्यव ऋतसापः पुरंधीर्वस्वीर्नो अत्र पत्नीरा धिये धुः ॥ ६ ॥ उप
व एषे वन्द्येभिः शूषैः प्र यह्वी दिवश्चितयद्भिरर्कैः । उषासानक्ता विदुषीव वि-
श्वमा हा वहतो मर्त्याय यज्ञम् ॥ ७ ॥ अभि वो अर्चे पोष्यावतो नॄन्वास्तोष्पतिं
त्वष्टारं रराणः । धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतीँरोषधी राय एषे ॥ ८ ॥
तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः । पनित आप्त्यो यजतः
सदा नो वर्धान्नः शंसं नर्यो अभिष्टौ ॥ ९ ॥ वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं त्रितो
नपातमपां सुवृक्ति । गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः शोचिष्केशो नि रिणाति वना
॥ १० ॥ १४ ॥ कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम कद्राये चिकितुषे भगाय । आप
ओषधीरुत नोऽवन्तु द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः ॥ ११ ॥ शृणोतु न ऊर्जां प-
तिर्गिरः स नभस्तरीयाँ इषिरः परिज्मा । शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्राः परि
स्रुचो बबृहाणस्याद्रेः ॥ १२ ॥ विदा चिन्नु महान्तो ये व एवा ब्रवाम दस्मा वार्यं
दधानाः । वयश्चन सुभ्व१ आव यन्ति क्षुभा मर्तमनुयतं वधस्नैः ॥ १३ ॥
॥ १४ ॥ आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्मापश्चाच्छा सुमखाय वोचम् । वर्धन्तां
द्यावो गिरश्चन्द्राग्रा उदा वर्धन्तामभिषाता अर्णाः ॥ १४ ॥ पदेपदे मे जरिमा नि
धायि वरूत्री वा शक्रा या पायुभिश्च । सिषक्तु माता मही रसा नः स्मत्सूरि-
भिरृजुहस्त ऋजुवनिः ॥ १५ ॥ १५ ॥ कथा दाशेम नमसा सुदानूनेवया मरु-
तो अच्छोक्तौ प्रश्रवसो मरुतो अच्छोक्तौ । मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धादस्माकं भू-
दुपमातिवनिः ॥ १६ ॥ इति चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै देवासो वनते मर्त्यो व आ
देवासो वनते मर्त्यो वः । अत्रा शिवां तन्वो धासिमस्या जरां चिन्मे निर्ऋतिर्ज-
ग्रसीत ॥ १७ ॥ तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्तीमिषमश्याम वसवः शसा गोः ।

सा नः सुदानुर्मृळयन्ती देवी प्रति द्रवन्ती सुविताय गम्याः ॥ १८ ॥ अभि न इळा यूथस्य माता स्मन्नदीभिरुर्वशी वा गृणातु । उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणानाभ्यूर्ण्वाना प्रभृथस्यायोः ॥ १९ ॥ सिषक्तु न ऊर्जव्यस्य पुष्टेः ॥ २० ॥ १६ ॥

॥ ४२ ॥ १-१८ अत्रिर्ऋषिः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, ४, ६, ११, १२, १५, १६, १८ निचृत्त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ५, ७, ८, ९, १३, १४ त्रिष्टुप् । १७ याजुषी पङ्क्तिः । १० भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९ ११—१६, १८ धैवतः । १०, १७ पञ्चमः ॥

॥ ४२ ॥ प्र शन्तमा वरुणं दीधिती गीर्मित्रं भगमदितिं नूनमश्याः । पृषद्योनिः पञ्चहोता शृणोत्वतूर्तपन्था असुरो मयोभुः ॥ १ ॥ प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात्सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम् । ब्रह्म प्रियं देवहितं यदस्त्यहं मित्रे वरुणे यन्मयोभु ॥ २ ॥ उदीरय कवितमं कवीनामुनत्तैनमभि मध्वा घृतेन । स नो वसूनि प्रयता हितानि चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ॥ ३ ॥ समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सं सूरिभिर्हरिवः सं स्वस्ति । सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमत्या यज्ञियानाम् ॥ ४ ॥ देवो भगः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य सञ्जितो धनानाम् । ऋभुक्षा वाज उत वा पुरन्धिरवन्तु नो अमृतासस्तुरासः ॥५॥ १७ ॥ मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णोरजूर्यतः प्र ब्रवामा कृतानि । न ते पूर्वे मघवन्नापरासो न वीर्यं नूतनः कश्चनाप ॥ ६ ॥ उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं बृहस्पतिं सनितारं धनानाम् । यः शंसते स्तुवते शम्भविष्ठः पुरूवसुरागमज्जोहुवानम् ॥ ७ ॥ तवोतिभिः सचमाना अरिष्टा बृहस्पते मघवानः सुवीराः । ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्त्रदाः सुभगास्तेषु रायः ॥ ८ ॥ विसर्माणं कृणुहि वित्तमेषां ये भुञ्जते अपृणन्तो न उक्थैः । अपव्रतान्प्रसवे वावृधानान्ब्रह्मद्विषः सूर्याद्यावयस्व ॥ ९ ॥ य ओहते रक्षसो देववीतावचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात । यो वः शमीं शशमानस्य निन्दात्तुच्छ्यान्कामान्करते सिष्विदानः ॥ १० ॥ १८ ॥ तमु ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य । यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य ॥ ११ ॥ दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्वतष्टाः । सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः ॥ १२ ॥ प्र सू महे सुशरणाय मेधां गिरं भरे नव्यसीं जायमानाम् । य आहना दुहितुर्वक्षणासु रूपा मिनानो अकृणोदिदं नः ॥ १३ ॥ प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुवन्तमि-

ळस्पतिं जरितर्नूनमश्याः । यो अब्दिमाँ उदनिमाँ इयर्ति प्र विद्युता रोदसी उक्ष-
माणः ॥ १४ ॥ एष स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूँर्युवन्यूँरुदश्याः ।
कामो राये हवते मा स्वस्त्युप स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः ॥ १५ ॥ प्रैष स्तोमः पृ-
थिवीमन्तरिक्षं वनस्पतीँरोषधी राये अश्याः । देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो
माता पृथिवी दुर्मतौ धात् ॥ १६ ॥ उरौ देवा अनिबाधे स्याम ॥ १७ ॥ समश्वि-
नोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम । आ नो रयिं वहतमोत वीराना
विश्वान्यमृता सौभगानि ॥ १८ ॥ १६ ॥

॥ ४३ ॥ १–१७ अत्रिर्ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ३, ६,
८, ६, १७ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४, ५, १० ११, १२, १५ त्रिष्टुप् । ७, १३ वि-
राट्त्रिष्टुप् । १४ भुरिक्पङ्क्तिः । १६ याजुषी पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–१३, १५, १७
धैवतः । १४, १६ पञ्चमः ॥

॥ ४३ ॥ आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था अमर्धन्तीरुप नो यन्तु मध्वा । महो राये बृ-
हतीः सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति ॥१॥ आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा
वाजाय पृथिवी अमृध्रे । पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसाववि-
ष्टाम् ॥ २ ॥ अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम् । होतेव नः
प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय ॥ ३ ॥ दश क्षिपो युञ्जते बाहू अद्रिं
सोमस्य या शमितारा सुहस्ता । मध्वो रसं सुगभस्तिर्गिरिष्ठां चनिश्चदद्दुदुहे शुक्र-
मंशुः ॥ ४ ॥ असावि ते जुजुषाणाय सोमः क्रत्वे दक्षाय बृहते मदाय । हरी
रथे सुधुरा योगे अर्वागिन्द्र प्रिया कृणुहि हूयमानः ॥ ५ ॥ २० ॥ आ नो मही-
मरमतिं सजोषा ग्नां देवीं नमसा रातहव्याम् । मधोर्मदाय बृहतीमृतज्ञामाग्ने वह
पथिभिर्देवयानैः ॥ ६ ॥ अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्रा वपावन्तं नाग्निना तप-
न्तः । पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठ आ घर्मो अग्निमृतयन्नसादि ॥ ७ ॥ अच्छा मही
बृहती शन्तमा गीर्दूतो न गन्त्वश्विना हुवध्यै । मयोभुवा सरथा यातमर्वाग्गन्तं नि-
धिं धुरमाणिर्न नाभिम् ॥ ८ ॥ प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्याहं पूष्ण उत वायो-
रदिक्षि । या राधसा चोदितारा मतीनां या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन् ॥ ९ ॥
आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वाना रूपेभिर्जातवेदो हुवानः । यज्ञं गिरो जरितुः सु-
ष्टुतिं च विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती ॥ १० ॥ २१ ॥ आ नो दिवो बृहतः प-
र्वतादा सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम् । हवं देवी जुजुषाणा घृताची शग्मां नो वा-

सुशती शृणोतु ॥ ११ ॥ आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं सदने सादयध्वम् । सा-
द्योनिं दम आ दीदिवांसं हिरण्यवर्णमरुषं सपेम ॥ १२ ॥ आ धर्णसिर्बृहद्दिवो
रराणो विश्वेभिर्गन्त्वोमभिर्हुवानः । ग्ना वसान ओषधीरमृध्रस्त्रिधातुशृङ्गो वृषभो
वयोधाः ॥ १३ ॥ मातुष्पदे परमे शुक्र आयोर्विपन्यवो रास्पिरासो अग्मन् । सु-
शेव्यं नमसा रातहव्याः शिशुं मृजन्त्यायवो न वासे ॥ १४ ॥ बृहद्वयो बृहते तु-
भ्यमग्ने धियाजुरो मिथुनासः सचन्त । देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृ-
थिवी दुर्मतौ धात् ॥ १५ ॥ उरौ देवा अनिबाधे स्याम ॥ १६ ॥ समश्विनोरव-
सा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम । आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वा-
न्यमृता सौभगानि ॥ १७ ॥ २२ ॥

॥ ४४ ॥ १–१५ अवत्सारः काश्यप अन्ये च दृष्टलिङ्गा ऋषयः ॥ वि-
श्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः–१, १३ विराड्जगती । २, ३, ४, ५, ६ निचृज्जगती
८, ९, १२ जगती । ७ भुरिक् त्रिष्टुप् । १०, ११ स्वराट्त्रिष्टुप् । १४ विराट्
त्रिष्टुप् । १५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–६, ८, ९, १२, १३ निषादः । ७, १०, ११,
१४, १५ धैवतः ॥

॥ ४४ ॥ तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदम् । प्रती-
चीनं वृजनं दोहसे गिराशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे ॥ १ ॥ श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः
स्वर्विरोचमानः ककुभामचोदते । सुगोपा असि न दभाय सुक्रतो परो मायाभि-
र्ऋत आस नाम ते ॥ २ ॥ अत्यं हविः सचते सच्च धातु चारिष्टगातुः स होता
सहोभरिः । प्रसर्स्राणो अनु बर्हिर्वृषा शिशुर्मध्ये युवाजरो विस्रुहा हितः ॥ ३ ॥
प्र व एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीरमुष्मै यम्य ऋतावृधः । सुयन्तुभिः सर्वशासैर-
भीशुभिः क्रिविर्नामानि प्रवणे मुषायति ॥ ४ ॥ सञ्जर्भुराणस्तरुभिः सुतेगृभं वयाकिनं
चित्तगर्भासु सुस्वरुः । धारवाकेष्वृजुगाथ शोभसे वर्धस्व पत्नीरभि जीवो अध्वरे
॥ ५ ॥ २३ ॥ यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते सं छायया दधिरे सिध्रयाप्स्वा । महीमस्मभ्य-
मुरुषामुरु ज्रयो बृहत्सुवीरमनपच्युतं सहः ॥ ६ ॥ वेत्यग्रुर्जनिवान्वा अति स्पृधः
समर्यता मनसा सूर्यः कविः । घ्रंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गयमस्माकं शर्म वनत्
स्वावसुः ॥ ७ ॥ ज्यायांसमस्य यतुनस्य केतुन ऋषिस्वरं चरति यासु नाम ते ।
यादृश्मिन्धायि तमपस्यया विदद्य उ स्वयं वहते सो अरं करत् ॥ ८ ॥ समुद्रमा-
सामव तस्थे अग्रिमा न रिष्यति सवनं यस्मिन्नायता । अत्रा न हार्दि क्रवणस्य

रेजते यत्रा मतिर्विद्यते पूतबन्धनी ॥ ९ ॥ स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभिरेव
वदस्य यजतस्य सध्रेः। अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शविष्ठं वाजं विदुषा चि
दर्ध्यम् ॥ १० ॥ २४ ॥ श्येन आसामदितिः कक्ष्योः मदो विश्ववारस्य यजतस
मायिनः । समन्यमन्यमर्थयन्त्येतवे विदुर्विषाणं परिपानमन्ति ते ॥ ११ ॥ सदापृण
यजतो वि द्विषो वधीद्बाहुवृक्तः श्रुतवित्तर्यो वः सचा। उभा स वरा प्रत्येति भा
च यन्दीं गणं भजते सुप्रयावभिः ॥ १२ ॥ सुतम्भरो यजमानस्य सत्पतिर्विश्वा
सामूधः स धियामुदश्चनः । भरद्धेनू रसवच्छिश्रिये पयोऽनुब्रुवाणो अध्येति
स्वपन् ॥ १३ ॥ यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥ १४ ॥ अग्निर्जागा
तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति । अग्निर्जागार तमयं सोम आ
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥ १५ ॥ २५ ॥ ३ ॥

॥ ४५ ॥ १—११ सदापृण आत्रेय ऋषिः॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१
२ पङ्क्तिः । ५, ६, ११ भुरिक् पङ्क्तिः । ८, १० स्वराट् पङ्क्तिः । ३ विराट् त्रिष्टुप्
४, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५, ८—११ पञ्चमः । ३, ४, ६,
धैवतः ॥

॥ ४५ ॥ विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थैरायत्या उषसो अर्चिनो गुः । अप
वृत व्रजिनीरुत्स्वर्गाद्वि दुरो मानुषीर्देव आवः ॥ १ ॥ वि सूर्यो अमतिं न श्रियं स
दोर्वाद्गवां माता जानती गात् । धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थूणेव सुमित
दृंहत द्यौः ॥ २ ॥ अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्व्याय । वि
र्वतो जिहीत साधत द्यौराविवासन्तो दसयन्त भूम ॥ ३ ॥ सूक्तेभिर्वो वचोभि
वर्जुष्टैरिन्द्रा न्वग्नी अवसे हुवध्यै। उक्थेभिर्हि ष्मा कवयः सुयज्ञा आविवासन्
मरुतो यजन्ति ॥ ४ ॥ एतो न्वद्य सुध्यो भवाम प्र दुच्छुना मिनवामा वरीयः
आरे द्वेषांसि सनुतर्दधामायाम प्राञ्चो यजमानमच्छ ॥ ५ ॥ २६ ॥ एता धियं कृ
णवामा सखायोऽप या माताँ ऋणुत व्रजं गोः। यया मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वणि
ग्वङ्कुरापा पुरीषम् ॥ ६ ॥ अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रिरार्चन्येन दश मासो नवग्वाः
ऋतं यती सरमा गा अविन्दद्विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार ॥ ७ ॥ विश्वे अस्या
व्युषि माहिनायाः सं यद्गोभिरङ्गिरसो नवन्त । उत्स आसां परमे सधस्थ ऋतस
पथा सरमा विदद्गाः ॥ ८ ॥ आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घ

ग्रथे । रघुः श्येनः पतयदन्धो अच्छा युवा कविर्दीदयद्गोषु गच्छन् ॥ ६ ॥ आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णोऽयुक्त यद्धरितो वीतपृष्ठाः । उद्ना न नावमनयन्त धीरा आशृण्वतीरापो अर्वागतिष्ठन् ॥ १० ॥ धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षां ययातरन्दश मासो नवग्वाः । अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः ॥ ११ ॥ २७ ॥

॥ ४६ ॥ १-८ प्रतिक्षत्र आत्रेय ऋषिः ॥ १—६ विश्वे देवाः । ७, ८ देवपत्न्यो देवताः ॥ छन्दः—१ भुरिग्जगती । ३, ५, ६ निचृज्जगती । ४, ७ जगती । २, ८ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः १, ३, ४-७ निषादः । २, ८ पञ्चमः ॥

॥ ४६ ॥ हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम् । नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान्पथः पुरएत ऋजु नेषति ॥ १ ॥ अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो । उभा नासत्या रुद्रो अध ग्नाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त ॥ २ ॥ इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ अपः । हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये ॥ ३ ॥ उत नो विष्णुरुत वातो अस्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत् । उत ऋभव उत राये नो अश्विनोत त्वष्टोत विभ्वानु मंसते ॥ ४ ॥ उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद्दिविक्षयं यजतं बर्हिरासदे । बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद्वरूथ्यं वरुणो मित्रो अर्यमा ॥ ५ ॥ उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस्त्रामणे भुवन् । भगो विभक्ता शवसावसा गमदुरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम् ॥ ६ ॥ देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये । याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत ॥ ७ ॥ उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्यग्नाय्यश्विनीराट् । आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम् ॥ ८ ॥ २८ ॥ २ ॥

॥ ४७ ॥ १-७ प्रतिरथ आत्रेय ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, २, ३, ७, त्रिष्टुप् । ४ भुरिक्त्रिष्टुप् । ६ विराट्त्रिष्टुप् । ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६, ७ धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ ४७ ॥ प्रयुञ्जती दिव एति ब्रुवाणा मही माता दुहितुर्बोधयन्ती । आविवासन्ती युवतिर्मनीषा पितृभ्य आ सदने जोहुवाना ॥ १ ॥ अजिरासस्तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम् । अनन्तास उरवो विश्वतः सीं परि द्या-

द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः ॥ २ ॥ उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुर
विवेश । मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ॥ ३ ॥ च
त्वार ईं बिभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते । त्रिधातवः परमा अस्य गा
दिवश्चरन्ति परि सद्यो अन्तान् ॥ ४ ॥ इदं वपुर्निवचनं जनासश्चरन्ति यन्नद्यस्त
स्थुरापः । द्वे यदीं बिभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्या३ सबन्धू ॥ ५ ॥ वि तन्व
ते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति । उपप्रक्षे वृषणो मोदमान
दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ ॥ ६ ॥ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिद
मस्तु शस्तम् । अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय ॥ ७ ॥१

॥ ४८ ॥ १–५ प्रतिभानुरात्रेय ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः–१
३ स्वराट् त्रिष्टुप् । २, ४, ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, ३ धैवतः । २, ४
५ निषादः ॥

॥ ४८ ॥ कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वक्षत्राय स्वयशसे महे वयम् । आ
मेन्यस्य रजसो यदभ्र आँ अपो वृणाना वितनोति मायिनी ॥ १ ॥ ता अत्न
वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः । अपो अपाचीरपरा अपेज
प्र पूर्वाभिस्तिरते देवयुर्जनः ॥ २ ॥ आ ग्रावभिरहन्येभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जि
घर्ति मायिनि । शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा ॥ ३
तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमख्यं भुजे अस्य वर्पसः । सचा यदि पितुम
न्तमिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे ॥ ४ ॥ स जिह्वया चतुरनीक ऋञ्ज
चारु वसानो वरुणो यतन्नरिम् । न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयं यतो भगः सवित
दाति वार्यम् ॥ ५ ॥ २ ॥

॥ ४६ ॥ १–५ प्रतिप्रभ आत्रेय ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः–१
२, ४ भुरिक्त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—४ धै
वतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ ४६ ॥ देवं वो अद्य सवितारमेषे भगं च रत्नं विभजन्तमायोः । आ व
नरा पुरुभुजा ववृत्यां दिवेदिवे चिदश्विना सखीयन् ॥ १ ॥ प्रति प्रयाणमसु
रस्य विद्वान्त्सूक्तैर्देवं सवितारं दुवस्य । उप ब्रुवीत नमसा विजानञ्ज्येष्ठं
रत्नं विभजन्तमायोः ॥ २ ॥ अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर्वस

उस्रः । इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रो अग्निरहानि भद्रा जनयन्त दस्माः ॥ ३ ॥ तन्नो अनर्वा सविता वरूथं तत्सिन्धव इषयन्तो अनु ग्मन् । उप यद्वोचे अध्वरस्य होता रायः स्याम पतयो वाजरत्नाः ॥ ४ ॥ प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुर्ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः । अवैत्वभ्वं कृणुता वरीयो दिवस्पृथिव्योरवसा मदेम ॥ ५ ॥ ३ ॥

॥ ५० ॥ १–५ स्वस्त्यात्रेय ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः–१ स्वराडुष्णिक् । २ निचृदुष्णिक् । ३ भुरिगुष्णिक् । ४, ५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः–१—३ ऋषभः । ४, ५ धैवतः ॥

॥ ५० ॥ विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् । विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे ॥ १ ॥ ते ते देव नेतर्ये चेमाँ अनुशसे । ते राया ते ह्या३पृचे सचेमहि सचथ्यैः ॥ २ ॥ अतो न आ नॄनतिथीनतः पत्नीर्दशस्यत । आरे विश्वं पथेष्ठां द्विषो युयोतु यूयुविः ॥ ३ ॥ यत्र वह्निरभिहितो दुद्रवद्द्रोण्यः पशुः । नृमणा वीरपस्त्योऽर्णा धीरेव सनिता ॥ ४ ॥ एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रयिः । शं राये शं स्वस्तय इषः स्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे ॥ ५ ॥ ४ ॥

॥ ५१ ॥ १–१५ स्वस्त्यात्रेय ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः–१ गायत्री । २, ३, ४ निचृद्गायत्री । ५, ८, ९, १० निचृदुष्णिक् । ६ उष्णिक् । ७ विराडुष्णिक् । ११ निचृत्त्रिष्टुप् । १२ त्रिष्टुप् । १३ पङ्क्तिः । १४, १५ अनुष्टुप् ॥ स्वरः–१–४ षड्जः । ५—१० ऋषभः । ११, १२ धैवतः । १३ पञ्चमः । १४, १५ गान्धारः ॥

॥ ५१ ॥ अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैरूमेभिरा गहि । देवेभिर्हव्यदातये ॥ १ ॥ ऋतधीतय आ गत सत्यधर्माणो अध्वरम् । अग्नेः पिबत जिह्वया ॥ २ ॥ विप्रेभिर्विप्र सन्त्य प्रातर्यावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये ॥ ३ ॥ अयं सोमश्चमू सुतोऽमत्रे परि षिच्यते । प्रिय इन्द्राय वायवे ॥ ४ ॥ वायवा याहि वीतये जुषाणो हव्यदातये । पिबा सुतस्यान्धसो अभि प्रयः ॥ ५ ॥ इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिमर्हथः । ताञ्जुषेथामरेपसावभि प्रयः ॥ ६ ॥ सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः । निम्नं न यन्ति सिन्धवोऽभि प्रयः ॥ ७ ॥ सजूर्विश्वेभिर्देवेभिरश्विभ्यामुषसा सजूः । आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण ॥ ८ ॥ सजूर्मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना । आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण ॥ ९ ॥ सजूरादि-

त्यैर्वसुभिः सजूरिन्द्रेण वायुना। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥ १०॥ ६॥
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो
दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना॥ ११॥ स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं
स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भव-
न्तु नः॥ १२॥ विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः॥ १३॥ स्वस्ति मित्राव-
रुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि
॥ १४॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं
गमेमहि॥ १५॥ ७॥

॥ ५२॥ १-१७ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः॥ मरुतो देवताः॥ छन्दः-१,
४, ५, १५ विराडनुष्टुप्। २, ७, १० निचृदनुष्टुप्। ६ पङ्क्तिः। ३, ९, ११
विराडुष्णिक्। ८ १२, १३ अनुष्टुप्। १४ बृहती। १६ निचृद्बृहती। १७
बृहती॥ स्वरः-१, २, ४—७, १०, १५ पञ्चमः। ३, ९, ११ ऋषभः। ८,
१२, १३ गान्धारः। १४, १६, १७ मध्यमः॥

५२॥ प्र श्यावाश्व धृष्णुयार्चा मरुद्भिर्ऋक्वभिः। ये अद्रोघमनुष्वधं श्रवो
मदन्ति यज्ञियाः॥ १॥ ते हि स्थिरस्य शवसः सखायः सन्ति धृष्णुया। ते
यामन्ना धृषद्विनस्त्मना पान्ति शश्वतः॥ २॥ ते स्यन्द्रासो नोक्षणोऽति ष्कन्द-
न्ति शर्वरीः। मरुतामधा महो दिवि क्षमा च मन्महे॥ ३॥ मरुत्सु वो दधीमहि
स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया। विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः॥ ४॥ अर्हन्तो
ये सुदानवो नरो असामिशवसः। प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः॥ ५॥ ८॥
आ रुक्मैरा युधा नर ऋष्वा ऋष्टीरसृक्षत। अन्वेनाँ अह विद्युतो मरुतो जज्झती-
रिव भानुरर्त त्मना दिवः॥ ६॥ ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ।
वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो दिवः॥ ७॥ शर्धो मारुतमुच्छंस सत्यशव
सम्भ्वसम्। उत स्म ते शुभे नरः प्र स्यन्द्रा युजत त्मना॥ ८॥ उत स्म ते प
रुष्ण्यामूर्णा वसत शुन्ध्यवः। उत पव्या रथानामद्रिं भिन्दन्त्योजसा॥ ९॥
आपथयो विपथयोऽन्तस्पथा अनुपथाः। एतेभिर्मह्यं नामभिर्यज्ञं विष्टार ओहते
॥ १०॥ ९॥ अधा नरो न्योहतेऽधा नियुत ओहते। अधा पारावता इति चित्रा
रूपाणि दर्श्या॥ ११॥ छन्दः स्तुभः कुभन्यव उत्समा कीरिणो नृतुः। ते

के चित्र तायत्र ऊमा आसन्दृशि त्विषे ॥ १२ ॥ ये ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः
सन्ति वेधसः । तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा ॥ १३ ॥ अच्छ ऋषे
मारुतं गणं दाना मित्रं न योषणा । दिवो वा धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिरि-
षण्यत ॥ १४ ॥ नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणा । दाना सचेत सूरि-
भिर्यामश्रुतेभिरञ्जिभिः ॥ १५ ॥ प्र ये मे बन्ध्वेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्निं वोचन्त
मातरम् । अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिक्वसः ॥ १६ ॥ सप्त मे सप्त शा-
किन एकमेका शता ददुः । यमुनायामधि श्रुतमुद्राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं
मृजे ॥ १७ ॥ १० ॥

॥ ५३ ॥ १–१६ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः—१
भुरिग्गायत्री । ८, १२ गायत्री । २ निचृद्बृहती । ९ स्वराड्बृहती । १४ बृहती ।
३ अनुष्टुप् । ४, ५ उष्णिक् । १०, १५ विराडुष्णिक् । ११ निचृदुष्णिक् ।
६, १६ पङ्क्तिः । ७, १३ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ८, १२ षड्जः । २, ९,
१४ मध्यमः । ३ गान्धारः । ४, ५ १०, १५, ११ ऋषभः । ६, ७, १३,
१६ पञ्चमः ॥

॥ ५३ ॥ को वेद जानमेषां को वा पुरा सुम्नेष्वास मरुताम् । यद्युयुज्रे
किलास्यः ॥ १ ॥ ऐतान्रथेषु तस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः । कस्मै सस्रुः सु-
दासे अन्वापय इळाभिर्वृष्टयः सह ॥ २ ॥ ते म आहुर्य आययुरुप द्युभिर्विभि-
र्मदे । नरो मर्या अरेपस इमान्पश्यन्निति ष्टुहि ॥ ३ ॥ ये अञ्जिषु ये वाशीषु
स्वभानवः स्रक्षु रुक्मेषु खादिषु । श्राया रथेषु धन्वसु ॥ ४ ॥ युष्माकं स्मा रथाँ
अनु मुदे दधे मरुतो जीरदानवः । वृष्टी द्यावो यतीरिव ॥ ५ ॥ ११ ॥ आ यं
नरः सुदानवो ददाशुषे दिवः कोशमचुच्यवुः । वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु
धन्वना यन्ति वृष्टयः ॥ ६ ॥ ततृदानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र सस्रुर्धेनवो
यथा । स्यन्ना अश्वा इवाध्वनो विमोचने वि यद्वर्तन्त एन्यः ॥ ७ ॥ आ यात
मरुतो दिव आन्तरिक्षादमादुत । माव स्थात परावतः ॥ ८ ॥ मा वो रसानित-
भा कुभा क्रुमुर्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत् । मा वः परि ष्ठात्सरयुः पुरीषिण्यस्मे इ-
त्सुम्नमस्तु वः ॥ ९ ॥ तं वः शर्धं रथानां त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम् । अनु प्र
यन्ति वृष्टयः ॥ १० ॥ १२ ॥ शर्धंशर्धं व एषां व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः ।
अनु क्रामेम धीतिभिः ॥ ११ ॥ कस्मा अद्य सुजाताय रातहव्याय प्र ययुः ।

एना यामेन मरुतः ॥ १२ ॥ येन तोकाय तनयाय धान्यं बीजं वहध्वे अक्षि-
तम् । अस्मभ्यं तद्धत्तन यद्व ईमहे राधो विश्वायु सौभगम् ॥ १३ ॥ अतीयाम
निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः । वृष्ट्वी शं योराप उस्रि भेषजं स्याम मरुतः सह
॥ १४ ॥ सुदेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः । यं त्रायध्वे स्याम ते
॥ १५ ॥ स्तुहि भोजान्त्स्तुवतो अस्य यामनि रणन्गावो न यवसे । यतः पूर्वां
इव सखीँरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः ॥ १६ ॥ १३ ॥

॥ ५४ ॥ १—१५ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः- १,
३, ७, १२ जगती । २ विराड् जगती । ६ भुरिग् जगती । ११, १५ निचृज्ज-
गती । ४, ८, १० भुरिक् त्रिष्टुप् । ५, ९, १३, १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—३,
६, ७, ११, १२, १५ निषादः । ४, ५, ८—१०, १३, १४ गान्धारः ॥

॥ ५४ ॥ प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचमनजा पर्वतच्युते । घर्म-
स्तुभे दिव आ पृष्ठयज्वने द्युम्नश्रवसे महि नृम्णमर्चत ॥ १ ॥ प्र वो मरुतस्तविषा
उदन्यवो वयोवृधो अश्वयुजः परिज्रयः । सं विद्युता दधति वाशति त्रितः स्वरन्त्या-
पोऽवना परिज्रयः ॥ २ ॥ विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्विषो मरुतः पर्व-
तच्युतः । अब्दया चिन्मुहुरा ह्रादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदोजसः ॥ ३ ॥
व्यक्तून्रुद्रा व्यहानि शिक्वसो व्यन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः । वि यदज्राँ अ-
जथ नाव ईं यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ ॥ ४ ॥ तद्वीर्यं वो मरुतो महि-
त्वनं दीर्घं ततान सूर्यो न योजनम् । एता न यामे अगृभीतशोचिषोऽनश्वदां य
न्न्ययातना गिरिम् ॥ ५ ॥ १४ ॥ अभ्राजि शर्धो मरुतो यदर्णसं मोषथा वृक्षं
कपनेव वेधसः । अध स्मा नो अरमतिं सजोषसश्चक्षुरिव यन्तमनु नेषथा सुगम् ॥ ६ ॥
न स जीयते मरुतो न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति । नास्य राय उप
दस्यन्ति नोतय ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ ॥ ७ ॥ नियुत्वन्तो ग्रामजितो
यथा नरोऽर्यमणो न मरुतः कबन्धिनः । पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन्व्युन्दन्ति
पृथिवीं मध्वो अन्धसा ॥ ८ ॥ प्रवत्वतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः प्रवत्वती द्यौर्भवति प्र-
यद्भ्यः । प्रवत्वतीः पथ्या अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः ॥ ९ ॥ यन्मरुतः
सभरसः स्वर्णरः सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः । न वोऽश्वाः श्रथयन्ताह सिस्रतः
सद्यो अस्याध्वनः पारमश्नुथ ॥ १० ॥ १५ ॥ अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो व-
क्षःसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः । अग्निभ्राजसो विद्युतो गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वि-

तता हिरण्ययीः ॥ ११ ॥ तं नाकमर्यो अगृभीतशोचिषं रुशत्पिप्पलं मरुतो वि धूनुथ । समच्यन्त वृजनातित्विषन्त यत्स्वरन्ति घोषं विततमृतायवः ॥ १२ ॥ युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो रायः स्याम रथ्यो३ वयस्वतः । न यो युच्छति तिष्यो३ यथा दिवो३ स्मे रारन्त मरुतः सहस्रिणम् ॥ १३ ॥ यूयं रयिं मरुतः स्पार्हवीरं यूयमृषिमवथ सामविप्रम् । यूयमर्वन्तं भरताय वाजं यूयं धत्थ राजानं श्रुष्टिमन्तम् ॥ १४ ॥ तद्वो यामि द्रविणं सद्यऊतयो येना स्व१र्ण ततनाम नॄँरभि । इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो यस्य तरेम तरसा शतं हिमाः ॥ १५ ॥ १६ ॥

॥ ५५ ॥ १—१० श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः—१, ५ जगती । २, ४, ७, ८ निचृज्जगती । ९ विराड् जगती । ३ स्वराट्त्रिष्टुप् । ६, १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ७—९ निषादः ॥ ३, ६, १० गान्धारः ॥

॥ ५५ ॥ प्रयज्यवो मरुतो भ्राजदृष्टयो बृहद्वयो दधिरे रुक्मवक्षसः । ईयन्ते अश्वैः सुयमेभिराशुभिः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ १ ॥ स्वयं दधिध्वे तविषीं यथा विद बृहन्महान्त उर्विया वि राजथ । उतान्तरिक्षं ममिरे व्योजसा शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ २ ॥ साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिताः श्रिये चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः । विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ३ ॥ आभूषेण्यं वो मरुतो महित्वनं दिदृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षणम् । उतो अस्माँ अमृतत्वे दधातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ४ ॥ उदीरयथा मरुतः समुद्रतो यूयं वृष्टिं वर्षयथा पुरीषिणः । न वो दस्रा उप दस्यन्ति धेनवः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ५ ॥ १७ ॥ यदश्वान्धूर्षु पृषतीरयुग्ध्वं हिरण्ययान्प्रत्यत्काँ अमुग्ध्वम् । विश्वा इत्स्पृधो मरुतो व्यस्यथ शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ६ ॥ न पर्वता न नद्यो वरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत् । उत द्यावापृथिवी याथना परि शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ७ ॥ यत्पूर्व्यं मरुतो यच्च नूतनं यदुद्यते वसवो यच्च शस्यते । विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ८ ॥ मृळत नो मरुतो मा वधिष्टनास्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन । अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ९ ॥ यूयमस्मान्नयत वस्यो अच्छा निरंहतिभ्यो मरुतो गृणानाः । जुषध्वं नो हव्यदातिं यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १० ॥ १८ ॥

॥ ५६ ॥ १-९ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः-१, २ ५ निचृद्बृहती । ४ विराड्बृहती । ८, ९ बृहती । ३ विराट्पङ्क्तिः । ६, ७ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१, २, ४, ५, ८, ९ मध्यमः । ३, ६, ७ पञ्चमः ॥

॥ ५६ ॥ अग्ने॒ शर्ध॑न्तमा ग॒णं पि॒ष्टं रु॒क्मेभि॑र॒ञ्जिभिः॑ । विशो॑ अ॒द्य म॒रुता॒-
मव॑ ह्वये दि॒वश्चि॑द्रोच॒नादधि॑ ॥ १ ॥ यथा॑ चि॒न्मन्य॑से हृ॒दा तदिन्मे॑ जग्मुरा॒शसः॑
ये ते॒ नेदि॑ष्ठं॒ हव॑नान्या॒गम॒न्तान्व॑र्ध भी॒मसं॑न्दृशः ॥ २ ॥ मी॒ळ्हुष्म॑तीव पृथि॒वी प-
रा॑हता॒ मद॑न्त्येत्य॒स्मदा॑ । ऋक्षो॒ न वो॑ मरुतः॒ शिमी॑वाँ॒ अमो॑ दु॒ध्रो गौरि॑व भीम॒-
युः ॥ ३ ॥ नि ये रि॒णन्त्योज॑सा॒ वृथा॒ गावो॒ न दु॒र्धुरः॑ । अश्मा॑नं चित्स्व॒र्य॑१ प-
र्व॑तं गि॒रिं प्र च्या॑वयन्ति॒ याम॑भिः ॥ ४ ॥ उत्ति॑ष्ठ नू॒नमे॑षां॒ स्तोमैः॒ समु॑क्षितानाम् ।
म॒रुतां॑ पुरु॒तम॒मपू॑र्व्यं॒ गवां॒ सर्ग॑मिव ह्वये ॥५॥ १९॥ यु॒ङ्ग्ध्वं ह्यरु॑षी॒ रथे॑ यु॒ङ्ग्ध्वं रथे॑षु
रो॒हितः॑ । यु॒ङ्ग्ध्वं हरी॑ अजि॒रा धु॒रि वोळ्ह॑वे॒ वहि॑ष्ठा धु॒रि वोळ्ह॑वे ॥ ६ ॥ उ॒त स्य
वा॒ज्य॑रु॒षस्तु॑वि॒ष्वणि॑रि॒ह स्म॑ धायि दर्श॒तः । मा वो॒ यामे॑षु मरुतश्चि॒रं क॑रत्प्र तं
रथे॑षु चोदत ॥७॥ रथं॒ नु मारु॑तं व॒यं श्र॑व॒स्युमा हु॑वामहे । आ यस्मि॑न्त॒स्थौ सु॒रणा॑नि
बिभ्र॑ती॒ सचा॑ म॒रुत्सु॑ रोद॒सी ॥ ८ ॥ तं वः॒ शर्धं॒ रथे॒शुभं॑ त्वे॒षं प॑न॒स्युमा हु॑वे ।
यस्मि॒न्त्सुजा॑ता सु॒भगा॑ मही॒यते॒ सचा॑ म॒रुत्सु॑ मीळ्हु॒षी ॥ ९ ॥ २० ॥ ४ ॥

॥ ५७ ॥ १-८ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः-१, ४, ५ जगती । २, ६, विराड्जगती । ३ निचृज्जगती । ७ विराट् त्रिष्टुप् । ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१-६ निषादः । ७, ८ गान्धारः ॥

॥ ५७ ॥ आ रु॑द्रास॒ इन्द्र॑वन्तः स॒जोष॑सो॒ हिर॑ण्यरथाः सुवि॒ताय॑ गन्तन ।
इ॒यं वो॑ अ॒स्मत्प्रति॑ हर्यते म॒तिस्तृ॒ष्णजे॒ न दि॒व उत्सा॑ उद॒न्यवे॑ ॥ १ ॥ वाशी॑मन्त
ऋष्टि॒मन्तो॑ मनी॒षिणः॑ सु॒धन्वा॑न॒ इषु॑मन्तो निष॒ङ्गिणः॑ । स्वश्वाः॑ स्थ सु॒रथाः॑ पृश्नि-
मातरः स्वायु॒धा म॑रुतो याथ॒ना शुभ॑म् ॥ २ ॥ धू॒नुथ॒ द्यां पर्व॑तान्दा॒शुषे॒ वसु॒ नि
वो॒ वना॑ जिहते॒ याम॑नो भि॒या । को॒पय॑थ पृथि॒वीं पृ॑श्निमातरः शु॒भे यदु॑ग्राः॒ पृष-
ती॒रयु॑ग्ध्वम् ॥ ३ ॥ वात॑त्विषो म॒रुतो॑ व॒र्षनि॑र्णिजो य॒मा इ॑व॒ सुस॑दृशः सु॒पेश॑सः ।
पि॒शङ्गा॑श्वा अरु॒णाश्वा॑ अरे॒पसः॒ प्रत्व॑क्षसो महि॒ना द्यौरि॑वो॒रवः॑ ॥ ४ ॥ पु॒रु॒द्र॒प्सा
अ॑ञ्जि॒मन्तः॑ सु॒दान॑वस्त्वे॒षसं॑न्दृशो अनव॒भ्ररा॑धसः । सु॒जा॒तासो॑ ज॒नुषा॑ रु॒क्मव॑क्षसो
सो दि॒वो अ॒र्का अ॒मृतं॒ नाम॑ भेजिरे ॥ ५ ॥ २१ ॥ ऋ॒ष्टयो॑ वो मरुतो॒ अंस॑योरधि
सह॒ ओजो॑ बा॒ह्वोर्वो॒ बलं॑ हि॒तम् । नृ॒म्णा शी॒र्षस्वायु॑धा॒ रथे॑षु वो॒ विश्वा॑ वः॒ श्रीर

र्धि तनूषु पिपिशे ॥ ६ ॥ गोमदश्वावद्रथवत्सुवीरं चन्द्रवद्राधो मरुतो ददा नः । प्रशस्तिं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य ॥ ७ ॥ हये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः । सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः ॥ ८ ॥ २२ ॥

॥ ५८ ॥ १–८ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ५ त्रिष्टुप् । ७ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ५८ ॥ तमु नूनं तविषीमन्तमेषां स्तुषे गणं मारुतं नव्यसीनाम् । य आश्वश्वा अमवद्वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वराजः ॥ १ ॥ त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारम् । मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नृन् ॥ २ ॥ आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति । अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः ॥ ३ ॥ यूयं राजानमिर्यं जनाय विभ्वतष्टं जनयथा यजत्राः । युष्मदेति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत्सदश्वो मरुतः सुवीरः ॥ ४ ॥ अरा इवेदचरमा अहेव प्रप्र जायन्ते अकवा महोभिः । पृश्नेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः ॥ ५ ॥ यत्प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैर्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः । क्षोदन्त आपो रिणते वनान्यवोस्रियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः ॥ ६ ॥ प्रथिष्ट यामन्पृथिवी चिदेषां भर्तेव गर्भं स्वमिच्छवो धुः । वातान्ह्यश्वान्धुर्यायुयुज्रे वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियासः ॥ ७ ॥ हये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः । सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः ॥ ८ ॥ २३ ॥

॥ ५९ ॥ १–८ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः—१, ४ विराड्जगती । २, ३, ६ निचृज्जगती । ५ जगती । ७ स्वराट्त्रिष्टुप् । ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—६ निषादः । ७, ८ धैवतः ॥

॥ ५९ ॥ प्र वः स्पळक्रन्त्सुवितायं दावनेऽर्चा दिवे प्र पृथिव्या ऋतं भरे । उक्षन्ते अश्वान्तरुषन्त आ रजोऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः ॥ १ ॥ अमादेषां भियसा भूमिरेजति नौर्न पूर्णा क्षरति व्यथिर्यती । दूरेदृशो ये चितयन्त एमभिरन्तर्महे विदथे येतिरे नरः ॥ २ ॥ गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं सूर्यो न चक्षू रजसो विसर्जने । अत्या इव सुभ्व१श्चारवः स्थन मर्या इव श्रियसे चेतथा नरः ॥ ३ ॥ को वो महान्ति महतामुदश्नवत्कस्काव्या मरुतः को ह पौंस्या । यूयं ह भूमिं

क्रिरणं न रेजथ प्र यद्भरध्वे सुवितार्य दावने ॥ ४ ॥ अश्वा इवेदरुषासः सबन्धव
शूरा इव प्रयुधः प्रोत युयुधुः । मर्या इव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति
वृष्टिभिः ॥ ५ ॥ ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो महसा वि वावृधुः
सुजातासो जनुषा पृश्निमातरो दिवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ॥ ६ ॥ वयो
न ये श्रेणीः पप्तुरोजसान्तान्दिवो बृहतः सानुनस्परि । अश्वास एषामुभये यथा
विदुः प्र पर्वतस्य नभनूँरचुच्यवुः ॥ ७ ॥ मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा
उषसो यतन्ताम् । आचुच्यवुर्दिव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः ॥ ८ ॥ २४ ॥

॥ ६० ॥ १–८ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ मरुतो मरुतो वाग्निश्च देवता ।
छन्दः–१, ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । २ भुरिक् त्रिष्टुप् । ६ विराट् त्रिष्टुप् । ७,
८ जगती ॥ स्वरः—१–६ धैवतः । ७, ८ निषादः ॥

॥ ६० ॥ ईळे अग्निं स्ववसं नमोभिरिह प्रसत्तो वि चयत्कृतं नः । रथैरिव प्र
भरे वाजयद्भिः प्रदक्षिणिन्मरुतां स्तोममृध्याम् ॥ १ ॥ आ ये तस्थुः पृषतीषु श्रुतासु
सुखेषु रुद्रा मरुतो रथेषु । वना चिदुग्रा जिहते नि वो भिया पृथिवी चिद्रेजते पर्वत
श्चित् ॥ २ ॥ पर्वतश्चिन्महि वृद्धो बिभाय दिवश्चित्सानु रेजत स्वने वः । यत्क्रीळथ
मरुत ऋष्टिमन्त आप इव सध्र्यञ्चो धवध्वे ॥ ३ ॥ वरा इवेद्रैवतासो हिरण्यैरभि
स्वधाभिस्तन्वः पिपिश्रे । श्रिये श्रेयांसस्तवसो रथेषु सत्रा महांसि चक्रिरे तनूषु
॥ ४ ॥ अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय । युवा पिता
स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥ ५ ॥ यदुत्तमे मरुतो मध्यमे वा
यद्वावमे सुभगासो दिवि ष्ठ । अतो नो रुद्रा उत वा न्वस्याग्ने वित्ताद्धविषो यद्य
जाम ॥ ६ ॥ अग्निश्च यन्मरुतो विश्ववेदसो दिवो वहध्व उत्तरादधि ष्णुभिः ।
ते मन्दसाना धुनयो रिशादसो वामं धत्त यजमानाय सुन्वते ॥ ७ ॥ अग्ने मरुद्भिः
शुभयद्भिर्ऋक्वभिः सोमं पिब मन्दसानो गणश्रिभिः । पावकेभिर्विश्वमिन्वेभिरायु
भिर्वैश्वानर प्रदिवा केतुना सजूः ॥ ८ ॥ २५ ॥

॥ ६१ ॥ १–१९ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ १—४, ११—१६ मरुतः ।
५—८ शशीयसी तरन्तमहिषी । ९ पुरुमीळ्हो वैददश्विः । १० तरन्तो वैदद
श्विः । १७—१९ रथवीतिर्दाल्भ्यो देवताः ॥ छन्दः—१–४, ६–८, १०–१९
गायत्री । ५ अनुष्टुप् । ९ सतोबृहती ॥ स्वरः–१–४, ६–८, १०–१९ षड्जः ।
५ गान्धारः । ९ मध्यमः ॥

॥ ६१ ॥ के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकएक आयय । परमस्याः परावतः ॥ १ ॥ क्व वोऽश्वाः क्वाभीशवः कथं शेक कथा यय । पृष्ठे सदो नसोर्यमः ॥२॥ जघने चोद एषां वि सक्थानि नरो यमुः । पुत्रकृथे न जनयः ॥ ३ ॥ परा वीरास एतन मर्यासो भद्रजानयः । अग्नितपो यथासथ ॥ ४ ॥ सनत्साश्व्यं पशुमुत गव्यं शतावयम् । श्यावाश्वस्तुताय या दोर्वीरायोपबर्बृहत् ॥ ५ ॥ २६ ॥ उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी । अदेवत्रादराधसः ॥ ६ ॥ विया जानाति जसुरिं वि तृष्यन्तं वि कामिनम् । देवत्रा कृणुते मनः ॥ ७ ॥ उत घा नेमो अस्तुतः पुमाँ इति ब्रुवे पणिः । स वैरदेय इत्समः ॥ ८ ॥ उत मेऽरपद्युवतिर्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम् । वि रोहिता पुरुमीळ्हाय येमतुर्विप्राय दीर्घयशसे ॥ ९ ॥ यो मे धेनूनां शतं वैददश्विर्यथाददत् । तरन्त इव मंहना ॥ १० ॥ ॥२७॥ य ईं वहन्त आशुभिः पिबन्तो मदिरं मधु । अत्र श्रवांसि दधिरे ॥ ११ ॥ येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा । दिवि रुक्म इवोपरि ॥ १२ ॥ युवा स मारुतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः । शुभंयावाप्रतिष्कुत ॥ १३ ॥ को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः । ऋतजाता अरेपसः ॥ १४ ॥ यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतारं इत्था धिया । श्रोतारो यामहूतिषु ॥ १५ ॥ २८ ॥ ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः । आ यज्ञियासो ववृत्तन ॥ १६ ॥ एतं मे स्तोममूर्म्ये दार्भ्याय परा वह । गिरो देवि रथीरिव ॥ १७ ॥ उत मे वोचतादिति सुतसोमे रथवीतौ । न कामो अप वेति मे ॥ १८ ॥ एष क्षेति रथवीतिर्मघवा गोमतीरनु । पर्वतेष्वपश्रितः ॥ १९ ॥ २९ ॥

॥ ६२ ॥ १-९ श्रुतविदात्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः-१, २ त्रिष्टुप् । ३, ४, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ७, ८, ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६२ ॥ ऋतेन ऋतमपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वान् । दश शता सह तस्थुस्तदेकं देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम् ॥ १ ॥ तत्सु वां मित्रावरुणा महित्वमीर्मा तस्थुषीरहभिर्दुदुह्रे । विश्वाः पिन्वथः स्वसरस्य धेना अनु वामेकः पविरा ववर्त ॥ २ ॥ अधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः । वर्धयतमोषधीः पिन्वतं गा अव वृष्टिं सृजतं जीरदानू ॥ ३ ॥ आ वामश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरश्मय उप यन्त्ववाक् । घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वामुप सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति ॥ ४ ॥ अनु श्रुताममतिं वर्धदुर्वीं बर्हिरिव यजुषा रक्षमाणा । नमस्वन्ता धृतदक्षाधि गर्ते मित्रासाथे वरुणेळास्वन्तः ॥ ५ ॥ ३० ॥

अर्कं विहस्ता सुकृते परस्पा यं त्रासाथे वरुणेळास्वन्तः । राजाना क्षत्रमहृणीयमाना
सहस्रस्थूणं बिभृथः सह द्वौ ॥ ६ ॥ हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते
दिव्य१श्वाजनीव । भद्रे क्षेत्रे निमिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य
॥ ७ ॥ हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टावयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य । आ रोहथो वरुण
मित्र गर्तमतश्चक्षाथे अदितिं दितिं च ॥ ८ ॥ यद्बंहिष्ठं नातिविधे सुदानू अ
च्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा । तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः
स्याम ॥ ९ ॥ ३१ ॥ ३ ॥

॥ ६३ ॥ १–७ अर्चनाना आत्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः–१,
२, ४, ७ निचृज्जगती । ३, ५, ६ जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ६३ ॥ ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि । य
मत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः ॥ १ ॥ सम्राजावस्य भुव
नस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दृशा । वृष्टिं वां राधो अमृतत्वमीमहे द्यावा
पृथिवी वि चरन्ति तन्यवः ॥ २ ॥ सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मि
त्रावरुणा विचर्षणी । चित्रेभिरभ्रैरुप तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया
॥ ३ ॥ माया वां मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम् ।
तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते ॥ ४ ॥ रथं युञ्जते
मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गविष्टिषु । रजांसि चित्रा वि चरन्ति त
न्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम् ॥ ५ ॥ वाचं सु मित्रावरुणाविरावतीं
पर्जन्यश्चित्रां वदति त्विषीमतीम् । अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतम
रुणामरेपसम् ॥ ६ ॥ धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मा
यया । ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम् ॥७॥१॥

॥ ६४ ॥ १—७ अर्चनाना ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, २
विराडनुष्टुप् । ६ निचृदनुष्टुप् । ३, ५ भुरिगुष्णिक् । ४ उष्णिक् । ७ निचृत्
पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, २, ६ गान्धारः । ३–५ ऋषभः । ७ पञ्चमः ॥

॥ ६४ ॥ वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे । परि व्रजेव बाह्वोर्जगन्वां
सा स्वर्णरम् ॥ १ ॥ ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते । शेवं हि जार्यं
वां विश्वासु क्षासु जोगुवे ॥ २ ॥ यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा । अस्य

प्रियस्य शर्मण्यहिंसानस्य सश्चिरे ॥ ३ ॥ युवाभ्यां मित्रावरुणोपमं धेयामृचा । यद्ध क्षये मघोनां स्तोतॄणां च स्पूर्धसे ॥ ४ ॥ आ नो मित्र सुदीतिभिर्वरुणश्च सधस्थ आ । स्वे क्षये मघोनां सखीनां च वृधसे ॥ ५ ॥ युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्च बिभृथः । उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये ॥ ६ ॥ उच्छन्त्यां मे यजता देवक्षत्रे रुशद्गवि । सुतं सोमं न हस्तिभिरा पड्भिर्धावतं नरा बिभ्रतावर्चनानसम् ॥ ७ ॥ २ ॥

॥ ६५ ॥ १—६ रातहव्य आत्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, ४ अनुष्टुप् । २ निचृदनुष्टुप् । ३ स्वराडुष्णिक् । ५ भुरिगुष्णिक् । ६ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः । ३, ५ ऋषभः । ६ पञ्चमः ॥

॥ ६५ ॥ यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः । वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः ॥ १ ॥ ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ता सत्पती ऋतावृध ऋतावाना जनेजने ॥ २ ॥ ता वामियानोऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा । स्वश्वासः सुचेतुना वाजाँ अभि प्र दावने ॥ ३ ॥ मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते । मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः ॥ ४ ॥ वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे । अनेहसस्त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः ॥ ५ ॥ युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः । मा मघोनः परि ख्यतं मो अस्माकमृषीणां गोपीथे न उरुष्यतम् ॥ ६ ॥ ३ ॥

॥ ६६ ॥ १- ६ रातहव्य आत्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, ५, ६ विराडनुष्टुप् । २ निचृदनुष्टुप् । ३, ४ स्वराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ६६ ॥ आ चिकितान सुक्रतू देवौ मर्त रिशादसा । वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे ॥ १ ॥ ता हि क्षत्रमविह्रुतं सम्यगसुर्यमाशाते । अध व्रतेव मानुषं स्वर्ण धायि दर्शतम् ॥ २ ॥ ता वामेषे रथानामुर्वीं गव्यूतिमेषाम् । रातहव्यस्य सुष्टुतिं दधृक्स्तोमैर्मनामहे ॥ ३ ॥ अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पूर्भिरद्भुता । नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा ॥ ४ ॥ तदृतं पृथिवि बृहच्छ्रवएष ऋषीणाम् । ज्रयसानावरं पृथ्वति क्षरन्ति यामभिः ॥ ५ ॥ आ यद्वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः । व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये ॥ ६ ॥ ४ ॥

॥ ६७ ॥ १—५ यजत आत्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप् । ३, ५ विराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ६७ ॥ बळित्था देवा निष्कृतमादित्या यजतं बृहत् । वरुण मित्रार्यमन्
र्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे ॥ १ ॥ आ यद्योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः । धर्ता
चर्षणीनां यन्तं सुम्नं रिशादसा ॥ २ ॥ विश्वे हि विश्ववेदसो वरुणो मि
अर्यमा । व्रता पदेव सश्चिरे पान्ति मर्त्यं रिषः ॥ ३ ॥ ते हि सत्या ऋतस्पृ
ऋतावानो जनेजने । सुनीथासः सुदानवोऽंहोश्चिदुरुचक्रयः ॥ ४ ॥ को नु
मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम् । तस्तु वामेषते मतिरत्रिभ्य एषते मतिः ॥५॥

॥ ६८ ॥ १—५ यजत आत्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—
२, गायत्री । ३, ४ निचृद्गायत्री । ५ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६८ ॥ प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा । महिक्षत्रावृतं बृ
॥ १ ॥ सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । देवा देवेषु प्रशस्ता ॥ २
ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महि वां क्षत्रं देवेषु ॥ ३ ॥ ऋतमृतेन
पन्तेषिरं दक्षमाशाते । अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥ ४ ॥ वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती द
नुमत्याः । बृहन्तं गर्तमाशाते ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ ६९ ॥ १-४ उरुचक्रिरात्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः-
२ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ६९ ॥ त्री रोचना वरुण त्रीँरुत द्यून्त्रीणि मित्र धारयथो रजांसि । वा
धानावमतिं क्षत्रियस्यानु व्रतं रक्षमाणावजुर्यम् ॥ १ ॥ इरावतीर्वरुण धेनवो वां
धुमद्वां सिन्धवो मित्र दुह्रे । त्रयस्तस्थुर्वृषभासस्तिसृणां धिषणानां रेतोधा वि
मन्तः ॥ २ ॥ प्रातर्देवीमदितिं जोहवीमि मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य । राये मित्र
वरुणा सर्वतातेळे तोकाय तनयाय शं योः ॥ ३ ॥ या धर्तारा रजसो रोचनस्य
तादित्या दिव्या पार्थिवस्य । न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरु
ध्रुवाणि ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ ७० ॥ १—४ उरुचक्रिरात्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ गाय
छन्दः । षड्जः स्वरः ॥

॥ ७० ॥ पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण । मित्र वंसि वां सुमति
॥ १ ॥ ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धायसे । वयं ते रुद्रा स्याम ॥ २

पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । तुर्याम दस्यूंन्तनूभिः ॥३॥ मा कस्याद्भुत क्रतू यक्षं भुंजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ ७१ ॥ १—३ बाहुवृक्त आत्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ॥

॥ ७१ ॥ आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा । उपेमं चारुमध्वरम् ॥ १ ॥ विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः । ईशाना पिप्यतं धियः ॥२॥ उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः । अस्य सोमस्य पीतये ॥ ३ ॥ ९ ॥

॥ ७२ ॥१—३ बाहुवृक्त आत्रेय ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ उष्णिक् छन्दः ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ ७२ ॥ आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत् । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये ॥ १ ॥ व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयज्जना । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये ॥ २ ॥ मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेतां यज्ञमिष्टये । नि बर्हिषि सदतां सोमपीतये ॥ ३ ॥ १० ॥ ५ ॥

॥ ७३ ॥ १—१० पौर आत्रेय ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ७ निचृदनुष्टुप् । ३, ६, ८, ९ अनुष्टुप् । १० विराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ७३ ॥ यदद्य स्थः परावति यदर्वावत्यश्विना । यद्वा पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् ॥ १ ॥ इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि बिभ्रता वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे ॥ २ ॥ ईर्मान्यद्वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः । पर्यन्या नाहुषा युगा मह्ना रजांसि दीयथः ॥ ३ ॥ तदू षु वामेना कृतं विश्वा यद्वामनु ष्टवे । नाना जातावरेपसा समस्मे बन्धुमेयथुः ॥ ४ ॥ आ यद्वां सूर्या रथं तिष्ठद्रघुष्यदं सदा । परि वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः ॥ ५ ॥ ११ ॥ युवोरत्रिश्चिकेताति नरा सुम्नेन चेतसा । घर्मं यद्वामरेपसं नासत्यास्ना भुरण्यति ॥ ६ ॥ उग्रो वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु सन्तनिः । यद्वां दंसोभिरश्विनात्रिर्नराववर्तति ॥ ७ ॥ मध्व ऊ षु मधूयुवा रुद्रा सिषक्ति पिप्युषी । यत्समुद्राति पर्षथः पक्वाः पृक्षो भरन्त वाम् ॥ ८ ॥ सत्यमिद्वा उ अश्विना युवामाहुर्मयोभुवा । ता याम-

न्यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा ॥ ६ ॥ इमा ब्रह्माणि वर्धनाश्विभ्यां सन्तु श
न्तमा । या तक्षाम रथाँ इवावोचाम बृहन्नमः ॥ १० ॥ १२ ॥

॥ ७४ ॥ १-१० आत्रेय ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः-१, २
१० विराडनुष्टुप् । ३ अनुष्टुप् । ४, ५, ६, ६ निचृदनुष्टुप् । ७ विराडुष्णिक् । ८
निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः-१-६, ६, १० गान्धारः । ७, ८ ऋषभः ॥

॥ ७४ ॥ कूष्ठो देवावश्विनाद्या दिवो मनावसू । तच्छ्रवथो वृषण्वसू अत्रि
र्वामा विवासति ॥ १ ॥ कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या । कस्मिन्न
यतथो जने को वां नदीनां सचा ॥ २ ॥ कं याथः कं ह गच्छथः कमच्छा युञ्जाथे
रथम् । कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वामुश्मसीष्टये ॥ ३ ॥ पौरं चिद्ध्युदप्रुतं पौर
पौराय जिन्वथः । यदीं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे ॥ ४ ॥ प्र च्यवानाज्जु
जुरुषो वव्रिमत्कं न मुञ्चथः । युवा यदी कृथः पुनरा काममृण्वे वध्वः ॥ ५ ॥ १३ ॥
अस्ति हि वामिह स्तोता स्मसि वां सन्दृशि श्रिये । नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वा
जिनीवसू ॥ ६ ॥ को वामद्य पुरूणामा वव्ने मर्त्यानाम् । को विप्रो विप्रवाहसा
को यज्ञैर्वाजिनीवसू ॥ ७ ॥ आ वां रथो रथानां येष्ठो यात्वश्विना । पुरू चिद
स्मयुस्तिर आङ्गूषो मर्त्येष्वा ॥ ८ ॥ शमू षु वां मधूयुवास्माकमस्तु चर्कृतिः । अर्वा
चीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम् ॥ ९ ॥ अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छुश्रूया
तमिमं हवम् । वस्वीरू षु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः ॥ १० ॥ १४ ॥

॥ ७५ ॥ १—६ अवस्युरात्रेय ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः-१, ३
पङ्क्तिः । २, ४, ६, ७, ८ निचृत्पङ्क्तिः । ५ स्वराट्पङ्क्तिः । ६ विराट्पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ७५ ॥ प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् । स्तोता वामश्विनावृषि
स्तोमेन प्रति भूषति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ १ ॥ अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा
अहं सना । दस्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम्
॥ २ ॥ आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम् । रुद्रा हिरण्यवर्तनी
जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ३ ॥ सुष्टुभो वां वृषण्वसू रथे वा
णीच्याहिता । उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम्
॥ ४ ॥ बोधिन्मनसा रथ्येषिरा हवनश्रुता । विभिश्च्यवानमश्विना नि याथो
अद्वयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ५ ॥ १५ ॥ आ वां नरा मनो युजोऽश्वास

प्रुषितप्संवः । वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम्
॥ ६ ॥ अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् । तिरश्चिदर्यया परि वर्ति-
र्यातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ७ ॥ अस्मिन्यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभ-
स्पती । अवस्युमश्विना युवं गृणन्तमुप भूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ८ ॥ अ-
भूदुषा रुशत्पशुराग्निरधाय्यृत्वियः । अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्रावमर्त्यो
माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ९ ॥ १६ ॥

॥ ७६ ॥ १–५ अत्रिर्ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१, २ स्वराट्प-
ङ्क्तिः । ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, २ पञ्चमः । ३–५ धैवतः ॥

॥ ७६ ॥ आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः । अर्वा-
ञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ ॥ १ ॥ न संस्कृतं प्र मिमीतो
गमिष्ठान्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह । दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्तिं दाशुषे
शम्भविष्ठा ॥ २ ॥ उता यातं सङ्गवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य । दिवा
नक्तमवसा शन्तमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान ॥ ३ ॥ इदं हि वां प्रदिवि स्था-
नमोक इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम् । आ नो दिवो बृहतः पर्वतादाद्भ्यो यातमि-
षमूर्जं वहन्ता ॥ ४ ॥ समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम । आ
नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥ ५ ॥ १७ ॥

॥ ७७ ॥ १—५ अत्रिर्ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥
धैवतः स्वरः ॥

॥ ७७ ॥ प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः । प्रातर्हि
यज्ञमश्विना दधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः ॥ १ ॥ प्रातर्यजध्वमश्विना हि-
नोत न सायमस्ति देवया अजुष्टम् । उतान्यो अस्मद्यजते वि चावः पूर्वः पूर्वो
यजमानो वनीयान् ॥ २ ॥ हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन्ना रथो वर्तते
वाम् । मनोजवा अश्विना वातरंहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा ॥ ३ ॥ यो
भूयिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्ठं पित्वो ररते विभागे । स तोकमस्य पीपर-
च्छमीभिरनूर्ध्वभासः सदमित्तुतुर्यात् ॥ ४ ॥ समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा
सुप्रणीती गमेम । आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥५॥१८॥

॥ ७८ ॥ १—९ सप्तवध्रिरात्रेय ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ३

उष्णिक् । ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ६ अनुष्टुप् । ७, ८, ९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—
१-३ ऋषभः । ४ धैवतः । ५—९ गान्धारः ॥

॥ ७८ ॥ अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् । हंसाविव पततमा
सुताँ उप ॥ १ ॥ अश्विना हरिणाविव गौराविवानु यवसम् । हंसाविव पततमा
सुताँ उप ॥ २ ॥ अश्विना वाजिनीवसू जुषेथां यज्ञमिष्टये । हंसाविव पततमा
सुताँ उप ॥ ३ ॥ अत्रिर्यद्वामवरोहन्नृबीसमजोहवीन्नाधमानेव योषा । श्येनस्य चि-
ज्जवसा नूतनेनागच्छतमश्विना शन्तमेन ॥ ४ ॥ १९ ॥ वि जिहीष्व वनस्पते
योनिः सूष्यन्त्या इव । श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम् ॥ ५ ॥ भी-
ताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये । मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः
॥ ६ ॥ यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः । एवा ते गर्भ एजतु निरैतु
दशमास्यः ॥ ७ ॥ यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति । एवा त्वं दशमास्य
सहावेहि जरायुणा ॥ ८ ॥ दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि । निरैतु
जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि ॥ ९ ॥ २० ॥

॥ ७९ ॥ १—१० सत्यश्रवा आत्रेय ऋषि ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१ स्वरा-
ड्ब्राह्मी गायत्री । २, ३, ७ भुरिग्बृहती । १० स्वराड् बृहती । ४, ५, ८ पङ्क्तिः । ६
९ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ षड्जः । २, ३, ७, १० मध्यमः । ४—६, ८, ९ पञ्चमः ।

॥ ७९ ॥ महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती । यथा चिन्नो अबोधय
सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ १ ॥ या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दु
हितर्दिवः । सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ २
सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः । यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वा
य्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ ३ ॥ अभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर्गृणन्ति वह्नयः
मघैर्मघोनि सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयः सुजाते अश्वसूनृते ॥ ४ ॥ यच्चिद्धि
गणा इमे छदयन्ति मघत्तये । परि चिद्वष्टयो दधुर्ददतो राधो अह्रयं सुजाते अ
श्वसूनृते ॥ ५ ॥ २१ ॥ ऐषु धा वीरवद्यश उषो मघोनि सूरिषु । ये नो राधा
स्यह्रया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते ॥ ६ ॥ तेभ्यो द्युम्नं बृहद्यश उष
मघोन्या वह । ये नो राधांस्यश्व्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनृते ॥ ७
उत नो गोमतीरिष आ वहा दुहितर्दिवः । साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोच
द्भिरर्चिभिः सुजाते अश्वसूनृते ॥ ८ ॥ व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुथा अपः

नेत्त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते ॥ ९ ॥ एतावद्वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि । या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते ॥ १० ॥ २२ ॥

॥ ८० ॥ १—६ सत्यश्रवा आत्रेय ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ४, ५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ६ धैवतः । ३—५ पञ्चमः ॥

॥ ८० ॥ द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन ऋतावरीमरुणप्सुं विभातीम् । देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते ॥ १ ॥ एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान्पथः कृण्वती यात्यग्रे । बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोषा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्नाम् ॥ २ ॥ एषा गोभिररुणेभिर्युजानास्रेधन्ती रयिमप्रायु चक्रे । पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति ॥ ३ ॥ एषा व्येनी भवति द्विबर्हा आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् । ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ४ ॥ एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात् । अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात् ॥ ५ ॥ एषा प्रतीची दुहिता दिवो नॄन्योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः । व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः ॥ ६ ॥ २३ ॥

॥ ८१ ॥ १—५ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ सविता देवता ॥ छन्दः—१, ५ जगती । २ विराड् जगती । ४ निचृज्जगती । ३ स्वराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ निषादः । ३ धैवतः ॥

॥ ८१ ॥ युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः । वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥ १ ॥ विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे । वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो वि राजति ॥ २ ॥ यस्य प्रयाणमन्वन्य इद्ययुर्देवा देवस्य महिमानमोजसा । यः पार्थिवानि विममे स एतशो रजांसि देवः सविता महित्वना ॥ ३ ॥ उत यासि सवितस्त्रीणि रोचनोत सूर्यस्य रश्मिभिः समुच्यसि । उत रात्रीमुभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः ॥ ४ ॥ उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इदुत पूषा भवसि देव यामभिः । उतेदं विश्वं भुवनं वि राजसि श्यावाश्वस्ते सवितः स्तोममानशे ॥ ५ ॥ २४ ॥

॥ ८२ ॥ १—६ श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः ॥ सविता देवता ॥ छन्दः—
निचृदनुष्टुप् । २, ४, ६ निचृद्गायत्री । ३, ५, ६, ७ गायत्री । ८ विराड्गायत्री
स्वरः—१ गन्धारः । २—६ षड्जः ॥

॥ ८२ ॥ तत्स॑वि॒तुर्वृ॑णीमहे व॒यं दे॒वस्य॒ भोज॑नम् । श्रेष्ठं॑ सर्व॒धात॑मं तु
भग॑स्य धीमहि ॥ १ ॥ अस्य॒ हि स्वय॑शस्तरं सवि॒तुः कच्च॒न प्रि॒यम् । नमि॒नन्ति स्व
राज्य॑म् ॥२॥ स हि रत्ना॑नि दा॒शुषे॑ सु॒वाति॑ सवि॒ता भग॑ः । तं भा॒गं चि॒त्रमी॑महे ॥३
अ॒द्या नो॑ देव सवितः प्र॒जाव॑त्सावीः सौभ॑गम् । परा॑ दुःष्वप्न्यं॑ सुव ॥ ४ ॥ विश्वा॑नि
देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव । यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व ॥ ५ ॥ २५ ॥ अना॑गसो
अदि॑तये दे॒वस्य॑ सवि॒तुः स॒वे । विश्वा॑ वा॒मानि॑ धीमहि ॥ ६ ॥ आ वि॒श्वदे॑वं॒ सत्प॑ति
सू॒क्तैर॒द्या वृ॑णीमहे । स॒त्यस॑वं सवि॒तार॑म् ॥ ७ ॥ य इ॒मे उ॒भे अह॑नी पु॒र एत्य
प्रयु॑च्छन् । स्वा॒धीर्दे॒वः स॑वि॒ता ॥ ८ ॥ य इ॒मा विश्वा॑ जा॒तान्या॑श्रा॒वय॑ति॒ श्लोके॑न
प्र च॑ सु॒वाति॑ सवि॒ता ॥ ६ ॥ २६ ॥

॥ ८३ ॥ १–१० अत्रिर्ऋषिः ॥ पृथिवी देवता ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्
२ स्वराट् त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् त्रिष्टुप् । ४ निचृज्जगती । ५, ६ त्रिष्टुप् । ७ विरा
त्रिष्टुप् । ८, १० भुरिक् पङ्क्तिः । ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—४ निषादः
५–७ धैवतः । ८, १० पञ्चमः । ६ गान्धारः ॥

॥ ८३ ॥ अच्छा॑ वद त॒वसं॑ गी॒र्भिरा॒भिः स्तु॒हि प॒र्जन्यं॒ नम॒सा वि॑वास
कनि॑क्रदद्वृष॒भो जी॒रदा॑नू रेतो॑ दधा॒त्योष॑धीषु॒ गर्भ॑म् ॥ १ ॥ वि वृ॒क्षान् ह॑न्त्यु
ह॑न्ति र॒क्षसो॒ विश्वं॑ बिभाय॒ भुव॑नं म॒हाव॑धात् । उ॒तानागा॒ ईषते॒ वृष्ण्या॑वतो॒ यत्प
र्जन्य॑ः स्त॒नय॒न् हन्ति॑ दु॒ष्कृत॑ः ॥ २ ॥ र॒थीव॒ कश॒याश्वाँ॑ अभिक्षि॒पन्ना॒विर्दू॒तान्कृ॑णु
व॒र्ष्याँ॑ अह॑ । दू॒रात्सिं॒हस्य॑ स्त॒नथा॒ उदी॑रते॒ यत्प॒र्जन्य॑ः कृणु॒ते व॒र्ष्यं॑ नभ॑ः ॥ ३
प्र वाता॒ वान्ति॑ प॒तय॑न्ति वि॒द्युत॒ उदोष॑धी॒र्जिह॑ते॒ पिन्व॑ते॒ स्व॑ः । इरा॒ विश्व॑स्मै॒
भुव॑नाय जायते॒ यत्प॒र्जन्य॑ः पृथि॒वीं रेत॒साव॑ति ॥ ४ ॥ यस्य॑ व्र॒ते पृ॑थि॒वी नन्न॑मी
यस्य॑ व्र॒ते श॒फव॒ज्जर्भु॑रीति । यस्य॑ व्र॒त ओष॑धीर्वि॒श्वरू॑पा॒ः स न॑ः पर्जन्य॒ महि॒ श
यच्छ ॥ ५ ॥ २७ ॥ दि॒वो नो॑ वृ॒ष्टिं म॑रुतो ररीध्वं॒ प्र पि॑न्वत॒ वृष्णो॒ अश्व॑स
धारा॑ः । अ॒र्वाङेतेन॑ स्तनयि॒त्नुनेह्य॒पो नि॑षि॒ञ्चन्नसु॑रः पि॒ता न॑ः ॥ ६ ॥ अ॒भि क्र
न्द स्त॒नय॒ गर्भ॒मा धा॑ उद॒न्वता॒ परि॑ दीया॒ रथे॑न । दृति॒ं सु॒कर्ष॒ विषि॑तं॒ न्य॑ञ्च
स॒मा भ॑वन्तू॒द्वतो॑ निपा॒दाः ॥ ७ ॥ म॒हान्त॒ं कोश॒मुद॑चा॒ नि षि॑ञ्च॒ स्यन्द॑न्तां कु

ल्या विर्षिताः पुरस्तात् । घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः ॥ ८ ॥ यत्पर्जन्य कनिक्रदत्स्तनयन् हंसि दुष्कृतः । प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि ॥ ९ ॥ अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उं । अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम् ॥ १० ॥ २८ ॥

॥ ८४ ॥ १-३ अत्रिर्ऋषिः ॥ पृथिवी देवता ॥ छन्दः-१, २ निचृदनुष्टुप् । ३ विराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥८४॥ बळित्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि । प्र या भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि ॥ १ ॥ स्तोमासस्त्वा विचारिणि प्रति ष्टोभन्त्यक्तुभिः । प्र या वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यस्यर्जुनि ॥ २ ॥ दृळ्हा चिद्या वनस्पतीन्क्ष्मया दर्धर्ष्योजसा । यत्ते अभ्रस्य विद्युतो दिवो वर्षन्ति वृष्टयः ॥ ३ ॥ २९ ॥

॥ ८५ ॥ १—८ अत्रिर्ऋषिः ॥ वरुणो देवता ॥ छन्दः—१, २ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ स्वराट् पङ्क्तिः । ७ ब्राह्म्युष्णिक् ॥ स्वरः—१-४, ६, ८ धैवतः । ५ पञ्चमः । ७ ऋषभः ॥

॥ ८५ ॥ प्र सम्राजे बृहदर्चा गभीरं ब्रह्म प्रियं वरुणाय श्रुताय । वि यो जघान शमितेव चर्मोपस्तिरे पृथिवीं सूर्याय॥ १ ॥ वनेषु व्य१न्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पय उस्रियासु । हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्व१ग्निं दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ ॥२॥ नीचीनबारं वरुणः कवन्धं प्र ससर्ज रोदसी अन्तरिक्षम् । तेन विश्वस्य भुवनस्य राजा यवं न वृष्टिर्व्युनत्ति भूम ॥ ३ ॥ उनत्ति भूमिं पृथिवीमुत द्यां यदा दुग्धं वरुणो वष्ट्यादित् । समभ्रेण वसत पर्वतासस्तविषीयन्तः श्रथयन्त वीराः ॥ ४ ॥ इमामू ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम् । मानेनेव तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण ॥ ५ ॥ ३० ॥ इमामू नु कवितमस्य मायां महीं देवस्य नकिरा दधर्ष । एकं यदुद्ना न पृणन्त्येनीरासिञ्चन्तीरवनयः समुद्रम् ॥ ६ ॥ अर्यम्यं वरुण मित्र्यं वा सखायं वा सदमिद्भ्रातरं वा । वेशं वा नित्यं वरुणारणं वा यत्सीमागश्चकृमा शिश्रथस्तत् ॥ ७ ॥ कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म । सर्वा ता वि ष्य शिथिरेव देवाधा ते स्याम वरुण प्रियासः ॥ ८ ॥ ३१ ॥

॥ ८६ ॥ १—६ अत्रिर्ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः—१, ४, ५ स्वराडुष्णिक् । २, ३ विराडनुष्टुप् । ६ विराट्पूर्वानुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ५ ऋषभः । २, ३, ६ गान्धारः ॥

॥८६॥ इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम् । दृळ्हा चित्स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः ॥ १ ॥ या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या । या पञ्च च र्षणीरभीन्द्राग्नी ता हवामहे ॥ २ ॥ तयोरिदमवच्छवस्तिग्मा दिद्युन्मघोनोः । प्र ति द्रुणा गभस्त्योर्गवां वृत्रघ्न एषते ॥ ३ ॥ ता वामेषे रथानामिन्द्राग्नी हवामहे पती तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा ॥ ४ ॥ ता वृधन्तावनु द्यून्मर्ताय देवा वदभा । अर्हन्ता चित्पुरो दधेंऽशेव देवावर्वते ॥ ५ ॥ एवेन्द्राग्निभ्यामहा वि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः । ता सूरिषु श्रवो बृहद्रयिं गृणत्सु दिधृतमिषं गृणत्सु दिधृतम् ॥ ६ ॥ ३२ ॥

॥ ८७ ॥ १-९ एवयामरुदात्रेय ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः-१ अ तिजगती । २, ८ स्वराड्जगती । ३, ६, ७ भुरिग्जगती । ४ निचृज्जगती । ५ ९ विराड्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ८७ ॥ प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत् । प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥१॥ प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं प्र विद्मना ब्रुवत एवयामरुत् । क्रत्वा तद्वो मरुतो नाधृषे शवो दाना मह्ना तदेषामधृष्टासो नाद्रयः ॥ २ ॥ प्र ये दिवो बृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्वानः सुभ्व एवयामरुत् । न येषामिरी सधस्थ ईष्ट आँ अग्नयो न स्वविद्युतः प्र स्यन्द्रासो धुनीनाम् ॥ ३ ॥ स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात्सदस एवयामरुत् । यदायुक्त त्मना स्वादधि ष्णुभिर्विष्पर्धसो विमहसो जिगाति शेवृधो नृभिः ॥ ४ ॥ स्वनो न वोऽमवान्रेजयद्वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत् । येना सहन्त ऋञ्जत स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः ॥ ५ ॥ ॥ ३३ ॥ अपारो वो महिमा वृद्धशवसस्त्वेषं शवोऽवत्वेवयामरुत् । स्थातारो हि प्रसितौ सन्दृशि स्थन ते न उरुष्यता निदः शुशुक्वांसो नाग्नयः ॥ ६ ॥ ते रुद्रासः सुमखा अग्नयो यथा तुविद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत् । दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धास्यद्भुतैनसाम् ॥ ७ ॥ अद्वेषो नो मरुतो गातुमे तन श्रोता हवं जरितुरेवयामरुत् । विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन स्मद्रथ्यो दंसनाप द्वेषांसि सनुतः ॥ ८ ॥ गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरक्ष एवयामरुत् । ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः ॥ ९ ॥ ३४ ॥ ६ ॥ ५ ॥

॥ इति पञ्चमं मण्डलं समाप्तम् ॥

# अथ षष्ठं मण्डलम् ॥

॥ १ ॥ १–१३ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ७, १३ भुरिक् पङ्क्तिः । २ स्वराट् पङ्क्तिः । ५ पङ्क्तिः । ३, ४, ६, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप् । ८, १० त्रिष्टुप् । ९ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५, ७, १३ पञ्चमः । ३, ४, ६, ८—१२ धैवतः ॥

॥ १ ॥ त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोतास्या धियो अभवो दस्म होता । त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्यै ॥१॥ अधा होता न्यसीदो यजीयानिळस्पद इषयन्नीड्यः सन् । तं त्वा नरः प्रथमं देवयन्तो महो राये चितयन्तो अनु ग्मन् ॥२॥ वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यै३स्त्वे रयिं जागृवांसो अनु ग्मन् । रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम् ॥ ३ ॥ पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन्नमृक्तम् । नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त सन्दृष्टौ ॥ ४ ॥ त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्यां त्वां राय उभयासो जनानाम् । त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम् ॥ ५ ॥ ३५ ॥ सपर्येण्यः स प्रियो विक्ष्व१ग्निर्होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् । तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसमुप ज्ञुबाधो नमसा सदेम ॥ ६ ॥ तं त्वा वयं सुध्यो३ नव्यमग्ने सुम्नायव ईमहे देवयन्तः । त्वं विशो अनयो दीद्यानो दिवो अग्ने बृहता रोचनेन ॥ ७ ॥ विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनां नितोशनं वृषभं चर्षणीनाम् । प्रेतीषणिमिषयन्तं पावकं राजन्तमग्निं यजतं रयीणाम् ॥ ८ ॥ सो अग्न ईजे शशमे च मर्तो यस्त आनट् समिधा हव्यदातिम् । य आहुतिं परि वेदा नमोभिर्विश्वेत्स वामा दधते त्वोतः ॥ ९ ॥ अस्मा उ ते महि महे विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः । वेदी सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैरा ते भद्रायां सुमतौ यतेम ॥ १० ॥ आ यस्ततन्थ रोदसी वि भासा श्रवोभिश्च श्रवस्य१स्तरुत्रः । बृहद्भिर्वाजैः स्थविरेभिरस्मे रेवद्भिरग्ने वितरं वि भाहि

॥ ११ ॥ नूवद्धसो सदमिद्धेह्यस्मे भूरि तोकाय तनयाय पश्वः । पूर्वीरिषो बृहती-
रारेअघा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ॥ १२ ॥ पुरूण्यग्ने पुरुधा त्वाया वसूनि
राजन्वसुता ते अश्याम् । पुरूणि हि त्वे पुरुवार सन्त्यग्ने वसु विधते राजनि
त्वे ॥ १३ ॥ ३६ ॥ ४ ॥

॥ २ ॥ १-११ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, ९ भुरिगुष्णिक् । २ स्वराडुष्णिक् । ७ निचृदुष्णिक् । ८ उष्णिक् । ३, ४ अनुष्टुप् । ५,६,१० निचृदनुष्टुप् । ११ भुरिगतिजगती ॥ स्वरः-१,२,७-९ ऋषभः । ३-६,१० गान्धारः । ११ निषादः ॥

॥ २ ॥ त्वं हि क्षैतवद्यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे । त्वं विचर्षणे श्रवो वसो
पुष्टिं न पुष्यसि ॥ १ ॥ त्वां हि ष्मा चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिरीळते । त्वां वाजी
यात्यवृको रजस्तूर्विश्वचर्षणिः ॥ २ ॥ सजोषस्त्वा दिवो नरो यज्ञस्य केतुमिन्धते ।
यद्ध स्य मानुषो जनः सुम्नायुर्जुह्वे अध्वरे ॥ ३ ॥ ऋधद्यस्ते सुदानवे धिया मर्तः
शशमते । ऊती ष बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ॥ ४ ॥ समिधा यस्त आ-
हुतिं निशितिं मर्त्यो नशत् । वयावन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम् ॥ ५ ॥१॥
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि षञ्छुक्र आततः । सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक
रोचसे ॥ ६ ॥ अधा हि विक्ष्वीड्योऽसि प्रियो नो अतिथिः । रण्वः पुरीव जूर्यः
सूनुर्न त्रययाय्यः ॥ ७ ॥ क्रत्वा हि द्रोणे अज्यसेऽग्ने वाजी न कृत्व्यः । परि-
ज्मेव स्वधा गयोऽत्यो न ह्वार्यः शिशुः ॥ ८ ॥ त्वं त्या चिदच्युताग्ने पशुर्न यव-
से । धामा ह यत्ते अजर वना वृश्चन्ति शिक्वसः ॥ ९ ॥ वेषि ह्यध्वरीयतामग्ने हो-
ता दमे विशाम । समृधो विशपते कृणु जुषस्व हव्यमङ्गिरः ॥ १० ॥ अच्छा नो
मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः । वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नॄन्द्वि-
षो अंहांसि दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ॥ ११ ॥ २ ॥

॥३॥ १-८ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, ३,४ त्रिष्टुप् । २,५,६,७ निचृत्त्रिष्टुप् । ८ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-७ धैवतः । ८ पञ्चमः॥

॥ ३ ॥ अग्ने स क्षेषदृतपा ऋतेजा उरु ज्योतिर्नशते देवयुष्टे । यं त्वं मि-
त्रेण वरुणः सजोषा देव पासि त्यजसा मर्तमंहः ॥ १ ॥ ईजे यज्ञेभिः शशमे
शमीभिर्ऋधद्वारायाग्नये ददाश । एवा चन तं यशसामजुष्टिर्नांहो मर्तं नशते न

प्रदृप्तिः ॥ २ ॥ सूरो न यस्य दृशतिररेपा भीमा यदेति शुचतस्त आ धीः । हेषस्वतः शुरुधो नायमक्तोः कुत्रा चिद्रण्वो वसतिर्वनेजाः ॥ ३ ॥ तिग्मं चिदेम महि वर्पो अस्य भसदश्वो न यमसान आसा । विजेहमानः परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत् ॥ ४ ॥ स इदस्तेव प्रति धादसिष्यञ्छिशीत तेजोऽयसो न धाराम् । चित्रध्रजतिररतिर्यो अक्तोर्वेर्न द्रुषद्वा रघुपत्मजंहाः ॥ ५ ॥ ३ ॥ स ईं रेभो न प्रति वस्त उस्राः शोचिषा रारपीति मित्रमहाः । नक्तं य ईमरुषो यो दिवा नॄनमर्त्यो अरुषो यो दिवा नॄन् ॥ ६ ॥ दिवो न यस्य विधतो नवीनोद्वृषा रुक्ष ओषधीषु नूनोत् । घृणा न यो ध्रजसा पत्मना यन्ना रोदसी वसुना दं सुपत्नी ॥ ७ ॥ धायोभिर्वा यो युज्येभिरर्कैर्विद्युन्न दविद्योत्स्वेभिः शुष्मैः । शर्धो वा यो मरुतां ततक्ष ऋभुर्न त्वेषो रभसानो अद्यौत् ॥ ८ ॥ ४ ॥

॥ ४ ॥ १—८ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २, ५, ६, ७ भुरिक्पङ्क्तिः । ३,४ निचृत्पङ्क्तिः । ८ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ धैवतः । २—८ पञ्चमः ॥

॥ ४ ॥ यथा होतर्मनुषो देवताता यज्ञेभिः सूनो सहसो यजासि । एवा नो अद्य समना समानानुशन्नग्न उशतो यक्षि देवान् ॥ १ ॥ स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोरग्निर्वन्दारु वेद्यश्चनो धात् । विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषूषर्भुद्भूदतिथिर्जातवेदाः ॥ २ ॥ द्यावो न यस्य पनयन्त्यभ्वं भासांसि वस्ते सूर्यो न शुक्रः । वि य इनोत्यजरः पावकोऽश्नस्य चिच्छिश्नथत्पूर्व्याणि ॥ ३ ॥ वद्मा हि सूनो अस्यद्मसद्वा चक्रे अग्निर्जनुषाज्मान्नम् । स त्वं न ऊर्जसन ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः ॥ ४ ॥ नितिक्ति यो वारणमन्नमत्ति वायुर्न राष्ट्र्यत्येत्यक्तून् । तुर्याम यस्त आदिशामरातीरत्यो न हुतः पततः परिहुत् ॥ ५ ॥ ५ ॥ आ सूर्यो न भानुमद्भिरर्कैरग्ने ततन्थ रोदसी वि भासा । चित्रो नयत्परि तमांस्यक्तः शोचिषा पत्मन्नौशिजो न दीयन् ॥ ६ ॥ त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैर्ववृमहे महि नः श्रोष्यग्ने । इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः ॥ ७ ॥ नू नो अग्नेऽवृकेभिः स्वस्ति वेषि रायः पथिभिः पर्ष्यंहः । ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुम्नं मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ८ ॥ ६ ॥

॥ ५ ॥ १—७ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ४,

त्रिष्टुप् । २, ५, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४—
धैवतः । ३ पञ्चमः ॥

॥ ५ ॥ हुवे वः सूनुं सहसो युवानमद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् । य इन्वति
द्रविणानि प्रचेता विश्ववाराणि पुरुवारो अध्रुक् ॥१॥ त्वे वसूनि पुर्वणीक होत
र्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियासः । क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्सं सौभगानि द
धिरे पावके ॥ २ ॥ त्वं विक्षु प्रदिवः सीद आसु क्रत्वा रथीरभवो वार्याणाम्
अत इनोषि विधते चिकित्वो व्यानुषग्जातवेदो वसूनि ॥३॥ यो नः सनुत्यो अ
भिदासदग्ने यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात् । तमजरेभिर्वृषभिस्तव स्वैस्तपा तपिष्ठ
तपसा तपस्वान् ॥ ४ ॥ यस्ते यज्ञेन समिधाय उक्थैरर्केभिः सूनो सहसो ददा
शत् । स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति ॥ ५ ॥ स तत्कृ
धीषितस्तूयमग्ने स्पृधो बाधस्व सहसा सहस्वान् । यच्छस्यसे द्युभिरक्तो वचोभि
स्तज्जुषस्व जरितुर्घोषि मन्म ॥ ६ ॥ अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयि
रयिवः सुवीरम् । अश्याम वाजमभि वाजयन्तोऽश्याम द्युम्नमजराजरं ते ॥७॥७

॥ ६ ॥ १—७ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१
२, ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ६, ७ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६ ॥ प्र नव्यसा सहसः सूनुमच्छा यज्ञेन गातुमव इच्छमानः । वृश्चद्व
कृष्णयामं रुशन्तं वीती होतारं दिव्यं जिगाति ॥ १ ॥ स श्वितानस्तन्यतू रोच
नस्था अजरेभिर्नानदद्भिर्यविष्ठः । यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरनुयाति
भर्वन् ॥ २ ॥ वि ते विष्वग्वातजूतासो अग्ने भामासः शुचे शुचयश्चरन्ति । तुवि
म्रक्षासो दिव्या नवग्वा वना वनन्ति धृषता रुजन्तः ॥ ३ ॥ ये ते शुक्रासः शु
चयः शुचिष्मः क्षां वपन्ति विषितासो अश्वाः । अध भ्रमस्त उर्विया वि भाति या
तयमानो अधि सानु पृश्नेः ॥ ४ ॥ अध जिह्वा पापतीति प्र वृष्णो गोषुयुधो ना
शनिः सृजाना । शूरस्येव प्रसितिः क्षातिरग्नेर्दुर्वर्तुर्भीमो दयते वनानि ॥५ ॥ अ
भानुना पार्थिवानि ज्रयांसि महस्तोदस्य धृषता ततन्थ । स बाधस्वाप भया स
होभिः स्पृधो वनुष्यन्वनुषो नि जूर्व ॥६॥ स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्ष
चित्रतमं वयोधाम् । चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्र चन्द्राभिर्गृणते युवस्व ॥७॥८

॥ ७ ॥ १–७ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः

१ त्रिष्टुप् । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ७ स्वराट् त्रिष्टुप् । ३ निचृत्पङ्क्तिः । ४ स्वराट् पङ्क्तिः । ५ पङ्क्तिः । ६ जगती ॥ स्वरः—१, २, ७ धैवतः । ३–५ पञ्चमः । ६ निषादः ॥

॥ ७ ॥ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् । कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥ १ ॥ नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त । वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः ॥ २ ॥ त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने त्वद्वीरासो अभिमातिषाहः । वैश्वानर त्वमस्मासु धेहि वसूनि राजन्त्स्पृहयाय्याणि ॥३॥ त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते । तव क्रतुभिरमृतत्वमायन्वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः ॥४॥ वैश्वानर तव तानि व्रतानि महान्यग्ने नकिरा दधर्ष । यज्जायमानः पित्रोरुपस्थेऽविन्दः केतुं वयुनेष्वह्नाम् ॥ ५ ॥ वैश्वानरस्य विमितानि चक्षसा सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना । तस्येदु विश्वा भुवनाधि मूर्धनि वया इव रुरुहुः सप्त विस्रुहः ॥ ६ ॥ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः । परि यो विश्वा भुवनानि पप्रथेऽदब्धो गोपा अमृतस्य रक्षिता ॥ ७ ॥ ९ ॥

॥ ८ ॥ १–७ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः—१, ४ जगती । ६ विराड् जगती । २, ३, ५ भुरिक्त्रिष्टुप् । ७ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६ निषादः । २, ३, ५, ७ धैवतः ॥

॥ ८ ॥ पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः । वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः सोम इव पवते चारुरग्नये ॥ १ ॥ स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत । व्यन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत् ॥ २ ॥ व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो अद्भुतोऽन्तर्वावदकृणोज्ज्योतिषा तमः । वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद्वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम् ॥ ३ ॥ अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत विशो राजानमुप तस्थुर्ऋग्मियम् । आ दूतो अग्निमभरद्विवस्वतो वैश्वानरं मातरिश्वा परावतः ॥ ४ ॥ युगेयुगे विदथ्यं गृणद्भ्योऽग्ने रयिं यशसं धेहि नव्यसीम् । पव्येव राजन्नघशंसमजर नीचा नि वृश्च वनिनं न तेजसा ॥ ५ ॥ अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम् । वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः ॥६ ॥ अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् । रक्षा च नो ददुषां शर्धो अग्ने वैश्वानर प्र च तारीः स्तवानः ॥ ७ ॥ १० ॥

॥ ६ ॥ १-७ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप् । ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ६ त्रिष्टुप् । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ३, ४ पङ्क्तिः । ७ भुरिग्जगती ॥ स्वरः—१, ५, ६ धैवतः । २-४ पञ्चमः । ७ निषादः ॥

॥ ६ ॥ अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः । वैश्वानरो जायमानो न राजावातिरज्ज्योतिषाग्निस्तमांसि ॥ १ ॥ नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं न यं वयन्ति समरेऽतमानाः । कस्य स्वित्पुत्र इह वक्त्वानि परो वदात्यवरेण पित्रा ॥२॥ स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति । य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन् ॥ ३ ॥ अयं होता प्रथमः पश्यतेममिदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु । अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्यस्तन्वा३ वर्धमानः ॥४॥ ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कं मनो जविष्ठं पतयत्स्वन्तः । विश्वे देवाः समनसः सकेता एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु ॥ ५ ॥ वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वी३दं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् । वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये ॥ ६ ॥ विश्वे देवा अनमस्यन्भियानास्त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम् । वैश्वानरोऽवतूतये नोऽमर्त्योऽवतूतये नः ॥ ७ ॥ ११ ॥

॥ १० ॥ १-७ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । ४ आर्षी पङ्क्तिः । २, ३ ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् । ७ प्राजापत्या बृहती ॥ स्वरः—१, ४ पञ्चमः । २, ३, ५ ६, धैवतः । ७ मध्यमः ॥

॥ १० ॥ पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निमध्वरे दधिध्वम् । पुर उक्थेभिः स हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः ॥ १ ॥ तमु द्युमः पुर्वणीक होतरग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः । स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचि मतयः पवन्ते ॥ २ ॥ पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु यो अग्नये ददाश विप्र उक्थैः । चित्राभिस्तमूतिभिश्चित्रशोचिर्व्रजस्य साता गोमतो दधाति ॥ ३॥ आ यः पप्रौ जायमान उर्वी दूरेदृशा भासा कृष्णाध्वा । अध बहु चित्तम ऊर्म्यायास्तिरः शोचिषा ददृशे पावकः ॥ ४ ॥ नू नश्चित्रं पुरुवाजाभिरूती अग्ने रयिं मघवद्भ्यश्च धेहि ये राधसा श्रवसा चात्यन्यान्त्सुवीर्येभिश्चाभि सन्ति जनान् ॥५॥ इमं यज्ञं चनो धा अग्न उशन्यं त आसानो जुहुते हविष्मान् । भरद्वाजेषु दधिषे सुवृक्तिमवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ ॥ ६ ॥ वि द्वेषांसीनुहि वर्धयेळां मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ७ ॥ १२ ॥

॥ ११ ॥ १-६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ६ विराट्त्रिष्टुप् । २ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१, ३—६ धैवतः । २ पञ्चमः ॥

॥ ११ ॥ यजस्व होतरिषितो यजीयानग्ने बाधो मरुतां न प्रयुक्ति । आ नो मित्रावरुणा नासत्या द्यावा होत्राय पृथिवी ववृत्याः ॥ १ ॥ त्वं होता मन्द्रतमो नो अध्रुगन्तर्देवो विदथा मर्त्येषु । पावकया जुह्वा वह्निरासाग्ने यजस्व तन्वं तव स्वाम् ॥ २ ॥ धन्या चिद्धि त्वे धिषणा वष्टि प्र देवाञ्जन्म गृणते यजध्यै । वेपिष्ठो अङ्गिरसां यद्ध विप्रो मधु छन्दो भनति रेभ इष्टौ ॥ ३ ॥ अदिद्युतत्स्वपाको विभावाग्ने यजस्व रोदसी उरूची । आयुं न यं नमसा रातहव्या अञ्जन्ति सुप्रयसं पञ्च जनाः ॥ ४ ॥ वृञ्जे ह यन्नमसा बर्हिरग्नावयामि स्रुग्घृतवती सुवृक्तिः । अम्यक्षि सद्म सदने पृथिव्या अश्रायि यज्ञः सूर्ये न चक्षुः ॥ ५ ॥ दशस्या नः पुर्वणीक होतर्देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः । रायः सूनो सहसो वावसाना अति स्रसेम वृजनं नांहः ॥ ६ ॥ १३ ॥

॥ १२ ॥ १-६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१ त्रिष्टुप् । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ भुरिक्पङ्क्तिः । ४, ६ निचृत्पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१, २ धैवतः । ३-६ पञ्चमः ॥

॥ १२ ॥ मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो राळग्निस्तोदस्य रोदसी यजध्यै । अयं स सूनुः सहस ऋतावा दूरात्सूर्यो न शोचिषा ततान ॥ १ ॥ आ यस्मिन्त्वे स्वपाके यजत्र यक्षद्राजन्त्सर्वतातेव नु द्यौः । त्रिषधस्थस्ततरुषो न जंहो हव्या मघानि मानुषा यजध्यै ॥ २ ॥ तेजिष्ठा यस्यारतिर्वनेराट् तोदो अध्वन्न वृधसानो अद्यौत् । अद्रोघो न द्रविता चेतति त्मन्नमर्त्योऽवर्त्र ओषधीषु ॥ ३ ॥ सास्माकेभिरेतरी न शूषैरग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः । द्र्वन्नो वन्वन् क्रत्वा नार्वोस्रः पितेव जारयायि यज्ञैः ॥ ४ ॥ अध स्मास्य पनयन्ति भासो वृथा यत्तक्षदनुयाति पृथ्वीम् । सद्यो यः स्यन्द्रो विषितो धवीयानृणो न तायुरति धन्वा राट् ॥ ५ ॥ स त्वं नो अर्वन्निदाया विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिधानः । वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ १३ ॥ १-६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१

पङ्क्तिः । २ स्वराट्पङ्क्तिः । ३, ४ विराट्त्रिष्टुप् । ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१
२ पञ्चमः । ३–६ धैवतः ॥

॥ १३ ॥ त्वद्विश्वा॑ सुभग॒ सौभ॑गा॒न्यग्ने॒ वि य॑न्ति व॒निनो॒ न व॒याः । श्रुष्टी
र॒यिर्वाजो॑ वृत्र॒तूर्ये॑ दि॒वो वृष्टि॒रीड्यो॑ री॒तिर॒पाम् ॥ १ ॥ त्वं भगो॑ न॒ आ हि र
त्न॑मि॒षे परि॑ज्मेव क्षयसि द॒स्मव॑र्चाः । अग्ने॑ मि॒त्रो न बृ॑ह॒त ऋ॒तस्यासि॑ क्ष॒त्ता वा॒मस्य
दे॒व भूरे॑ः ॥ २ ॥ स सत्प॑ति॒ः शव॑सा हन्ति वृ॒त्रमग्ने॒ विप्रो॒ वि प॒णेर्भ॑र्ति॒ वाज॑म्
यं त्वं प्र॑चेत ऋतजात रा॒या स॒जोषा॒ नप्त्रा॒पां हि॒नोषि॑ ॥ ३ ॥ यस्ते॑ सूनो सहसो
गी॒र्भिरु॒क्थैर्य॒ज्ञैर्मर्तो॒ निशि॑तिं वे॒द्यान॑ट् । विश्वं॒ स दे॑व॒ प्रति॒ वार॑मग्ने ध॒त्ते धा॒न्यं॑
पत्य॑ते वस॒व्यैः॑ ॥ ४ ॥ ता नृभ्य॒ आ सौ॑श्रव॒सा सु॒वीराग्ने॑ सूनो सहसः पु॒ष्यसे
धाः । कृ॒णोषि॒ यच्छव॑सा॒ भूरि॑ प॒श्वो वयो॒ वृका॑या॒रये॒ जसु॑रये ॥ ५ ॥ व॒द्मा सू॑नो
सहसो नो॒ विहा॑या॒ अग्ने॑ तो॒कं तन॑यं वा॒जिनो॑ दाः । विश्वा॑भिर्गी॒र्भिर॒भि पू॒र्तिम॑श्याम्
मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीराः॑ ॥ ६ ॥ १५ ॥

॥ १४ ॥ १–६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१
३ भुरिगुष्णिक् । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ अनुष्टुप् । ५ विराडनुष्टुप् । ६ भुरिगतिजगती ।
स्वरः–१, ३ ऋषभः । २ धैवतः । ४, ५ गान्धारः । ६ निषादः ॥

॥ १४ ॥ अ॒ग्ना यो मर्त्यो॒ दुवो॒ धियं॑ जु॒जोष॑ धी॒तिभिः॑ । भस॒न्नु ष प्र पू
र्व्य इषं॑ वुरी॒ताव॑से ॥ १ ॥ अ॒ग्निरिद्धि प्रचे॑ता अ॒ग्निर्वे॒धस्त॑म॒ ऋषि॑ः । अ॒ग्निं होता॑
रमीळते य॒ज्ञेषु॒ मनु॑षो॒ विशः॑ ॥ २ ॥ नाना॒ ह्य१॒॑ग्नेऽव॑से॒ स्पर्ध॑न्ते॒ रायो॑ अ॒र्यः । तु
र्व॑न्तो॒ दस्यु॑मा॒यवो॑ व्र॒तैः सीक्ष॑न्तो अव्र॒तम् ॥ ३ ॥ अ॒ग्निर॒प्सामृ॑ती॒षहं॑ वी॒रं द॑दाति
सत्प॑तिम् । यस्य॒ त्रस॑न्ति॒ शव॑सः स॒ञ्चक्षि॒ शत्र॑वो भि॒या ॥ ४ ॥ अ॒ग्निर्हि वि॒द्मना
नि॒दो दे॒वो मर्त॑मुरु॒ष्यति॑ । स॒हावा॒ यस्यावृ॑तो र॒यिर्वाजे॒ष्ववृ॑तः ॥ ५ ॥ अच्छा॑ नो
मित्रमहो देव दे॒वानग्ने॒ वोचः॑ सुम॒तिं रोद॑स्योः । वी॒हि स्व॒स्तिं सु॑क्षि॒तिं दि॒वो नॄ
न्द्वि॒षो अंहां॑सि दुरि॒ता त॑रेम॒ ता त॑रेम॒ तवाव॑सा तरेम ॥ ६ ॥ १६ ॥

॥ १५ ॥ १–१९ भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा ऋषिः ॥ अग्निर्दे
वता ॥ छन्दः–१, २, ५ निचृज्जगती । ३ निचृदतिजगती । ७ जगती ।
विराड्जगती । ४, १४ भुरिक् त्रिष्टुप् । ९, १०, ११, १६, १९ त्रिष्टुप् । १
विराट् त्रिष्टुप् । ६ निचृदतिशक्वरी । १२ पङ्क्तिः । १५ ब्राह्मीबृहती । १

विराडनुष्टुप् । १८ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१–३, ५, ७, ८ निषादः । ४, ६, ९, १०, ११, १३, १४, १६, १९ धैवतः । १२ पञ्चमः । १५ मध्यमः । १७, १८ गान्धारः ॥

॥१५॥ इममू षु वो अतिथिमुषर्बुधं विश्वासां विशां पतिमृञ्जसे गिरा । वेतीद्दिवो जनुषा कच्चिदा शुचिर्ज्योक्चिदत्ति गर्भो यदच्युतम् ॥ १ ॥ मित्रं न यं सुधितं भृगवो दधुर्वनस्पतावीड्यमूर्ध्वशोचिषम् । स त्वं सुप्रीतो वीतहव्ये अद्भुत प्रशस्तिभिर्महयसे दिवेदिवे ॥ २ ॥ स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूरर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः । रायः सूनो सहसो मर्त्येष्वा छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः ॥ ३ ॥ द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरमग्निं होतारं मनुषः स्वध्वरम् । विप्रं न द्युक्षवचसं सुवृक्तिभिर्हव्यवाहमरतिं देवमृञ्जसे ॥ ४ ॥ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्रुरुच उषसो न भानुना । तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥ ५ ॥ १७ ॥ अग्निमग्निं वः समिधा दुवस्यत प्रियम्प्रियं वो अतिथिं गृणीषणि । उप वो गीर्भिरमृतं विवासत देवो देवेषु वनते हि वार्यं देवो देवेषु वनते हि नो दुवः ॥ ६ ॥ समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् । विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम् ॥ ७ ॥ त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम् । देवासश्च मर्तासश्च जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे ॥ ८ ॥ विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे । यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहेऽध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव ॥९॥ तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चमविद्वांसो विदुष्टरं सपेम । स यक्षद्विश्वा वयुनानि विद्वान्प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत् ॥१०॥१८॥ तमग्ने पास्युत तं पिपर्षि यस्त आनट् कवये शूर धीतिम् । यज्ञस्य वा निशितिं वोदितिं वा तमित्पृणक्षि शवसोत राया ॥११॥ त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात् । सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री ॥ १२ ॥ अग्निर्होता गृहपतिः स राजा विश्वा वेद जनिमा जातवेदाः । देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा ॥ १३ ॥ अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः पावकशोचे वेष्ट्वं हि यज्वा । ऋता यजासि महिना वि यद्भूर्हव्या वह यविष्ठ या ते अद्य ॥ १४ ॥ अभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यो नि त्वा दधीत रोदसी यजध्यै । अवा नो मघवन्वाजसातावग्ने विश्वानि दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ॥ १५ ॥ १९ ॥ अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैरूर्णावन्तं प्रथमः सीद योनिम् । कुलायिनं घृतवन्तं सवित्रे यज्ञं नय यजमानाय

साधु ॥ १६ ॥ इममु त्यमथर्ववदग्निं मन्थन्ति वेधसः । यमङ्कूयन्तमानयन्नमू
श्याभ्यः ॥ १७ ॥ जनिष्वा देववीतये सर्वताता स्वस्तये । आ देवान् व
त्यमृताँ ऋतावृधो यज्ञं देवेषु पिस्पृशः ॥ १८ ॥ वयमु त्वा गृहपते जनानामग्
अकर्म्म समिधा बृहन्तम् । अस्थूरि नो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नस्तेजसा स
शिशाधि ॥ १९ ॥ २० ॥ १ ॥

॥ १६ ॥ १–४८ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१
६, ७ आर्ची उष्णिक् । २, ३, ४, ५, ८, ९, ११, १३, १४, १५, १७, १८
२१, २४, २५, २८, ३२, ४० निचृद्गायत्री । १०, १९, २०, २२, २३, २९
३१, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४१ गायत्री । २६, ३० विराड्गायत्री
१२, १६, ३३, ४२, ४४ साम्नीत्रिष्टुप् । ४३, ४५ त्रिचृत्रिष्टुप् । २७ आर्चीप
ङ्क्तिः । ४६ भुरिक् पङ्क्तिः । ४७, ४८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, ७ ऋषभः
२—५, ८—११, १३—१५, १७—२६, २८—३२, ३४—४१, षड्जः
१२, १६, २७, ३३, ४२—४६ पञ्चमः । ४७, ४८ गान्धारः ॥

॥ १६ ॥ त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मानुषे जने ॥ १ ॥
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः । आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ २ ॥ वेत्था हि
वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा । अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥ ३ ॥ त्वामीळे अध द्विता
भरतो वाजिभिः शुनम् । ईजे यज्ञेषु यज्ञियम् ॥ ४ ॥ त्वमिमा वार्या पुरु दिवो
दासाय सुन्वते । भरद्वाजाय दाशुषे ॥ ५ ॥ २१ ॥ त्वं दूतो अमर्त्य आ वह
दैव्यं जनम् । शृण्वन्विप्रस्य सुष्टुतिम् ॥ ६ ॥ त्वामग्ने स्वाध्यो३ मर्तासो देववीत
ये । यज्ञेषु देवमीळते ॥७॥ तव प्र यक्षि सन्दृशमुत क्रतुं सुदानवः । विश्वे जुषन्त
कामिनः ॥ ८ ॥ त्वं होता मनुर्हितो वह्निरासा विदुष्टरः । अग्ने यक्षि दिवो विशः
॥ ९ ॥ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि
॥ १० ॥ २२ ॥ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य
॥ ११ ॥ स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि । बृहदग्ने सुवीर्यम् ॥ १२ ॥
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत । मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥ १३ ॥ तमु त्वा
दध्यङ्ङृषिः पुत्र ईधे अथर्वणः । वृत्रहणं पुरन्दरम् ॥ १४ ॥ तमु त्वा पाथ्यो वृषा
समीधे दस्युहन्तमम् । धनञ्जयं रणेरणे ॥ १५ ॥ २३ ॥ एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न
इत्थेतरा गिरः । एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥ १६ ॥ यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस

उत्त॑रम् । तत्रा॒ सदः॑ कृणवसे ॥ १७ ॥ न॒हि ते॑ पू॒र्तम॑क्षि॒पद्भुव॑न्नेमानां वसो । अथा॒
दुवो॑ वनवसे ॥ १८ ॥ अ॒ग्निर॑गामि॒ भार॑तो वृत्र॒हा पु॑रु॒चेत॑नः । दिवो॑दासस्य॒
सत्प॑तिः ॥ १९ ॥ स हि विश्वाति॒ पार्थि॑वा र॒यिं दाश॑न्महित्व॒ना । व॒न्वन्नवा॑तो॒
अस्तृ॑तः ॥ २० ॥ २४ ॥ स प्र॑त्न॒वन्नवी॑य॒साग्ने॑ द्यु॒म्नेन॑ सं॒यता॑ । बृ॒हत्त॑तन्थ भा॒-
नुना॑ ॥ २१ ॥ प्र वः॑ सखायो अ॒ग्नये॒ स्तोमं॑ य॒ज्ञं च॑ धृष्णु॒या । अर्च॒ गाय॑ च वे॒धसे॑
॥ २२ ॥ स हि यो मानु॑षा यु॒गा सीद॒द्धोता॑ क॒विक्र॑तुः । दू॒तश्च॑ हव्य॒वाह॑नः ॥ २३ ॥
ता राजा॑ना॒ शुचि॑व्रतादि॒त्यान्मारु॑तं ग॒णम् । वसो॒ यक्षी॒ह रोद॑सी ॥ २४ ॥ वस्वी॑
ते अग्ने॒ सन्दृ॑ष्टिरिषय॒ते मर्त्या॑य । ऊर्जो॑ नपाद॒मृत॑स्य ॥ २५ ॥ २५ ॥ क्रत्वा॒ दा
अ॑स्तु॒ श्रेष्ठो॒ऽद्य त्वा॑ व॒न्वन्त्सु॒रेक्णाः॑ । मर्त॑ आनाश सुवृ॒क्तिम् ॥ २६ ॥ ते ते॑ अग्ने॒
त्वोता॑ इ॒षय॑न्तो॒ विश्व॒मायुः॑ । तर॑न्तो अ॒र्यो अरा॑तीर्व॒न्वन्तो॑ अ॒र्यो अरा॑तीः ॥ २७ ॥
अ॒ग्निस्ति॒ग्मेन॑ शो॒चिषा॒ यास॒द्विश्वं॒ न्य१॒॑त्रिण॑म् । अ॒ग्निर्नो॑ वनते र॒यिम् ॥ २८ ॥
सु॒वीरं॑ र॒यिमा भ॑र॒ जात॑वेदो॒ विच॑र्षणे । ज॒हि रक्षां॑सि सुक्रतो ॥ २९ ॥ त्वं नः॑
पा॒ह्यंह॑सो॒ जात॑वेदो अघाय॒तः । रक्षा॑ णो ब्रह्मणस्कवे ॥ ३० ॥ २६ ॥ यो नो॑
अग्ने दु॒रेव॒ आ मर्तो॑ व॒धाय॒ दाश॑ति । तस्मा॑न्नः पा॒ह्यंह॑सः ॥ ३१ ॥ त्वं तं दे॑व जि॒ह्वया॒ परि॑
बाधस्व दु॒ष्कृत॑म् । मर्तो॒ यो नो॒ जिघां॑सति ॥ ३२ ॥ भ॒रद्वा॑जाय स॒प्रथः॒ शर्म॑ यच्छ
सहन्त्य । अग्ने॒ वरे॑ण्यं॒ वसु॑ ॥ ३३ ॥ अ॒ग्निर्वृ॒त्राणि॑ जङ्घनद्द्रविण॒स्युर्वि॑प॒न्यया॑ ।
समि॑द्धः शु॒क्र आहु॑तः ॥ ३४ ॥ गर्भे॑ मा॒तुः पि॒तुष्पि॒ता वि॑दिद्यु॒तानो॑ अ॒क्षरे॑ । सी-
द॑न्नृ॒तस्य॒ योनि॒मा ॥ ३५ ॥ २७ ॥ ब्रह्म॑ प्र॒जाव॒दा भ॑र॒ जात॑वेदो॒ विच॑र्षणे । अग्ने॒
यद्दी॒दय॑द्दि॒वि ॥ ३६ ॥ उप॑ त्वा र॒ण्वसं॑दृशं॒ प्रय॑स्वन्तः सहस्कृत । अग्ने॑ ससृ॒-
ज्महे॒ गिरः॑ ॥ ३७ ॥ उप॑ छा॒यामि॑व॒ घृणे॒रग॑न्म॒ शर्म॑ ते व॒यम् । अग्ने॒ हिर॑ण्यऽ-
सन्दृशः ॥ ३८ ॥ य उ॒ग्र इ॑व शर्य॒हा ति॒ग्मशृ॑ङ्गो॒ न वंस॑गः । अग्ने॒ पुरो॑ रु॒रोजि॑थ
॥ ३९ ॥ आ यं हस्ते॒ न खा॒दिनं॒ शिशुं॑ जा॒तं न बिभ्र॑ति । वि॒शाम॒ग्निं स्व॑ध्व॒रम्
॥ ४० ॥ २८ ॥ प्र दे॒वं दे॒ववी॑तये॒ भर॑ता वसु॒वित्त॑मम् । आ स्वे योनौ॒ नि षी॑-
दतु ॥ ४१ ॥ आ जा॒तं जा॒तवे॑दसि प्रि॒यं शि॑शी॒ताति॑थिम् । स्यो॒न आ गृ॒हप॑तिम्
॥ ४२ ॥ अग्ने॑ यु॒क्ष्वा हि ये तवाश्वा॑सो देव सा॒धवः॑ । अरं॒ वह॑न्ति म॒न्यवे॑ ॥ ४३ ॥
अच्छा॑ नो या॒ह्या व॑हा॒भि प्रयां॑सि वी॒तये॑ । आ दे॒वान्त्सोम॑पीतये ॥ ४४ ॥ उद॑ग्ने
भारत द्यु॒मदज॑स्रेण॒ दवि॑द्युतत् । शोचा॒ वि भा॑ह्यजर ॥ ४५ ॥ २९ ॥ वी॒ती यो
दे॒वं मर्तो॑ दुव॒स्येद॒ग्निमी॑ळीताध्व॒रे ह॒विष्मा॑न् । होता॑रं सत्य॒यजं॒ रोद॑स्योरुत्ता॒नह॑स्तो॒
नम॒सा वि॑वासेत् ॥ ४६ ॥ आ ते॑ अग्न ऋ॒चा ह॒विर्हृ॒दा त॒ष्टं भ॑रामसि । ते ते॑ भ-

वन्तूक्षणं ऋषभासो वशा उत ॥ ४७ ॥ अग्निं देवासो अग्रियमिन्धते वृत्रहन्तमम्
येना वसून्याभृता तृळ्हा रक्षांसि वाजिना ॥ ४८ ॥ ३० ॥ ५ ॥

॥ १७ ॥ १—१५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
१, २, ३, ४, ११ त्रिष्टुप् । ५, ६, ८, विराट्त्रिष्टुप् । ७, ९, १०, १२, १४
निचृत्त्रिष्टुप् । १३ स्वराट्पङ्क्तिः । १५ आर्च्युष्णिक् ॥ स्वरः—१-१२, १४
धैवतः । १३ पञ्चमः । १५ ऋषभः

॥ १७ ॥ पिबा सोममभि यमुग्र तर्द ऊर्वं गव्यं महि गृणान इन्द्र । वि यो
धृष्णो वधिषो वज्रहस्त विश्वा वृत्रममित्रिया शवोभिः ॥ १ ॥ स ईं पाहि य
ऋजीषी तरुत्रो यः शिप्रवान्वृषभो यो मतीनाम् । यो गोत्रभिद्वज्रभृद्यो हरिष्ठाः
स इन्द्र चित्राँ अभि तृन्धि वाजान् ॥ २ ॥ एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा श्रुधि
ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः । आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूँरभि गा इन्द्र
तृन्धि ॥ ३ ॥ ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम् । महा
मनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हृषन्त प्रसाहम् ॥ ४ येभिः सूर्यमुषसं मन्दसा
नोऽवासयोऽप दृळ्हानि दर्द्रत् । महामद्रिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदस
परि स्वात् ॥ ५ ॥ १ ॥ तव क्रत्वा तव तद्दंसनाभिरामासु पक्वं शच्या नि
दीधः । और्णोर्दुर उस्रियाभ्यो वि दृळ्होदूर्वाद्गा असृजो अङ्गिरस्वान् ॥ ६ ॥
पप्राथ क्षां महि दंसो व्युर्वीमुप द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः । अधारयो रोदसी
देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यह्वी ऋतस्य ॥ ७ ॥ अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं त
वसं दधिरे भराय । अदेवो यदभ्यौहिष्ट देवान्त्स्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र ॥ ८ ॥
अध द्यौश्चित्ते अप सा नु वज्राद्द्वितानमद्भियसा स्वस्य मन्योः । अहिं यदि
न्द्रो अभ्योहसानं नि चिद्विश्वायुः शयथे जघान ॥ ९ ॥ अध त्वष्टा ते मह उ
ग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम् । निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृ
जीषिन् ॥ १० ॥ २ ॥ वर्धान्यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषाँ इन्द्र
तुभ्यम् । पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन्वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै ॥ ११ ॥ आ
क्षोदो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम् । तासामनु प्रवत इन्द्र पन्था
प्रार्दयो नीचीरपसः समुद्रम् ॥ १२ ॥ एवा ता विश्वा चकृवांसमिन्द्रं महामुग्रम
जुर्यं सहोदाम् । सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात् ॥ १३ ॥
स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इन्द्र विप्रान् । भरद्वाजे नृव

इन्द्र सूरीन्दिवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र ॥ १४ ॥ अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ १५ ॥ ३ ॥

॥ १८ ॥ १–१५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ६, १४ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ८, ११, १३ त्रिष्टुप् । ७, १० विराट्त्रिष्टुप् । १२ भुरिक्त्रिष्टुप् । ३, १५ भुरिक्पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः । ६ ब्राह्म्युष्णिक् ॥ स्वरः—१, २, ४, ७—१४ धैवतः । ३, ५, १५ पञ्चमः । ६ ऋषभः ॥

॥ १८ ॥ तमु ष्टुहि यो अभिभूत्योजा वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः । अषाळ्हमुग्रं सहमानमाभिर्गीर्भिर्वर्ध वृषभं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥ स युध्मः सत्वा खजकृत्समद्वा तुविम्रक्षो नदनुमाँ ऋजीषी । बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणामेकः कृष्टीनामभवत्सहावा ॥ २ ॥ त्वं ह नु त्यददमायो दस्यूँरेकः कृष्टीरवनोरार्याय । अस्ति स्विन्नु वीर्यं तत्त इन्द्र न स्विदस्ति तदृतुथा वि वोचः ॥ ३ ॥ सदिद्धि ते तुविजातस्य मन्ये सहः सहिष्ठ तुरतस्तुरस्य । उग्रमुग्रस्य तवसस्तवीयोऽरध्रस्य रध्रतुरो बभूव ॥ ४ ॥ तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु युष्मे इत्था वदद्भिर्वलमङ्गिरोभिः । हन्नच्युतच्युद्दस्मेषयन्तमृणोः पुरो वि दुरो अस्य विश्वाः ॥ ५ ॥ ४ ॥ स हि धीभिर्हव्यो अस्त्युग्र ईशानकृन्महति वृत्रतूर्ये । स तोकसाता तनये स वज्री वितन्तसाय्यो अभवत्समत्सु ॥ ६ ॥ स मज्मना जनिम मानुषाणाममर्त्येन नाम्नाति प्र सर्स्रे । स द्युम्नेन स शवसोत राया स वीर्येण नृतमः समोकाः ॥ ७ ॥ स यो न मुहे न मिथू जनो भूत्सुमन्तुनामा चुमुरिं धुनिं च । वृणक्पिप्रुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्नाय शयथाय नू चित् ॥ ८ ॥ उदावता त्वक्षसा पन्यसा च वृत्रहत्याय रथमिन्द्र तिष्ठ । धिष्व वज्रं हस्त आ दक्षिणत्राभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः ॥ ९ ॥ अग्निर्न शुष्कं वनमिन्द्र हेती रक्षो नि धक्ष्यशनिर्न भीमा । गम्भीरय ऋष्वया यो रुरोजाध्वानयद्दुरिता दम्भयच्च ॥ १० ॥ ५ ॥ आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र राया तुविद्युम्न तुविवाजेभिरर्वाक् । याहि सूनो सहसो यस्य नू चिददेव ईशे पुरुहूत योतोः ॥ ११ ॥ प्र तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य घृष्वेर्दिवो ररप्शे महिमा पृथिव्याः । नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः ॥ १२ ॥ प्र तत्ते अद्या करणं कृतं भूत्कुत्सं यदायुमतिथिग्वमस्मै । पुरू सहस्रा नि शिशा अभि क्षामुत्तूर्वयाणं धृषता निनेथ ॥ १३ ॥ अनु त्वाहिघ्ने अध देव देवा मदन्विश्वे कवितमं कवीनाम् । करो यत्र वरिवो बाधिताय दिवे जनाय तन्वे गृणानः ॥ १४ ॥ अनु

द्यावापृथिवी तत्त ओजोऽमर्त्या जिहत इन्द्र देवाः । कृष्वा कृत्नो अकृतं यत्ते अस्त्युक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः ॥ १५ ॥ ६ ॥

॥ १६ ॥ १-१३ ॥ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ३, १३ भुरिक्पङ्क्तिः । ६ पङ्क्तिः । २, ४, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, १०, ११, १२ विराट्त्रिष्टुप् । ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ६, १३ पञ्चमः । २, ४—८, १०, ११, १२ धैवतः ॥

॥ १६ ॥ महाँ इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्रा उत द्विबर्हा अमिनः सहोभिः । अस्मद्र्यग्वावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ॥ १ ॥ इन्द्रमेव धिषणा सातये धाद्बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् । अषाळ्हेन शवसा शूशुवांसं सद्यश्चिद्यो वावृधे असामि ॥ २ ॥ पृथू करस्ना बहुला गभस्ती अस्मद्र्य१क्सं मिमीहि श्रवांसि । यूथेव पश्वः पशुपा दमूना अस्माँ इन्द्राभ्या ववृत्स्वाजौ ॥ ३ ॥ तं व इन्द्रं चतिनमस्य शाकैरिह नूनं वाजयन्तो हुवेम । यथा चित्पूर्वे जरितार आसुरनेद्या अनवद्या अरिष्टाः ॥ ४ ॥ धृतव्रतो धनदाः सोमवृद्धः स हि वामस्य वसुनः पुरुक्षुः । सं जग्मिरे पथ्या३ रायो अस्मिन्त्समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ॥ ५ ॥ ७ ॥ शविष्ठं न आ भर शूर शव ओजिष्ठमोजो अभिभूत उग्रम् । विश्वा द्युम्ना वृष्ण्या मानुषाणामस्मभ्यं दा हरिवो मादयध्यै ॥ ६ ॥ यस्ते मदः पृतनाषाळमृध्र इन्द्र तं न आ भर शूशुवांसम् । येन तोकस्य तनयस्य सातौ मंसीमहि जिगीवांसस्त्वोताः ॥ ७ ॥ आ नो भर वृषणं शुष्ममिन्द्र धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् । येन वंसाम पृतनासु शत्रून्तवोतिभिरुत जामीँरजामीन् ॥ ८ ॥ आ ते शुष्मो वृषभ एतु पश्चादोत्तरादधरादा पुरस्तात् । आ विश्वतो अभि समेत्वर्वाङिन्द्र द्युम्नं स्वर्वद्धेह्यस्मे ॥ ९ ॥ नृवत्त इन्द्र नृतमाभिरूती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः । ईक्षे हि वस्व उभयस्य राजन्धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम् ॥ १० ॥ मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् । विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम ॥ ११ ॥ जनं वज्रिन्महि चिन्मन्यमानमेभ्यो नृभ्यो रन्धया येष्वस्मि । अधा हि त्वा पृथिव्यां शूरसातौ हवामहे तनये गोष्वप्सु ॥ १२ ॥ वयं त एभिः पुरुहूत सख्यैः शत्रोःशत्रोरुत्तर इत्स्याम । घ्नन्तो वृत्राण्युभयानि शूर राया मदेम बृहता त्वोताः ॥ १३ ॥ ८ ॥

॥ २० ॥ १-१३ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः । इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१

आर्ष्यनुष्टुप्। २, ३, ७, १२, पङ्क्तिः। ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः। १३ स्वराट्पङ्क्तिः। १० निचृत्पङ्क्तिः। ५, ८, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ गान्धारः। २-४, ६, ७, १०, १२, १३ पञ्चमः। ५, ८, ९ ११ धैवतः॥

॥ २० द्यौर्न य इन्द्राभि भूमार्यस्तस्थौ रयिः शवसा पृत्सु जनान्। तं नः सहस्रभरमुर्वरासां दद्धि सूनो सहसो वृत्रतुरम्॥ १॥ दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र सत्रासुर्यं देवेभिर्धायि विश्वम्। अहिं यद्वृत्रमपो वव्रिवांसं हन्नृजीषिन्विष्णुना सचानः॥ २॥ तूर्वन्नोजीयान्तवसस्तवीयान्कृतब्रह्मेन्द्रो वृद्धमहाः। राजाभवन्मधुनः सोम्यस्य विश्वासां यत्पुरां दर्त्नुमावत्॥ ३॥ शतैरपद्रन्पणय इन्द्रात्र दशोणये कवयेऽर्कसातौ। वधैः शुष्णस्याशुषस्य मायाः पित्वो नारिरेचीत्किं चन प्र॥ ४॥ महो द्रुहो अप विश्वायु धायि वज्रस्य यत्पतने पादि शुष्णः। उरु ष सरथं सारथये करिन्द्रः कुत्साय सूर्यस्य सातौ॥ ५॥ ६॥ प्र श्येनो न मदिरमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन्। प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पृणग्राया समिषा सं स्वस्ति॥६॥ वि पिप्रोरहिमायस्य दृळ्हाः पुरो वज्रिञ्छवसा न दर्दः। सुदामन्तद्रेक्णो अप्रमृष्यमृजिश्वने दात्रं दाशुषे दाः॥ ७॥ स वेतसुं दशमायं दशोणिं तूतुजिमिन्द्रः स्वभिष्टिसुम्नः। आ तुग्रं शश्वदिभं द्योतनाय मातुर्न सीमुप सृजा इयध्यै॥ ८॥ स ईं स्पृधो वनते अप्रतीतो बिभ्रद्वज्रं वृत्रहणं गभस्तौ। तिष्ठद्धरी अध्यस्तेव गर्ते वचोयुजा वहत इन्द्रमृष्वम्॥ ९॥ सनेम तेऽवसा नव्य इन्द्र प्र पूरवः स्तवन्त एना यज्ञैः। सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्दर्द्धन्दासीः पुरुकुत्साय शिक्षन्॥ १०॥ त्वं वृध इन्द्र पूर्व्यो भूर्वरिवस्यन्नुशने काव्याय। परा नववास्त्वमनुदेयं महे पित्रे ददाथ स्वं नपातम्॥११॥ त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः। प्र यत्समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति॥१२॥ तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ सस्तो धुनीचुमुरी या ह सिष्वप्। दीदयदित्तुभ्यं सोमेभिः सुन्वन्दभीतिरिध्मभृतिः पक्थ्यर्कैः॥ १३॥ १०॥

॥ २१॥ १-१२ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः॥ इन्द्रो देवता॥ छन्दः—१, २, ९, १०, १२ विराट्त्रिष्टुप्। ४, ५, ६, ११ त्रिष्टुप्। ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ८ स्वराड् बृहती॥ स्वरः—१-७, ९-१२ पञ्चमः। ८ मध्यमः॥

॥ २१॥ इमा उ त्वा पुरुतमस्य कारोर्हव्यं वीर हव्या हवन्ते। धियो रथेष्ठामजरं नवीयो रयिर्विभूतिरीयते वचस्या॥ १॥ तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानो गि-

वीहसं गीर्भिर्यज्ञवृद्धम् । यस्य दिवमति मह्ना पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम् ॥ २ ॥ स इत्तमोऽवयुनं ततन्वत्सूर्येण वयुनवच्चकार । कदा ते मर्ता अमृतस्य धामेयक्षन्तो न मिनन्ति स्वधावः ॥ ३ ॥ यस्ता चकार स कुह स्विदिन्द्रः कमा जनं चरति कासु विक्षु । कस्ते यज्ञो मनसे शं वराय को अर्क इन्द्र कतमः स होता ॥ ४ ॥ इदा हि ते वेविषतः पुराजाः प्रत्नास आसुः पुरुकृत्सखायः । ये मध्यमास उत नूतनास उतावमस्य पुरुहूत बोधि ॥ ५ ॥ ११ ॥ तं पृच्छन्तोऽवरासः पराणि प्रत्ना त इन्द्र श्रुत्यानु येमुः । अर्चामसि वीर ब्रह्मवाहो यादेव विद्म तात्त्वा महान्तम् ॥ ६ ॥ अभि त्वा पाजो रक्षसो वि तस्थे महि जज्ञानमभि तत्सु तिष्ठ । तव प्रत्नेन युज्येन सख्या वज्रेण धृष्णो अप ता नुदस्व ॥ ७ ॥ स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य ब्रह्मण्यतो वीर कारुधायः । त्वं ह्यापिः प्रदिवि पितृणां शश्वद्बभूथ सुहव एष्टौ ॥ ८ ॥ प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः कृष्वावसे नो अद्य । प्र पूषणं विष्णुमग्निं पुरंधिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च ॥ ९ ॥ इम उ त्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः । श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावाँ अन्यो अमृत त्वदस्ति ॥ १० ॥ नु म आ वाचमुप याहि विद्वान्विश्वेभिः सूनो सहसो यजत्रैः । ये अग्निजिह्वा ऋतसाप आसुर्ये मनुं चक्रुरुपरं दसाय ॥ ११ ॥ स नो बोधि पुरएता सुगेषूत दुर्गेषु पथिकृद्विदानः । ये अश्रमास उरवो वहिष्ठास्तेभिर्न इन्द्राभि वक्षि वाजम् ॥ १२ ॥ १२ ॥

॥ २२ ॥ १–११ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ७ भुरिक् पङ्क्तिः । ३ स्वराट् पङ्क्तिः । १० पङ्क्तिः । २, ४, ५ त्रिष्टुप् । ६, ८ विराट् त्रिष्टुप् । ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ७, १० पञ्चमः । २, ४, ५, ६, ८, ९, ११ धैवतः ॥

॥ २२ ॥ य एक इद्धव्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः । यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान्त्सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान् ॥ १ ॥ तमु नः पूर्वे पितरो नवग्वाः सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः । नक्षद्दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठामद्रोघवाचं मतिभिः शविष्ठम् ॥ २ ॥ तमीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः । यो अस्कृधोयुरजरः स्वर्वान्तमा भर हरिवो मादयध्यै ॥ ३ ॥ तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चिज्जरितार आनशुः सुम्नमिन्द्र । कस्ते भागः किं वयो दुध्र खिद्वः पुरुहूत पुरूवसोऽसुरघ्नः ॥ ४ ॥ तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठामिन्द्रं वेपी वक्वरी य-

स्य नू गीः । तुविग्राभं तुविकूर्मिं रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ ॥ ५ ॥ १३ ॥
अया ह त्यं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन । अच्युता चिद्वीळिता
स्वोजो रुजो वि दृळ्हा धृषता विरप्शिन् ॥ ६ ॥ तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं
प्रत्नं प्रत्नवत्परितंसयध्यै । स नो वक्षदनिमानः सुवह्मेन्द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि
॥ ७ ॥ आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽन्तरिक्षा । तपा वृषन्वि-
श्वतः शोचिषा तान्ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्च ॥ ८ ॥ भुवो जनस्य दिव्यस्य रा-
जा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसन्दृक् । धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य
दयसे वि मायाः ॥ ९ ॥ आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम् ।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि ॥ १० ॥ स नो नि-
युद्भिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो । न या अदेवो वरते न देव
आभिर्याहि तूयमा मद्र्यद्रिक् ॥ ११ ॥ १४ ॥

॥ २३ ॥ १---१० भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
१, ३, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ६, १० त्रिष्टुप् । ७ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४
स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५—१० धैवतः । २, ४ पञ्चमः ॥

॥ २३ ॥ सुत इत्त्वं निमिश्ल इन्द्र सोमे स्तोमे ब्रह्मणि शस्यमान उक्थे ।
यद्वा युक्ताभ्यां मघवन्हरिभ्यां बिभ्रद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र यासि ॥ १ ॥ यद्वा दिवि
पार्ये सुष्विमिन्द्र वृत्रहत्येऽवसि शूरसातौ । यद्वा दक्षस्य बिभ्युषो अबिभ्यदर-
न्धयः शर्धत इन्द्र दस्यून् ॥ २ ॥ पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनीरुग्रो जरि-
तारमूती । कर्ता वीराय सुष्वय उ लोकं दाता वसु स्तुवते कीरये चित् ॥ ३ ॥
गन्तेयान्ति सवना हरिभ्यां बभ्रिर्वज्रं पपिः सोमं ददिर्गाः । कर्ता वीरं नर्यं सर्व-
वीरं श्रोता हवं गृणतः स्तोमवाहाः ॥ ४ ॥ अस्मै वयं यद्वावान तद्विविष्म इन्द्राय
यो नः प्रदिवो अपस्कः । सुते सोमे स्तुमसि शंसदुक्थेन्द्राय ब्रह्म वर्धनं यथासत्
॥ ५ ॥ १५ ॥ ब्रह्माणि हि चकृषे वर्धनानि तावत्त इन्द्र मतिभिर्विविष्मः । सुते
सोमे सुतपाः शन्तमानि राण्ड्या क्रियास्म वक्षणानि यज्ञैः ॥ ६ ॥ स नो बोधि
पुरोळाशं रराणः पिबा तु सोमं गोऋजीकमिन्द्र । एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदोरुं
कृधि त्वायत उ लोकम् ॥ ७ ॥ स मन्दस्वा ह्यनु जोषमुग्र प्र त्वा यज्ञास इमे
अश्नुवन्तु । प्रेमे हवासः पुरुहूतमस्मे आ त्वेयं धीरवस इन्द्र यम्याः ॥ ८ ॥ तं
वः सखायः सं यथा सुतेषु सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् । कुवित्तस्मा असति

नो भराय न शुष्मिमिन्द्रोऽवसे मृधाति ॥ ९ ॥ एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि सोमे भरद्वाजेषु क्षयदिन्मघोनः । असद्यथा जरित्र उत सूरिरिन्द्रो रायो विश्ववारस्य दाता ॥ १० ॥ १६ ॥ २ ॥

॥ २४ ॥ १–१० भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २ भुरिक् पङ्क्तिः । ३, ५, ६ पङ्क्तिः । ४, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ८ त्रिष्टुप् । १० विराट् त्रिष्टुप् । ६ ब्राह्मी बृहती ॥ स्वरः—१–३, ५, ६ पञ्चमः । ४, ७, ८, १० धैवतः । ६ मध्यमः ॥

॥ २४ ॥ वृषा मद इन्द्रे श्लोक उक्था सचा सोमेषु सुतपा ऋजीषी । अर्चत्र्यो मघवा नृभ्य उक्थैर्द्युक्षो राजा गिरामक्षितोतिः ॥ १ ॥ ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः श्रोता हवं गृणत उर्व्यूतिः । वसुः शंसो नरां कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम् ॥ २ ॥ अक्षो न चक्र्योः शूर बृहन्प्र ते मह्ना रिरिचे रोदस्योः । वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया व्यूतयो रुरुहुरिन्द्र पूर्वीः ॥ ३ ॥ शचीवतस्ते पुरुशाक शाका गवामिव स्रुतयः सञ्चरणीः । वत्सानां न तन्तयस्त इन्द्र दामन्वन्तो अदामानः सुदामन् ॥ ४ ॥ अन्यदद्य कर्वरमन्यदु श्वोऽसच्च सन्मुहुराचक्रिरिन्द्रः । मित्रो नो अत्र वरुणश्च पूषार्यो वशस्य पर्येतास्ति ॥ ५ ॥ १७ ॥ वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरिन्द्रानयन्त यज्ञैः । तं त्वाभिः सुष्टुतिभिर्वाजयन्त आजिं न जग्मुर्गिर्वाहो अश्वाः ॥ ६ ॥ न यं जरन्ति शरदो न मासा न द्याव इन्द्रमवकर्शयन्ति । वृद्धस्य चिद्वर्धतामस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना ॥ ७ ॥ न वीळवे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान् । अज्रा इन्द्रस्य गिरयश्चिदृष्वा गम्भीरे चिद्भवति गाधमस्मै ॥ ८ ॥ गम्भीरेण न उरुणामत्रिन्प्रेषो यन्धि सुतपावन्वाजान् । स्था ऊ षु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्यन्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम् ॥ ९ ॥ सचस्व नायमवसे अभीक इतो वा तमिन्द्र पाहि रिषः । अमा चैनमरण्ये पाहि रिषो मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ १० ॥ १८ ॥

॥ २५ ॥ १–९ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५ पङ्क्तिः । ३ भुरिक् पङ्क्तिः । २, ७, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५ पञ्चमः । २, ४, ६–९ धैवतः ॥

॥ २५ ॥ या त ऊतिरवमा या परमा या मध्यमेन्द्र शुष्मिन्नस्ति । ताभिरू

षु वृत्रहत्येऽवीर्न एभिश्च वाजैर्महान्न उग्र ॥ १ ॥ आभिः स्पृधो मिथतीररिषण्य-
न्नमित्रस्य व्यथया मन्युमिन्द्र । आभिर्विश्वा अभियुजो विषूचीरार्याय विशोऽव
तारीर्दासीः ॥ २ ॥ इन्द्र जामय उत येऽजामयोऽर्वाचीनासो वनुषो युयुज्रे । त्व-
मेषां विथुरा शवांसि जहि वृष्ण्यानि कृणुही पराचः ॥ ३ ॥ शूरो वा शूरं वनते
शरीरैस्तनूरुचा तरुषि यत्कृण्वैते । तोके वा गोषु तनये यदप्सु वि क्रन्दसी उ-
र्वरासु ब्रवैते ॥ ४ ॥ नहि त्वा शूरो न तुरो न धृष्णुर्न त्वा योधो मन्यमानो यु-
योध । इन्द्र नकिष्ट्वा प्रत्यस्त्येषां विश्वा जातान्यभ्यसि तानि ॥ ५ ॥ १९ ॥
स पत्यत उभयोर्नृम्णमयोर्यदी वेधसः समिथे हवन्ते । वृत्रे वा महो नृवति क्षये
वा व्यचस्वन्ता यदि वितन्तसैते ॥ ६ ॥ अध स्मा ते चर्षणयो यदेजानिन्द्र त्रा-
तोत भवा वरूता । अस्माकासो ये नृतमासो अर्य इन्द्र सूरयो दधिरे पुरो नः
॥ ७ ॥ अनु ते दायि मह इन्द्रियाय सत्रा ते विश्वमनु वृत्रहत्ये । अनु क्षत्रमनु
सहो यजत्रेन्द्र देवेभिरनु ते नृषह्ये ॥ ८ ॥ एवा नः स्पृधः समजा समत्स्विन्द्र
रारन्धि मिथतीरदेवीः । विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त इन्द्र
नूनम् ॥ ९ ॥ २० ॥

॥ २६ ॥ १—८ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१
पङ्क्तिः । २, ४ भुरिक् पङ्क्तिः । ३ निचृत् पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः । ६ विराट्
त्रिष्टुप् । ७ त्रिष्टुप् । ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१-५ पञ्चमः । ६-८ धैवतः ॥

॥ २६ ॥ श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि त्वा महो वाजस्य सातौ वावृषाणाः । सं
यद्विशोऽयन्त शूरसाता उग्रं नोऽवः पार्ये अहन्दाः ॥ १ ॥ त्वां वाजी हवते वा-
जिनेयो महो वाजस्य गध्यस्य सातौ । त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं तरुत्रं त्वां चष्टे
मुष्टिहा गोषु युध्यन् ॥२॥ त्वं कविं चोदयोऽर्कसातौ त्वं कुत्साय शुष्णं दाशुषे वर्क् ।
त्वं शिरो अमर्मणः पराहन्नतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ॥३॥ त्वं रथं प्र भरो योधमृष्वमा-
वो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् । त्वं तुग्रं वेतसवे सचाहन्त्वं तुजिं गृणन्तमिन्द्र तूतोः ॥४॥
त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणा कः प्र यच्छता सहस्रा शूर दर्षि । अव गिरेर्दासं शम्बरं ह-
न्प्रावो दिवोदासं चित्राभिरूती ॥ ५ ॥ २१ ॥ त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः सोमैर्दभी-
तये चुमुरिमिन्द्र सिष्वप । त्वं रजिं पिठीनसे दशस्यन्षष्टिं सहस्रा शच्या सचा-
हन् ॥ ६ ॥ अहं चन तत्सूरिभिरानश्यां तव ज्याय इन्द्र सुम्नमोजः । त्वया य-
त्स्तवन्ते सधवीर वीरास्त्रिवरूथेन नहुषा शविष्ठ ॥ ७॥ वयं ते अस्यामिन्द्र द्यु-

ग्नहूतौ सखायः स्याम महिन प्रेष्ठाः । प्रातर्दनिः क्षत्रश्रीरस्तु श्रेष्ठो घने वृत्राणां सनये धनानाम् ॥ ८ ॥ २२ ॥

॥ २७ ॥ १–८ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ १–७ इन्द्रः । ८ अभ्यावर्तिनश्चायमानस्य दानस्तुति र्देवता ॥ छन्दः–१,२ स्वराट् पङ्क्तिः । ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ७, ८ त्रिष्टुप् । ६ ब्राह्मी उष्णिक् ॥ स्वरः–१–५, ७, ८ धैवतः । ६ ऋषभः ॥

॥ २७ ॥ किमस्य मदे किम्वस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार । रणा वा ये निषदि किं ते अस्य पुरा विविद्रे किमु नूतनासः ॥ १ ॥ सदस्य मदे सद्वस्य पीताविन्द्रः सदस्य सख्ये चकार । रणा वा ये निषदि सत्ते अस्य पुरा विविद्रे सदु नूतनासः ॥ २ ॥ नहि नु ते महिमनः समस्य न मघवन्मघवत्त्वस्य विद्म । न राधसो राधसो नूतनस्येन्द्र नकिर्ददृश इन्द्रियं ते ॥ ३ ॥ एतत्त्यत्त इन्द्रियमचेति येनावधीर्वरशिखस्य शेषः वज्रस्य यत्ते निहतस्य शुष्मात्स्वनाच्चिदिन्द्र परमो ददार ॥ ४ ॥ वधीदिन्द्रो वरशिखस्य शेषोऽभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन् । वृचीवतो यद्धरियूपीयायां हन्पूर्वे अर्धे भियसापरो दर्त् ॥ ५ ॥ २३ ॥ त्रिंशच्छतं वर्मिण इन्द्र साकं यव्यावत्यां पुरुहूत श्रवस्या । वृचीवन्तः शरवे पत्यमानाः पात्रा भिन्दाना न्यर्थान्यायन् ॥ ६ ॥ यस्य गावावरुषा सूयवस्यू अन्तरू षु चरतो रेरिहाणा । स सृञ्जयाय तुर्वशं परादाद्वृचीवतो दैववाताय शिक्षन् ॥ ७ ॥ द्वयाँ अग्ने रथिनो विंशतिं गा वधूमन्तो मघवा मह्यं सम्राट् । अभ्यावर्ती चायमानो ददाति दूणाशेयं दक्षिणा पार्थवानाम् ॥ ८ ॥ २४ ॥

॥ २८ ॥ १—८ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ १, ३—८ गावः । २, ८ गाव इन्द्रो वा देवता ॥ छन्दः—१, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । २ स्वराट् त्रिष्टुप् । ५, ६ त्रिष्टुप् । ३, ४ जगती । ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५—७ धैवतः । ३, ४ निषादः । ८ गान्धारः ॥

॥ २८ ॥ आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे । प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥ १ ॥ इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षत्युपेद्दाति न स्वं मुषायति । भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् ॥ २ ॥ न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति । देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह ॥ ३ ॥ न ता अर्वा

रेणुर्कंकाटो अश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि । उरुगायमर्भयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः ॥४॥ गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः । इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम् ॥ ५ ॥ यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् । भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु ॥ ६ ॥ प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः । मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः ॥ ७ ॥ उपेदमुपपर्चनमासु गोषूप पृच्यताम् । उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये ॥ ८ ॥ २५ ॥ ६ ॥

॥ २६ ॥ १—६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ त्रिष्टुप् । २ भुरिक्पङ्क्तिः। ६ ब्राह्मी उष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ५ धैवतः । २ पञ्चमः । ६ ऋषभः ॥

॥ २६ ॥ इन्द्रं वो नरः सख्याय सेपुर्महो यन्तः सुमतये चकानाः । महो हि दाता वज्रहस्तो अस्ति महामु रण्वमवसे यजध्वम् ॥ १ ॥ आ यस्मिन्हस्ते नर्या मिमिक्षुरा रथे हिरण्यये रथेष्ठाः । आ रश्मयो गभस्त्योः स्थूरयोराध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः ॥ २ ॥ श्रिये ते पादा दुव आ मिमिक्षुर्धृष्णुर्वज्री शवसा दक्षिणावान् । वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वर्ण नृतविषिरो बभूथ ॥ ३ ॥ स सोम आमिश्लतमः सुतो भूद्यस्मिन्पक्तिः पच्यते सन्ति धानाः । इन्द्रं नरः स्तुवन्तो ब्रह्मकारा उक्था शंसन्तो देववाततमाः ॥ ४ ॥ न ते अन्तः शवसो धाय्यस्य वि तु बाबधे रोदसी महित्वा । आ ता सूरिः पृणति तूतुजानो यूथेवाप्सु समीजमान ऊती ॥ ५ ॥ एवेदिन्द्रः सुहव ऋष्वो अस्तूती अनूती हिरिशिप्रः सत्वा । एवा हि जातो असमात्योजाः पुरू च वृत्रा हनति नि दस्यून् ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ ३० ॥ १–५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ पङ्क्तिः । ५ ब्राह्मी उष्णिक् ॥ स्वरः—१–३ धैवतः । ४ पञ्चमः । ५ ऋषभः ॥

॥ ३० ॥ भूय इद्वावृधे वीर्याय एको अजुर्यो दयते वसूनि । प्र रिरिचे दिव इन्द्रः पृथिव्या अर्धमिदस्य प्रति रोदसी उभे ॥ १ ॥ अधा मन्ये बृहदसुर्यमस्य यानि दाधार नकिरा मिनाति । दिवेदिवे सूर्यो दर्शतो भूद्वि सद्मान्युर्विया सुक्र-

तुर्धर्त् ॥ २ ॥ अ॒धा चि॒न्नू चि॒त्तदपो न॒दीनां॒ यदा॑भ्यो॒ अर॑दो गा॒तुमि॑न्द्र । नि पर्वता अद्म॒सदो॒ न सेदु॒स्त्वया॑ दृ॒ळ्हानि॑ सुक्र॒तो रजां॑सि ॥ ३ ॥ स॒त्यमित्तन्न त्वावाँ अ॒न्यो अ॒स्तीन्द्र॑ दे॒वो न मर्त्यो॒ ज्याया॑न् । अह॒न्नहिं॑ परि॒शया॑न॒मर्णोऽवा॑सृजो अ॒पो अच्छा॑ समु॒द्रम् ॥ ४ ॥ त्वम॒पो वि दु॒रो विषू॑ची॒रिन्द्र॑ दृ॒ळ्हम॑रु॒जः पर्व॑तस्य । राजा॑भवो॒ जग॑तश्चर्षणी॒नां सा॒कं सूर्यं॑ ज॒नय॒न्द्याम॒ुषास॑म् ॥ ५ ॥ २ ॥

॥ ३१ ॥ १–५ सुहोत्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्। २ स्वराट् पङ्क्तिः। ३ पङ्क्तिः। ४ निचृदतिशक्वरी । ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–३ पञ्चमः। ५ धैवतः। ४ निषादः ॥

॥ ३१ ॥ अभू॒रेको॑ रयिपते रयी॒णामा हस्त॑योरधिथा इन्द्र कृ॒ष्टीः । वि तो॒के अ॒प्सु तन॑ये च॒ सूरेऽवो॑चन्त चर्ष॒णयो॒ विवा॑चः ॥ १ ॥ त्वद्भि॒येन्द्र॒ पार्थि॑वानि॒ विश्वा॒च्युता॑ चिच्च्यावयन्ते॒ रजां॑सि । द्यावा॒क्षामा॒ पर्व॑तासो॒ वना॑नि॒ विश्वं॑ दृ॒ळ्हं भ॑यते॒ अज्म॒न्ना ते॑ ॥ २ ॥ त्वं कुत्से॑ना॒भि शुष्ण॑मिन्द्रा॒शुषं॑ यु॒ध्य॒ कुय॑वं॒ गवि॑ष्टौ । दश॑ प्रपि॒त्वे अध॒ सूर्य॑स्य मु॒षायश्च॒क्रमवि॑वे॒ रपां॑सि ॥ ३ ॥ त्वं श॒तान्यव॒ शम्ब॑रस्य॒ पुरो॑ जघन्था॒प्रती॑नि॒ दस्योः॑ । अशि॑क्षो॒ यत्र॒ शच्या॑ शचीवो॒ दिवो॑दासाय सुन्व॒ते सु॑तक्रे भ॒रद्वा॑जाय गृण॒ते वसू॑नि ॥ ४ ॥ स स॑त्यसत्वन्मह॒ते रणा॑य॒ रथ॒मा ति॑ष्ठ तुविनृम्ण॒ भीमम् । या॒हि प्र॑पथि॒न्नव॒सोप॑ म॒द्रिक्प्र च॑ श्रुत श्रावय चर्ष॒णिभ्यः॑ ॥ ५ ॥ ३ ॥

॥ ३२ ॥ १–५ सुहोत्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ भुरिक् पङ्क्तिः। २ स्वराट् पङ्क्तिः। ३, ५ त्रिष्टुप्। ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः। ३, ४, ५ धैवतः ॥

॥ ३२ ॥ अपू॑र्व्या पुरु॒तमा॑न्यस्मै म॒हे वी॒राय॑ त॒वसे॑ तु॒राय॑ । वि॒र॒प्शिने॑ व॒ज्रिणे॒ शन्त॑मानि॒ वचां॑स्या॒सा स्थवि॑राय तक्षम् ॥ १ ॥ स मा॒तरा॒ सूर्ये॑णा क॒वीना॒मवा॑सयद्रु॒जदद्रिं॑ गृणा॒नः । स्वा॒धीभि॒र्ऋक्व॑भिर्वाव॒शान उदु॒स्रिया॑णामसृजन्नि॒दान॑म् ॥ २ ॥ स वह्नि॑भि॒र्ऋक्व॑भि॒र्गोषु॒ शश्व॑न्मि॒तज्ञु॑भिः पुरु॒कृत्वा॑ जिगाय । पुरः॑ पु॒रोहा॒ सखि॑भिः सखी॒यन्दृ॒ळ्हा रु॑रोज क॒विभिः॑ क॒विः सन् ॥ ३ ॥ स नी॒व्या॑भिर्जरि॒तार॒मच्छा॑ म॒हो वाजे॑भिर्म॒हद्भि॑श्च॒ शुष्मैः॑ । पु॒रु॒वीरा॑भिर्वृषभ क्षिती॒नामा गि॑र्वणः सुवि॒ताय॒ प्र या॑हि ॥ ४ ॥ स सर्गे॑ण॒ शव॑सा त॒क्तो अत्यै॑र॒प इन्द्रो॑ दक्षि॒णत॑स्तुरा॒षाट् । इ॒त्था सृ॑जा॒ना अन॑पावृ॒दर्थं॑ दि॒वेदि॑वे विविषुरप्रमृ॒ष्यम् ॥ ५ ॥ ४ ॥

॥ ३३ ॥ १-५ शुनहोत्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, २, ३ निचृत्पङ्क्तिः । ४ भुरिक्पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ३३ ॥ य ओजिष्ठ इन्द्र तं सु नो दा मदो वृषन्त्स्वभिष्टिर्दास्वान् । सौवश्व्यं यो वनवत्स्वश्वो वृत्रा समत्सु सासहदमित्रान् ॥ १ ॥ त्वां हीन्द्रावसे विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ । त्वं विप्रेभिर्वि पणीँरशायस्त्वोत इत्सनिता वाजमर्वा ॥ २ ॥ त्वं ताँ इन्द्रोभयाँ अमित्रान्दासा वृत्राण्यार्या च शूर । वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कैरा पृत्सु दर्षि नृणां नृतम ॥ ३ ॥ स त्वं न इन्द्राकवाभिरूती सखा विश्वायुरविता वृधे भूः । स्वर्षाता यद्ध्वयामसि त्वा युध्यन्तो नेमधिता पृत्सु शूर ॥ ४ ॥ नूनं न इन्द्रापराय च स्या भवा मृळीक उत नो अभिष्टौ । इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन्दिवि ष्याम पार्ये गोषतमाः ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ३४ ॥ १-५ शुनहोत्र ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ३४ ॥ सं च त्वे जग्मुर्गिर इन्द्र पूर्वीर्वि च त्वद्यन्ति विभ्वो मनीषाः । पुरा नूनं च स्तुतय ऋषीणां पस्पृध्र इन्द्रे अध्युक्थार्का ॥ १ ॥ पुरुहूतो यः पुरुगूर्त ऋभ्वाँ एकः पुरुप्रशस्तो अस्ति यज्ञैः । रथो न महे शवसे युजानो३ऽस्माभिरिन्द्रो अनुमाद्यो भूत् ॥ २ ॥ न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणीरिन्द्रं नक्षन्तीदभि वर्धयन्तीः । यदि स्तोतारः शतं यत्सहस्रं गृणन्ति गिर्वणसं शं तदस्मै ॥ ३ ॥ अस्मा एतद्दिव्य१र्चेव मासा मिमिक्ष इन्द्रे न्ययामि सोमः । जनं न धन्वन्नभि सं यदापः सत्रा वावृधुर्हवनानि यज्ञैः ॥ ४ ॥ अस्मा एतन्मह्याङ्गूषमस्मा इन्द्राय स्तोत्रं मतिभिरवाचि । असद्यथा महति वृत्रतूर्य इन्द्रो विश्वायुरविता वृधश्च ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ ३५ ॥ १-५ नर ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१ विराट् त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ५ त्रिष्टुप् । २ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ५ धैवतः । २ पञ्चमः ॥

॥ ३५ ॥ कदा भुवन्रथक्षयाणि ब्रह्म कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यन्दाः । कदा स्तोमं वासयोऽस्य राया कदा धियः करसि वाजरत्नाः ॥ १ ॥ कर्हि स्वित्तदिन्द्र यन्नृभिर्नॄन्वीरैर्वीरान्नीळयासे जयाजीन् । त्रिधातु गा अधि जयासि गोष्विन्द्र द्युम्नं स्वर्वद्धेह्यस्मे ॥ २ ॥ कर्हि स्वित्तदिन्द्र यज्जरित्रे विश्वप्सु ब्रह्म कृणवः शविष्ठ । कदा धियो न नियुतो युवासे कदा गोमघा हवनानि गच्छाः ॥ ३ ॥ स गोमघा जरित्रे अश्वश्चन्द्रा वाजश्रवसो अधि धेहि पृक्षः । पीपिहीषः सुदुघामिन्द्र

धेनुं भरद्वाजेषु सुरुचो रुरुच्याः ॥ ४ ॥ तमा नूनं वृजनमन्यथा चिच्छूरो यच्छक्र वि दुरो गृणीषे । मा निररं शुक्रदुघस्य धेनोराङ्गिरसान्ब्रह्मणा विप्र जिन्व ॥५॥७॥

॥ ३६ ॥ १—५ नर ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप् । २ विराट्त्रिष्टुप् । ४, ५ भुरिक् पङ्क्तिः । ३ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २ धैवतः । ३—५ पञ्चमः ॥

॥ ३६ ॥ सत्रा मदासस्तव विश्वजन्याः सत्रा रायोऽध ये पार्थिवासः । सत्रा वाजानामभवो विभक्ता यद्देवेषु धारयथा असुर्यम् ॥ १ ॥ अनु प्र येजे जन ओजो अस्य सत्रा दधिरे अनु वीर्याय । स्यूमगृभे दुधयेऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृत्रहत्ये ॥२॥ तं सध्रीचीरूतयो वृष्ण्यानि पौंस्यानि नियुतः सश्चुरिन्द्रम् । समुद्रं न सिन्धव उक्थशुष्मा उरुव्यचसं गिर आ विशन्ति ॥ ३ ॥ स रायस्खामुप सृजा गृणानः पुरुश्चन्द्रस्य त्वमिन्द्र वस्वः । पतिर्बभूथासमो जनानामेको विश्वस्य भुवनस्य राजा ॥ ४ ॥ स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयुर्द्यौर्न भूमाभि रायो अर्यः । असो यथा नः शवसा चकानो युगेयुगे वयसा चेकितानः ॥ ५ ॥ ८ ॥

॥ ३७ ॥ १–५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप् । २, ३ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४, ५ धैवतः । २, ३ पञ्चमः ॥

॥ ३७ ॥ अर्वाग्रथं विश्ववारं त उग्रेन्द्र युक्तासो हरयो वहन्तु । कीरिश्चिद्धि त्वा हवते स्वर्वानृधीमहि सधमादस्ते अद्य ॥ १ ॥ प्रो द्रोणे हरयः कर्माग्मन्पुनानास ऋज्यन्तो अभूवन् । इन्द्रो नो अस्य पूर्व्यः पपीयाद्युक्षो मदस्य सोम्यस्य राजा ॥ २ ॥ आसस्राणासः शवसानमच्छेन्द्रं सुचक्रे रथ्यासो अश्वाः । अभि श्रव ऋज्यन्तो वहेयुर्नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत् ॥ ३ ॥ वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्तीन्द्रो मघोनां तुविकूर्मितमः । यया वज्रिवः परियास्यंहो मघा च धृष्णो दयसे वि सूरीन् ॥ ४ ॥ इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य दातेन्द्रो गीर्भिर्वर्धतां वृद्धमहाः । इन्द्रो वृत्रं हनिष्ठो अस्तु सत्वा ता सूरिः पृणति तूतुजानः ॥ ५ ॥ ९ ॥

॥ ३८ ॥ १–५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ३, ५ निचृत् त्रिष्टुप् । ४ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ३८ ॥ अपादित उदु नश्चित्रतमो महीं भर्षद्द्युमतीमिन्द्रहूतिम् । पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य यामञ्जनस्य रातिं वनते सुदानुः ॥ १ ॥ दूराच्चिदा वसतो अस्य

कर्णा घोषादिन्द्रस्य तन्यति ब्रुवाणः । एयमेनं देवहूतिर्ववृत्यान्मद्र्यगिन्द्रमियमृच्यमाना ॥ २ ॥ तं वो धिया परमया पुराजामजरमिन्द्रमभ्यनूष्यर्कैः । ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन्महांश्च स्तोमो अधि वर्धदिन्द्रे ॥ ३ ॥ वर्धाद्यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद्ब्रह्म गिर उक्था च मन्म । वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तोर्वर्धान्मासाः शरदो द्याव इन्द्रम् ॥ ४ ॥ एवा जज्ञानं सहसे असामि वावृधानं राधसे च श्रुताय । महामुग्रमवसे विप्र नूनमा विवासेम वृत्रतूर्येषु ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ ३९ ॥ १–५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३ विराट् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ४, ५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–३ धैवतः । ४, ५ पञ्चमः ॥

॥ ३९ ॥ मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य वह्नेर्विप्रमन्मनो वचनस्य मध्वः । अपा नस्तस्य सचनस्य देवेषो युवस्व गृणते गोअग्राः ॥ १ ॥ अयमुशानः पर्यद्रिमुस्रा ऋतधीतिभिर्ऋतयुग्युजानः । रुजदरुग्णं वि वलस्य सानुं पणीँर्वचोभिरभि योधदिन्द्रः ॥ २ ॥ अयं द्योतयदद्युतो व्यक्तून्दोषा वस्तोः शरद इन्दुरिन्द्र । इमं केतुमदधुर्नू चिदह्नां शुचिजन्मन उषसश्चकार ॥ ३ ॥ अयं रोचयदरुचो रुचानोऽयं वासयद्व्यृतेन पूर्वीः । अयमीयत ऋतयुग्भिरश्वैः स्वर्विदा नाभिना चर्षणिप्राः ॥४॥ नू गृणानो गृणते प्रत्न राजन्निषः पिन्व वसुदेयाय पूर्वीः । अप ओषधीरविषा वनानि गा अर्वतो नॄनृचसे रिरीहि ॥ ५ ॥ ११ ॥

॥ ४० ॥ १–५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३ विराट् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ४ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–३ धैवतः । ४, ५ पञ्चमः ॥

॥ ४० ॥ इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो मदायाव स्य हरी वि मुचा सखाया । उत प्र गाय गण आ निषद्याथा यज्ञाय गृणते वयो धाः ॥ १ ॥ अस्य पिब यस्य जज्ञान इन्द्र मदाय क्रत्वे अपिबो विरप्शिन् । तमु ते गावो नर आपो अद्रिरिन्दुं समह्यन्पीतये समस्मै ॥ २ ॥ समिद्धे अग्नौ सुत इन्द्र सोम आ त्वा वहन्तु हरयो वहिष्ठाः । त्वायता मनसा जोहवीमीन्द्रा याहि सुविताय महे नः ॥ ३ ॥ आ याहि शश्वदुशता ययाथेन्द्र महा मनसा सोमपेयम् । उप ब्रह्माणि शृणव इमा नोऽथा ते यज्ञस्तन्वे वयो धात् ॥ ४ ॥ यदिन्द्र दिवि पार्ये यदृधग्यद्वा स्वे सदने यत्र वासि । अतो नो यज्ञमवसे नियुत्वान्त्सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः ॥ ५ ॥ १२ ॥

॥ ४१ ॥ १—५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१ विराट् त्रिष्टुप् । २, ३, ४ त्रिष्टुप् । ५ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-४ धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ ४१ ॥ अहेळमान उप याहि यज्ञं तुभ्यं पवन्त इन्दवः सुतासः । गावो न वज्रिन्त्स्वमोको अच्छेन्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम् ॥ १ ॥ या ते काकुत्सुकृता या वरिष्ठा यया शश्वत्पिबसि मध्व ऊर्मिम् । तया पाहि प्र ते अध्वर्युरस्थात्सं ते वज्रो वर्ततामिन्द्र गव्युः ॥ २ ॥ एष द्रप्सो वृषभो विश्वरूप इन्द्राय वृष्णे समकारि सोमः । एतं पिब हरिवः स्थातरुग्र यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम् ॥ ३ ॥ सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्यानयं श्रेयाञ्चिकितुषे रणाय । एतं तितिर्व उप याहि यज्ञं तेन विश्वास्तविषीरा पृणस्व ॥ ४ ॥ ह्वयामसि त्वेन्द्र याह्यर्वाङरं ते सोमस्तन्वे भवाति । शतक्रतो मादयस्वा सुतेषु प्रास्माँ अव पृतनासु प्र विक्षु ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ ४२ ॥ १-४ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१ स्वराडुष्णिक् । २ निचृदनुष्टुप् । ३ अनुष्टुप् । ४ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ ऋषभः । २-४ गान्धारः ॥

॥ ४२ ॥ प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर । अरंगमाय जग्मयेऽपश्चाद्दघ्वने नरे ॥ १ ॥ एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम् । अमत्रेभिर्ऋजीषिणमिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः ॥ २ ॥ यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ । वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत्तन्तमिदेषते ॥ ३ ॥ अस्माअस्मा इदन्धसोऽध्वर्यो प्र भरा सुतम् । कुवित्समस्य जेन्यस्य शर्धतोऽभिशस्तेरवस्परत् ॥ ४ ॥ १४ ॥

॥ ४३ ॥ १-४ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ उष्णिक् छन्दः ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ ४३ ॥ यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ १ ॥ यस्य तीव्रसुतं मदं मध्यमन्तं च रक्षसे । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ २ ॥ यस्य गा अन्तरश्मनो मदे दृळ्हा अवासृजः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ ३ ॥ यस्य मन्दानो अन्धसो माघोनं दधिषे शवः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ ४ ॥ १५ ॥ ३ ॥

॥ ४४ ॥ १–२४ शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ३, ४ निचृदनुष्टुप्। २, ५ स्वराडुष्णिक्। ६ आसुरी पङ्क्तिः। ७ भुरिक्पङ्क्तिः। ८ निचृत्पङ्क्तिः। ६, १२, १६ पङ्क्तिः। १०, ११, १३, २२ विराट्त्रिष्टुप्। १४, १५, १७, १८, २०, २४ निचृत्त्रिष्टुप्। १६, २१, २३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४ गान्धारः। २, ५ ऋषभः। ६, ७, ८, ६, १२, १६ पञ्चमः। १०, ११, १३–१५, १७–२४ धैवतः॥

॥ ४४ ॥ यो रयिवो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः। सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ १ ॥ यः शग्मस्तुविशग्म ते रायो दामा मतीनाम्। सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ २ ॥ येन वृद्धो न शवसा तुरो न स्वाभिरूतिभिः। सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ ३ ॥ त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम्। इन्द्रं विश्वासाहं नरं मंहिष्ठं विश्वचर्षणिम्॥ ४॥ यं वर्धयन्तीद्गिरः पतिं तुरस्य राधसः। तमिन्न्वस्य रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः॥ ५ ॥ १६ ॥ तद्व उक्थस्य बर्हणेन्द्रायोपस्तृणीषणि। विपो न यस्योतयो वि यद्रोहन्ति सक्षितः॥ ६ ॥ अविदद्दक्षं मित्रो नवीयान्पपानो देवेभ्यो वस्यो अचैत्। ससवान्स्तौलाभिर्धौतरीभिरुरुष्या पायुरभवत्सखिभ्यः॥ ७ ॥ ऋतस्य पथि वेधा अपायि श्रिये मनांसि देवासो अक्रन्। दधानो नाम महो वचोभिर्वपुर्दृशये वेन्यो व्यावः॥ ८ ॥ द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे सेधा जनानां पूर्वीररातीः। वर्षीयो वयः कृणुहि शचीभिर्धनस्य सातावस्माँ अविड्ढि॥ ६ ॥ इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम वयं दात्रे हरिवो मा वि वेनः। नकिरापिर्ददृशे मर्त्यत्रा किमङ्ग रध्रचोदनं त्वाहुः॥१०॥ ॥१७॥ मा जस्वने वृषभ नो ररीथा मा ते रेवतः सख्ये रिषाम। पूर्वीष्ट इन्द्र निःषिधो जनेषु जह्यसुष्वीन्प्र वृहापृणतः॥ ११ ॥ उदभ्राणीव स्तनयन्नियर्तीन्द्रो राधांस्यश्व्यानि गव्या। त्वमसि प्रदिवः कारुधाया मा त्वादामान आ दभन्मघोनः॥१२॥ अध्वर्यो वीर प्र महे सुतानामिन्द्राय भर स ह्यस्य राजा। यः पूर्व्याभिरुत नूतनाभिर्गीर्भिर्वावृधे गृणतामृषीणाम्॥ १३ ॥ अस्य मदे पुरु वर्पांसि विद्वानिन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान। तमु प्र होषि मधुमन्तमस्मै सोमं वीराय शिप्रिणे पिबध्यै॥१४॥ पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं हन्ता वृत्रं वज्रेण मन्दसानः। गन्ता यज्ञं परावतश्चिदच्छा वसुर्धीनामविता कारुधायाः॥ १५ ॥ १८ ॥ इदं त्यत्पात्रमिन्द्रपानमिन्द्रस्य प्रियममृतमपायि। मत्सद्यथा सौमनसाय देवं व्य१स्मद्द्वेषो युयवद्व्यंहः॥ १६ ॥ एना मन्दानो जहि शूर शत्रूञ्जामिमजामिं मघवन्नमित्रान्। अभिषेणाँ

अभ्या३देर्दिशानानपरांच इन्द्र प्र मृणा जही च ॥१७॥ आसु ष्मा णो मघवन्निन्द्र पृत्स्व१स्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः। अपां तोकस्य तनयस्य जेष इन्द्र सूरीन्कृणुहि स्मा नो अर्धम् ॥१८॥ आ त्वा हरयो वृषणो युजाना वृषरथासो वृषरश्मयोऽत्याः। अस्मत्राञ्चो वृषणो वज्रवाहो वृष्णे मदाय सुयुजो वहन्तु ॥१९॥ आ ते वृषन्वृषणो द्रोणमस्थुर्घृतप्रुषो नोर्मयो मदन्तः। इन्द्र प्र तुभ्यं वृषभिः सुतानां वृष्णे भरन्ति वृषभाय सोमम् ॥ २० ॥ १९ ॥ वृषासि दिवो वृषभः पृथिव्या वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम्। वृष्णे त इन्दुर्वृषभ पीपाय स्वादू रसो मधुपेयो वराय ॥२१॥ अयं देवः सहसा जायमान इन्द्रेण युजा पणिमस्तभायत्। अयं स्वस्य पितुरायुधानीन्दुरमुष्णादशिवस्य मायाः ॥२२॥ अयमकृणोदुषसः सुपत्नीरयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः। अयं त्रिधातु दिवि रोचनेषु त्रितेषु विन्ददमृतं निगूळ्हम् ॥२३॥ अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभायदयं रथमयुनक्सप्तरश्मिम्। अयं गोषु शच्या पक्वमन्तः सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम् ॥ २४ ॥ २० ॥

॥ ४५ ॥ १—३३ शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ १—३० इन्द्रः। ३१—३३ बृबुस्तक्षा देवता ॥ छन्दः—१, २, ३, ८, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २८, ३०, ३२ गायत्री। ४, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २५, २६, २९ निचृद्गायत्री। ५, ६, २७ विराड्गायत्री। ३१ आर्च्युष्णिक्। ३३ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—३०, ३२ षड्जः। ३१ ऋषभः। ३३ गान्धारः ॥

॥ ४५ ॥ य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा ॥ १ ॥ अविप्रे चिद्वयो दधदनाशुना चिदर्वता। इन्द्रो जेता हितं धनम् ॥ २ ॥ महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः। नास्य क्षीयन्त ऊतयः ॥ ३ ॥ सखायो ब्रह्मवाहसेऽर्चत प्र च गायत। स हि नः प्रमतिर्मही ॥ ४ ॥ त्वमेकस्य वृत्रहन्नविता द्वयोरसि। उतेदृशे यथा वयम् ॥ ५ ॥ २१ ॥ नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः। नृभिः सुवीर उच्यसे ॥ ६ ॥ ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीर्भिः सखायमृग्मियम्। गां न दोहसे हुवे ॥७॥ यस्य विश्वानि हस्तयोरूचुर्वसूनि नि द्विता। वीरस्य पृतनाषहः ॥ ८ ॥ वि दृळ्हानि चिदद्रिवो जनानां शचीपते। वृह माया अनानत ॥ ९ ॥ तमु त्वा सत्य सोमपा इन्द्र वाजानां पते। अहूमहि श्रवस्यवः ॥ १० ॥ २२ ॥ तमु त्वा यः पुरासिथ यो वा नूनं हिते धने। हव्यः स श्रुधी हवम् ॥११॥ धीभिरर्वद्भिरर्वतो वाजाँ इन्द्र श्रवाय्यान्। त्वया जेष्म हितं धनम् ॥१२॥

अभूरु वीर गिर्वणो महाँ इन्द्र धने हिते । भरे वितन्तसाय्यः ॥१३॥ या त ऊतिरमित्रहन्मक्षूजवस्तमासति । तया नो हिनुही रथम् ॥ १४ ॥ स रथेन रथीतमोऽस्माकेनाभियुग्वना। जेषि जिष्णो हितं धनम् ॥ १५ ॥ २३ ॥ य एक इत्तमु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः । पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः ॥ १६ ॥ यो गृणतामिदासिथापिरूती शिवः सखा । स त्वं न इन्द्र मृळय ॥ १७ ॥ धिष्व वज्रं गभस्त्यो रक्षोहत्याय वज्रिवः । सासहीष्ठा अभि स्पृधः ॥ १८ ॥ प्रत्नं रयीणां युजं सखायं कीरिचोदनम् । ब्रह्मवाहस्तमं हुवे ॥ १९ ॥ स हि विश्वानि पार्थिवाँ एको वसूनि पत्यते । गिर्वणस्तमो अध्रिगुः ॥ २० ॥ २४ ॥ स नो नियुद्भिरा पृण कामं वाजेभिरश्विभिः । गोमद्भिर्गोपते धृषत् ॥ २१ ॥ तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद्गवे न शाकिने ॥ २२ ॥ न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः । यत्सीमुप श्रवद्गिरः ॥ २३ ॥ कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत् । शचीभिरप नो वरत् ॥ २४ ॥ इमा उ त्वा शतक्रतोऽभि प्र णोनुवुर्गिरः । इन्द्र वत्सं न मातरः ॥ २५ ॥ २५ ॥ दूणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते । अश्वो अश्वायते भव ॥ २६ ॥ स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे । न स्तोतारं निदे करः ॥ २७ ॥ इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः । वत्सं गावो न धेनवः ॥ २८ ॥ पुरूतमं पुरूणां स्तोतॄणां विवाचि । वाजेभिर्वाजयताम् ॥ २९ ॥ अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । अस्मान्राये महे हिनु ॥ ३० ॥ अधि बृबुः पणीनां वर्षिष्ठे मूर्धन्नस्थात् । उरुः कक्षो न गाङ्ग्यः ॥ ३१ ॥ यस्य वायोरिव द्रवद्भद्रा रातिः सहस्रिणी । सद्यो दानाय मंहते ॥ ३२ तत्सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः । बृबुं सहस्रदातमं सूरिं सहस्रसातमम् ॥३३॥२६॥

॥ ४६ ॥ १—१४ शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रः प्रगाथं वा देवता ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप् । ५, ७ स्वराडनुष्टुप् । २ स्वराड्बृहती । ३, ४ भुरिग्बृहती । ८, ९ विराड्बृहती । ११ निचृद्बृहती । १३ बृहती । ६ ब्राह्मी गायत्री । १० पङ्क्तिः । १२, १४ विराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ५, ७ गान्धारः । २—४, ८, ९, ११, १३ मध्यमः । ६ षड्जः । १०, १२, १४ पञ्चमः ॥

॥ ४६ ॥ त्वामिद्धि हवामहे साता वाजस्य कारवः । त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥ १ ॥ स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः । गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥ २ ॥ यः सत्राहा

विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम् । सहस्रमुष्क तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो-
वृधे ॥ ३ ॥ बाधसे जनान्वृषभेव मन्युना घृषौ मीळ्ह ऋचीषम । अस्माकं बोध्य-
विता महाधने तनूष्वप्सु सूर्ये ॥४॥ इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरँ ओजिष्ठं पपुरि श्रवः ।
येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः ॥ ५ ॥ २७ ॥ त्वामुग्रमवसे च-
र्षणीसहं राजन्देवेषु हूमहे । विश्वा सु नो विथुरा पिब्दना वसोऽमित्रान्त्सुषहा-
न्कृधि ॥ ६ ॥ यदिन्द्र नाहुषीष्वाँ ओजो नृम्णं च कृष्टिषु । यद्वा पञ्च क्षितीनां
द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या ॥७॥ यद्वा तृक्षौ मघवन्द्रुह्यावा जने यत्पूरौ
कच्च वृष्ण्यम् । अस्मभ्यं तद्रिरीहि सं नृषाह्येऽमित्रान्पृत्सु तुर्वणे ॥ ८ ॥ इन्द्र
त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत् । छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्यु-
मेभ्यः ॥ ९ ॥ ये गव्यता मनसा शत्रुमादभुरभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया । अध स्मा
नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनूपा अन्तमो भव ॥ १० ॥ २८ ॥ अध स्मा नो वृधे
भवेन्द्र नायमवा युधि । यदन्तरिक्षे पतयन्ति पर्णिनो दिद्यवस्तिग्ममूर्धानः ॥ ११ ॥
यत्र शूरासस्तन्वो वितन्वते प्रिया शर्म पितॄणाम् । अध स्मा यच्छ तन्वे३ तने च
छर्दिरचित्तं यावय द्वेषः ॥ १२ ॥ यदिन्द्र सर्गे अर्वतश्चोदयासे महाधने ।
असमने अध्वनि वृजिने पथि श्येनाँ इव श्रवस्यतः ॥ १३ ॥ सिन्धूँरिव प्रवण
आशुया यतो यदि क्लोशमनु ष्वणि । आ ये वयो न वर्वृतत्यामिषि गृभीता
बाह्वोर्गवि ॥ १४ ॥ २९ ॥

॥ ४७ ॥ १—३१ गर्ग ऋषिः ॥ १—५ सोमः । ६—१९, २०, २१—३१ इन्द्रः । २० लिङ्गोक्ता देवताः । २२—२५ प्रस्तोकस्य सार्ञ्जयस्य दानस्तुतिः । २६—२८ रथः । २९—३१ दुन्दुभिर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ५, २१, २२, २८ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ८, ११ विराट् त्रिष्टुप् । ६, ७, १०, १५, १६, १८, २०, २९, ३० त्रिष्टुप् । २७ स्वराट् त्रिष्टुप् । २, ९, १२, १३, २६, ३१ भुरिक् पङ्क्तिः । १४, १७ स्वराट् पङ्क्तिः । २३ आसुरी पङ्क्तिः । १९ बृहती । २४, २५ विराड् गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ५, २१, २२, २८, ४, ८, ११, ६, ७, १०, १५, १६, १८, २०, २९, ३०, २७ धैवतः । २, ९, १२, १३, २६, ३१, १४, १७, २३ पञ्चमः । १९ मध्यमः । २४, २५ षड्जः ॥

॥ ४७ ॥ स्वादुष्किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम् । उ-
तोन्व१स्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु ॥ १ ॥ अयं स्वादुरिह मदिष्ठ

आस यस्येन्द्रो वृत्रहत्ये ममाद । पुरूणि यश्च्यौत्ना शम्बरस्य वि नवतिं नव च देह्यो३हन् ॥ २ ॥ अयं मे पीत उदियर्ति वाचमयं मनीषामुशतीमजीगः । अयं षळुर्वीरमिमीत धीरो न याभ्यो भुवनं कच्चनारे ॥ ३ ॥ अयं स यो वरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो अकृणोदयं सः । अयं पीयूषं तिसृषु प्रवत्सु सोमो दाधारोर्व१न्तरिक्षम् ॥ ४ ॥ अयं विददचित्रदृशीकमर्णः शुक्रसद्मनामुषसामनीके । अयं महान्महता स्कम्भनेनोद्द्यामस्तभ्नाद्वृषभो मरुत्वान् ॥ ५ ॥ ३० ॥ धृषत्पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् । माध्यंदिने सवन आ वृषस्व रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि ॥ ६ ॥ इन्द्र प्र णः पुरएतेव पश्य प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ । भवा सुपारो अतिपारयो नो भवा सुनीतिरुत वामनीतिः ॥ ७ ॥ उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान्त्स्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वस्ति । ऋष्वा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता ॥ ८ ॥ वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धा वहिष्ठयोः शतावन्नश्वयोरा । इषमा वक्षीषां वर्षिष्ठां मा नस्तारीन्मघवन्रायो अर्यः ॥ ९ ॥ इन्द्र मृळ मह्यं जीवातुमिच्छ चोदय धियमयसो न धाराम् । यत्किं चाहं त्वायुरिदं वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम् ॥ १० ॥ ३१ ॥ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ११ ॥ इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः । बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ १२ ॥ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम । स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद्द्वेषः सनुतर्युयोतु ॥ १३ ॥ अव त्वे इन्द्र प्रवतो नोर्मिर्गिरो ब्रह्माणि नियुतो धवन्ते । उरू न राधः सवना पुरूण्यपो गा वज्रिन्युवसे समिन्दून् ॥ १४ ॥ क ईं स्तवत्कः पृणात्को यजाते यदुग्रमिन्मघवा विश्वहावेत् । पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः ॥ १५ ॥ ३२ ॥ शृण्वे वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः । एधमानद्विळुभयस्य राजा चोष्कूयते विश इन्द्रो मनुष्यान् ॥ १६ ॥ परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति वितर्तुराणो अपरेभिरेति । अनानुभूतीरवधून्वानः पूर्वीरिन्द्रः शरदस्तर्तरीति ॥ १७ ॥ रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय । इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश ॥ १८ ॥ युजानो हरिता रथे भूरि त्वष्टेह राजति । को विश्वाहा द्विषतः पक्ष आसत उतासीनेषु सूरिषु ॥ १९ ॥ अगव्यूति क्षेत्रमागन्म देवा उर्वी सती भूमिरंहूरणाभूत् । बृहस्पते प्र चिकित्सा गविष्टावित्था सते जरित्र इन्द्र पन्थाम् ॥ २० ॥ ३३ ॥ दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं कृष्णा असेधदप

सद्मनो जाः । अर्हन्दासा वृषभो वस्नयन्तोदव्रजे वर्चिनं शम्बरं च ॥२१॥ प्रस्तोक इन्नु राधसस्त इन्द्र दश कोशयीर्दश वाजिनोऽदात् । दिवोदासादतिथिग्वस्य राधः शाम्बरं वसु प्रत्यग्रभीष्म ॥ २२ ॥ दशाश्वान्दश कोशान्दश वस्त्राधिभोजना । दशो हिरण्यपिण्डान्दिवोदासादसानिषम् ॥ २३ ॥ दश रथान्प्रष्टिमतः शतं गा अथर्वभ्यः । अश्वथः पायवेऽदात् ॥ २४ ॥ महि राधो विश्वजन्यं दधानान्भरद्वाजान्त्सार्ञ्जयो अभ्ययष्ट ॥ २५ ॥ ३४ ॥ वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः । गोभिः सन्नद्धो असि वीळयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥ २६ ॥ दिवस्पृथिव्याः पर्योज उद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्याभृतं सहः । अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रं हविषा रथं यज ॥ २७ ॥ इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः । सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय ॥ २८ ॥ उप श्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगत् । स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अप सेध शत्रून् ॥ २९ ॥ आ क्रन्दय बलमोजो न आ धा निः ष्टनिहि दुरिता बाधमानः । अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीळयस्व ॥ ३० ॥ आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति । समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु ॥ ३१ ॥ ३५ ॥ ७ ॥

॥ ४८ ॥ १—२२ शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ तृणपाणिकं पृश्निसूक्तं ॥ १-१० अग्निः । ११, १२, २०, २१ मरुतः । १३-१५ मरुतो लिङ्गोक्ता देवता वा । १६-१९ पूषा । २२ पृश्निर्द्यावाभूमी वा देवता ॥ छन्दः-१, ४, ५, १४ बृहती । ३, १९ विराड्बृहती । १०, १२, १७ भुरिग्बृहती । २ आर्ची जगती । १५ निचृदतिजगती । ६, २१ त्रिष्टुप् । ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ८ भुरिक्त्रिष्टुप् । ९ भुरिगनुष्टुप् । २० स्वराडनुष्टुप् । २२ अनुष्टुप् । ११, १६ उष्णिक् । १३, १८ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः-१, ३, ४, ५, १०, १२, १४, १७, १९ मध्यमः । २, १५ निषादः । ६, ७, ८, २१ धैवतः । ९, २०, २२ गान्धारः । ११, १३, १६, १८ ऋषभः ॥

॥ ४८ ॥ यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे । प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥ १ ॥ ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये । भुवद्वाजेष्वविता भुवद्वृध उत त्राता तनूनाम् ॥ २ ॥ वृषा ह्यग्ने अजरो महान्विभास्यर्चिषा । अजस्रेण शोचिषा शोशुचच्छुचे सुदीतिभिः सु दीदिहि

॥ ३ ॥ म॒हो दे॒वान्यज॑सि॒ यक्ष्या॑नु॒षक्तव॒ क्रत्वो॒त दं॒सना॑ । अ॒र्वाचः॑ सीं कृणुह्य॒ग्नेऽव॑से रास्व॒ वाजो॒त वं॑स्व ॥ ४ ॥ यमापो॒ अद्र॑यो॒ वना॒ गर्भ॑मृ॒तस्य॒ पिप्र॑ति । सह॑सा॒ यो म॑थि॒तो जाय॑ते॒ नृभिः॑ पृथि॒व्या अधि॒ सान॑वि ॥५॥१॥ आ यः प॒प्रौ भा॒नुना॒ रोद॑सी उ॒भे धू॒मेन॑ धावते दि॒वि । ति॒रस्तमो॑ ददृश ऊर्म्या॒स्वा श्या॒वास्व॑रु॒षो वृषा॒ श्या॒वा अ॑रु॒षो वृषा ॥ ६ ॥ बृ॒हद्भि॑रग्ने अ॒र्चिभिः॑ शु॒क्रेण॑ देव शो॒चिषा॑ । भ॒रद्वा॑जे समिधा॒नो य॑विष्ठ्य रे॒वन्नः॑ शुक्र दीदिहि द्यु॒मत्पा॑वक दीदिहि ॥ ७ ॥ विश्वा॑सां गृ॒हप॑तिर्वि॒शाम॑सि॒ त्वम॑ग्ने॒ मानु॑षीणाम् । श॒तं पू॒र्भिर्य॑विष्ठ पा॒ह्यंह॑सः समे॒द्धारं॑ श॒तं हिमाः॑ स्तो॒तृभ्यो॒ ये च॒ दद॑ति ॥ ८ ॥ त्वं न॑श्चि॒त्र ऊ॒त्या वसो॒ राधां॑सि चोदय । अ॒स्य रा॒यस्त्वम॑ग्ने र॒थीर॑सि वि॒दा गा॒धं तु॒चे तु नः॑ ॥९॥ पर्षि॑ तो॒कं तन॑यं प॒र्तृभि॒ष्ट्वमद॑ब्धै॒रप्र॑युत्वभिः । अग्ने॒ हेळां॑सि॒ दैव्या॑ युयोधि॒ नोऽदे॑वानि॒ ह्वरां॑सि च ॥१०॥२॥ आ सं॑खायः सब॒र्दुघां॑ धे॒नुम॑जध्व॒मुप॒ नव्य॑सा वचः॑ । सृ॒जध्व॒मन॑पस्फुराम् ॥११॥ या शर्धा॑य॒ मारु॑ताय॒ स्वभा॑नवे॒ श्रवोऽमृ॑त्यु॒ धुक्ष॑त । या मृ॑ळी॒के म॒रुतां॑ तु॒राणां॒ या सु॒म्नैरे॑व॒याव॑री ॥१२॥ भ॒रद्वा॑जा॒याव॑ धुक्षत द्वि॒ता । धे॒नुं च॑ वि॒श्वदो॑हस॒मिषं॑ च वि॒श्वभो॑जसम् ॥१३॥ तं व॒ इन्द्रं॒ न सु॒क्रतुं॒ वरु॑णमिव मा॒यिन॑म् । अ॒र्य॒मणं॒ न म॒न्द्रं सृ॒प्रभो॑जसं॒ विष्णुं॒ न स्तु॑ष आ॒दिशे॑ ॥१४॥ त्वे॒षं शर्धो॒ न मारु॑तं तुवि॒ष्वण्य॑न॒र्वाणं॑ पू॒षणं॒ सं यथा॑ श॒ता । सं स॒हस्रा॒ कारि॑षच्चर्ष॒णिभ्य॒ आँ आ॒विर्गू॒ळ्हा वसू॑ करत्सु॒वेदा॑ नो॒ वसू॑ करत् ॥ १५ ॥ आ मा॑ पूष॒न्नुप॑ द्रव॒ शंसि॑षं॒ नु ते॑ अपिक॒र्ण आ॑घृणे । अ॒घा अ॒र्यो अरा॑तयः ॥ १६ ॥ ३ ॥ मा का॑क॒म्बीर॒मुद्वृ॑हो॒ वन॒स्पति॒मश॑स्ती॒र्वि हि नीन॑शः । मोत सूरो॒ अह॑ ए॒वा च॒न ग्री॒वा आ॒दध॑ते॒ वेः ॥ १७ ॥ दृते॑रिव तेऽवृ॒कम॑स्तु स॒ख्यम् । अच्छि॑द्रस्य दध॒न्वतः॒ सुपू॑र्णस्य दध॒न्वतः॑ ॥१८॥ प॒रो हि मर्त्यै॒रसि॑ स॒मो दे॒वैरु॒त श्रि॒या । अ॒भि ख्यः॑ पूष॒न्पृत॑नासु न॒स्त्वमवा॑ नू॒नं यथा॑ पु॒रा ॥ १९ ॥ वा॒मी वा॒मस्य॑ धूतयः॒ प्रणी॑तिरस्तु सू॒नृता॑ । दे॒वस्य॑ वा मरुतो॒ मर्त्य॑स्य वेजा॒नस्य॑ प्रयज्यवः ॥ २० ॥ स॒द्यश्चि॒द्यस्य॑ चर्कृ॒तिः परि॒ द्यां दे॒वो नैति॒ सूर्यः॑ । त्वे॒षं शवो॑ दधिरे॒ नाम॑ य॒ज्ञियं॑ म॒रुतो॑ वृत्र॒हं शवो॒ ज्येष्ठं॑ वृत्र॒हं शवः॑ ॥ २१ ॥ स॒कृद्ध॒ द्यौर॑जायत स॒कृद्भूमि॑रजायत । पृश्न्या॑ दु॒ग्धं स॒कृत्पय॒स्तद॒न्यो नानु॑ जायते ॥२२॥४॥

॥ ४६ ॥ १-१५ ऋजिश्वा ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ३, ४, १०, ११ त्रिष्टुप् । ५, ६, ९, १३ निचृत्त्रिष्टुप् । ८, १२ विराट्त्रिष्टुप् । २, १४ स्वराट् पङ्क्तिः । ७ ब्राह्म्युष्णिक् । १५ अतिजगती ॥ स्वरः—१, ३, ४, ५, ६, ८-१३ धैवतः । २, १४ पञ्चमः । ७ ऋषभः । १५ निषादः ॥

॥ ४९ ॥ स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिर्गीर्भिर्मित्रावरुणा सुम्नयन्ता । त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ॥ १ ॥ विशोविश ईड्य-मध्वरेष्वदृप्तक्रतुमरतिं युवत्योः । दिवः शिशुं सहसः सूनुमग्निं यज्ञस्य केतुमरुषं यजध्यै ॥ २ ॥ अरुषस्य दुहितरा विरूपे स्तृभिरन्या पिपिशे सूरो अन्या । मिथस्तुरा विचरन्ती पावके मन्म श्रुतं नक्षत ऋच्यमाने ॥ ३ ॥ प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रयिं विश्ववारं रथप्राम् । द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो ॥ ४ ॥ स मे वपुश्छदयदश्विनोर्यो रथो विरुक्मान्मनसा युजानः । येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ॥ ५ ॥ ५ ॥ पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः पुरीषाणि जिन्वतमप्यानि । सत्यश्रुतः कवयो यस्य गीर्भिर्जगतः स्थातर्जगदा कृणुध्वम् ॥ ६ ॥ पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीरपत्नी धियं धात् । ग्नाभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यंसत् ॥ ७ ॥ पथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतो अभ्यानळर्कम् । स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियं सीषधाति प्र पूषा ॥ ८ ॥ प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुपाणिं देवं सुगभस्तिमृभ्वम् । होता यक्षद्यजतं पस्त्यानामग्निस्त्वष्टारं सुहवं विभावा ॥ ९ ॥ भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ । बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नमृधग्घुवेम कविनेषितासः ॥ १० ॥ ६ ॥ आ युवानः कवयो यज्ञियासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम् । अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत् ॥ ११ ॥ प्र वीराय प्र तवसे तुरायाजा यूथेव पशुरक्षिरस्तम् । स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य स्तृभिर्न नाकं वचनस्य विपः ॥ १२ ॥ यो रजांसि विममे पार्थिवानि त्रिश्चिद्विष्णुर्मनवे बाधिताय । तस्य ते शर्मन्नुपदद्यमाने राया मदेम तन्वा३ तना च ॥ १३ ॥ तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिरर्कैस्तत्पर्वतस्तत्सविता चनो धात् । तदोषधीभिरभि रातिषाचो भगः पुरंधिर्जिन्वतु प्र राये ॥ १४ ॥ नू नो रयिं रथ्यं चर्षणिप्रां पुरुवीरं मह ऋतस्य गोपाम् । क्षयं दाताजरं येन जनान्त्स्पृधो अदेवीरभि च क्रमाम विश आदेवीरभ्य१श्नवाम ॥ १५ ॥ ७ ॥ ४ ॥

॥ ५० ॥ १—१५ ऋजिश्वा ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ७ त्रिष्टुप् । ३, ५, ६, १०, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ८, १३ विराट्त्रिष्टुप् । २ स्वराट् पङ्क्तिः । ९ पङ्क्तिः । १४ भुरिक् पङ्क्तिः । १५ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४-८, १०—१३ धैवतः । २, ९, १४, १५ पञ्चमः ॥

॥ ५० ॥ हुवे वो देवीमदितिं नमोभिर्मृळीकाय वरुणं मित्रमग्निम्। अभिक्षदामर्यमणं सुशेवं त्रातॄन्देवान्त्सवितारं भगं च॥ १ ॥ सुज्योतिषः सूर्य दक्षपितॄननागास्त्वे सुमहो वीहि देवान्। द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः॥ २॥ उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु बृहद्रोदसी शरणं सुषुम्ने। महस्करथो वरिवो यथा नोऽस्मे क्षयाय धिषणे अनेहः॥३॥ आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्तामद्या हूतासो वसवोऽधृष्टाः। यदीमर्भे महति वा हितासो बाधे मरुतो अह्वाम देवान्॥४॥ मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी सिषक्ति पूषा अभ्यर्धयज्वा। श्रुत्वा हवं मरुतो यद्ध याथ भूमा रेजन्ते अध्वनि प्रविक्ते॥ ५ ॥ ८॥ अभि त्यं वीरं गिर्वणसमर्चेन्द्रं ब्रह्मणा जरितर्नवेन। श्रवदिद्धवमुप च स्तवानो रासद्वाजाँ उप महो गृणानः॥ ६ ॥ ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शं योः। यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः॥ ७॥ आ नो देवः सविता त्रायमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात्। यो दत्रवाँ उषसो न प्रतीकं व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि॥ ८॥ उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या देवाँ अस्मिन्नध्वरे ववृत्याः। स्यामहं ते सदमिद्राता तव स्यामग्नेऽवसा सुवीरः॥ ६ ॥ उत त्या मे हवमा जग्म्यातं नासत्या धीभिर्युवमङ्ग विप्रा। अत्रिं न महस्तमसोऽमुमुक्तं तूर्वतं नरा दुरितादभीके॥ १० ॥ ६ ॥ ते नो रायो द्युमतो वाजवतो दातारो भूत नृवतः पुरुक्षोः। दशस्यन्तो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता अप्या मृळता च देवाः॥ ११ ॥ ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषा मीळ्हुष्मन्तो विष्णुर्मृळन्तु वायुः। ऋभुक्षा वाजो दैव्यो विधाता पर्जन्यावाता पिप्यतामिषं नः॥ १२ ॥ उत स्य देवः सविता भगो नोऽपां नपादवतु दानु पप्रिः। त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषा द्यौर्देवेभिः पृथिवी समुद्रैः॥ १३ ॥ उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु॥ १४ ॥ एवा नपातो मम तस्य धीभिर्भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः। ग्नाहुतासो वसवोऽधृष्टा विश्वे स्तुतासो भूता यजत्राः॥ १५ ॥ १० ॥

—॥५१॥ १–१६ ऋजिश्वा ऋषिः॥ विश्वे देवा देवताः॥ छन्दः—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ८ त्रिष्टुप्। ४, ६, ६ स्वराट्पङ्क्तिः। १३, १४, १५ निचृदुष्णिक्। १६ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१–३, ५, ७, ८, १०–१२ धैवतः। ४, ६, ६ पञ्चमः। १३–१५ ऋषभः। १६ गान्धारः॥

॥ ५१ ॥ उदु त्यच्चक्षुर्महि मित्रयोराँ एति प्रियं वरुणयोरदब्धम्। ऋतस्य शुचि दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत् ॥ १ ॥ वेद यस्त्रीणि विदथान्येषां देवानां जन्म सनुतरा च विप्रः। ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्नभि चष्टे सूरो अर्य एवान् ॥ २ ॥ स्तुष उ वो मह ऋतस्य गोपानदितिं मित्रं वरुणं सुजातान्। अर्यमणं भगमदब्धधीतीनच्छा वोचे सधन्यः पावकान् ॥ ३ ॥ रिशादसः सत्पतीँरदब्धान्महो राज्ञः सुवसनस्य दातॄन्। यूनः सुक्षत्रान्क्षयतो दिवो नॄनादित्यान्याम्यदितिं दुवोयु ॥ ४ ॥ द्यौ३ष्पितः पृथिवि मातरध्रुगग्ने भ्रातर्वसवो मृळता नः। विश्व आदित्या अदिते सजोषा अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त ॥ ५ ॥ ११ ॥ मा नो वृकाय वृक्ये समस्मा अघायते रीरधता यजत्राः। यूयं हि ष्ठा रथ्यो नस्तनूनां यूयं दक्षस्य वचसो बभूव ॥ ६ ॥ मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे। विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वं रीरिषीष्ट ॥ ७ ॥ नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम्। नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे ॥ ८ ॥ ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षानृतस्य पस्त्यसदो अदब्धान्। ताँ आ नमोभिरुरुचक्षसो नॄन्विश्वान्व आ नमे महो यजत्राः ॥ ९ ॥ ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ नस्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति। सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निर्ऋतधीतयो वक्मराजसत्याः ॥ १० ॥ १२ ॥ ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन्पूषा भगो अदितिः पञ्च जनाः। सुशर्माणः स्ववसः सुनीथा भवन्तु नः सुत्रात्रासः सुगोपाः ॥ ११ ॥ नू सद्मानं दिव्यं नंशि देवा भारद्वाजः सुमतिं याति होता। आसानेभिर्यजमानो मियेधैर्देवानां जन्म वसूयुर्ववन्द ॥ १२ ॥ अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्। दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥ १३ ॥ ग्रावाणः सोम नो हि कं सखित्वनाय वावशुः। जही न्य१त्रिणं पणिं वृको हि षः ॥ १४ ॥ यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः। कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा ॥ १५ ॥ अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम्। येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥ १६ ॥ १३ ॥

॥ ५२ ॥ १—१७ ऋजिश्वा ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ४, १५, १६ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ३, ६, १३, १७ त्रिष्टुप्। ५ भुरिक्पङ्क्तिः। ७, ८, ११ गायत्री। ९, १०, १२ निचृद्गायत्री। १४ विराड्जगती ॥ स्वरः—१–४, ६, १३, १५–१७ धैवतः। ५ पञ्चमः। ७–१२ षड्जः। १४ निषादः॥

॥ ५२ ॥ न तद्दिवा न पृथिव्यानु मन्ये न यज्ञेन नोत शमीभिराभिः । उ-
ब्जन्तु तं सुभ्वः पर्वतासो नि हीयतामतियाजस्य यष्टा ॥ १ ॥ अति वा यो
मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यः क्रियमाणं निनित्सात् । तपूंषि तस्मै वृजिनानि
सन्तु ब्रह्मद्विषमभि तं शोचतु द्यौः ॥ २ ॥ किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां कि-
मङ्ग त्वाहुरभिशस्तिपां नः । किमङ्ग नः पश्यसि निद्यमानान्ब्रह्मद्विषे तपुषिं हे-
तिमस्य ॥ ३ ॥ अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः ।
अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासोऽवन्तु मा पितरो देवहूतौ ॥ ४ ॥ विश्वदानीं सुम-
नसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् । तथा करद्वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽव-
सागमिष्ठः ॥ ५ ॥ १४ ॥ इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः सरस्वती सिन्धुभिः पि-
न्वमाना । पर्जन्यो न ओषधीभिर्मयोभुरग्निः सुशंसः सुहवः पितेव ॥ ६ ॥ विश्वे
देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ॥ ७ ॥ यो वो देवा
घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति । तं विश्व उप गच्छथ ॥ ८ ॥ उप नः सूनवो गिरः
शृण्वन्त्वमृतस्य ये । सुमृळीका भवन्तु नः ॥ ९ ॥ विश्वे देवा ऋतावृध ऋतुभि-
र्हवनश्रुतः । जुषन्तां युज्यं पयः ॥ १० ॥ १५ ॥ स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टृमा-
न्मित्रो अर्यमा । इमा हव्या जुषन्त नः ॥ ११ ॥ इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयु-
नशो यज । चिकित्वान्दैव्यं जनम् ॥ १२ ॥ विश्वे देवाः शृणुतेमं हवं मे ये अ-
न्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ । ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि
मादयध्वम् ॥ १३ ॥ विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञिया उभे रोदसी अपां नपाच्च
मन्म । मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥ १४ ॥
ये के च ज्मा महिनो अहिमाया दिवो जज्ञिरे अपां सधस्थे । ते अस्मभ्यमिषये
विश्वमायुः क्षप उस्रा वरिवस्यन्तु देवाः ॥ १५ ॥ अग्नीपर्जन्याववतं धियं मेऽ-
स्मिन्हवे सुहवा सुष्टुतिं नः । इळामन्यो जनयद्गर्भमन्यः प्रजावतीरिष आ धत्तम-
स्मे ॥ १६ ॥ स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे । अ-
स्मिन्नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम् ॥ १७ ॥ १६ ॥

॥ ५३ ॥ १-१० भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ पूषा देवता ॥ छन्दः-१,
३, ४, ६, ७, १० गायत्री । २, ५, ९ निचृद्गायत्री । ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः-
१-७, ९, १० षड्जः । ८ गान्धारः ॥

॥ ५३ ॥ वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये । धिये पूषन्नयुज्महि ॥ १ ॥

अभि नो नर्यं वसु वीरं प्रयतदक्षिणम् । वामं गृहपतिं नय ॥ २ ॥ अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन्दानाय चोदय । पणेश्चिद्वि म्रदा मनः ॥ ३ ॥ वि पथो वाजसातये चिनुहि वि मृधो जहि । साधन्तामुग्र नो धियः ॥ ४ ॥ परि तृन्धि पणीनामारया हृदया कवे । अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ५ ॥ १७ ॥ वि पूषन्नारया तुद पणेरिच्छ हृदि प्रियम् । अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ६ ॥ आ रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे । अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ७ ॥ यां पूषन्ब्रह्मचोदनीमारां बिभर्ष्याघृणे । तया समस्य हृदयमा रिख किकिरा कृणु ॥ ८ ॥ या ते अष्ट्रा गोओपशाघृणे पशुसाधनी । तस्यास्ते सुम्नमीमहे ॥ ९ ॥ उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत । नृवत्कृणुहि वीतये ॥ १० ॥ १८ ॥

॥ ५४ ॥ १—१० भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ पूषा देवता ॥ छन्दः–१, २, ४, ६, ७, ८, ९ गायत्री । ३, १० निचृद्गायत्री । ५ विराड्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५४ ॥ सं पूषन्विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत् ॥ १ ॥ समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँ अभिशासति । इम एवेति च ब्रवत् ॥ २ ॥ पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते । नो अस्य व्यथते पविः ॥ ३ ॥ यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते । प्रथमो विन्दते वसु ॥ ४ ॥ पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः । पूषा वाजं सनोतु नः ॥ ५ ॥ १९ ॥ पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ॥ ६ ॥ माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे । अथारिष्टाभिरा गहि ॥ ७ ॥ शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम् । ईशानं राय ईमहे ॥ ८ ॥ पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि ॥ ९ ॥ परि पूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु ॥ १० ॥ २० ॥

॥ ५५ ॥ १—६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ पूषा देवता ॥ छन्दः—१, २, ५, ६ गायत्री । ३, ४ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५५ ॥ एहि वां विमुचो नपादाघृणे सं सचावहै । रथीर्ऋतस्य नो भव ॥ १ ॥ रथीतमं कपर्दिनमीशानं राधसो महः । रायः सखायमीमहे ॥ २ ॥ रायो धारास्याघृणे वसो राशिरजाश्व । धीवतोधीवतः सखा ॥ ३ ॥ पूषणं न्व१जाश्वमुप स्तोषाम वाजिनम् । स्वसुर्यो जार उच्यते ॥ ४ ॥ मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु

नः । भ्रातेन्द्रस्य सखा मम ॥ ५ ॥ आजासः पूषणं रथे निशृम्भास्ते जनश्रियम् । देवं वहन्तु बिभ्रतः ॥ ६ ॥ २१ ॥

॥ ५६ ॥ १–६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ पूषा देवता ॥ छन्दः—१, ४, ५ गायत्री । २, ३ निचृद्गायत्री । ६ स्वराडुष्णिक् ॥ स्वरः—१—५ षड्जः । ६ ऋषभः ॥

॥ ५६ ॥ य एनमादिदेशति करम्भादिति पूषणम् । न तेन देव आदिशे ॥ १ ॥ उत घा स रथीतमः सख्या सत्पतिर्युजा । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥ २ ॥ उतादः परुषे गवि सूरश्चक्रं हिरण्ययम् । न्यैरयद्रथीतमः ॥ ३ ॥ यदद्य त्वा पुरुष्टुत ब्रवाम दस्र मन्तुमः । तत्सु नो मन्म साधय ॥ ४ ॥ इमं च नो गवेषणं सातये सीषधो गणम् । आरात्पूषन्नसि श्रुतः ॥५॥ आ ते स्वस्तिमीमह आरेअघामुपावसुम् । अद्या च सर्वतातये श्वश्च सर्वतातये ॥ ६ ॥ २२ ॥

॥ ५७ ॥ १–६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रापूषणौ देवते ॥ छन्दः–१, ६ विराड्गायत्री । २, ३ निचृद्गायत्री । ४, ५ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५७ ॥ इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये । हुवेम वाजसातये ॥ १ ॥ सोममन्य उपासदत्पातवे चम्वोः सुतम् । करम्भमन्य इच्छति ॥ २ ॥ अजा अन्यस्य वह्नयो हरी अन्यस्य सम्भृता । ताभ्यां वृत्राणि जिघ्नते ॥ ३ ॥ यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः । तत्र पूषाभवत्सचा ॥ ४ ॥ तां पूष्णः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव । इन्द्रस्य चा रभामहे ॥ ५ ॥ उत्पूषणं युवामहेऽभीशूँरिव सारथिः । मह्या इन्द्रं स्वस्तये ॥ ६ ॥ २३ ॥

॥ ५८ ॥ १—४ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ पूषा देवता ॥ छन्दः–१ त्रिष्टुप् । ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् । २ विराड् जगती ॥ स्वरः—१, ३, ४ धैवतः । २ निषादः ॥

॥ ५८ ॥ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि । विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु ॥ १ ॥ अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो धियञ्जिन्वो भुवने विश्वे अर्पितः । अष्ट्रां पूषा शिथिरामुद्वरीवृजत्संचक्षाणो भुवना देव ईयते ॥ २ ॥ यास्ते पूषन्नावो अन्तः समुद्रे हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति ।

ताभिर्यासि दूत्यां सूर्यस्य कामेन कृत श्रव इच्छमानः ॥ ३ ॥ पूषा सुबन्धुर्दिव आ पृथिव्या इळस्पतिर्मघवा दस्मवर्चाः । यं देवासो अददुः सूर्यायै कामेन कृतं तवसं स्वञ्चम् ॥ ४ ॥ २४ ॥

॥ ५९ ॥ १-१० भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः-१, ३, ४, ५ निचृद्बृहती । २ विराड्बृहती । ६, ७, ९ भुरिगनुष्टुप् । १० अनुष्टुप् । ८ उष्णिक् ॥ स्वरः-१-५ मध्यमः । ६, ७, ९, १० गान्धारः । ८ ऋषभः ॥

॥ ५९ ॥ प्र नु वोचा सुतेषु वां वीर्या३ यानि चक्रथुः । हतासो वां पितरो देवशत्रव इन्द्राग्नी जीवथो युवम् ॥ १ ॥ बळित्था महिमा वामिन्द्राग्नी पनिष्ठ आ । समानो वां जनिता भ्रातरा युवं यमाविहेहमातरा ॥ २ ॥ ओकिवांसा सुते सचाँ अश्वा सप्ती इवादने । इन्द्रान्व१ग्नी अवसेह वज्रिणा वयं देवा हवामहे ॥ ३ ॥ य इन्द्राग्नी सुतेषु वां स्तवत्तेष्वृतावृधा । जोषवाकं वदतः पज्रहोषिणा न देवा भसथश्चन ॥ ४ ॥ इन्द्राग्नी को अस्य वां देवौ मर्तश्चिकेतति । विषूचो अश्वान्युयुजान ईयत एकः समान आ रथे ॥ ५ ॥ २५ ॥ इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः । हित्वी शिरो जिह्वया वावदच्चरत्त्रिंशत्पदा न्यक्रमीत् ॥ ६ ॥ इन्द्राग्नी आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः । मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्क्तं गविष्टिषु ॥ ७ ॥ इन्द्राग्नी तपन्ति माघा अर्यो अरातयः । अप द्वेषांस्या कृतं युयुतं सूर्यादधि ॥ ८ ॥ इन्द्राग्नी युवोरपि वसु दिव्यानि पार्थिवा । आ न इह प्र यच्छतं रयिं विश्वायुपोषसम् ॥ ९ ॥ इन्द्राग्नी उक्थवाहसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता । विश्वाभिर्गीर्भिरा गतमस्य सोमस्य पीतये ॥ १० ॥ २६ ॥

॥ ६० ॥ १-१५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः-१, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । २ विराट्त्रिष्टुप् । ४, ६, ७ विराड्गायत्री । ५, ९, ११ निचृद्गायत्री । ८, १०, १२ गायत्री । १३ स्वराट् पङ्क्तिः । १४ निचृदनुष्टुप् । १५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—३ धैवतः । ४—१२ षड्जः । १३ पञ्चमः । १४, १५ गान्धारः ॥

॥ ६० ॥ श्नथद्वृत्रमुत सनोति वाजमिन्द्रा यो अग्नी सहुरी सपर्यात् । इरज्यन्ता वसव्यस्य भूरेः सहस्तमा सहसा वाजयन्ता ॥ १ ॥ ता योधिष्टमभि गा इन्द्र नूनमपः स्वरुषसो अग्न ऊळ्हाः । दिशः स्वरुषस इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने

युवसे नियुत्वान् ॥ २ ॥ आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मैरिन्द्र यातं नमोभिरग्ने अर्वाक् । युवं राधोभिरकवेभिरिन्द्राग्ने अस्मे भवतमुत्तमेभिः ॥ ३ ॥ ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम् । इन्द्राग्नी न मर्धतः ॥ ४ ॥ उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे । ता नो मृळात ईदृशे ॥ ५ ॥ २७ ॥ हतो वृत्राण्यार्या हतो दासानि सत्पती । हतो विश्वा अप द्विषः ॥ ६ ॥ इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत । पिबतं शम्भुवा सुतम् ॥ ७ ॥ या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा । इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ॥ ८ ॥ ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम् । इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ९ ॥ तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् । कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥ १० ॥ २८ ॥ य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः । द्युम्नाय सुतरा अपः ॥ ११ ॥ ता नो वाजवतीरिष आशून्पिपृतमर्वतः । इन्द्रमग्निं च वोळ्हवे ॥ १२ ॥ उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै । उभा दातारविषां रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् ॥ १३ ॥ आ नो गव्येभिरश्व्यैर्वसव्यै३रुप गच्छतम् । सखायौ देवौ सख्याय शम्भुवेन्द्राग्नी ता हवामहे ॥ १४ ॥ इन्द्राग्नी शृणुतं हवं यजमानस्य सुन्वतः । वीतं हव्यान्या गतं पिबतं सोम्यं मधु ॥ १५ ॥ २९ ॥

॥ ६१ ॥ १–१४ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ सरस्वती देवता ॥ छन्दः–१, १३ निचृज्जगती । २ जगती । ३ विराड्जगती । ४, ६, ११, १२ निचृद्गायत्री । ५, ६, १० विराड्गायत्री । ७, ८ गायत्री । १४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–३, १३ निषादः । ४—१२ षड्जः । १४ पञ्चमः ॥

॥ ६१ ॥ इयमददाद्रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्र्यश्वाय दाशुषे । या शश्वन्तमाचखादावसं पणिं ता ते दात्राणि तविषा सरस्वति ॥ १ ॥ इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत्सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभिः । पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः ॥ २ ॥ सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिनः । उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति ॥ ३ ॥ प्र णो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । धीनामवित्र्यवतु ॥ ४ ॥ यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धने हिते । इन्द्रं न वृत्रतूर्ये ॥ ५ ॥ ३० ॥ त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि । रदा पूषेव नः सनिम् ॥ ६ ॥ उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः । वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम् ॥ ७ ॥ यस्या अनन्तो अह्रु-

तस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः । अमश्चरति रोरुवत् ॥ ८ ॥ सा नो विश्वा अति द्विषः
स्वसॄरन्या ऋतावरी । अतन्नहेव सूर्यः ॥ ९ ॥ उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा
सुजुष्टा । सरस्वती स्तोम्या भूत् ॥ १० ॥ ३१ ॥ आपप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो
अन्तरिक्षम् । सरस्वती निदस्पातु ॥ ११ ॥ त्रिषधस्था सप्तधातुः पञ्च जाता
वर्धयन्ती । वाजेवाजे हव्या भूत् ॥ १२ ॥ प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्ने-
भिरन्या अपसामपस्तमा । रथ इव बृहती विभ्वने कृतोपस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती
॥ १३ ॥ सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पयसा मा न आ धक् । जुष-
स्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म ॥ १४ ॥ ३२ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ ६२ ॥ १-११ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१,
२ भुरिक्पङ्क्तिः । ३ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ६, ७, ८, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ५,९,११
त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः । ३-११ धैवतः ॥

॥ ६२ ॥ स्तुषे नरा दिवो अस्य प्रसन्ताश्विना हुवे जरमाणो अर्कैः । या
सद्य उस्रा व्युषि ज्मो अन्तान्युयूषतः पर्युरू वरांसि ॥ १ ॥ ता यज्ञमा शुचिभि-
श्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः । पुरू वरांस्यमिता मिमानापो धन्वान्यति
याथो अज्रान् ॥ २ ॥ ता ह त्यद्वर्तिर्यदरध्रमुग्रेत्था धियं ऊहथुः शश्वदश्वैः । मनो-
जवेभिरिषिरैः शयध्यै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य ॥ ३ ॥ ता नव्यसो जरमाणस्य
मन्मोप भूषतो युयुजानसप्ती । शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ता होता यक्षत्प्रत्नो अध्रुग्यु-
वाना ॥ ४ ॥ ता वल्गू दस्रा पुरुशाकतमा प्रत्ना नव्यसा वचसा विवासे । या
शंसते स्तुवते शम्भविष्ठा बभूवतुर्गृणते चित्रराती ॥ ५ ॥ १ ॥ ता भुज्युं विभि-
रद्भ्यः समुद्रात्तुग्रस्य सूनुमूहथू रजोभिः । अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिर-
र्णसो निरुपस्थात् ॥ ६ ॥ वि जयुषा रथ्या यातमद्रिं श्रुतं हवं वृषणा वध्रिम-
त्याः । दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गामिति च्यवाना सुमतिं भुरण्यू ॥ ७ ॥ यद्रो-
दसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा । तदादित्या वसवो रुद्रियासो
रक्षोयुजे तपुरघं दधात ॥ ८ ॥ य ईं राजानावृतुथा विदधद्रजसो मित्रो वरुणश्चि-
केतत् । गम्भीराय रक्षसे हेतिमस्य द्रोघाय चिद्वचस आनवाय ॥ ९ ॥ अन्तरैश्च-
क्रैस्तनयाय वर्तिर्द्युमता यातं नृवता रथेन । सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि
शीर्षा ववृक्तम् ॥ १० ॥ आ परमाभिरुत मध्यमाभिर्नियुद्भिर्यातमवमाभिरर्वाक् ।
दृळ्हस्य चिद्गोमतो वि व्रजस्य दुरो वर्तं गृणते चित्रराती ॥ ११ ॥ २ ॥

॥ ६३ ॥ १–११ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः— १ स्वराड्बृहती । २, ४, ६, ७ पङ्क्तिः । ३, १० भुरिक् पङ्क्तिः। ८ स्वराट् पङ्क्तिः । ११ आसुरी पङ्क्तिः । ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ मध्यमः । २, ३, ४, ६, ७, ८, १०, ११ पञ्चमः । ५, ९ धैवतः ॥

॥ ६३ ॥ क्व१॒त्या व॒ल्गू पु॑रुहू॒ताद्य दू॒तो न स्तोमो॑ऽविद॒न्नम॑स्वान् । आ यो
अ॒र्वाङ्नास॑त्या व॒वर्त॒ प्रेष्ठा॒ ह्यस॑थो अस्य॒ मन्म॑न् ॥ १ ॥ अरं॑ मे गन्तं॒ हव॑नाया॒स्मै
गृ॒णाना यथा॒ पिबा॑थो॒ अन्धः॑ । परि॑ ह॒ त्यद्व॒र्तिर्या॑थो रि॒षो न यत्परो॒ नान्त॑रस्तुतु-
र्यात्॥२॥ अका॑रि वा॒मन्ध॑सो॒ वरी॑म॒न्नस्ता॑रि ब॒र्हिः सु॑प्राय॒णत॑मम् । उ॒त्तानह॑स्तो यु॒व-
यु॒र्व॑वन्दा वां॒ नक्ष॑न्तो॒ अद्र॑य आञ्जन् ॥ ३ ॥ ऊ॒र्ध्वो वा॑म॒ग्निर॑ध्व॒रेष्व॑स्थात्प्र रा॒तिरे॑ति
जू॒र्णिनी॑ घृ॒ताची॑। प्र होता॑ गू॒र्तम॑ना उरा॒णोऽयु॑क्त यो नास॑त्या॒ हवी॑मन्॥४॥ अधि॑ श्रि॒ये
दु॑हि॒ता सूर्य॑स्य॒ रथं॑ तस्थौ पुरुभुजा श॒तोति॑म् । प्र मा॒याभि॑र्मायिना भू॒तमत्र॒ नरा॑-
नृतू॒ जनि॑मन्य॒ज्ञिया॑नाम् ॥ ५ ॥ ३ ॥ यु॒वं श्रीभि॑र्दर्श॒ताभि॑रा॒भिः शु॒भे पु॒ष्टिमू॑हथुः
सू॒र्याया॑ः । प्र वां॒ वयो॒ वपु॒षेऽनु॑ पप्त॒न्नक्ष॒द्वाणी॒ सुष्टु॑ता धिष्ण्या वाम् ॥ ६ ॥ आ
वां॒ वयोऽश्वा॑सो॒ वहि॑ष्ठा अ॒भि प्रयो॑ नासत्या वहन्तु । प्र वां॒ रथो॒ मनो॑जवा अ-
स॒र्जीषः पृ॒क्ष इ॒षिधो॒ अनु॑ पू॒र्वीः ॥ ७॥ पु॒रु हि वां॑ पुरुभुजा दे॒ष्णं धे॒नुं न॒ इषं॑ पि-
न्वत॒मस॑क्राम् । स्तु॒तश्च॑ वां माध्वी सुष्टु॒तिश्च॒ रसा॑श्च॒ ये वा॒मनु॑ रा॒तिमग्म॑न् ॥८॥
उ॒त म॑ ऋ॒ज्रे पुर॑यस्य र॒घ्वी सु॑मी॒ळ्हे श॒तं पे॑रु॒के च॑ प॒क्वा । शा॒ण्डो दा॑द्धिर॒णिनः॒ स्म-
द्दि॑ष्टी॒न्दश॑ व॒शासो॑ अभि॒षाच॑ ऋ॒ष्वान् ॥९॥ सं वां॑ श॒ता ना॑सत्या स॒हस्राश्वा॑नां
पुरु॒पन्था॑ गि॒रे दा॑त् । भ॒रद्वा॑जाय वीर॒ नू गि॒रे दा॑द्ध॒ता रक्षां॑सि पुरुदंससा स्युः
॥ १० ॥ आ वां॑ सु॒म्ने वरि॑मन्त्सू॒रिभिः॑ ष्याम् ॥ ११ ॥ ४ ॥

॥ ६४ ॥ १–६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१, २, ६ विराट्त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् । ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–४, ६ धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ ६४ ॥ उदु॑ श्रि॒य उ॒षसो॒ रोच॑माना॒ अस्थु॑र॒पां नोर्मयो॒ रुश॑न्तः । कृ॒णोति॒
विश्वा॑ सु॒पथा॑ सु॒गान्यभू॑दु॒ वस्वी॒ दक्षि॑णा म॒घोनी॑ ॥ १ ॥ भ॒द्रा द॑दृक्ष उर्वि॒या वि
भा॒स्युत्ते॑ शो॒चिर्भा॒नवो॒ द्याम॑पप्तन् । आ॒विर्वक्षः॑ कृणुषे शुम्भ॒मा॒नोषो॑ देवि॒ रोच॑मा-
ना॒ महो॑भिः ॥ २ ॥ वह॑न्ति सीमरु॒णासो॒ रुश॑न्तो॒ गावः॑ सु॒भगा॑मुर्वि॒या प्र॑था॒नाम्।
अपे॑जते॒ शूरो॒ अस्ते॑व॒ शत्रू॒न्बाध॑ते॒ तमो॑ अजि॒रो न वोळ्हा॑ ॥ ३ ॥ सु॒गोत॑ ते॑ सु-

पथा पर्वतेष्ववाते अपस्तरसि स्वभानो । सा न आ वह पृथुयामन्नृष्वे रयिं दिवो दुहितरिषयध्यै ॥ ४ ॥ सा वह योक्षभिरवातोषो वरं वहसि जोषमनु । त्वं दिवो दुहितर्या ह देवी पूर्वहूतौ मंहना दर्शता भूः ॥ ५ ॥ उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ । अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥ ६ ॥ ८ ॥

॥ ६५ ॥ १–६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः । ५ विराट्पङ्क्तिः । २, ३ विराट्त्रिष्टुप् । ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५ पञ्चमः । २, ३, ४, ६ धैवतः ॥

॥ ६५ ॥ एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः क्षितीरुच्छन्ती मानुषीरजीगः । या भानुना रुशता राम्यास्वज्ञायि तिरस्तमसश्चिदक्तून् ॥ १ ॥ वि तद्ययुररुणयुग्भिरश्वैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः । अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्तीर्वि ता बाधन्ते तम ऊर्म्यायाः ॥ २ ॥ श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीर्नि दाशुष उषसो मर्त्याय । मघोनीर्वीरवत्पत्यमाना अवो धात विधते रत्नमद्य ॥ ३ ॥ इदा हि वो विधते रत्नमस्तीदा वीराय दाशुष उषासः । इदा विप्राय जरते यदुक्था नि ष्म मावते वहथा पुरा चित् ॥ ४ ॥ इदा हि त उषो अद्रिसानो गोत्रा गवामङ्गिरसो गृणन्ति । व्यर्केण बिभिदुर्ब्रह्मणा च सत्या नृणामभवद्देवहूतिः ॥ ५ ॥ उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवन्नो भरद्वाजवद्विधते मघोनि । सुवीरं रयिं गृणते रिरीह्युरुगायमधि धेहि श्रवो नः ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ ६६ ॥ १–११ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः—१, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ५ विराट्त्रिष्टुप् । ३, ४ निचृत्पङ्क्तिः । ६, ७, १० भुरिक्पङ्क्तिः । ८ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५, ९, ११ धैवतः । ३, ४, ६, ७, ८, १० पञ्चमः ॥

॥ ६६ ॥ वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यमानम् । मर्तेष्वन्यद्दोहसे पीपाय सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः ॥ १ ॥ ये अग्नयो न शोशुचन्निधाना द्विर्यत्त्रिर्मरुतो वावृधन्त । अरेणवो हिरण्ययास एषां साकं नृम्णैः पौंस्येभिश्च भूवन् ॥ २ ॥ रुद्रस्य ये मीळ्हुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधृविर्भरध्यै । विदे हि माता महो मही षा सेत्पृश्निः सुभ्वे गर्भमाधात् ॥ ३ ॥ न य ईषन्ते जनुषोऽया न्वन्तः सन्तोऽवद्यानि पुनानाः । निर्यद्दुह्रे शुचयोऽनु जोषमनु श्रिया तन्वमुक्षमाणाः ॥ ४ ॥ मक्षू

न येषु दोहसे चिदया आ नाम धृष्णु मारुतं दधानाः । न ये स्तौना अयासो
मह्ना नू चित्सुदानुरव यासदुग्रान् ॥ ५ ॥ ७ ॥ त इदुग्राः शवसा धृष्णुषेणा
उभे युजन्त रोदसी सुमेके । अध स्मैषु रोदसी स्वशोचिरामवत्सु तस्थौ न रोकः
॥ ६ ॥ अनेनो वो मरुतो यामो अस्त्वनश्वश्चिद्यमजत्यरथीः । अनवसो अन-
भीशू रजस्तूर्वि रोदसी पथ्या याति साधन् ॥ ७ ॥ नास्य वर्ता न तरुता
न्वस्ति मरुतो यमवथ वाजसातौ । तोके वा गोषु तनये यमप्सु स व्रजं दर्ता पार्ये
अध द्योः ॥ ८ ॥ प्र चित्रमर्कं गृणते तुराय मारुताय स्वतवसे भरध्वम् । ये स-
हांसि सहसा सहन्ते रेजते अग्ने पृथिवी मखेभ्यः ॥ ९ ॥ त्विषीमन्तो अध्वर-
स्येव दिद्युत्तृषुच्यवसो जुह्वो३नाग्नेः । अर्चत्रयो धुनयो न वीरा भ्राजज्जन्मानो म-
रुतो अधृष्टाः ॥ १० ॥ तं वृधन्तं मारुतं भ्राजदृष्टिं रुद्रस्य सूनुं हवसा विवासे ।
दिवः शर्धाय शुचयो मनीषा गिरयो नाप उग्रा अस्पृध्रन् ॥ ११ ॥ ८ ॥

॥ ६७ ॥ १-११ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१,
९ स्वराट्पङ्क्तिः । २, १० भुरिक्पङ्क्तिः । ३, ७, ८, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ५ त्रिष्टुप् ।
६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ९, १० पञ्चमः । ३-८, ११ धैवतः ॥

॥ ६७ ॥ विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठतमा गीर्भिर्मित्रावरुणा वावृधध्यै । सं
या रश्मेव यमतुर्यमिष्ठा द्वा जनाँ असमा बाहुभिः स्वैः ॥ १ ॥ इयं मद्वां प्र स्तृ-
णीते मनीषोप प्रिया नमसा बर्हिरच्छ । यन्तं नो मित्रावरुणावधृष्टं छर्दिर्यद्वां व-
रूथ्यं सुदानू ॥ २ ॥ आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्युप प्रिया नमसा हूयमाना ।
सं यावप्नःस्थो अपसेव जनाञ्छ्रुधीयतश्चिद्यतथो महित्वा ॥ ३ ॥ अश्वा न या
वाजिना पूतबन्धू ऋता यद्गर्भमदितिर्भरध्यै । प्र या महि महान्ता जायमाना घोरा
मर्ताय रिपवे नि दीधः ॥ ४ ॥ विश्वे यद्वां मंहना मन्दमानाः क्षत्रं देवासो अ-
दधुः सजोषाः । परि यद्भूथो रोदसी चिदुर्वी सन्ति स्पशो अदब्धासो अमूराः
॥ ५ ॥ ९ ॥ ता हि क्षत्रं धारयेथे अनु द्यून्दृंहेथे सानुमुपमादिव द्योः । दृळ्हो न-
क्षत्र उत विश्वदेवो भूमिमातान्द्यां धासिनायोः ॥ ६ ॥ ता विग्रं धैथे जठरं पृणध्या
आ यत्सद्म सभृतयः पृणन्ति । न मृष्यन्ते युवतयोऽवाता वि यत्पयो विश्वजि-
न्वा भरन्ते ॥ ७ ॥ ता जिह्वया सदमेदं सुमेधा आ यद्वां सत्यो अरतिरृते भूत् ।
तद्वां महित्वं घृतान्नावस्तु युवं दाशुषे वि चयिष्टमंहः ॥ ८ ॥ प्र यद्वां मित्रावरु-
णा स्पूर्धन्प्रिया धाम युवधिता मिनन्ति । न ये देवास ओहसा न मर्ता अयज्ञ-

साचो अप्यो न पुत्राः ॥ ९ ॥ वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते शंसन्ति के चिन्निविदो मनानाः । आद्वां ब्रवाम सत्यान्युक्था नकिर्देवेभिर्यतथो महित्वा ॥ १० ॥ अवोरित्था वां छर्दिषो अभिष्टौ युवोर्मित्रावरुणावस्कृधोयु । अनु यद्गावः स्फुरानृजिप्यं धृष्णुं यद्रणे वृषणं युनजन् ॥ ११ ॥ १० ॥

॥ ६८ ॥ १—११ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, ४, ११ त्रिष्टुप् । ६ निचृत्त्रिष्टुप् । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ३, ७, ८ स्वराट्पङ्क्तिः । ५ पङ्क्तिः । ९, १० निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, ४, ६, ११ धैवतः । २, ३, ५, ७, ८ पञ्चमः । ९, १० निषादः ॥

॥ ६८ ॥ श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः सजोषा मनुष्वद्वृक्तबर्हिषो यजध्यै । आ य इन्द्रावरुणाविषे अद्य महे सुम्नाय मह आववर्तत् ॥ १ ॥ ता हि श्रेष्ठा देवताता तुजा शूराणां शविष्ठा ता हि भूतम् । मघोनां मंहिष्ठा तुविशुष्म ऋतेन वृत्रतुरा सर्वसेना ॥ २ ॥ ता गृणीहि नमस्येभिः शूषैः सुम्नेभिरिन्द्रावरुणा चकाना । वज्रेणान्यः शवसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः ॥ ३ ॥ ग्नाश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासो नरां स्वगूर्ताः । प्रैभ्य इन्द्रावरुणा महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतमुर्वी ॥ ४ ॥ स इत्सुदानुः स्ववाँ ऋतावेन्द्रा यो वां वरुण दाशति त्मन् । इषा स द्विषस्तरेद्दास्वान्वंसद्रयिं रयिवतश्च जनान् ॥ ५ ॥ ११ ॥ यं युवं दाश्वध्वराय देवा रयिं धत्थो वसुमन्तं पुरुक्षुम् । अस्मे स इन्द्रावरुणावपि ष्यात्प्र यो भनक्ति वनुषामशस्तीः ॥ ६ ॥ उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः सूरिभ्य इन्द्रावरुणा रयिः ष्यात् । येषां शुष्मः पृतनासु साह्वान्प्र सद्यो द्युम्ना तिरते ततुरिः ॥ ७ ॥ नू न इन्द्रावरुणा गृणाना पृङ्क्तं रयिं सौश्रवसाय देवा । इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्धोऽपो न नावा दुरिता तरेम ॥ ८ ॥ प्र सम्राजे बृहते मन्म नु प्रियमर्च देवाय वरुणाय सप्रथः । अयं य उर्वी महिना महिव्रतः क्रत्वा विभात्यजरो न शोचिषा ॥ ९ ॥ इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रता । युवो रथो अध्वरं देववीतये प्रति स्वसरमुप याति पीतये ॥ १० ॥ इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम् । इदं वामन्धः परिषिक्तमस्मे आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयेथाम् ॥ ११ ॥ १२ ॥

॥ ६९ ॥ १—८ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्राविष्णू देवते ॥

छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४, ८ त्रिष्टुप् । ५ ब्राह्म्युष्णिक् ॥ स्वरः—१—४, ६—८ धैवतः । ५ ऋषभः ॥

॥ ६९ ॥ सं वां कर्मणा समिषा हिनोमीन्द्राविष्णू अपसस्पारे अस्य । जुषेथां यज्ञं द्रविणं च धत्तमरिष्टैर्नः पथिभिः पारयन्ता ॥ १ ॥ या विश्वासां जनितारा मतीनामिन्द्राविष्णू कलशा सोमधाना । प्र वां गिरः शस्यमाना अवन्तु प्र स्तोमासो गीयमानासो अर्कैः ॥२॥ इन्द्राविष्णू मदपती मदानामा सोमं यातं द्रविणो दधाना । सं वामञ्जन्त्वक्तुभिर्मतीनां सं स्तोमासः शस्यमानास उक्थैः ॥३॥ आ वामश्वासो अभिमातिषाह इन्द्राविष्णू सधमादो वहन्तु । जुषेथां विश्वा हवना मतीनामुप ब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे ॥ ४ ॥ इन्द्राविष्णू तत्पनयाय्यं वां सोमस्य मद उरु चक्रमाथे । अकृणुतमन्तरिक्षं वरीयोऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि ॥ ५ ॥ इन्द्राविष्णू हविषा वावृधानाग्राद्वाना नमसा रातहव्या । घृतासुती द्रविणं धत्तमस्मे समुद्रः स्थः कलशः सोमधानः ॥ ६ ॥ इन्द्राविष्णू पिबतं मध्वो अस्य सोमस्य दस्रा जठरं पृणेथाम् । आ वामन्धांसि मदिराण्यग्मन्नुप ब्रह्माणि शृणुतं हवं मे ॥ ७ ॥ उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनोः । इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम् ॥ ८ ॥ १३ ॥

॥ ७० ॥ १—६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ द्यावापृथिव्यौ देवते ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती । २, ३, ४, ६ जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७० ॥ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा । द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥ १ ॥ असश्चन्ती भूरिधारे पयस्वती घृतं दुहाते सुकृते शुचिव्रते । राजन्ती अस्य भुवनस्य रोदसी अस्मे रेतः सिञ्चतं यन्मनुर्हितम् ॥ २ ॥ यो वामृजवे क्रमणाय रोदसी मर्तो ददाश धिषणे स साधति । प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि युवोः सिक्ता विषुरूपाणि सव्रता ॥ ३ ॥ घृतेन द्यावापृथिवी अभीवृते घृतश्रिया घृतपृचा घृतावृधा । उर्वी पृथ्वी होतृवूर्ये पुरोहिते ते इद्विप्रा ईळते सुम्नमिष्टये ॥ ४ ॥ मधु नो द्यावापृथिवी मिमिक्षतां मधुश्चुता मधुदुघे मधुव्रते । दधाने यज्ञं द्रविणं च देवता महि श्रवो वाजमस्मे सुवीर्यम् ॥५॥ ऊर्जं नो द्यौश्च पृथिवी च पिन्वतां पिता माता विश्वविदा सुदंससा । संरराणे रोदसी विश्वशम्भुवा सनिं वाजं रयिमस्मे समिन्वताम् ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ ७१ ॥ १—६ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ सविता देवता ॥ छन्दः—१ जगती ।

२, ३ निचृज्जगती । ४ त्रिष्टुप् । ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । स्वरः—१–३ निषादः । ४–६ धैवतः ॥

॥ ७१ ॥ उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया बाहू अयंस्त सवनाय सुक्रतुः । घृतेन पाणी अभि प्रुष्णुते मखो युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि ॥ १ ॥ देवस्य वयं सवितुः सवीमनि श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने । यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निवेशने प्रसवे चासि भूमनः ॥ २ ॥ अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् । हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥ ३ ॥ उदु ष्य देवः सविता दमूना हिरण्यपाणिः प्रतिदोषमस्थात् । अयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्व आ दाशुषे सुवति भूरि वामम् ॥ ४ ॥ उदू अयाँ उपवक्तेव बाहू हिरण्यया सविता सुप्रतीका । दिवो रोहांस्यरुहत्पृथिव्या अरीरमत्पतयत्कच्चिदभ्वम् ॥ ५ ॥ वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः । वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम ॥ ६ ॥ १५ ॥

॥ ७२ ॥ १–५ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ इन्द्रासोमौ देवते ॥ छन्दः–१ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७२ ॥ इन्द्रासोमा महि तद्वां महित्वं युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः । युवं सूर्यं विविदथुर्युवं स्वर्विश्वा तमांस्यहतं निदश्च ॥ १ ॥ इन्द्रासोमा वासयथ उषासमुत्सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह । उप द्यां स्कम्भथुः स्कम्भनेनाप्रथतं पृथिवीं मातरं वि ॥ २ ॥ इन्द्रासोमावहिमपः परिष्ठां हथो वृत्रमनु वां द्यौरमन्यत । प्रार्णांस्यैरयतं नदीनामा समुद्राणि पप्रथुः पुरूणि ॥ ३ ॥ इन्द्रासोमा पक्वमामास्वन्तर्नि गवामिद्दधथुर्वक्षणासु । जगृभथुरनपिनद्धमासु रुशच्चित्रासु जगतीष्वन्तः ॥ ४ ॥ इन्द्रासोमा युवमङ्ग तरुत्रमपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे । युवं शुष्मं नर्यं चर्षणिभ्यः सं विव्यथुः पृतनाषाहमुग्रा ॥ ५ ॥ १६ ॥

॥ ७३ ॥ १–३ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ छन्दः–१ २ त्रिष्टुप् । ३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७३ ॥ यो अद्रिभित्प्रथमजा ऋतावा बृहस्पतिराङ्गिरसो हविष्मान् । द्विबर्हज्मा प्राघर्मसत्पिता न आ रोदसी वृषभो रोरवीति ॥ १ ॥ जनाय चिद्य ईवत उ लोकं बृहस्पतिर्देवहूतौ चकार । घ्नन्वृत्राणि वि पुरो दर्दरीति जयञ्छत्रूँरमि-

त्रान्पृत्सु साहन् ॥ २ ॥ बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो व्रजान् गोमतो देव एषः । अपः सिषासन्त्स्व१रप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः ॥ ३ ॥ १७ ॥

॥ ७४ ॥ १-४ भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः ॥ सोमारुद्रौ देवते ॥ छन्दः-१, २, ४ त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७४ ॥ सोमारुद्रा धारयेथामसुर्य१ंप्र वामिष्टयोऽरमश्नुवन्तु । दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १ ॥ सोमारुद्रा वि वृहतं विषूचीममीवा या नो गयमाविवेश । आरे बाधेथां निर्ऋतिं पराचैरस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ॥ २ ॥ सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् । अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत् ॥ ३ ॥ तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृळतं नः । प्र नो मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद्गोपायतं नः सुमनस्यमाना ॥ ४ ॥ १८ ॥

॥ ७५ ॥ १—१९ पायुर्भारद्वाज ऋषिः ॥ देवताः—१ वर्म । २ धनुः । ३ ज्या । ४ आर्त्नी । ५ इषुधिः । ६ सारथिः । ६ रश्मयः । ७ अश्वाः । ८ रथः । ९ रथगोपाः । १० लिङ्गोक्ताः । ११, १२, १५, १६ इषवः । १३ प्रतोदः । १४ हस्तघ्नः । १७—१९ लिङ्गोक्ता सङ्ग्रामाशिषः ( १७ युद्धभूमिर्ब्रह्मणस्पतिरदितिश्च । १८ कवचसोमवरुणाः । १९ देवा ब्रह्म च ) ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४, ५, ७, ८, ९, ११, १४, १८ त्रिष्टुप् । ६ जगती । १० विराड् जगती । १२, १९ विराडनुष्टुप् । १५ निचृदनुष्टुप् । १६ अनुष्टुप् । १३ स्वराडुष्णिक् । १७ पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१—५, ७, ८, ९, ११, १४ १८ धैवतः । ६, १० निषादः । १२, १५, १६, १९ गान्धारः । १३ ऋषभः । १७ पञ्चमः ॥

॥ ७५ ॥ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे । अनाविद्धया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु ॥ १ ॥ धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम । धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम ॥ २ ॥ वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिषस्वजाना । योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इयं समने पारयन्ती ॥ ३ ॥ ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे । अप शत्रून्विध्यतां संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान् ॥ ४ ॥ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य ।

इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥ ५ ॥ १९ ॥ रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः । अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः ॥ ६ ॥ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः । अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँरनपव्ययन्तः ॥ ७ ॥ रथवाहनं हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म । तत्रा रथमुप शग्मं सदेम विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः ॥ ८ ॥ स्वादुषंसदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः । चित्रसेना इषुबला अमृध्राः सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः ॥ ९ ॥ ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा । पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥ १० ॥ २० ॥ सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्रसूता । यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यंसन् ॥ ११ ॥ ऋजीते परि वृङ्धि नोऽश्मा भवतु नस्तनूः । सोमो अधि ब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु ॥ १२ ॥ आ जङ्घन्ति सान्वेषां जघनाँ उप जिघ्नते । अश्वाजनि प्रचेतसोऽश्वान्त्समत्सु चोदय ॥ १३ ॥ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः । हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसं परि पातु विश्वतः ॥ १४ ॥ आलाक्ता या रुरुशीर्ष्ण्यथो यस्या अयो मुखम् । इदं पर्जन्यरेतस इष्वै देव्यै बृहन्नमः ॥ १५ ॥ २१ ॥ अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते । गच्छामित्रान्प्र पद्यस्व मामीषां कं चनोच्छिषः ॥ १६ ॥ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव । तत्रा नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ १७ ॥ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् । उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥ १८ ॥ यो नः स्वो अरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति । देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् ॥ १९ ॥ २२ ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ इति षष्ठं मण्डलं समाप्तम् ॥

---

# अथ सप्तमं मण्डलम् ॥

॥ १ ॥ १—२५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१—१८ एकादशाक्षरपादैस्त्रिपदा विराड्गायत्री । १९—२५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१८ षड्जः । १९-२५ धैवतः ॥

॥ १ ॥ अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम् । दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम् ॥ १ ॥ तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित् । दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥ २ ॥ प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ । त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥ ३ ॥ प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं निः सुवीरासः शोशुचन्त द्युमन्तः । यत्रा नरः समासते सुजाताः ॥ ४ ॥ दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम् । न यं यावा तरति यातुमावान् ॥ ५ ॥ २३ ॥ उप यमेति युवतिः सुदक्षं दोषा वस्तोर्हविष्मती घृताची । उप स्वैनमरमतिर्वसूयुः ॥ ६ ॥ विश्वा अग्नेऽप दहारातीर्येभिस्तपोभिरदहो जरूथम् । प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम् ॥ ७ ॥ आ यस्ते अग्न इधते अनीकं वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पावक । उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः ॥ ८ ॥ वि ये ते अग्ने भेजिरे अनीकं मर्ता नरः पित्र्यासः पुरुत्रा । उतो न एभिः सुमना इह स्याः ॥ ९ ॥ इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा विश्वा अदेवीरभि सन्तु मायाः । ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम् ॥ १० ॥ २४ ॥ मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां माशेषसोऽवीरता परि त्वा । प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य ॥ ११ ॥ यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः । स्वजन्मना शेषसा वावृधानम् ॥ १२ ॥ पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेरररुषो अघायोः । त्वा युजा पृतनायूँरभि ष्याम् ॥ १३ ॥ सेदग्निरग्नीँरत्यस्त्वन्यान्यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः । सहस्रपाथा अक्षरा समेति ॥ १४ ॥ सेदग्निर्यो वनुष्यतो निपाति समेद्धारमंहस उरुष्यात् । सुजातासः परि

चरन्ति वीराः ॥ १५ ॥ २५ ॥ अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा यमीशानः समि
न्धे हविष्मान् । परि यमेत्यध्वरेषु होता ॥ १६ ॥ त्वे अग्न आहवनानि भूरी
शानास आ जुहुयाम नित्या । ऊभा कृण्वन्तो वहतू मियेधे ॥ १७ ॥ इमो अग्ने
वीततमानि हव्याजस्रो वक्षि देवतातिमच्छ । प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु ॥१८
मा नो अग्नेऽवीरते परा दा दुर्वाससेऽमतये मा नो अस्यै । मा नः क्षुधे मा रक्षस
ऋतावो मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः ॥ १९ ॥ नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि
त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः । रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा
नः ॥ २० ॥ २६ ॥ त्वमग्ने सुहवो रण्वसंदृक्सुदीती सूनो सहसो दिदीहि । मा
त्वे सचा तनये नित्य आ धङ्मा वीरो अस्मन्नर्यो वि दासीत् ॥ २१ ॥ मा नो
अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्धेष्वग्निषु प्र वोचः । मा ते अस्मान्दुर्मतयो भृमाच्चिद्देवस्य
सूनो सहसो नशन्त ॥ २२ ॥ स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवानमर्त्ये य आजुहोति ह
व्यम् । स देवता वसुवनिं दधाति यं सूरिरर्थी पृच्छमान एति ॥ २३ ॥ महो नो
अग्ने सुवितस्य विद्वान्रयिं सूरिभ्य आ वहा बृहन्तम् । येन वयं सहसावन्मदेम
विक्षितास आयुषा सुवीराः ॥२४॥ नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्य
सुषूदः । रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २५ ॥ २७ ॥ १

॥ २ ॥ १-११ वसिष्ठ ऋषिः ॥ आप्रं देवता ॥ छन्दः—१, ९ विरा
त्रिष्टुप् । २, ४ त्रिष्टुप् । ३, ६, ७, ८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ पङ्क्तिः
स्वरः—१-४, ६—११ धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ २ ॥ जुषस्व नः समिधमग्ने अद्य शोचा बृहद्यजतं धूममृण्वन् । उप स्पृ
दिव्यं सानु स्तूपैः सं रश्मिभिस्ततनः सूर्यस्य ॥ १ ॥ नराशंसस्य महिमानमेषा
मुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः । ये सुक्रतवः शुचयो धियन्धाः स्वदन्ति देवा उ
यानि हव्या ॥ २ ॥ ईळेन्यं वो असुरं सुदक्षमन्तर्दूतं रोदसी सत्यवाचम् । म
ष्वदग्निं मनुना समिद्धं समध्वराय सदमिन्महेम ॥ ३ ॥ सपर्यवो भरमाणा अभि
प्र वृञ्जते नमसा बर्हिरग्नौ । आजुह्वाना घृतपृष्ठं पृषद्वदध्वर्यवो हविषा मर्जयध्व
॥ ४ ॥ स्वाध्यो वि दुरो देवयन्तोऽशिश्रयू रथयुर्देवताता । पूर्वी शिशुं न मात
रिहाणे समग्रुवो न समनेष्वञ्जन् ॥ ५ ॥ १ ॥ उत योषणे दिव्ये मही न उ
सानक्ता सुदुघेव धेनुः । बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी आ यज्ञिये सुविताय श्रयेत
॥ ६ ॥ विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु कारू मन्ये वां जातवेदसा यजध्यै । ऊर्ध्वं

अध्वरं कृतं हवेषु ता देवेषु वनथो वार्याणि ॥ ७ ॥ आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः । सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक् तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥८॥ तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व । यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥ ९ ॥ वनस्पतेऽव सृजोप देवानग्निर्हविः शमिता सूदयाति । सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद ॥ १० ॥ आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः । बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥ ११ ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ १–१० वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ९, १० विराट्त्रिष्टुप् । ४, ६, ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् । २ स्वराट् पङ्क्तिः । ३ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४—१० धैवतः । २, ३ पञ्चमः ॥

॥ ३ ॥ अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् । यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ १ ॥ प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन्यदा महः संवरणाद्व्यस्थात् । आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥ २ ॥ उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः । अच्छा द्यामरुषो धूम एति सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान् ॥ ३ ॥ वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो अश्रेत्तृषु यदन्ना समवृक्त जम्भैः । सेनेव सृष्टा प्रसितिष्ट एति यवं न दस्म जुह्वा विवेक्षि ॥४॥ तमिद्दोषा तमुषसि यविष्ठमग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः । निशिशाना अतिथिमस्य योनौ दीदाय शोचिराहुतस्य वृष्णः ॥५॥ ३ ॥ सुसन्दृक्ते स्वनीक प्रतीकं वि यद्रुक्मो न रोचस उपाके । दिवो न ते तन्यतुरेति शुष्मश्चित्रो न सूरः प्रति चक्षि भानुम् ॥ ६ ॥ यथा वः स्वाहाग्नये दाशेम परीळाभिर्घृतवद्भिश्च हव्यैः । तेभिर्नो अग्ने अमितैर्महोभिः शतं पूर्भिरायसीभिर्नि पाहि ॥ ७ ॥ या वा ते सन्ति दाशुषे अधृष्टा गिरो वा याभिर्नृवतीरुरुष्याः । ताभिर्नः सूनो सहसो नि पाहि स्मत्सूरीञ्जरितॄञ्जातवेदः ॥ ८ ॥ निर्यत्पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात्स्वया कृपा तन्वा३ रोचमानः । आ यो मात्रोरुशेन्यो जनिष्ट देवयज्याय सुक्रतुः पावकः ॥ ९ ॥ एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम । विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ ४ ॥ १–१० वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४, ७ भु-

रिक् पङ्क्तिः । ६ स्वराट् पङ्क्तिः । ८, ६ पङ्क्तिः । २, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । १० विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६–६ पञ्चमः । २, ५, १० धैवतः ॥

॥ ४ ॥ प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम् । यो दैव्यानि मानुषा जनूंष्यन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति ॥ १ ॥ स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः । सं यो वना युवते शुचिदन्भूरि चिदन्ना समिदत्ति सद्यः ॥ २ ॥ अस्य देवस्य संसद्यनीके यं मर्तासः श्येतं जगृभ्रे । नि यो गृभं पौरुषेयीमुवोच दुरोकमग्निरायवे शुशोच ॥ ३ ॥ अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि । स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम ॥ ४ ॥ आ यो योनिं देवकृतं ससाद क्रत्वा ह्यग्निरमृताँ अतारीत् । तमोषधीश्च वनिनश्च गर्भं भूमिश्च विश्वधायसं बिभर्ति ॥ ५ ॥ ५ ॥ ईशे ह्यग्निरमृतस्य भूरेरीशे रायः सुवीर्यस्य दातोः । मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः ॥ ६ ॥ परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम । न शेषो अग्ने अन्यजातमस्त्यचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः ॥ ७ ॥ नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ । अधा चिदोकः पुनरित्स एत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः ॥ ८ ॥ त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात् । सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री ॥ ९ ॥ एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम । विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥ ६ ॥

॥ ५ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः—१, ४ विराट् त्रिष्टुप् । २, ३, ८, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ७ स्वराट् पङ्क्तिः । ६ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—४, ८, ६ धैवतः । ५–७ पञ्चमः ॥

॥ ५ ॥ प्राग्नये तवसे भरध्वं गिरं दिवो अरतये पृथिव्याः । यो विश्वेषाममृतानामुपस्थे वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः ॥ १ ॥ पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् । स मानुषीरभि विशो वि भाति वैश्वानरो वावृधानो वरेण ॥ २ ॥ त्वद्भिया विश आयन्नसिक्नीरसमना जहतीर्भोजनानि । वैश्वानर पूरवे शोशुचानः पुरो यदग्ने दरयन्नदीदेः ॥ ३ ॥ तव त्रिधातु पृथिवी उत द्यौर्वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त । त्वं भासा रोदसी आ ततन्थाजस्रेण शोचिषा शोशुचानः ॥ ४ ॥ त्वामग्ने हरितो वावशाना गिरः सचन्ते धुनयो

घृताचीः । पतिं कृष्टीनां रथ्यं रयीणां वैश्वानरमुषसां केतुमह्नाम् ॥ ५ ॥ ७ ॥ त्वे असुर्यं वसवो न्यृण्वन्क्रतुं हि ते मित्रमहो जुषन्त । त्वं दस्यूँरोकसो अग्न आज उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय ॥ ६ ॥ स जायमानः परमे व्योमन्वायुर्न पाथः परि पासि सद्यः । त्वं भुवना जनयन्नभि क्रन्नपत्याय जातवेदो दशस्यन् ॥ ७ ॥ तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः । यया राधः पिन्वसि विश्ववार पृथु श्रवो दाशुषे मर्त्याय ॥ ८ ॥ तं नो अग्ने मघवद्भ्यः पुरुक्षुं रयिं नि वाजं श्रुत्यं युवस्व । वैश्वानर महि नः शर्म यच्छ रुद्रेभिरग्ने वसुभिः सजोषाः ॥ ९ ॥ ८ ॥

॥ ६ ॥ १—७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ६ विराट् त्रिष्टुप् । २ निचृत्पङ्क्तिः । ३, ७ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४—६ धैवतः । २, ३, ७ पञ्चमः ॥

॥ ६ ॥ प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्तिं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य । इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्मि ॥ १ ॥ कविं केतुं धासिं भानुमद्रेर्हिन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः । पुरन्दरस्य गीर्भिरा विवासेऽग्नेर्व्रतानि पूर्व्या महानि ॥ २ ॥ न्यक्रतून्ग्रथिनो मृध्रवाचः पणीँरश्रद्धाँ अवृधाँ अयज्ञान् । प्रप्र तान्दस्यूँरग्निर्विवाय पूर्वश्चकारापराँ अयज्यून् ॥ ३ ॥ यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचीश्चकार नृतमः शचीभिः । तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषेऽनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ॥ ४ ॥ यो देह्यो अनमयद्वधस्नैर्यो अर्यपत्नीरुषसश्चकार । स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः ॥ ५ ॥ यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास एवैस्तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः । वैश्वानरो वरमा रोदस्योराग्निः ससाद पित्रोरुपस्थम् ॥ ६ ॥ आ देवो ददे बुध्न्या वसूनि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य । आ समुद्रादवरादा परस्मादाग्निर्ददे दिव आ पृथिव्याः ॥ ७ ॥ ९ ॥

॥ ७ ॥ १—७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप् । ४, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ७ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३—६ धैवतः । २, ७ पञ्चमः ॥

॥ ७ ॥ प्र वो देवं चित्सहसानमग्निमश्वं न वाजिनं हिषे नमोभिः । भवा नो दूतो अध्वरस्य विद्वान्त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः ॥ १ ॥ आ याह्यग्ने पथ्या अनु स्वा मन्द्रो देवानां सख्यं जुषाणः । आ सानु शुष्मैर्नदयन्पृथिव्या जम्भे-

भिर्विश्वमुशध्ग्वनानि ॥ २ ॥ प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरीळितो न होता । आ मातरा विश्ववारे हुवानो यतो यविष्ठ जज्ञिषे सुशेवः ॥ ३ ॥ सद्यो अध्वरे रथिरं जनन्त मानुषासो विचेतसो य एषाम् । विशामधायि विश्पतिर्दुरोणे३ग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा ॥ ४ ॥ असादि वृतो वह्निराजगन्वानग्निर्ब्रह्मा नृषदने विधर्ता । द्यौश्च यं पृथिवी वावृधाते आ यं होता यजति विश्ववारम् ॥ ५ ॥ एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन् । प्र ये विशस्तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीधयन्नृतस्य ॥ ६ ॥ नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् । इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ १० ॥

॥ ८ ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ७ स्वराट् पङ्क्तिः । ५ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ३, ४, ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, ७ पञ्चमः । २—६ धैवतः ॥

॥ ८ ॥ इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन । नरो हव्येभिरीळते सबाध आग्निरग्र उषसामशोचि ॥ १ ॥ अयमु ष्य सुमहाँ अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यह्वो अग्निः । वि भा अकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णपविरोषधीभिर्ववक्षे ॥ २ ॥ कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्तिं कामु स्वधामृणवः सस्यमानः । कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः ॥ ३ ॥ प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत्सूर्यो न रोचते बृहद्भाः । अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच ॥ ४ ॥ असन्नित्त्वे आहवनानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः । स्तुतश्चिदग्ने शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात ॥ ५ ॥ इदं वचः शतसाः संसहस्रमुदग्नये जनिषीष्ट द्विबर्हाः । शं यत्स्तोतृभ्य आपये भवाति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा ॥ ६ ॥ नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् । इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ ११ ॥

॥ ९ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ३ भुरिक् पङ्क्तिः । ६ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४, ५ धैवतः । २, ३, ६ पञ्चमः ॥

॥ ९ ॥ अबोधि जार उषसामुपस्थाद्धोता मन्द्रः कवितमः पावकः । दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर्हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सु ॥ १ ॥ स सुक्रतुर्यो वि दुरः

णीनां पुनानो अर्कं पुरुभोजसं नः। होता मन्द्रो विशां दमूनास्तिरस्तमो ददृशे राम्याणाम् ॥ २ ॥ अमूरः कविरदितिर्विवस्वान्त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः। चित्रभानुरुषसां भात्यग्रेऽपां गर्भः प्रस्वऽआ विवेश ॥ ३ ॥ ईळेन्यो वो मनुषो युगेषु समनगा अशुचज्जातवेदाः । सुसन्दृशा भानुना यो विभाति प्रति गावः समिधानं बुधन्त ॥ ४ ॥ अग्ने याहि दूत्यंऽमा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृता गणेन । सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान्रत्नधेयाय विश्वान् ॥ ५ ॥ त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हन्यक्षि राये पुरन्धिम् । पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ १२ ॥

॥ १० ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥१०॥ उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद्दविद्युतद्दीद्यच्छोशुचानः । वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः ॥ १ ॥ स्वऽर्ण वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म । अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान्द्रवद्दूतो देवयावा वनिष्ठः ॥ २ ॥ अच्छा गिरो मतयो देवयन्तीरग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः । सुसन्दृशं सुप्रतीकं स्वञ्चं हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम् ॥ ३ ॥ इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः सजोषा रुद्रं रुद्रेभिरा वहा बृहन्तम् । आदित्येभिरदितिं विश्वजन्यां बृहस्पतिमृक्वभिर्विश्ववारम् ॥ ४ ॥ मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठमग्निं विश ईळते अध्वरेषु । स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणामतन्द्रो दूतो यजथाय देवान् ॥५॥१३॥

॥ ११ ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ स्वराट् पङ्क्तिः । २, ४ भुरिक्पङ्क्तिः । ३ विराट्त्रिष्टुप् । ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, २, ४, पञ्चमः । ३, ५ धैवतः ॥

॥ ११ ॥ महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते । आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर्न्यग्ने होता प्रथमः सदेह ॥ १ ॥ त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन्मानुषासः । यस्य देवैरासदो बर्हिरग्नेऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति ॥ २ ॥ त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुर्वसूनि त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्याय । मनुष्वदग्न इह यक्षि देवान्भवा नो दूतो अभिशस्तिपावा ॥ ३ ॥ अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्याग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य । क्रतुं ह्यस्य वसवो जुषन्ताथा देवा

दधिरे हव्यवाहम् ॥ ४ ॥ आग्ने वह हविरद्याय देवानिन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम्
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ १२ ॥ १–३ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ विराट् त्रिष्टुप्
२ त्रिष्टुप् । ३ पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, २ धैवतः । ३ पञ्चमः ॥

॥ १२ ॥ अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे । चि-
त्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम् ॥ १ ॥ स मह्ना विश्वा दु-
रितानि साह्वानग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः । स नो रक्षिषद्दुरितादवद्यादस्मा-
न्गृणत उत नो मघोनः ॥ २ ॥ त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभि-
र्वसिष्ठाः । त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥१५॥

॥ १३ ॥ १–३ वसिष्ठ ऋषिः ॥ वैश्वानरो देवता ॥ छन्दः—१, २ स्वराट्
पङ्क्तिः । ३ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ १३ ॥ प्राग्नये विश्वशुचे धियन्धेऽसुरघ्ने मन्म धीतिं भरध्वम् । भरे ह-
विर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम् ॥ १ ॥ त्वमग्ने शोचिषा शो-
शुचान आ रोदसी अपृणा जायमानः । त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर
जातवेदो महित्वा ॥ २ ॥ जातो यदग्ने भुवना व्यख्यः पशून्न गोपा इर्यः परि-
ज्मा । वैश्वानर ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥ १६ ॥

॥ १४ ॥ १—३ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती ।
२ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१ मध्यमः । २, ३ धैवतः ॥

॥ १४ ॥ समिधा जातवेदसे देवाय देवहूतिभिः । हविर्भिः शुक्रशोचिषे न-
मस्विनो वयं दाशेमाग्नये ॥ १ ॥ वयं ते अग्ने समिधा विधेम वयं दाशेम सुष्टु-
ती यजत्र । वयं घृतेनाध्वरस्य होतर्वयं देव हविषा भद्रशोचे ॥ २ ॥ आ नो दे-
वेभिरुप देवहूतिमग्ने याहि वषट्कृतिं जुषाणः । तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं
पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥ १७ ॥

॥ १५ ॥ १—१५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ७, १०, १२,
१४ विराड्गायत्री । २, ४, ५, ६, ९, १३ गायत्री । ८ निचृद्गायत्री । ११,
१५ आर्च्युष्णिक् ॥ स्वरः–१–१०, १२, १३, १४ षड्जः । ११, १५ ऋषभः ॥

॥ १५ ॥ उ॒प॒सद्या॑य मी॒ळ्हुष॑ आ॒स्ये॑ जुहुता ह॒विः । यो नो॒ नेदि॑ष्ठ॒माप्य॑म्
॥ १ ॥ यः पञ्च॑ चर्ष॒णीर॒भि नि॑ष॒साद॒ दमे॑दमे । क॒विर्गृ॒हप॑ति॒र्युवा॑ ॥ २ ॥ स
नो॒ वेदो॑ अ॒मात्य॑म॒ग्नी र॑क्षतु वि॒श्वतः॑ । उ॒तास्मान्पा॒त्वंह॑सः ॥ ३ ॥ नवं॒ नु स्तोम॑-
म॒ग्नये॑ दि॒वः श्ये॒नाय॑ जीजनम् । वस्वः॑ कु॒विद्व॒नाति॑ नः ॥४॥ स्पा॒र्हा यस्य॒ श्रियो॑
दृ॒शे र॒यिर्वी॒रव॑तो यथा । अग्रे॑ य॒ज्ञस्य॒ शोच॑तः ॥ ५ ॥ १८ ॥ सेमां वे॑तु॒ वष॑ट्कृ-
तिम॒ग्निर्जु॑षत नो॒ गिरः॑ । यजि॑ष्ठो हव्य॒वाह॑नः ॥ ६ ॥ नि त्वा॑ नक्ष्य विश्पते द्यु-
मन्तं॑ देव धीमहि । सु॒वीर॑मग्न आहुत ॥ ७ ॥ क्षप॑ उ॒स्रश्च॑ दीदिहि स्व॒ग्नय॒स्त्वया॑
व॒यम् । सु॒वीर॒स्त्वम॑स्म॒युः ॥ ८ ॥ उप॑ त्वा सा॒तये॒ नरो॒ विप्रा॑सो यन्ति धी॒तिभिः॑ ।
उपाक्ष॑रा सह॒स्रिणी॑ ॥ ९ ॥ अ॒ग्नी रक्षां॑सि सेधति शु॒क्रशो॑चि॒रम॑र्त्यः । शुचिः॑ पा-
व॒क ईड्यः॑ ॥ १० ॥ १९ ॥ स नो॒ राधां॒स्या भ॒रेशा॑नः सहसो यहो । भग॑श्च
दा॒तु वार्य॑म् ॥ ११ ॥ त्वम॑ग्ने वी॒रव॒द्यशो॑ दे॒वश्च॑ सवि॒ता भगः॑ । दिति॑श्च दा॒ति
वार्य॑म् ॥ १२ ॥ अग्ने॒ रक्षा॑ णो॒ अंह॑सः॒ प्रति॑ ष्म देव॒ रीष॑तः । तपि॑ष्ठैर॒जरो॑ दह
॥ १३ ॥ अधा॑ म॒ही न॒ आय॒स्यना॑धृष्टो॒ नृपी॑तये । पूर्भ॑वा श॒तभु॑जिः ॥ १४ ॥
त्वं नः॑ पा॒ह्यंह॑सो॒ दोषा॑वस्तरघाय॒तः । दि॒वा नक्त॑मदाभ्य ॥ १५ ॥ २० ॥

॥ १६ ॥ १–१२ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ स्वराडनु-
ष्टुप् । ५ निचृदनुष्टुप् । ७ अनुष्टुप् । ११ भुरिगनुष्टुप् । २ भुरिग्बृहती । ३ निचृद्-
बृहती । ४, ९, १० बृहती । ६, ८, १२ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ५, ७, ११
गान्धारः । २, ३, ४, ९, १० मध्यमः । ६, ८, १२ पञ्चमः ॥

॥ १६ ॥ ए॒ना वो॑ अ॒ग्निं नम॑सो॒र्जो नपा॑त॒मा हु॑वे । प्रि॒यं चेति॑ष्ठमर॒तिं स्व॑-
ध्व॒रं विश्व॑स्य दू॒तम॒मृत॑म् ॥ १ ॥ स यो॑जते अरु॒षा वि॒श्वभो॑जसा स दु॑द्रव॒त्स्वा॑-
हुतः । सु॒ब्रह्मा॑ य॒ज्ञः सु॒शमी॒ वसू॑नां दे॒वं राधो॒ जना॑नाम् ॥ २ ॥ उद॑स्य शो॒-
चिर॑स्थादा॒जुह्वा॑नस्य मी॒ळ्हुषः॑ । उद्धू॒मासो॑ अरु॒षासो॑ दिवि॒स्पृशः॒ सम॒ग्निमि॑न्धते॒ नरः॑
॥ ३ ॥ तं त्वा॑ दू॒तं कृ॑ण्महे य॒शस्त॑मं दे॒वाँ आ वी॒तये॑ वह । विश्वा॑ सूनो सहसो
मर्त॒भोज॑ना॒ रास्व॒ तद्यत्त्वेम॑हे ॥ ४ ॥ त्वम॑ग्ने गृ॒हप॑ति॒स्त्वं होता॑ नो अध्व॒रे । त्वं
पोता॑ विश्ववार॒ प्रचे॑ता॒ यक्षि॒ वेषि॑ च॒ वार्य॑म् ॥ ५॥ कृ॒धि रत्नं॒ यज॑मानाय सुक्रतो॒
त्वं हि र॑त्न॒धा असि॑ । आ न॑ ऋ॒ते शि॑शीहि॒ विश्व॑मृ॒त्विजं॑ सु॒शंसो॒ यश्च॒ दक्ष॑ते ॥६॥
॥ २१ ॥ त्वे अ॑ग्ने स्वाहुत प्रि॒यासः॑ सन्तु सू॒रयः॑ । य॒न्तारो॒ ये म॒घवा॑नो॒ जना॑ना-
मू॒र्वान्दय॑न्त॒ गोना॑म् ॥ ७ ॥ येषा॒मिळा॑ घृ॒तह॑स्ता दुरो॒ण आँ अपि॑ प्रा॒ता नि॒षीद॑ति ।

तांस्त्रायस्व सहस्य द्रुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत् ॥८॥ स मन्द्रया च जिह्वया वह्निरासा विदुष्टरः । अग्ने रयिं मघवंद्भ्यो न आ वह हव्यदातिं च सूदय ॥९॥ ये राधांसि ददत्यश्व्या मघा कामेन श्रवसो महः । ताँ अंहसः पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं शतं पूर्भिर्यविष्ठ्य ॥ १० ॥ देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम् । उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥ ११ ॥ तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत । दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे ॥ १२ ॥ २२ ॥

॥ १७ ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७ आर्च्युष्णिक् । २ साम्नी त्रिष्टुप् । ५ साम्नी पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६, ७ ऋषभः । २ धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ १७ ॥ अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध उत बर्हिरुर्विया वि स्तृणीताम् ॥ १ ॥ उत द्वार उशतीर्वि श्रयन्तामुत देवाँ उशत आ वहेह ॥ २ ॥ अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान्त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ॥ ३ ॥ स्वध्वरा करति जातवेदा यक्षद्देवाँ अमृतान्पिप्रयच्च ॥ ४ ॥ वंस्व विश्वा वार्याणि प्रचेतः सत्या भवन्त्वाशिषो नो अद्य ॥ ५ ॥ त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं देवासो अग्न ऊर्ज आ नपातम् ॥ ६ ॥ ते ते देवाय दाशतः स्याम महो नो रत्ना वि दध इयानः ॥ ७ ॥ २३ ॥ १ ॥

॥ १८ ॥ १—२५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १—२१ इन्द्रः । २२—२५ सुदासः पैजवनस्य दानस्तुतिर्देवता ॥ छन्दः—१, १७, २१ पङ्क्तिः । २, ४, १२, २२ भुरिक् पङ्क्तिः । ८, १३, १४ स्वराट् पङ्क्तिः । ३, ७ विराट् त्रिष्टुप् । ५, ९, ११, १६, १९, २० निचृत्त्रिष्टुप् । ६, १०, १५, १८, २३, २४, २५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ८, १२—१४ १७, २१, २२ पञ्चमः । ३, ५—७ ९–११, १५, १६, १८, १९, २०, २३, २४, २५ धैवतः ॥

॥ १८ ॥ त्वे ह यत्पितरश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन् । त्वे गावः सुदुघास्त्वे ह्यश्वास्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः ॥ १ ॥ राजेव हि जनिभिः क्षेष्येवाव द्युभिरभि विदुष्कविः सन् । पिशा गिरो मघवन्गोभिरश्वैस्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान् ॥ २ ॥ इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः । अर्वाची ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमताविन्द्र शर्मन् ॥ ३ ॥ धेनुं न त्वा सूयवसे दुदुक्षन्नुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः । त्वामिन्मे गोपतिं विश्व

हा न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ ॥ ४ ॥ अर्णांसि चित्पप्रथाना सुदास इन्द्रो गा-
न्यकृणोत्सुपारा। शर्धन्तं शिम्युमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः
५ ॥ २४ ॥ पुरोळा इत्तुर्वशो यक्षुरासीद्राये मत्स्यासो निशिता अपीव। श्रु-
श्चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद्विषूचोः ॥ ६ ॥ आ पक्थासो भलानसो
न्तालिनासो विषाणिनः शिवासः। आ योऽनयत्सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सु-
ो अजगन्युधा नॄन् ॥ ७ ॥ दुराध्यो३ अदितिं स्रेवयन्तोऽचेतसो वि जगृभ्रे प-
णीम्। मह्नाविव्यक्पृथिवीं पत्यमानः पशुष्कविरशयच्चायमानः ॥ ८ ॥ ईयुरर्थं
न्यर्थं परुष्णीमाशुश्चनेदभिपित्वं जगाम। सुदास इन्द्रः सुतुकाँ अमित्रानरन्ध-
मानुषे वध्रिवाचः ॥ ९ ॥ ईयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चिता-
। पृश्निगावः पृश्निनिप्रेषितासः श्रुष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च ॥ १० ॥ २५ ॥
ं च यो विंशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोर्जनान्राजा न्यस्तः। दस्मो न सद्मन्नि शि-
ति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम् ॥ ११ ॥ अध श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्वनु
युं नि वृणग्वज्रबाहुः। वृणाना अत्र सख्याय सख्यं त्वायन्तो ये अमदन्ननु त्वा
१२ ॥ वि सद्यो विश्वा दृंहितान्येषामिन्द्रः पुरः सहसा सप्त दर्दः। व्यानवस्य
सवे गयं भाग्जेष्म पूरुं विदथे मृध्रवाचम् ॥ १३ ॥ नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च
ष्टिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा। षष्टिर्वीरासो अधि षड् दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या
ानि ॥ १४ ॥ इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अधवन्त नीचीः।
मित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वानि भोजना सुदासे ॥ १५ ॥ २६ ॥ अर्धं
रस्यं शृतपामनिन्द्रं परा शर्धन्तं नुनुदे अभि क्षाम्। इन्द्रो मन्युं मन्युम्यो मिमाय
े पथो वर्तनिं पत्यमानः ॥ १६ ॥ आध्रेण चित्तद्वेकं चकार सिंह्यं चित्पेत्वेना
यान। अव स्रक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद्विश्वा भोजना सुदासे ॥ १७ ॥
र्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टे भेदस्य चिच्छर्धतो विन्द रन्धिम्। मर्ताँ एनः स्तुवतो
कृणोति तिग्मं तस्मिन्नि जहि वज्रमिन्द्र ॥ १८ ॥ आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च
त्र भेदं सर्वताता मुषायत्। अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च बलिं शीर्षाणि जभ्रु-
व्यानि ॥ १९ ॥ न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वा उषसो न नूत्नाः।
र्कं चिन्मान्यमानं जघन्थाव त्मना बृहतः शम्बरं भेत् ॥ २० ॥ २७ ॥ प्र ये
ादममदुस्त्वाया पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः। न ते भोजस्य सख्यं मृषन्ताधा सू-
न्यः सुदिना व्युच्छान् ॥ २१ ॥ द्वे नप्तुर्देववतः शते गोर्द्वा रथा वधूमन्ता सु-
सः। अर्हन्नग्ने पैजवनस्य दानं होतेव सद्म पर्येमि रेभन् ॥ २२ ॥ चत्वारो मा

पैजवनस्य दानाः स्मदिष्टयः कृशनिनो निरेके । ऋज्रासो मा पृथिविष्ठाः सुदासं
स्तोकं तोकाय श्रवसे वहन्ति ॥ २३ ॥ यस्य श्रवो रोदसी अन्तरुर्वी शीर्ष्णेशीर्ष्णे
विबभाजा विभक्ता । सप्तेदिन्द्रं न स्रवतो गृणन्ति नि युध्यामधिमशिशादभीके ॥२४॥
इमं नरो मरुतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदासः । अविष्टना पैजवनस्य केतं
दूणाशं क्षत्रमजरं दुवोयु ॥ २५ ॥ २८ ॥

॥ १९ ॥ १—११ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५ त्रिष्टुप् । ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ७, ९, १० विराट् त्रिष्टुप् । २ निचृत्पङ्क्तिः । ४ पङ्क्तिः । ८, ११ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ६, ७, ९, १० धैवतः । २, ४, ८, ११ पञ्चमः ॥

॥ १९ ॥ यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः ।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः ॥ १ ॥ त्वं ह त्यदि-
न्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये । दासं यच्छुष्णं कुयवं न्यस्मा अरन्धय
आर्जुनेयाय शिक्षन् ॥ २ ॥ त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः
सुदासम् । प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम् ॥ ३ ॥ त्वं
नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि । त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चा-
स्वापयो दभीतये सुहन्तु ॥ ४ ॥ तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि नव यत्पुरो न-
वतिं च सद्यः । निवेशने शततमाविवेषीरहन् च वृत्रं नमुचिमुताहन् ॥ ५ ॥ २९ ॥
सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे । वृष्णे ते हरी वृषणा
युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम् ॥ ६ ॥ मा ते अस्यां सहसावन्परिष्टा-
वघाय भूम हरिवः परादै । त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैस्तव प्रियासः सूरिषु स्याम
॥ ७ ॥ प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः । नि तुर्वशं नि याद्वं
शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ॥ ८ ॥ सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शं-
सन्त्युक्थशास उक्था । ये ते हवेभिर्वि पणीरदाशन्नस्मान्वृणीष्व युज्याय तस्मै
॥ ९ ॥ एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्यमस्मद्र्यञ्चो ददतो मघानि । तेषामिन्द्र वृत्र-
हत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम् ॥ १० ॥ नू इन्द्र शूर स्तवमान
ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व । उप नो वाजान्मिमीह्युप स्तीन्यूयं पात स्वस्तिभिः
सदा नः ॥ ११ ॥ ३० ॥ २ ॥

॥ २० ॥ १—१० वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ स्वराट् पङ्क्तिः । ७ भुरिक् पङ्क्तिः । २, ४, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ५ विराट्त्रिष्टुप् । ६, ८, ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः । २—६, ८, ९, १० धैवतः ॥

॥ २० ॥ उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावाञ्चक्रिरपो नर्यो यत्करिष्यन् । जग्मिर्युवा नृषदनमवोभिस्त्राता न इन्द्र एनसो महश्चित् ॥ १ ॥ हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः प्रावीन्नु वीरो जरितारमूती । कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं दाता वसु मुहुरा दाशुषे भूत् ॥ २ ॥ युध्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा शूरः सत्राषाड् जनुषेमषाळ्हः । व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान ॥ ३ ॥ उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा पप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः । नि वज्रमिन्द्रो हरिवान्मिमिक्षन्त्समन्धसा मदेषु वा उवोच ॥ ४ ॥ वृषा जजान वृषणं रणाय तमु चिन्नारी नर्यं ससूव । प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्तीनः सत्वा गवेषणः स धृष्णुः ॥ ५ ॥ १ ॥ नू चित्स भ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो अस्य घोरमाविवासात् । यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपा ऋतेजाः ॥ ६ ॥ यदिन्द्र पूर्वो अपराय शिक्षन्नयज्ज्यायान्कनीयसो देष्णम् । अमृत इत्पर्यासीत दूरमा चित्र चित्र्यं भरा रयिं नः ॥ ७ ॥ यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाशदसन्निरेके अद्रिवः सखा ते । वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्ठाः स्याम वरूथे अघ्नतो नृपीतौ ॥ ८ ॥ एष स्तोमो अचिक्रदद्वृषा त उत स्तामुर्मघवन्नक्रपिष्ट । रायस्कामो जरितारं त आगन्त्वमङ्ग शक्र वस्व आ शको नः ॥ ९ ॥ स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति । वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥ २ ॥

॥ २१ ॥ १-१० वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ६, ८, ९ विराट् त्रिष्टुप् । २, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ७ भुरिक्पङ्क्तिः । ४, ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१, २, ६, ८, ९, १० धैवतः । ३, ४, ५, ७ पञ्चमः ॥

॥ २१ ॥ असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच । बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा नः स्तोममन्धसो मदेषु ॥ १ ॥ प्र यन्ति यज्ञं विपयन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुध्रवाचः । न्यु भ्रियन्ते यशसो गृभादा दूरउपब्दो वृषणो नृषाचः ॥ २ ॥ त्वमिन्द्र स्रवितवा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः । त्वद्वावक्रे रथ्यो३ न धेना रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि भीषा ॥ ३ ॥ भीमो विवेषा-

युधेभिरेषामपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान् । इन्द्रः पुरो जर्हृषाणो वि दूधोद्वि वज्रहस्तो महिना जघान ॥ ४ ॥ न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः । स शर्धदर्यो विषुणस्य जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः ॥ ५ ॥ ३ ॥ अभि क्रत्वेन्द्र भूरध ज्मन्न ते विव्यङ्महिमानं रजांसि । स्वेना हि वृत्रं शवसा जघन्थ न शत्रुरन्तं विविदद्युधा ते ॥ ६ ॥ देवाश्चित्ते असुर्याय पूर्वेऽनु क्षत्राय ममिरे सहांसि । इन्द्रो मघानि दयते विषह्येन्द्रं वाजस्य जोहुवन्त सातौ ॥ ७ ॥ कीरिश्चिद्धि त्वामवसे जुहावेशानमिन्द्र सौभगस्य भूरेः । अवो बभूथ शतमूते अस्मे अभिक्षत्तुस्त्वावतो वरूता ॥ ८ ॥ सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र । वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीकेऽभीतिमर्यो वनुषां शवांसि ॥ ९ ॥ स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति । वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ २२ ॥ १-९ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक् । २, ७ निचृदनुष्टुप् । ३ भुरिगनुष्टुप् । ५ अनुष्टुप् । ६, ८ विराडनुष्टुप् । ४ आर्ची पङ्क्तिः । ९ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ ऋषभः । २, ३, ५—८ गान्धारः । ४ पञ्चमः । ९ धैवतः ॥

॥ २२ ॥ पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ १ ॥ यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि । स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥ २ ॥ बोधा सु मे मघवन्वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् । इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥ ३ ॥ श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेर्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम् । कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा ॥ ४ ॥ न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान् । सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ॥ ५ ॥ ५ ॥ भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित् । मारे अस्मन्मघवञ्ज्योकः ॥ ६ ॥ तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि । त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ॥ ७ ॥ नू चिन्नु ते मन्यमानस्य दस्मोदश्नुवन्ति महिमानमुग्र । न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ॥ ८ ॥ ये च पूर्व ऋषयो ये च नूत्ना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः । अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ९ ॥ ६ ॥

॥ २३ ॥ १-६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ६ भुरिक्-

पङ्क्तिः । ४ स्वराट् पङ्क्तिः । २, ३ विराट् त्रिष्टुप् । ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६ पञ्चमः । २, ३, ५ धैवतः ॥

॥ २३ ॥ उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ । आ यो विश्वानि शवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥ १ ॥ अयामि घोष इन्द्र देवजामिरिरज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि । नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्ष्यस्मान् ॥ २ ॥ युजे रथं गवेषणं हरिभ्यामुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः । वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वेन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ॥ ३ ॥ आपश्चित्पिप्युः स्तर्यो३न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्त इन्द्र । याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ॥ ४ ॥ ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे एको देवत्रा दयसे हि मर्तानस्मिञ्छूर सवने मादयस्व ॥ ५ ॥ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः । स नः स्तुतो वीरवत्पातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ ७ ॥

॥ २४ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ५ त्रिष्टुप् । ४ विराट् त्रिष्टुप् । ६ विराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–५ धैवतः । ६ पञ्चमः ॥

॥ २४ ॥ योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि । असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः ॥ १ ॥ गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हाः सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि । विसृष्टधेना भरते सुवृक्तिरियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा ॥ २ ॥ आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि । वहन्तु त्वा हरयो मद्र्यञ्चमाङ्गूषमच्छा तवसं मदाय ॥ ३ ॥ आ नो विश्वाभिरूतिभिः सजोषा ब्रह्म जुषाणो हर्यश्व याहि । वरीवृजत्स्थविरेभिः सुशिप्रास्मे दधद्वृषणं शुष्ममिन्द्र ॥ ४ ॥ एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरी३वात्यो न वाजयन्नधायि । इन्द्र त्वायमर्क ईट्टे वसूनां दिवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः ॥ ५ ॥ एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम । इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ ८ ॥

॥ २५ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः । २ विराट् पङ्क्तिः । ४ पङ्क्तिः । ६ स्वराट्पङ्क्तिः । ३ विराट् त्रिष्टुप् । ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ६ पञ्चमः । ३, ५ धैवतः ॥

॥ २५ ॥ आ ते मह इन्द्रोत्युग्र समन्यवो यत्समरन्त सेनाः । पताति दि-
द्युन्नर्यस्य बाह्वोर्मा ते मनो विष्वद्र्यग्वि चारीत् ॥ १ ॥ नि दुर्ग इन्द्र श्नथिह्यमि-
त्रांनभि ये नो मर्तासो अमन्ति । आरे तं शंसं कृणुहि निनित्सोरा नो भर
सम्भरणं वसूनाम् ॥ २ ॥ शतं ते शिप्रिन्नूतयः सुदासे सहस्रं शंसा उत राति-
रस्तु । जहि बधर्वनुषो मर्त्यस्यास्मे द्युम्नमधि रत्नं च धेहि ॥ ३ ॥ त्वावतो हीन्द्र
क्रत्वे अस्मि त्वावतोऽवितुः शूर रातौ । विश्वेदहानि तविषीव उग्रँ ओकः कृणुष्व
हरिवो न मर्धीः ॥ ४ ॥ कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः ।
सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम् ॥ ५ ॥ एवा न इन्द्र
वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम । इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात
स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ ९ ॥

॥ २६ ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ३, ४ त्रिष्टुप् । ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २६ ॥ न सोम इन्द्रमसुतो ममाद नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः । तस्मा
उक्थं जनये यज्जुजोषन्नृवन्नवीयः शृणवद्यथा नः ॥ १ ॥ उक्थउक्थे सोम इन्द्रं
ममाद नीथेनीथे मघवानं सुतासः । यदीं सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अ-
वसे हवन्ते ॥ २ ॥ चकार ता कृणवन्नूनमन्या यानि ब्रुवन्ति वेधसः सुतेषु । ज-
नीरिव पतिरेकः समानो नि मामृजे पुर इन्द्रः सु सर्वाः ॥ ३ ॥ एवा तमाहुरुत
शृण्व इन्द्र एको विभक्ता तरणिर्मघानाम् । मिथस्तुर ऊतयो यस्य पूर्वीरस्मे भ-
द्राणि सश्चत प्रियाणि ॥ ४ ॥ एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये नॄन्कृष्टीनां वृषभं सुते गृ-
णाति । सहस्रिण उप नो माहि वाजान्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥१०॥

॥ २७ ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५ विराट् त्रिष्टुप् । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ४ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २७ ॥ इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः । शूरो नृ-
षाता शवसश्चकान आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ १ ॥ य इन्द्र शुष्मो मघ-
वन्ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः । त्वं हि दृळ्हा मघवन्विचेता अपा
वृधि परिवृतं न राधः ॥ २ ॥ इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं य-
दस्ति । ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक् ॥ ३ ॥ नू चिन्न

इन्द्रो मघवा सहूती दानो वाजं नि यमते न ऊती । अनूना यस्य दक्षिणा पीपाय वामं नृभ्यो अभिवीता सखिभ्यः ॥ ४ ॥ नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघाय । गोमदश्वावद्रथवद्व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥११॥

॥ २८ ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, २, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ भुरिक्पङ्क्तिः । ४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, २, ५ धैवतः । ३, ४ पञ्चमः ॥

॥ २८ ॥ ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि विद्वानर्वाञ्चस्ते हरयो सन्तु युक्ताः । विश्वे चिद्धि त्वा विहवन्त मर्ता अस्माकमिच्छृणुहि विश्वमिन्व ॥ १ ॥ हवं त इन्द्र महिमा व्यानड्ब्रह्म यत्पासि शवसिन्नृषीणाम् । आ यद्वज्रं दधिषे हस्त उग्र घोरः सन्क्रत्वा जनिष्ठा अषाळ्हः ॥२॥ तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान्त्सं यन्नॄन्न रोदसी निनेथ । महे क्षत्राय शवसे हि जज्ञेऽतूतुजिं चित्तूतुजिरशिश्नत् ॥ ३ ॥ एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य दुर्मित्रासो हि क्षितयः पवन्ते । प्रति यच्चष्टे अनृतमनेना अव द्विता वरुणो मायी नः सात् ॥ ४ ॥ वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्दन्नः । यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ १२ ॥

॥ २९ ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ स्वराट्पङ्क्तिः । ३ पङ्क्तिः । २ विराट्त्रिष्टुप् । ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः । २, ४, ५ धैवतः ॥

॥ २९ ॥ अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्व आ तु प्र याहि हरिवस्तदोकाः । पिबा त्व१स्य सुषुतस्य चारोर्ददो मघानि मघवन्नियानः ॥ १ ॥ ब्रह्मन्वीर ब्रह्मकृतिं जुषाणोऽर्वाचीनो हरिभिर्याहि तूयम् । अस्मिन्नू षु सवने मादयस्वोप ब्रह्माणि शृणव इमा नः ॥ २ ॥ का ते अस्त्यरंकृतिः सूक्तैः कदा नूनं ते मघवन्दाशेम । विश्वा मतीरा ततने त्वायाधा म इन्द्र शृणवो हवेमा ॥ ३ ॥ उतो घा ते पुरुष्या३इदासन्येषां पूर्वेषामशृणोर्ऋषीणाम् । अधाहं त्वा मघवञ्जोहवीमि त्वं न इन्द्रासि प्रमतिः पितेव ॥ ४ ॥ वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्दन्नः । यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ ३० ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ विराट् त्रिष्टुप् । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ निचृत्पङ्क्तिः । ४, ५ स्वराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २ धैवतः । ३, ४, ५ पञ्चमः ॥

॥ ३० ॥ आ नो देव शवसा याहि शुष्मिन्भवा वृध इन्द्र रायो अस्य । महे नृम्णाय नृपते सुवज्र महि क्षत्राय पौंस्याय शूर ॥ १ ॥ हवन्त उ त्वा हव्यं विवाचि तनूषु शूराः सूर्यस्य सातौ । त्वं विश्वेषु सेन्यो जनेषु त्वं वृत्राणि रन्धया सुहन्तु ॥ २ ॥ अहा यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान्दधो यत्केतुमुपमं समत्सु । न्यग्निः सीदद्सुरो न होता हुवानो अत्र सुभगाय देवान् ॥ ३ ॥ वयं ते त इन्द्र ये च देव स्तवन्त शूर ददतो मघानि । यच्छा सूरिभ्य उपमं वरूथं स्वाभुवो जरणामश्नवन्त ॥ ४ ॥ वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्दन्नः । यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ ३१ ॥ १–१२ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ विराड्गायत्री । २, ८ गायत्री । ६, ७, ९ निचृद्गायत्री । ३, ४, ५ आर्च्युष्णिक् । १०, ११ भुरिगनुष्टुप् । १२ अनुष्टुप् ॥ स्वरः–१, २, ६–९ षड्जः । ३, ४, ५ ऋषभः । १०–१२ गान्धारः ॥

॥ ३१ ॥ प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत । सखायः सोमपाव्ने ॥ १ ॥ शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः । चकृमा सत्यराधसे ॥ २ ॥ त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो । त्वं हिरण्ययुर्वसो ॥ ३ ॥ वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन् । विद्धी त्वस्य नो वसो ॥ ४ ॥ मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे । त्वे अपि क्रतुर्मम ॥ ५ ॥ त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् । त्वया प्रति ब्रुवे युजा ॥ ६ ॥ १५ ॥ महाँ उतासि यस्य तेऽनु स्वधावरी सहः । मम्नाते इन्द्र रोदसी ॥ ७ ॥ तं त्वा मरुत्वती परि भुवद्वाणी सयावरी । नक्षमाणा सह द्युभिः ॥ ८ ॥ ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो भुवन्दस्ममुप द्यवि । सं ते नमन्त कृष्टयः ॥ ९ ॥ प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् । विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः ॥ १० ॥ उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः । तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ॥ ११ ॥ इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै । हर्यश्वाय बर्हया समापीन् ॥ १२ ॥ १६ ॥

॥ ३२ ॥ १–२७, २६[१], २७ वसिष्ठः । २६[१] वसिष्ठः शक्तिर्वा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ४, २४ विराड् बृहती । ६, ८, १२, १६, १८, २६ निचृद्बृहती । ११, २७ बृहती । १७, २५ भुरिग्बृहती । २१ स्वराड्बृहती ।

२, ६ पङ्क्तिः । ५, १३, १५, १६, २३ निचृत्पङ्क्तिः । ३ साम्नीपङ्क्तिः । ७ विराट् पङ्क्तिः । १०, १४ भुरिगनुष्टुप् । २०, २२ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६, ८, ११, १२, १६, १७, १८, २१, २४, २५, २६, २७ मध्यमः । २, ३, ५, ७, ६, १३, १५, १६, २३ पञ्चमः । १०, १४, २०, २२ गान्धारः ॥

॥ ३२ ॥ मो षु त्वा वाघतश्चनारे अस्मन्नि रीरमन् । आरात्ताच्चित्सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥ १ ॥ इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते । इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः ॥ २ ॥ रायस्कामो वज्रहस्तं सुदक्षिणं पुत्रो न पितरं हुवे ॥ ३ ॥ इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः । ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥ ४ ॥ श्रवच्छ्रुत्कर्ण ईयते वसूनां नू चिन्नो मर्धिषद्गिरः । सद्यश्चिद्यः सहस्राणि शता ददन्नकिर्दित्सन्तमा मिनत् ॥ ५ ॥ १७ ॥ स वीरो अप्रतिष्कुत इन्द्रेण शूशुवे नृभिः । यस्ते गभीरा सवनानि वृत्रहन्त्सुनोत्या च धावति ॥ ६ ॥ भवा वरूथं मघवन्मघोनां यत्समजासि शर्धतः । वि त्वाहतस्य वेदनं भजेमह्या दूणाशो भरा गयम् ॥ ७ ॥ सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे । पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित्पृणन्नित्पृणते मयः ॥ ८ ॥ मा स्रेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आतुजे । तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे ॥ ६ ॥ नकिः सुदासो रथं पर्यास न रीरमत् । इन्द्रो यस्याविता यस्य मरुतो गमत्स गोमति व्रजे ॥ १० ॥ ॥ १८ ॥ गमद्वाजं वाजयन्निन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः । अस्माकं बोध्यविता रथानामस्माकं शूर नृणाम् ॥ ११ ॥ उदिन्न्वस्य रिच्यतेऽंशो धनं न जिग्युषः । य इन्द्रो हरिवान्न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि ॥ १२ ॥ मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा । पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् ॥ १३ ॥ कस्तमिन्द्र त्वावसुमा मर्त्यो दधर्षति । श्रद्धा इत्ते मघवन्पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ १४ ॥ मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु । तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता ॥ १५ ॥ १६ ॥ तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् । सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि नकिष्ट्वा गोषु वृण्वते ॥ १६ ॥ त्वं विश्वस्य धनदा असि श्रुतो य ईं भवन्त्याजयः । तवायं विश्वः पुरुहूत पार्थिवोऽवस्युर्नाम भिक्षते ॥ १७ ॥ यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय । स्तोतारमिद्दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय ॥ १८ ॥ शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे । नहि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति

पिता चन ॥ १९ ॥ तरणिरित्सिषासति वाजं पुरंन्ध्या युजा। आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्र्वम् ॥ २० ॥ २० ॥ न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्रेधन्तं रयिर्नशत् । सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥ २१ ॥ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः । ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥ २२ ॥ न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते । अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ २३ ॥ अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः । पुरूवसुर्हि मघवन्त्सनादसि भरेभरे च हव्यः ॥ २४ ॥ परा णुदस्व मघवन्नमित्रान्त्सुवेदा नो वसू कृधि । अस्माकं बोध्यविता महाधने भवा वृधः सखीनाम् ॥ २५ ॥ इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा । शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ २६ ॥ मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३माशिवासो अव क्रमुः । त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥ २७ ॥ २१ ॥

॥ ३३ ॥ १--१४ संस्तवो वसिष्ठस्य सपुत्रस्येन्द्रेण वा संवादः ॥ १—९ वसिष्ठपुत्राः । १०—१४ वसिष्ठ ऋषिः ॥ त एव देवताः ॥ छन्दः—१, २, ६, १२, १३ त्रिष्टुप् । ३, ४, ५, ७, ९, १४ निचृत्त्रिष्टुप् । ८, ११ विराट्त्रिष्टुप् । १० भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—९, ११,—१४ धैवतः । १० पञ्चमः ॥

॥ ३३ ॥ श्वित्यञ्चो मा दक्षिणतस्कंपर्दा धियञ्जिन्वासो अभि हि प्रमन्दुः । उत्तिष्ठन्वोचे परि बर्हिषो नॄन्न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः ॥ १ ॥ दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम् । पाशद्युम्नस्य वायतस्य सोमात्सुतादिन्द्रो अवृणीता वसिष्ठान् ॥ २ ॥ एवेन्नु कं सिन्धुमेभिस्ततारेवेन्नु कं भेदमेभिर्जघान । एवेन्नु कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः ॥ ३ ॥ जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः पितृणामक्षमव्ययं न किला रिषाथ । यच्छक्वरीषु बृहता रवेणेन्द्रे शुष्ममदधाता वसिष्ठाः ॥ ४ ॥ उद्द्यामिवेत्तृष्णजो नाथितासोऽदीधयुर्दाशराज्ञे वृतासः । वसिष्ठस्य स्तुवत इन्द्रो अश्रोदुरुं तृत्सुभ्यो अकृणोदु लोकम् ॥ ५ ॥ २२ ॥ दण्डा इवेद्गोअजनास आसन्परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः । अभवच्च पुरएता वसिष्ठ आदित्तृत्सूनां विशो अप्रथन्त ॥ ६ ॥ त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेतस्तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः । त्रयो घर्मास उषसं सचन्ते सर्वाँ इत्ताँ अनु विदुर्वसिष्ठाः ॥ ७ ॥ सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा

गंभीरः । वार्तस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः ॥ ८ ॥ त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्शमभि सं चरन्ति । यमेन ततं परिधिं वयन्तोऽप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः ॥ ९ ॥ विद्युतो ज्योतिः परि सञ्जिहानं मित्रावरुणा यदपश्यतां त्वा । तत्ते जन्मोतैकं वसिष्ठागस्त्यो यत्त्वा विश आजभार ॥ १० ॥ ॥२३॥ उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन्मनसोऽधि जातः । द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवाः पुष्करे त्वाददन्त ॥ ११ ॥ स प्रकेत उभयस्य प्रविद्वान्त्सहस्रदान उत वा सदानः । यमेन ततं परिधिं वयिष्यन्नप्सरसः परि जज्ञे वसिष्ठः ॥ १२ ॥ सत्रे ह जाताविषिता नमोभिः कुम्भे रेतः सिषिचतुः समानम् । ततो ह मान उदियाय मध्यात्ततो जातमृषिमाहुर्वसिष्ठम् ॥ १३ ॥ उक्थभृतं सामभृतं बिभर्ति ग्रावाणं बिभ्रत्प्र वदात्यग्रे । उपैनमाध्वं सुमनस्यमाना आ वो गच्छाति प्रतृदो वसिष्ठः ॥ १४ ॥ २४ ॥ २ ॥

॥ ३४ ॥ १—२५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १—१५, १८—२५ विश्वे देवाः । १६ अहिः । १७ अहिर्बुध्न्यो देवता ॥ छन्दः—१, २, ५, १२, १३, १४, १६, १९, २० भुरिगार्चीगायत्री । ३, ४, १७ आर्ची गायत्री । ६, ७, ८, ९, १०, ११, १५, १८, २१ निचृत्त्रिपादगायत्री । २२, २४ निचृदार्षी त्रिष्टुप् । २३ आर्षी त्रिष्टुप् । २५ विराडार्षी त्रिष्टुप् च ॥ स्वरः—१—२२, २४ षड्जः । २३, २५ धैवतः ॥

॥ ३४ ॥ प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत्सुतष्टो रथो न वाजी ॥ १ ॥ विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अध क्षरन्तीः ॥ २ ॥ आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीर्वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः ॥ ३ ॥ आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वानिन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः ॥ ४ ॥ अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं यातेव पत्मन्त्मना हिनोत ॥ ५ ॥ त्मना समत्सु हिनोत यज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम् ॥ ६ ॥ उदस्य शुष्माद्भानुर्नार्त बिभर्ति भारं पृथिवी न भूम ॥ ७ ॥ ह्वयामि देवाँ अयातुरग्ने साधन्नृतेन धियं दधामि ॥ ८ ॥ अभि वो देवीं धियं दधिध्वं प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम् ॥ ९ ॥ आ चष्ट आसां पाथो नदीनां वरुण उग्रः सहस्रचक्षाः ॥ १० ॥ ॥२५॥ राजा राष्ट्रानां पेशो नदीनामनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायु ॥ ११ ॥ अविष्टो अस्मान्विश्वासु विक्ष्वद्युं कृणोत शंसं निनित्सोः ॥ १२ ॥ व्येतु दिद्युद्द्विषामशेवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम् ॥ १३ ॥ अवीन्नो अग्निर्हव्यान्नमोभिः प्रेष्ठो अस्मा

अधायि स्तोमः॥ १४॥ सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु
॥ १५॥ अब्जामुक्थैरहिं गृणीषे बुध्ने नदीनां रजःसु षीदन्॥ १६॥ मा नोऽ-
हिर्बुध्न्यो रिषे धान्मा यज्ञो अस्य स्रिधदृतायोः॥ १७॥ उत नः एषु नृषु श्रवो
धुः प्र राये यन्तु शर्धन्तो अर्यः॥ १८॥ तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमा महासेनासो
अमेभिरेषाम्॥ १९॥ आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान्
॥ २०॥ २६॥ प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्यादस्मे अरमतिर्वसूयुः॥ २१॥
ता नो रासन्रातिषाचो वसून्या रोदसी वरुणानी शृणोतु। वरूत्रीभिः सुशरणो नो
अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः॥२२॥ तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आपस्तद्रा-
तिषाच ओषधीरुत द्यौः। वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो
नः॥२३॥ अनु तदुर्वी रोदसी जिहातामनु द्युक्षो वरुण इन्द्रसखा। अनु विश्वे
मरुतो ये सहासो रायः स्याम धरुणं धियध्यै॥ २४॥ तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो
अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त। शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः
सदा नः॥ २५॥ २७॥

॥ ३५॥ १–१५ वसिष्ठ ऋषिः॥ विश्वे देवा देवताः॥ छन्दः–१, २,
३, ४, ५, ११, १२ त्रिष्टुप्। ६, ८, १०, १५ निचृत्त्रिष्टुप्। ७, ९ विराट्त्रि-
ष्टुप्। १३, १४ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः–१–१२, १५ धैवतः। १३, १४ पञ्चमः॥

॥ ३५॥ शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। श-
मिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ॥ १॥ शं नो भगः
शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य
शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥ २॥ शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु
शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां
सुहवानि सन्तु॥ ३॥ शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शं। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः॥ ४॥
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो
भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः॥ ५॥ २८॥ शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो
अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्ना-
भिरिह शृणोतु॥ ६॥ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु
सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः

॥ ७ ॥ शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु । शं नः प-
र्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥ ८ ॥ शं नो अदितिर्भवतु
व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः । शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो
भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥ ९ ॥ शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो
विभातीः । शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥ १० ॥
॥ २९ ॥ शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु । शमभिषाचः
शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥ ११ ॥ शं नः सत्य-
स्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः । शं न ऋभवः सुकृतः सुह-
स्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥ १२ ॥ शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नो-
ऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः । शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः
॥ १३ ॥ आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः । शृण्वन्तु नो
दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ॥ १४ ॥ ये देवानां यज्ञिया यज्ञि-
यानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्ति-
भिः सदा नः ॥ १५ ॥ ३० ॥ ३ ॥

॥ ३६ ॥ १–९ वसिष्ठ ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः–२ त्रिष्टुप् ।
३, ४, ६, निचृत्त्रिष्टुप् । ८, ९ विराट्त्रिष्टुप् । ५ पङ्क्तिः । १, ७ भुरिक्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—२, ३, ४, ६, ८, ९ धैवतः । १, ५, ७ पञ्चमः ॥

॥ ३६ ॥ प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः । वि सा-
नुना पृथिवी सस्र उर्वी पृथु प्रतीकमध्येधे अग्निः ॥ १ ॥ इमां वां मित्रावरुणा
सुवृक्तिमिषं न कृण्वे असुरा नवीयः । इनो वामन्यः पदवीरदब्धो जनं च मित्रो
यतति ब्रुवाणः ॥ २ ॥ आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या अपीपयन्त धेनवो न सू-
दाः । महो दिवः सदने जायमानोऽचिक्रदद्वृषभः सस्मिन्नूधन् ॥ ३ ॥ गिरा य
एता युनजद्धरी त इन्द्र प्रिया सुरथा शूर धायू । प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिना-
त्या सुक्रतुमर्यमणं ववृत्याम् ॥ ४ ॥ यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च नमस्विनः स्व
ऋतस्य धामन् । वि पृक्षो बाबधे नृभिः स्तवान इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम् ॥ ५ ॥
॥ १ ॥ आ यत्साकं यशसो वावशानाः सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता । याः सु-
ष्वयन्त सुदुघाः सुधारा अभि स्वेन पयसा पीप्यानाः ॥ ६ ॥ उत त्ये नो मरुतो
मन्दसाना धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु । मा नः परि ख्यदक्षरा चरन्त्यवीवृधन्यु-

ज्यं ते र॒यिं नः ॥ ७ ॥ प्र वो॑ म॒हीम॒रम॑तिं कृणुध्वं॒ प्र पू॒षणं॑ विद॒थ्यं१॒॑न वी॒रम् । भगं॑ धि॒योऽवि॒तारं॑ नो अ॒स्याः सा॒तौ वाजं॑ राति॒षाचं॒ पुरं॑धिम् ॥ ८ ॥ अच्छा॒य वो॑ मरुतः॒ श्लोक॑ ए॒त्वच्छा॒ विष्णुं॒ निषि॒क्तपा॒मवो॑भिः । उ॒त प्र॒जायै॑ गृण॒ते वयो॑ धुर्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ ३७ ॥ १-८ वसिष्ठ ऋषिः॥ विश्वे देवा देवताः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप् । २, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ८ विराट्त्रिष्टुप् । ४ निचृत्पङ्क्तिः । ६ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ३, ५, ७, ८ धैवतः । ४, ६ पञ्चमः ॥

॥ ३७ ॥ आ वो॒ वाहि॑ष्ठो वहतु स्त॒वध्यै॒ रथो॑ वाजा ऋभुक्षणो॒ अमृ॑क्तः । अ॒भि त्रि॑पृ॒ष्ठैः सव॑नेषु॒ सोमै॒र्मदे॑ सुशिप्रा म॒हभिः॑ पृणध्वम् ॥ १ ॥ यू॒यं ह॒ रत्नं॑ म॒घव॑त्सु धत्थ स्व॒र्दृश॑ ऋभुक्षणो॒ अमृ॑क्तम् । सं य॒ज्ञेषु॑ स्वधावन्तः पिबध्वं॒ वि नो॒ राधां॑सि म॒तिभि॑र्दयध्वम् ॥ २ ॥ उ॒वोचि॑थ॒ हि म॑घवन्दे॒ष्णं म॒हो अर्भ॑स्य॒ वसु॑नो वि॒भा॒गे । उ॒भा ते॑ पू॒र्णा वसु॑ना॒ गभ॑स्ती॒ न सू॒नृता॒ नि य॑मते वस॒व्या॑ ॥ ३ ॥ त्वमि॑न्द्र॒ स्वय॑शा ऋभु॒क्षा वाजो॒ न सा॒धुरस्त॑मे॒ष्यृक्वा॑ । व॒यं नु ते॑ दा॒श्वांसः॑ स्याम॒ ब्रह्म॑ कृ॒ण्वन्तो॑ हरिवो॒ वसि॑ष्ठाः ॥ ४ ॥ सनि॑तासि प्र॒वतो॑ दा॒शुषे॑ चि॒द्याभि॒र्विवे॑षो हर्यश्व धी॒भिः । व॒वन्मा॒ नु ते॒ युज्या॑भिरू॒ती क॒दा न॑ इन्द्र रा॒य आ द॑शस्येः ॥ ५ ॥ ३ ॥ वा॒सय॑सीव वे॒धस॒स्त्वं नः॑ क॒दा न॑ इन्द्र॒ वच॑सो बुबोधः। अस्तं॑ ता॒त्या धि॒या र॒यिं सु॒वीरं॑ पृ॒क्षो नो॒ अर्वा॒ न्यु॑हीत वा॒जी ॥ ६ ॥ अ॒भि यं दे॒वी निर्ऋ॑तिश्चि॒दीशे॒ नक्ष॑न्त॒ इन्द्रं॑ श॒रदः॑ सु॒पृक्षः॑ । उप॑ त्रिब॒न्धुर्ज॒रद॑ष्टिमे॒त्यस्व॑वेशं॒ यं कृ॒ण्वन्त॒ मर्ताः॑ ॥ ७ ॥ आ नो॒ राधां॑सि सवितः स्त॒वध्या॒ आ रायो॑ यन्तु॒ पर्व॑तस्य रा॒तौ । सदा॑ नो दि॒व्यः पा॒युः सि॑षक्तु यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥८॥४॥

॥ ३८ ॥ १-८ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १-६[१] सविता । ६[२] सविता भगो वा । ७, ८ वाजिनो देवताः ॥ छन्दः—१, ३, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ विराट्त्रिष्टुप् । २, ४, ६ स्वराट्पङ्क्तिः । ७ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१, ३, ५, ८ धैवतः । २, ४, ६, ७ पञ्चमः ॥

॥३८॥ उदु॒ ष्य दे॒वः स॑वि॒ता य॑याम हिर॒ण्ययी॑म॒मतिं॒ यामशि॑श्रेत् । नू॒नं भगो॒ हव्यो॒ मानु॑षेभि॒र्वि यो रत्ना॑ पु॒रू व॒सुर्दधा॑ति ॥१॥ उदु॑ तिष्ठ सवितः श्रु॒ध्य१॒॑स्य हिर॑ण्यपाणे॒ प्रभृ॑तावृ॒तस्य॑ । व्यु१॒॑र्वीं पृ॒थ्वीम॒मतिं॑ सृजा॒न आ नृभ्यो॑ मर्त॒ भोज॑नं सु

वानः ॥ २ ॥ अपि ष्टुतः सविता देवो अस्तु यमा चिद्विश्वे वसवो गृणन्ति । स नः स्तोमान्नमस्यश्चनो धाद्विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरीन् ॥ ३ ॥ अभि यं देव्यादितिर्गृणाति सवं देवस्य सवितुर्जुषाणा । अभि सम्राजो वरुणो गृणन्त्यभि मित्रासो अर्यमा सजोषाः ॥ ४ ॥ अभि ये मिथो वनुषः सपन्ते रातिं दिवो रातिषाचः पृथिव्याः । अहिर्बुध्न्य उत नः शृणोतु वरूत्र्येकधेनुभिर्नि पातु ॥ ५ ॥ अनु तन्नो जास्पतिर्मंसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः । भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमनुग्रो अध याति रत्नम् ॥ ६ ॥ शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः । जम्भयन्तोऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥ ७ ॥ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः । अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥ ८ ॥ ५ ॥

॥ ३९ ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, २, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ स्वराट्त्रिष्टुप् । ४, ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ३९ ॥ ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत्प्रतीची जूर्णिर्देवतातिमेति । भेजाते अद्री रथ्येव पन्थामृतं होता न इषितो यजाति ॥ १ ॥ प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिट इयाते । विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् ॥ २ ॥ ज्मया अत्र वसवो रन्त देवा उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः । अर्वाक्पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य ॥ ३ ॥ ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः सधस्थं विश्वे अभि सन्ति देवाः । ताँ अध्वर उशतो यक्ष्यग्ने श्रुष्टी भगं नासत्या पुरन्धिम् ॥ ४ ॥ आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्या मित्रं वह वरुणमिन्द्रमग्निम् । आर्यमणमदितिं विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम् ॥ ५ ॥ ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां नक्षत्कामं मर्त्यानामसिन्वन् । धाता रयिमविदस्यं सदासां सक्षीमहि युज्येभिर्नु देवैः ॥ ६ ॥ नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः । यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ ६ ॥

॥४०॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः । ३ भुरिक्पङ्क्तिः । ६ विराट्पङ्क्तिः । २, ४ विराट्त्रिष्टुप् । ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, ३, ६ पञ्चमः । २, ४, ५, ७ धैवतः ॥

॥ ४० ॥ ओ श्रुष्टिर्विदथ्या३समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम्। यद्द्य देवः सविता सुवाति स्यामास्य रत्निनो विभागे ॥ १ ॥ मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्द्रो अर्यमा ददातु। दिदेष्टु देव्यदिती रेक्णो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च ॥ २ ॥ सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्यं पृषदश्वा अवाथ। उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येतास्ति ॥ ३ ॥ अयं हि नेता वरुण ऋतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः। सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्षन्नरिष्टान् ॥ ४ ॥ अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः। विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ॥ ५ ॥ मात्र पूषन्नाघृण इरस्यो वरूत्री यद्रातिषाचश्च रासन्। मयोभुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिज्मा वातो ददातु ॥ ६ ॥ नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः। यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥ ७॥

॥ ४१ ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १ लिङ्गोक्ताः। २–६ भगः। ७ उषा देवता ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती। २, ३, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ त्रिष्टुप्। ४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ निषादः। २, ३, ५, ६, ७ धैवतः। ४ पञ्चमः ॥

॥ ४१ ॥ प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥ १ ॥ प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता। आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥ २॥ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ ३ ॥ उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥४॥ भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ॥५॥ समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय। अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु ॥ ६ ॥ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः। घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ ८ ॥

॥ ४२ ॥ १—६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ५ विराट् त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ६ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१-५ धैवतः। ६ पञ्चमः ॥

॥ ४२ ॥ प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु । प्र धेनव उदप्रुतो नवन्त युज्यातामद्री अध्वरस्य पेशः ॥ १ ॥ सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च । ये वा सद्मन्नरुषा वीरवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः ॥ २ ॥ समु वो यज्ञं महयन्नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिच उपाके । यजस्व सुपुर्वणीक देवाना यज्ञियामरमतिं ववृत्याः ॥ ३ ॥ यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत् । सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमियत्यै ॥ ४ ॥ इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रे यशसं कृधी नः । आ नक्ता बर्हिः सदतामुषासोशन्ता मित्रावरुणा यजेह ॥५॥ एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्स्न्यस्य स्तौत् । इषं रयिं पप्रथद्वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ ४३ ॥ १—५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् । २, ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४ धैवतः । २, ५ पञ्चमः ॥

॥ ४३ ॥ प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन्द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्यै । येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विष्वग्वियन्ति वनिनो न शाखाः ॥ १ ॥ प्र यज्ञ एतु हेत्वो न सप्तिरुद्यच्छध्वं समनसो घृताचीः । स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधूर्ध्वा शोचींषि देवयून्यस्थुः ॥ २ ॥ आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानौ देवासो बर्हिषः सदन्तु । आ विश्वाची विदथ्यामनक्त्वग्ने मा नो देवताता मृधस्कः ॥ ३ ॥ ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः । ज्येष्ठं वो अद्य मह आ वसूनामा गन्तन समनसो यति ष्ठ ॥ ४ ॥ एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्क्राः । राया युजा सधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ ४४ ॥ १—५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ लिङ्गोक्ता देवताः ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती । २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ निषादः । २, ३ धैवतः । ४, ५ पञ्चमः ॥

॥ ४४ ॥ दधिक्रां वः प्रथममश्विनोषसमग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे । इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिमादित्यान्द्यावापृथिवी अपः स्वः ॥ १ ॥ दधिक्रामु नमसा बोधयन्त उदीराणा यज्ञमुपप्रयन्तः । इळां देवीं बर्हिषि सादयन्तोऽश्विना

विप्रा सुहवा हुवेम ॥ २ ॥ दधिक्रावाणं बुबुधानो अग्निमुप ब्रुव उषसं सूर्यं गाम् । ब्रध्नं मांश्चतोर्वरुणस्य बभ्रुं ते विश्वास्मद्दुरिता यावयन्तु ॥ ३ ॥ दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वाग्रे रथानां भवति प्रजानन् । संविदान उषसा सूर्येणादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ॥ ४ ॥ आ नो दधिक्राः पथ्यामनक्त्वृतस्य पन्थामन्वेतवा उ । शृणोतु नो दैव्यं शर्धो अग्निः शृण्वन्तु विश्वे महिषा अमूराः ॥ ५ ॥ ११ ॥

॥ ४५ ॥ १–४ वसिष्ठ ऋषिः ॥ सविता देवता ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४५ ॥ आ देवो यातु सविता सुरत्नोऽन्तरिक्षप्रा वहमानो अश्वैः । हस्ते दधानो नर्या पुरूणि निवेशयञ्च प्रसुवञ्च भूम ॥ १ ॥ उदस्य बाहू शिथिरा बृहन्ता हिरण्यया दिवो अन्ताँ अनष्टाम् । नूनं सो अस्य महिमा पनिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम् ॥ २ ॥ स घा नो देवः सविता सहावा साविषद्वसुपतिर्वसूनि । विश्रयमाणो अमतिमुरूचीं मर्तभोजनमध रासते नः ॥ ३ ॥ इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगभस्तिमीळते सुपाणिम् । चित्रं वयो बृहदस्मे दधातु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥ १२ ॥

॥४६॥ १–४ वसिष्ठ ऋषिः ॥ रुद्रो देवता ॥ छन्दः—२ निचृत्त्रिष्टुप् । १ विराड्जगती । ३ निचृज्जगती । ४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—२ धैवतः । १, ३ निषादः । ४ पञ्चमः ॥

॥ ४६ ॥ इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाव्ने । अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः ॥ १ ॥ स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति । अवन्नवन्तीरुप नो दुरश्चरानमीवो रुद्र जासु नो भव ॥ २ ॥ या ते दिद्युदवसृष्टा दिवस्परि क्ष्मया चरति परि सा वृणक्तु नः । सहस्रं ते स्वपिवात भेषजा मा नस्तोकेषु तनयेषु रीरिषः ॥३॥ मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य । आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥ १३ ॥

॥ ४७ ॥ १—४ वसिष्ठ ऋषिः ॥ आपो देवताः ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप् । २ विराट्त्रिष्टुप् । ४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—३ धैवतः । ४ पञ्चमः ॥

॥ ४७ ॥ आपो यं वः प्रथमं देवयन्त इन्द्रपानमूर्मिमकृण्वतेळः । तं वो वयं शुचिमरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम ॥ १ ॥ तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वोऽपां नपादवत्वाशुहेमा । यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाते तमश्याम देवयन्तो वो अद्य ॥२॥ शतपवित्राः स्वधया मदन्तीर्देवीर्देवानामपि यन्ति पाथः । ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवज्जुहोत ॥ ३ ॥ याः सूर्यो रश्मिभिराततान याभ्य इन्द्रो अरदद्गातुमूर्मिम् । ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥ १४ ॥

॥ ४८ ॥ १–४ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १–३ ऋभवः । ४ ऋभवो विश्वे देवा वा देवताः ॥ छन्दः–१ भुरिक्पङ्क्तिः । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् । ४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१ पञ्चमः । २–४ धैवतः ॥

॥ ४८ ॥ ऋभुक्षणो वाजा मादयध्वमस्मे नरो मघवानः सुतस्य । आ वोऽर्वाचः क्रतवो न यातां विभ्वो रथं नर्यं वर्तयन्तु ॥ १ ॥ ऋभुर्ऋभुभिरभि वः स्याम विभ्वो विभुभिः शवसा शवांसि । वाजो अस्माँ अवतु वाजसाताविन्द्रेण युजा तरुषेम वृत्रम् ॥ २ ॥ ते चिद्धि पूर्वीरभि सन्ति शासा विश्वाँ अर्य उपरताति वन्वन् । इन्द्रो विभ्वाँ ऋभुक्षा वाजो अर्यः शत्रोर्मिथत्या कृणवन्वि नृम्णम् ॥ ३ ॥ नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः । समस्मे इषं वसवो ददीरन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥ १५ ॥

॥४९॥ १–४ वसिष्ठ ऋषिः ॥ आपो देवताः ॥ छन्दः–१ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ३ त्रिष्टुप् । ४ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४९ ॥ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनाना यन्त्यनिविशमानाः । इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ १ ॥ या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयञ्जाः । समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ २ ॥ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम् । मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ ३ ॥ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति । वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ ४ ॥ १६ ॥

॥ ५० ॥ १–४ वसिष्ठ ऋषिः॥ १ मित्रावरुणौ । २ अग्निः । ३ विश्वे
देवाः। ४ नद्यो देवताः ॥ छन्दः–१, ३ स्वराट् त्रिष्टुप् । २ निचृज्जगती । ४
भुरिगतिजगती ॥ स्वरः—१, ३ धैवतः । २, ४ निषादः ॥

॥ ५० ॥ आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं कुलाययद्विश्वयन्मा न आ गन् । अ-
जकावं दुर्दृशीकं तिरो दधे मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः ॥ १ ॥ यद्विजाम-
न्परुषि वन्दनं भुवदष्ठीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत् । अग्निष्टच्छोचन्नप बाधता-
मितो मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः ॥ २ ॥ यच्छल्मलौ भवति यन्नदीषु य-
दोषधीभ्यः परि जायते विषम् । विश्वे देवा निरितस्तत्सुवन्तु मा मां पद्येन र-
पसा विदत्त्सरुः ॥ ३ ॥ याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीरनुदकाश्च याः । ता
अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा
भवन्तु ॥ ४ ॥ १७ ॥

॥ ५१ ॥ १–३ वसिष्ठ ऋषिः॥ आदित्या देवताः॥ छन्दः–१, २ त्रिष्टुप्।
३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५१ ॥ आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शन्तमेन । अनागा-
स्त्वे अदितित्वे तुरास इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः ॥ १ ॥ आदित्यासो अदि-
तिर्मादयन्तां मित्रो अर्यमा वरुणो रजिष्ठाः । अस्माकं सन्तु भुवनस्य गोपाः पि-
बन्तु सोममवसे नो अद्य ॥ २ ॥ आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्व
ऋभवश्च विश्वे । इन्द्रो अग्निरश्विना तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा
नः ॥ ३ ॥ १८ ॥

॥ ५२ ॥ १—३ वसिष्ठ ऋषिः ॥ आदित्या देवताः ॥ छन्दः—१, ३
स्वराट्पङ्क्तिः । २ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः । २ धैवतः ॥

॥ ५२ ॥ आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्देवत्रा वसवो मर्त्यत्रा । सनेम
मित्रावरुणा सनन्तो भवेम द्यावापृथिवी भवन्तः ॥ १ ॥ मित्रस्तन्नो वरुणो मा-
महन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः । मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो
यच्चयध्वे ॥ २ ॥ तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सवितुरियानाः । पिता
च तन्नो महान्यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त ॥ ३ ॥ १९ ॥

॥ ५३ ॥ १—३ वसिष्ठ ऋषिः ॥ द्यावापृथिव्यौ देवते ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५३ ॥ प्र द्यावा॑ य॒ज्ञैः पृ॑थि॒वी नमो॑भिः स॒बाध॑ ईळे बृह॒ती यज॑त्रे । ते चि॒द्धि पूर्वे॑ क॒वयो॑ गृ॒णन्तः॑ पु॒रो म॒ही द॑धि॒रे दे॒वपु॑त्रे ॥ १ ॥ प्र पू॑र्व॒जे पि॒तरा॒ नव्य॑सीभि॒र्गीर्भिः॑ कृणु॒ध्वं सद॑ने ऋ॒तस्य॑ । आ नो॑ द्यावापृथि॒वी दैव्ये॑न॒ जने॑न यात॒ं महि॑ वा॒ं वरू॑थम् ॥ २ ॥ उ॒तो हि वा॑ं रत्न॒धेया॑नि॒ सन्ति॑ पु॒रूणि॑ द्यावापृथिवी सु॒दासे॑ । अ॒स्मे ध॑त्तं॒ यदस॒दस्कृ॑धोयु यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥३॥२०॥

॥ ५४ ॥ १—३ वसिष्ठ ऋषिः ॥ वास्तोष्पतिर्देवता ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५४ ॥ वास्तो॑ष्पते॒ प्रति॑ जानीह्य॒स्मान्त्स्वा॑वे॒शो अ॑नमी॒वो भ॑वा नः । यत्त्वेम॑हे॒ प्रति॒ तन्नो॑ जुषस्व॒ शं नो॑ भव द्वि॒पदे॒ शं चतु॑ष्पदे ॥ १ ॥ वास्तो॑ष्पते प्र॒तर॑णो न एधि गय॒स्फानो॒ गोभि॒रश्वे॑भिरिन्दो । अ॒जरा॑सस्ते स॒ख्ये स्या॑म पि॒तेव॑ पु॒त्रान्प्रति॑ नो जुषस्व ॥ २ ॥ वास्तो॑ष्पते श॒ग्मया॑ सं॒सदा॑ ते सक्षी॒महि॑ र॒ण्वया॑ गातु॒मत्या॑ । पा॒हि क्षेम॑ उ॒त योगे॒ वरं॑ नो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ३ ॥ २१ ॥

॥ ५५ ॥ १—८ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १ वास्तोष्पतिः । २—८ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री । २, ३, ४ बृहती । ५, ७ अनुष्टुप् । ६, ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ षड्जः । २, ३, ४ मध्यमः । ५—८ गान्धारः ॥

॥ ५५ ॥ अ॒मी॒व॒हा वा॑स्तोष्पते॒ विश्वा॑ रू॒पाण्या॑वि॒शन् । सखा॑ सु॒शेव॑ एधि नः ॥ १ ॥ यद॑र्जुन सारमेय द॒तः पि॑शङ्ग॒ यच्छ॑से । वी॑व भ्राजन्त ऋ॒ष्टय॒ उप॒ स्रक्वे॑षु॒ बप्स॑तो॒ नि षु स्व॑प ॥ २ ॥ स्ते॒नं रा॑य सारमेय॒ तस्क॑रं वा पुनः सर । स्तो॒तॄनिन्द्र॑स्य रायसि॒ किम॒स्मान्दु॑च्छुनायसे॒ नि षु स्व॑प ॥ ३ ॥ त्वं सू॑क॒रस्य॑ दर्दृहि॒ तव॑ दर्दर्तु सू॒करः॑ । स्तो॒तॄनिन्द्र॑स्य रायसि॒ किम॒स्मान्दु॑च्छुनायसे॒ नि षु स्व॑प ॥ ४ ॥ सस्तु॑ मा॒ता सस्तु॑ पि॒ता सस्तु॒ श्वा सस्तु॑ वि॒श्पतिः॑ । स॒सन्तु॒ सर्वे॑ ज्ञा॒तयः॒ सस्त्व॒यम॒भितो॒ जनः॑ ॥ ५ ॥ य आस्ते॒ यश्च॒ चर॑ति॒ यश्च॒ पश्य॑ति नो॒ जनः॑ । तेषा॒ं सं ह॑न्मो अ॒क्षाणि॒ यथे॒दं ह॒र्म्यं तथा॑ ॥ ६ ॥ स॒हस्र॑शृङ्गो वृष॒भो यः स॑मु॒द्रादु॒दाच॑रत् । तेना॑ सह॒स्ये॑ना व॒यं नि जना॑न्त्स्वापयामसि ॥ ७ ॥ प्रो॒ष्ठे॒श॒या व॑ह्येश॒या नारी॒र्यास्त॑ल्प॒शीव॑रीः । स्त्रियो॒ याः पुण्य॑गन्धा॒स्ताः सर्वाः॑ स्वापयामसि ॥ ८ ॥ २२ ॥ ३ ॥

॥ ५६ ॥ १—२५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः—१ आ
गायत्री । २, ६, ७, ९ भुरिगार्ची गायत्री । ३, ४, ५ प्रजापत्या बृहती । ८, १
आर्च्युष्णिक् । ११ निचृदार्च्युष्णिक् । १२, १३, १५, १८, १९, २१ नि
त्रिष्टुप् । १७, २० त्रिष्टुप् । २२, २३, २५ विराट् त्रिष्टुप् । २४ पङ्क्तिः । १४, १६ स्व
राट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ६, ७, ९ षड्जः । ३, ४, ५ मध्यमः । ८, १०, १
ऋषभः । १२, १३, १५, १७—२२, २३, २५ धैवतः । १४, १६, २४ पञ्चमः

॥ ५६ ॥ क ईं व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः ॥ १ ॥ न
किर्ह्येषां जनूंषि वेद ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम् ॥ २ ॥ अभि स्वपूभिर्मिथो व
पन्त वातस्वनसः श्येना अस्पृध्रन् ॥ ३ ॥ एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्नि
र्यदूधो मही जभार ॥ ४ ॥ सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात्सहन्ती पुष्यन्ती
नृम्णम् ॥ ५ ॥ यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया सम्मिश्ला ओजोभिरुग्रा
॥ ६ ॥ उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्यधा मरुद्भिर्गणस्तुविष्मान् ॥ ७ ॥ शुभ्रो व
शुष्मः क्रुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः ॥ ८ ॥ सनेम्यस्मद्युयोत दिद्यु
मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ्नः ॥ ९ ॥ प्रिया वो नाम हुवे तुराणामा यत्तृपन्मरुतो वा
वशानाः ॥ १० ॥ २३ ॥ स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वः शु
म्भमानाः ॥ ११ ॥ शुची वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचि
भ्यः । ऋतेन सत्यमृतसाप आयञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः ॥ १२ ॥ अं
सेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणाः । वि विद्युतो न वृष्टिभि
रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः ॥ १३ ॥ प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र ना
मानि प्रयज्यवस्तिरध्वम् । सहस्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्व
॥ १४ ॥ यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथेत्था विप्रस्य वाजिनो हवीमन् । मक्षू राय
सुवीर्यस्य दात नू चिद्यमन्य आदभदरावा ॥ १५ ॥ २४ ॥ अत्यासो न ये मरुत
स्वञ्चो यक्षदृशो न शुभयन्त मर्याः । ते हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न
प्रक्रीळिनः पयोधाः ॥ १६ ॥ दशस्यन्तो नो मरुतो मृळन्तु वरिवस्यन्तो रोदसी सुमेके
आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु सुम्नेभिरस्मे वसवो नमध्वम् ॥ १७ ॥ आ वो होता जोह
वीति सत्तः सत्राचीं रातिं मरुतो गृणानः । य ईवतो वृषणो अस्ति गोपाः सो
अद्वयावी हवते व उक्थैः ॥ १८ ॥ इमे तुरं मरुतो रामयन्तीमे सहः सहस आ न
मन्ति । इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति ॥ १९ ॥ इमे र
चिन्मरुतो जुनन्ति भृमिं चिद्यथा वसवो जुषन्त । अप बाधध्वं वृषणस्तमांसि ध

विश्वं तनयं तोकमस्मे ॥ २० ॥ २५ ॥ मा वो दात्रान्मरुतो निररा॒म मा पश्चाद्दघ्मरथ्यो विभागे । आ नः स्पार्हे भजतना वसव्ये३ यदीं सुजातं वृषणो वो अस्ति ॥ २१ ॥ सं यद्धनन्त मन्युभिर्जनासः शूरा यह्वीष्वोषधीषु विक्षु । अध स्मा नो मरुतो रुद्रियासस्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः ॥ २२ ॥ भूरि चक्र मरुतः पित्र्याण्युक्थानि या वः शस्यन्ते पुरा चित् । मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साळ्हा मरुद्भिरित्सनिता वाजमर्वा ॥ २३ ॥ अस्मे वीरो मरुतः शुष्म्यस्तु जनानां यो असुरो विधर्ता । अपो येन सुक्षितये तरेमाध स्वमोको अभि वः स्याम ॥ २४ ॥ तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त । शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २५ ॥ २६ ॥

॥ ५७ ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः–२, ४ त्रिष्टुप् । १ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ५, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५७ ॥ मध्वो वो नाम मारुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शवसा मदन्ति । ये रेजयन्ति रोदसी चिदुर्वी पिन्वन्त्युत्सं यदयासुरुग्राः ॥ १ ॥ निचेतारो हि मरुतो गृणन्तं प्रणेतारो यजमानस्य मन्म । अस्माकमद्य विदथेषु बर्हिरा वीतये सदत पिप्रियाणाः ॥ २ ॥ नैतावदन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मैरायुधैस्तनूभिः । आ रोदसी विश्वपिशः पिशानाः समानमञ्ज्यञ्जते शुभे कम् ॥ ३ ॥ ऋधक्सा वो मरुतो दिद्युदस्तु यद्व आगः पुरुषता कराम । मा वस्तस्यामपि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ॥ ४ ॥ कृते चिदत्र मरुतो रणन्तानवद्यासः शुचयः पावकाः । प्र णोऽवत सुमतिभिर्यजत्राः प्र वाजेभिस्तिरत पुष्यसे नः ॥ ५ ॥ उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हवींषि । ददात नो अमृतस्य प्रजायै जिगृत रायः सूनृता मघानि ॥ ६ ॥ आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सूरीन्त्सर्वताता जिगात । ये नस्त्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ २७ ॥

॥ ५८ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः–३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् । १ विराट् त्रिष्टुप् । २, ६ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३ ४, ५ धैवतः । २, ६ पञ्चमः ॥

॥ ५८ ॥ प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान् । उत

क्षोदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निर्ऋतेरवंशात् ॥ १ ॥ जनूश्चिद्वो मरु
तस्त्वेष्येण भीमासस्तुविमन्यवोऽयासः । प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वो
यामन्भयते स्वर्दृक् ॥ २ ॥ बृहद्वयो मघवद्भ्यो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः ।
गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेत ॥ ३ ॥ युष्मोतो विप्रो
मरुतः शतस्वी युष्मोतो अर्वा सहुरिः सहस्री । युष्मोतः सम्राळुत हन्ति वृत्रं प्र तद्वो
अस्तु धूतयो देष्णम् ॥ ४ ॥ ताँ आ रुद्रस्य मीळ्हुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः
पुनर्नः । यत्सस्वर्ता जिहीळिरे यदाविरव तदेन ईमहे तुराणाम् ॥ ५ ॥ प्र सा
वाचि सुष्टुतिर्मघोनामिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त । आराच्चिद्द्वेषो वृषणो युयोत यूयं
पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ २८ ॥

॥ ५६ ॥ १–१२ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १–११ मरुतः । १२ रुद्रो देवता ॥ छन्दः—
१, निचृद्बृहती । ३ बृहती । ६ स्वराड्बृहती । २ पङ्क्तिः । ४ निचृत्पङ्क्तिः । ५,
१२ अनुष्टुप् । ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ८ त्रिष्टुप् । ९, १० गायत्री । ११ निचृद्गायत्री ॥
स्वरः—१, ३, ६ मध्यमः । २, ४ पञ्चमः । ५, १२ गान्धारः । ७, ८ धैवतः ।
९, १०, ११ षड्जः ॥

॥ ५६ ॥ यं त्रायध्व इदमिदं देवासो यं च नयथ । तस्मा अग्ने वरुण मि-
त्रार्यमन्मरुतः शर्म यच्छत ॥ १ ॥ युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः ।
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ॥ २ ॥ नहि वश्चरमं चन व-
सिष्ठः परिमंसते । अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः ॥ ३ ॥
नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अराध्वं नरः । अभि व आवर्त्सुमतिर्नवी-
यसी तूयं यात पिपीषवः ॥ ४ ॥ ओ षु घृष्विराधसो यातनान्धांसि पीतये । इमा वो ह-
व्या मरुतो ररे हि कं मो ष्वन्यत्र गन्तन ॥ ५ ॥ आ च नो बर्हिः सदताविता च नः
स्पार्हाणि दातवे वसु । अस्रेधन्तो मरुतः सोम्ये मधौ स्वाहेह मादयाध्वै ॥ ६ ॥
॥ २९ ॥ सस्वश्चिद्धि तन्वः शुम्भमाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपप्तन् । विश्वं
शर्धो अभितो मा नि षेद नरो न रण्वाः सवने मदन्तः ॥ ७ ॥ यो नो मरुतो अभि
दुर्हृणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति । द्रुहः पाशान्प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठेन
हन्मना हन्तना तम् ॥ ८ ॥ सान्तपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन । युष्माकोती रि-
शादसः ॥ ९ ॥ गृहमेधास आ गत मरुतो माप भूतन । युष्माकोती सुदानवः ॥ १० ॥

इहेह वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः । यज्ञं मरुत आ वृणे ॥ ११ ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ १२ ॥ ३० ॥ ४ ॥

॥ ६० ॥ १–१२ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १ सूर्यः । २–१२ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः । ६ विराट् पङ्क्तिः । १० स्वराट् पङ्क्तिः । २, ३, ४, ६, ७, १२ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ८, ११ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, १० पञ्चमः । २–८, ११, १२ धैवतः ॥

॥ ६० ॥ यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा उद्यन्मित्राय वरुणाय सत्यम् । वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन्गृणन्तः ॥ १ ॥ एष स्य मित्रावरुणा नृचक्षा उभे उदेति सूर्यो अभि ज्मन् । विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ॥ २ ॥ अयुक्त सप्त हरितः सधस्थाद्या ईं वहन्ति सूर्यं घृताचीः । धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ॥ ३ ॥ उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुरा सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः । यस्मा आदित्या अध्वनो रदन्ति मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ॥ ४ ॥ इमे चेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति । इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः ॥ ५ ॥ इमे मित्रो वरुणो दूळभासोऽचेतसं चिच्चितयन्ति दक्षैः । अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस्तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति ॥ ६ ॥ १ ॥ इमे दिवो अनिमिषा पृथिव्याश्चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति । प्रव्राजे चिन्नद्यो गाधमस्ति पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्षन् ॥ ७ ॥ यद्गोपावददितिः शर्म भद्रं मित्रो यच्छन्ति वरुणः सुदासे । तस्मिन्ना तोकं तनयं दधाना मा कर्म देवहेळनं तुरासः ॥ ८ ॥ अव वेदिं होत्राभिर्यजेत रिपः काश्चिद्वरुणध्रुतः सः । परि द्वेषोभिरर्यमा वृणक्तूरुं सुदासे वृषणा उ लोकम् ॥ ९ ॥ सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेष्येषामपीच्येन सहसा सहन्ते । युष्मद्भिया वृषणो रेजमाना दक्षस्य चिन्महिना मृळता नः ॥ १० ॥ यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते वाजस्य सातौ परमस्य रायः । सीक्षन्त मन्युं मघवानो अर्य उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु ॥ ११ ॥ इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि । विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १२ ॥ २ ॥

॥ ६१ ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः । २, ४ त्रिष्टुप् । ३, ५, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ पञ्चमः । २–७ धैवतः ॥

॥ ६१ ॥ उद्वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरेति सूर्यस्ततन्वान् । अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्युं मर्त्येष्वा चिकेत ॥ १ ॥ प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियर्ति । यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू अवाथ आ यत्क्रत्वा न शरदः पृणैथे ॥ २ ॥ प्रोरोर्मित्रावरुणा पृथिव्याः प्र दिव ऋष्वाद्बृहतः सुदानू । स्पशो दधाथे ओषधीषु विक्ष्वृधग्यतो अनिमिषं रक्षमाणा ॥ ३ ॥ शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम शुष्मो रोदसी बद्बधे महित्वा । अयन्मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते ॥ ४ ॥ अमूरा विश्वा वृषणाविमा वां न यासु चित्रं ददृशे न यक्षम् । द्रुहः सचन्ते अनृता जनानां न वां निण्यान्यचिते अभूवन् ॥ ५ ॥ समु वां यज्ञं महयं नमोभिर्हुवे वां मित्रावरुणा सबाधः । प्र वां मन्मान्यृचसे नवानि कृतानि ब्रह्म जुजुषन्निमानि ॥ ६ ॥ इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि । विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ ३ ॥

॥ ६२ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १–३ सूर्यः । ४–६ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः–१, २, ६ विराट्त्रिष्टुप् । ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६२ ॥ उत्सूर्यो बृहदर्चींष्यश्रेत्पुरु विश्वा जनिम मानुषाणाम् । समो दिवा ददृशे रोचमानः क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ॥ १ ॥ स सूर्य प्रति पुरो न उद्गा एभिः स्तोमेभिरेतशेभिरेवैः । प्र नो मित्राय वरुणाय वोचोऽनागसो अर्यम्णे अग्नये च ॥ २ ॥ वि नः सहस्रं शुरुधो रदन्त्वृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः । यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कमा नः कामं पूपुरन्तु स्तवानाः ॥ ३ ॥ द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नो ये वां जज्ञुः सुजनिमान ऋष्वे । मा हेळे भूम वरुणस्य वायोर्मा मित्रस्य प्रियतमस्य नृणाम् ॥ ४ ॥ प्र बाहवा सिसृतं जीवसे न आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन । आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ॥ ५ ॥ नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु । सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ ४ ॥

॥ ६३ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १–५[1] सूर्यः । ५[2], ६ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः–१, ६ विराट् त्रिष्टुप् । २, ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वर ॥

॥ ६३ ॥ उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः साधारणः सूर्यो मानुषाणाम् । चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देवश्चर्मेव यः समविव्यक्तमांसि ॥ १ ॥ उद्वेति प्रसवीता ज-

नानां महान्केतुरर्णवः सूर्यस्य । समानं चक्रं पर्याविवृत्सन्यदेतशो वहति धूर्षुयुक्तः ॥ २ ॥ विभ्राजमान उषसामुपस्थाद्रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः । एष मे देवः सविता चच्छन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम ॥ ३ ॥ दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरेअर्थस्तरणिर्भ्राजमानः । नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि ॥ ४ ॥ यत्रा चक्रुरमृता गातुमस्मै श्येनो न दीयन्नन्वेति पाथः । प्रति वां सूर उदिते विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ॥ ५ ॥ नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु । सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ ५ ॥

॥ ६४ ॥ १-५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः-१, २, ३, ४ त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६४ ॥ दिवि क्षयन्ता रजसः पृथिव्यां प्र वां घृतस्य निर्णिजो ददीरन् । हव्यं नो मित्रो अर्यमा सुजातो राजा सुक्षत्रो वरुणो जुषन्त ॥ १ ॥ आ राजाना मह ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक् । इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टिमव दिव इन्वतं जीरदानू ॥ २ ॥ मित्रस्तन्नो वरुणो देवो अर्यः प्र साधिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु । ब्रवद्यथा न आदरिः सुदास इषा मदेम सह देवगोपाः ॥ ३ ॥ यो वां गर्तं मनसा तक्षदेतमूर्ध्वां धीतिं कृणवद्धारयच्च । उक्षेथां मित्रावरुणा घृतेन ता राजाना सुक्षितीस्तर्पयेथाम् ॥ ४ ॥ एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि । अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ ६५ ॥ १-५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ मित्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः-१, ५ विराट् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६५ ॥ प्रति वां सूर उदिते सूक्तैर्मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् । ययोरसुर्यमक्षितं ज्येष्ठं विश्वस्य यामन्नाचिता जिगत्नु ॥ १ ॥ ता हि देवानामसुरा तावर्या ता नः क्षितीः करतमूर्जयन्तीः । अश्याम मित्रावरुणा वयं वां द्यावा च यत्र पीपयन्नहा च ॥ २ ॥ ता भूरिपाशावनृतस्य सेतू दुरत्येतू रिपवे मर्त्याय । ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नावा दुरिता तरेम ॥ ३ ॥ आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः । प्रति वामत्र वरमा जनाय पृणीतमुद्नो दिव्यस्य चारोः ॥ ४ ॥ एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि । अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ ७ ॥

॥ ६६ ॥ १—१६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १–३, १७–१६ मित्रावरुणौ । ४—१३ आदित्याः । १४—१६ सूर्यो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ६ निचृद्गायत्री । ३ विराड् गायत्री । ५, ६, ७, १८ १६ आर्षी गायत्री । १७ पाद निचृद्गायत्री । स्वराड् गायत्री । १० निचृद् बृहती । ११ स्वराड् बृहती । १२ आर्ची स्वराड् बृहती । १३, १५ आर्षी भुरिग् बृहती । १४ आर्षी-विराड्बृहती । १६ पुर उष्णिक् ॥ स्वरः–१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ६, १७, १८, १६ षड्जः । १०–१५ मध्यमः । १६ ऋषभः ॥

॥ ६६ ॥ प्र मित्रयोर्वरुणयोः स्तोमो न एतु शूष्यः । नमस्वान्तुविजातयोः ॥ १ ॥ या धारयन्त देवाः सुदक्षा दक्षपितरा । असुर्याय प्रमहसा ॥ २ ॥ ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम् । मित्र साधयतं धियः ॥ ३ ॥ यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा । सुवाति सविता भगः ॥ ४ ॥ सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः । ये नो अंहोऽतिपिप्रति ॥ ५ ॥ ८ ॥ उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये । महो राजान ईशते ॥ ६ ॥ प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् । अर्यमणं रिशादसम् ॥ ७ ॥ राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे । इयं विप्रा मेधसातये ॥ ८ ॥ ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह । इषं स्वश्च धीमहि ॥ ६ ॥ बहवः सूरचक्षसोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः । त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वानि परिभूतिभिः ॥ १० ॥ ६ ॥ वि ये दधुः शरदं मासमादहर्यज्ञमक्तुं चादृचम् । अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत ॥ ११ ॥ तद्वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते । यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः ॥ १२ ॥ ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः । तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः ॥ १३ ॥ उदु त्यद्दर्शतं वपुर्दिव एति प्रतिह्वरे । यदीमाशुर्वहति देव एतशो विश्वस्मै चक्षसे अरम् ॥ १४ ॥ शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतस्तस्थुषस्पतिं समया विश्वमा रजः । सप्त स्वसारः सुविताय सूर्यं वहन्ति हरितो रथे ॥ १५ ॥ १० ॥ तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ॥ १६ ॥ काव्येभिरदाभ्या यातं वरुण द्युमत् । मित्रश्च सोमपीतये ॥ १७ ॥ दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यातमद्रुहा । पिबतं सोममातुजी ॥ १८ ॥ आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा । पातं सोममृतावृधा ॥ १६॥ ११॥

॥ ६७ ॥ १–१० वसिष्ठ ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ६, ७, ८, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ५, ६ विराट्त्रिष्टुप् । ४ आर्षीत्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६७ ॥ प्रति वां रथं नृपती जरध्यै हविष्मता मनसा यज्ञियेन । यो वां दूतो
न धिष्ण्यावजीगरच्छा सूनुर्न पितरा विवक्मि ॥ १ ॥ अशोच्यग्निः समिधानो
अस्मे उपो अदृश्रन्तमसश्चिदन्ताः । अचेति केतुरुषसः पुरस्ताच्छ्रिये दिवो दुहि-
तुर्जायमानः ॥ २ ॥ अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति नासत्या वि-
वक्वान् । पूर्वीभिर्यातं पथ्याभिरर्वाक्स्वर्विदा वसुमता रथेन ॥ ३ ॥ अवोर्वां नून-
मश्विना युवाकुर्हुवे यद्वां सुते माध्वी वसूयुः । आ वां वहन्तु स्थविरासो अश्वाः
पिबाथो अस्मे सुषुता मधूनि ॥ ४ ॥ प्राचीमु देवाश्विना धियं मेऽमृध्रां सातये
कृतं वसूयुम् । विश्वा अविष्टं वाज आ पुरंधीस्ता नः शक्तं शचीपती शचीभिः
॥ ५ ॥ १२ ॥ अविष्टं धीष्वश्विना न आसु प्रजावद्रेतो अह्रयं नो अस्तु । आ
वां तोके तनये तूतुजानाः सुरत्नासो देववीतिं गमेम ॥ ६ ॥ एष स्य वां पू-
र्वगत्वेव सख्ये निधिर्हितो माध्वी रातो अस्मे । अहेळता मनसा यातमर्वागश्नन्ता
हव्यं मानुषीषु विक्षु ॥ ७ ॥ एकस्मिन्योगे भुरणा समाने परि वां सप्त स्रवतो
रथो गात् । न वायन्ति सुभ्वो देवयुक्ता ये वां धूर्षु तरणयो वहन्ति ॥ ८ ॥ अ-
सश्चता मघवद्भ्यो हि भूतं ये राया मघदेयं जुनन्ति । प्र ये बन्धुं सूनृताभिस्तिरन्ते
गव्या पृञ्चन्तो अश्व्या मघानि ॥९॥ नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्ति-
रश्विनाविरावत् । धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१०॥१३॥

॥ ६८ ॥ १-९ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ६, ८, साम्नी त्रिष्टुप् । २, ३, ५, साम्नी निचृत् त्रिष्टुप् । ४, ७, साम्नी भुरिगासुरी विराट् त्रिष्टुप् । ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६८ ॥ आ शुभ्रा यातमश्विना स्वश्वा गिरो दस्रा जुजुषाणा युवाकोः ।
हव्यानि च प्रतिभृता वीतं नः ॥ १ ॥ प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुररं गन्तं हविषो
वीतये मे । तिरो अर्यो हवनानि श्रुतं नः ॥२॥ प्र वां रथो मनोजवा इयर्ति तिरो
रजांस्यश्विना शतोतिः । अस्मभ्यं सूर्यावसू इयानः ॥ ३ ॥ अयं ह यद्वां देवया
उ अद्रिरूर्ध्वो विवक्ति सोमसुद्युवभ्याम् । आ वल्गू विप्रो ववृतीत हव्यैः ॥ ४ ॥
चित्रं ह यद्वां भोजनं न्वस्ति न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् । यो वामोमानं दधते प्रियः
सन् ॥ ५ ॥१४ ॥ उत त्यद्वां जुरते अश्विना भूच्च्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे । अधि
यद्वर्प इतऊति धत्थः ॥ ६ ॥ उत त्यं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः
समुद्रे । निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः ॥ ७ ॥ वृकाय चिज्जसमानाय शक्तमुत श्रुतं

शयेव हूयमाना । यावृघ्न्यामपिन्वतमपो न स्तुर्यं चिच्छक्त्यश्विना शचीभिः ॥ ८ ॥ एष स्य कारुर्जरते सूक्तैरग्रे बुधान उषसां सुमन्मा । इषा तं वर्धदघ्न्या पयोभिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ९ ॥ १५ ॥

॥ ६९ ॥ १–८ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ४, ६, ८ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ७, त्रिष्टुप् । ३ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६९ ॥ आ वां रथो रोदसी बद्बधानो हिरण्ययो वृषभिर्यात्वश्वैः । घृतवर्तनिः पविभी रुचान इषां वोळ्हा नृपतिर्वाजिनीवान् ॥ १ ॥ स पप्रथानो अभि पञ्च भूमा त्रिवन्धुरो मनसा यातु युक्तः । विशो येन गच्छथो देवयन्तीः कुत्रा चिद्याममश्विना दधाना ॥ २ ॥ स्वश्वा यशसा यातमर्वाग्दस्रा निधिं मधुमन्तं पिबाथः । वि वां रथो वध्वा३यादमानोऽन्तान्दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् ॥ ३ ॥ युवोः श्रियं परि योषावृणीत सूरो दुहिता परितक्म्यायाम् । यद्देवयन्तमवथः शचीभिः परि घ्रंसमोमना वां वयो गात् ॥ ४ ॥ यो ह स्य वां रथिरा वस्त उस्रा रथो युजानः परियाति वर्तिः । तेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन् ॥ ५ ॥ नरा गौरेव विद्युतं तृषाणास्माकमद्य सवनोप यातम् । पुरुत्रा हि वां मतिभिर्हवन्ते मा वामन्ये नि यमन्देवयन्तः ॥ ६ ॥ युवं भुज्युमवविद्धं समुद्र उदूहथुरर्णसो अस्रिधानैः । पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्दंसनाभिरश्विना पारयन्ता ॥ ७ ॥ नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् । धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥ १६ ॥

॥ ७० ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१,३,४,६ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ५, ७ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७० ॥ आ विश्ववाराश्विना गतं नः प्र तत्स्थानमवाचि वां पृथिव्याम् । अश्वो न वाजी शुनपृष्ठो अस्थादा यत्सेदथुर्ध्रुवसे न योनिम् ॥ १ ॥ सिषक्ति सा वां सुमतिश्चनिष्ठातापि घर्मो मनुषो दुरोणे । यो वां समुद्रान्त्सरितः पिपर्त्येतग्वा चिन्न सुयुजा युजानः ॥ २ ॥ यानि स्थानान्यश्विना दधाथे दिवो यह्वीष्वोषधीषु विक्षु । नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्तेषं जनाय दाशुषे वहन्ता ॥ ३ ॥ चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु यद्योग्या अश्नवैथे ऋषीणाम् । पुरूणि रत्ना दधतौ न्य-

ऽस्मे अनु पूर्व्याणि चख्यथुर्युगानि ॥ ४ ॥ शुश्रुवांसा चिदश्विना पुरूण्यभि ब्रह्माणि चक्षाथे ऋषीणाम् । प्रति प्र यातं वरमा जनायास्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ॥ ५ ॥ यो वां यज्ञो नासत्या हविष्मान्कृतब्रह्मा समर्योऽ भवाति । उप प्र यातं वरमा वसिष्ठमिमा ब्रह्माण्यृच्यन्ते युवभ्याम् ॥ ६ ॥ इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् । इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ १७ ॥ ४ ॥

॥ ७१ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ५ त्रिष्टुप् । २, ३, ४, ६ विराट् त्रिष्टुप् । धैवतः स्वरः ॥

॥ ७१ ॥ अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते रिणक्ति कृष्णीररुषाय पन्थाम् । अश्वामघा गोमघा वां हुवेम दिवा नक्तं शरुमस्मद्युयोतम् ॥ १ ॥ उपायातं दाशुषे मर्त्याय रथेन वाममश्विना वहन्ता । युयुतमस्मदनिरामममीवां दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः ॥ २ ॥ आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ सुम्नायवो वृषणो वर्तयन्तु । स्यूमगभस्तिमृतयुग्भिरश्वैराश्विना वसुमन्तं वहेथाम् ॥ ३ ॥ यो वां रथो नृपती अस्ति वोळ्हा त्रिवन्धुरो वसुमाँ उस्रयामा । आ न एना नासत्योप यातमभि यद्वां विश्वप्स्न्यो जिगाति ॥ ४ ॥ युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् । निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रिं नि जाहुषं शिथिरे धातमन्तः ॥ ५ ॥ इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् । इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ १८ ॥

॥ ७२ ॥ १—५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ३, ४ निचृत् त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७२ ॥ आ गोमता नासत्या रथेनाश्वावता पुरुश्चन्द्रेण यातम् । अभि वां विश्वा नियुतः सचन्ते स्पार्हया श्रिया तन्वा शुभाना ॥ १ ॥ आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक्सजोषसा नासत्या रथेन । युवोर्हि नः सख्या पित्र्याणि समानो बन्धुरुत तस्य वित्तम् ॥ २ ॥ उदु स्तोमासो अश्विनोरबुध्रञ्जामि ब्रह्माण्युषसश्च देवीः । आविवासन्रोदसी धिष्ण्येमे अच्छा विप्रो नासत्या विवक्ति ॥ ३ ॥ वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते । ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद्बृहदग्नयः समिधा जरन्ते ॥ ४ ॥ आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् । आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ १९ ॥

॥ ७३ ॥ १—५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ५ विराट् त्रिष्टुप् । २, ३, ४ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७३ ॥ अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः । पुरुदंसा पुरुतमा पुराजामर्त्या हवते अश्विना गीः ॥ १ ॥ न्यु प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च । अश्नीतं मध्वो अश्विना उपाक आ वां वोचे विदथेषु प्रयस्वान् ॥ २ ॥ अहेम यज्ञं पथामुराणा इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् । श्रुष्टीवेव प्रेषितो वामबोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः ॥ ३ ॥ उप त्या वह्नी गमतो विशं नो रक्षोहणा सम्भृता वीळुपाणी । समन्धांस्यग्मत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ॥ ४ ॥ आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् । आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ २० ॥

॥ ७४ ॥ १—६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ३ निचृद् बृहती । २, ४, ६ आर्षी भुरिग् बृहती । ५ आर्षी बृहती ॥ मध्यमः स्वरः ॥

॥ ७४ ॥ इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना । अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥ १ ॥ युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते । अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ॥ २ ॥ आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना । दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम् ॥ ३ ॥ अश्वासो ये वामुप दाशुषो गृहं युवां दीयन्ति बिभ्रतः । मक्षूयुभिर्नरा हयेभिरश्विना देवा यातमस्मयू ॥ ४ ॥ अधा ह यन्तो अश्विना पृक्षः सचन्त सूरयः । ता यंसतो मघवद्भ्यो ध्रुवं यशश्छर्दिरस्मभ्यं नासत्या ॥ ५ ॥ प्र ये ययुरवृकासो रथा इव नृपातारो जनानाम् । उत स्वेन शवसा शूशुवुर्नर उत क्षियन्ति सुक्षितिम् ॥ ६ ॥ २१ ॥

॥ ७५ ॥ १—८ वसिष्ठ ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१, ८ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ४, ५ विराट् त्रिष्टुप् । ३ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप् । ६, ७ आर्षी त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७५ ॥ व्युषा आवो दिविजा ऋतेनाविष्कृण्वाना महिमानमागात् । अप द्रुहस्तम आवरजुष्टमङ्गिरस्तमा पथ्या अजीगः ॥ १ ॥ महे नो अद्य सुविताय

बोध्युषो मृहे सौभंगाय प्र यन्धि । चित्रं रयिं यशसं धेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम् ॥ २ ॥ एते त्ये भानवो दर्शतायाश्चित्रा उषसो अमृतास आगुः । जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्यापृणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः ॥ ३ ॥ एषा स्या युजाना पराकात्पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति । अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी ॥ ४ ॥ वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् । ऋषिष्टुता जरयन्ती मघोन्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना ॥ ५ ॥ प्रति द्युतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदृश्रन्नुषसं वहन्तः । याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधते जनाय ॥ ६ ॥ सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः । रुजद्दृळ्हानि दददुस्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त ॥ ७ ॥ नू नो गोमद्वीरवद्धेहि रत्नमुषो अश्वावत्पुरुभोजो अस्मे । मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥ २२ ॥

॥ ७६ ॥ १—७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ४, ५, ६, ७ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७६ ॥ उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत् । क्रत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुराविरकर्भुवनं विश्वमुषाः ॥ १ ॥ प्र मे पन्था देवयाना अदृश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः । अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात्प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः ॥ २ ॥ तानीदहानि बहुलान्यासन्या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य । यतः परि जार इवाचरन्त्युषो ददृक्षे न पुनर्यतीव ॥ ३ ॥ त इद्देवानां सधमाद आसन्नृतावानः कवयः पूर्व्यासः । गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्सत्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम् ॥ ४ ॥ समान ऊर्वे अधि सङ्गतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते । ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः ॥ ५ ॥ प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः । गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व ॥ ६ ॥ एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः । दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ २३ ॥

॥ ७७ ॥ १—६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २, ३, ४, ५ निचृत् त्रिष्टुप् । ६ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७७ ॥ उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै । अभूदग्निः समिधे मानुषाणामकर्ज्योतिर्बाधमाना तमांसि ॥ १ ॥ विश्वं प्रतीची सप्रथा उदस्थाद्रुशद्वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत् । हिरण्यवर्णा सुदृशीकसन्दृग्गवां माता नेत्र्यह्नामरोचि ॥ २ ॥ देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम् । उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता ॥ ३ ॥ अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः । यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ॥ ४ ॥ अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाह्युषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः । इषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्वावद्रथवच्च राधः ॥ ५ ॥ यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः । सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ २४ ॥

॥ ७८ ॥ १-५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः-१, २ त्रिष्टुप् । ३, ४ निचृत् त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७८ ॥ प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन्नूर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते । उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि ॥ १ ॥ प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गृणन्तः । उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिताप देवी ॥ २ ॥ एता उत्याः प्रत्यदृश्रन्पुरस्ताज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः । अजीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्निमपाचीनं तमो अगादजुष्टम् ॥ ३ ॥ अचेति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् । आस्थाद्रथं स्वधया युज्यमानमा यमश्वासः सुयुजो वहन्ति ॥ ४ ॥ प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्तास्माकासो मघवानो वयं च । तिल्विलायध्वमुषसो विभातीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ २५ ॥

॥७९॥ १-५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१, ४ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ३ विराट् त्रिष्टुप् । ५ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७९ ॥ व्युषा आवः पथ्या जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्बोधयन्ती । सुसन्दृग्भिरुक्षभिर्भानुमश्रेद्वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः ॥ १ ॥ व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून्विशो न युक्ता उषसो यतन्ते । सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू ॥ २ ॥ अभूदुषा इन्द्रतमा मघोन्यजीजनत्सुविताय श्रवांसि । वि दि-

वो देवी दुहिता दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि ॥ ३ ॥ तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत्स्तोतृभ्यो अरदो गृणाना । यां त्वा जज्ञुर्वृषभस्या रवेण वि दृळ्हस्य दुरो अद्रेरौर्णोः ॥ ४ ॥ देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मद्र्यक्सूनृता ईरयन्ती । व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ २६ ॥

॥ ८० ॥ १-३ वसिष्ठ ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८० ॥ प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अबुध्रन् । विवर्तयन्तीं रजसी समन्ते आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा ॥ १ ॥ एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूढ्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि । अग्र एति युवतिरह्रयाणा प्राचिकितत्सूर्यं यज्ञमग्निम् ॥ २ ॥ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः । घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥ २७ ॥ ५ ॥

॥ ८१ ॥ १-६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ उषा देवता ॥ छन्दः—१ विराड् बृहती । २ भुरिग् बृहती । ३ आर्षी बृहती । ४, ६ आर्षी भुरिग् बृहती । ५ निचृद् बृहती ॥ मध्यमः स्वरः ॥

॥ ८१ ॥ प्रत्यु अदर्श्यायत्युच्छन्ती दुहिता दिवः । अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥ १ ॥ उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचाँ उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् । तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥ २ ॥ प्रति त्वा दुहितर्दिव उषो जीरा अभुत्स्महि । या वहसि पुरु स्पार्हं वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयः ॥ ३ ॥ उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्रख्यै देवि स्वर्दृशे । तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः ॥ ४ ॥ तच्चित्रं राध आ भरोषो यद्दीर्घश्रुत्तमम् । यत्ते दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तद्रास्व भुनजामहै ॥ ५ ॥ श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजाँ अस्मभ्यं गोमतः । चोदयित्री मघोनः सूनृतावत्युषा उच्छदप स्रिधः ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ ८२ ॥ १—१० वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ६, ७, ९ निचृज्जगती । ३ आर्ची भुरिग् जगती । ४, ५, १० आर्षी विराड् जगती । ८ विराड् जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ८२ ॥ इन्द्रा॑वरुणा यु॒वम॑ध्व॒राय॑ नो वि॒शे जना॑य॒ महि॒ शर्म॑ यच्छतम् । दी॒र्घप्र॑यज्युम॒ति यो व॑नु॒ष्यति॑ व॒यं ज॑येम॒ पृत॑नासु दू॒ढ्यः॑ ॥ १ ॥ स॒म्राळ॒न्यः स्व॒राळ॒न्य उ॑च्यते वां म॒हान्ता॒विन्द्रा॒वरु॑णा म॒हाव॑सू । विश्वे॑ दे॒वासः॑ पर॒मे व्यो॑मनि॒ सं वा॒मोजो॑ वृषणा॒ सं बल॑ं दधुः ॥२॥ अन्व॒पां खान्य॑तृन्त॒मोज॒सा सूर्य॑मैरयतं दि॒वि प्र॒भुम् । इन्द्रा॑वरुणा॒ मदे॑ अ॒स्य मा॒यिनोऽपि॑न्वतम॒पितः॒ पिन्व॑तं॒ धियः॑ ॥ ३ ॥ यु॒वामिद्यु॒त्सु पृत॑नासु॒ वह्न॑यो यु॒वां क्षेम॑स्य प्रस॒वे मि॒तज्ञ॑वः । ई॒शाना॒ वस्व॑ उ॒भय॑स्य का॒रव॒ इन्द्रा॑वरुणा सु॒हवा॑ हवामहे ॥ ४ ॥ इन्द्रा॑वरुणा॒ यदि॒मानि॑ च॒क्रथु॒र्विश्वा॑ जा॒तानि॒ भुव॑नस्य म॒ज्मना॑ । क्षेमे॑ण मि॒त्रो वरु॑णं दुव॒स्यति॑ म॒रुद्भि॑रु॒ग्रः शुभ॑म॒न्य ई॑यते ॥ ५ ॥
॥ २ ॥ म॒हे शु॒ल्काय॒ वरु॑णस्य॒ नु त्वि॒ष ओजो॑ मिमाते ध्रु॒वम॑स्य॒ यत्स्वम् । अजा॑मिम॒न्यः श्न॒थय॑न्त॒माति॑रद्द॒भ्रेभि॑र॒न्यः प्र वृ॑णोति॒ भूय॑सः ॥ ६ ॥ न तमंहो॒ न दु॑रि॒तानि॒ मर्त्य॒मिन्द्रा॑वरु॒णा न तपः॑ कुत॑श्च॒न । यस्य॑ दे॒वा गच्छ॑थो वी॒थो अ॑ध्व॒रं न तं मर्त॑स्य नशते॒ परि॑ह्वृतिः ॥ ७ ॥ अ॒र्वाङ्न॑रा॒ दैव्ये॑नाव॒सा ग॑तं शृणु॒तं हवं॒ यदि॑ मे॒ जुजो॑षथः । यु॒वोर्हि स॒ख्यमु॒त वा॒ यदाप्यं॑ मार्डी॒कमि॑न्द्रावरु॒णा नि य॑च्छतम् ॥८॥ अ॒स्माक॑मिन्द्रा वरु॒णा भरे॑भरे पुरो॒योधा॑ भवतं कृष्ट्योजसा । यद्वां॒ हव॑न्त उ॒भये॒ अध॑ स्पृ॒धि नर॑स्तो॒कस्य॒ तन॑यस्य सा॒तिषु॑ ॥ ९ ॥ अ॒स्मे इन्द्रो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा द्यु॒म्नं य॑च्छन्तु॒ महि॒ शर्म॑ स॒प्रथः॑ । अ॒व॒ध्रं ज्योति॒रदि॑तेर्ऋता॒वृधो॑ दे॒वस्य॒ श्लोकं॑ सवि॒तुर्म॑नामहे ॥ १० ॥ ३ ॥

॥ ८३ ॥ १–१० वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः–१, ३, ९ विराड् जगती । २, ४, ६ निचृज्जगती । ५ आर्चीजगती । ७, ८, १० आर्षी जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ८३ ॥ यु॒वां न॑रा॒ पश्य॑मानास॒ आप्यं॑ प्रा॒चा ग॒व्यन्तः॑ पृथु॒पर्श॑वो ययुः । दासा॑ च वृ॒त्रा ह॒तमार्या॑णि च सु॒दास॑मिन्द्रावरु॒णाव॑सावतम् ॥ १ ॥ यत्रा॒ नरः॑ स॒मय॑न्ते कृ॒तध्व॑जो॒ यस्मि॑न्ना॒जा भव॑ति॒ किं च॒न प्रि॒यम् । यत्रा॒ भय॑न्ते॒ भुव॑ना स्व॒र्दृश॒स्तत्रा॑ न इन्द्रावरु॒णाधि॑ वोचतम् ॥ २ ॥ सं भूम्या॒ अन्ता॑ ध्व॒सि॒रा अ॑दृक्ष॒तेन्द्रा॑वरुणा दि॒वि घोष॒ आरु॑हत् । अस्थु॒र्जना॑ना॒मुप॒ मामरा॑तयो॒ऽर्वागव॑सा हवनश्रुता॒ ग॑तम् ॥ ३ ॥ इन्द्रा॑वरुणा व॒धना॑भिरप्र॒ति भे॒दं व॒न्वन्ता॒ प्र सु॒दास॑मावतम् । ब्रह्मा॑ण्येषां शृणु॒तं हवी॑मनि स॒त्या तृत्सू॑नामभवत्पु॒रोहि॑तिः ॥ ४ ॥ इन्द्रा॑वरुणाव॒भ्या त॑पन्ति मा॒घान्य॒र्यो व॒नुषा॒मरा॑तयः । यु॒वं हि वस्व॑ उ॒भय॑स्य॒ राज॒थोऽध॑ स्मा

नोऽवतं पार्ये दिवि ॥ ५ ॥ ४ ॥ युवां हवन्त उभयास आजिष्विन्द्रं च वस्वो वरुणं च सातये । यत्र राजभिर्दशभिर्निबाधितं प्र सुदासमावतं तृत्सुभिः सह ॥६॥ दश राजानः समिता अयज्यवः सुदासमिन्द्रावरुणा न युयुधुः । सत्या नृणामद्मसदामुपस्तुतिर्देवा एषामभवन्देवहूतिषु ॥ ७ ॥ दाशराज्ञे परियत्ताय विश्वतः सुदास इन्द्रावरुणावशिक्षतम् । श्वित्यञ्चो यत्र नमसा कपर्दिनो धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सवः ॥ ८ ॥ वृत्राण्यन्यः समिथेषु जिघ्नते व्रतान्यन्यो अभि रक्षते सदा । हवामहे वां वृषणा सुवृक्तिभिरस्मे इन्द्रावरुणा शर्म यच्छतम् ॥ ९ ॥ अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः । अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे ॥ १० ॥ ५ ॥

॥ ८४ ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ४, ५ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८४ ॥ आ वां राजानावध्वरे ववृत्यां हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः । प्र वां घृताची बाह्वोर्दधाना परि त्मना विषुरूपा जिगाति ॥ १ ॥ युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौर्यौ सेतृभिररज्जुभिः सिनीथः । परि नो हेळो वरुणस्य वृज्या उरुं न इन्द्रः कृणवदु लोकम् ॥ २ ॥ कृतं नो यज्ञं विदथेषु चारुं कृतं ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता । उपो रयिर्देवजूतो न एतु प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेतम् ॥ ३ ॥ अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं रयिं धत्तं वसुमन्तं पुरुक्षुम् । प्र य आदित्यो अनृता मिनात्यमिता शूरो दयते वसूनि ॥ ४ ॥ इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना । सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥६॥

॥ ८५ ॥ १–५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्रावरुणौ देवते ॥ छन्दः—१, ४ आर्षी त्रिष्टुप् । २, ३, ५ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८५ ॥ पुनीषे वामरक्षसं मनीषां सोममिन्द्राय वरुणाय जुह्वत् । घृतप्रतीकामुषसं न देवीं ता नो यामन्नुरुष्यतामभीके ॥ १ ॥ स्पर्धन्ते वा उ देवहूये अत्र येषु ध्वजेषु दिद्यवः पतन्ति । युवं ताँ इन्द्रावरुणावमित्रान्हतं पराचः शर्वा विषूचः ॥ २ ॥ आपश्चिद्धि स्वयशसः सदःसु देवीरिन्द्रं वरुणं देवता धुः । कृष्टीरन्यो धारयति प्रविक्ता वृत्राण्यन्यो अप्रतीनि हन्ति ॥ ३ ॥ स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु होता

य आदित्य शर्वसा वां नमस्वान् । आववर्तदवसे वां हविष्मानसदित्स सुविताय प्रयस्वान् ॥ ४ ॥ इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना । सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ ७ ॥

॥ ८६ ॥ १-८ वसिष्ठ ऋषिः ॥ वरुणो देवता ॥ छन्दः-१, ३, ४, ५, ८ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ७ विराट् त्रिष्टुप् । ६ आर्षी त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८६ ॥ धीरा त्वस्य महिना जनूंषि वि यस्तस्तम्भ रोदसी चिदुर्वी । प्र नाकमृष्वं नुनुदे बृहन्तं द्विता नक्षत्रं पप्रथच्च भूम ॥ १ ॥ उत स्वया तन्वा३सं वदे तत्कदा न्व१न्तर्वरुणे भुवानि । किं मे हव्यमहृणानो जुषेत कदा मृळीकं सुमना अभि ख्यम् ॥ २ ॥ पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षूपो एमि चिकितुषो विपृच्छम् । समानमिन्मे कवयश्चिदाहुरयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते ॥ ३ ॥ किमाग आस वरुण ज्येष्ठं यत्स्तोतारं जिघांससि सखायम् । प्र तन्मे वोचो दूळभ स्वधावोऽव त्वानेना नमसा तुर इयाम् ॥ ४ ॥ अव द्रुग्धानि पित्र्या सृजा नोऽव या वयं चकृमा तनूभिः । अव राजन्पशुतृपं न तायुं सृजा वत्सं न दाम्नो वसिष्ठम् ॥ ५ ॥ न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः । अस्ति ज्यायान्कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता ॥ ६ ॥ अरं दासो न मीळ्हुषे कराण्यहं देवाय भूर्णयेऽनागाः । अचेतयदचितो देवो अर्यो गृत्सं राये कवितरो जुनाति ॥ ७ ॥ अयं सु तुभ्यं वरुण स्वधावो हृदि स्तोम उपश्रितश्चिदस्तु । शं नः क्षेमे शमु योगे नो अस्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥ ८ ॥

॥ ८७ ॥ १-७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ वरुणो देवता ॥ छन्दः-१ विराट् त्रिष्टुप् । २, ३, ५ आर्षी त्रिष्टुप् । ४, ६, ७ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८७ ॥ रदत्पथो वरुणः सूर्याय प्रार्णांसि समुद्रिया नदीनाम् । सर्गो न सृष्टो अर्वतीर्ऋतायञ्चकार महीरवनीरहभ्यः ॥ १ ॥ आत्मा ते वातो रज आ नवीनोत्पशुर्न भूर्णिर्यवसे ससवान् । अन्तर्मही बृहती रोदसीमे विश्वा ते धाम वरुण प्रियाणि ॥ २ ॥ परि स्पशो वरुणस्य स्मदिष्टा उभे पश्यन्ति रोदसी सुमेके । ऋतावानः कवयो यज्ञधीराः प्रचेतसो य इषयन्त मन्म ॥ ३ ॥ उवाच मे वरुणो मेधिराय त्रिः सप्त नामाघ्न्या बिभर्ति । विद्वान्पदस्य गुह्या न वोचद्युगाय विप्र उपराय शिक्षन् ॥ ४ ॥ तिस्रो द्यावो निहिता अन्तरस्मिन्तिस्रो भूमीरुपराः

षाड्विधानाः। गृत्सो राजा वरुणश्चक्र एतं दिवि प्रेङ्खं हिरण्ययं शुभे कम् ॥ ५ ॥ अव सिन्धुं वरुणो द्यौरिव स्थाद्द्रप्सो न श्वेतो मृगस्तुविष्मान्। गम्भीरशंसो रजसो विमानः सुपारक्षत्रः सतो अस्य राजा ॥६॥ यो मृळयाति चक्रुषे चिदागो वयं स्याम वरुणे अनागाः। अनु व्रतान्यदितेर्ऋधन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥ ६ ॥

॥ ८८ ॥ १-७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ वरुणो देवता ॥ छन्दः—१, २, ३, ६ निचृत् त्रिष्टुप्। ४, ५, ७ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८८ ॥ प्र शुन्ध्युवं वरुणाय प्रेष्ठां मतिं वसिष्ठ मीळ्हुषे भरस्व। य ईमर्वाञ्चं करते यजत्रं सहस्रामघं वृषणं बृहन्तम् ॥ १ ॥ अधा न्वस्य सन्दृशं जगन्वानग्नेरनीकं वरुणस्य मंसि। स्वर्यदश्मन्नधिपा उ अन्धोऽभि मा वपुर्दृशये निनीयात् ॥ २ ॥ आ यद्रुहाव वरुणश्च नावं प्र यत्समुद्रमीरयाव मध्यम्। अधि यदपां स्नुभिश्चराव प्र प्रेङ्ख ईङ्खयावहै शुभे कम् ॥ ३ ॥ वसिष्ठं ह वरुणो नाव्याधादृषिं चकार स्वपा महोभिः। स्तोतारं विप्रः सुदिनत्वे अह्नां यान्नु द्यावस्ततनन्यादुषासः ॥ ४ ॥ क त्यानि नौ सख्या बभूवुः सचावहे यदवृकं पुरा चित्। बृहन्तं मानं वरुण स्वधावः सहस्रद्वारं जगमा गृहं ते ॥ ५ ॥ य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन्त्वामागांसि कृणवत्सखा ते। मा त एनस्वन्तो यक्षिन्भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम् ॥ ६ ॥ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तो व्यस्मत्पाशं वरुणो मुमोचत्। अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ १० ॥

॥ ८६ ॥ १-५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ वरुणो देवता ॥ छन्दः—१-४ आर्षी गायत्री। ५ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः-१-४ षड्जः। ५ निषादः।

॥८६॥ मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम्। मृळा सुक्षत्र मृळय ॥१॥ यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिवः। मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ २ ॥ क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे। मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ ३ ॥ अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम्। मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ ४ ॥ यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि। अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥ ५ ॥ ११ ॥ ५ ॥

॥ ६० ॥ १-७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १-४ वायुः। ५-७ इन्द्रवायू देवते ॥ छन्दः-१,२,७ विराट् त्रिष्टुप्। ३ त्रिष्टुप्। ४,५,६ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः॥

॥ ६० ॥ प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः। वह वा
नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय ॥ १ ॥ ईशानाय प्रहुतिं यस्त आ
नट् शुचिं सोमं शुचिपास्तुभ्यं वायो । कृणोषि तं मर्त्येषु प्रशस्तं जातोजा
जायते वाज्यस्य ॥ २ ॥ राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणाधा
देवम् । अध वायुं नियुतः सश्चत स्वा उत श्वेतं वसुधितिं निरेके ॥ ३ ॥ उप
न्नुषसः सुदिना अरिप्रा उरु ज्योतिर्विविदुर्दीध्यानाः । गव्यं चिदूर्वमुशिजो वि व
वुस्तेषामनु प्रदिवः सस्रुरापः ॥ ४ ॥ ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्ता
सः दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति। इन्द्रवायू वीरवाहं रथं वामीशान
योरभि पृक्षः सचन्ते ॥ ५ ॥ ईशानासो ये दधते स्वर्णो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हि
रण्यैः । इन्द्रवायू सूरयो विश्वमायुरर्वद्भिर्वीरैः पृतनासु सह्युः ॥ ६ ॥ अर्वन्तो
न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः । वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यू
पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ १२ ॥

॥ ६१ ॥ १-७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १, ३ वायुः । २, ४-७ इन्द्रवायू दे
वते । छन्दः-१,४,७ विराट् त्रिष्टुप् । २,५,६ आर्षी त्रिष्टुप् ॥ ३ निचृत् त्रिष्टुप्
धैवतः स्वरः ॥

॥ ६१ ॥ कुविदङ्ग नमसा ये वृधासः पुरा देवा अनवद्यास आसन् ।
वायवे मनवे बाधितायावासयन्नुषसं सूर्येण ॥ १ ॥ उशन्ता दूता न दभाय गोप
मासश्च पाथः शरदश्च पूर्वीः । इन्द्रवायू सुष्टुतिर्वामियाना मार्डीकमीट्टे सुवितं
नव्यम् ॥ २ ॥ पीवोअन्नाँ रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः ।
वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः ॥ ३ ॥ यावत्तरस्तन्वो याव
दोजो यावन्नरश्चक्षसा दीध्यानाः । शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इन्द्रवायू सद
बर्हिरेदं ॥ ४ ॥ नियुवाना नियुतः स्पार्हवीरा इन्द्रवायू सरथं यातमर्वाक् । इ
हि वां प्रभृतं मध्वो अग्रमध प्रीणाना वि मुमुक्तमस्मे ॥ ५ ॥ या वां शतं नियु
तो याः सहस्रमिन्द्रवायू विश्ववाराः सचन्ते । आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक्पा
नरा प्रतिभृतस्य मध्वः ॥ ६ ॥ अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभि
र्वसिष्ठाः । वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ १३

॥ ६२ ॥ १-५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १, ३-५ वायुः । २ इन्द्रवायू देवते
छन्दः-१ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् । ५ आर्षी त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ।

॥ ६२ ॥ आ वायो भूष शुचिपा उप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार । उपो ते अन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयम् ॥ १ ॥ प्र सोता जीरो अध्वरेष्वस्थात्सोममिन्द्राय वायवे पिबध्यै । प्र यद्वां मध्वो अग्रियं भरन्त्यध्वर्यवो देवयन्तः शचीभिः ॥ २ ॥ प्र याभिर्यासि दाश्वांसमच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे । नि नो रयिं सुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः ॥ ३ ॥ ये वायव इन्द्रमादनास आदेवासो नितोशनासो अर्यः । घ्नन्तो वृत्राणि सूरिभिः ष्याम सासह्वांसो युधा नृभिरमित्रान् ॥ ४ ॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ ६३ ॥ १–८ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः–१, ८ निचृत् त्रिष्टुप् । २, ५ आर्षी त्रिष्टुप् । ३, ४, ६, ७ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६३ ॥ शुचिं नु स्तोमं नवजातमद्येन्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम् । उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा ॥ १ ॥ ता सानसी शवसाना हि भूतं साकंवृधा शवसा शूशुवांसा । क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरेः पृङ्क्तं वाजस्य स्थविरस्य घृष्वेः ॥ २ ॥ उपो ह यद्विदथं वाजिनो गुर्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः । अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नरस्ते ॥ ३ ॥ गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ईट्टे रयिं यशसं पूर्वभाजम् । इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा प्र नो नव्येभिस्तिरतं देष्णैः ॥ ४ ॥ सं यन्मही मिथती स्पर्धमाने तनूरुचा शूरसाता यतैते । अदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा हतं सोमसुता जनेन ॥ ५ ॥ १५ ॥ इमामु षु सोमसुतिमुप न एन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् । नू चिद्धि परिमम्नाथे अस्माना वां शश्वद्भिर्ववृतीय वाजैः ॥ ६ ॥ सो अग्न एना नमसा समिद्धोऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचेः । यत्सीमागश्चकृमा तत्सु मृळ तदर्यमादितिः शिश्रथन्तु ॥ ७ ॥ एता अग्न आशुषाणास इष्टीर्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान् । मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥ १६ ॥

॥ ६४ ॥ १–१२ वसिष्ठ ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः–१, ३, ८, १० आर्षी निचृद् गायत्री । २, ४, ५, ६, ७, ९, ११, आर्षी गायत्री । १२ आर्षी निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः–१–११ षड्जः । १२ गान्धारः ॥

॥६४॥ इमं वांमस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः । अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि ॥ १ ॥ शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः । ईशाना पिप्यतं धियः ॥ २ ॥ मा पापत्वायं नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये । मा नो रीरधतं निदे ॥ ३ ॥ इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्सुवृक्तिमेरयामहे । धिया धेना अवस्यवः ॥ ४ ॥ ता हि शश्वन्त ईळत इत्था विप्रास ऊतये । सबाधो वाजसातये ॥ ५ ॥ ता वां गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वन्तो हवामहे । मेधसाता सनिष्यवः ॥ ६ ॥ १७ ॥ इन्द्राग्नी अवसा गतमस्मभ्यं चर्षणीसहा । मा नो दुःशंस ईशत ॥ ७ ॥ मा कस्य नो अररुषो धूर्तिः प्र णङ्मर्त्यस्य । इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ॥ ८ ॥ गोमद्धिरण्यवद्वसु यद्वामश्वावदीमहे । इन्द्राग्नी तद्वनेमहि ॥ ९ ॥ यत्सोम आ सुते नर इन्द्राग्नी अजोहवुः । सप्तीवन्ता सपर्यवः ॥ १० ॥ उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा । आङ्गूषैराविवासतः ॥ ११ ॥ ताविदुः शंसं मर्त्यं दुर्विद्वांसं रक्षस्विनम् । आभोगं हन्मना हतमुदधिं हन्मना हतम् ॥ १२ ॥ १८ ॥

॥ ६५ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः । १, २, ४–६ सरस्वती । ३ सरस्वान् देवता ॥ छन्दः—१ पादनिचृत् त्रिष्टुप् । २, ५, ६, आर्षी त्रिष्टुप् । ३, ४, विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६५ ॥ प्र क्षोदसा धायसा सस्र एषा सरस्वती धरुणमायसी पूः । प्रबाबधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः ॥ १ ॥ एकाचेतत्सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् । रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय ॥ २ ॥ स वावृधे नर्यो योषणासु वृषा शिशुर्वृषभो यज्ञियासु । स वाजिनं मघवद्भ्यो दधाति वि सातये तन्वं मामृजीत ॥ ३ ॥ उत स्या नः सरस्वती जुषाणोप श्रवत्सुभगा यज्ञे अस्मिन् । मितज्ञुभिर्नमस्यैरियाना राया युजा चिदुत्तरा सखिभ्यः ॥ ४ ॥ इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः प्रति स्तोमं सरस्वति जुषस्व । तव शर्मन्प्रियतमे दधाना उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम् ॥ ५ ॥ अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो द्वारावृतस्य सुभगे व्यावः । वर्ध शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ १९ ॥

॥ ६६ ॥ १–६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १–३ सरस्वती । ४–६ सरस्वान् देवता ॥ छन्दः—१ आर्ची भुरिग्बृहती । २ आर्षी भुरिग्बृहती । ३ निचृत्

पङ्क्तिः । ४, ५, निचृद्गायत्री । ६ आर्षी गायत्री ॥ स्वरः—१, २, मध्यमः । ३ पञ्चमः । ४, ५, ६ षड्जः ॥

॥ ९६ ॥ बृहदु गायिषे वचोऽसुर्या नदीनाम् । सरस्वतीमिन्महया सुवृक्तिभिः स्तोमैर्वसिष्ठ रोदसी ॥ १ ॥ उभे यत्ते महिना शुभ्रे अन्धसी अधिक्षियन्ति पूरवः । सा नो बोधयवित्री मरुत्सखा चोद राधो मघोनाम् ॥ २ ॥ भद्रमिद्भद्रा कृणवत्सरस्वत्यकवारी चेतति वाजिनीवती । गृणाना जमदग्निवत्स्तुवाना च वसिष्ठवत् ॥ ३ ॥ जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः । सरस्वन्तं हवामहे ॥ ४ ॥ ये ते सरस्व ऊर्मयो मधुमन्तो घृतश्चुतः । तेभिर्नोऽविता भव ॥ ५ ॥ पीपिवांसं सरस्वतः स्तनं यो विश्वदर्शतः । भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥ ६ ॥ २० ॥

॥ ९७ ॥ १-० १वसिष्ठ ऋषिः ॥ १ इन्द्रः । २, ४-८ बृहस्पतिः । ३, ९ इन्द्रा-ब्रह्मणस्पती । १० इन्द्रा बृहस्पती देवते ॥ छन्दः—१ आर्षी त्रिष्टुप् । २, ४, ७ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ५, ६, ८, ९, १० निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ९७ ॥ यज्ञे दिवो नृषदने पृथिव्या नरो यत्र देवयवो मदन्ति । इन्द्राय यत्र सवनानि सुन्वे गमन्मदाय प्रथमं वयश्च ॥ १ ॥ आ दैव्या वृणीमहेऽवांसि बृहस्पतिर्नो मह आ सखायः । यथा भवेम मीळ्हुषे अनागा यो नो दाता परावतः पितेव ॥ २ ॥ तमु ज्येष्ठं नमसा हविर्भिः सुशेवं ब्रह्मणस्पतिं गृणीषे । इन्द्रं श्लोको महि दैव्यः सिषक्तु यो ब्रह्मणो देवकृतस्य राजा ॥ ३ ॥ स आ नो योनिं सदतु प्रेष्ठो बृहस्पतिर्विश्ववारो यो अस्ति । कामो रायः सुवीर्यस्य तं दात्पर्षन्नो अति सश्चतो अरिष्टान् ॥ ४ ॥ तमा नो अर्कममृताय जुष्टमिमे धासुरमृतासः पुराजाः । शुचिक्रन्दं यजतं पस्त्यानां बृहस्पतिमनर्वाणं हुवेम ॥५॥२१॥ तं शग्मासो अरुषासो अश्वा बृहस्पतिं सहवाहो वहन्ति । सहश्चिद्यस्य नीलवत्सधस्थं नभो न रूपमरुषं वसानाः ॥ ६ ॥ स हि शुचिः शतपत्रः स शुन्ध्युर्हिरण्यवाशीरिषिरः स्वर्षाः । बृहस्पतिः स स्वावेश ऋष्वः पुरू सखिभ्य आसुतिं करिष्ठः ॥ ७ ॥ देवी देवस्य रोदसी जनित्री बृहस्पतिं वावृधतुर्महित्वा । दक्षाय्याय दक्षता सखायः करद्ब्रह्मणे सुतरा सुगाधा ॥ ८ ॥ इयं वां ब्रह्मणस्पते सुवृक्तिर्ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे अकारि । अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ॥ ९ ॥ बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य । धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥ २२ ॥

॥ ६८ ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १–६ इन्द्रः । ७ इन्द्रा बृहस्पती देवते ॥ छन्दः—१, २, ६, ७ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६८ ॥ अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् । गौराद्वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेद्याति सुतसोममिच्छन् ॥ १ ॥ यद्दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि । उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान्पाहि सोमान् ॥ २ ॥ जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच । एन्द्र पप्राथोर्व१न्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ॥ ३ ॥ यद्योधया महतो मन्यमानान्त्साक्षाम तान्बाहुभिः शाशदानान् । यद्वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम ॥ ४ ॥ प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार । यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत्केवलः सोमो अस्य ॥ ५ ॥ तवेदं विश्वमभितः पशव्यं१यत्पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य । गवामसि गोपतिरेक इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः ॥ ६ ॥ बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य । धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ २३ ॥

॥ ६६ ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ १–३, ७ विष्णुः । ४–६ इन्द्रा विष्णू देवते ॥ छन्दः—१, ६ बिराट् त्रिष्टुप् । २, ३ त्रिष्टुप् । ४, ५, ७ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६६ ॥ परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति । उभे ते विद्म रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से ॥ १ ॥ न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परमन्तमाप । उदस्तभ्ना नाकमृष्वं बृहन्तं दाधर्थ प्राचीं ककुभं पृथिव्याः ॥ २ ॥ इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषे दशस्या । व्यस्तभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः ॥ ३ ॥ उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम् । दासस्य चिद्वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु ॥ ४ ॥ इन्द्राविष्णू दृंहिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्नथिष्टम् । शतं वर्चिनः सहस्रं च साकं हथो अप्रत्यसुरस्य वीरान् ॥ ५ ॥ इयं मनीषा बृहती बृहन्तोरुक्रमा तवसा वर्धयन्ती । ररे वां स्तोमं विदथेषु विष्णो पिन्वतमिषो वृजनेष्विन्द्र ॥ ६ ॥ वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् । वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ २४ ॥

॥ १०० ॥ १–७ वसिष्ठ ऋषिः ॥ विष्णुर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ५, ६, ७ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् । ४ आर्षी त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १०० ॥ नू मर्तो दयते सनिष्यन्यो विष्णव उरुगायाय दाशत् । प्र यः सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नर्यमाविवासात् ॥ १ ॥ त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजन्यामप्रयुतामेवयावो मतिं दाः । पर्चो यथा नः सुवितस्य भूरेरश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः ॥ २ ॥ त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा । प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान्त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम ॥ ३ ॥ वि चक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् । ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार ॥ ४ ॥ प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट नामार्यः शंसामि वयुनानि विद्वान् । तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान्क्षयन्तमस्य रजसः पराके ॥ ५ ॥ किमित्ते विष्णो परिचक्ष्यं भूत्प्र यद्ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि । मा वर्पो अस्मदप गूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ ॥ ६ ॥ वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् । वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ २५ ॥ ६ ॥

॥ १०१ ॥ १–६ वसिष्ठः कुमारो वाग्नेय ऋषिः ॥ पर्जन्यो देवता ॥ छन्दः—१, ६ त्रिष्टुप् । २, ४, ५ विराट् त्रिष्टुप् । ३ निचृत् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १०१ ॥ तिस्रो वाचः प्र वद ज्योतिरग्रा या एतद्दुह्रे मधुदोघमूधः । स वत्सं कृण्वन्गर्भमोषधीनां सद्यो जातो वृषभो रोरवीति ॥ १ ॥ यो वर्धन ओषधीनां यो अपां यो विश्वस्य जगतो देव ईशे । स त्रिधातु शरणं शर्म यंसत्त्रिवर्तु ज्योतिः स्वभिष्ट्यस्मे ॥ २ ॥ स्तरीरु त्वद्भवति सूत उ त्वद्यथावशं तन्वं चक्र एषः । पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः ॥ ३ ॥ यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुस्तिस्रो द्यावस्त्रेधा सस्रुरापः । त्रयः कोशास उपसेचनासो मध्वः श्चोतन्त्यभितो विरप्शम् ॥ ४ ॥ इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत् । मयोभुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः ॥ ५ ॥ स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च । तन्म ऋतं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ १०२ ॥ १-३ वसिष्ठः कुमारो वाग्नेय ऋषिः ॥ पर्जन्यो देवता ॥ छन्दः-१ याजुषी विराट् त्रिष्टुप् । २, ३ निचृत् त्रिष्टुप् । धैवतः स्वरः ॥

॥ १०२ ॥ पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळ्हुषे । स नो यवसमिच्छतु ॥ १ ॥ यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यर्वताम् । पर्जन्यः पुरुषीणाम् ॥ २ ॥ तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम् । इळां नः संयतं करत् ॥ ३ ॥ २ ॥

॥ १०३ ॥ १-१० वसिष्ठ ऋषिः ॥ मण्डूका देवताः ॥ छन्दः-१ आर्षी अनुष्टुप् । २, ६, ७, ८, १०, आर्षी त्रिष्टुप् । ३, ४ निचृत् त्रिष्टुप् । ५, ९, विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ गान्धारः । २-१० धैवतः ॥

॥ १०३ ॥ संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः । वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ॥ १ ॥ दिव्या आपो अभि यदेनमायन्दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम् । गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वग्नुरत्रा समेति ॥ २ ॥ यदीमेनाँ उशतो अभ्यवर्षीत्तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम् । अख्खलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति ॥ ३ ॥ अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनोरपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम् । मण्डूको यदभिवृष्टः कनिष्कन्पृश्निः सम्पृङ्क्ते हरितेन वाचम् ॥ ४ ॥ यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः । सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत्सुवाचो वदथनाध्यप्सु ॥ ५ ॥ ३ ॥ गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम् । समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः ॥ ६ ॥ ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः । संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव ॥ ७ ॥ ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् । अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित् ॥ ८ ॥ देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते । संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्नुवते विसर्गम् ॥ ९ ॥ गोमायुरदादजमायुरदात्पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि । गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ १०४ ॥ १-२५ वसिष्ठ ऋषिः ॥ देवताः—१-७, १५, २५ इन्द्रासोमौ रक्षोहणौ । ८, १६, १९-२२, २४ इन्द्रः । ९, १२, १३ सोमः । १०, १४ अग्निः । ११ देवाः । १७ ग्रावाणः । १८ मरुतः । २३ वसिष्ठः । २३

पृथिव्यन्तरिक्षे ॥ छन्दः—१, ४, ६, ७ विराड्जगती। २ आर्षीजगती। ३, ५, १८, २१ निचृज्जगती। ८, १०, ११, १३, १४, १५, १७ निचृत् त्रिष्टुप्। ९ आर्षी त्रिष्टुप्। १२, १६ विराट् त्रिष्टुप्। १९, २०, २२, त्रिष्टुप्। २३, आर्ची भुरिग्जगती। २४ याजुषी विराट् त्रिष्टुप्। २५ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः–१, ४, ६, ७, २, ३, ५, १८, २१, २३, निषादः। ८, १०, ११, १३, १४, १५, १७, ९, १२, १६, १९, २०, २२, २४ धैवतः। २५ गान्धारः ॥

॥ १०४ ॥ इन्द्रा॑सोमा॒ तप॑तं॒ रक्ष॑ उ॒ब्जतं॒ न्य॑र्पयतं वृषणा त॒मो॒वृधः॑। परा॑ शृणीतम॒चितो॒ न्यो॑षतं ह॒तं नु॒देथां॒ नि शि॑शीतम॒त्रिणः॑॥ १ ॥ इन्द्रा॑सोमा॒ सम॒घ- शं॑सम॒भ्य१॒॑घं तपु॑र्ययस्तु च॒रुर॑ग्नि॒वाँ इ॑व। ब्र॒ह्म॒द्विषे॑ क्र॒व्यादे॑ घो॒रच॑क्षसे॒ द्वेषो॑ धत्त- मन॒वायं कि॑मी॒दिने॑॥ २ ॥ इन्द्रा॑सोमा दु॒ष्कृतो॑ व॒व्रे अ॒न्तर॑नारम्भ॒णे तम॑सि॒ प्र विध्यतम्। यथा॒ नातः॒ पुन॒रेक॑श्च॒नोदय॒त्तद्वा॑मस्तु॒ सह॑से म॒न्युम॒च्छवः॑॥ ३ ॥ इन्द्रा॑- सोमा व॒र्तय॑तं दि॒वो व॒धं सं पृ॑थि॒व्या अ॒घशं॑साय॒ तर्ह॑णम्। उत्त॑क्षतं स्व॒र्यं१॒॑ पर्व॑ते- भ्यो॒ येन॒ रक्षो॑ वावृधा॒नं नि॒जूर्व॑थः॥ ४ ॥ इन्द्रा॑सोमा व॒र्तय॑तं दि॒वस्पर्य॑ग्नित॒प्तेभि॑- र्यु॒वमश्म॑हन्मभिः। तपु॑र्वधेभि॒र॒जरे॑भिर॒त्रिणो॒ नि पर्शा॑ने विध्यतं॒ यन्तु॑ निस्व॒रम् ॥ ५ ॥ ५ ॥ इन्द्रा॑सोमा॒ परि॑ वां भूतु वि॒श्वत॑ इ॒यं म॒तिः क॒क्ष्याश्वे॑व वा॒जिना॑। यां वां॒ होत्रां॑ परिहि॒नोमि॑ मे॒धये॒मा ब्रह्मा॑णि नृ॒पती॑व जिन्वतम्॥ ६ ॥ प्रति॑ स्म- रेथां तु॒जय॑द्भि॒रेवै॑र्ह॒तं द्रुहो॑ र॒क्षसो॑ भङ्गु॒राव॑तः। इन्द्रा॑सोमा दु॒ष्कृते॒ मा सु॒गं भू॒द्यो नः॑ क॒दा चि॑दभि॒दास॑ति द्रु॒हा॥ ७ ॥ यो मा॒ पाके॑न॒ मन॑सा॒ चर॑न्तमभि॒चष्टे॒ अ- नृ॑तेभि॒र्वचो॑भिः। आप॑ इव का॒शिना॒ सङ्गृ॑भीता॒ अस॑न्न॒स्त्वास॑त इन्द्र व॒क्ता ॥ ८ ॥ ये पा॑कसं॒सं वि॒हर॑न्त॒ एवै॒र्ये वा॑ भ॒द्रं दू॒षय॑न्ति स्व॒धाभिः॑। अह॑ये वा॒ तान्प्र॒ददा॑तु॒ सोम॒ आ वा॑ दधातु॒ निर्ऋ॑तेरु॒पस्थे॑॥ ९ ॥ यो नो॒ रसं॒ दिप्स॑ति पि॒त्वो अ॑ग्ने॒ यो अश्वा॑नां॒ यो गवां॒ यस्त॒नूना॑म्। रि॒पुः स्ते॒नः स्ते॑य॒कृद्द॒भ्रमे॑तु॒ नि ष ही॑यतां त॒न्वा॒३॒॑ तना॑ च॥ १० ॥ ६ ॥ प॒रः सो अ॑स्तु त॒न्वा॒३॒॑ तना॑ च ति॒स्रः पृ॑थि॒वीर॒धो अ॑स्तु॒ विश्वाः॑। प्रति॑ शुष्यतु॒ यशो॑ अस्य देवा॒ यो नो॒ दिवा॒ दिप्स॑ति॒ यश्च॒ नक्त॑म्॥ ११ ॥ सु॒वि॒ज्ञानं॑ चिकि॒तुषे॒ जना॑य॒ सच्चास॑च्च॒ वच॑सी पस्पृधाते। तयो॒र्यत्स॒त्यं य॑त॒रदृजी॑य॒स्तदित्सोमो॑ऽवति॒ हन्त्यास॑त्॥ १२ ॥ न वा उ॒ सोमो॑ वृजि॒नं हि॑नोति॒ न क्ष॒त्रियं॑ मिथु॒या धा॒रय॑न्तम्। हन्ति॒ रक्षो॒ हन्त्यास॒द्वद॑न्तमु॒भा- विन्द्र॑स्य॒ प्रसि॑तौ शयाते॥ १३ ॥ यदि॑ वा॒हमनृ॑तदेव॒ आस॒ मोघं॑ वा दे॒वाँ अ॑प्यू॒हे अ॑ग्ने। किम॒स्मभ्यं॑ जातवेदो हृणीषे द्रोघ॒वाच॑स्ते निर्ऋ॒थं स॑चन्ताम्॥ १४ ॥

अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्ततप पूरुषस्य । अधा स वीरैर्द-
शभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह ॥ १५ ॥ ७ ॥ यो मायातुं यातुधाने-
त्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह । इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तो-
रधमस्पदीष्ट ॥ १६ ॥ प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप द्रुहा तन्वं१ गूहमाना ।
वव्राँ अनन्ताँ अव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः ॥ १७ ॥ वि तिष्ठध्वं
मरुतो विक्ष्विच्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन । वयो ये भूत्वी पतयन्ति न-
क्तभिर्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे ॥ १८ ॥ प्र वर्तय दिवो अश्मानमिन्द्र सोम-
शितं मघवन्त्सं शिशाधि । प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तादभि जहि रक्षसः पर्वतेन
॥ १९ ॥ एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम् । शि-
शीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः ॥ २० ॥ ८ ॥ इन्द्रो
यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्या३विवासताम् । अभीदु शक्रः परशुर्यथा
वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एति रक्षसः ॥ २१ ॥ उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्व-
यातुमुत कोकयातुम् । सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ॥ २२ ॥
मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावतामपोच्छतु मिथुना या किमीदिना । पृथिवी
नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥ २३ ॥ इन्द्र जहि पुमांसं
यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम् । विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते
दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम् ॥ २४ ॥ प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम् । रक्षोभ्यो
वधमस्यतमशनिं यातुमद्भ्यः ॥ २५ ॥ ९ ॥ ६ ॥ ७ ॥

॥ इति सप्तमं मण्डलं समाप्तम् ॥

# अथाष्टम मण्डलम् ॥

॥ १ ॥ १, २ प्रगाथो घौरः काण्वो वा । ३—२६ मेधातिथि मेध्यातिथी काण्वौ । ३०—३३ आसङ्गः प्लायोगिः । ३४ शश्वत्याङ्गिरस्यासङ्गस्य पत्नी ऋषिः ॥ देवताः—१-२६ इन्द्रः । ३०—३३ आसङ्गस्यदानस्तुतिः । ३४ आसङ्ग ॥ छन्दः—१ उपरिष्टाद्बृहती । २ आर्षी भुरिग् बृहती । ३, ७, १०, १४, १८, २१ विराड् बृहती । ४ आर्षी स्वराड् बृहती । ५, ८, १५, १७, १९, २२, २५, ३१ निचृद्बृहती । ६, ९, ११, १२, २०, २४, २६, २७ आर्षी बृहती । १३ शङ्कुमती बृहती । १६, २३, ३०, ३२ आर्ची भुरिग्बृहती । २८ आसुरी स्वराड् निचृद्बृहती । २९ बृहती । ३३ त्रिष्टुप् । ३४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३२ मध्यमः । ३३, ३४ धैवतः ॥

॥ १ ॥ मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत । इन्द्रमित्स्तोता वृषणं
सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥ १ ॥ अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुरं गां न चर्ष-
णीसहम् । विद्वेषणं संवननोभयङ्करं मंहिष्ठमुभयाविनम् ॥ २ ॥ यच्चिद्धि त्वा
जना इमे नाना हवन्त ऊतये । अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु तेऽहा विश्वा च वर्धनम्
॥ ३ ॥ वि तर्तूर्यन्ते मघवन्विपश्चितोऽर्यो विपो जनानाम् । उप क्रमस्व पुरुरूपमा
भर वाजं नेदिष्ठमूतये ॥ ४ ॥ महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम् । न स-
हस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ ॥ ५ ॥ १० ॥ वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत
भ्रातुरभुञ्जतः । माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ॥ ६ ॥ क्वे-
यथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः । अलर्षि युध्म खजकृत्पुरन्दर प्र गायत्रा अ-
गासिषुः ॥ ७ ॥ प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरन्दरः । याभिः काण्वस्योप बर्हि-
रासदं यासद्वज्री भिनत्पुरः ॥ ८ ॥ ये ते सन्ति दशग्विनः शतिनो ये सहस्रिणः ।
अश्वासो ये ते वृषणो रघुद्रुवस्तेभिर्नस्तूयमा गहि ॥ ९ ॥ आ त्वद्य सबर्दुघां
हुवे गायत्रवेपसम् । इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिषमुरुधारामरङ्कृतम् ॥ १० ॥ ११ ॥

यत्तुदत्सूर एतशं वङ्कू वातस्य पर्णिना । वहत्कुत्समार्जुनेयं शतक्रतुस्त्सरद्गन्धर्व-
मस्तृतम् ॥ ११ ॥ य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः । सन्धाता सन्धिं
मघवा पुरूवसुरिष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥ १२ ॥ मा भूम निष्ट्या इवेन्द्र त्वदरणा
इव । वनानि न प्रजहितान्यद्रिवो दुरोषासो अमन्महि ॥ १३ ॥ अमन्महीदनाश-
वोऽनुग्रासश्च वृत्रहन् । सकृत्सु ते महता शूर राधसानु स्तोमं मुदीमहि ॥ १४ ॥
यदि स्तोमं मम श्रवदस्माकमिन्द्रमिन्दवः । तिरः पवित्रं ससृवांस आशवो मन्दन्तु तु-
ग्र्यावृधः ॥ १५ ॥ १२ ॥ आ त्वद्य सधस्तुतिं वावातुः सख्युरा गहि । उप-
स्तुतिर्मघोनां प्र त्वावत्वधा ते वश्मि सुष्टुतिम् ॥ १६ ॥ सोता हि सोममद्रिभिरेमे-
नमप्सु धावत । गव्या वस्त्रेव वासयन्त इन्नरो निर्धुक्षन्वक्षणाभ्यः ॥ १७ ॥ अध
ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि । अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता
सुक्रतो पृण ॥ १८ ॥ इन्द्राय सु मदिन्तमं सोमं सोता वरेण्यम् । शक्र एणं पी-
पयद्विश्वया धिया हिन्वानं न वाजयुम् ॥ १९ ॥ मा त्वा सोमस्य गल्दया सदा
याचन्नहं गिरा । भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ॥ २० ॥ १३ ॥
मदेनेषितं मदमुग्रमुग्रेण शवसा । विश्वेषां तरुतारं मदच्युतं मदे हि ष्मा ददाति
नः ॥ २१ ॥ शेवारे वार्या पुरु देवो मर्ताय दाशुषे । स सुन्वते च स्तुवते च रा-
सते विश्वगूर्तो अरिष्टुतः ॥ २२ ॥ एन्द्र याहि मत्स्व चित्रेण देव राधसा । सरो
न प्रास्युदरं सपीतिभिरा सोमेभिरुरु स्फिरम् ॥ २३ ॥ आ त्वा सहस्रमा शतं
युक्ता रथे हिरण्यये । ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥ २४ ॥
आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या । शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो वि-
वक्षणस्य पीतये ॥ २५ ॥ १४ ॥ पिबा त्वस्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपा इव । प-
रिष्कृतस्य रसिन इयमासुतिश्चारुर्मदाय पत्यते ॥ २६ ॥ य एको अस्ति दंसना
महाँ उग्रो अभि व्रतैः । गमत्स शिप्री न स योषदा गमद्धवं न परि वर्जति ॥ २७ ॥
त्वं पुरं चरिष्ण्वं वधैः शुष्णस्य सं पिणक् । त्वं भा अनु चरो अध द्विता यदि-
न्द्र हव्यो भुवः ॥ २८ ॥ मम त्वा सूर उदिते मम मध्यन्दिने दिवः । मम प्रपि-
त्वे अपिशर्वरे वसवा स्तोमासो अवृत्सत ॥ २९ ॥ स्तुहि स्तुहीदेते घा ते मंहिष्ठा-
सो मघोनाम् । निन्दिताश्वः प्रपथी परमज्या मघस्य मेध्यातिथे ॥ ३० ॥ १५ ॥
आ यदश्वान्वनन्वतः श्रद्धयाहं रथे रुहम् । उत वामस्य वसुनश्चिकेतति यो अस्ति
याद्वः पशुः ॥ ३१ ॥ य ऋज्रा मह्यं मामहे सह त्वचा हिरण्यया । एष विश्वा-
न्यभ्यस्तु सौभगासङ्गस्य स्वनद्रथः ॥ ३२ ॥ अध प्लायोगिरति दासदन्यानासङ्गो

अग्ने द॒शभि॑ः स॒हस्रै॑ः । अधो॒क्षणो॒ दश॒ मह्यं॒ रुश॑न्तो॒ न॒ळा इ॑व॒ सर॑सो॒ निरं॑तिष्ठन् ॥ ३३ ॥ अन्व॑स्य स्थू॒रं द॑दृशे पु॒रस्ता॑दन॒स्थ ऊ॒रुर॑व॒रम्ब॑माणः । शश्व॑ती॒ नार्य॑भि॒चक्ष्या॑ह॒ सुभ॑द्रमर्य॒ भोज॑नं बिभर्षि ॥ ३४ ॥ १६ ॥

॥ २ ॥ १—४० मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चाङ्गिरसः । ४१, ४२ मेधातिथिर्ऋषिः ॥ देवताः—१—४० इन्द्रः । ४१, ४२ विभिन्दोर्दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१—३, ५, ६, ६, ११, १२, १४, १६—१८, २२, २७, २६, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ३६ आर्षी गायत्री । ४, १३, १५, १६—२१, २३, २४, २५, २६, ३०, ३२, ३६, ४२ आर्षी निचृद्गायत्री । ७, ८, १०, ३४, ४० आर्षी विराड् गायत्री । ४१ पाद निचृद् गायत्री । २८ आर्ची स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः-१-२७, २६-४२ षड्जः । २८ गान्धारः ॥

॥ २ ॥ इ॒दं व॑सो सु॒तमन्ध॒ः पिबा॒ सुपू॑र्णमु॒दर॑म् । अना॑भयिन्ररि॒मा ते॑ ॥१॥ नृभि॑र्धू॒तः सु॒तो अश्नै॒रव्यो॒ वारै॑ः परि॑पूतः । अश्वो॒ न नि॒क्तो न॒दीषु॑ ॥ २ ॥ तं ते॒ यव॒ं यथा॒ गोभि॑ः स्वा॒दुम॑कर्म श्री॒णन्त॑ः । इन्द्र॑ त्वा॒ स्मिन्त्स॑ध॒मादे॑ ॥ ३ ॥ इन्द्र॒ इत्सो॑म॒पा एक॒ इन्द्र॑ः सु॒त॒पा वि॒श्वायु॑ः । अ॒न्तर्दे॑वान्मर्त्यी॑श्च ॥ ४ ॥ न यं॑ शु॒क्रो न दुरा॑शी॒र्न तृ॒प्रा उ॑रु॒व्यच॑सम् । अ॒प॒स्पृ॒ण्व॒ते सु॒हार्द॑म् ॥ ५ ॥ १७ ॥ गोभि॒र्यदी॑म॒न्ये अ॒स्मन्मृ॒गं न व्रा मृ॒गय॑न्ते । अ॒भि॒त्सर॑न्ति धे॒नुभि॑ः ॥ ६ ॥ त्रय॒ इन्द्र॑स्य॒ सोमा॑ः सु॒तास॑ः सन्तु दे॒वस्य॑ । स्वे क्षये॑ सु॒त॒पाव्न॑ः ॥ ७॥ त्रय॒ः कोशा॑सः श्चोतन्ति ति॒स्रश्च॒म्व१॒ः सुपू॑र्णाः । स॒मा॒ने अधि॒ भार्म॑न् ॥ ८ ॥ शुचि॑रसि पुरुनि॒ःष्ठाः क्षी॒रैर्म॑ध्य॒त आशी॑र्तः । द॒ध्ना मन्दि॑ष्ठ॒ः शूर॑स्य ॥ ६ ॥ इ॒मे त॑ इन्द्र॒ सोमा॑स्ती॒व्रा अ॒स्मे सु॒तास॑ः । शु॒क्रा आ॒शिर॑ं याचन्ते ॥ १० ॥ १८ ॥ ताँ आ॒शिर॑ं पु॒रो॒ळाश॒मिन्द्रे॒मं सोमं॑ श्रीणीहि । रे॒वन्त॒ं हि त्वा॑ शृणोमि॑ ॥ ११ ॥ हृत्सु पी॒तासो॑ युध्यन्ते दु॒र्मदा॑सो॒ न सुरा॑याम् । ऊध॒र्न न॒ग्ना जर॑न्ते ॥ १२ ॥ रे॒वाँ इद्रे॒वत॑ः स्तो॒ता स्या॒त्त्वाव॑तो म॒घोन॑ः । प्रेदु॑ हरिवः श्रु॒तस्य॑ ॥ १३ ॥ उ॒क्थं च॒न श॒स्यमा॑न॒मगो॑र॒रिरा चि॑केत । न गा॑य॒त्रं गी॒यमा॑नं ॥ १४ ॥ मा न॑ इन्द्र पीय॒त्नवे॒ मा शर्ध॑ते॒ परा॑ दाः । शिक्षा॑ शचीव॒ः शची॑भिः ॥ १५ ॥ १६ ॥ व॒यमु॑ त्वा त॒दिद॑र्था॒ इन्द्र॑ त्वा॒यन्त॑ः स॒खाय॑ः । कण्वा॑ उ॒क्थेभि॑र्जरन्ते ॥ १६ ॥ न घे॑म॒न्यदा प॑पन॒ वज्रि॑न्न॒पसो॒ नवि॑ष्टौ । तवेदु॒ स्तोमं॑ चिकेत ॥ १७ ॥ इ॒च्छन्ति॑ दे॒वाः सु॒न्वन्त॒ं न स्वप्ना॑य स्पृहयन्ति । यन्ति॑ प्र॒माद॒मत॑न्द्राः ॥ १८ ॥ ओ षु प्र यां॑हि॒ वाजे॑भि॒र्मा हृ॑णीथा अ॒भ्य१॒स्मान् ।

महाँ इव युवजानिः ॥१९॥ मो ष्वद्य दुर्हणावान्त्सायं करदारे अस्मत् । अश्रीर इव जामाता ॥ २० ॥ २० ॥ विद्मा ह्यस्य वीरस्य भूरिदावरीं सुमतिम् । त्रिषु जातस्य मनांसि ॥ २१ ॥ आ तू षिञ्च कण्वमन्तं न घा विद्म शवसानात् । यशस्तरं शतमूतेः ॥ २२ ॥ ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय सोमं वीराय शक्राय । भरा पिबन्नर्याय ॥ २३ ॥ यो वेदिष्ठो अव्यथिष्वश्वावन्तं जरितृभ्यः । वाजं स्तोतृभ्यो गोमन्तम् ॥ २४ ॥ पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय । सोमं वीराय शूराय ॥ २५ ॥२१॥ पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत् । नि यमते शतमूतिः ॥ २६ ॥ एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम् । गीर्भिः श्रुतं गिर्वणसम् ॥ २७ ॥ स्वादवः सोमा आ याहि श्रीताः सोमा आ याहि । शिप्रिन्नृषीवः शचीवो नायमच्छा सधमादम् ॥ २८ ॥ स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति महे राधसे नृम्णाय । इन्द्र कारिणं वृधन्तः ॥ २९ ॥ गिरश्च यास्ते गिर्वाह उक्था च तुभ्यं तानि । सत्रा दधिरे शवांसि ॥ ३० ॥ २२ ॥ एवेदेष तुविकूर्मिर्वाजाँ एको वज्रहस्तः । सनादमृक्तो दयते ॥ ३१ ॥ हन्ता वृत्रं दक्षिणेनेन्द्रः पुरू पुरुहूतः । महान्महीभिः शचीभिः ॥३२॥ यस्मिन्विश्वाश्चर्षणय उत च्यौत्ना ज्रयांसि च । अनु घेन्मन्दी मघोनः ॥ ३३ ॥ एष एतानि चकारेन्द्रो विश्वा योऽति शृण्वे । वाजदावा मघोनाम् ॥ ३४ ॥ प्रभर्ता रथं दाशुषः पुरएता ज्योतिष्मता । इनो वसु स हि वोळ्हा ॥ ३५ ॥ २३ ॥ सनिता विप्रो अर्वद्भिर्हन्ता वृत्रं नृभिः शूरः । सत्योऽविता विधन्तम् ॥ ३६ ॥ यजध्वैनं प्रियमेधा इन्द्रं सत्राचा मनसा । यो भूत्सोमैः सत्यमद्वा ॥ ३७ ॥ गाथश्रवसं सत्पतिं श्रवस्कामं पुरुत्मानम् । कण्वासो गात वाजिनम् ॥ ३८ ॥ य ऋते चिद्गास्पदेभ्यो दात्सखा नृभ्यः शचीवान् । ये अस्मिन्काममश्रियन् ॥ ३९ ॥ इत्था धीवन्तमद्रिवः काण्वं मेध्यातिथिम् । मेषो भूतोऽभि यन्नयः ॥ ४० ॥ शिक्षा विभिन्दो अस्मै चत्वार्ययुता ददत् । अष्टा परः सहस्रा ॥ ४१ ॥ उत सु त्ये पयोवृधा माकी रणस्य नप्त्या । जनित्वनाय मामहे ॥ ४२ ॥ २४ ॥

॥ ३ ॥ १-२४ मेध्यातिथि काण्व ऋषिः ॥ देवताः—१—२० इन्द्रः । २१-२४ पाकस्थाम्नः कौरयाणस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१ ककुम्मती बृहती । ३, ५, ७, ९, १९ निचृद् बृहती । ८ स्वराड् बृहती । १५, २४ बृहती । १७ पथ्या बृहती । २, १०, १४ सतः पङ्क्तिः । ४, १२, १६, १८ निचृत् पङ्क्तिः । ६ भुरिक् पङ्क्तिः । २० विराट् पङ्क्तिः । १३ अनुष्टुप् । ११, २१ भुरिगनुष्टुप् ।

२२ विराड् गायत्री । २३ निचृद् गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७—६, १५, १७, १६, २४ मध्यमः । २, ४, ६, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः । ११, १३, २१ गान्धारः । २२, २३ षड्जः ॥

॥ ३ ॥ पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः । आपिर्नो बोधि सधमाद्यो वृधेऽस्माँ अवन्तु ते धियः ॥ १ ॥ भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा नः स्तरभिमातये । अस्माञ्चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय ॥ २ ॥ इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम । पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥ ३ ॥ अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे । सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥ ४ ॥ इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥ ५ ॥ २५ ॥ इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत् । इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे सुवानास इन्दवः ॥ ६ ॥ अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः । समीचीनास ऋभवः समस्वरन्रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ ७ ॥ अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि । अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥ ८ ॥ तत्त्वा यामि सुवीर्यं तद्ब्रह्म पूर्वचित्तये । येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ ॥ ६ ॥ येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः । सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे ॥ १० ॥ २६ ॥ शग्धी न इन्द्र यत्त्वा रयिं यामि सुवीर्यम् । शग्धि वाजाय प्रथमं सिषासते शग्धि स्तोमाय पूर्व्य ॥ ११ ॥ शग्धी नो अस्य यद्ध पौरमाविथ धिय इन्द्र सिषासतः । शग्धि यथा रुशमं श्यावकं कृपमिन्द्र प्रावः स्वर्णरम् ॥ १२ ॥ कन्नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः । नही न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गृणन्त आनशुः ॥ १३ ॥ कदु स्तुवन्त ऋतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते । कदा हवं मघवन्निन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आ गमः ॥ १४ ॥ उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते । सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव ॥ १५ ॥ २७ ॥ कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद्धीतमानशुः । इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥ १६ ॥ युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः । अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥ १७ ॥ इमे हि ते कारवो वावशुर्धिया विप्रासो मेधसातये । स त्वं नो मघवन्निन्द्र गिर्वणो वेनो न शृणुधी हवम् ॥ १८ ॥ निरिन्द्र बृहतीभ्यो वृत्रं धनुभ्यो अस्फुरः । निरर्बुदस्य मृगयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा आजः ॥ १६ ॥ निरग्नयो रुरुचुर्निरु सूर्यो निः

सोमं इन्द्रियो रसः । निरन्तरिक्षादधमो महामहिं कृपे तदिन्द्र पौंस्यम् ॥२०॥ ॥ २८ ॥ यं मे दुरिन्द्रो मरुतः पाकस्थामा कौरयाणः । विश्वेषां त्मना शोभिष्ठमुपेव दिवि धावमानम् ॥ २१ ॥ रोहितं मे पाकस्थामा सुधुरं कक्ष्यप्राम् । अदाद्रायो विबोधनम् ॥ २२ ॥ यस्मा अन्ये दश प्रति धुरं वहन्ति वह्नयः । अस्तं वयो न तुग्र्यम् ॥ २३ ॥ आत्मा पितुस्तनूर्वास ओजोदा अभ्यञ्जनम् । तुरीयमिद्रोहितस्य पाकस्थामानं भोजं दातारमब्रवम् ॥ २४ ॥ २६ ॥

॥ ४ ॥ १—२१ देवातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवताः—१—१४ इन्द्रः । १५-१८ इन्द्रः पूषा वा । १९-२१ कुरुङ्गस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः-१, १३ भुरिगनुष्टुप् । ७ अनुष्टुप् । २, ४, ६, ८, १२, १४, १८ निचृत् पङ्क्तिः । १० सतः पङ्क्तिः । १६, २० विराट् पङ्क्तिः । ३, ११, १५ निचृद् बृहती । ५, ९ बृहती पथ्या । १७, १९ विराड् बृहती । २१ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः-१, ७, १३ गान्धारः । २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः । ३, ५, ९, ११, १५, १७, १९ मध्यमः । २१ ऋषभः ॥

॥ ४ ॥ यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः । सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ १ ॥ यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा । कण्वासस्त्वा ब्रह्मभिः स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि ॥ २ ॥ यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् । आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ॥ ३ ॥ मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते । आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद्दधिषे सहः ॥ ४ ॥ प्र चक्रे सहसा सहो बभञ्ज मन्युमोजसा । विश्वे त इन्द्र पृतनायवो यह्वो नि वृक्षा इव येमिरे ॥ ५ ॥ ३० ॥ सहस्रेणेव सचते यवीयुधा यस्त आनळुपस्तुतिम् । पुत्रं प्रावर्गं कृणुते सुवीर्ये दाश्नोति नमउक्तिभिः ॥ ६ ॥ मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव । महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥ ७ ॥ सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति । मध्वा सम्पृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब ॥ ८ ॥ अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ इदिन्द्र ते सखा । श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रो याति सभामुप ॥ ९ ॥ ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा गहि पिबा सोमं वशाँ अनु । निमेघमानो मघवन्दिवेदिव ओजिष्ठं दधिषे सहः ॥ १० ॥ ३१ ॥ अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति । उप नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा

॥ ११ ॥ स्वयं चित्स मन्यते दाशुरिर्जनो यत्रा सोमस्य तृम्पसि । इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितं तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥ १२ ॥ रथेष्ठायाध्वर्यवः सोममिन्द्राय सोतन । अधि ब्रध्नस्याद्रयो वि चक्षते सुन्वन्तो दाश्वध्वरम् ॥ १३ ॥ उप ब्रध्नं वावाता वृषणा हरी इन्द्रमपसु वक्षतः । अर्वाचं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप ॥ १४ ॥ प्र पूषणं वृणीमहे युज्याय पुरूवसुम् । स शक्र शिक्ष पुरुहूत नो धिया तुजे राये विमोचन ॥ १५ ॥ ३२ ॥ सं नः शिशीहि भुरिजोरिव क्षुरं रास्व रायो विमोचन । त्वे तन्नः सुवेदमुस्रियं वसु यं त्वं हिनोषि मर्त्यम् ॥ १६ ॥ वेमि त्वा पूषन्नृञ्जसे वेमि स्तोतव आघृणे । न तस्य वेम्यरणं हि तद्वसो स्तुषे पज्राय साम्ने ॥ १७ ॥ परा गावो यवसं कच्चिदाघृणे नित्यं रेक्णो अमर्त्य । अस्माकं पूषन्नविता शिवो भव मंहिष्ठो वाजसातये ॥ १८ ॥ स्थूरं राधः शताश्वं कुरुङ्गस्य दिविष्टिषु । राज्ञस्त्वेषस्य सुभगस्य रातिषु तुर्वशेष्वमन्महि ॥ १९ ॥ धीभिः सातानि काण्वस्य वाजिनः प्रियमेधैरभिद्युभिः । षष्टिं सहस्रानु निर्मजामजे निर्यूथानि गवामृषिः ॥ २० ॥ वृक्षाश्चिन्मे अभिपित्वे अरारणुः । गां भजन्त मेहनाश्वं भजन्त मेहना ॥ २१ ॥ ३३ ॥ ७ ॥

॥ ५ ॥ १—३९ ब्रह्मातिथिः काण्व ऋषिः ॥ देवताः—१—३७ अश्विनौ । ३७—३९ चैद्यस्य कशोर्दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ५, ११, १२, १४, १८, २१, २२, २६, ३२, ३३ निचृद् गायत्री । २—४, ६—१०, १५-१७, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३४, ३६ गायत्री । १३, २३, ३१, ३५ विराड् गायत्री । २९ आर्ची स्वराड् गायत्री । ३७, ३८ निचृद् बृहती । ३९ आर्षी निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—३६ षड्जः । ३७, ३८ मध्यमः । ३९ गान्धारः ॥

॥ ५ ॥ दूरादिहेव यत्सत्यरुणप्सुरशिश्वितत् । वि भानुं विश्वधातनत् ॥ १ ॥ नृवद्दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ॥ २ ॥ युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमा अदृक्षत । वाचं दूतो यथोहिषे ॥ ३ ॥ पुरुप्रिया ण ऊतये पुरुमन्द्रा पुरूवसू । स्तुषे कण्वासो अश्विना ॥ ४ ॥ मंहिष्ठा वाजसातमेषयन्ता शुभस्पती । गन्तारा दाशुषो गृहम् ॥ ५ ॥ १ ॥ ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामवितारिणीम् । घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ॥ ६ ॥ आ नः स्तोममुप द्रवत्तूयं श्येनेभिराशुभिः । यातमश्वेभिरश्विना ॥ ७ ॥ येभिस्तिस्रः परावतो दिवो विश्वानि रोचना । त्रीँरक्तून्परिदीयथः ॥ ८ ॥ उत नो गोमतीरिष उत सातीरहर्विदा ।

वि पथः सातये सितम् ॥ ९ ॥ आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम् ।
वोळ्हमश्वावतीरिषः ॥ १० ॥ २ ॥ वावृधाना शुभस्पती दस्रा हिरण्यवर्तनी ।
पिबतं सोम्यं मधु ॥ ११ ॥ अस्मभ्यं वाजिनीवसू मघवद्भ्यश्च सप्रथः । छर्दि-
र्यन्तमदाभ्यम् ॥ १२ ॥ नि षु ब्रह्म जनानां याविष्टं तूयमा गतम् । मो ष्वन्याँ
उपारतम् ॥१३॥ अस्य पिबतमश्विना युवं मदस्य चारुणः । मध्वो रातस्य धि-
ष्ण्या ॥ १४ ॥ अस्मे आ वहतं रयिं शतवन्तं सहस्रिणम् । पुरुक्षुं विश्वधाय-
सम् ॥ १५ ॥ ३ ॥ पुरुत्रा चिद्धि वां नरा विह्वयन्ते मनीषिणः । वाघद्भिरश्विना
गतम् ॥ १६ ॥ जनासो वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो अरङ्कृतः । युवां हवन्ते अ-
श्विना ॥ १७ ॥ अस्माकमद्य वामयं स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । युवाभ्यां भूत्व-
श्विना ॥ १८ ॥ यो ह वां मधुनो दृतिराहितो रथचर्षणे । ततः पिबतमश्विना
॥१९॥ तेन नो वाजिनीवसू पश्वे तोकाय शं गवे । वहतं पीवरीरिषः ॥२०॥४॥
उत नो दिव्या इष उत सिन्धूँरहर्विदा । अप द्वारेव वर्षथः ॥ २१ ॥ कदा
वां तौग्र्यो विधत्समुद्रे जहितो नरा । यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥ २२ ॥ युवं
कण्वाय नासत्यापिरिप्ताय हर्म्ये । शश्वदूतीर्दशस्यथः ॥ २३ ॥ ताभिरा यात-
मूतिभिर्नव्यसीभिः सुशस्तिभिः । यद्वां वृषण्वसू हुवे ॥ २४ ॥ यथा चित्कण्व-
मावतं प्रियमेधमुपस्तुतम् । अत्रिम् शिञ्जारमश्विना ॥ २५ ॥ ५ ॥ यथोत कृत्व्ये
धनेंऽशुं गोष्वगस्त्यम् । यथा वाजेषु सोभरिम् ॥ २६ ॥ एतावद्वां वृषण्वसू अतो
वा भूयो अश्विना । गृणन्तः सुम्नमीमहे ॥ २७ ॥ रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्या-
भीशुमश्विना । आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ॥ २८ ॥ हिरण्ययी वां रभिरीषा
अक्षो हिरण्ययः । उभा चक्रा हिरण्यया ॥ २९ ॥ तेन नो वाजिनीवसू परा-
वतश्चिदा गतम् । उपेमां सुष्टुतिं मम ॥ ३० ॥ ६ ॥ आ वहेथे पराकात्पूर्वीर-
श्नन्तावश्विना । इषो दासीरमर्त्या ॥ ३१ ॥ आ नो द्युम्नैरा श्रवोभिरा राया
यातमश्विना । पुरुश्चन्द्रा नासत्या ॥ ३२ ॥ एह वां प्रुषितप्सवो वयो वहन्तु
पर्णिनः । अच्छा स्वध्वरं जनम् ॥ ३३ ॥ रथं वामनुगायसं य इषा वर्तते सह ।
न चक्रमभि बाधते ॥ ३४ ॥ हिरण्ययेन रथेन द्रवत्पाणिभिरश्वैः । धीजवना
नासत्या ॥ ३५ ॥ ७ ॥ युवं मृगं जागृवांसं स्वदथो वा वृषण्वसू । ता नः पृ-
ङ्क्तमिषा रयिम् ॥ ३६ ॥ ता मे अश्विना सनीनां विद्यातं नवानाम् । यथा चि-
च्चैद्यः कशुः शतमुष्ट्रानां ददत्सहस्रा दश गोनाम् ॥ ३७ ॥ यो मे हिरण्यसन्दृशो
दश राज्ञो अमंहत । अधस्पदा इच्चैद्यस्य कृष्टयश्चर्मम्ना अभितो जनाः ॥ ३८॥

माकिरेना पथा गाद्येनेमे यन्ति चेदयः । अन्यो नेत्सूरिरोहते भूरिदावत्तरो जनः ॥ ३६ ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ ६ ॥ १–४८ वत्सः काण्व ऋषिः ॥ १–४५ इन्द्रः । ४६–४८ तिरिन्दिरस्य पारशव्यस्य दानस्तुतिर्देवताः ॥ छन्दः–१–१३, १५—१७, १९, २५–२७, २६, ३०, ३२, ३५, ३८, ४२ गायत्री। १४, १८, २३, ३३, ३४, ३६, ३७, ३९–४१, ४३, ४५, ४८ निचृद् गायत्री । २० आर्ची स्वराड् गायत्री । २४, ४७ पादनिचृद्गायत्री । २१, २२, २८, ३१, ४४, ४६ आर्षी विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६ ॥ महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥ १ ॥ प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥२॥ कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् । जामि ब्रुवत आयुधम् ॥ ३ ॥ समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायेव सिन्धवः ॥ ४ ॥ ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्तयत् । इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥ ५ ॥ ६ ॥ वि चिद्वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद वृष्णिना ॥ ६ ॥ इमा अभि प्र णोनुमो विपामग्रेषु धीतयः । अग्नेः शोचिर्न दिद्युतः ॥ ७ ॥ गुहा सतीरुप त्मना प्र यच्छोचन्त धीतयः । कण्वा ऋतस्य धारया ॥ ८ ॥ प्र तमिन्द्र नशीमहि रयिं गोमन्तमश्विनम् । प्र ब्रह्म पूर्वचित्तये ॥ ९ ॥ अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ । अहं सूर्य इवाजनि ॥ १० ॥ १० ॥ अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥ ११ ॥ ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः ॥ १२ ॥ यदस्य मन्युरध्वनीद्वि वृत्रं पर्वशो रुजन् । अपः समुद्रमैरयत् ॥ १३ ॥ नि शुष्ण इन्द्र धर्णसिं वज्रं जघन्थ दस्यवि । वृषा ह्युग्र शृण्विषे ॥ १४ ॥ न द्याव इन्द्रमोजसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । न विव्यचन्त भूमयः ॥ १५ ॥ ११ ॥ यस्त इन्द्र महीरपः स्तभूयमान आशयत् । नि तं पद्यासु शिश्नथः ॥ १६ ॥ य इमे रोदसी मही समीची समजग्रभीत् । तमोभिरिन्द्र तं गुहः ॥ १७ ॥ य इन्द्र यतयस्त्वा भृगवो ये च तुष्टुवुः । ममेदुग्र श्रुधी हवम् ॥ १८ ॥ इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम् । एनामृतस्य पिप्युषीः ॥ १९ ॥ या इन्द्र प्रस्वस्त्वासा गर्भमचक्रिरन् । परि धर्मेव सूर्यम् ॥ २० ॥ १२ ॥ त्वामिच्छवसस्पते कण्वा उक्थेन वावृधुः । त्वां सुतास इन्दवः ॥ २१ ॥ तवेदिन्द्र प्रणीतिषूत प्रशस्तिरद्रिवः । यज्ञो वितन्तसाय्यः ॥ २२ ॥ आ न इन्द्र महीमिषं पुरं न

दर्षि गोमतीम् । उत प्रजां सुवीर्यम् ॥ २३ ॥ उत त्यदाश्वश्व्यं यदिन्द्र नाहुषी-
ष्वा । अग्रे विक्षु प्रदीदयत् ॥ २४ ॥ अभि व्रजं न तत्निषे सूर उपाकचक्षसम् ।
यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ २५ ॥ १३ ॥ यदङ्ग तविषीयस इन्द्र प्रराजसि क्षितीः ।
महाँ अपार ओजसा ॥ २६ ॥ तं त्वा हविष्मतीर्विश उप ब्रुवत ऊतये । उरुज्रय
समिन्दुभिः ॥ २७ ॥ उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत
॥ २८ ॥ अतः समुद्रमुद्वतश्चिकित्वाँ अव पश्यति । यतो विपान एजति ॥ २९ ॥
आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम् । परो यदिध्यते दिवा ॥ ३० ॥ १४ ॥
कण्वास इन्द्र ते मतिं विश्वे वर्धन्ति पौंस्यम् । उतो शविष्ठ वृष्ण्यम् ॥ ३१ ॥
इमां म इन्द्र सुष्टुतिं जुषस्व प्र सु मामव । उत प्र वर्धया मतिम् ॥ ३२ ॥ उत
ब्रह्मण्या वयं तुभ्यं प्रवृद्ध वज्रिवः । विप्रा अतक्ष्म जीवसे ॥ ३३ ॥ अभि कण्वा
अनूषतापो न प्रवता यतीः । इन्द्रं वनन्वती मतिः ॥ ३४ ॥ इन्द्रमुक्थानि वावृधुः
समुद्रमिव सिन्धवः । अनुत्तमन्युमजरम् ॥ ३५ ॥ १५ ॥ आ नो याहि परा-
वतो हरिभ्यां हर्यताभ्याम् । इममिन्द्र सुतं पिब ॥ ३६ ॥ त्वामिद्वृत्रहन्तम जना-
सो वृक्तबर्हिषः । हवन्ते वाजसातये ॥ ३७ ॥ अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वर्त्ये-
तशम् । अनु सुवानास इन्दवः ॥ ३८ ॥ मन्दस्वा सु स्वर्णर उतेन्द्र शर्यणावति ।
मत्स्वा विवस्वतो मती ॥ ३९ ॥ वावृधान उप द्यवि वृषा वज्र्यरोरवीत् । वृत्रहा
सोमपातमः ॥ ४० ॥ १६ ॥ ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा । इन्द्र
चोष्कूयसे वसु ॥ ४१ ॥ अस्माकं त्वा सुताँ उप वीतपृष्ठा अभि प्रयः । शतं वहन्तु
हरयः ॥ ४२ ॥ इमां सु पूर्व्यां धियं मधोर्घृतस्य पिप्युषीम् । कण्वा उक्थेन वा-
वृधुः ॥ ४३ ॥ इन्द्रमिद्विमहीनां मेधे वृणीत मर्त्यः । इन्द्रं सनिष्युरूतये ॥ ४४ ॥
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी । सोमपेयाय वक्षतः ॥ ४५ ॥ शतमहं
तिरिन्दिरे सहस्रं पर्शावा ददे । राधांसि याद्वानाम् ॥ ४६ ॥ त्रीणि शतान्यर्वतां
सहस्रा दश गोनाम् । ददुष्पज्राय साम्ने ॥ ४७ ॥ उदानट् ककुहो दिवमुष्ट्राञ्चतुर्युजो
ददत् । श्रवसा याद्वं जनम् ॥ ४८ ॥ १७ ॥

॥ ७ ॥ १—३६ पुनर्वत्सः काण्व ऋषिः ॥ मरुतो देवताः ॥ छन्दः–१,
३–५, ७–१३, १७–१९, २१, २८, ३०–३२, ३४ गायत्री । २, ६, १४,
१६, २०, २२–२७, ३५, ३६ निचृद्गायत्री । १५ पादनिचृद्गायत्री ।
२९, ३३ आर्चीविराड्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७ ॥ प्र यद्वस्त्रिष्टुभमिषं मरुतो विप्रो अक्षरत् । वि पर्वतेषु राजथ ॥ १ ॥

यदङ्ग तविषीयवो यामं शुभ्रा अचिध्वम् । नि पर्वता अहासत ॥ २ ॥ उदीरयन्त
वायुभिर्वाश्रासः पृश्निमातरः । धुक्षन्त पिप्युषीमिषम् ॥ ३ ॥ वपन्ति मरुतो मि-
हं प्र वेपयन्ति पर्वतान् । यद्यामं यान्ति वायुभिः ॥ ४ ॥ नि यद्यामाय वो गि-
रिर्नि सिन्धवो विधर्मणे । महे शुष्माय येमिरे ॥ ५ ॥ १८ ॥ युष्माँ उ नक्तमूतये
युष्मान्दिवा हवामहे । युष्मान्प्रयत्यध्वरे ॥ ६ ॥ उदु त्ये अरुणप्सवश्चित्रा यामे-
भिरीरते । वाश्रा अधि ष्णुना दिवः ॥ ७ ॥ सृजन्ति रश्मिमोजसा पन्थां सूर्याय
यातवे । ते भानुभिर्वि तस्थिरे ॥ ८ ॥ इमां मे मरुतो गिरमिमं स्तोममृभुक्षणः ।
इमं मे वनता हवम् ॥ ९ ॥ त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्रे वज्रिणे मधु । उत्सं
कवन्धमुद्रिणम् ॥ १० ॥ १९ ॥ मरुतो यद्ध वो दिवः सुम्नायन्तो हवामहे । आ
तू न उप गन्तन ॥ ११ ॥ यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ऋभुक्षणो दमे । उत प्र-
चेतसो मदे ॥ १२ ॥ आ नो रयिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम् । इयर्ता मरुतो
दिवः ॥ १३ ॥ अधीव यद्गिरीणां यामं शुभ्रा अचिध्वम् । सुवानैर्मन्दध्व इन्दुभिः
॥ १४ ॥ एतावतश्चिदेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः । अदाभ्यस्य मन्मभिः ॥ १५ ॥
॥ २० ॥ ये द्रप्सा इव रोदसी धमन्त्यनु वृष्टिभिः । उत्सं दुहन्तो अक्षितम्
॥ १६ ॥ उदु स्वानेभिरीरत उद्रथैरुदु वायुभिः । उत्स्तोमैः पृश्निमातरः ॥१७॥
येनाव तुर्वशं यदुं येन कण्वं धनस्पृतम् । राये सु तस्य धीमहि ॥ १८ ॥ इमा
उ वः सुदानवो घृतं न पिप्युषीरिषः । वर्धान्काण्वस्य मन्मभिः ॥ १९ ॥ क्व
नूनं सुदानवो मदथा वृक्तबर्हिषः । ब्रह्मा को वः सपर्यति ॥ २० ॥ २१ ॥ न-
हि ष्म यद्ध वः पुरा स्तोमेभिर्वृक्तबर्हिषः । शर्धाँ ऋतस्य जिन्वथ ॥ २१ ॥ समु
त्ये महतीरपः सं क्षोणी समु सूर्यम् । सं वज्रं पर्वशो दधुः ॥ २२ ॥ वि वृत्रं प-
र्वशो ययुर्वि पर्वताँ अराजिनः । चक्राणा वृष्णि पौंस्यम् ॥ २३ ॥ अनु त्रित-
स्य युध्यतः शुष्ममावन्नुत क्रतुम् । अन्विन्द्रं वृत्रतूर्ये ॥ २४ ॥ विद्युद्धस्ता अभि-
द्यवः शिप्राः शीर्षन्हिरण्ययीः । शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये ॥ २५ ॥ २२ ॥ उशना
यत्परावत उक्ष्णो रन्ध्रमयातन । द्यौर्न चक्रदद्भिया ॥ २६ ॥ आ नो मखस्य
दावनेऽश्वैर्हिरण्यपाणिभिः । देवास उप गन्तन ॥ २७ ॥ यदेषां पृषती रथे प्र-
ष्टिर्वहति रोहितः । यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः ॥ २८ ॥ सुषोमे शर्यणावत्यार्जीके
पस्त्यावति । ययुर्निचक्रया नरः ॥ २९ ॥ कदा गच्छाथ मरुत इत्था विप्रं हव-
मानम् । मार्डीकेभिर्नाधमानम् ॥ ३० ॥ २३ ॥ कद्ध नूनं कधप्रियो यदिन्द्रमजे-
हातन । को वः सखित्व ओहते ॥ ३१ ॥ महो षु णो वज्रहस्तैः कण्वासो

अग्निं मरुद्भिः । स्तुषे हिरण्यवाशीभिः ॥ ३२ ॥ ओ षु वृष्णः प्रयज्यूना नव्यसे सुविताय । ववृत्यां चित्रवाजान् ॥ ३३ ॥ गिरयश्चिन्नि जिहते पर्शानासो मन्यमानाः । पर्वताश्चिन्नि येमिरे ॥ ३४ ॥ आक्ष्णयावानो वहन्त्यन्तरिक्षेण पततः । धातारः स्तुवते वयः ॥ ३५ ॥ अग्निर्हि जानि पूर्व्यश्छन्दो न सूरो अर्चिषा । ते भानुभिर्वि तस्थिरे ॥ ३६ ॥ २४ ॥

॥ ८ ॥ १—२३ सध्वंसः काण्व ऋषिः । अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ३, ५, ६, १२, १४, १५, १८—२०, २२ निचृदनुष्टुप् । ४, ७, ८, १०, ११, १३, १७, २१, २३ आर्षी विराडनुष्टुप् । ६, १६ अनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ८ ॥ आ नो विश्वाभिरूतिभिरश्विना गच्छतं युवम् । दस्रा हिरण्यवर्तनी पिबतं सोम्यं मधु ॥ १ ॥ आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा । भुजी हिरण्यपेशसा कवी गम्भीरचेतसा ॥ २ ॥ आ यातं नहुषस्पर्यान्तरिक्षात्सुवृक्तिभिः । पिबाथो अश्विना मधु कण्वानां सवने सुतम् ॥ ३ ॥ आ नो यातं दिवस्पर्यान्तरिक्षादधप्रिया । पुत्रः कण्वस्य वामिह सुषाव सोम्यं मधु ॥ ४ ॥ आ नो यातमुपश्रुत्यश्विना सोमपीतये । स्वाहा स्तोमस्य वर्धना प्र कवी धीतिभिर्नरा ॥ ५ ॥ ॥ २५ ॥ यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहूरेऽवसे नरा । आ यातमश्विना गतमुपेमां सुष्टुतिं मम ॥ ६ ॥ दिवश्चिद्रोचनादध्या नो गन्तं स्वर्विदा । धीभिर्वत्सप्रचेतसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता ॥ ७ ॥ किमन्ये पर्यासतेऽस्मत्स्तोमेभिरश्विना । पुत्रः कण्वस्य वामृषिर्गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत् ॥ ८ ॥ आ वां विप्र इहावसेऽह्वत्स्तोमेभिरश्विना । अरिप्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं मयोभुवा ॥ ९ ॥ आ यद्वां योषणा रथमतिष्ठद्वाजिनीवसू । विश्वान्यश्विना युवं प्र धीतान्यगच्छतम् ॥ १० ॥ २६ ॥ अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना । वत्सो वां मधुमद्वचोऽशंसीत्काव्यः कविः ॥ ११ ॥ पुरुमन्द्रा पुरूवसू मनोतरा रयीणाम् । स्तोमं मे अश्विनाविममभि वह्नी अनूषाताम् ॥ १२ ॥ आ नो विश्वान्यश्विना धत्तं राधांस्यह्रया । कृतं न ऋत्वियावतो मा नो रीरधतं निदे ॥ १३ ॥ यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अध्यम्बरे । अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ॥ १४ ॥ यो वां नासत्यावृषिर्गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत् । तस्मै सहस्रनिर्णिजमिषं धत्तं घृतश्चुतम् ॥ १५ ॥ २७ ॥ प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुतमश्विना यच्छतं युवम् । यो वां सुम्नाय तुष्टवद्वसूयाद्दानुन-

स्पती ॥ १६ ॥ आ नो गन्तं रिशादसेमं स्तोमं पुरुभुजा । कृतं नः सुश्रियो न-
रेमा दातमभिष्टये ॥ १७ ॥ आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत । राज-
न्तावध्वराणामश्विना यामहूतिषु ॥ १८ ॥ आ नो गन्तं मयोभुवाश्विना शम्भुवा
युवम् । यो वां विपन्यू धीतिभिर्गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत् ॥ १९ ॥ याभिः कण्वं
मेधातिथिं याभिर्वशं दशव्रजम् । याभिर्गोशर्यमावतं ताभिर्नोऽवतं नरा ॥ २० ॥
॥ २८ ॥ याभिर्नरा त्रसदस्युमावतं कृत्व्ये धने । ताभिः ष्वस्माँ अश्विना प्रावतं
वाजसातये ॥ २१ ॥ प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो गिरो वर्धन्त्वश्विना । पुरुत्रा वृत्र-
हन्तमा ता नो भूतं पुरुस्पृहा ॥ २२ ॥ त्रीणि पदान्यश्विनोराविः सान्ति गुहा
परः । कवी ऋतस्य पत्मभिरर्वाग्जीवेभ्यस्परि ॥ २३ ॥ २६॥

॥ ९ ॥ १—२१ शशकर्णः काण्व ऋषिः॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ४, ६ बृहती । १४, १५ निचृद् बृहती । २, २० गायत्री । ३, २१ निचृद् गायत्री । ११ त्रिपाद विराडगायत्री । ५ उष्णिक् ककुप् । ७, ८, १७, १९ अनुष्टुप् । ९ पाद निचृदनुष्टुप् । १३ निचृदनुष्टुप् । १६ आर्ची अनुष्टुप् । १८ विराडनुष्टुप् । १० आर्षी निचृत् पङ्क्तिः । १२ जगती ॥ स्वरः—१, ४, ६, १४, १५ मध्यमः । २, ३, ११, २०, २१ षड्जः । ५ ऋषभः । ७-९, १३, १६—१९ गान्धारः । १० पञ्चमः । १२ निषादः ॥

॥ ९ ॥ आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे । प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु छ-
र्दिर्युयुतं या अरातयः ॥ १ ॥ यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं
तद्धत्तमश्विना ॥ २ ॥ ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः । एवेत्काण्व-
स्य बोधतम् ॥ ३ ॥ अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते । अयं सोमो
मधुमान्वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः ॥ ४ ॥ यदप्सु यद्वनस्पतौ यदोषधीषु पु-
रुदंससा कृतम् । तेन माविष्टमश्विना ॥ ५ ॥ ३० ॥ यन्नासत्या भुरण्यथो यद्वा
देव भिषज्यथः । अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः ॥ ६ ॥
आ नूनमश्विनोर्ऋषिः स्तोमं चिकेत वामया । आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चा-
दथर्वणि ॥ ७ ॥ आ नूनं रघुवर्तनिं रथं तिष्ठाथो अश्विना । आ वां स्तोमा इमे
मम नभो न चुच्यवीरत ॥ ८ ॥ यदद्य वां नासत्योक्थैराचुच्युवीमहि । यद्वा वा-
णीभिरश्विनेवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥ ९ ॥ यद्वां कक्षीवाँ उत यद्व्यश्व ऋषिर्यद्वां

दीर्घतमा जुहाव । पृथी यद्वां वैन्यः सादनेष्वेवेदतो अश्विना चेतयेथाम् ॥ १० ॥
॥ ३१ ॥ यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा । वर्तिस्तोका-
य तनयाय यातम् ॥ ११ ॥ यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना यद्वां वायुना भव-
थः समोकसा । यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा यद्वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः
॥ १२ ॥ यद्द्याश्विनावहं हुवेय वाजसातये । यत्पृत्सु तुर्वणे सहस्तच्छ्रेष्ठमश्वि-
नोरवः ॥ १३ ॥ आ नूनं यातमश्विनेमा हव्यानि वां हिता । इमे सोमासो अ-
धि तुर्वशे यदाविमे कण्वेषु वामथ ॥ १४ ॥ यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति
भेषजम् । तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम् ॥ १५ ॥३२॥ अभु-
त्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः । व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः ॥ १६ ॥
प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि । प्र यज्ञहोतरानुषक्प्र मदाय श्रवो
बृहत् ॥ १७ ॥ यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे । आ हायमश्विनो रथो
वर्तिर्याति नृपाय्यम् ॥ १८ ॥ यदापीतासो अंशवो गावो न दुह्र ऊधभिः । यद्वा
वाणीरनूषत प्र देवयन्तो अश्विना ॥ १९ ॥ प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय
शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा ॥ २० ॥ यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः ।
यद्वा सुम्नेभिरुक्थ्या ॥ २१ ॥ ३३ ॥

॥ १० ॥ १–६ प्रगाथः काण्व ऋषिः । अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ५ आर्चीस्वराड् बृहती । २ त्रिष्टुप् । ३ आर्चीभुरिगनुष्टुप् । ४ आर्चीभुरिक् पङ्क्तिः । ६ आर्षीस्वराड् बृहती ॥ स्वरः—१, ५, ६ मध्यमः । २ धैवतः । ३ गान्धारः । ४ पञ्चमः ॥

॥ १० ॥ यत्स्थो दीर्घप्रसद्मनि यद्वादो रोचने दिवः । यद्वा समुद्रे अध्या-
कृते गृहेऽत आ यातमश्विना ॥ १ ॥ यद्वा यज्ञं मनवे संमिमिक्षथुरेवेत्काण्वस्य
बोधतम् । बृहस्पतिं विश्वान्देवाँ अहं हुव इन्द्राविष्णू अश्विनावाशुहेषसा ॥ २ ॥
त्या न्व१श्विना हुवे सुदंससा गृभे कृता । ययोरस्ति प्र णः सख्यं देवेष्वध्याप्यम्
॥३॥ ययोरधि प्र यज्ञा असूरे सन्ति सूरयः । ता यज्ञस्याध्वरस्य प्रचेतसा स्वधाभिर्या
पिबतः सोम्यं मधु ॥ ४ ॥ यदद्याश्विनावपाग्यत्प्राक्स्थो वाजिनीवसू । यद्द्रु-
ह्यव्यनवि तुर्वशे यदौ हुवे वामथ मा गतम् ॥ ५ ॥ यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा य-
द्वेमे रोदसी अनु । यद्वा स्वधाभिरधितिष्ठथो रथमत आ यातमश्विना ॥ ६ ॥ ३४ ॥

॥ ११ ॥ १—१० वत्सः काण्व ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१

आर्चीभुरिग्गायत्री । २ वर्धमाना गायत्री । ३, ५—७, ६ निचृद्गायत्री । ४ विराड् गायत्री । ८ गायत्री । १० आर्चीभुरिक् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ षड्जः । १० धैवतः ॥

॥ ११ ॥ त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा । त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥ १ ॥ त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य । अग्ने रथीरध्वराणाम् ॥ २ ॥ स त्वमस्मदप द्विषो युयोधि जातवेदः । अदेवीरग्ने अरातीः ॥ ३ ॥ अन्ति चित्सन्तमह यज्ञं मर्तस्य रिपोः । नोप वेषि जातवेदः ॥ ४ ॥ मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे । विप्रासो जातवेदसः ॥ ५ ॥ ३५ ॥ विप्रं विप्रासोऽवसे देवं मर्तास ऊतये । अग्निं गीर्भिर्हवामहे ॥ ६ ॥ आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात् । अग्ने त्वाङ्कामया गिरा ॥ ७ ॥ पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे ॥ ८ ॥ समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे । वाजेषु चित्रराधसम् ॥ ९ ॥ प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि । स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व ॥ १० ॥ ३६ ॥ ८ ॥ ५ ॥

॥ १२ ॥ १—३३ पर्वतः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ८, ६, १५, १६, २०, २१, २५, ३१, ३२ निचृदुष्णिक् । ३—६, १०-१२, १४, १७, १८, २२—२४, २६—३० उष्णिक् । ७, १३, १६ आर्षीविराडुष्णिक् । ३३ आर्ची स्वराडुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १२ ॥ य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति । येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे ॥ १ ॥ येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम् । येना समुद्रमाविथा तमीमहे ॥ २ ॥ येन सिन्धुं महीरपो रथाँ इव प्रचोदयः । पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ॥ ३ ॥ इमं स्तोममभिष्टये घृतं न पूतमद्रिवः । येना नु सद्य ओजसा ववक्षिथ ॥ ४ ॥ इमं जुषस्व गिर्वणः समुद्र इव पिन्वते । इन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्ववक्षिथ ॥ ५ ॥ १ ॥ यो नो देवः परावतः सखित्वनाय मामहे । दिवो न वृष्टिं प्रथयन्ववक्षिथ ॥ ६ ॥ ववक्षुरस्य केतवं उत वज्रो गभस्त्योः । यत्सूर्यो न रोदसी अवर्धयत् ॥ ७ ॥ यदि प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषाँ अघः । आदित्त इन्द्रियं महि प्र वावृधे ॥ ८ ॥ इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिर्न्यर्शसानमोषति । अग्निर्वनेव सासहिः प्र वावृधे ॥ ९ ॥ इयं त ऋत्वियावती धीतिरेति नवीयसी । सपर्यन्ती पुरुप्रिया मिमीत इत् ॥ १० ॥ २ ॥ गर्भो यज्ञस्य देवयुः क्रतुं पुनीत

आनुषक् । स्तोमैरिन्द्रस्य वावृधे मिमीत इत् ॥ ११ ॥ सनिर्मित्रस्य पप्रथ इन्
सोमस्य पीतये । प्राची वाशीव सुन्वते मिमीत इत् ॥ १२ ॥ यं विप्रा उक्थ
हसोऽभिप्रमन्दुरायवः । घृतं न पिप्य आसन्यृतस्य यत् ॥ १३ ॥ उत स्वार
अदितिः स्तोममिन्द्राय जीजनत् । पुरुप्रशस्तमूतय ऋतस्य यत् ॥ १४ ॥ अ
वह्नय ऊतयेऽनूषत प्रशस्तये । न देव विव्रता हरी ऋतस्य यत् ॥ १५ ॥ य
यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये । यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभि
॥ १६ ॥ यद्वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे । अस्माकमित्सुते रणा सम
न्दुभिः ॥ १७ ॥ यद्वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते । उक्थे वा यस्य
रण्यसि समिन्दुभिः ॥ १८ ॥ देवंदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि । अधा यज्ञा
तुर्वणे व्यानशुः ॥ १९ ॥ यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम् । होत्राभिरि
वावृधुर्व्यानशुः ॥ २० ॥ ४ ॥ महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः । विश्
वसूनि दाशुषे व्यानशुः ॥ २१ ॥ इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः । इन
वाणीरनूषता समोजसे ॥ २२ ॥ महान्तं महिना वयं स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् । अर्कै
रभि प्र णोनुमः समोजसे ॥ २३ ॥ न यं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रि
णम् । अमादिदस्य तित्विषे समोजसः ॥ २४ ॥ यदिन्द्र पृतनाज्ये देवास्त
दधिरे पुरः । आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २५ ॥ ५ ॥ यदा वृत्रं नदीवृतं शवस
वज्रिन्नवधीः । आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २६ ॥ यदा ते विष्णुरोजसा त्री
णि पदा विचक्रमे । आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २७ ॥ यदा ते हर्यता ह
वावृधाते दिवेदिवे । आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ २८ ॥ यदा ते मारुती
विशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे । आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ २९ ॥ यदा सू
ममुं दिवि शुक्रं ज्योतिरधारयः । आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ ३० ॥ इम
त इन्द्र सुष्टुतिं विप्र इयर्ति धीतिभिः । जामिं पदेव पिप्रतीं प्राध्वरे ॥ ३१ ॥ य
दस्य धामनि प्रिये समीचीनासो अस्वरन् । नाभा यज्ञस्य दोहना प्राध्वरे ॥ ३२
सुवीर्यं स्वश्व्यं सुगव्यमिन्द्र दद्धि नः । होतेव पूर्वचित्तये प्राध्वरे ॥ ३३ ॥ ६ ॥ २

॥ १३ ॥ १—३३ नारदः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
५, ८, ११, १४, १६, २१, २२, २६, २७, ३१ निचृदुष्णिक् । २—४,६,
९, १०, १२, १३, १५–१८, २०, २३–२५, २८, २९, ३२, ३३ उष्णिक
३० आर्चीविराडुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १३ ॥ इन्द्रः सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीत उक्थ्यम् । विदे वृधस्य दक्षसो म-
हान्हि षः ॥ १ ॥ स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः । सुपारः सुश्रवस्तमः सम-
प्सुजित् ॥ २ ॥ तमह्वे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम् । भवा नः सुम्ने अन्तमः
सखा वृधे ॥ ३ ॥ इयं त इन्द्र गिर्वणो रातिः क्षरति सुन्वतः । मन्दानो अस्य
बर्हिषो वि राजसि ॥ ४ ॥ नूनं तदिन्द्र दद्धि नो यत्त्वा सुन्वन्त ईमहे । रयिं नश्चि-
त्रमा भरा स्वर्विदम् ॥ ५ ॥ ७ ॥ स्तोता यत्ते विचर्षणिरतिप्रशर्धयद्गिरः । वया
इवानु रोहते जुषन्त यत् ॥ ६ ॥ प्रत्नवज्जनया गिरः शृणुधी जरितुर्हवम् । मदेमदे
ववक्षिथा सुकृत्वने ॥ ७ ॥ क्रीळन्त्यस्य सूनृता आपो न प्रवता यतीः । अया धिया य
उच्यते पतिर्दिवः ॥ ८ ॥ उतो पतिर्य उच्यते कृष्टीनामेक इद्वशी । नमोवृधैरव-
स्युभिः सुते रण ॥ ९ ॥ स्तुहि श्रुतं विपश्चितं हरी यस्य प्रसक्षिणा । गन्तारा दाशुषो
गृहं नमस्विनः ॥ १० ॥ ८ ॥ तूतुजानो महेमतेऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः । आ याहि यज्ञमा-
शुभिः शमिद्धि ते ॥ ११ ॥ इन्द्र शविष्ठ सत्पते रयिं गृणत्सु धारय । श्रवः सू-
रिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् ॥ १२ ॥ हवे त्वा सूर उदिते हवे मध्यन्दिने दिवः ।
जुषाण इन्द्र सप्तिभिर्न आ गहि ॥ १३ ॥ आ तू गहि प्र तु द्रव मत्स्वा सुतस्य
गोमतः । तन्तुं तनुष्व पूर्व्यं यथा विदे ॥ १४ ॥ यच्छक्रासि परावति यदर्वावति
वृत्रहन् । यद्वा समुद्रे अन्धसोऽवितेदसि ॥ १५ ॥ ९ ॥ इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर इन्द्रं
सुतास इन्दवः । इन्द्रे हविष्मतीर्विशो अराणिषुः ॥ १६ ॥ तमिद्विप्रा अवस्यवः
प्रवत्वतीभिरूतिभिः । इन्द्रं क्षोणीरवर्धयन्वया इव ॥ १७ ॥ त्रिकद्रुकेषु चेतनं दे-
वासो यज्ञमत्नत । तमिद्वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम् ॥ १८ ॥ स्तोता यत्ते अनुव्रत
उक्थान्यृतुथा दधे । शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः ॥ १९ ॥ तदिद्रुद्रस्य चेतति
यह्वं प्रत्नेषु धामसु । मनो यत्रा वि तद्दधुर्विचेतसः ॥ २० ॥ १० ॥ यदि मे सख्य-
मावर इमस्य पाह्यन्धसः । येन विश्वा अति द्विषो अतारिम ॥ २१ ॥ कदा त
इन्द्र गिर्वणः स्तोता भवाति शन्तमः । कदा नो गव्ये अश्व्ये वसौ दधः ॥ २२ ॥
उत ते सुष्टुता हरी वृषणा वहतो रथम् । अजुर्यस्य मदिन्तमं यमीमहे ॥ २३ ॥
तमीमहे पुरुष्टुतं यह्वं प्रत्नाभिरूतिभिः । नि बर्हिषि प्रिये सदद्ध द्विता ॥ २४ ॥
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत ऋषिष्टुताभिरूतिभिः । धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च नः ॥ २५ ॥
॥ ११ ॥ इन्द्र त्वमवितेदसीत्था स्तुवतो अद्रिवः । ऋतादियर्मि ते धियं मनोयुजम्
॥ २६ ॥ इह त्या सधमाद्या युजानः सोमपीतये । हरी इन्द्र प्रतद्वसू अभि स्वर
॥ २७ ॥ अभि स्वरन्तु ये तव रुद्रासः सक्षत श्रियम् । उतो मरुत्वतीर्विशो अभि

प्रयः ॥ २८ ॥ इमा अस्य प्रतूर्तयः पदं जुषन्त यद्दिवि । नाभा यज्ञस्य सं दधु
र्यथा विदे ॥ २९ ॥ अयं दीर्घाय चक्षसे प्राचि प्रयत्यध्वरे । मिमीते यज्ञमानुष
ग्विचक्ष्य ॥ ३० ॥ १२ ॥ वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी । वृषा त्वं श
तक्रतो वृषा हवः ॥३१॥ वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषा यज्ञो
यमिन्वसि वृषा हवः ॥ ३२ ॥ वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ।
वावन्थ हि प्रतिष्टुतिं वृषा हवः ॥ ३३ ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ १-१५ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ऋषयः ॥ इन्द्रो देवता ॥
छन्दः-१,११ विराड् गायत्री । २,४,५,७, १५ निचृद्गायत्री । ३,६, ८-१०,
१२-१४ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १४ ॥ यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोषखा
स्यात् ॥ १ ॥ शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे । यदहं गोपतिः स्याम्
॥ २ ॥ धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥ ३ ॥ न
ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः । यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ॥ ४ ॥ यज्ञ
इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं दिवि ॥ ५ ॥ १४ ॥ वावृधानस्य
ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥ ६ ॥ व्यन्तरिक्षमतिर-
न्मदे सोमस्य रोचना । इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥ ७ ॥ उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आ-
विष्कृण्वन्गुहा सतीः । अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥ ८ ॥ इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि
दृंहितानि च । स्थिराणि न पराणुदे ॥ ९ ॥ अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते ।
वि ते मदा अराजिषुः ॥ १० ॥ १५ ॥ त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः ।
स्तोतॄणामुत भद्रकृत् ॥ ११ ॥ इन्द्रमित्केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः । उप
यज्ञं सुराधसम् ॥ १२ ॥ अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा
यदजयः स्पृधः ॥ १३ ॥ मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः । अव दस्यूँरधूनुथाः
॥ १४ ॥ असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः । सोमपा उत्तरो भवन् ॥ १५ ॥ १६ ॥

॥ १५ ॥ १-१३ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ऋषी ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-
१-३, ५-७, ११, १३ निचृदुष्णिक् । ४ उष्णिक् । ८, १२ विराडुष्णिक् ।
९, १० पादनिचृदुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १५ ॥ तम्वभि प्र गायत पुरुहूतम् पुरुष्टुतम् । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥ १ ॥
यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो दाधार रोदसी । गिरीँरज्राँ अपः स्वर्वृषत्वना ॥ २ ॥

स राजसि पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि जिघ्नसे । इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे ॥ ३ ॥ तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम् । उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥ ४ ॥ येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ । मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ ५ ॥ १७ ॥ तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा । वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ॥ ६ ॥ तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव शुष्ममुत क्रतुम् । वज्रं शिशाति धिषणा वरेण्यम् ॥ ७ ॥ तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः । त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे ॥ ८ ॥ त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः । त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् ॥ ९ ॥ त्वं वृषा जनानां मंहिष्ठ इन्द्र जज्ञिषे । सत्रा विश्वा स्वपत्यानि दधिषे ॥ १० ॥ १८ ॥ सत्रा त्वं पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि तोशसे । नान्य इन्द्रात्करणं भूय इन्वति ॥ ११ ॥ यदिन्द्र मन्मशस्त्वा नाना हवन्त ऊतये । अस्माकेभिर्नृभिरत्रा स्वर्जय ॥ १२ ॥ अरं क्षयाय नो महे विश्वा रूपाण्याविशन् । इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम् ॥ १३ ॥ १९ ॥

॥ १६ ॥ १–१२ इरिम्बिठिः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ९–१२ गायत्री । २–७ निचृद्गायत्री । ८ विराड्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १६ ॥ प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः । नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥ १ ॥ यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या । अपामवो न समुद्रे ॥ २ ॥ तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम् । महो वाजिनं सनिभ्यः ॥ ३ ॥ यस्यानूना गभीरा मदा उरवस्तरुत्राः । हर्षुमन्तः शूरसातौ ॥ ४ ॥ तमिद्धनेषु हितेष्वधिवाकाय हवन्ते । येषामिन्द्रस्ते जयन्ति ॥५॥ तमिच्च्यौत्नैरार्यन्ति तं कृतेभिश्चर्षणयः । एष इन्द्रो वरिवस्कृत् ॥ ६ ॥ २० ॥ इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिन्द्रः पुरू पुरुहूतः । महान्महीभिः शचीभिः ॥ ७ ॥ स स्तोम्य स हव्यः सत्यः सत्वा तुविकूर्मिः । एकश्चित्सन्नभिभूतिः ॥ ८ ॥ तमर्केभिस्तं सामभिस्तं गायत्रैश्चर्षणयः । इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः ॥ ९ ॥ प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु । सासह्वांसं युधामित्रान् ॥ १० ॥ स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः । इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ॥११॥ स त्वं न इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च । अच्छा च नः सुम्नं नेषि ॥ १२ ॥ २१ ॥

॥ १७ ॥ १–१५ इरिम्बिठिः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१–३,

७, ८ गायत्री । ४-६, ६-१२ निचृद्गायत्री । १३ विराड्गायत्री । १४ आसुरी बृहती । १५ आर्षी भुरिग्बृहती ॥ स्वरः-१-१३ षड्जः । १४, १५ मध्यमः ॥

॥ १७ ॥ आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् । एदं बर्हिः सदो मम ॥ १ ॥ आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ २ ॥ ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ ॥ आ नो याहि सुतावतोऽस्माकं सुष्टुतीरुप । पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः ॥ ४ ॥ आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु गात्रा वि धावतु । गृभाय जिह्वया मधु ॥ ५ ॥ २२ ॥ स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान्तन्वे३ तव । सोमः शमस्तु ते हृदे ॥ ६ ॥ अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः । प्र सोम इन्द्र सर्पतु ॥ ७ ॥ तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥ ८ ॥ इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा । वृत्राणि वृत्रहञ्जहि ॥ ९ ॥ दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि । यजमानाय सुन्वते ॥ १० ॥ २३ ॥ अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि । एहीमस्य द्रवा पिब ॥ ११ ॥ शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः । आखण्डल प्र हूयसे ॥ १२ ॥ यस्ते शृङ्गवृषो नपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः । न्यस्मिन्दध्र आ मनः ॥ १३ ॥ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् । द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥ १४ ॥ पृदाकुसानुर्यजतो गवेषण एकः सन्नभि भूयसः । भूर्णिमश्वं नयत्तुजा पुरो गृभेन्द्रं सोमस्य पीतये ॥ १५ ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ १-२२ इरिम्बिठिः काण्व ऋषिः ॥ देवताः-१-७, १०-२२ आदित्याः । ८ अश्विनौ । ९ अग्निसूर्यानिलाः ॥ छन्दः—१, १३, १५, १६ पादनिचृदुष्णिक् । २ आर्ची स्वराडुष्णिक् । ३, ८, १०, ११, १७, १८, २२ उष्णिक् । ४, ९, २१ विराडुष्णिक् । ५-७ १२, १४, १९, २० निचृदुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १८ ॥ इदं ह नूनमेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः । आदित्यानामपूर्व्यं सवीमनि ॥ १ ॥ अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम् । अदब्धाः सन्ति पायवः सुगेवृधः ॥ २ ॥ तत्सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ॥ ३ ॥ देवेभिर्देव्यदितेऽरिष्टभर्मन्ना गहि । स्मत्सूरिभिः पुरुप्रिये सुशर्मभिः ॥ ४ ॥ ते हि पुत्रासो अदितेर्विदुर्द्वेषांसि योतवे । अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः ॥ ५ ॥ ॥ २५ ॥ अदितिर्नो दिवा पशुमदितिर्नक्तमद्वयाः । अदितिः पात्वंहसः सदावृधा

॥ ६ ॥ उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्या गमत् । सा शन्ताति मयस्करदप स्रिधः ॥ ७ ॥ उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना । युयुयातामितो रपो अप स्रिधः ॥ ८ ॥ शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः । शं वातो वात्वरपा अप स्रिधः ॥ ९ ॥ अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम् । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ १० ॥ २६ ॥ युयोता शरुमस्मदाँ आदित्यास उतामतिम् । ऋधग्द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः ॥ ११ ॥ तत्सु नः शर्म यच्छतादित्या यन्मुमोचति । एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः ॥ १२ ॥ यो नः कश्चिद्रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यः । स्वैः ष एवै रिरिषीष्ट युर्जनः ॥ १३ ॥ समित्तमघमश्नवद्दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् । यो अस्मत्रा दुर्हणावाँ उप द्वयुः ॥ १४ ॥ पाकत्रा स्थन देवा हृत्सु जानीथ मर्त्यम् । उप द्वयुं चाद्वयुं च वसवः ॥ १५ ॥ २७ ॥ आ शर्म पर्वतानामोतापां वृणीमहे । द्यावाक्षामारे अस्मद्रपस्कृतम् ॥ १६ ॥ ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा वसवः । अति विश्वानि दुरिता पिपर्तन ॥ १७ ॥ तुचे तनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे । आदित्यासः सुमहसः कृणोतन ॥ १८ ॥ यज्ञो हीळो वो अन्तर आदित्या अस्ति मृळत । युष्मे इद्वो अपि ष्मसि सजात्ये ॥ १९ ॥ बृहद्वरूथं मरुतां देवं त्रातारमश्विना । मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये ॥ २० ॥ अनेहो मित्रार्यमन्नृवद्वरुण शंस्यम् । त्रिवरूथं मरुतो यन्त नश्छर्दिः ॥ २१ ॥ ये चिद्धि मृत्युबन्धव आदित्या मनवः स्मसि । प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन ॥ २२ ॥ २८ ॥

॥ १९ ॥ १—३७ सोभरिः काण्व ऋषिः ॥ देवताः—१—३३ अग्निः । ३४, ३५ आदित्याः । ३६, ३७ त्रसदस्योर्दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ३, १५, २१ २३, २८, ३२ निचृदुष्णिक् । २७ भुरिगार्ची विराडुष्णिक् । ५, १९, ३० उष्णिक् ककुप् । १३ पुर उष्णिक् । ७, ९, ३४ पाद निचृदुष्णिक् । ११, १७, ३६ विराडुष्णिक् । २५ आर्चीस्वराडुष्णिक् । २, २२, २९, ३७ विराट्पङ्क्तिः । ४, ६, १२, १६, २०, ३१ निचृत् पङ्क्तिः । ८ आर्चीभुरिक् पङ्क्तिः । १० सतः पङ्क्तिः । १४ पङ्क्तिः । १८, ३३ पादनिचृत् पङ्क्तिः । २४, २६ आर्चीस्वराट् पङ्क्तिः । ३५ स्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २७, २८, ३०, ३२, ३४, ३६ ऋषभः । २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६, २९, ३१, ३३, ३७ पञ्चमः । ३५ मध्यमः ॥

॥ १९ ॥ तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे । देवत्रा हव्यमोहिरे

॥ १ ॥ विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषमग्निमीळिष्व यन्तुरम् । अस्य मेधस्य सो
म्यस्य सोभरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम् ॥ २ ॥ यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारम
मर्त्यम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ३ ॥ ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदितिमग्निं श्रेष्ठ
शोचिषम् । स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपामा सुम्नं यक्षते दिवि ॥ ४ ॥
यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये । यो नमसा स्वध्वरः ॥ ५ ॥
॥२९॥ तस्येदर्वन्तो रंहयन्त आशवस्तस्य द्युम्नितमं यशः । न तमंहो देवकृतं कु
तश्चन न मर्त्यकृतं नशत् ॥ ६ ॥ स्वग्नयो वो अग्निभिः स्याम सूनो सहस ऊ
र्जां पते । सुवीरस्त्वमस्मयुः ॥ ७ ॥ प्रशंसमानो अतिथिर्न मित्रियोऽग्नी रथो न
वेद्यः । त्वे क्षेमासो अपि सन्ति साधवस्त्वं राजा रयीणाम् ॥ ८ ॥ सो अद्धा
दाश्वध्वरोऽग्ने मर्तः सुभग स प्रशंस्यः । स धीभिरस्तु सनिता ॥९॥ यस्य त्व
मूर्ध्वो अध्वराय तिष्ठसि क्षयद्वीरः स साधते । सो अर्वद्भिः सनिता स विपन्यु
भिः स शूरैः सनिता कृतम् ॥ १० ॥ ३० ॥ यस्याग्निर्वपुर्गृहे स्तोमं चनो दधीत
विश्ववार्यः । हव्या वा वेविषद्विषः ॥ ११ ॥ विप्रस्य वा स्तुवतः सहसो यहो
मक्षूतमस्य रातिषु । अवोदेवमुपरिमर्त्यं कृधि वसो विविदुषो वचः ॥ १२ ॥ यो
अग्निं हव्यदातिभिर्नमोभिर्वा सुदक्षमाविवासति । गिरा वाजिरशोचिषम् ॥ १३ ॥
समिधा यो निशिती दाशददितिं धामभिरस्य मर्त्यः । विश्वेत्स धीभिः सुभगो
जनाँ अति द्युम्नैरुद्न इव तारिषत् ॥ १४ ॥ तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासहत्सद
ने कं चिदत्रिणम् । मन्युं जनस्य दूढ्यः ॥ १५ ॥ ३१ ॥ येन चष्टे वरुणो मि
त्रो अर्यमा येन नासत्या भगः । वयं तत्ते शवसा गातुवित्तमा इन्द्रत्वोता विधेमहि
॥ १६ ॥ ते घेदग्ने स्वाध्योये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् । विप्रासो देव सु
क्रतुम् ॥ १७ ॥ त इद्वेदिं सुभग त आहुतिं ते सोतुं चक्रिरे दिवि । त इद्वाजेभि
र्जिग्युर्महद्धनं ये त्वे कामं न्येरिरे ॥ १८ ॥ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा राति सु
भग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ १९ ॥ भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना
समत्सु सासहः । अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टिभिः ॥ २० ॥
॥ ३२ ॥ ईळे गिरा मनुर्हितं यं देवा दूतमरतिं न्येरिरे । यजिष्ठं हव्यवाहनम् ॥ २१ ॥
तिग्मजम्भाय तरुणाय राजते प्रयो गायस्यग्नये । यः पिंशते सूनृताभिः सुवीर्यम
ग्निर्घृतेभिराहुतः ॥२२॥ यदी घृतेभिराहुतो वाशीमग्निर्भरत उच्चाव च । असुर
इव निर्णिजम् ॥ २३ ॥ यो हव्यान्यैरयता मनुर्हितो देव आसा सुगन्धिना ।
विवासते वार्याणि स्वध्वरो होता देवो अमर्त्यः ॥ २४ ॥ यदग्ने मर्त्यस्त्वं स्यामहं

मित्रमहो अमर्त्यः। सहसः सूनवाहुत ॥२५॥ ३३ ॥ न त्वा रासीयाभिशस्तये व-
सो न पापत्वाय सन्त्य। न मे स्तोतामतीवा न दुर्हितः स्यादग्ने न पापया ॥२६॥
पितुर्न पुत्रः सुभृतो दुरोण आ देवाँ एतु प्र णो हविः ॥ २७ ॥ तवाहमग्न ऊ-
तिभिर्नेदिष्ठाभिः सचेय जोषमा वसो। सदा देवस्य मर्त्यः ॥ २८ ॥ तव क्रत्वा
सनेयं तव रातिभिरग्ने तव प्रशस्तिभिः। त्वामिदाहुः प्रमतिं वसो ममाग्ने ह-
र्षस्व दातवे ॥ २९ ॥ प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तिरते वाजभर्मभिः।
यस्य त्वं सख्यमावरः ॥ ३० ॥ ३४ ॥ तव द्रप्सो नीलवान्वाश ऋत्विय इ-
न्धानः सिष्णवा ददे। त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि ॥३१॥
तमागन्म सोभरयः सहस्रमुष्कं स्वभिष्टिमवसे। सम्राजं त्रासदस्यवम् ॥ ३२ ॥
यस्य ते अग्ने अन्ये अग्नय उपक्षितो वया इव। विपो न द्युम्ना नि युवे ज-
नानां तव क्षत्राणि वर्धयन् ॥ ३३ ॥ यमादित्यासो अद्रुहः पारं नयथ मर्त्यम्।
मघोनां विश्वेषां सुदानवः ॥ ३४ ॥ यूयं राजानः कं चिच्चर्षणीसहः क्षयन्तं
मानुषाँ अनु। वयं ते वो वरुण मित्रार्यमन्त्स्यामेदृतस्य रथ्यः ॥ ३५ ॥ अदा-
न्मे पौरुकुत्स्यः पञ्चाशतं त्रसदस्युर्वधूनाम्। मंहिष्ठो अर्यः सत्पतिः ॥ ३६ ॥
उत मे प्रयियोर्वयियोः सुवास्त्वा अधि तुग्वनि। तिसृणां सप्ततीनां श्यावः प्र-
णेता भुवद्वसुर्दियानां पतिः ॥ ३७ ॥ ३५ ॥

॥ २० ॥ १–२६ सोभरिः काण्व ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१, ५, ७, १९, २३ उष्णिक् ककुप्। ९, १३, २१, २५ निचृदुष्णिक्। ३, १५, १७ विराडुष्णिक्। ११ पादनिचृदुष्णिक्। २, १०, १६, २२ सतः पङ्क्तिः। ८, २०, २४, २६ निचृत् पङ्क्तिः। ४, १८ विराट् पङ्क्तिः। ६, १२ पादनिचृत् पङ्क्तिः। १४ आर्ची भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५ ऋषभः। २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६ पञ्चमः ॥

॥ २० ॥ आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थाता समन्यवः।
स्थिरा चिन्नमयिष्णवः ॥ १ ॥ वीळुपविभिर्मरुत ऋभुक्षण आ रुद्रासः सुदीति-
भिः। इषा नो अद्या गता पुरुस्पृहो यज्ञमा सोभरीयवः ॥ २ ॥ विद्मा हि रुद्रि-
याणां शुष्ममुग्रं मरुतां शिमीवताम्। विष्णोरेषस्य मीळ्हुषाम् ॥३॥ वि द्वीपानि
पापतन्तिष्ठद्दुच्छुनोभे युजन्त रोदसी। प्र धन्वान्यैरत शुभ्रखादयो यदेजथ स्वभा-
नवः ॥ ४ ॥ अच्युता चिद्वो अज्मन्ना नानदति पर्वतासो वनस्पतिः। भूमिर्यामेषु

रेजते ॥ ५ ॥ ३६ ॥ अमाय वो मरुतो यातवे द्यौर्जिहीत उत्तरा बृहत् । यत्र नरो देदिशते तनूष्वा त्वक्षांसि बाह्वोजसः ॥ ६ ॥ स्वधामनु श्रियं नरो महि त्वेषा अमवन्तो वृषप्सवः । वहन्ते अह्रुतप्सवः ॥ ७॥ गोभिर्वाणो अज्यते सोभरीणां रथे कोशे हिरण्यये । गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे महान्तो नः स्परसे नु ॥ ८ ॥ प्रति वो वृषदञ्जयो वृष्णे शर्धाय मारुताय भरध्वम् । हव्या वृषप्रयाव्णे ॥६॥ वृषणश्वेन मरुतो वृषप्सुना रथेन वृषनाभिना । आ श्येनासो न पक्षिणो वृथा नरो हव्या नो वीतये गत ॥ १० ॥ ३७ ॥ समानमञ्ज्येषां वि भ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु । दविद्युतत्यृष्टयः ॥११॥ त उग्रासो वृषण उग्रबाहवो नकिष्टनूषु येतिरे। स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वोऽनीकेष्वधि श्रियः ॥ १२ ॥ येषामर्णो न सप्रथो नाम त्वेषं शश्वतामेकमिद्भुजे। वयो न पित्र्यं सहः ॥१३॥ तान्वन्दस्व मरुतस्ताँ उप स्तुहि तेषां हि धुनीनाम् । अराणां न चरमस्तदेषां दाना मह्ना तदेषाम् ॥१४॥ सुभगः स व ऊतिष्वास पूर्वासु मरुतो व्युष्टिषु। यो वा नूनमुतासति ॥१५॥ ३८॥ यस्य वा यूयं प्रति वाजिनो नर आ हव्या वीतये गथ। अभि ष द्युम्नैरुत वाजसातिभिः सुम्ना वो धूतयो नशत् ॥१६॥ यथा रुद्रस्य सूनवो दिवो वशन्त्यसुरस्य वेधसः । युवानस्तथेदसत् ॥ १७ ॥ ये चार्हन्ति मरुतः सुदानवः स्मन्मीळ्हुषश्चरन्ति ये । अतश्चिदा न उप वस्यसा हृदा युवान आ ववृध्वम् ॥ १८ ॥ यून ऊ षु नविष्ठया वृष्णः पावकाँ अभि सोभरे गिरा । गाय गा इव चर्कृषत् ॥१६॥ साहा ये सन्ति मुष्टिहेव हव्यो विश्वासु पृत्सु होतृषु । वृष्णश्चन्द्रान्न सुश्रवस्तमान् गिरा वन्दस्व मरुतो अह ॥ २० ॥ ३६ ॥ गावश्चिद्घा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः । रिहते ककुभो मिथः ॥ २१ ॥ मर्तश्चिद्वो नृतवो रुक्मवक्षस उप भ्रातृत्वमायति। अधि नो गात मरुतः सदा हि व आपित्वमस्ति निध्रुवि ॥ २२ ॥ मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः यूयं सखायः सप्तयः ॥ २३ ॥ याभिः सिन्धुमवथ याभिस्तूर्वथ याभिर्दशस्यथा क्रिविम् । मयो नो भूतोतिभिर्मयोभुवः शिवाभिरसचद्विषः ॥ २४ ॥ यत्सिन्धौ यदसिक्न्यां यत्समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः । यत्पर्वतेषु भेषजम् ॥ २५ ॥ विश्वं पश्यन्तो बिभृथा तनूष्वा तेना नो अधि वोचत । क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥ २६ ॥ ४० ॥ १ ॥ ३ ॥

॥ २१ ॥ १-१८ सोभरिः काण्व ऋषिः ॥ १-१६ इन्द्रः । १७, १८ चित्रस्यदानस्तुतिर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, १५ विराडुष्णिक् । १३, १७ निचृ-

दुष्णिक् । ५, ७, ९, ११ उष्णिक् ककुप् । २, १२, १४ पादनिचृत् पङ्क्तिः । १० विराट् पङ्क्तिः । ६, ८, १६, १८ निचृत् पङ्क्तिः । ४ भुरिक् पङ्क्तिः ॥ स्वरः— १, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७ ऋषभः । २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ पञ्चमः ॥

॥ २१ ॥ वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः । वाजे चित्रं हवामहे ॥ १ ॥ उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत् । त्वामिद्ध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २ ॥ आ याहीम इन्दवोऽश्वपते गोपत उर्वरापते । सोमं सोमपते पिब ॥ ३ ॥ वयं हि त्वा बन्धुमन्तमबन्धवो विप्रास इन्द्र येमिम । या ते धामानि वृषभ तेभिरा गहि विश्वेभिः सोमपीतये ॥ ४ ॥ सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे । अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ॥ ५ ॥ ॥ १ ॥ अच्छा च त्वैना नमसा वदामसि किं मुहुश्चिद्वि दीधयः । सन्ति कामासो हरिवो ददिष्ट्वं स्मो वयं सन्ति नो धियः ॥ ६ ॥ नूत्ना इदिन्द्र ते वयमूती अभूम नहि नू ते अद्रिवः । विद्मा पुरा परीणसः ॥ ७ ॥ विद्मा सखित्वमुत शूर भोज्यमा ते ता वज्रिन्नीमहे । उतो समस्मिन्ना शिशीहि नो वसो वाजे सुशिप्र गोमति ॥ ८ ॥ यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु वः स्तुषे । सखाय इन्द्रमूतये ॥ ९ ॥ हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत । आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् ॥ १० ॥ २ ॥ त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि । संस्थे जनस्य गोमतः ॥ ११ ॥ जयेम कारे पुरुहूत कारिणोऽभि तिष्ठेम दूढ्यः । नृभिर्वृत्रं हन्याम शूशुयाम चावेरिन्द्र प्र णो धियः ॥ १२ ॥ अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि । युधेदापित्वमिच्छसे ॥ १३ ॥ नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः । यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे ॥ १४ ॥ मा ते अमाजुरो यथा मूरास इन्द्र सख्ये त्वावतः । नि षदाम सचा सुते ॥ १५ ॥ ३ ॥ मा ते गोदत्र निरराम राधस इन्द्र मा ते गृहामहि । दृळ्हा चिदर्यः प्र मृशाभ्या भर न ते दामान आदभे ॥ १६ ॥ इन्द्रो वा घेदियन्मघं सरस्वती वा सुभगा ददिर्वसु । त्वं वा चित्र दाशुषे ॥ १७ ॥ चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु । पर्जन्य इव ततनद्धि वृष्ट्या सहस्रमयुता ददत् ॥ १८ ॥ ४ ॥

॥ २२ ॥ १—१८ सोभरिः काण्व ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः— १ विराड् बृहती । ३, ५ निचृद्बृहती । ७ बृहती पथ्या । २ विराट् पङ्क्तिः ।

६, १६, १८ निचृत् पङ्क्तिः । ४, १० सतः पङ्क्तिः । १४ भुरिक् पङ्क्तिः । ८ अनुष्टुप् । ६, ११, १७ उष्णिक् । १३ निचृदुष्णिक् । १५ पादनिचृदुष्णिक् । १२ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७ मध्यमः । २, ४, ६, १०, १४, १६, १८ पञ्चमः । ८ गान्धारः । ६, ११, १३, १५, १७ ऋषभः । १२ धैवतः ॥

॥ २२ ॥ ओ त्यमह्व आ रथमद्या दंसिष्ठमूतये । यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्यायै तस्थथुः ॥ १ ॥ पूर्वायुषं सुहवं पुरुस्पृहं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् । सचनावन्तं सुमतिभिः सोभरे विद्वेषसमनेहसम् ॥ २ ॥ इह त्या पुरुभूतमा देवा नमोभिरश्विना । अर्वाचीना स्ववसे करामहे गन्तारा दाशुषो गृहम् ॥ ३ ॥ युवो रथस्य परि चक्रमीयत ईर्मान्यद्वामिषण्यति । अस्माँ अच्छा सुमतिर्वां शुभस्पती आ धेनुरिव धावतु ॥ ४ ॥ रथो यो वां त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना । परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुतस्तेन नासत्या गतम् ॥ ५ ॥ ५ ॥ दशस्यन्ता मनवे पूर्व्यं दिवि यवं वृकेण कर्षथः । ता वामद्य सुमतिभिः शुभस्पती अश्विना प्र स्तुवीमहि ॥ ६ ॥ उप नो वाजिनीवसू यातमृतस्य पथिभिः । येभिस्तृक्षिं वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः ॥ ७ ॥ अयं वामद्रिभिः सुतः सोमो नरा वृषण्वसू । आ यातं सोमपीतये पिबतं दाशुषो गृहे ॥ ८ ॥ आ हि रुहतमश्विना रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वसू । युञ्जाथां पीवरीरिषः ॥ ९ ॥ याभिः पक्थमवथो याभिरध्रिगुं याभिर्बभ्रुं विजोषसम् । ताभिर्नो मक्षू तूयमश्विना गतं भिषज्यतं यदातुरम् ॥ १० ॥ ६ ॥ यदध्रिगावो अध्रिगू इदा चिदह्नो अश्विना हवामहे । वयं गीर्भिर्विपन्यवः ॥ ११ ॥ ताभिरा यातं वृषणोप मे हवं विश्वप्सुं विश्ववार्यम् । इषा मंहिष्ठा पुरुभूतमा नरा याभिः क्रिविं वावृधुस्ताभिरा गतम् ॥ १२ ॥ ताविदा चिदहानां तावश्विना वन्दमान उप ब्रुवे । ता ऊ नमोभिरीमहे ॥ १३ ॥ ताविद्दोषा ता उषसि शुभस्पती ता यामन्रुद्रवर्तनी । मा नो मर्ताय रिपवे वाजिनीवसू परो रुद्रावति ख्यतम् ॥ १४ ॥ आ सुग्म्याय सुग्म्यं प्राता रथेनाश्विना वा सक्षणी । हुवे पितेव सोभरी ॥ १५ ॥ ७ ॥ मनोजवसा वृषणा मदच्युता मक्षुङ्गमाभिरूतिभिः । आरात्ताच्चिद्भूतमस्मे अवसे पूर्वीभिः पुरुभोजसा ॥ १६ ॥ आ नो अश्वावदश्विना वर्तिर्यासिष्टं मधुपातमा नरा । गोमद्दस्रा हिरण्यवत् ॥ १७ ॥ सुप्रावर्गं सुवीर्यं सुष्ठु वार्यमनाधृष्टं रक्षस्विना । अस्मिन्ना वामायाने वाजिनीवसू विश्वा वामानि धीमहि ॥ १८ ॥ ८ ॥

॥ २३ ॥ १—३० विश्वमना वैयश्व ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,

३, १०, १४—१६, १६—२२, २६, २७ निचृदुष्णिक् । २, ४, ५, ७, ११, १७, २५, २६, ३० विराडुष्णिक् । ६, ८, ६, १३, १८ उष्णिक् । १२, २३, २८ पादनिचृदुष्णिक् । २४ आर्चीस्वराडुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ २३ ॥ ईळिष्वा हि प्रतीव्यं१ यजस्व जातवेदसम् । चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम् ॥ १ ॥ दामानं विश्वचर्षणेऽग्निं विश्वमनो गिरा । उत स्तुषे विष्पर्धसो रथानाम् ॥ २ ॥ येषामाबाध ऋग्मियं इषः पृक्षश्च निग्रभे । उपविदा वह्निर्विन्दते वसु ॥ ३ ॥ उदस्य शोचिरस्थादीदियुषो व्य१जरम् । तपुर्जम्भस्य सुद्युतो गणश्रियः ॥ ४ ॥ उदु तिष्ठ स्वध्वर स्तवानो देव्या कृपा अभिख्या भासा बृहता शुशुक्वनिः ॥ ५ ॥ ६ ॥ अग्ने याहि सुशस्तिभिर्हव्या जुह्वान आनुषक् । यथा दूतो बभूथ हव्यवाहनः ॥ ६ ॥ अग्निं वः पूर्व्यं हुवे होतारं चर्षणीनाम् । तमया वाचा गृणे तमु वः स्तुषे ॥ ७ ॥ यज्ञेभिरद्भुतक्रतुं यं कृपा सूदयन्त इत् । मित्रं न जने सुधितमृतावनि ॥ ८ ॥ ऋतावानमृतायवो यज्ञस्य साधनं गिरा । उपो एनं जुजुषुर्नमसस्पदे ॥ ६ ॥ अच्छा नो अङ्गिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः । होता यो अस्ति विक्ष्वा यशस्तमः ॥ १० ॥ १० ॥ अग्ने तव त्ये अजरेन्धानासो बृहद्भाः । अश्वा इव वृषणस्तविषीयवः ॥ ११ ॥ स त्वं न ऊर्जां पते रयिं रास्व सुवीर्यम् । प्राव नस्तोके तनये समत्स्वा ॥ १२ ॥ यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशि । विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति ॥ १३ ॥ श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते । नि मायिनस्तपुषा रक्षसो दह ॥ १४ ॥ न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः । यो अग्नये ददाश हव्यदातिभिः ॥ १५ ॥ ११ ॥ व्यश्वस्त्वा वसुविदमुक्षण्युरप्रीणादृषिः । महो राये तमु त्वा समिधीमहि ॥ १६ ॥ उशना काव्यस्त्वा नि होतारमसादयत् । आयजिं त्वा मनवे जातवेदसम् ॥ १७ ॥ विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमक्रत । श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः ॥ १८ ॥ इमं घा वीरो अमृतं दूतं कृण्वीत मर्त्यः । पावकं कृष्णवर्तनिं विहायसम् ॥ १६ ॥ तं हुवेम यतस्रुचः सुभासं शुक्रशोचिषम् । विशामग्निमजरं प्रत्नमीड्यम् ॥ २० ॥ १२ ॥ यो अस्मै हव्यदातिभिराहुतिं मर्तोऽविधत् । भूरि पोषं स धत्ते वीरवद्यशः ॥ २१ ॥ प्रथमं जातवेदसमग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् । प्रति स्रुगेति नमसा हविष्मती ॥ २२ ॥ आभिर्विधेमाग्नये ज्येष्ठाभिर्व्यश्ववत् । मंहिष्ठाभिर्मतिभिः शुक्रशोचिषे ॥ २३ ॥ नूनमर्च विहायसे स्तोमेभिः स्थूरयूपवत् । ऋषे वैयश्व दम्यायाग्नये ॥ २४ ॥ अतिथिं मानुषाणां सूनुं वन-

स्पतीनाम् । विप्रा अग्निमवसे प्रत्नमीळते ॥ २५ ॥ १३ ॥ महो विश्वाँ अभि-
षतोऽभि हव्यानि मानुषा । अग्ने नि षत्सि नमसाधि बर्हिषि ॥ २६ ॥ वंस्वा
नो वार्या पुरु वंस्व रायः पुरुस्पृहः । सुवीर्यस्य प्रजावतो यशस्वतः ॥ २७ ॥ त्वं
वरो सुषाम्णेऽग्ने जनाय चोदय । सदा वसो रातिं यविष्ठ शश्वते ॥ २८ ॥ त्वं
हि सुप्रतूरसि त्वं नो गोमतीरिषः । महो रायः सातिमग्ने अपा वृधि ॥ २९ ॥
अग्ने त्वं यशा अस्या मित्रावरुणा वह । ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ॥ ३० ॥ १४ ॥

॥ २४ ॥ १–३० विश्वमना वैयश्व ऋषिः ॥ १–२७ इन्द्रः । २८–३० वरोः सौषाम्णस्य दानस्तुतिर्देवता ॥ छन्दः—१, ६, ११, १३, २०, २३, २४ निचृदुष्णिक् । २—५, ७, ८, १०, १६, २५—२७ उष्णिक् । ९, १२, १८, २२, २८, २९ विराडुष्णिक् । १४, १५, १७, २१ पादनिचृदुष्णिक् । १९ आर्ची स्वराडुष्णिक् । ३० निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—२९ ऋषभः । ३० गान्धारः ॥

॥ २४ ॥ सखाय आ शिषामहि ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । स्तुष ऊ षु वो नृत-
माय धृष्णवे ॥ १ ॥ शवसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा । मघैर्मघोनो अति
शूर दाशसि ॥ २ ॥ स नः स्तवान आ भर रयिं चित्रश्रवस्तमम् । निरेके चिद्यो
हरिवो वसुर्ददिः ॥ ३ ॥ आ निरेकमुत प्रियमिन्द्र दर्षि जनानाम् । धृषता धृष्णो
स्तवमान आ भर ॥ ४ ॥ न ते सव्यं न दक्षिणं हस्तं वरन्त आमुरः । न परि-
बाधो हरिवो गविष्टिषु ॥ ५ ॥ १५ ॥ आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिर्ऋणोम्यद्रिवः ।
आ स्मा कामं जरितुरा मनः पृण ॥ ६ ॥ विश्वानि विश्वमनसो धिया नो वृत्र-
हन्तम । उग्र प्रणेतरधि षू वसो गहि ॥ ७ ॥ वयं ते अस्य वृत्रहन्विद्याम शूर
नव्यसः । वसोः स्पार्हस्य पुरुहूत राधसः ॥ ८ ॥ इन्द्र यथा ह्यस्ति तेऽपरीतं नृतो
शवः । अमृक्ता रातिः पुरुहूत दाशुषे ॥ ९ ॥ आ वृषस्व महामह महे नृतम राधसे ।
दृळ्हश्चिद्दृह्य मघवन्मघत्तये ॥ १० ॥ १६ ॥ नू अन्यत्रा चिदद्रिवस्त्वन्नो जग्मुरा-
शसः । मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिः ॥ ११ ॥ नह्यङ्ग नृतो त्वदन्यं विन्दामि
राधसे । राये द्युम्नाय शवसे च गिर्वणः ॥ १२ ॥ एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति
सोम्यं मधु । प्र राधसा चोदयाते महित्वना ॥ १३ ॥ उपो हरीणां पतिं दक्षं
पृञ्चन्तमब्रवम् । नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य ॥ १४ ॥ नह्यङ्ग पुरा चन जज्ञे
वीरतरस्त्वत् । नकी राया नैवथा न भन्दना ॥ १५ ॥ १७ ॥ एदु मध्वो मदि-
न्तरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः । एवा हि वीरः स्तवते सदावृधः ॥ १६ ॥ इन्द्र

थातर्हरीणां नकिष्टे पूर्व्यस्तुतिम् । उदानंश शवसा न भन्दना ॥ १७ ॥ तं वो
ाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः । अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् ॥ १८ ॥ एतो-
न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् । कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥ १९ ॥
गोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः । घृतात्स्वादीयो मधुनश्च वोचत ॥ २० ॥
१८ ॥ यस्यामितानि वीर्या३ न राधः पर्येतवे । ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा
२१ ॥ स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनूर्मिं वाजिनं यमम् । अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे
२२ ॥ एवा नूनमुप स्तुहि वैयश्व दशमं नवम् । सुविद्वांसं चर्कृत्यं चरणीनाम्
२३ ॥ वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् । अहरहः शुन्ध्युः परि-
दामिव ॥ २४ ॥ तदिन्द्राव आ भर येना दंसिष्ठ कृत्वने । द्विता कुत्साय
श्नथो नि चोदय ॥ २५ ॥ १९ ॥ तमु त्वा नूनमीमहे नव्यं दंसिष्ठ सन्यसे ।
त्वं नो विश्वा अभिमातीः सक्षणिः ॥ २६ ॥ य ऋक्षादंहसो मुचद्यो वार्या-
प्त सिन्धुषु । वधर्दासस्य तुविनृम्ण नीनमः ॥ २७ ॥ यथा वरो सुषाम्णे स-
भ्य आवहो रयिम् । व्यश्वेभ्यः सुभगे वाजिनीवति ॥ २८ ॥ आ नार्यस्य द-
णा व्यश्वाँ एतु सोमिनः । स्थूरं च राधः शतवत्सहस्रवत् ॥ २९ ॥ यत्त्वा पृ-
छादीजानः कुहया कुहयाकृते । एषो अपश्रितो वलो गोमतीमव तिष्ठति ॥ ३० ॥ २० ॥

॥ २५ ॥ १—२४ विश्वमना वैयश्व ऋषिः ॥ १—९, १३—२४ मि-
वरुणौ । १०—१२ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, २, ५—९, १९
चृदुष्णिक् । ३, १०, १३—१६, २०—२२ विराडुष्णिक् । ४, ११, १२,
४ उष्णिक् । २३ आर्ची उष्णिक् । १७, १८ पादनिचृदुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ २५ ॥ ता वां विश्वस्य गोपा देवा देवेषु यज्ञिया । ऋतावाना यजसे पू-
क्षसा ॥ १ ॥ मित्रा तना न रथ्या३ वरुणो यश्च सुक्रतुः । सनात्सुजाता त-
ा धृतव्रता ॥ २ ॥ ता माता विश्ववेदसासुर्याय प्रमहसा । मही जजानादि-
र्ऋतावरी ॥ ३ ॥ महान्ता मित्रावरुणा सम्राजा देवावसुरा । ऋतावानावृ-
ा घोषतो बृहत् ॥ ४ ॥ नपाता शवसो महः सूनू दक्षस्य सुक्रतू । सृप्रदानू
ी वास्त्वधि क्षितः ॥ ५ ॥ २१ ॥ सं या दानूनि येमथुर्दिव्याः पार्थिवीरिषः ।
स्वतीरा वां चरन्तु वृष्टयः ॥ ६ ॥ अधि या बृहतो दिवो३ऽभि यूथेव पश्यतः ।
तावाना सम्राजा नमसे हिता ॥ ७ ॥ ऋतावाना नि षेदतुः साम्राज्याय
क्रतु । धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमाशतुः ॥ ८ ॥ अक्ष्णश्चिद्गातुवित्तरानु-
णेन चक्षसा । नि चिन्मिषन्ता निचिरा नि चिक्यतुः ॥ ९ ॥ उत नो

देव्यदितिरुरुष्यतां नासत्या । उरुष्यन्तु मरुतो वृद्धशवसः ॥ १० ॥ २
ते नो नावमुरुष्यत दिवा नक्तं सुदानवः । अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचे
॥ ११ ॥ अघ्नते विष्णवे वयमरिष्यन्तः सुदानवे । श्रुधि स्वयावन्त्सिन्धो पूर्व
त्तये ॥ १२ ॥ तद्वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं गोपयत्यम् । मित्रो यत्पान्ति वरुणो य
र्यमा ॥ १३ ॥ उत नः सिन्धुरपां तन्मरुतस्तदश्विना । इन्द्रो विष्णुर्मीढ्वांसः
जोषसः ॥ १४ ॥ ते हि ष्मा वनुषो नरोऽभिमातिं कयस्य चित् । तिग्मं न क्षो
प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः ॥ १५ ॥ २३ ॥ अयमेक इत्था पुरूरु चष्टे वि विश्पतिः
तस्य व्रतान्यनु वश्चरामसि ॥ १६ ॥ अनु पूर्वाण्योक्या साम्राज्यस्य सश्चिम
मित्रस्य व्रता वरुणस्य दीर्घश्रुत् ॥ १७ ॥ परि यो रश्मिना दिवोऽन्तान्ममे पृ
व्याः । उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ॥ १८ ॥ उदु ष्य शरणे दिवो ज्यो
रयंस्त सूर्यः । अग्निर्न शुक्रः समिधान आहुतः ॥ १९ ॥ वचो दीर्घप्रसद्मनीशे
जस्य गोमतः । ईशे हि पित्वोऽविषस्य दावने ॥ २० ॥ २४ ॥ तत्सूर्यं रोद
उभे दोषा वस्तोरुप ब्रुवे । भोजेष्वस्माँ अभ्युच्चरा सदा ॥ २१ ॥ ऋज्रमुक्षण
यने रजतं हरयाणे । रथं युक्तमसनाम सुषामणि ॥ २२ ॥ ता मे अश्व्यानां
रीणां नितोशना । उतो नु कृत्व्यानां नृवाहसा ॥ २३ ॥ स्मदभीशू कशाव
विप्रा नविष्ठाया मती । महो वाजिनावर्वन्ता सचासनम् ॥ २४ ॥ २५ ॥

॥ २६ ॥ १—२५ विश्वमना वैयश्वोवाङ्गिरस ऋषिः ॥ १—१९
श्विनौ । २०—२५ वायुर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७ उष्णिक् ।
८, २३ विराडुष्णिक् । ५, ९–१५, २२ निचृदुष्णिक् । २४ पादनिचृदुष्णि
१६, १९ विराड् गायत्री । १७, १८, २१ निचृद्गायत्री । २५ गायत्री ।
विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१–१५, २२—२४ ऋषभः । १६—१९, २१,
षड्जः । २० गान्धारः ॥

॥ २६ ॥ युवोरु षू रथं हुवे सधस्तुत्याय सूरिषु । अतूर्तदक्षा वृषणा वृ
ण्वसू ॥ १ ॥ युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या । अवोभिर्याथो वृषणा वृ
ण्वसू ॥ २ ॥ ता वामद्य हवामहे हव्येभिर्वाजिनीवसू । पूर्वीरिष इषयन्ताव
क्षपः ॥ ३ ॥ आ वां वाहिष्ठो अश्विना रथो यातु श्रुतो नरा । उप स्तोमान
रस्य दर्शथः श्रिये ॥ ४ ॥ जुहुराणा चिदश्विना मन्येथां वृषण्वसू । युवं हि रु
पर्षथो अति द्विषः ॥ ५ ॥ २६ ॥ दस्रा हि विश्वमानुषङ्मक्षूभिः परिदीयथ
धियञ्जिन्वा मधुवर्णा शुभस्पती ॥ ६ ॥ उप नो यातमश्विना राया विश्वपु

गृह । मघवाना सुवीरावनपच्युता ॥ ७ ॥ आ मे अस्य प्रतीव्यमिन्द्रनासत्या
तम् । देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ॥ ८ ॥ वयं हि वां हवामह उक्षण्यन्तो व्य-
ववत् । सुमतिभिरुप विप्राविहा गतम् ॥ ९ ॥ अश्विना स्वृषे स्तुहि कुवित्ते
श्रवतो हवम् । नेदीयसः कूळयातः पणीरुत ॥ १० ॥ २७ ॥ वैयश्वस्य श्रुतं
नरोतो मे अस्य वेदथः । सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ॥ ११ ॥ युवादत्तस्य
धिष्ण्या युवानीतस्य सूरिभिः । अहरहर्वृषणा मह्यं शिक्षतम् ॥ १२ ॥ यो वां
यज्ञेभिरावृतोऽधिवस्त्रा वधूरिव । सपर्यन्ता शुभे चक्राते अश्विना ॥ १३ ॥ यो
वांमुरुव्यचस्तमं चिकेतति नृपाय्यम् । वर्तिरश्विना परि यातमस्मयू ॥ १४ ॥ अ-
स्मभ्यं सु वृषण्वसू यातं वर्तिर्नृपाय्यम् । विषुद्रुहेव यज्ञमूहथुर्गिरा ॥ १५ ॥ २८ ॥
वाहिष्ठो वां हवानां स्तोमो दूतो हुवन्नरा । युवाभ्यां भूत्वश्विना ॥ १६ ॥ य-
द्दो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे । श्रुतमिन्मे अमर्त्या ॥ १७ ॥ उत स्या
श्वेतयावरी वाहिष्ठा वां नदीनाम् । सिन्धुर्हिरण्यवर्तनिः ॥ १८ ॥ स्मदेतया सु-
कीर्त्याश्विना श्वेतया धिया । वहेथे शुभ्रयावाना ॥ १९ ॥ युक्ष्वा हि त्वं रथा-
सहा युवस्व पोष्या वसो । आन्नो वायो मधु पिबास्माकं सवना गहि ॥ २० ॥
। २९ ॥ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत । अवांस्या वृणीमहे ॥ २१ ॥ त्वष्टु-
र्जामातरं वयमीशानं राय ईमहे । सुतावन्तो वायुं द्युम्ना जनासः ॥ २२ ॥ वायो
याहि शिवा दिवो वहस्वा सु स्वश्व्यम् । वहस्व महः पृथुपक्षसा रथे ॥ २३ ॥
त्वां हि सुप्सरस्तमं नृषदनेषु हूमहे । ग्रावाणं नाश्वपृष्ठं मंहना ॥ २४ ॥ स त्वं
नो देव मनसा वायो मन्दानो अग्रियः । कृधि वाजाँ अपो धियः ॥ २५ ॥ ३० ॥

॥ २७ ॥ १—२२ मनुर्वैवस्वत ऋषिः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१,
७, ९ निचृद्बृहती । ३ शङ्कुमती बृहती । ५, ११, १३ विराड्बृहती । १५
आर्ची बृहती । १८, १९, २१ बृहती । २, ८, १४, २० पङ्क्तिः । ४, ६, १६,
२२ निचृत् पङ्क्तिः । १० पादनिचृत् पङ्क्तिः । १२ आर्चीस्वराट् पङ्क्तिः । १७ विराट्
पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १८, १९, २१ मध्यमः ।
२, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १७, २०, २२ पञ्चमः ॥

॥ २७ ॥ अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे । ऋचा यामि मरुतो
ब्रह्मणस्पतिं देवाँ अवो वरेण्यम् ॥ १ ॥ आ पशुं गासि पृथिवीं वनस्पतीनुषासा
नक्तमोषधीः । विश्वे च नो वसवो विश्ववेदसो धीनां भूत प्रावितारः ॥ २ ॥

प्र सू न एत्वध्वरोऽग्ना देवेषु पूर्व्यः । आदित्येषु प्र वरुणे धृतव्रते मरुत्सु वि
भानुषु ॥ ३ ॥ विश्वे हि ष्मा मनवे विश्ववेदसो भुवन्वृधे रिशादसः । अरिष्टे
पायुभिर्विश्ववेदसो यन्ता नोऽवृकं छर्दिः ॥ ४ ॥ आ नो अद्य समनसो गन्
विश्वे सजोषसः । ऋचा गिरा मरुतो देव्यदिते सदने पस्त्ये महि ॥ ५ ॥ ३
अभि प्रिया मरुतो या वो अश्व्या हव्या मित्र प्रयाथन । आ बर्हिरिन्द्रो व
णस्तुरा नर आदित्यासः सदन्तु नः ॥ ६ ॥ वयं वो वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आ
नुषक् । सुतसोमासो वरुण हवामहे मनुष्वदिद्धाग्नयः ॥ ७ ॥ आ प्र यात मरुत
विष्णो अश्विना पूषन्माकीनया धिया । इन्द्र आ यातु प्रथमः सनिष्युभिर्वृ
यो वृत्रहा गृणे ॥ ८ ॥ वि नो देवासो अद्रुहोऽच्छिद्रं शर्म यच्छत । न यद्दूराद्वस
नू चिदन्तितो वरूथमादधर्षति ॥ ९ ॥ अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो देवास
अस्त्याप्यम् । प्र णः पूर्वस्मै सुवितायं वोचत मक्षू सुम्नाय नव्यसे ॥ १० ॥ ३
इदा हि व उपस्तुतिमिदा वामस्य भक्तये । उप वो विश्ववेदसो नमस्युराँ अस
क्ष्यन्यामिव ॥ ११ ॥ उदु ष्य वः सविता सुप्रणीतयोऽस्थादूर्ध्वो वरेण्यः ।
द्विपाच्चतुष्पादो अर्थिनोऽविश्रन्पतयिष्णवः ॥ १२ ॥ देवन्देवं वोऽवसे देवन्देव
म भिष्टये । देवन्देवं हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया ॥ १३ ॥ देवास
हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं सरातयः । ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु न
भवन्तु वरिवोविदः ॥ १४ ॥ प्र वः शंसाम्यद्रुहः संस्थ उपस्तुतीनाम् । न
धूर्तिर्वरुण मित्र मर्त्यं यो वो धामभ्योऽविधत् ॥ १५ ॥ प्र स क्षयं तिरते
महीरिषो यो वो वराय दाशति । प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्पर्यरिष्टः सर्व एध
॥ १६ ॥ ३३ ॥ ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः । अर्यमा मित्रो वरुणः सरा
तयो यं त्रायन्ते सजोषसः ॥ १७ ॥ अज्रे चिदस्मै कृणुथा न्यञ्चनं दुर्गे चिदा सुसरणम्
एषा चिदस्मादशनिः परो नु सास्रेधन्ती वि नश्यतु ॥ १८ ॥ यदद्य सूर्य उद्य
प्रियक्षत्रा ऋतं दध । यन्निम्रुचि प्रबुधि विश्ववेदसो यद्वा मध्यन्दिने दिवः ॥ १९
यद्वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते छर्दिर्येम वि दाशुषे । वयं तद्वो वसवो विश्ववेद
उप स्थेयाम मध्य आ ॥ २० ॥ यदद्य सूर उदिते यन्मध्यन्दिन आतुचि । वा
धत्थ मनवे विश्ववेदसो जुह्वानाय प्रचेतसे ॥ २१ ॥ वयं तद्वः सम्राज आ वृ
णीमहे पुत्रो न बहुपाय्यम् । अश्याम तदादित्या जुह्वतो हविर्येन वस्योऽन
शामहै ॥ २२ ॥ ३४ ॥

॥ २८ ॥ १—५ मनुर्वैवस्वत ऋषिः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः–

२ गायत्री । ३, ५ विराड्गायत्री । ४ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—१—३, ५ षड्जः । ४ ऋषभः ॥

॥ २८ ॥ ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन् । विदन्नह द्वितासनन् ॥ १ ॥ वरुणो मित्रो अर्यमा स्मद्रातिषाचो अग्नयः । पत्नीवन्तो वषट्कृताः ॥ २ ॥ ते नो गोपा अपाच्यास्त उदक्त इत्था न्यक् । पुरस्तात्सर्वया विशा ॥ ३ ॥ यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्तदेषां नकिरा मिनत् । अरावा चन मर्त्यः ॥ ४ ॥ सप्तानां सप्त ऋष्टयः सप्त द्युम्नान्येषाम् । सप्तो अधि श्रियो धिरे ॥ ५ ॥ ३५ ॥

॥ २९ ॥ १—१० मनुर्वैवस्वतः कश्यपो वा मारीच ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः–१, २ आर्चीगायत्री । ३, ४, १० आर्चीस्वराड्गायत्री । ५ विराड्गायत्री । ६–९ आर्चीभुरिग्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २९ ॥ बभ्रुरेको विषुणः सूनरो युवाञ्ज्यङ्क्ते हिरण्ययम् ॥ १ ॥ योनिमेक आ ससाद द्योतनोऽन्तर्देवेषु मेधिरः ॥ २ ॥ वाशीमेको बिभर्ति हस्त आयसीमन्तर्देवेषु निध्रुविः ॥ ३ ॥ वज्रमेको बिभर्ति हस्त आहितं तेन वृत्राणि जिघ्नते ॥ ४ ॥ तिग्ममेको बिभर्ति हस्त आयुधं शुचिरुग्रो जलाषभेषजः ॥ ५ ॥ पथ एकः पीपाय तस्करो यथाँ एष वेद निधीनाम् ॥ ६ ॥ त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे यत्र देवासो मदन्ति ॥ ७ ॥ विभिर्द्वा चरत एकया सह प्र प्रवासेव वसतः ॥ ८ ॥ सदो द्वा चक्राते उपमा दिवि सम्राजा सर्पिरासुती ॥ ९ ॥ अर्चन्त एके महि साम मन्वत तेन सूर्यमरोचयन् ॥ १० ॥ ३६ ॥

॥ ३० ॥ १—४ मनुर्वैवस्वत ऋषिः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः–१ निचृद्गायत्री । २ पुर उष्णिक् । ३ विराड्बृहती । ४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः–१ षड्जः । २ ऋषभः । ३ मध्यमः । ४ गान्धारः ॥

॥ ३० ॥ नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः । विश्वे सतोमहान्त इत् ॥ १ ॥ इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च । मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ २ ॥ ते नस्त्राध्वं तेऽवत त उ नो अधि वोचत । मा नः पथः पित्र्यान्मानवादधि दूरं नैष्ट परावतः ॥३॥ ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत । अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४ ॥

॥ ३१ ॥ १—१८ मनुर्वैवस्वत ऋषिः ॥ १—४ इज्यास्तवो यजमानप्रशंसा च । ५–९ दम्पती । १०–१८ दम्पत्योराशिषो देवताः ॥ छन्दः–१,

३, ५, ७, १२ गायत्री । २, ४, ६, ८ निचृद्गायत्री । ११, १३ विराड्गायत्री । १० पादनिचृद्गायत्री । ६ अनुष्टुप् । १४ विराडनुष्टुप् । १५—१७ विराट् पङ्क्तिः । १८ आर्ची भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-८, १०-१३ षड्जः । ६, १४ गान्धारः । १५-१८ पञ्चमः ॥

॥ ३१ ॥ यो यजा॑ति यजा॑त इत्सुनव॑च्च पचा॑ति च । ब्र॒ह्मेदिन्द्र॑स्य चाकनत् ॥ १ ॥ पु॒रो॒ळाशं॒ यो अ॑स्मै सोमं॒ रर॑त आ॒शिर॑म् । पादित्तं श॒क्रो अंह॑सः ॥२॥ तस्य॑ द्यु॒माँ अ॑स॒द्रथो॑ दे॒वजू॑तः॒ स शू॑शुवत् । विश्वा॑ व॒न्वन्न॑मि॒त्रिया॑ ॥ ३ ॥ अस्य॑ प्र॒जाव॑ती गृ॒हेऽस॑श्चन्ती दि॒वेदि॑वे । इळा॑ धे॒नुमती॑ दुहे ॥ ४ ॥ या दम्प॑ती॒ सम॑नसा सुनु॒त आ च॒ धाव॑तः । दे॒वा॑सो॒ नित्य॑या॒शिरा॑ ॥ ५ ॥ ३८॥ प्रति॑ प्राश॒व्याँ इतः स॒म्यञ्चा॑ ब॒र्हिरा॑शाते । न ता वाजे॑षु वायतः ॥ ६ ॥ न दे॒वाना॒मपि॑ ह्नुतः सु॒म॒तिं न जु॑गुक्षतः । श्रवो॑ बृ॒हद्वि॑वासतः ॥ ७ ॥ पु॒त्रि॒णा ता कु॑मा॒रि॒णा विश्व॒मायु॒र्व्य॑श्नुतः । उ॒भा हिर॑ण्यपेशसा ॥ ८ ॥ वी॒तिहो॑त्रा कृ॒तद्व॑सू द॒श॒स्यन्ता॒मृता॑य॒ कम् । समूधो॑ रोम॒शं ह॑तो दे॒वेषु॑ कृणु॒तो दुवः॑ ॥ ९ ॥ आ शर्म॒ पर्व॑तानां वृणी॒महे॑ न॒दीना॑म् । आ विष्णोः॑ सचा॒भुवः॑ ॥ १० ॥ ३९ ॥ ऐतु॑ पू॒षा र॒यिर्भगः॑ स्व॒स्ति स॑र्व॒धात॑मः । उ॒रुरध्वा॑ स्व॒स्तये॑ ॥ ११ ॥ अ॒रम॑तिरन॒र्वणो॒ विश्वो॑ दे॒वस्य॒ मन॑सा । आ॒दि॒त्याना॑मने॒ह इत् ॥ १२॥ यथा॑ नो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा वरु॑णः॒ सन्ति॑ गो॒पाः । सु॒गा ऋ॒तस्य॒ पन्था॑ः ॥ १३ ॥ अ॒ग्निं वः॑ पू॒र्व्यं गि॒रा दे॒वमी॑ळे॒ वसू॑नाम् । स॒प॒र्यन्तः॑ पुरुप्रि॒यं मि॒त्रं न क्षे॑त्र॒साध॑सम् ॥ १४ ॥ म॒क्षू दे॒ववतो रथः॒ शूरो॑ वा पृ॒त्सु कासु॑ चित् । दे॒वानां॒ य इन्मनो॒ यज॑मान॒ इय॑क्षत्य॒भीदय॑ज्वनो भुवत् ॥ १५ ॥ न य॑जमान रिष्यसि॒ न सु॑न्वान॒ न दे॑वयो । दे॒वानां॒ य इन्मनो॒ यज॑मान॒ इय॑क्षत्य॒भीदय॑ज्वनो भुवत् ॥ १६ ॥ नकि॒ष्टं कर्म॑णा नश॒न्न प्र यो॑ष॒न्न यो॑षति । दे॒वानां॒ य इन्मनो॒ यज॑मान॒ इय॑क्षत्य॒भीदय॑ज्वनो भुवत् ॥ १७ ॥ अस॑दत्र सु॒वीर्य॑मु॒त त्यदा॒श्वश्व्य॑म् । दे॒वानां॒ य इन्मनो॒ यज॑मान॒ इय॑क्षत्य॒भीदय॑ज्वनो भुवत् ॥ १८ ॥ ४० ॥ २ ॥

॥ ३२ ॥ १-३० मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ७, १३, १५, २७, २८ निचृद्गायत्री । २, ४, ६, ८-१२, १४, १६, १७, २१, २२, २४-२६ गायत्री । ३, ५, १९, २०, २३, २९ विराड्गायत्री । १८, ३० भुरिग्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३२ ॥ प्र कृ॒तान्यृ॑जी॒षिणः॒ कण्वा॒ इन्द्र॑स्य॒ गाथ॑या । मदे॒ सोम॑स्य वो-

चत ॥ १ ॥ यः सृबिन्दमनर्शनिं पिप्रुं दासमहीशुवम् । वधीदुग्रो रिणन्नपः ॥ २ ॥
न्यर्बुदस्य विष्टपं वर्ष्माणं बृहतस्तिर । कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ॥ ३ ॥ प्रति श्रुताय
वो धृषत्तूर्णाशं न गिरेरधि । हुवे सुशिप्रमूतये ॥ ४ ॥ स गोरश्वस्य वि व्रजं म-
न्दानः सोम्येभ्यः । पुरं न शूर दर्षसि ॥ ५ ॥ १ ॥ यदि मे रारणः सुत उक्थे
वा दधसे चनः । आरादुप स्वधा गहि ॥ ६ ॥ वयं घा ते अपि ष्मसि स्तोतार
इन्द्र गिर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥ ७ ॥ उत नः पितुमा भर संरराणो अ-
विक्षितम् । मघवन्भूरि ते वसु ॥ ८ ॥ उत नो गोमतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः ।
इळाभिः सं रभेमहि ॥ ९ ॥ बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधु कृण्वन्त-
मवसे ॥ १० ॥ २ ॥ यः संस्थे चिच्छतक्रतुरादीं कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः
पुरूवसुः ॥ ११ ॥ स नः शक्रश्चिदा शकद्दानवाँ अन्तराभरः । इन्द्रो विश्वा-
भिरूतिभिः ॥ १२ ॥ यो रायो३ वनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा । तमिन्द्रमभि
गायत ॥ १३ ॥ आयन्तारं महि स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम् । भूरेरीशानमोजसा
॥ १४ ॥ नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम् । नकिर्वक्ता न दादिति ॥ १५ ॥ ३ ॥
न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम् । न सोमो अप्रता पपे ॥ १६ ॥ पन्य
इदुप गायत पन्य उक्थानि शंसत । ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् ॥ १७ ॥ पन्य आ
दर्दिरच्छता सहस्रा वाज्यवृतः । इन्द्रो यो यज्वनो वृधः ॥ १८ ॥ वि षू चर
स्वधा अनु कृष्टीनामन्वाहुवः । इन्द्र पिब सुतानाम् ॥ १९ ॥ पिब स्वधैनवाना-
मुत यस्तुग्र्ये सचा । उतायमिन्द्र यस्तव ॥ २० ॥ ४ ॥ अतीहि मन्युषाविणं
सुषुवांसमुपारणे । इमं रातं सुतं पिब ॥ २१ ॥ इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च
जनाँ अति । धेना इन्द्रावचाकशत् ॥ २२ ॥ सूर्यो रश्मिं यथा सृजा त्वा यच्छ-
न्तु मे गिरः । निम्नमापो न सध्र्यक् ॥ २३ ॥ अध्वर्यवा तु हि षिञ्च सोमं वीराय
शिप्रिणे । भरा सुतस्य पीतये ॥ २४ ॥ य उद्नः फलिगं भिनन्न्य१क्सिन्धूँर-
वासृजत् । यो गोषु पक्वं धारयत् ॥ २५ ॥ ५ ॥ अहन्वृत्रमृचीषम और्णवाभमही-
शुवम् । हिमेनाविध्यदर्बुदम् ॥ २६ ॥ प्र व उग्राय निष्टुरेऽषाळ्हाय प्रसक्षिणे ।
देवत्तं ब्रह्म गायत ॥ २७ ॥ यो विश्वान्यभि व्रता सोमस्य मदे अन्धसः । इन्द्रो
देवेषु चेतति ॥ २८ ॥ इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळ्हामभि प्रयो हितम्
॥ २९ ॥ अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी । सोमपेयाय वक्षतः ॥ ३० ॥ ६ ॥

॥ ३३ ॥ १—१९ मेधातिथिः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
१–३, ५ बृहती । ४, ७, ८, १०, १२ विराड् बृहती । ६, ९, ११, १४, १५

निचृद्बृहती । १३ आर्ची भुरिग्बृहती । १६, १८, गायत्री । १७ निचृद्गायत्री ।
१९ अनुष्टुप् ॥ स्वरः-१-१५ मध्यमः । १६-१८ षड्जः । १९ गान्धारः ॥

॥ ३३ ॥ वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः । पवित्रस्य प्रस्रवणेषु
वृत्रहन्परि स्तोतार आसते ॥ १ ॥ स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥ २ ॥ कण्वेभिर्धृष्णवा
धृषद्वाजं दर्षि सहस्रिणम् । पिशङ्गरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ ३ ॥
पाहि गायान्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे । यः संमिश्लो हर्योर्यः सुते सचा वज्री
रथो हिरण्ययः ॥ ४ ॥ यः सुषव्यः सुदक्षिण इनो यः सुक्रतुर्गृणे । य आकरः
सहस्रा यः शतामघ इन्द्रो यः पूर्भिदारितः ॥ ५ ॥ ७ ॥ यो धृषितो योऽवृतो यो
अस्ति श्मश्रुषु श्रितः । विभूतद्युम्नश्च्यवनः पुरुष्टुतः क्रत्वा गौरिव शाकिनः
॥ ६ ॥ क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे । अयं यः पुरो विभिनत्त्यो-
जसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥ ७ ॥ दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महांश्चरस्योजसा ॥ ८ ॥ य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो
रणाय संस्कृतः । यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् ॥ ९ ॥ स-
त्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽवृतः । वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः
॥ १० ॥ ८ ॥ वृषणस्ते अभीशवो वृषा कशा हिरण्ययी । वृषा रथो मघवन्वृ-
षणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ॥ ११ ॥ वृषा सोता सुनोतु ते वृषन्नृजीपिन्ना भर । वृषा
दधन्वे वृषणं नदीष्वा तुभ्यं स्थातर्हरीणाम् ॥ १२ ॥ एन्द्र याहि पीतये मधु श-
विष्ठ सोम्यम् । नायमच्छा मघवा शृणवद्गिरो ब्रह्मोक्था च सुक्रतुः ॥ १३ ॥ व-
हन्तु त्वा रथेष्ठामा हरयो रथयुजः । तिरश्चिदर्य सवनानि वृत्रहन्नन्येषां या श-
तक्रतो ॥ १४ ॥ अस्माकमद्यान्तमं स्तोमं धिष्व महामह । अस्माकं ते सवना सन्तु
शन्तमा मदाय द्युक्ष सोमपाः ॥ १५ ॥ ९ ॥ नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य
रण्यति । यो अस्मान्वीर आनयत् ॥ १६ ॥ इन्द्रश्चिद्घा तदब्रवीत्स्त्रिया अशास्यं
मनः । उतो अह क्रतुं रघुम् ॥ १७ ॥ सप्ती चिद्घा मदच्युता मिथुना वहतो र-
थम् । एवेद्धूर्वृष्ण उत्तरा ॥ १८ ॥ अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर ।
मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ॥ १९ ॥ १० ॥

॥ ३४ ॥ १-१५ नीपातिथिः काण्व । १६-१८ सहस्रं वसुरोचिषोऽ-
ङ्गिरस ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ३, ८, १०, १२, १३, १५ निचृद्-

दनुष्टुप् । २, ४, ६, ७, ९ अनुष्टुप् । ५, ११, १४ विराडनुष्टुप् । १६, १८ निचृद्गायत्री । १७ विराड् गायत्री ॥ स्वरः—१—१५ गान्धारः । १६—१८ षड्जः ॥

॥ ३४ ॥ एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥१॥ आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण यच्छतु । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥२॥ अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ३ ॥ आ त्वा कण्वा इहावसे हवन्ते वाजसातये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ४ ॥ दधामि ते सुतानां वृष्णे न पूर्वपाय्यम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ५ ॥ ११ ॥ स्मत्पुरन्धिर्न आ गहि विश्वतोधीर्न ऊतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ६ ॥ आ नो याहि महेमते सहस्रोते शतामघ । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ७ ॥ आ त्वा होता मनुर्हितो देवत्रा वक्षदीड्यः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ८ ॥ आ त्वा मदच्युता हरी श्येनं पक्षेव वक्षतः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ९ ॥ आ याह्यर्य आ परि स्वाहा सोमस्य पीतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १० ॥ १२ ॥ आ नो याह्युपश्रुत्युक्थेषु रणया इह । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ११ ॥ सरूपैरा सु नो गहि संभृतैः सम्भृताश्वः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १२ ॥ आ याहि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १३ ॥ आ नो गव्यान्यश्व्या सहस्रा शूर दर्दृहि । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १४ ॥ आ नः सहस्रशो भरायुतानि शतानि च । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १५ ॥ आ यदिन्द्रश्च दद्वहे सहस्रं वसुरोचिषः । ओजिष्ठमश्व्यं पशुम् ॥ १६ ॥ य ऋज्रा वातरंहसोऽरुषासो रघुष्यदः । भ्राजन्ते सूर्या इव ॥ १७ ॥ पारावतस्य रातिषु द्रवच्चक्रेष्वाशुषु । तिष्ठं वनस्य मध्य आ ॥ १८ ॥ १३ ॥

॥ ३५ ॥ १—२४ श्यावाश्व ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१—५, १६, १८, विराट् त्रिष्टुप् । ७—९, १३ निचृत्त्रिष्टुप् । ६, १०—१२, १४, १५, १७ भुरिक् पङ्क्तिः । २०, २१, २४ पङ्क्तिः । १९, २२ निचृत् पङ्क्तिः । २३ पुरस्ताज्ज्योतिर्नामजगती ॥ स्वरः—१—५, ७—९, १३, १६, १८ धैवतः । ६, १०—१२, १४, १५, १७, १९—२२, २४ पञ्चमः । २३ निषादः ॥

॥ ३५ ॥ अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुनादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ १ ॥ विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन वाजिना दिवा पृथिव्याद्रिभिः सचाभुवा । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ २ ॥ विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैरिहाद्भिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ ३ ॥ जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ४ ॥ स्तोमं जुषेथां युवशेव कन्यनां विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ५ ॥ गिरो जुषेथामध्वरं जुषेथां विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ६ ॥ १४ ॥ हारिद्रवेव पतथो वनेदुप सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः । सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ७ ॥ हंसाविव पतथो अध्वगाविव सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः । सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ८ ॥ श्येनाविव पतथो हव्यदातये सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः । सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ९ ॥ पिबतं च तृप्णुतं चा च गच्छतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चोर्जं नो धत्तमश्विना ॥ १० ॥ जयतं च प्र स्तुतं च प्र चावतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चोर्जं नो धत्तमश्विना ॥ ११ ॥ हतं च शत्रून्यततं च मित्रिणः प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चोर्जं नो धत्तमश्विना ॥ १२ ॥ १५ ॥ मित्रावरुणवन्ता उत धर्मवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १३ ॥ अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णुवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १४ ॥ ऋभुमन्ता वृषणा वाजवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् । सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १५ ॥ ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धियो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १६ ॥ क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नॄन्हतं रक्षांसि सेधतममीवाः । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १७ ॥ धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विशो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १८ ॥ १६ ॥ अत्रेरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता । सजोषसा उषसा सूर्येण चाश्विना तिरोअह्न्यम् ॥ १९ ॥ सर्गाँ इव सृजतं

सुष्टुतीरुप॑ श्यावाश्व॑स्य सुन्व॒तो म॑दच्युता । स॒जोष॑सा उ॒षसा॒ सूर्ये॑ण॒ चाश्विना ति॒रोअ॑ह्नयम् ॥ २० ॥ र॒श्मीँरि॑व यच्छतमध्व॒राँ उप॑ श्या॒वाश्व॑स्य सुन्व॒तो म॑दच्युता । स॒जोष॑सा उ॒षसा॒ सूर्ये॑ण॒ चाश्विना ति॒रोअ॑ह्नयम् ॥ २१ ॥ अ॒र्वाग्रथं॒ निय॑च्छतं॒ पिब॑तं सो॒म्यं मधु॑ । आ या॑तमश्वि॒ना ग॑तमव॒स्युर्वा॑म॒हं हु॑वे ध॒त्तं रत्ना॑नि दा॒शुषे॑ ॥ २२ ॥ न॒मो॒वा॒के प्रस्थि॑ते अध्व॒रे न॑रा वि॒वक्ष॑णस्य पी॒तये॑ । आ या॑तमश्वि॒ना ग॑तमव॒स्युर्वा॑म॒हं हु॑वे ध॒त्तं रत्ना॑नि दा॒शुषे॑ ॥ २३ ॥ स्वाहा॑कृतस्य तृम्पतं सु॒तस्य॑ दे॒वावन्ध॑सः । आ या॑तमश्वि॒ना ग॑तमव॒स्युर्वा॑म॒हं हु॑वे ध॒त्तं रत्ना॑नि दा॒शुषे॑ ॥२४॥१७॥

॥ ३६ ॥ १—७ श्यावाश्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५, ६ शक्वरी । २, ४ निचृच्छक्वरी । ३ विराट् शक्वरी । ७ विराड् जगती ॥ स्वरः—१–६ धैवतः । ७ निषादः ॥

॥ ३६ ॥ अ॒वि॒तासि॑ सुन्व॒तो वृ॒क्तब॑र्हिषः पिबा॒ सोमं॒ मदा॑य॒ कं श॑तक्रतो । यं ते॑ भा॒गमधा॑रय॒न्विश्वाः॑ सेहा॒नः पृत॑ना उ॒रु ज्रयः॒ सम॑प्सु॒जिन्म॒रुत्वाँ॑ इन्द्र सत्पते ॥ १ ॥ प्राव॑ स्तो॒तारं॑ मघव॒न्नव॒ त्वां पिबा॒ सोमं॒ मदा॑य॒ कं श॑तक्रतो । यं ते॑ भा॒गमधा॑रय॒न्विश्वाः॑ सेहा॒नः पृत॑ना उ॒रु ज्रयः॒ सम॑प्सु॒जिन्म॒रुत्वाँ॑ इन्द्र सत्पते ॥२॥ ऊ॒र्जा दे॒वाँ अव॒स्योज॑सा॒ त्वां पिबा॒ सोमं॒ मदा॑य॒ कं श॑तक्रतो । यं ते॑ भा॒गमधा॑रय॒न्विश्वाः॑ सेहा॒नः पृत॑ना उ॒रु ज्रयः॒ सम॑प्सु॒जिन्म॒रुत्वाँ॑ इन्द्र सत्पते ॥३॥ ज॒नि॒ता दि॒वो ज॑नि॒ता पृ॑थि॒व्याः पिबा॒ सोमं॒ मदा॑य॒ कं श॑तक्रतो । यं ते॑ भा॒गमधा॑रय॒न्विश्वाः॑ सेहा॒नः पृत॑ना उ॒रु ज्रयः॒ सम॑प्सु॒जिन्म॒रुत्वाँ॑ इन्द्र सत्पते ॥ ४ ॥ ज॒नि॒ताश्वा॑नां ज॒नि॒ता गवा॑मसि॒ पिबा॒ सोमं॒ मदा॑य॒ कं श॑तक्रतो । यं ते॑ भा॒गमधा॑रय॒न्विश्वाः॑ सेहा॒नः पृत॑ना उ॒रु ज्रयः॒ सम॑प्सु॒जिन्म॒रुत्वाँ॑ इन्द्र सत्पते ॥ ५ ॥ अत्री॑णां॒ स्तोम॑मद्रिवो म॒हस्कृ॑धि॒ पिबा॒ सोमं॒ मदा॑य॒ कं श॑तक्रतो । यं ते॑ भा॒गमधा॑रय॒न्विश्वाः॑ सेहा॒नः पृत॑ना उ॒रु ज्रयः॒ सम॑प्सु॒जिन्म॒रुत्वाँ॑ इन्द्र सत्पते ॥ ६ ॥ श्या॒वाश्व॑स्य सुन्व॒तस्तथा॑ शृणु॒ यथाशृ॑णो॒रत्रेः॒ कर्मा॑णि कृण्व॒तः । प्र त्र॒सद॑स्युमावि॒थ त्वमेक॒ इन्नृ॒षाह्य॒ इन्द्र॒ ब्रह्मा॑णि व॒र्धय॑न् ॥ ७ ॥ १८ ॥

॥ ३७ ॥ १—७ श्यावाश्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ विराडति जगती । २—६ निचृज्जगती । ७ विराड् जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥३७॥ प्रेदं ब्रह्म॑ वृत्र॒तूर्ये॑ष्वाविथ॒ प्र सु॑न्व॒तः श॑चीपत॒ इन्द्र॒ विश्वा॑भिरू॒तिभिः॑ ।

माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ १ ॥ सेहान उग्र पृतना अभि द्रुहः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ २ ॥ एकराळस्य भुवनस्य राजसि शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ३ ॥ सस्थावाना यवयसि त्वमेक इच्छचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ४ ॥ क्षेमस्य च प्रयुजश्च त्वमीशिषे शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ५ ॥ क्षत्राय त्वमवसि न त्वमाविथ शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ६ ॥ श्यावाश्वस्य रेभतस्तथा शृणु यथाशृणोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः। प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्य इन्द्र क्षत्राणि वर्धयन् ॥ ७ ॥ १६ ॥

॥ ३८ ॥ १—१० श्यावाश्व ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ६ गायत्री । ३, ५, ७, १० निचृद्गायत्री । ८ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३८ ॥ यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १ ॥ तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ २ ॥ इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥३॥ जुषेथां यज्ञमिष्टये सुतं सोमं सधस्तुती । इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥४॥ इमा जुषेथां सवना येभिर्हव्यान्यूहथुः । इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥ ५ ॥ इमां गायत्रवर्तनिं जुषेथां सुष्टुतिं मम । इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥ ६ ॥ २० ॥ प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिर्जेन्यावसू । इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ७ ॥ श्यावाश्वस्य सुन्वतोऽत्रीणां शृणुतं हवम् । इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ८ ॥ एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ६ ॥ आहं सरस्वतीवतोरिन्द्राग्न्योरवो वृणे । याभ्यां गायत्रमृच्यते ॥ १० ॥ २१ ॥

॥ ३६ ॥ १—१० नाभाकः काण्व ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३, ५ भुरिक् त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ६–८ स्वराट् त्रिष्टुप् । १० त्रिष्टुप् । ६ निचृज्जगती ॥ स्वरः–१–८, १० धैवतः । ६ निषादः ॥

॥ ३९ ॥ अग्निमस्तोष्यृग्मियमग्निमीळा यजध्यै । अग्निर्देवाँ अनक्तु न उभे हि विदथे कविरन्तश्चरति दूत्यं१ नभन्तामन्यके समे ॥ १ ॥ न्यग्ने नव्यसा वचस्तनूषु शंसमेषाम् । न्यराती रराव्णां विश्वा अर्यो अरातीरितो युच्छन्त्वामुरो नभन्तामन्यके समे ॥ २ ॥ अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं घृतं न जुह्व आसनि । स देवेषु प्र चिकिद्धि त्वं ह्यसि पूर्व्यः शिवो दूतो विवस्वतो नभन्तामन्यके समे ॥ ३ ॥ तत्तदग्निर्वयो दधे यथायथा कृपण्यति । ऊर्जाहुतिर्वसूनां शं च योश्च मयो दधे विश्वस्यै देवहूत्यै नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥ स चिकेत सहीयसाग्निश्चित्रेण कर्मणा । स होता शश्वतीनां दक्षिणाभिरभीवृत इनोति च प्रतीव्यं१ नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥ २२ ॥ अग्निर्जाता देवानामग्निर्वेद मर्तानामपीच्यम् । अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते स्वाहुतो नवीयसा नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥ अग्निर्देवेषु संवसुः स विक्षु यज्ञियास्वा । स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे ॥ ७ ॥ यो अग्निः सप्तमानुषः श्रितो विश्वेषु सिन्धुषु । तमागन्म त्रिपस्त्यं मन्धातुर्दस्युहन्तममग्निं यज्ञेषु पूर्व्यं नभन्तामन्यके समे ॥ ८ ॥ अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्या क्षेति विदथा कविः । स त्रीँरेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः परिष्कृतो नभन्तामन्यके समे ॥९॥ त्वं नो अग्न आयुषु त्वं देवेषु पूर्व्य वस्व एक इरज्यसि । त्वामापः परिस्रुतः परि यन्ति स्वसेतवो नभन्तामन्यके समे ॥ १० ॥ २३ ॥

॥ ४० ॥ १–१२ नाभाकः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्राग्नी देवते ॥ छन्दः–१, ११ भुरिक् त्रिष्टुप् । ३, ४ स्वराट् त्रिष्टुप् । १२ निचृत्त्रिष्टुप् । २ स्वराट् शक्वरी । ५, ७, ९ जगती । ६ भुरिग्जगती । ८, १० निचृज्जगती ॥ स्वरः–१–४, ११, १२ धैवतः । ५–१० निषादः ॥

॥ ४० ॥ इन्द्राग्नी युवं सु नः सहन्ता दासथो रयिम् । येन दृळ्हा समत्स्वा वीळु चित्साहिषीमह्यग्निर्वनेव वात इन्नभन्तामन्यके समे ॥ १ ॥ नहि वां वव्रयामहेऽथेन्द्रमिद्यजामहे शविष्ठं नृणां नरम् । स नः कदा चिदर्वता गमदा वाजसातये गमदा मेधसातये नभन्तामन्यके समे ॥ २ ॥ ता हि मध्यं भराणामिन्द्राग्नी अधिक्षितः । ता उ कवित्वना कवी पृच्छ्यमाना सखीयते सं धीतमश्नुतं नरा नभन्तामन्यके समे ॥ ३ ॥ अभ्यर्च नभाकवदिन्द्राग्नी यजसा गिरा । ययोर्विश्वमिदं जगदियं द्यौः पृथिवी मह्यु१पस्थे बिभृतो वसु नभन्तामन्यके समे

॥ ४ ॥ प्र ब्रह्माणि नभाकवदिन्द्राग्निभ्यामिरज्यत । या सप्तबुध्नमर्णवं जिह्म
बारमपोर्णुत इन्द्र ईशान ओजसा नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥ अपि वृश्च पुरा
णवद्व्रततेरिव गुष्पितमोजो दासस्य दम्भय । वयं तदस्य सम्भृतं वस्विन्द्रेण वि
भजेमहि नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥ २४ ॥ यदिन्द्राग्नी जना इमे विह्वयन्ते तना
गिरा । अस्माकेभिर्नृभिर्वयं सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतो नभन्तामन्यके
समे ॥ ७ ॥ या नु श्वेताववो दिव उच्चरात उप द्युभिः । इन्द्राग्न्योरनु व्रतमु
हाना यन्ति सिन्धवो यान्त्सीं बन्धादमुञ्चतां नभन्तामन्यके समे ॥ ८ ॥ पूर्वीष्ट
इन्द्रोपमातयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः सूनो हिन्वस्य हरिवः । वस्वो वीरस्यापृचो या
नु साधन्त नो धियो नभन्तामन्यके समे ॥ ९ ॥ तं शिशीता सुवृक्तिभिस्त्वेष
सत्वानमृग्मियम् । उतो नु चिद्य ओजसा शुष्णस्याण्डानि भेदति जेषत्स्वर्वती
रपो नभन्तामन्यके समे ॥ १० ॥ तं शिशीता स्वध्वरं सत्यं सत्वानमृत्वियम्
उतो नु चिद्य ओहत आण्डा शुष्णस्य भेदत्यजैः स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे
॥ ११ ॥ एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन्नवीयो मन्धातृवदङ्गिरस्वदवाचि । त्रिधातुना
शर्मणा पातमस्मान्वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १२ ॥ २५ ॥

॥ ४१ ॥ १—१० नाभाकः काण्व ऋषिः ॥ वरुणो देवता ॥ छन्दः—१,
५ त्रिष्टुप् । ४, ७ भुरिक् त्रिष्टुप् । ८ स्वराट् त्रिष्टुप् । २, ३, ६, १० निचृ
ज्जगती । ९ जगती ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७, ८ धैवतः । २, ३, ६, ९, १० निषादः ।

॥ ४१ ॥ अस्मा ऊ षु प्रभूतये वरुणाय मरुद्भ्योऽर्चा विदुष्टरेभ्यः । यो
धीता मानुषाणां पश्वो गा इव रक्षति नभन्तामन्यके समे ॥ १ ॥ तमू षु समना
गिरा पितॄणां च मन्मभिः । नाभाकस्य प्रशस्तिभिर्यः सिन्धूनामुपोदये सप्त
स्वसा स मध्यमो नभन्तामन्यके समे ॥ २ ॥ स क्षपः परि षस्वजे न्युस्रो मा
यया दधे स विश्वं परि दर्शतः । तस्य वेनीरनु व्रतमुषस्तिस्रो अवर्धयन्नभन्ता
मन्यके समे ॥ ३ ॥ यः ककुभो निधारयः पृथिव्यामधि दर्शतः । स माता पूर्व्यं
पदं तद्वरुणस्य सप्त्यं स हि गोपा इवेर्यो नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥ यो धर्ता
भुवनानां य उस्राणामपीच्या वेद नामानि गुह्या । स कविः काव्या पुरुरूपं
द्यौरिव पुष्यति नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥ २६ ॥ यस्मिन्विश्वानि काव्या चक्रे
नाभिरिव श्रिता । त्रितं जूती सपर्यत व्रजे गावो न संयुजे युजे अश्वाँ अयुक्षत
नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥ य आस्वत्क आशये विश्वा जातान्येषाम् । परि

धामानि मर्मृशद्वरुणस्य पुरो गये विश्वे देवा अनु व्रतं नभन्तामन्यके संमे ॥ ७॥ स संमुद्रो अपीच्यस्तुरो द्यामिव रोहति नि यदासु यजुर्दधे । स माया अर्चिना पदास्तृणान्नाकमारुहन्नभन्तामन्यके संमे ॥ ८ ॥ यस्य श्वेता विचक्षणा तिस्रो भूमीरधिक्षितः । त्रिरुत्तराणि पप्रतुर्वरुणस्य ध्रुवं सदः स संप्तानामिरज्यति नभन्तामन्यके संमे ॥ ९ ॥ यः श्वेताँ अधिनिर्णिजश्चक्रे कृष्णाँ अनु व्रता । स धाम पूर्व्यं ममे यः स्कम्भेन वि रोदसी अजो न द्यामधारयन्नभन्तामन्यके संमे ॥१०॥२७॥

॥ ४२ ॥ १—६ नाभाकः काण्व अर्चनाना वा । अथवा १–३ नाभाकः काण्वः । ४–६ नाभाकः काण्व अर्चनाना वा ऋषयः ॥ १–३ वरुणः । ४–६ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१—३ त्रिष्टुप् । ४—६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः–१–३ धैवतः । ४–६ गान्धारः ॥

॥ ४२ ॥ अस्तंभ्नाद्यामसुरो विश्ववेदा अमिमीत वरिमाणं पृथिव्याः । आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड्विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ॥ १ ॥ एवा वन्दस्व वरुणं बृहन्तं नमस्या धीरममृतस्य गोपाम् । स नः शर्म त्रिवरूथं वि यंसत्पातं नो द्यावापृथिवी उपस्थे ॥ २ ॥ इमां धियं शिक्षमाणस्य देव क्रतुं दक्षं वरुण सं शिशाधि । ययाति विश्वा दुरिता तरेम सुतर्माणमधि नावं रुहेम ॥ ३ ॥ आ वां ग्रावाणो अश्विना धीभिर्विप्रा अचुच्यवुः । नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे ॥ ४ ॥ यथा वामत्रिरश्विना गीर्भिर्विप्रो अजोहवीत् । नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे ॥ ५ ॥ एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः । नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे ॥ ६ ॥ २८॥ ५ ॥

॥ ४३ ॥ १—३३ विरूप आङ्गिरस ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ९—१२, २२, २६, २८, २९, ३३ निचृद् गायत्री । २–८, १३, १५–२१, २३–२५, २७, ३१, ३२ गायत्री । १४ ककुम्मती गायत्री । ३० पादनिचृद् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४३ ॥ इमे विप्रस्य वेधसोऽग्नेरस्तृतयज्वनः । गिरः स्तोमास ईरते ॥ १ ॥ अस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचर्षणे । अग्ने जनामि सुष्टुतिम् ॥ २ ॥ आरोका इव घेदह तिग्मा अग्ने तव त्विषः । दद्भिर्वनानि बप्सति ॥ ३ ॥ हरयो धूमकेतवो वातजूता उप द्यवि । यतन्ते वृथगग्नयः ॥ ४ ॥ एते त्ये वृथगग्नय इद्धासः

संदृक्षत । उषसामिव केतवः ॥ ५ ॥ २९ ॥ कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जा-
तवेदसः । अग्निर्यद्रोधति क्षमि ॥ ६ ॥ धासिं कृण्वान ओषधीर्बप्सदग्निर्न वा-
यति । पुनर्यन्तरुणीरपि ॥ ७ ॥ जिह्वाभिरह नन्नमदर्चिषा जञ्जणाभवन् । अ-
ग्निर्वनेषु रोचते ॥ ८ ॥ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे । गर्भे सञ्जायसे
पुनः ॥ ९ ॥ उदग्ने तव तद्घृतादर्ची रोचत आहुतम् । निंसानं जुह्वो मुखे ॥ १० ॥ ३० ॥
उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे । स्तोमैर्विधेमाग्नये ॥ ११ ॥ उत त्वा नमसा वयं
होतर्वरेण्यक्रतो । अग्ने समिद्भिरीमहे ॥ १२ ॥ उत त्वा भृगुवच्छुचे मनुष्वदग्न
आहुतः । अङ्गिरस्वद्धवामहे ॥ १३ ॥ त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन्त्सता
सखा सख्या समिध्यसे ॥ १४ ॥ स त्वं विप्राय दाशुषे रयिं देहि सहस्रिणम् ।
अग्ने वीरवतीमिषम् ॥ १५ ॥ ३१ ॥ अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्व शुचिव्रत ।
इमं स्तोमं जुषस्व मे ॥ १६ ॥ उत त्वाग्ने मम स्तुतो वाश्राय प्रतिहर्यते । गोष्ठं
गाव इवाशत ॥ १७ ॥ तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । अग्ने
कामाय येमिरे ॥ १८ ॥ अग्निं धीभिर्मनीषिणो मेधिरासो विपश्चितः । अद्म-
सद्याय हिन्विरे ॥ १९ ॥ तं त्वामज्मेषु वाजिनं तन्वाना अग्ने अध्वरम् । वह्निं
होतारमीळते ॥ २० ॥ ३२ ॥ पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः ।
समत्सु त्वा हवामहे ॥ २१ ॥ तमीळिष्व य आहुतोऽग्निर्विभ्राजते घृतैः । इमं
नः शृणवद्धवम् ॥ २२ ॥ तं त्वा वयं हवामहे शृण्वन्तं जातवेदसम् । अग्ने घ्न-
न्तमप द्विषः ॥ २३ ॥ विशां राजानमद्भुतमध्यक्षं धर्मणामिमम् । अग्निमीळे स उ
श्रवत् ॥ २४ ॥ अग्निं विश्वायुवेपसं मर्यं न वाजिनं हितम् । सप्तिं न वाजया-
मसि ॥ २५ ॥ ३३ ॥ घ्नन्मृध्राण्यप द्विषो दहन्रक्षांसि विश्वहा । अग्ने तिग्मेन
दीदिहि ॥ २६ ॥ यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम । अग्ने स बोधि मे
वचः ॥ २७ ॥ यदग्ने दिविजा अस्यप्सुजा वा सहस्कृत । तं त्वा गीर्भिर्हवामहे
॥ २८ ॥ तुभ्यं घेत्ते जना इमे विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । धासिं हिन्वन्त्यत्तवे ॥ २९ ॥
ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा विश्वा नृचक्षसः । तरन्तः स्याम दुर्गहा ॥ ३० ॥ ३४ ॥
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं शीरं पावकशोचिषम् । हृद्भिर्मन्द्रेभिरीमहे ॥ ३१ ॥ स त्व-
मग्ने विभावसुः सृजन्त्सूर्यो न रश्मिभिः । शर्धन्तमांसि जिघ्नसे ॥ ३२ ॥ तत्ते
सहस्व ईमहे दात्रं यन्नोपदस्यति । त्वदग्ने वार्यं वसु ॥ ३३ ॥ ३५ ॥

॥ ४४ ॥ १—३० विरूप आङ्गिरस ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,
३, ४, ६, १०, २०—२२, २५, २६ गायत्री । २, ५, ७, ८, ११,१४–१७,

७४ निचृद्गायत्री । ६, १२, १३, १८, २८, ३० विराड् गायत्री । २७ यवमध्यागायत्री । २६ ककुम्मती गायत्री । १६, २३ पादनिचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४४ ॥ स॒मिधा॒ग्निं दु॑वस्यत घृ॒तैर्बो॑धय॒ताति॑थिम् । आस्मि॑न्ह॒व्या जु॑होतन ॥ १ ॥ अग्ने॒ स्तोमं॑ जुषस्व मे॒ वर्ध॑स्वा॒नेन॒ मन्म॑ना । प्रति॑ सू॒क्तानि॑ हर्य नः ॥ २ ॥ अ॒ग्निं दू॒तं पु॒रो द॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ ब्रुवे । दे॒वाँ आ सा॑दयादि॒ह ॥ ३ ॥ उत्ते॑ बृ॒हन्तो॑ अ॒र्चयः॑ समिधा॒नस्य॑ दीदिवः । अग्ने॑ शु॒क्रास॑ ईरते ॥ ४ ॥ उप॑ त्वा जु॒ह्वो॒३॒॑ मम॑ घृ॒ताची॑र्यन्तु हर्यत । अग्ने॑ ह॒व्या जु॑षस्व नः ॥ ५ ॥ ३६ ॥ म॒न्द्रं होता॑रमृ॒त्विजं॑ चि॒त्रभा॑नुं वि॒भाव॑सुम् । अ॒ग्निमी॑ळे॒ स उ॑ श्रवत् ॥ ६ ॥ प्र॒त्नं होता॑र॒मीड्यं॒ जुष्ट॑म॒ग्निं क॒विक्र॑तुम् । अ॒ध्व॒रा॒णाम॑भि॒श्रिय॑म् ॥ ७ ॥ जु॒षा॒णो अ॑ङ्गिरस्तमे॒मा ह॒व्यान्या॑नु॒षक् । अग्ने॑ य॒ज्ञं न॑य ऋतु॒था ॥ ८ ॥ स॒मि॒धा॒न उ॑ सन्त्य शु॒क्र॑शोच इ॒हा व॑ह । चि॒कि॒त्वा-न्दैव्यं॒ जन॑म् ॥ ९ ॥ विप्रं॒ होता॑रम॒द्रुहं॑ धू॒मके॑तुं वि॒भाव॑सुम् । य॒ज्ञानां॑ के॒तुमी॑महे ॥ १० ॥ ३७ ॥ अग्ने॒ नि पा॑हि न॒स्त्वं प्रति॑ ष्म देव॒ रीष॑तः । भि॒न्धि द्वेषः॑ स-हस्कृत ॥ ११ ॥ अ॒ग्निः प्र॒त्नेन॒ मन्म॑ना॒ शुम्भा॑नस्त॒न्वं१॒॑ स्वाम् । क॒विर्विप्रे॑ण वा-वृधे ॥ १२ ॥ ऊ॒र्जो नपा॑त॒मा हु॑वे॒ऽग्निं पा॑व॒कशो॑चिषम् । अ॒स्मिन्य॒ज्ञे स्व॑ध्व॒रे ॥ १३ ॥ स नो॑ मित्रमह॒स्त्वमग्ने॑ शु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॑ । दे॒वैरा स॑त्सि ब॒र्हिषि॑ ॥ १४ ॥ यो अ॒ग्निं त॒न्वो॒३॒॑ दमे॑ दे॒वं मर्तः॑ सप॒र्यति॑ । तस्मा॒ इदी॑दय॒द्वसु॑ ॥ १५ ॥ ३८ ॥ अ॒ग्निर्मू॒र्धा दि॒वः क॒कुत्पतिः॑ पृथि॒व्या अ॒यम् । अ॒पां रेतां॑सि जिन्वति ॥ १६ ॥ उद॑ग्ने॒ शुच॑य॒स्तव॑ शु॒क्रा भ्राज॑न्त ईरते । तव॒ ज्योतीं॑ष्य॒र्चयः॑ ॥ १७ ॥ ईशि॑षे॒ वार्य॑स्य॒ हि दा॒त्रस्या॑ग्ने॒ स्व॑र्पतिः । स्तो॒ता स्यां॒ तव॒ शर्म॑णि ॥ १८ ॥ त्वाम॑ग्ने मनी॒षिण॒स्त्वां हि॑न्वन्ति॒ चित्ति॑भिः । त्वां व॑र्धन्तु नो॒ गिरः॑ ॥ १९ ॥ अद॑ब्धस्य स्व॒धाव॑तो दू॒तस्य॒ रेभ॑तः॒ सदा॑ । अ॒ग्नेः स॒ख्यं वृ॑णीमहे ॥ २० ॥ ३९ ॥ अ॒ग्निः शुचि॑व्रततमः॒ शुचि॒र्विप्रः॒ शुचिः॑ क॒विः । शुची॑ रोचत॒ आहु॑तः ॥ २१ ॥ उ॒त त्वा॑ धी॒तयो॒ मम॒ गिरो॑ वर्धन्तु वि॒श्वहा॑ । अग्ने॑ स॒ख्यस्य॑ बोधि नः ॥ २२ ॥ यद॑ग्ने॒ स्याम॒हं त्वं त्वं वा॑ घा॒ स्या अ॒हम् । स्युष्टे॑ स॒त्या इ॒हाशिषः॑ ॥ २३ ॥ वसु॒र्वसु॑प-ति॒र्हि क॒मस्य॑ग्ने वि॒भाव॑सुः । स्याम॑ ते सुम॒ताव॑पि ॥ २४ ॥ अग्ने॑ धृ॒तव्र॑ताय ते समु॒द्राये॑व॒ सिन्ध॑वः । गिरो॑ वा॒श्रास॑ ईरते ॥ २५ ॥ ४० ॥ युवा॑नं वि॒श्पतिं॑ क॒विं वि॒श्वादं॑ पुरु॒वेप॑सम् । अ॒ग्निं शु॑म्भामि॒ मन्म॑भिः ॥ २६ ॥ य॒ज्ञानां॑ र॒थ्ये॑ व॒यं ति॒-ग्मज॑म्भाय वी॒ळवे॑ । स्तोमै॑रिषे॒माग्नये॑ ॥ २७ ॥ अ॒यम॑ग्ने॒ त्वे अपि॑ जरि॒ता भू॑तु

सन्त्य । तस्मै पावक मृळय ॥ २८ ॥ धीरो ह्यस्यद्मसद्विप्रो न जागृविः सदा । अग्ने दीदयसि द्यवि ॥ २९ ॥ पुराग्ने दुरितेभ्यः पुरा मृध्रेभ्यः कवे । प्र ण आयुर्वसो तिर ॥ ३० ॥ ४१ ॥

॥ ४५ ॥ १—४२ त्रिशोकः काण्व ऋषिः ॥ १ इन्द्राग्नी । २—४२ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३—६, ८, ९, १२, १३, १५–२१, २३–२५, ३१, ३६, ३७, ३९–४२ गायत्री । २, १०, ११, १४, २२, २८–३०, ३३–३५ निचृद् गायत्री । २६, २७, ३२, ३८ विराड् गायत्री । ७ पादनिचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४५ ॥ आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ १ ॥ बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ २ ॥ अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ ३ ॥ आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छद्वि मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ ४ ॥ प्रति त्वा शवसी वदद्गिरावप्सो न योधिषत् । यस्ते शत्रुत्वमाचके ॥ ५ ॥ ४२ ॥ उत त्वं मघवञ्छृणु यस्ते वष्टि ववक्षि तत् । यद्वीळयासि वीळु तत् ॥ ६ ॥ यदाजिं यात्याजिकृदिन्द्रः स्वश्वयुरुप । रथीतमो रथीनाम् ॥ ७ ॥ वि षु विश्वा अभियुजो वज्रिन्विष्वग्यथा वृह । भवा नः सुश्रवस्तमः ॥ ८ ॥ अस्माकं सु रथं पुर इन्द्रः कृणोतु सातये । न यं धूर्वन्ति धूर्तयः ॥ ९ ॥ वृज्याम ते परि द्विषोऽरं ते शक्र दावने । गमेमेदिन्द्र गोमतः ॥ १० ॥ ४३ ॥ शनैश्चिद्यन्तो अद्रिवोऽश्वावन्तः शतग्विनः । विवक्षणा अनेहसः ॥ ११ ॥ ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे सहस्रा सूनृता शता । जरितृभ्यो विमंहते ॥ १२ ॥ विद्मा हि त्वा धनञ्जयमिन्द्र दृळ्हा चिदारुजम् । आदारिणं यथा गयम् ॥ १३ ॥ ककुहं चित्त्वा कवे मन्दन्तु धृष्णविन्दवः । आ त्वा पणिं यदीमहे ॥ १४ ॥ यस्ते रेवाँ अदाशुरिः प्रममर्ष मघत्तये । तस्य नो वेद आ भर ॥ १५ ॥ ४४ ॥ इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः । पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥ १६ ॥ उत त्वा बधिरं वयं श्रुत्कर्णं सन्तमूतये । दूरादिह हवामहे ॥ १७ ॥ यच्छुश्रूया इमं हवं दुर्मर्षं चक्रिया उत । भवेरापिर्नो अन्तमः ॥ १८ ॥ यच्चिद्धि ते अपि व्यथिर्जगन्वांसो अमन्महि । गोदा इदिन्द्र बोधि नः ॥ १९ ॥ आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते । उश्मसि त्वा सधस्थ आ ॥ २० ॥ ४५ ॥ स्तोत्रमिन्द्राय गायत पुरुनृम्णाय सत्वने । नकिर्यं वृण्वते युधि ॥ २१ ॥ अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।

तृष्पा व्यंश्नुही मदम् ॥ २२ ॥ मा त्वां मूरा अविष्यवो मोपहस्वांन आ दंभन् । मार्कीं ब्रह्मद्विषों वनः ॥ २३ ॥ इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे । सरों गौरो यथा पिब ॥ २४ ॥ या वृत्रहा परावति सना नवा च चुच्युवे । ता संसत्सु प्र वोचत ॥ २५ ॥ ४६ ॥ अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे । अत्रादेदिष्ट पौंस्यम् ॥ २६ ॥ सत्यं तत्तुर्वशे यदौ विदानो अह्नवाय्यम् । व्यानट् तुर्वणे शमि ॥ २७ ॥ तरणिंवो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः । समानमु प्रशंसिषम् ॥ २८ ॥ ऋभुक्षणं न वर्तव उक्थेषु तुग्र्यावृधम् । इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥ २९ ॥ यः कृन्तादिद्वि योन्यं त्रिशोकाय गिरिं पृथुम् । गोभ्यों गातुं निरेतवे ॥ ३० ॥ ४७ ॥ यद्दधिषे मनस्यसि मन्दानः प्रेदियक्षसि । मा तत्करिन्द्र मृळय ॥ ३१ ॥ दभ्रं चिद्धि त्वावतः कृतं शृण्वे अधि क्षमि । जिगात्विन्द्र ते मनः ॥ ३२ ॥ तवेदु ताः सुकीर्तयोऽसन्नुत प्रशस्तयः । यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ ३३ ॥ मा न एकस्मिन्नागसि मा द्वयोरुत त्रिषु । वधीर्मा शूर भूरिषु ॥ ३४ ॥ बिभया हि त्वावत उग्रादभिप्रभङ्गिणः । दस्मादहमृतीषहः ॥ ३५ ॥ ४८ ॥ मा सख्युः शूनमा विदे मा पुत्रस्य प्रभूवसो । आवृत्वद्भूतु ते मनः ॥ ३६ ॥ को नु मर्या अमिथितः सखा सखायमब्रवीत् । जहा को अस्मदीषते ॥ ३७ ॥ एवारे वृषभा सुतेऽसिन्वन्भूर्यावयः । श्वघ्नीव निवता चरन् ॥ ३८ ॥ आ त एता वचोयुजा हरी गृभ्णे सुमद्रथा । यदीं ब्रह्मभ्य इद्ददः ॥ ३९ ॥ भिन्धि विश्वा अप द्विषः परिबाधो जही मृधः । वसु स्पार्हं तदा भर ॥ ४० ॥ यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् । वसु स्पार्हं तदा भर ॥ ४१ ॥ यस्य ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति । वसु स्पार्हं तदा भर ॥ ४२ ॥ ४९ ॥ ३ ॥

॥ ४६ ॥ १—३३ वशोऽश्व्य ऋषिः ॥ देवताः-१-२०, २९-३१, ३३ इन्द्रः । २१—२४ पृथुश्रवसः कानीतस्य दानस्तुतिः । २५—२८, ३२ वायुः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री । २, १०, १५, २९ विराड्गायत्री । ३, २३ गायत्री । ४ प्रतिष्ठा गायत्री । ६, १३, ३३ निचृद्गायत्री । ३० आर्चीस्वराड् गायत्री । ३१ स्वराड् गायत्री । ५ निचृदुष्णिक् । १६ भुरिगुष्णिक् । ७, २०, २७, २८ निचृद् बृहती । ९, २६ स्वराड् बृहती । ११, १४ विराड् बृहती । २१, २५, ३२ बृहती । ८ विराडनुष्टुप् । १८ अनुष्टुप् । १९ भुरिगनुष्टुप् । १२, २२, २४ निचृत् पङ्क्तिः । १७ जगती ॥ स्वरः—१—४, ६, १०, १३, १५, २३, २९—३१, ३३ षड्जः । ५, १६, ऋषभः । ७, ९, ११, १४, २०,

२१, २५—२८, ३२ मध्यमः । ८, १८, १६ गान्धारः । १३, २२, २४ पञ्चमः । १७ निषादः ॥

॥ ४६ ॥ त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः । स्मसि स्थातर्हरीणाम् ॥ १ ॥ त्वां हि सत्यमद्रिवो विद्म दातारमिषाम् । विद्म दातारं रयीणाम् ॥ २ ॥ आ यस्य ते महिमानं शतमूते शतक्रतो । गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ॥ ३ ॥ सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा । मित्रः पान्त्यद्रुहः ॥ ४ ॥ दधानो गोमदश्ववत्सुवीर्यमादित्यजूत एधते । सदा राया पुरुस्पृहा ॥ ५ ॥ १ ॥ तमिन्द्रं दानमीमहे शवसानमभीर्वम् । ईशानं राय ईमहे ॥ ६ ॥ तस्मिन्हि सन्त्यूतयो विश्वा अभीरवः सचा । तमा वहन्तु सप्तयः पुरूवसुं मदाय हरयः सुतम् ॥ ७ ॥ यस्ते मदो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः । य आददिः स्वर्नृभिर्यः पृतनासु दुष्टरः ॥ ८ ॥ यो दुष्टरो विश्ववार श्रवाय्यो वाजेष्वस्ति तरुता । स नः शविष्ठ सवना वसो गहि गमेम गोमति व्रजे ॥ ६ ॥ गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया । वरिवस्य महामह ॥ १० ॥ २ ॥ नहि ते शूर राधसोऽन्तं विन्दामि सत्रा । दशस्या नो मघवन्नू चिदद्रिवो धियो वाजेभिराविथ ॥ ११ ॥ य ऋष्वः श्रावयत्सखा विश्वेत्स वेद जनिमा पुरुष्टुतः । तं विश्वे मानुषा युगेन्द्रं हवन्ते तविषं यतस्रुचः ॥ १२ ॥ स नो वाजेष्वविता पुरूवसुः पुरः स्थाता । मघवा वृत्रहा भुवत् ॥ १३ ॥ अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम् । इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥ १४ ॥ ददी रेक्णस्तन्वे ददिर्वसु ददिर्वाजेषु पुरुहूत वाजिनम् । नूनमथ ॥ १५ ॥ ३ ॥ विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां सासह्वांसं चिदस्य वर्पसः । कृपयतो नूनमत्यथ ॥ १६ ॥ महः सु वो अरमिषे स्तवामहे मीळ्हुषे अरङ्गमाय जग्मये । यज्ञेभिर्गीर्भिर्विश्वमनुषां मरुतामियक्षसि गाये त्वा नमसा गिरा ॥ १७ ॥ ये पातयन्ते अज्मभिर्गिरीणां स्नुभिरेषाम् । यज्ञं महिष्वणीनां सुम्नं तुविष्वणीनां प्राध्वरे ॥१८॥ प्रभङ्गं दुर्मतीनामिन्द्र शविष्ठा भर रयिमस्मभ्यं युज्यं चोदयन्मते ज्येष्ठं चोदयन्मते ॥ १६ ॥ सनितः सुसनितरुग्र चित्र चेतिष्ठ सूनृत । प्रासहा सम्राट् सहुरिं सहन्तं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ॥ २० ॥ ४ ॥ आ स एतु य ईवदाँ अदेवः पूर्तमाददे । यथा चिद्वशो अश्व्यः पृथुश्रवसि कानीतेऽस्या व्युष्याददे ॥ २१ ॥ षष्टिं सहस्राश्व्यस्यायुतासनमुष्ट्राणां विंशतिं शता । दश श्यावीनां शता दश त्र्यरुषीणां दश गवां सहस्रा ॥ २२ ॥ दश श्यावा ऋधद्रयो वीतवारास आशवः । मथ्रा नेमिं नि वावृतुः ॥ २३ ॥ दानासः पृथुश्रवसः कानीतस्य सुराधसः । रथं हिरण्ययं ददन्मंहिष्ठः सूरिरभूद्वर्षिष्ठमकृत श्रवः ॥ २४ ॥ आ नो वायो महे तने

याहि मखाय पाजसे । वयं हि ते चकृमा भूरि दावने सद्यश्चिन्महि दावने ॥ २५॥
॥ ५ ॥ यो अश्वेभिर्वहते वस्त उस्रास्त्रिः सप्त सप्ततीनाम् । एभिः सोमेभिः सो-
मसुद्भिः सोमपा दानाय शुक्रपूतपाः ॥ २६ ॥ यो म इमं चिदु त्मनामन्दच्चित्रं
दावने । अरट्वे अक्षे नहुषे सुकृत्वनि सुकृत्तराय सुक्रतुः ॥ २७ ॥ उचथ्ये३ वपुषि यः स्वराळुत वायो घृतस्नाः । अश्वेषितं रजेषितं शुनेषितं प्राज्म तदिदं नु
तत् ॥२८॥ अध प्रियमिषिराय षष्टिं सहस्रासनम् । अश्वानामिन्न वृष्णाम् ॥२९॥
गावो न यूथमुप यन्ति वध्रय उप मा यन्ति वध्रयः ॥३०॥ अध यच्चारथे गणे शत-
मुष्ट्राँ अचिक्रदत् । अध श्वित्नेषु विंशतिं शता ॥ ३१ ॥ शतं दासे बल्बूथे वि-
प्रस्तरुक्ष आ ददे । ते ते वायविमे जना मदन्तीन्द्रगोपा मदन्ति देवगोपाः ॥३२॥
अध स्या योषणा मही प्रतीची वशमश्व्यम् । । अधिरुक्मा वि नीयते॥३३॥ ६ ॥

॥ ४७ ॥ १—१८ त्रित आप्त्य ऋषिः ॥ १-१३ आदित्याः । १४-१८ आदित्या उषाश्च देवते ॥ छन्दः-१ जगती । ४, ६-८, १२ निचृज्जगती । २, ३, ५, ९, १३, १५, १६, १८ भुरिक् त्रिष्टुप् । १०, ११, १७ स्वराट् त्रिष्टुप् । १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६—८, १२ निषादः । २, ३, ५, ९—११, १३-१८ धैवतः ॥

॥ ४७ ॥ महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुषे । यमादित्या अभि द्रुहो
रक्षथा नेमघं नशदनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥१॥ विदा देवा अघा-
नामादित्यासो अपाकृतिम् । पक्षा वयो यथोपरि व्य१स्मे शर्म यच्छतानेहसो व ऊ
तयः सुऊतयो व ऊतयः ॥२॥ व्य१स्मे अधि शर्म तत्पक्षा वयो न यन्तन । विश्वानि
विश्ववेदसो वरूथ्या मनामहेऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ३ ॥ यस्मा
अरासत क्षयं जीवातुं च प्रचेतसः । मनोर्विश्वस्य घेदिम आदित्या राय ईशतेऽने-
हसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ४ ॥ परि णो वृणजन्नघा दुर्गाणि
रथ्यो यथा । स्यामेदिन्द्रस्य शर्मण्यादित्यानामुतावस्यनेहसो व ऊतयः सुऊतयो
व ऊतयः ॥ ५ ॥ ७ ॥ परिह्वृतेदना जनो युष्मादत्तस्य वायति । देवा अद-
भ्रमाश वो यमादित्या अहेतनानेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ६ ॥ न
तं तिग्मं चन त्यजो न द्रासदभि तं गुरु । यस्मा उ शर्म सप्रथ आदित्यासो अ-
राध्वमनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ७ ॥ युष्मे देवा अपि ष्मसि यु-
ध्यन्त इव वर्मसु । यूयं महो न एनसो यूयमर्भादुरुष्यतानेहसो व ऊतयः सुऊतयो व

ऊतयः ॥८॥ अदितिर्न उरुष्यत्वदितिः शर्म यच्छतु । माता मित्रस्य रेवतोऽर्यम्णो वरुणस्य चानेहसो व ऊतयः सु ऊतयो व ऊतयः ॥९॥ यद्देवाः शर्म शरणं यद्भद्रं यदनातुरम् । त्रिधातु यद्वरूथ्यं१ तदस्मासु वि यन्तनानेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥१०॥८॥ आदित्या अव हि ख्यताधि कूलादिव स्पशः । सुतीर्थमर्वतो यथानु नो नेषथा सुगमनेहसो व ऊतयः सु ऊतयो व ऊतयः ॥ ११ ॥ नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत । गवे च भद्रं धेनवे वीराय च श्रवस्यतेऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥१२॥ यदाविर्यदपीच्यं१ देवासो अस्ति दुष्कृतम् । त्रिते तद्विश्वमाप्त्य आरे अस्मद्दधातनानेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥१३॥ यच्च गोषु दुःष्वप्न्यं यच्चास्मे दुहितर्दिवः । त्रिताय तद्विभावर्याप्त्याय परा वहानेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥१४॥ निष्कं वा घा कृणवते स्रजं वा दुहितर्दिवः । त्रिते दुःष्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये परि दद्मस्यनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥१५॥ ९ ॥ तदन्नाय तदपसे तं भागमुपसेदुषे । त्रिताय च द्विताय चोषो दुःष्वप्न्यं वहानेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥१६॥ यथा कलां यथा शफं यथ ऋणं सन्नयामसि । एवा दुःष्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये सं नयामस्यनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १७ ॥ अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम् । उषो व यस्माद्दुःष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छत्वनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ८ ॥ १० ॥

॥ ४८ ॥ १—१५ प्रगाथः काण्व ऋषिः ॥ सोमो देवता ॥ छन्दः-१, २, १३ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । १२, १५ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । ३, ७—९ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ६, १०, ११, १४ त्रिष्टुप् । ५ विराड् जगती ॥ स्वरः—१—४, ६—१५ धैवतः । ५ निषादः ॥

॥ ४८ ॥ स्वादोरभक्षि वयसः सुमेधा स्वाध्यो वरिवोवित्तरस्य । विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधु ब्रुवन्तो अभि सञ्चरन्ति ॥ १ ॥ अन्तश्च प्रागा अदितिर्भवास्यवयाता हरसो दैव्यस्य । इन्दविन्द्रस्य सख्यं जुषाणः श्रौष्टीव धुरमनु राय ऋध्याः ॥ २ ॥ अपाम सोमममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान् । किं नूनमस्मान्कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य ॥ ३ ॥ शं नो भव हृद आ पीत इन्दो पितेव सोम सूनवे सुशेवः । सखेव सख्य उरुशंस धीरः प्र ण आयुर्जीवसे सोम तारीः ॥ ४ ॥ इमे मा पीता यशस उरुष्यवो रथं न गावः समनाह पर्वसु । ते मा रक्षन्तु विस्रसश्चरित्रादुत मा स्रामाद्यवयन्त्विन्दवः ॥५ ॥ ११ ॥

अग्निं न मां मथितं सं दिदीपः प्र चक्षय कृणुहि वस्यसो नः । अथा हि ते मद आ सोम मन्ये रेवाँ इव प्र चरा पुष्टिमच्छ ॥ ६ ॥ इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः । सोम राजन्प्र ण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि ॥ ७ ॥ सोम राजन्मृळया नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्यास्तस्य विद्धि । अलर्ति दक्ष उत मन्युरिन्दो मा नो अर्यो अनुकामं परा दाः ॥ ८ ॥ त्वं हि नस्तन्वः सोम गोपा गात्रेगात्रे निषसत्था नृचक्षाः । यत्ते वयं प्रमिनाम व्रतानि स नो मृळ सुषखा देव वस्यः ॥ ९ ॥ ऋदूदरेण सख्या सचेय यो मा न रिष्येद्धर्यश्व पीतः । अयं यः सोमो न्यधाय्यस्मे तस्मा इन्द्रं प्रतिरमेम्यायुः ॥ १० ॥ १२ ॥ अप त्या अस्थुरनिरा अमीवा निरत्रसन्तमिषीचीरभैषुः । आ सोमो अस्माँ अरुहद्विहाया अगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ॥ ११ ॥ यो न इन्दुः पितरो हृत्सु पीतोऽमर्त्यो मर्त्याँ आविवेश । तस्मै सोमाय हविषा विधेम मृळीके अस्य सुमतौ स्याम ॥ १२ ॥ त्वं सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ । तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १३ ॥ त्रातारो देवा अधि वोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः । वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम ॥ १४ ॥ त्वं नः सोम विश्वतो वयोधास्त्वं स्वर्विदा विशा नृचक्षाः । त्वं न इन्द ऊतिभिः सजोषाः पाहि पश्चातादुत वा पुरस्तात् ॥ १५ ॥ १३ ॥ ६ ॥

## ॥ अथ वालखिल्यम् ॥

॥ ४६ ॥ १—१० प्रस्कण्वः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ बृहती । ३ विराड्बृहती । ५ भुरिग्बृहती । ७, ९ निचृद्बृहती । २ पङ्क्तिः । ४, ६, ८, १० निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः । २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

॥ ४६ ॥ अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे । यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ १ ॥ शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे । गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥ २ ॥ आ त्वा सुतास इन्दवो मदा य इन्द्र गिर्वणः । आपो न वज्रिन्नन्वोक्यं सरः पृणन्ति शूर राधसे ॥ ३ ॥ अनेहसं प्रतरणं विवक्षणं मध्वः स्वादिष्ठमीं पिब । आ यथा मन्दसानः किरासि नः प्र क्षुद्रेव त्मना धृषत् ॥ ४ ॥ आ नः स्तोममुप

इवाद्धियानो अश्वो न सोतृभिः। यं ते स्वधावन्त्स्वदयन्ति धेनव इन्द्र कण्वेषु रातयः ॥ ५ ॥ १४ ॥ उग्रं न वीरं नमसोप सेदिम विभूतिमक्षितावसुम्। उद्रीव वज्रिन्नवतो न सिञ्चते क्षरन्तीन्द्र धीतयः यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि। अतो नो यज्ञमाशुभिर्महेमत उग्र उग्रेभिरा गहि ॥ ७ ॥ अजिरासो हरयो ये त आशवो वाता इव प्रसक्षिणः। येभिरपत्यं मनुषः परीयसे येभिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥८॥ एतावतस्त ईमह इन्द्र सुम्नस्य गोमतः। यथा प्रावो मघवन्मेध्यातिथिं यथा नीपातिथिं धने ॥९॥ यथा कण्वे मघवन्त्रसदस्यवि यथा पक्थे दशव्रजे। यथा गोशर्ये असनोर्ऋजिश्वनीन्द्र गोमद्धिरण्यवत् ॥ १० ॥ १५ ॥

॥ ५० ॥ १—१० पुष्टिगुः काण्व षिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ५, ७ निचृद्बृहती। ९ विराड्बृहती। २, ४, ६, १० पङ्क्तिः। ८ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः। २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

॥ ५० ॥ प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा शक्रमभिष्टये। यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहते ॥१॥ शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः। गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदीं सुता अमन्दिषुः ॥२॥ यदीं सुतास इन्दवोऽभि प्रियममन्दिषुः। आपो न धायि सवनं म आ वसो दुघा इवोप दाशुषे ॥३॥ अनेहसं वो हवमानमूतये मध्वः क्षरन्ति धीतयः। आ त्वा वसो हवमानास इन्दव उप स्तोत्रेषु दधिरे ॥ ४ ॥ आ नः सोमे स्वध्वर इयानो अत्यो न तोशते। यं ते स्वदावन्त्स्वदन्ति गूर्तयः पौरे छन्दयसे हवम् ॥ ५ ॥ १६ ॥ प्र वीरमुग्रं विविचिं धनस्पृतं विभूतिं राधसो महः। उद्रीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना सदा पीपेथ दाशुषे ॥ ६ ॥ यद्ध नूनं परावति यद्वा पृथिव्यां दिवि। युजान इन्द्र हरिभिर्महेमत ऋष्व ऋष्वेभिरा गहि ॥ ७ ॥ रथिरासो हरयो ये ते अस्रिध ओजो वातस्य पिप्रति। येभिर्नि दस्युं मनुषो निघोषयो येभिः स्वः परीयसे ॥ ८ ॥ एतावतस्ते वसो विद्याम शूर नव्यसः। यथा प्राव एतशं कृत्व्ये धने यथा वशं दशव्रजे ॥ ९ ॥ यथा कण्वे मघवन्मेधे अध्वरे दीर्घनीथे दमूनसि। यथा गोशर्ये असिषासो अद्रिवो मयि गोत्रं हरिश्रियम् ॥ १० ॥ १७ ॥

॥ ५१ ॥ १–१० श्रुष्टिगुः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ३, ९ निचृद्बृहती। ५ विराड्बृहती। ७ बृहती। २ विराट् पङ्क्तिः। ४, ६, ८, १० निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः। २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

॥ ५१ ॥ यथा मनौ सांवरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम् । नीपातिथौ मघव-
न्मेध्यातिथौ पुष्टिगौ श्रुष्टिगौ सचा ॥ १ ॥ पार्षद्वाणः प्रस्कण्वं समसादयच्छ-
यानं जिव्रिमुद्धितम् । सहस्राण्यसिषासद्गवामृषिस्त्वोतो दस्यवे वृकः ॥ २ ॥ य
उक्थेभिर्न विन्धते चिकिद्य ऋषिचोदनः । इन्द्रं तमच्छा वद नव्यस्या मत्यरिष्यन्तं
यन्तं न भोजसे ॥ ३ ॥ यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानृचुस्त्रिधातुमुत्तमे पदे । स
त्विरमा विश्वा भुवनानि चिक्रददादिज्जनिष्टपौंस्यम् ॥ ४ ॥ यो नो दाता वसू-
नामिन्द्रं तं हूमहे वयम् । विद्मा ह्यस्य सुमतिं नवीयसीं गमेम गोमति व्रजे ॥ ५ ॥
॥ १८ ॥ यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्नुते । तं त्वा वयं मघव-
न्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ ६ ॥ कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दा-
शुषे । उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥ ७ ॥ प्र यो ननक्षे
अभ्योजसा क्रिविं वधैः शुष्णं निघोषयन् । यदेदस्तम्भीत्प्रथयन्नमूं दिवमादिज्ज-
निष्ट पार्थिवः ॥ ८ ॥ यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः । तिरश्चि-
दर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः ॥ ९ ॥ तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं
विप्रासो अर्कमानृचुः । अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे सुवानास इन्दवः
॥ १० ॥ १९ ॥

॥ ५२ ॥ १-१० आयुः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ७
निचृद्बृहती । ३, ५ बृहती । ९ विराड् बृहती । २ पादनिचृत् पङ्क्तिः । ४, ६,
८, १० निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१,३,५,७,९ मध्यमः । २,४,६,८, १० पञ्चमः॥

॥५२॥ यथा मनौ विवस्वति सोमं शक्रापिबः सुतम् । यथा त्रिते छन्द इन्द्र
जुजोषस्यायौ मादयसे सचा ॥१॥ पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनीन्द्र सुवाने अमन्दथाः ।
यथा सोमं दशशिप्रे दशोण्ये स्यूमरश्मावृजूनसि ॥ २ ॥ य उक्था केवला दधे
यः सोमं धृषितापिबत् । यस्मै विष्णुस्त्रीणि पदा विचक्रम उप मित्रस्य धर्मभिः
॥ ३ ॥ यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु चाकनो वाजे वाजिञ्छतक्रतो । तं त्वा वयं
सुदुघामिव गोदुहो जुहूमसि श्रवस्यवः ॥ ४ ॥ यो नो दाता स नः पिता महाँ
उग्र ईशानकृत् । अयामन्नुग्रो मघवा पुरूवसुर्गोरश्वस्य प्र दातु नः ॥ ५॥ २० ॥
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति । वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं
स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ॥ ६ ॥ कदा चन प्र युच्छस्युभे नि पासि जन्मनी । तुरी-
यादित्य हवनं त इन्द्रियमा तस्थावमृतं दिवि ॥७॥ यस्मै त्वं मघवन्निन्द्र गिर्वणः

शिक्षो शिक्षसि दाशुषे ! अस्माकं गिरं उत सुष्टुतिं वसो कण्ववच्छृणुधी ह
वम् ॥ ८ ॥ अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत । पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूष
स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥ ९ ॥ समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम्
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः ॥ १० ॥ २१ ॥

॥ ५३ ॥ १-८ मेध्यः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५
७ विराड्बृहती। ३ आर्ची स्वराड्बृहती । २, ४, ६ निचृत् पङ्क्तिः । ८ विरा
पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१, ३, ५, ७ मध्यमः । २, ४, ६, ८ पञ्चमः ॥

॥ ५३ ॥ उपमं त्वा मघोनाञ्ज्येष्ठञ्च वृषभाणाम् । पूर्भित्तमं मघवन्निन्द्र गो
विदमीशानं राय ईमहे ॥ १ ॥ य आयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो वावृधानो दिवेदि
वे । तं त्वा वयं हर्यश्वं शतक्रतुं वाजयन्तो हवामहे ॥ २ ॥ आ नो विश्वेषां रसं
मध्वः सिञ्चन्त्वद्रयः । ये परावति सुन्विरे जनेष्वा ये अर्वावतीन्दवः ॥ ३ ॥
विश्वा द्वेषांसि जहि चाव चा कृधि विश्वे सन्वन्त्वा वसु । शीष्टेषु चित्ते मदि
रासो अंशवो यत्रा सोमस्य तृम्पसि ॥ ४ ॥ २२ ॥ इन्द्र नेदीय एदिहि मित
मेधाभिरूतिभिः । आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः ॥ ५ ॥
आजितुरं सत्पतिं विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वाभगम् । प्र सू तिरा शचीभिर्ये त
उक्थिनः क्रतुं पुनत आनुषक् ॥ ६ ॥ यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्याम भरेषुते ।
वयं होत्राभिरुत देवहूतिभिः ससवांसो मनामहे ॥ ७ ॥ अहं हि ते हरिवो ब्रह्म
वाजयुराजिं यामि सदोतिभिः। त्वामिदेव तममे समश्वयुर्गव्युरग्रे मथीनाम् ॥८॥२३॥

॥ ५४ ॥ १—८ मातरिश्वा काण्व ऋषिः ॥ १, २, ५—८ इन्द्रः । ३,
४ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ५ निचृद्बृहती । ३ बृहती । ७ विराड्
बृहती । २, ४, ६, ८ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७ मध्यमः । २, ४,
६, ८ पञ्चमः ॥

॥ ५४ ॥ एतत्त इन्द्र वीर्यं गीर्भिर्गृणन्ति कारवः। ते स्तोभन्त ऊर्जमावन्घृतश्चुतं
पौरासो नक्षन्धीतिभिः ॥ १ ॥ नक्षन्त इन्द्रमवसे सुकृत्यया येषां सुतेषु मन्दसे ।
यथा संवर्ते अमदो यथा कृश एवास्मे इन्द्र मत्स्व ॥ २ ॥ आ नो विश्वे
सजोषसो देवासो गन्तनोप नः । वसवो रुद्रा अवसे न आ गमञ्छृण्वन्तु मरु
तो हवम् ॥ ३ ॥ पूषा विष्णुर्हवनं मे सरस्वत्यवन्तु सप्त सिन्धवः । आपो वात

वैतासो वनस्पतिः शृणोतु पृथिवी हवम् ॥ ४ ॥ २४ ॥ यदिन्द्र राधो अस्ति
माघोनं मघवत्तम । तेन नो बोधि सधमाद्यो वृधे भगो दानाय वृत्रहन् ॥ ५ ॥
ाजिपते नृपते त्वमिद्धि नो वाज आ वक्षि सुक्रतो । वीती होत्राभिरुत देववी-
ाभिः ससवांसो वि शृण्विरे ॥ ६ ॥ सन्तिह्यर्य आशिष इन्द्र आयुर्जनानाम् ।
स्मान्नक्षस्व मघवन्नुपावसे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ॥ ७ ॥ वयं त इन्द्र स्तोमेभि-
धेम त्वमस्माकं शतक्रतो । महि स्थूरं शशयं राधो अह्रयं प्रस्कण्वाय नि
शय ॥ ८ ॥ २५ ॥

॥ ५५ ॥ १–५ कृशः काण्व ऋषिः ॥ प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिर्देवता ॥ छन्दः–१
दनिचृद्गायत्री । २, ४ गायत्री । ३, ५ अनुष्टुप् ॥ स्वरः–१, २, ४ षड्जः ।
, ५ गान्धारः ॥

॥ ५५ ॥ भूरीदिन्द्रस्य वीर्यं१व्यख्यमभ्यायति । राधस्ते दस्यवे वृक ॥ १ ॥
तं श्वेतास उक्षणो दिवि तारो न रोचन्ते । मह्ना दिवं न तस्तभुः ॥ २ ॥ शतं
णून्छतं शुनः शतं चर्माणि म्लातानि शतं मे बल्बजस्तुका अरुषीणां चतुःशतम्
३ ॥ सुदेवाः स्थ काण्वायना वयोवयो विचरन्तः । अश्वासो न चङ्क्रमत
ादित्साप्तस्य चर्किरन्नानूनस्य महि श्रवः । श्यावीरतिध्वसन्पथश्चक्षुषा चन
नशे ॥ ५ ॥ २६ ॥

॥ ५६ ॥ १—५ पृषध्रः काण्व ऋषिः ॥ १–४ प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिः ।
अग्नि सूर्यौ देवते ॥ छन्दः—१, ३, ४ विराड् गायत्री । २ गायत्री । ५
चृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–४ षड्जः । ५ पञ्चमः ॥

॥ ५६ ॥ प्रति ते दस्य वे वृकराधो अदर्श्यह्रयम् । द्यौर्न प्रथिना शवः ॥१॥
श मह्यं पौतक्रतः सहस्रा दस्य वे वृकः । निराद्रायो अमंहत ॥ २ ॥ शतं मे
र्दभानां शतमूर्णावतीनाम् । शतं दासाँ अति स्रजः ॥ ३ ॥ तत्रो अपि प्राणी-
त पूतक्रतायै व्यक्ता । अश्वानामिन्न यूथ्याम् ॥ ४ ॥ अचेत्यग्निश्चिकितुर्हव्य-
ट्स सुमद्रथः । अग्निः शुक्रेण शोचिषा बृहत्सूरो अरोचत दिवि सूर्यो अरो-
त ॥ ५ ॥ २७ ॥

॥ ५७ ॥ १–४ मेध्यः काण्व ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१ विराट्
ष्टुप् । २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५७ ॥ युवं देवा क्रतुना पूर्व्येण युक्ता रथेन तविषं यजत्रा । आगच्छ नासत्या शचीभिरिदं तृतीयं सवनं पिबाथः ॥ १ ॥ युवां देवास्त्रयं एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददृशे पुरस्तात् । अस्माकं यज्ञं सवनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीद्यग्नी ॥ २ ॥ पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः । स हस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वाँ इत्ताँ उप याता पिबध्यै ॥ ३ ॥ अयं वां भागो निहितो यजत्रेमा गिरो नासत्योप यातम् । पिबतं सोमं मधुमन्तमस्मे प्र दाश्वांसमवतं शचीभिः ॥ ४ ॥ २८ ॥

॥ ५८ ॥ १–३ मेध्यः काण्व ऋषिः ॥ १ विश्वेदेवा ऋत्विजो वा । २, ३ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१ भुरिक् त्रिष्टुप् । २ निचृत् त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५८ ॥ यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः सचेतसो यज्ञमिमं वहन्ति । यो अनूचानो ब्राह्मणो युक्त आसीत्का स्वित्तत्र यजमानस्य संवित् ॥ १ ॥ एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः । एकैवोषाः सर्वमिदं वि भात्येकं वा इदं वि बभूव सर्वम् ॥ २ ॥ ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं सुखं रथं सुषदं भूरिवारम् । चित्रामघा यस्य योगेऽधिजज्ञे तं वां हुवे अति रिक्तं पिबध्यै ॥ ३ ॥ २९

॥ ५९ ॥ १—७ सुपर्णः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रा वरुणौ देवते ॥ छन्दः—१ जगती । २, ३ निचृज्जगती । ४, ५, ७ विराड्जगती । ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–५, ७ निषादः । ६ धैवतः ॥

॥ ५९ ॥ इमानि वां भागधेयानि सिस्रत इन्द्रावरुणा प्र महे सुतेषु वाम् । यज्ञेयज्ञे ह सवना भुरण्यथो यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षथः ॥ १ ॥ निः षिध्वरीरोषधीराप आस्तामिन्द्रावरुणा महिमानमाशत । या सिस्रतू रजसः पारे अध्वनो ययोः शत्रुर्नकिरादेव ओहते ॥ २ ॥ सत्यं तदिन्द्रावरुणा कृशस्य वां मध्व ऊर्मिं दुहते सप्त वाणीः । ताभिर्दाश्वांसमवतं शुभस्पती यो वामदब्धो अभि पाति चित्तिभिः ॥ ३ ॥ घृतप्रुषः सौम्या जीरदानवः सप्त स्वसारः सदन ऋतस्य । या ह वामिन्द्रावरुणा घृतश्चुतस्ताभिर्धत्तं यजमानाय शिक्षतम् ॥ ४ ॥ ३० अवोचाम महते सौभगाय सत्यं त्वेषाभ्यां महिमानमिन्द्रियम् । अस्मान्त्स्विन्द्रावरुणा घृतश्चुतस्त्रिभिः साप्तेभिरवतं शुभस्पती ॥ ५ ॥ इन्द्रावरुणा यदृषिभ्यो

मनीषां वाचो मतिं श्रुतमदत्तमग्रे । यानि स्थानान्यसृजन्त धीरा यज्ञं तन्वानास्तपसाभ्यपश्यम् ॥६॥ इन्द्रावरुणा सौमनसमदृप्तं रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् । प्रजाम्पुष्टिम्भूतिमस्मासु धत्तं दीर्घायुत्वाय प्र तिरतं न आयुः ॥ ७ ॥ ३१ ॥

## इति वालखिल्यं समाप्तम् ॥

॥ ६० ॥ १—२० भर्गः प्रागाथ ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ६, १३, १७ विराड् बृहती । ३, ५ पादनिचृद् बृहती । ११,१५ निचृद् बृहती । ७, १६ बृहती । २ आर्चीस्वराट् पङ्क्तिः । १०, १६ पादनिचृत् पङ्क्तिः । ४, ६, ८, १४, १८, २० निचृत् पङ्क्तिः । १२ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ६, ११, १३, १५, १७, १६ मध्यमः । २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः ॥

॥ ६० ॥ अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे । आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥ १ ॥ अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश्चरन्त्यध्वरे । ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥२॥ अग्ने कविर्वेधा असि होता पावक यक्ष्यः । मन्द्रो यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यो विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः ॥ ३ ॥ अद्रोघमा वहोशतो यविष्ठ्य देवाँ अजस्र वीतये । अभि प्रयांसि सुधिता वसो गहि मन्दस्व धीतिभिर्हितः ॥ ४ ॥ त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतस्कविः । त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः ॥ ५॥३२॥ शोचा शोचिष्ठ दीदिहि विशे मयो रास्व स्तोत्रे महाँ असि । देवानां शर्मन्मम सन्तु सूरयः शत्रूषाहः स्वग्नयः ॥ ६ ॥ यथा चिद्वृद्धमतसमग्ने सञ्जूर्वसि क्षमि । एवा दह मित्रमहो यो अस्मध्रुग्दुर्मन्मा कश्च वेनति ॥७॥ मा नो मर्ताय रिपवे रक्षस्विने माघशंसाय रीरधः । अस्रेधद्भिस्तरणिभिर्यविष्ठ्य शिवेभिः पाहि पायुभिः ॥ ८ ॥ पाहि नो अग्न एकया पाह्युत द्वितीयया पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जाम्पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥ ६ ॥ पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव । त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं नक्षामहे वृधे ॥ १० ॥ ३३ ॥ आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यं । रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती स्वयशस्तरम् ॥ ११ ॥ येन वंसाम पृतनासु शर्धतस्तरन्तो अर्य आदिशः । स त्वं नो वर्ध प्रयसा शचीवसो जिन्वा धियो वसुविदः ॥ १२ ॥ शिशानो वृषभो यथाग्निः शृङ्गे दविध्वत् । तिग्मा अस्य हनवो न प्रतिधृषे सुजम्भः सहसो यहुः ॥ १३ ॥ नहि ते अग्ने वृषभ प्रतिधृषे

जम्भासो यद्वितिष्ठसे । स त्वं नो होतः सुहुतं हविष्कृधि वंस्वा नो वार्या पुरु ॥ १४ ॥ शेषे वनेषु मात्रोः सं त्वा मर्तास इन्धते । अतन्द्रो हव्या वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि ॥ १५ ॥ ३४ ॥ सप्त होतारस्तमिदीळते त्वाग्ने सुत्यजमह्रयम् । भिनत्स्यद्रिं तपसा वि शोचिषा प्राग्ने तिष्ठ जनाँ अति ॥ १६ ॥ अग्निमग्निं वो अध्रिगुं हुवेम वृक्तबर्हिषः । अग्निं हितप्रयसः शश्वतीष्वा होतारं चर्षणीनाम् ॥ १७ ॥ केतेन शर्मन्त्सचते सुषामण्यग्ने तुभ्यं चिकित्वना । इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ॥ १८ ॥ अग्ने जरितर्विश्पतिस्तेपानो देव रक्षसः । अप्रोषिवान्गृहपतिर्महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः ॥ १९ ॥ मा नो रक्ष आ वेशीदाघृणीवसो मा यातुर्यातुमावताम् । परोगव्यूत्यनिरामप क्षुधमग्ने सेध रक्षस्विनः ॥ २० ॥ ३५ ॥

॥ ६१ ॥ १—१८ भर्गः प्रागाथ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५, ११, १५, निचृद्बृहती । ३, ६ विराड्बृहती । ७, १७ पादनिचृद्बृहती । १३ बृहती । २, ४, १० पङ्क्तिः । ६, १४, १६ विराट् पङ्क्तिः । ८, १२, १८ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७ मध्यमः । २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ पञ्चमः ॥

॥ ६१ ॥ उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः । सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ १ ॥ तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः । उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः ॥ २ ॥ आ वृषस्व पुरूवसो सुतस्येन्द्रान्धसः । विद्मा हि त्वा हरिवः पृत्सु सासहिमधृष्टं चिद्दधृष्वणिम् ॥ ३ ॥ अप्रामिसत्य मघवन्तथेदसदिन्द्र क्रत्वा यथा वशः । सनेम वाजं तव शिप्रिन्नवसा मक्षू चिद्यन्तो अद्रिवः ॥ ४ ॥ शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः । भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥ ५ ॥ ३६ ॥ पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः । नकिर्हि दानं परिमर्धिषत्त्वे यद्यद्यामि तदा भर ॥ ६ ॥ त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये । उद्वावृषस्व मघवन्गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥ ७ ॥ त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे । आ पुरन्दरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे ॥ ८ ॥ अविप्रो वा यदविधद्विप्रो वेन्द्र ते वचः । स प्र ममन्दत्त्वाया शतक्रतो प्राचामन्यो अहंसन ॥ ९ ॥ उग्रबाहुर्म्रक्षकृत्वा पुरन्दरो यदि मे शृणवद्धवम् । वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ॥ १० ॥ ३७ ॥ न पापासो मनामहे नारा-

यासो न जल्हवः । यदिन्न्विन्द्रं वृषणं सचा सुते सखायं कृणवामहै ॥ ११ ॥ उग्रं युयुज्म पृतनासु सासहिमृणकातिमदाभ्यम् । वेदा भृमं चित्सनिता रथीतमो वाजिनं यमिदू नशत् ॥ १२ ॥ यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिर्वि द्विषो वि मृधो जहि ॥ १३ ॥ त्वं हि राधस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधतः । तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ १४ ॥ इन्द्रः स्पळुत वृत्रहा परस्पा नो वरेण्यः । स नो रक्षिषच्चरमं स मध्यमं स पश्चात्पातु नः पुरः ॥ १५ ॥ ३८ ॥ त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात्पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः । आरे अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः ॥ १६ ॥ अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः । विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः ॥ १७ ॥ प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः सम्मिश्लो वीर्याय कम् । उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः ॥ १८ ॥ ३९ ॥

॥ ६२ ॥ १—१२ प्रगाथः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ६, १०, ११ निचृत् पङ्क्तिः । २, ५ विराट् पङ्क्तिः । ४, १२ पङ्क्तिः । ७ निचृद्बृहती । ८,९ बृहती ॥ स्वरः—१—६, १०—१२ पञ्चमः । ७—९ मध्यमः ॥

॥ ६२ ॥ प्रो अस्मा उपस्तुतिं भरता यज्जुजोषति । उक्थैरिन्द्रस्य माहिनं वयो वर्धन्ति सोमिनो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ १ ॥ अयुजो असमो नृभिरेकः । कृष्टीरयास्यः । पूर्वीरति प्र वावृधे विश्वा जातान्योजसा भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ २ ॥ अहितेन चिदर्वता जीरदानुः सिषासति । प्रवाच्यमिन्द्र तत्तव वीर्याणि करिष्यतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ३ ॥ आ याहि कृणवाम त इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना । येभिः शविष्ठ चाकनो भद्रमिह श्रवस्यते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ४ ॥ धृषतश्चिद्धृषन्मनः कृणोषीन्द्र यत्त्वम् । तीव्रैः सोमैः सपर्यतो नमोभिः प्रतिभूषतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ५ ॥ अव चष्ट ऋचीषमोऽवताँ इव मानुषः । जुष्ट्वी दक्षस्य सोमिनः सखायं कृणुते युजं भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ६ ॥ ४० ॥ विश्वे त इन्द्र वीर्यं देवा अनु क्रतुं ददुः । भुवो विश्वस्य गोपतिः पुरुष्टुत भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ७ ॥ गृणे तदिन्द्र ते शव उपमं देवतातये । यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ८ ॥ समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा । विदे तदिन्द्रश्चेतनमध श्रुतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ९ ॥ उज्जातमिन्द्र ते शव उत्त्वामुत्तव क्रतुम् । भूरिगो भूरि वावृधुर्मघवन्तव शर्मणि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ १० ॥

अहं च त्वं च वृत्रहन्त्संयुज्याव सनिभ्य आ । अरातीवा चिदद्रिवोऽनु नौ शूर मंसते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥११॥ सत्यमिद्वा उ तं वयमिन्द्रं स्तवाम नानृतम् । महाँ असुन्वतो वधो भूरि ज्योतींषि सुन्वतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥१२॥ ४१ ॥

॥ ६३ ॥ १—१२ प्रगाथः काण्व ऋषिः ॥ १—११ इन्द्रः । १२ देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ४, ७ विराडनुष्टुप् । ५ निचृदनुष्टुप् । २, ३, ६ विराड् गायत्री । ८, ९, ११ निचृद्गायत्री । १० गायत्री । १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७ गान्धारः । २, ३, ६, ८-११ षड्जः । १२ धैवतः ॥

॥ ६३ ॥ स पूर्व्यो महानां वेनः क्रतुभिरानजे । यस्य द्वारा मनुष्पिता देवेषु धिय आनजे ॥ १ ॥ दिवो मानं नोत्सदन्त्सोमपृष्ठासो अद्रयः । उक्था ब्रह्म च शंस्या ॥ २ ॥ स विद्वाँ अङ्गिरोभ्य इन्द्रो गा अवृणोदप । स्तुषे तदस्य पौंस्यम् ॥ ३ ॥ स प्रत्नथा कविवृध इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः । शिवो अर्कस्य होमन्यस्मत्रा गन्त्ववसे ॥ ४ ॥ आदू नु ते अनु क्रतुं स्वाहा वरस्य यज्यवः । श्वात्रमर्का अनूषतेन्द्र गोत्रस्य दावने ॥ ५ ॥ इन्द्रे विश्वानि वीर्या कृतानि कर्त्वानि च । यमर्का अध्वरं विदुः ॥ ६ ॥ ४२ ॥ यत्पाञ्चजन्यया विशेन्द्रे घोषा असृक्षत । अस्तृणाद्बर्हणा विपो३र्यो मानस्य स क्षयः ॥ ७ ॥ इयमु ते अनुष्टुतिश्चकृषे तानि पौंस्या । प्रावश्चक्रस्य वर्तनिम् ॥ ८ ॥ अस्य वृष्णो व्योदन उरु क्रमिष्ट जीवसे । यवं न पश्व आ ददे ॥ ९ ॥ तद्दधाना अवस्यवो युष्माभिर्दक्षपितरः । स्याम मरुत्वतो वृधे ॥ १० ॥ बळृत्वियाय धाम्न ऋक्वभिः शूर नोनुमः । जेषामेन्द्र त्वया युजा ॥ ११ ॥ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः शंसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः ॥ १२ ॥ ४३ ॥

॥ ६४ ॥ १—१२ प्रगाथः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५, ७, ९ निचृद्गायत्री । ३ आर्चीस्वराड्गायत्री । ४ विराड्गायत्री । २, ६, ८, १०-१२ गायत्री ॥ षड्जः स्वर ॥

॥ ६४ ॥ उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥ पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति ॥ २ ॥ त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ॥ ३ ॥ एहि प्रेहि क्षयो दिव्या३घोषञ्चर्षणीनाम् । ओभे पृणासि रोदसी ॥ ४ ॥ त्वं

चित्पर्वतं गिरिं शतवन्तं सहस्रिणम्। वि स्तोतृभ्यो रुरोजिथ ॥ ५ ॥ वयमु त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे। अस्माकं काममा पृण ॥ ६ ॥ ४४ ॥ कस्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः। ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ॥ ७ ॥ कस्य स्वित्सवनं वृषा जुजुष्वाँ अव गच्छति। इन्द्रं क उ स्विदा चके ॥ ८ ॥ कं ते दाना असक्षत वृत्रहन्कं सुवीर्या। उक्थे क उ स्विदन्तमः ॥ ९ ॥ अयं ते मानुषे जने सोमः पूरुषु सूयते। तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥ १० ॥ अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः। आर्जीकीये मदिन्तमः ॥ ११ ॥ तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये। एहीमिन्द्र द्रवा पिब ॥ १२ ॥ ४५ ॥

॥ ६५ ॥ १-१२ प्रागाथः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, २, ५, ६, ९, ११, १२ निचृद्गायत्री। ३, ४ गायत्री। ७, ८, १० विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६५ ॥ यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः। आ याहि तूयमाशुभिः ॥ १ ॥ यद्वा प्रस्रवणे दिवो मादयासे स्वर्णरे। यद्वा समुद्रे अन्धसः ॥ २ ॥ आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं हुवे गामिव भोजसे। इन्द्र सोमस्य पीतये ॥ ३ ॥ आ त इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः। रथे वहन्तु बिभ्रतः ॥ ४ ॥ इन्द्र गृणीष उ स्तुषे महाँ उग्र ईशानकृत्। एहि नः सुतं पिब ॥ ५ ॥ सुतावन्तस्त्वा वयं प्रयस्वन्तो हवामहे। इदं नो बर्हिरासदे ॥ ६ ॥ ४६ ॥ यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम्। तं त्वा वयं हवामहे ॥ ७ ॥ इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः। जुषाण इन्द्र तत्पिब ॥ ८ ॥ विश्वाँ अर्यो विपश्चितोऽति ख्यस्तूयमा गहि। अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ ९ ॥ दाता मे पृषतीनां राजा हिरण्यवीनाम्। मा देवा मघवा रिषत् ॥ १० ॥ सहस्रे पृषतीनामधि श्चन्द्रं बृहत्पृथु। शुक्रं हिरण्यमा ददे ॥ ११ ॥ नपातो दुर्गहस्य मे सहस्रेण सुराधसः। श्रवो देवेष्वक्रत ॥ १२ ॥ ४७ ॥

॥ ६६ ॥ १-१५ कलिः प्रागाथ ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१ बृहती। ३, ५, ११, १३ विराड् बृहती। ७ पादनिचृद्बृहती। २, ८, १२ निचृत् पङ्क्तिः। ४, ६ विराट् पङ्क्तिः। १४ पादनिचृत् पङ्क्तिः। १० पङ्क्तिः। ९, १५ अनुष्टुप् ॥ स्वरः-१, ३, ५, ७, ११, १३ मध्यमः। २, ४, ६, ८, १०, १२, १४ पञ्चमः। ९, १५ गान्धारः ॥

॥ ६६ ॥ तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये । बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥ १ ॥ न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदे सुशिप्रमन्धसः । य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् ॥ २ ॥ यः शक्रो मृक्षो अश्व्यो यो वा कीजो हिरण्ययः । स ऊर्वस्य रेजयत्यपावृतिमिन्द्रो गव्यस्य वृत्रहा ॥ ३ ॥ निखातं चिद्यः पुरुसम्भृतं वसूदिद्वपति दाशुषे । वज्री सुशिप्रो हर्यश्व इत्करदिन्द्रः क्रत्वा यथा वशत् ॥ ४ ॥ यद्वावन्थ पुरुष्टुत पुरा चिच्छूर नृणाम् । वयं तत्त इन्द्र सं भरामसि यज्ञमुक्थं तुरं वचः ॥ ५ ॥ ॥ ४८ ॥ सचा सोमेषु पुरुहूत वज्रिवो मदाय द्युक्ष सोमपाः । त्वमिद्धि ब्रह्मकृते काम्यं वसु देष्ठः सुन्वते भुवः ॥ ६ ॥ वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् । तस्मा उ अद्य समना सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ ७ ॥ वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति । सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया ॥ ८ ॥ कदू न्वस्याकृतमिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् । केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा ॥ ९ ॥ कदू महीरधृष्टा अस्य तविषीः कदु वृत्रघ्नो अस्तृतम् । इन्द्रो विश्वान्बेकनाटाँ अहर्दृश उत क्रत्वा पणीँरभि ॥ १० ॥ ४९ ॥ वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र ब्रह्माणि वृत्रहन् । पुरूतमासः पुरुहूत वज्रिवो भृतिं न प्र भरामसि ॥ ११ ॥ पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो हवन्त इन्द्रोतयः । तिरश्चिदर्यः सवना वसो गहि शविष्ठ श्रुधि मे हवम् ॥ १२ ॥ वयं घा ते त्वे इद्विन्द्र विप्रा अपि ष्मसि । नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्डिता ॥ १३ ॥ त्वं नो अस्या अमतेरुत क्षुधोऽभिशस्तेरव स्पृधि । त्वं न ऊती तव चित्रया धिया शिक्षा शचिष्ठ गातुवित् ॥ १४ ॥ सोम इद्वः सुतो अस्तु कलयो मा बिभीतन । अपेदेष ध्वस्मायति स्वयं घैषो अपायति ॥ १५ ॥ ५० ॥

॥ ६७ ॥ १–२१ मत्स्यः सामदो मान्यो वा मैत्रावरुणिर्बहवो वा मत्स्या जालनद्धा ऋषयः ॥ आदित्या देवताः ॥ छन्दः—१–३, ५, ७, ९, १३–१५, २१ निचृद्गायत्री । ४, १० विराड् गायत्री । ६, ८, ११, १२, १६–२० गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६७ ॥ त्यान्नु क्षत्रियाँ अव आदित्यान्याचिषामहे । सुमृळीकाँ अभिष्टये ॥ १ ॥ मित्रो नो अत्यंहतिं वरुणः पर्षदर्यमा । आदित्यासो यथा विदुः ॥ २ ॥ तेषां हि चित्रमुक्थ्यं वरूथमस्ति दाशुषे । आदित्यानामरङ्कृते ॥ ३ ॥ महि वो

महतामवो वरुण मित्रार्यमन् । अवांस्या वृणीमहे ॥ ४ ॥ जीवान्नो अभि धेतनादित्यासः पुरा हथात् । कद्ध स्थ हवनश्रुतः ॥ ५ ॥ ५१ ॥ यद्वः श्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः । तेना नो अधि वोचत ॥ ६ ॥ अस्ति देवा अंहोरुर्वस्ति रत्नमनागसः । आदित्या अद्भुतैनसः ॥ ७ ॥ मा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि । इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी ॥ ८ ॥ मा नो मृचा रिपूणां वृजिनानामविष्यवः । देवा अभि प्र मृक्षत ॥ ९ ॥ उत त्वामदिते मह्यहं देव्युप ब्रुवे । सुमृळीकामभिष्टये ॥ १० ॥ ५२ ॥ पर्षि दीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः । माकिस्तोकस्य नो रिषत् ॥ ११ ॥ अनेहो न उरुव्रज उरूचि वि प्रसर्तवे । कृधि तोकाय जीवसे ॥ १२ ॥ ये मूर्धानः क्षितीनामदब्धासः स्वयशसः । व्रता रक्षन्ते अद्रुहः ॥ १३ ॥ ते न आस्नो वृकाणामादित्यासो मुमोचत । स्तेनं बद्धमिवादिते ॥ १४ ॥ अपो षु ण इयं शरुरादित्या अप दुर्मतिः । अस्मदेत्वजघ्नुषी ॥ १५ ॥ ५३ ॥ शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयम् । पुरा नूनं बुभुज्महे ॥ १६ ॥ शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः । देवाः कृणुथ जीवसे ॥ १७ ॥ तत्सु नो नव्यं सन्यस आदित्या यन्मुमोचति । बन्धाद्बद्धमिवादिते ॥ १८ ॥ नास्माकमस्ति तत्तर आदित्यासो अतिष्कदे । यूयमस्मभ्यं मृळत ॥ १९ ॥ मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरुः । पुरा नु जरसो वधीत् ॥ २० ॥ वि षु द्वेषो व्यंहतिमादित्यासो वि संहितम् । विष्वग्वि वृहता रपः ॥ २१ ॥ ५४ ॥ ४ ॥

॥ ६८ ॥ १–१९ प्रियमेध ऋषिः ॥ १–१३ इन्द्रः । १४–१९ ऋक्षाश्वमेधयोर्दानस्तुतिर्देवता ॥ छन्दः–१ अनुष्टुप् । ४, ७ विराडनुष्टुप् । १० निचृदनुष्टुप् । २, ३, १५ गायत्री । ५, ६, ८, १२, १३, १७, १९ निचृद्गायत्री । ११ विराड्गायत्री ९, १४, १८ पादनिचृद्गायत्री । १६ आर्चीस्वराड् गायत्री ॥ स्वरः–१, ४,७,१० गान्धारः । २, ३, ५, ६, ८, ९, ११–१९ षड्जः ॥

॥ ६८ ॥ आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि । तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्र शविष्ठ सत्पते ॥ १ ॥ तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते । आ पप्राथ महित्वना ॥ २ ॥ यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः । हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ॥ ३ ॥ विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः । एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम् ॥४॥ अभिष्टये सदावृधं स्वर्मीळ्हेषु यं नरः । नाना हवन्त ऊतये ॥ ५ ॥ १ ॥ परोमात्रमृचीषममिन्द्रमुग्रं सुराधसम् । ईशानं चिद्वसूनाम् ॥ ६ ॥

तन्तुमिद्राधसे महइन्द्रं चोदामि पीतयें । यः पूर्व्यामनुष्टुतिमीशे कृष्टीनां नृतुः ॥७॥ न यस्य ते शवसान सुख्यमानंश मर्त्यः । नकिः शवांसि ते नशत् ॥८॥ त्वोतासस्त्वा युजाप्सु सूर्ये महद्धनंम् । जयेम पृत्सु वज्रिवः ॥ ९ ॥ तं त्वा यज्ञेभिरीमहे तं गीर्भिर्गिर्वणस्तम । इन्द्र यथा चिदाविथ वाजेषु पुरुमाय्यम् ॥ १० ॥ २ ॥ यस्य ते स्वादु सुख्यं स्वाद्वी प्रणीतिरद्रिवः । यज्ञो वितन्तसाय्यः ॥ ११ ॥ उरु णस्तन्वे३ तनं उरु क्षयाय नस्कृधि । उरु णो यन्धि जीवसे ॥ १२ ॥ उरुं नृभ्य उरुं गवं उरुं रथाय पन्थाम् । देववीतिं मनामहे ॥ १३ ॥ उप मा षड् द्वाद्वा नरः सोमस्य हर्ष्या । तिष्ठन्ति स्वादुरातयः ॥ १४ ॥ ऋज्राविन्द्रोत आ ददे हरी ऋक्षस्य सूनवि । आश्वमेधस्य रोहिता ॥ १५ ॥ ३ ॥ सुरथाँ आतिथिग्वे स्वभीशूँरार्क्षे । आश्वमेधे सुपेशसः ॥ १६ ॥ षळश्वाँ आतिथिग्व इन्द्रोते वधूमतः । सचा पूतक्रतौ सनम् ॥ १७ ॥ ऐषु चेतद्वृषण्वत्यन्तर्ऋज्रेष्वरुषी । स्वभीशुः कशावती ॥ १८ ॥ न युष्मे वाजबन्धवो निनित्सुश्चन मर्त्यः । अवद्यमधि दीधरत् ॥ १९ ॥ ४ ॥

॥ ६९ ॥ १-१८ प्रियमेध ऋषिः ॥ देवताः-१-१०, १३-१८ इन्द्रः । ११ विश्वे देवाः । ११, १२ वरुणः ॥ छन्दः-१, ३, १० विराडनुष्टुप् । ७ ९, १२, १३, १५ निचृदनुष्टुप् । ८ पादनिचृदनुष्टुप् । १४ अनुष्टुप् । २ निचृदुष्णिक् । ४, ५ निचृद्गायत्री । ६ गायत्री । ११ पङ्क्तिः । १६ निचृत् पङ्क्तिः । १७ बृहती । १८ विराड् बृहती ॥ स्वरः-१, ३, ७-१०, १२-१५ गान्धारः । २ ऋषभः । ४-६ षड्जः । ११, १६ पञ्चमः । १७, १८ मध्यमः ॥

॥६९॥ प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं मन्दद्वीरायेन्दवे । धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥ १ ॥ नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम् । पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि ॥ २ ॥ ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः । जन्मन्देवानां विशस्त्रिष्वा रोचने दिवः ॥ ३ ॥ अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥ आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि । यत्राभि संनवामहे ॥ ५ ॥ ५ ॥ इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु । यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥ ६ ॥ उद्यद्ब्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि । मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ॥ ७ ॥ अर्चन्त प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ॥ ८ ॥ अव स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत् । पिङ्गा

परि चनिष्कदृदिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ॥ ९ ॥ आ यत्पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः । अपस्फुरं गृभायत सोममिन्द्राय पातवे ॥ १० ॥ ६ ॥ अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत । वरुण इदिह क्षयत्तमापो अभ्यनूषत वत्सं संशिश्वरीरिव ॥ ११ ॥ सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः । अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्म्यं सुषिरामिव ॥ १२ ॥ यो व्यतीँरफाणयत्सुयुक्ताँ उप दाशुषे । तक्वो नेता तदिद्वपुरुपमा यो अमुच्यत ॥ १३ ॥ अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः । भिनत्कनीन ओदनं पच्यमानं परो गिरा ॥ १४ ॥ अर्भको न कुमारकोऽधि तिष्ठन्नवं रथम् । स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्रतुम् ॥ १५ ॥ आ तू सुशिप्र दम्पते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् । अध द्युक्षं सचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् ॥ १६ ॥ तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते । अर्थं चिदस्य सुधितं यदेतव आवर्तयन्ति दावने ॥ १७ ॥ अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम् । पूर्वामनु प्रयतिं वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत ॥ १८ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ७० ॥ १-१५ पुरुहन्मा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्बृहती । ५, ७ विराड् बृहती । ३ निचृद् बृहती । ८, १० आर्ची स्वराड् बृहती । १२ आर्ची बृहती । ९, ११ बृहती । २, ६ निचृत् पङ्क्तिः । ४ पङ्क्तिः । १३ उष्णिक् । १५ निचृदुष्णिक् । १४ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७-१२ मध्यमः । २, ४, ६ पञ्चमः । १३, १५ ऋषभः । १४ गान्धारः ॥

॥ ७० ॥ यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः । विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥ इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्तरि । हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः ॥ २ ॥ नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् । इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्ण्वोजसम् ॥ ३ ॥ अषाळ्हमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुज्रयः । सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामो अनोनवुः ॥ ४ ॥ यद्द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः । न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ ५ ॥ ८ ॥ आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ठ शवसा । अस्माँ अव मघवन्गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ॥ ६ ॥ न सीमदेव आपदिषं दीर्घायो मर्त्यः । एतग्वा चिद्य एतशा युयोजते हरी इन्द्रो युयोजते ॥ ७ ॥ तं वो महो महाय्यमिन्द्रं दानाय सक्षणिम् । यो गाधेषु य आरणेषु हव्यो वाजेष्वस्ति हव्यः ॥ ८ ॥ उदू षु णो वसो महे मृशस्व शूर राधसे । उदू षु मह्यै मघवन्मघत्तय उदिन्द्र श्रवसे महे ॥ ९ ॥

त्वं न॑ इन्द्र ऋतयुस्त्वानिदो नि तृम्पसि । मध्ये॑ वसिष्व तुविनृम्णोर्वोर्नि दासं शि॑श्नथो हथैः ॥ १० ॥ ६ ॥ अन्यव्रतममानुषमयज्वानमदेवयुम् । अव स्वः सखा दुधुवीत पर्वतः सुघ्नाय दस्युं पर्वतः ॥ ११ ॥ त्वं न॑ इन्द्रासां हस्ते॑ शविष्ठ दावने॑ । धानानां न सं गृभायास्मयुर्द्विः सं गृभायास्मयुः ॥ १२ ॥ सखायः क्रतु॑मिच्छत कथा राधाम शरस्य॑ । उप॑स्तुतिं भोजः सूरियो अह्रयः ॥ १३ ॥ भूरि॑भिः समह ऋषिभिर्बर्हिष्मद्भिः स्तविष्यसे । यदित्थमेकमेकमिच्छर वत्सान्परा॑दर्दः ॥ १४ ॥ कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यो वत्सं नस्त्रिभ्य आनयत् । अजां सूरिर्न धातवे ॥ १५ ॥ १० ॥

॥ ७१ ॥ १–१५ सुदीति पुरुमीळ्हौ तयोर्वान्यतर ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ४, ७ विराड् गायत्री । २, ६, ८, ६ निचृद् गायत्री । ३, ५ गायत्री । १०, १३ निचृद् बृहती । १४ विराड् बृहती । १२ पादनिचृद् बृहती । ११, १५ बृहती ॥ स्वरः—१–६ षड्जः । १०–१५ मध्यमः ॥

॥ ७१ ॥ त्वं नो॑ अग्ने महोभिः पाहि विश्व॑स्या अरा॑तेः । उत द्विषो मर्त्य॑स्य ॥ १ ॥ नहि मन्युः पौरु॑षेय ईशे हि वः प्रियजात । त्वमिद॑सि क्षपावान् ॥२॥ स नो विश्वे॑भिर्देवेभिरूर्जो नपाद्भद्रशोचे । रयिं देहि विश्ववा॑रम् ॥ ३ ॥ न त॑मग्ने अरा॑तयो मर्तं युवन्त रायः । यं त्राय॑से दाश्वांस॑म् ॥ ४ ॥ यं त्वं विप्र मेध॑सातावग्ने हिनोषि धना॑य । स तवोती गोषु गन्ता ॥ ५ ॥ ११ ॥ त्वं रयिं पुरुवीरमग्ने दाशुषे मर्ता॑य । प्र णो नय वस्यो अच्छ॑ ॥ ६ ॥ उरुष्या णो मा परा॑ दा अघायते जा॑तवेदः । दुराध्ये॑ मर्ता॑य ॥ ७ ॥ अग्ने माकि॑ष्टे देवस्य॑ राति॑मदे॑वो युयोत । त्वमी॑शिषे वसू॑नाम् ॥ ८ ॥ स नो वस्व उप॑ मास्यूर्जो नपान्मा॑हिनस्य । सखे॑ वसो जरितृभ्यः ॥ ६ ॥ अच्छा॑ नः शीरशो॑चिषं गिरो॑ यन्तु दर्शतम् । अच्छा॑ यज्ञासो नम॑सा पुरूवसुं पुरुप्रशस्तमूतये॑ ॥ १० ॥ १२ ॥ अग्निं॑ सूनुं सह॑सो जातवे॑दसं दानाय वार्या॑णाम् । द्विता यो भूदमृतो मर्त्ये॑ष्वा होता॑ मन्द्र॑तमो विशि ॥ ११ ॥ अग्निं वो देवयज्ययाग्निं प्रयत्य॑ध्वरे । अग्निं धीषु प्रथम॑मग्निमर्व॑त्यग्निं क्षैत्राय साध॑से ॥ १२ ॥ अग्निरिषां सख्ये द॑दातु न ईशे यो वार्या॑णाम् । अग्निं तोके तन॑ये शश्व॑दीमहे वसुं सन्तं॑ तनूपाम् ॥ १३ ॥ अग्नि॑मीळिष्वाव॑से गाथा॑भिः शीरशो॑चिषम् । अग्निं राये पुरुमीळ्ह श्रुतं नरोऽग्निं सु॑दीतये॑ छर्दिः ॥ १४ ॥ अग्निं द्वेषो योत॑वै नो गृणीमस्यग्निं शं योश्च दात॑वे । विश्वा॑सु विक्ष्व॑वितेव हव्यो भुव॑द्वस्तुर्ऋषूणाम् ॥ १५ ॥ १३ ॥

॥ ७२ ॥ १—१८ हर्यतः प्रागाथ ऋषिः ॥ अग्निर्हवींषि वा देवता ॥ छन्दः—१, ३, ८—१०, १२, १६ गायत्री । २ पादनिचृद् गायत्री । ४–६ ११, १३—१५, १७ निचृद् गायत्री । ७, १८ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥७२॥ हविष्कृणुध्वमा गमदध्वर्युर्वनते पुनः । विद्वाँ अस्य प्रशासनम् ॥१॥ नि तिग्ममभ्यंशुं सीदद्धोता मनावधि । जुषाणो अस्य सख्यम् ॥ २ ॥ अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया । गृभ्णन्ति जिह्वया ससम् ॥ ३ ॥ जाम्यतीतपे धनुर्वयोधा अरुहद्वनम् । दृषदं जिह्वयावधीत् ॥ ४ ॥ चरन्वत्सो रुशन्निह निदातारं न विन्दते । वेति स्तोतव अम्ब्यम् ॥ ५ ॥ १४ ॥ उतो न्वस्य यन्महदश्वावद्योजनं बृहत् । दामा रथस्य ददृशे ॥ ६ ॥ दुहन्ति सप्तैकामुप द्वा पञ्च सृजतः । तीर्थे सिन्धोरधि स्वरे ॥ ७ ॥ आ दशभिर्विवस्वत इन्द्रः कोशमचुच्यवीत् । खेदया त्रिवृता दिवः ॥ ८ ॥ परि त्रिधातुरध्वरं जूर्णिरेति नवीयसी । मध्वा होतारो अञ्जते ॥ ९ ॥ सिञ्चन्ति नमसावतमुच्चाचक्रं परिज्मानम् । नीचीनबारमक्षितम् ॥ १० ॥ १५ ॥ अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु । अवतस्य विसर्जने ॥ ११ ॥ गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा । उभा कर्णा हिरण्यया ॥ १२ ॥ आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम् । रसा दधीत वृषभम् ॥ १३ ॥ ते जानत स्वमोक्यंसं वत्सासो न मातृभिः । मिथो नसन्त जामिभिः ॥ १४ ॥ उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि । इन्द्रे अग्ना नमः स्वः ॥ १५ ॥ १६ ॥ अधुक्षत्पिप्युषीमिषमूर्जं सप्तपदीमरिः । सूर्यस्य सप्त रश्मिभिः ॥ १६ ॥ सोमस्य मित्रावरुणोदिता सूर आ ददे । तदातुरस्य भेषजम् ॥ १७ ॥ उतो न्वस्य यत्पदं हर्यतस्य निधान्यम् । परि द्यां जिह्वयातनत् ॥ १८ ॥ १७ ॥

॥ ७३ ॥ १—१८ गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ७, ९—११, १६–१८ गायत्री । ३, ८, १२—१५, निचृद् गायत्री । ६ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७३ ॥ उदीराथामृतायते युञ्जाथामश्विना रथम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १ ॥ निमिषश्चिज्जवीयसा रथेना यातमश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥२॥ उप स्तृणीतमत्रये हिमेन घर्ममश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ३ ॥ कुह स्थः कुह जग्मथुः कुह श्येनेव पेतथुः । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ४ ॥ यदद्य कर्हि कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ५ ॥ १८ ॥ अश्विना याम-

दूतमा नेदिष्ठं याम्याप्यम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ६ ॥ अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ७ ॥ वरेथे अग्निमातपो वदते वल्ग्वत्रये । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ८ ॥ प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्नेरशायत । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ९ ॥ इहा गतं वृषण्वसू शृणुतं म इमं हवम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १० ॥ १९ ॥ किमिदं वां पुराणवज्जरतोरिव शस्यते । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ११ ॥ समानं वां सजात्यं समानो बन्धुरश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १२ ॥ यो वां रजांस्यश्विना रथो वियाति रोदसी । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १३ ॥ आ नो गव्येभिरश्व्यैः सहस्रैरुप गच्छतम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १४ ॥ मा नो गव्येभिरश्व्यैः सहस्रेभिरति ख्यतम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १५ ॥ अरुणप्सुरुषा अभूदकर्ज्योतिर्ऋतावरी । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १६ ॥ अश्विना सु विचाकशद्वृक्षं परशुमाँ इव अन्ति षद्भूतु वामवः ॥१७॥ पुरं न धृष्णवा रुज कृष्णया बाधितो विशा । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १८ ॥ २० ॥

॥ ७४ ॥ १—१५ गोपवन आत्रेय ऋषिः ॥ देवताः-१-१२ अग्निः । १३-१५ श्रुतर्वण आर्क्ष्यस्य दानस्तुतिः । छन्दः-१,१० निचृदनुष्टुप् । ४,१३-१५ विराडनुष्टुप् । ७ पादनिचृदनुष्टुप् । २, ११ गायत्री । ५, ६, ८, ९, १२ नि-निचृद् गायत्री । ३ विराड् गायत्री ॥ स्वरः—१, ४, ७, १०, १३-१५ गान्धारः । २, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२ षड्जः ॥

॥ ७४ ॥ विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् । अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥ १ ॥ यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् । प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः ॥ २ ॥ पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता । हव्यान्यैरयद्दिवि ॥ ३ ॥ आगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् । यस्य श्रुतर्वा बृहन्नार्क्षो अनीक एधते ॥ ४ ॥ अमृतं जातवेदसं तिरस्तमांसि दर्शतम् । घृताहवनमीड्यम् ॥ ५ ॥ २१ ॥ सबाधो यञ्जना इमेऽग्निं हव्येभिरीळते । जुह्वानासो यतस्रुचः ॥ ६ ॥ इयं ते नव्यसी मतिरग्ने अधाय्यस्मदा । मन्द्र सुजात सुक्रतोऽमूर दस्मातिथे ॥ ७ ॥ सा ते अग्ने शन्तमा चनिष्ठा भवतु प्रिया । तया वर्धस्व सुष्टुतः ॥ ८ ॥ सा द्युम्नैर्द्युम्निनी बृहदुपोप श्रवसि श्रवः । दधीत वृत्रतूर्ये ॥ ९ ॥ अश्वमिद्गां रथप्रां त्वेषमिन्द्रं न सत्पतिम् । यस्य श्रवांसि तूर्वथ पन्यम्पन्यञ्च कृष्टयः ॥ १० ॥ २२ ॥ यं त्वा गोपवनो गिरा चनिष्ठदग्ने अङ्गिरः । स पावक

श्रुधी हवम् ॥ ११ ॥ यं त्वा जनास ईळते सबाधो वाजसातये । स बोधि वृत्र-
तूर्ये ॥ १२ ॥ अहं हुवान आर्क्षे श्रुतर्वणि मदच्युति । शर्धांसीव स्तुकाविनां
मृक्षा शीर्षा चतुर्णाम् ॥ १३ ॥ मां चत्वार आशवः शविष्ठस्य द्रवित्नवः ।
सुरथासो अभि प्रयो वक्षन्वयो न तुग्र्यम् ॥ १४ ॥ सत्यमित्त्वा महेनदि परु-
ष्ण्यव देदिशम् । नेमापो अश्वदातरः शविष्ठादस्ति मर्त्यः ॥ १५ ॥ २३ ॥

॥ ७५ ॥ १-१६ विरूप ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ४, ५, ७, ९, ११ निचृद् गायत्री । २, ३, १५ विराड् गायत्री । ८ आर्ची स्वराड् गायत्री । ६, १०, १२—१४, १६ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७५ ॥ युक्ष्वा हि देवहूतमाँ अश्वाँ अग्ने रथीरिव । नि होता पूर्व्यः सदः
॥ १ ॥ उत नो देव देवाँ अच्छा वोचो विदुष्टरः । श्रद्विश्वा वार्या कृधि ॥ २॥
त्वं ह यद्यविष्ठ्य सहसः सूनवाहुत । ऋतावा यज्ञियो भुवः ॥ ३ ॥ अयमग्निः
सहस्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः । मूर्धा कवी रयीणाम् ॥ ४ ॥ तं नेमिमृभवो
यथा नमस्व सहूतिभिः । नेदीयो यज्ञमङ्गिरः ॥ ५ ॥ २४ ॥ तस्मै नूनमभिद्यवे
वाचा विरूप नित्यया । वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम् ॥ ६ ॥ कमु ष्विदस्य सेनया-
ग्नेरपाकचक्षसः । पणिं गोषु स्तरामहे ॥ ७ ॥ मा नो देवानां विशः प्रस्नातीरि-
वोस्राः । कृशं न हासुरघ्न्याः ॥ ८ ॥ मा नः समस्य दूढ्यः परिद्वेषसो अं-
हतिः । ऊर्मिर्न नावमा वधीत् ॥ ९ ॥ नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः ।
अमैरमित्रमर्दय ॥ १० ॥ २५ ॥ कुवित्सु नो गविष्टयेऽग्ने संवेषिषो रयिम् ।
उरुकृदुरु णस्कृधि ॥ ११ ॥ मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा । संवर्गं
सं रयिं जय ॥ १२ ॥ अन्यमस्मद्भिया इयमग्ने सिषक्तु दुच्छुना । वर्धा नो अ-
मवच्छवः ॥ १३ ॥ यस्याजुषन्नमस्विनः शमीमदुर्मखस्य वा । तं घेदग्निर्वृधाव-
ति ॥ १४ ॥ परस्या अधि संवतोऽवराँ अभ्या तर । यत्राहमस्मि ताँ अव ॥१५॥
विद्मा हि ते पुरा वयमग्ने पितुर्यथावसः । अधा ते सुम्नमीमहे ॥ १६ ॥ २६ ॥

॥ ७६ ॥ १—१२ कुरुसुतिः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ८—१२ गायत्री । ३, ४, ७ निचृद् गायत्री॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७६ ॥ इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोजसा । मरुत्वन्तं न वृञ्जसे ॥१॥
अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छिरः । वज्रेण शतपर्वणा ॥ २ ॥ वावृ-

धानो मरुत्सखेन्द्रो वि वृत्रमैरयत् । सृजन्त्समुद्रिया अपः ॥ ३ ॥ अयं ह येन वा इदं स्वर्मरुत्वता जितम् । इन्द्रेण सोमपीतये ॥ ४ ॥ मरुत्वन्तमृजीषिणमोजस्वन्तं विरप्शिनम् । इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ॥ ५ ॥ इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ ६ ॥ २७ ॥ मरुत्वाँ इन्द्र मीढ्वः पिबा सोमं शतक्रतो । अस्मिन्यज्ञे पुरुष्टुत ॥ ७ ॥ तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते सुताः सोमासो अद्रिवः । हृदा हूयन्त उक्थिनः ॥ ८ ॥ पिबेदिन्द्र मरुत्सखा सुतं सोमं दिविष्टिषु । वज्रं शिशान ओजसा ॥ ९ ॥ उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः । सोममिन्द्र चमूसुतम् ॥ १० ॥ अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम् । इन्द्र यद्दस्युहाभवः ॥ ११ ॥ वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम् । इन्द्रात्परि तन्वं ममे ॥ १२ ॥ २८ ॥

॥ ७७ ॥ १-११ कुरुसुतिः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ३, ४, ७, ८ गायत्री । २, ५, ६, ९ निचृद् गायत्री । १० निचृद् बृहती । ११ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-९ षड्जः । १० मध्यमः । ११ पञ्चमः ॥

॥ ७७ ॥ जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि पृच्छदिति मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ १ ॥ आदीं शवस्यब्रवीदौर्णवाभमहीशुवम् । ते पुत्र सन्तु निष्टुरः ॥ २ ॥ समित्तान्वृत्रहाखिदत्खे अराँ इव खेदया । प्रवृद्धो दस्युहाभवत् ॥ ३ ॥ एकया प्रतिधापिबत्साकं सरांसि त्रिंशतम् । इन्द्रः सोमस्य काणुका ॥ ४ ॥ अभि गन्धर्वमतृणदबुध्नेषु रजःस्वा । इन्द्रो ब्रह्मभ्य इद्वृधे ॥ ५ ॥ २९ ॥ निराविध्यद्गिरिभ्य आ धारयत्पक्वमोदनम् । इन्द्रो बुन्दं स्वाततम् ॥ ६ ॥ शतब्रध्न इषुस्तव सहस्रपर्ण एक इत् । यमिन्द्र चकृषे युजम् ॥ ७ ॥ तेन स्तोतृभ्य आ भर नृभ्यो नारिभ्यो अत्तवे । सद्यो जात ऋभुष्ठिर ॥ ८ ॥ एता च्यौत्नानि ते कृता वर्षिष्ठानि परीणसा । हृदा वीड्वधारयः ॥ ९ ॥ विश्वेत्ता विष्णुराभरदुरुक्रमस्त्वेषितः । शतं महिषान्क्षीरपाकमोदनं वराहमिन्द्र एमुषम् ॥ १० ॥ तुविक्षं ते सुकृतं सूमयं धनुः साधुर्बुन्दो हिरण्ययः । उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृत ऋदूपे चिदृदूवृधा ॥ ११ ॥ ३० ॥

॥ ७८ ॥ १—१० कुरुसुतिः काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ३ निचृद्गायत्री । २, ६—९ विराड् गायत्री । ४, ५ गायत्री । १० बृहती ॥ स्वरः-१-९ षड्जः । १० मध्यमः ॥

॥ ७८ ॥ पुरोळाशं नो अन्धस इन्द्र सहस्रमा भर । शता च शूर गोनाम् ॥१॥ आ नो भर व्यञ्जनं गामश्वमभ्यञ्जनम् । सचा मना हिरण्यया ॥ २ ॥ उत नः कर्णशोभना पुरूणि धृष्णवा भर । त्वं हि शृण्विषे वसो ॥ ३ ॥ नकीं वृधीक इन्द्र ते न सुषा न सुदा उत । नान्यस्त्वच्छूर वाघतः ॥ ४ ॥ नकीमिन्द्रो निकर्तवे न शक्रः परिशक्तवे । विश्वं शृणोति पश्यति ॥ ५ ॥ ३१ ॥ स मन्युं मर्त्यानामदब्धो नि चिकीषते । पुरा निदश्चिकीषते ॥ ६ ॥ क्रत्व इत्पूर्णमुदरं तुरस्यास्ति विधतः । वृत्रघ्नः सोमपाव्नः ॥ ७ ॥ त्वे वसूनि सङ्गता विश्वा च सोम सौभगा । सुदात्वपरिह्वृता ॥ ८ ॥ त्वामिद्यवयुर्मम कामो गव्युर्हिरण्ययुः । त्वामश्वयुरेषते ॥ ९ ॥ तवेदिन्द्राहमाशसा हस्ते दात्रं चना ददे । दिनस्य वा मघवन्त्सम्भृतस्य वा पूर्धि यवस्य काशिना ॥ १० ॥ ३२ ॥

॥ ७९ ॥ १–९ कृत्नुर्भार्गव ऋषिः ॥ सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ६ निचृद्गायत्री । ३ विराड् गायत्री । ४, ५, ७, ८ गायत्री । ९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः १–८ षड्जः । ९ गान्धारः ॥

॥ ७९ ॥ अयं कृत्नुरगृभीतो विश्वजिदुद्भिदित्सोमः । ऋषिर्विप्रः काव्येन ॥ १ ॥ अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत्तुरम् । प्रेमन्धः ख्यन्निः श्रोणो भूत् ॥ २॥ त्वं सोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः । उरु यन्तासि वरूथम् ॥३॥ त्वं चित्ती तव दक्षैर्दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् । यावीरघस्य चिद्द्वेषः ॥ ४ ॥ अर्थिनो यन्ति चेदर्थं गच्छानिद्ददुषो रातिम् । ववृज्युस्तृष्यतः कामम् ॥ ५ ॥३३॥ विदद्यत्पूर्व्यं नष्टमुदीमृतायुमीरयत् । प्रेमायुस्तारीदतीर्णम् ॥ ६ ॥ सुशेवो नो मृळयाकुरदृप्तक्रतुरवातः । भवा नः सोम शं हृदे ॥ ७॥ मा नः सोम सं वीविजो मा वि बीभिषथा राजन् । मा नो हार्दि त्विषा वधीः ॥ ८ ॥ अव यत्स्वे सधस्थे देवानां दुर्मतीरीक्षे। राजन्नप द्विषः सेध मीढ्वो अप स्रिधः सेध॥९॥३४॥

॥ ८० ॥ १–१० एकद्यूर्नौधस ऋषिः ॥ १–९ इन्द्रः । १० देवा देवता ॥ छन्दः–१ विराड् गायत्री । २, ३, ५, ८ निचृद् गायत्री । ४, ६, ७, ९, १० गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ८० ॥ नह्यन्यं बळाकरं मर्डितारं शतक्रतो । त्वं न इन्द्र मृळय ॥ १ ॥ यो नः शश्वत्पुराविथामृध्रो वाजसातये । स त्वं न इन्द्र मृळय ॥ २ ॥ किमङ्ग

रध्रचोदनः सुन्वानस्यावितेदसि । कुवित्स्विन्द्रणः शकः ॥ ३ ॥ इन्द्र प्र णो रथमव पश्चाच्चित्सन्तमद्रिवः । पुरस्तादेनं मे कृधि ॥ ४ ॥ हन्तो नु किमाससे प्रथमं नो रथं कृधि । उपमं वाजयु श्रवः ॥ ५ ॥ ३५ ॥ अवा नो वाजयुं रथं सुकरं ते किमित्परि । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृधि ॥ ६ ॥ इन्द्र दृह्यस्व पूरसि भद्रा त एति निष्कृतम् । इयं धीर्ऋत्वियावती ॥ ७ ॥ मा सीमवद्य आ भागुर्वी काष्ठा हितं धनम् । अपावृक्ता अरत्नयः ॥ ८ ॥ तुरीयं नाम यज्ञियं यदा करस्तदुश्मसि । आदित्पतिर्न ओहसे ॥ ९ ॥ अवीवृधद्वो अमृता अमन्दीदेकद्यूर्देवा उत याश्च देवीः । तस्मा उ राधः कृणुत प्रशस्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ ॥ १० ॥ ३६ ॥ ८ ॥

॥ ८१ ॥ १–९ कुसीदी काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ५, ८ गायत्री । २, ३, ६, ७ निचृद् गायत्री । ४, ९ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ८१ ॥ आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सङ्गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन ॥ १ ॥ विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् । तुविमात्रमवोभिः ॥२॥ नहि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम् । भीमं न गां वारयन्ते ॥ ३ ॥ एतो न्विन्द्रं स्तवामेशानं वस्वः स्वराजम् । न राधसा मर्धिषन्नः ॥ ४ ॥ प्र स्तोषदुप गासिषच्छ्रवत्साम गीयमानम् । अभि राधसा जुगुरत् ॥ ५ ॥ ३७ ॥ आ नो भर दक्षिणेनाभि सव्येन प्र मृश । इन्द्र मा नो वसोर्निर्भाक् ॥ ६ ॥ उप क्रमस्वा भर धृषता धृष्णो जनानाम् । अदाशूष्टरस्य वेदः ॥ ७ ॥ इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः । अस्माभिः सु तं सनुहि ॥ ८ ॥ सद्योजुवस्ते वाजा अस्मभ्यं विश्वश्चन्द्राः । वशैश्च मक्षू जरन्ते ॥ ९ ॥ ३८ ॥ ५ ॥

॥ ८२ ॥ १–९ कुसीदी काण्व ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ७, ९ निचृद् गायत्री । २, ५, ६, ८ गायत्री । ३, ४ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥८२॥ आ प्र द्रव परावतोऽर्वावतश्च वृत्रहन् । मध्वः प्रति प्रभर्मणि ॥ १ ॥ तीव्राः सोमास आ गहि सुतासो मादयिष्णवः । पिबा दधृग्यथोचिषे ॥ २ ॥ इषा मन्दस्वादु तेऽरं वराय मन्यवे । भुवत्त इन्द्र शं हृदे ॥३॥ आ त्वशत्रवा गहि न्युक्थानि च हूयसे । उपमे रोचने दिवः ॥ ४ ॥ तुभ्यायमद्रिभिः सुतो गोभिः श्रीतो मदाय कम् । प्र सोम इन्द्र हूयते ॥ ५ ॥ १ ॥ इन्द्र श्रुधि सु मे हवमस्मे सुतस्य

गोमतः । वि प्रीतिं तृप्तिमश्नुहि ॥ ६ ॥ य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः । पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥ ७ ॥ यो अप्सु चन्द्रमा इव सोमश्चमूषु ददृशे । पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥ ८ ॥ यं ते श्येनः पदाभरत्तिरो रजांस्यस्पृतम् । पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥ ६ ॥ २ ॥

॥ ८३ ॥ १-६ कुसीदी काण्व ऋषिः ॥ विश्वे देवताः ॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ६ गायत्री । ३ निचृद्गायत्री । ४ पादनिचृद्गायत्री । ७ आर्ची स्वराड् गायत्री । ८ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ८३ ॥ देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम् । वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥१॥ ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा । वृधासश्च प्रचेतसः ॥ २ ॥ अति नो विष्पिता पुरु नौभिरपो न पर्षथ । यूयमृतस्य रथ्यः ॥ ३ ॥ वामं नो अस्त्वर्यमन्वामं वरुण शंस्यम् । वामं ह्यावृणीमहे ॥ ४ ॥ वामस्य हि प्रचेतस ईशानासो रिशादसः । नेमादित्या अघस्य यत् ॥ ५ ॥ ३ ॥ वयमिद्वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना । देवा वृधाय हूमहे ॥ ६ ॥ अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम् । इता मरुतो अश्विना ॥ ७ ॥ प्र भ्रातृत्वं सुदानवोऽध द्विता समान्या । मातुर्गर्भे भरामहे ॥ ८ ॥ यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । अधा चिद्व उत ब्रुवे ॥ ६ ॥ ४ ॥

॥ ८४ ॥ १—६ उशना काव्य ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री । २ विराड् गायत्री । ३, ६ निचृद्गायत्री, ४, ५, ७—६ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ८४ ॥ प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । अग्निं रथं न वेद्यम् ॥ १ ॥ कविमिव प्रचेतसं यं देवासो अध द्विता । नि मर्त्येष्वादधुः ॥ २ ॥ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः । रक्षा तोकमुत त्मना ॥ ३ ॥ कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् । वराय देव मन्यवे ॥ ४ ॥ दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कदु वोच इदं नमः ॥५॥ ५ ॥ अधा त्वं हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः । वाजद्रविणसो गिरः ॥ ६ ॥ कस्य नूनं परीणसो धियो जिन्वसि दम्पते । गोषाता यस्य ते गिरः ॥ ७ ॥ तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु । स्वेषु क्षयेषु वाजिनम् ॥८॥ क्षेति क्षेमेभिः साधुभिर्नकिर्यं घ्नन्ति हन्ति यः । अग्ने सुवीर एधते ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ ८५ ॥ १-६ कृष्ण ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ६ विराड् गायत्री । २, ५, ७ निचृद् गायत्री । ३, ४, ६, ८ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ८५ ॥ आ मे हवं नासत्याश्विना गच्छतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ १ ॥ इमं मे स्तोममश्विनेमं मे शृणुतं हवम् । मध्वः सोमस्य पीतये ॥२॥ अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवसू । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ३ ॥ शृणुतं जरितुर्हवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा । मध्वः सोमस्य पीतये ॥४॥ छर्दिर्यन्तमदाभ्यं विप्राय स्तुवते नरा । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ५ ॥ ७ ॥ गच्छतं दाशुषो गृहमित्था स्तुवतो अश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ६ ॥ युञ्जाथां रासभं रथे वीड्वङ्गे वृषण्वसू । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ७ ॥ त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातमश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ८ ॥ नू मे गिरो नासत्याश्विना प्रावतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ९ ॥ ८ ॥

॥ ८६ ॥ १—५ कृष्णो विश्वको वा कार्ष्णिर्ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ३ विराड् जगती । २, ४, ५ निचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ८६ ॥ उभा हि दस्रा भिषजा मयोभुवोभा दक्षस्य वचसो बभूवथुः । ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ १ ॥ कथा नूनं वां विमना उप स्तवद्युवं धियं ददथुर्वस्यइष्टये । ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ २ ॥ युवं हि ष्मा पुरुभुजेममेधतुं विष्णाप्वे ददथुर्वस्यइष्टये । ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ३ ॥ उत त्यं वीरं धनसामृजीषिणं दूरे चित्सन्तमवसे हवामहे । यस्य स्वादिष्ठा सुमतिः पितुर्यथा मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ४ ॥ ऋतेन देवः सविता शमायत ऋतस्य शृङ्गमुर्विया वि पप्रथे । ऋतं सासाह महि चित्पृतन्यतो मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ५ ॥ ९ ॥

॥ ८७ ॥ १-६ कृष्णो द्युम्नीको वा वासिष्ठः प्रियमेधो वा ऋषिः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ३ बृहती । ५ निचृद् बृहती । २, ४, ६ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः । २, ४, ६ पञ्चमः ॥

॥ ८७ ॥ द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना क्रिविर्न सेक आ गतम् । मध्वः सुतस्य स दिवि प्रियो नरा पातं गौराविवेरिणे ॥ १ ॥ पिबतं घर्मं मधुमन्तमश्विना

बर्हिः सीदतं नरा । ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ नि पातं वेदसा वयः ॥२॥ आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत । ता वर्तिर्यातमुप वृक्तबर्हिषो जुष्टं यज्ञं दिविष्टिषु ॥ ३ ॥ पिबतं सोमं मधुमन्तमश्विना बर्हिः सीदतं सुमत् । ता वावृधाना उप सुष्टुतिं दिवो गन्तं गौराविवेरिणम् ॥ ४ ॥ आ नूनं यातमश्विनाश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः । दस्रा हिरण्यवर्तनी शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ॥ ५ ॥ वयं हि वां हवामहे विपन्यवो विप्रासो वाजसातये । ता वल्गू दस्रा पुरुदंससा धियाश्विना श्रुष्ट्या गतम् ॥ ६ ॥ १० ॥

॥ ८८ ॥ १—६ नोधा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३ बृहती । ५ निचृद्बृहती । २, ४ पङ्क्तिः । ६ विराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः । २, ४, ६ पञ्चमः ॥

॥ ८८ ॥ तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः । अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ १ ॥ द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् । क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ २ ॥ न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीळवः । यद्दित्ससि स्तुवते मावते वसु नकिष्टदा मिनाति ते ॥ ३ ॥ योद्धासि क्रत्वा शवसोत दंसना विश्वा जाताभि मज्मना । आ त्वायमर्क ऊतये ववर्तति यं गोतमा अजीजनन् ॥ ४ ॥ प्र हि रिरिक्ष ओजसा दिवो अन्तेभ्यस्परि । न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवमनु स्वधां ववक्षिथ ॥ ५ ॥ नकिः परिष्टिर्मघवन्मघस्य ते यद्दाशुषे दशस्यसि । अस्माकं बोध्युचथस्य चोदिता मंहिष्ठो वाजसातये ॥ ६ ॥ ११ ॥

॥ ८९ ॥ १—७ नृमेध पुरुमेधावृषी ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ७ बृहती । ३ निचृद्बृहती । २ पाद निचृत्पङ्क्तिः । ४ विराट् पङ्क्तिः । ५ विराडनुष्टुप् । ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ७ मध्यमः । २, ४ पञ्चमः । ५, ६ गान्धारः ॥

॥ ८९ ॥ बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् । येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ॥ १ ॥ अपाधमदभिशस्तीरशस्तिहाथेन्द्रो द्युम्न्याभवत् । देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण ॥ २ ॥ प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत । वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥ ३ ॥ अभि प्र भर धृषता धृषन्मनः श्रवश्चित्ते असद्बृहत् । अर्षन्त्वापो जवसा वि मातरो हनो वृत्रं जया स्वः ॥ ४ ॥ यज्जायथा अपूर्व्य मघवन्वृत्रहत्याय । तत्पृथिवीमप्रथय-

स्तर्दस्तभ्ना उत द्याम् ॥ ५ ॥ तत्ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृतिः । तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम् ॥ ६ ॥ आमासु पक्वमैरय आ सूर्यं रोहयो दिवि । घर्मं न सामन्तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत् ॥ ७ ॥ १२ ॥

॥ ६० ॥ १—६ नृमेधपुरुमेधावृषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती । ३ विराड् बृहती । ५ पादनिचृद्बृहती । २, ४ पादनिचृत् पङ्क्तिः । ६ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः । २, ४, ६ गान्धारः ॥

॥ ६० ॥ आ नो विश्वासु हव्य इन्द्रः समत्सु भूषतु । उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः ॥ १ ॥ त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत् । तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः ॥ २ ॥ ब्रह्मा त इन्द्र गिर्वणः क्रियन्ते अनतिद्भुता । इमा जुषस्व हर्यश्व योजनेन्द्र या ते अमन्महि ॥ ३ ॥ त्वं हि सत्यो मघवन्ननानतो वृत्रा भूरि न्यृञ्जसे । स त्वं शविष्ठ वज्रहस्त दाशुषेऽर्वाञ्चं रयिमा कृधि ॥ ४ ॥ त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पते । त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इदनुत्ता चर्षणीधृता ॥ ५ ॥ तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे । महीव कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नवन् ॥ ६ ॥ १३ ॥

॥ ६१ ॥ १—७ अपालात्रेयी ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ आर्ची स्वराट् पङ्क्तिः । २ पङ्क्तिः । ३ निचृदनुष्टुप् । ४ अनुष्टुप् । ५, ६ विराडनुष्टुप् । ७ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः । ३—७ गान्धारः ॥

॥ ६१ ॥ कन्या वारवायती सोममपि स्रुताविदत् । अस्तं भरन्त्यब्रवीदिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा ॥ १ ॥ असौ य एषि वीरको गृहङ्गृहं विचाकशत् । इमं जम्भसुतं पिब धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् ॥ २ ॥ आ चन त्वा चिकित्सामोऽधि चन त्वा नेमसि । शनैरिव शनकैरिवेन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥ कुविच्छकत्कुवित्करत्कुविन्नो वस्यसस्करत् । कुवित्पतिद्विषो यतीरिन्द्रेण सङ्गमामहै ॥ ४ ॥ इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय । शिरस्ततस्योर्वरामादिदं म उपोदरे ॥ ५ ॥ असौ च या न उर्वरादिमां तन्वं मम । अथो ततस्य यच्छिरः सर्वा ता रोमशा कृधि ॥ ६ ॥ खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो । अपालामिन्द्र त्रिष्पूत्व्यकृणोः सूर्यत्वचम् ॥ ७ ॥ १४ ॥

॥ ९२ ॥ १—३३ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—
१ विराडनुष्टुप् । २, ४, ८—१२, २२, २५—२७, ३० निचृद्गायत्री । ३,
७, ३१, ३३ पादनिचृद् गायत्री । ५ आर्ची स्वराड्गायत्री । ६, १३—१५,
२८ विराड् गायत्री । १६—२१, २३, २४, २९, ३२ गायत्री ॥ स्वरः—१
गान्धारः । २—३३ षड्जः ॥

॥ ९२ ॥ पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत । विश्वासाहं शतक्रतुं
मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥ पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्यं१ सनश्रुतम् । इन्द्र इति ब्रवी-
तन ॥ २ ॥ इन्द्र इन्नो महानां दाता वाजानां नृतुः । महाँ अभिज्ञ्वा यमत् ॥ ३ ॥
अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः । इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः ॥ ४ ॥ तम्व-
भि प्रार्चतेन्द्रं सोमस्य पीतये । तदिद्ध्यस्य वर्धनम् ॥ ५ ॥ १५ ॥ अस्य पीत्वा
मदानां देवो देवस्यौजसा । विश्वाभि भुवना भुवत् ॥ ६ ॥ त्यमु वः सत्रासाहं
विश्वासु गीर्ष्वायतम् । आ च्यावयस्यूतये ॥ ७ ॥ युध्मं सन्तमनर्वाणं सोमपाम-
नपच्युतम् । नरमवार्यक्रतुम् ॥ ८ ॥ शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वाँ ऋचीष-
म । अवा नः पार्ये धने ॥ ९ ॥ अतश्चिदिन्द्र ण उपा याहि शतवाजया । इषा
सहस्रवाजया ॥ १० ॥ १६ ॥ अयाम धीवतो धियोऽर्वद्भिः शक्र गोदरे । जयेम
पृत्सु वज्रिवः ॥ ११ ॥ वयमु त्वा शतक्रतो गावो न यवसेष्वा । उक्थेषु रणया-
मसि ॥ १२ ॥ विश्वा हि मर्त्यत्वनानुकामा शतक्रतो । अगन्म वज्रिन्नाशसः ॥ १३ ॥
त्वे सु पुत्र शवसोऽवृत्रन्कामकातयः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ १४ ॥ स नो
वृषन्त्सनिष्ठया सं घोरया द्रवित्न्वा । धियाविड्ढि पुरन्ध्या ॥ १५ ॥ १७ ॥ यस्ते
नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः । तेन नूनं मदे मदेः ॥ १६ ॥ यस्ते चित्रश्र-
वस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः । य ओजोदातमो मदः ॥ १७ ॥ विद्मा हि यस्ते
अद्रिवस्त्वादत्तः सत्य सोमपाः । विश्वासु दस्म कृष्टिषु ॥ १८ ॥ इन्द्राय मद्वने
सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः । अर्कमर्चन्तु कारवः ॥ १९ ॥ यस्मिन्विश्वा अधि
श्रियो रणन्ति सप्त संसदः । इन्द्रं सुते हवामहे ॥ २० ॥ १८ ॥ त्रिकद्रुकेषु चेतनं
देवासो यज्ञमत्नत । तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥ २१ ॥ आ त्वा विशन्त्विन्दवः स-
मुद्रमिव सिन्धवः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ २२ ॥ विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं
सोमस्य जागृवे । य इन्द्र जठरेषु ते ॥ २३ ॥ अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु
वृत्रहन् । अरं धामभ्य इन्दवः ॥ २४ ॥ अरमश्वाय गायति श्रुतकक्षो अरं गवे ।
अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ २५ ॥ अरं हि ष्मा सुतेषु णः सोमेष्विन्द्र भूषसि । अरं

ते शक्र दावने ॥ २६ ॥ १६ ॥ पराकात्ताच्चिदद्रिवस्त्वां नक्षन्त नो गिरः
अरं गमाम ते वयम् ॥ २७ ॥ एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः । एवा
राध्यं मनः २८ ॥ एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः । अधा चिदि
मे सचा ॥ २९ ॥ मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते । मत्स्वा सुतस्य ग
मतः ॥ ३० ॥ मा न इन्द्राभ्या३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमन् । त्वा युजा वने
तत् ॥ ३१ ॥ त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः । त्वमस्माकं तव स्मसि
॥ ३२ ॥ त्वामिद्धि त्वायवोऽनुनोनुवतश्चरान् । सखाय इन्द्र कारवः ॥ ३३ ॥२०

॥ ९३ ॥ १—३४ सुकक्ष ऋषिः ॥ १—३३ इन्द्रः । ३४ इन्द्र ऋभव
देवताः ॥ छन्दः—१, २४, ३३ विराड् गायत्री । २—४, १०, ११, १
१५, १६, १८, २१, २३, २७—३१ निचृद्गायत्री । ५—९, १२, १
१७, २०, २२, २५, २६, ३२, ३४ गायत्री । १९ पादनिचृद् गायत्री
षड्जः स्वरः ॥

॥ ९३ ॥ उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् । अस्तारमेषि सूर्य ॥ १
नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा । अहिं च वृत्रहावधीत् ॥ २ ॥ स न इन्
शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत् । उरुधारेव दोहते ॥ ३ ॥ यदद्य कच्च वृत्रहन्नुद
अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥४॥ यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे
उतो तत्सत्यमित्तव ॥ ५ ॥ २१ ॥ ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे
सर्वांस्ताँ इन्द्र गच्छसि ॥ ६ ॥ तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृ
वृषभो भुवत् ॥ ७ ॥ इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः । द्युम्नी श्लो
की स सोम्यः ॥ ८ ॥ गिरा वज्रो न सम्भृतः सबलो अनपच्युतः ववक्ष ऋ
अस्तृतः ॥९ ॥ दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि गृणान इन्द्र गिर्वणः । त्वञ्च मघवन्वश
॥ १० ॥ २२ ॥ यस्य ते नू चिदादिशं न मिनन्ति स्वराज्यम् । न देवो नाधि
गुर्जनः ॥ ११ ॥ अधा ते अप्रतिष्कुतं देवी शुष्मं सपर्यतः । उभे सुशिप्र रोदसी
॥ १२ ॥ त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च । परुष्णीषु रुशत्पयः ॥ १३
वि यदहेरध त्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः । विदन्मृगस्य ताँ अमः ॥ १४ ॥ अ
दु मे निवरो भुवद्वृत्रहादिष्ट पौंस्यम् । अजातशत्रुरस्तृतः ॥ १५ ॥ २३ ॥ श्रु
वो वृत्रहन्तमम्प्र शर्धं चर्षणीनाम् । आ शुषे राधसे महे ॥ १६ ॥ अया धि
च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत । यत्सोमेसोम आभवः ॥ १७ ॥ बोधिन्मना इद
नो वृत्रहा भूर्यासुतिः । शृणोतु शक्र आशिषम् ॥ १८ ॥ कया त्वन्न ऊत्या

प्र मन्दसे वृषन् । कया स्तोतृभ्य आ भर ॥ १६ ॥ कस्य वृषा सुते सचा नियुत्वान्वृषभो रणत् । वृत्रहा सोमपीतये ॥ २० ॥ २४ ॥ अभी षु णस्त्वं रयिं मन्दसानः सहस्रिणम् । प्रयन्ता बोधि दाशुषे ॥ २१ ॥ पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये । अपां जग्मिर्निचुम्पुणः ॥ २२ ॥ इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधासो अध्वरे । अच्छावभृथमोजसा ॥ २३ ॥ इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळ्हामभि प्रयो हितम् ॥ २४ ॥ तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो । स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह ॥ २५ ॥ २५ ॥ आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि दाशुषे । स्तोतृभ्य इन्द्रमर्चत ॥ २६ ॥ आ ते दधामीन्द्रियमुक्था विश्वा शतक्रतो । स्तोतृभ्य इन्द्र मृळय ॥ २७ ॥ भद्रम्भद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो । यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ २८ ॥ स नो विश्वान्या भर सुवितानि शतक्रतो । यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ २६ ॥ त्वामिद्वृत्रहन्तम सुतावन्तो हवामहे । यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ ३० ॥ २६ ॥ उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानाम्पते । उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३१ ॥ द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः । उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३२ ॥ त्वं हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि । उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३३ ॥ इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् । वाजी ददातु वाजिनम् ॥ ३४ ॥ २७ ॥ ६ ॥

॥ ६४ ॥ १—१२ बिन्दुः पूतदक्षो वा ऋषिः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१, २, ८ विराड् गायत्री । ३, ५, ७, ६ गायत्री । ४, ६, १०—१२ निचृद् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६४ ॥ गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम् । युक्ता वह्नी रथानाम् ॥ १ ॥ यस्या देवा उपस्थे व्रता विश्वे धारयन्ते । सूर्यामासा दृशे कम् ॥ २ ॥ तत्सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः । मरुतः सोमपीतये ॥ ३ ॥ अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः । उत स्वराजो अश्विना ॥ ४ ॥ पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः ॥ ५ ॥ उतो न्वस्य जोषमाँ इन्द्रः सुतस्य गोमतः । प्रातर्होतेव मत्सति ॥ ६ ॥ २८ ॥ कदत्विषन्त सूरयस्तिर आप इव स्रिधः । अर्षन्ति पूतदक्षसः ॥ ७ ॥ कद्वो अद्य महानां देवानामवो वृणे । त्मना च दस्मवर्चसाम् ॥ ८ ॥ आ ये विश्वा पार्थिवानि पप्रथन्रोचना दिवः । मरुतः सोमपीतये ॥ ६ ॥ त्यान्नु पूतदक्षसो दिवो वो म-

रुतो हुवे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ १० ॥ सान्नु ये वि रोदसी तस्तभुर्मरुतो हु-
वे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ ११ ॥ तं नु मारुतं गणं गिरिष्ठां वृषणं हुवे ।
अस्य सोमस्य पीतये ॥ १२ ॥ २९ ॥

॥ ९५ ॥ १—९ तिरश्ची ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१—४, ६,
७ विराडनुष्टुप् । ५, ९ अनुष्टुप् । ८ निचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ९५ ॥ आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः । अभि त्वा समनूष-
तेन्द्र वत्सं न मातरः ॥ १ ॥ आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः सुतास इन्द्र गिर्वणः ।
पिबा त्व१स्यान्धस इन्द्र विश्वासु ते हितम् ॥ २ ॥ पिबा सोमं मदाय कमिन्द्र
श्येनाभृतं सुतम् । त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसि ॥ ३ ॥ श्रुधी हवं ति-
रश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति । सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥ ४ ॥
इन्द्र यस्ते नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् । चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पि-
प्युषीम् ॥ ५ ॥ ३० ॥ तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थानि वावृधुः । पुरूण्यस्य पौं-
स्या सिषासन्तो वनामहे ॥ ६ ॥ एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना । शु-
द्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान्ममत्तु ॥ ७ ॥ इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शु-
द्धाभिरूतिभिः । शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्यः ॥ ८ ॥ इन्द्र शुद्धो
हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे । शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषा-
ससि ॥ ९ ॥ ३१ ॥

॥ ९६ ॥ १—२१ तिरश्चीर्द्युतानो वा मरुत ऋषिः ॥ देवताः—१—१३,
१६—२१ इन्द्रः । १४ मरुतः । १५ इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१, २, ५,
१३, १४ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ६, ७, १०, ११, १६ विराट् त्रिष्टुप् । ८, ९,
१२ त्रिष्टुप् । १५, १८, १९ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ४, १७ पङ्क्तिः । २० निचृत्
पङ्क्तिः । २१ विराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१—३, ५—१६, १८, १९ धैवतः ।
४, १७, २०, २१ पञ्चमः ॥

॥ ९६ ॥ अस्मा उषास आतिरन्त याममिन्द्राय नक्तमूर्म्याः सुवाचः । अस्मा
आपो मातरः सप्त तस्थुर्नृभ्यस्तराय सिन्धवः सुपाराः ॥ १ ॥ अतिविद्धा विथु-
रेणा चिदस्त्रा त्रिः सप्त सानु संहिता गिरीणाम् । न तद्देवो न मर्त्यस्तुतुर्याद्यानि
प्रवृद्धो वृषभश्चकार ॥ २ ॥ इन्द्रस्य वज्र आयसो निमिश्ल इन्द्रस्य बाह्वोर्भूयिष्ठ-

मोजः । शीर्षन्निन्द्रस्य क्रतवो निरेक आसन्नेषन्त श्रुत्या उपाके ॥ ३ ॥ मन्ये त्वा
यज्ञियं यज्ञियानां मन्ये त्वा च्यवनमच्युतानाम् । मन्ये त्वा सत्वनामिन्द्र केतुं म-
न्ये त्वा वृषभं चर्षणीनाम् ॥ ४ ॥ आ यद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र धत्से मदच्युतमहये ह-
न्तवा उ । प्र पर्वता अनवन्त प्र गावः प्र ब्रह्माणो अभिनक्षन्त इन्द्रम् ॥५॥३२॥
तमु ष्टवाम य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात् । इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम
गीर्भिरुपो नमोभिर्वृषभं विशेम ॥ ६ ॥ वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा
अजहुर्ये सखायः । मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि ॥७॥
त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो वावृधाना उस्रा इव राशयो यज्ञियासः । उप त्वेमः कृधि
नो भागधेयं शुष्मं त एना हविषा विधेम ॥ ८ ॥ तिग्ममायुधं मरुतामनीकं कस्त
इन्द्र प्रति वज्रं दधर्ष । अनायुधासो असुरा अदेवाश्चक्रेण ताँ अप वप ऋजी-
षिन् ॥ ९ ॥ मह उग्राय तवसे सुवृक्तिं प्रेरय शिवतमाय पश्वः । गिर्वाहसे गिर
इन्द्राय पूर्वीर्धेहि तन्वे कुविदङ्ग वेदत् ॥१०॥३३॥ उक्थवाहसे विभ्वे मनीषां द्रुणा न
पारमीरया नदीनाम् । नि स्पृश धिया तन्वि श्रुतस्य जुष्टतरस्य कुविदङ्ग वेदत् ॥११॥
तद्विविड्ढि यत्त इन्द्रो जुजोषत्स्तुहि सुष्टुतिं नमसा विवास । उप भूष जरितर्मा
रुवण्यः श्रावया वाचं कुविदङ्ग वेदत् ॥१२॥ अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः
कृष्णो दशभिः सहस्रैः । आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त
॥ १३ ॥ द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः । नभो न कृष्णमव-
तस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ ॥ १४ ॥ अध द्रप्सो अंशुमत्या उ-
पस्थेऽधारयत्तन्वं तित्विषाणः । विशो अदेवीरभ्या३ चरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः
ससाहे ॥ १५ ॥ ३४ ॥ त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।
गूळ्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥ १६ ॥ त्वं ह
त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन्धृषितो जघन्थ । त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रैस्त्वं
गा इन्द्र शच्येदविन्दः ॥ १७ ॥ त्वं ह त्यद्वृषभ चर्षणीनाङ्घनो वृत्राणां तविषो
बभूथ । त्वं सिन्धूँरसृजस्तस्तभानान् त्वमपो अजयो दासपत्नीः ॥ १८ ॥ स सु-
क्रतू रणिता यः सुतेष्वनुत्तमन्युर्यो अहेव रेवान् । य एक इन्नर्यपांसि कर्ता स वृ-
त्रहा प्रतीदन्यमाहुः ॥१९॥ स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत्तं सुष्टुत्या हव्यं हुवेम । स प्रा-
विता मघवा नोऽधिवक्ता स वाजस्य श्रवस्यस्य दाता ॥२०॥ स वृत्रहेन्द्र ऋभुक्षाः
सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव । कृण्वन्नपांसि नर्या पुरूणि सोमो न पीतो हव्यः स-
खिभ्यः ॥ २१ ॥ ३५ ॥

॥ ६७ ॥ १-१५ रेभः काश्यप ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ११ विराड् बृहती। २, ६, ६, १२ निचृद्बृहती। ४, ५, ८ बृहती । ३ भुरिगनुष्टुप्। ७ अनुष्टुप्। १० भुरिग्जगती। १३ अतिजगती। १५ ककुम्मती जगती। १४ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४-६, ८, ६, ११, १२ मध्यमः। ३, ७ गान्धारः। १०, १३, १५ निषादः। १४ धैवतः ॥

॥ ६७ ॥ या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः। स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥ १ ॥ यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं गां भागमव्ययम्। यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन् तं धेहि मा पणौ ॥ २ ॥ य इन्द्र सस्त्यव्रतोऽनुष्वापमदेवयुः। स्वैः ष एवैर्मुमुरत्पोष्यं रयिं सनुतर्धेहि तं ततः ॥ ३ ॥ यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन्। अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति ॥ ४ ॥ यद्वासि रोचने दिवः समुद्रस्याधि विष्टपि। यत्पार्थिवे सदने वृत्रहन्तम यदन्तरिक्ष आ गहि ॥ ५ ॥ ३६ ॥ स नः सोमेषु सोमपाः सुतेषु शवसस्पते। मादयस्व राधसा सूनृतावतेन्द्र राया परीणसा ॥ ६ ॥ मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्यः। त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परा वृणक् ॥ ७ ॥ अस्मे इन्द्र सचा सुते नि षदा पीतये मधु। कृधी जरित्रे मघवन्नवो महदस्मे इन्द्र सचा सुते ॥ ८ ॥ न त्वा देवास आशत न मर्त्यासो अद्रिवः। विश्वा जातानि शवसाभिभूरसि न त्वा देवास आशत ॥ ६ ॥ विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे। क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिमुतोग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम् ॥१०॥३७॥ समीं रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये। स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥ ११ ॥ नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरा। सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः ॥१२॥ तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं शवांसि। मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद्राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री ॥ १३ ॥ त्वं पुर इन्द्र चिकिदेना व्योजसा शविष्ठ शक्र नाशयध्यै। त्वद्विश्वानि भुवनानि वज्रिन्द्यावा रेजेते पृथिवी च भीषा ॥ १४ ॥ तन्म ऋतमिन्द्र शूर चित्र पात्वपो न वज्रिन्दुरिताति पर्षि भूरि। कदा न इन्द्र राय आ दशस्येर्विश्वप्स्न्यस्य स्पृहयाय्यस्य राजन् ॥ १५ ॥ ३८ ॥ ६ ॥

॥६८॥ १-१२ नृमेध ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१,५ उष्णिक्। २, ६ ककुम्मती उष्णिक्। ३, ७, ८, १०-१२ विराडुष्णिक्। ४ पाद निचृदुष्णिक्। ६ निचृदुष्णिक् ॥ ऋषभ स्वरः ॥

॥ ६८ ॥ इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्। धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ १ ॥ त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः। विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि ॥२॥ विभ्राजञ्ज्योतिषा स्व१रगच्छो रोचनं दिवः। देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥ ३ ॥ एन्द्र नो गधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः। गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः ॥ ४ ॥ अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी। इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥ ५ ॥ त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र दर्ता पुरामसि। हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ॥ ६ ॥ १ ॥ अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा कामान्महः ससृज्महे। उदेव यन्त उदभिः ॥ ७ ॥ वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि। वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे ॥ ८ ॥ युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे। इन्द्रवाहा वचोयुजा ॥ ९ ॥ त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनाषहम् ॥ १० ॥ त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे ॥ ११ ॥ त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे शतक्रतो। स नो रास्व सुवीर्यम् ॥ १२ ॥ २ ॥

॥ ६६ ॥ १-८ नृमेध ऋषिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१ आर्ची स्वराड् बृहती ॥ २ बृहती । ३, ७ निचृद् बृहती । ५ पाद निचृद् बृहती । ४, ६, ८ पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-३, ५, ७ गान्धारः । ४, ६, ८ पञ्चमः ॥

॥ ६६ ॥ त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन्वज्रिन्भूर्णयः। स इन्द्र स्तोमवाहसामिह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥ १ ॥ मत्स्वा सुशिप्र हरिवस्तदीमहे त्वे आ भूषन्ति वेधसः। तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्या सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ २ ॥ श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥ ३ ॥ अनर्शरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः। सो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् ॥ ४ ॥ त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः। अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ ५ ॥ अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा। विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥ ६ ॥ इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम्। आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्र्यावृधम् ॥ ७ ॥ इष्कर्तारमनिष्कृतं सहस्कृतं शतमूतिं शतक्रतुम्। समानमिन्द्रमवसे हवामहे वसवानं वसूजुवम् ॥ ८ ॥ १ ॥

॥१००॥ १–३, ६–१२ नेमो भार्गवः। ४, ५ इन्द्र ऋषिः॥ देवताः–१–६, १२ इन्द्रः। १०, ११ वाक्॥ छन्दः–१, ४ पाद निचृत्त्रिष्टुप्। २, ११ निचृत्त्रिष्टुप्। ३, ५, १२ त्रिष्टुप्। १० विराट् त्रिष्टुप्। ६ निचृज्जगती। ७, ८ अनुष्टुप्। ९ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः–१–५, १०–१२ धैवतः। ६ निषादः। ७–९ गान्धारः॥

॥ १०० ॥ अयं त एमि तन्वा पुरस्ताद्विश्वे देवा अभि मा यन्ति पश्चात्। यदा मह्यं दीधरो भागमिन्द्रादिन्मया कृणवो वीर्याणि ॥ १ ॥ दधामि ते मधुनो भक्षमग्रे हितस्ते भागः सुतो अस्तु सोमः। असश्च त्वं दक्षिणतः सखा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि ॥ २ ॥ प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति। नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि ष्टवाम ॥ ३ ॥ अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना। ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्यादर्दिरो भुवना दर्दरीमि ॥ ४ ॥ आ यन्मा वेना अरुहन्नृतस्यँ एकमासीनं हर्यतस्य पृष्ठे। मनश्चिन्मे हृद आ प्रत्यवोचदचिक्रदञ्छिशुमन्तः सखायः ॥ ५ ॥ विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या या चकर्थ मघवन्निन्द्र सुन्वते। पारावतं यत्पुरुसम्भृतं वस्वपावृणोः शरभाय ऋषिबन्धवे ॥ ६ ॥ ४ ॥ प्र नूनं धावता पृथङ्नेह यो वो अवावरीत्। नि षीं वृत्रस्य मर्मणि वज्रमिन्द्रो अपीपतत् ॥ ७ ॥ मनोजवा अयमान आयसीमतरत्पुरम्। दिवं सुपर्णो गत्वाय सोमं वज्रिण आभरत् ॥ ८ ॥ समुद्रे अन्तः शयत उद्ना वज्रो अभीवृतः। भरन्त्यस्मै संयतः पुरःप्रस्रवणा बलिम् ॥ ९ ॥ यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा। चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि क्व स्विदस्याः परमं जगाम ॥ १० ॥ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥ ११ ॥ सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व द्यौर्देहि लोकं वज्राय विष्कभे। हनाव वृत्रं रिणचाव सिन्धूनिन्द्रस्य यन्तु प्रसवे विसृष्टाः ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ १०१ ॥ १—१६ जमदग्निर्भार्गव ऋषिः ॥ देवताः—१—५ मित्रावरुणौ। ५, ६ आदित्याः। ७, ८ अश्विनौ। ९, १० वायुः। ११, १२ सूर्यः। १३ उषाः सूर्यप्रभावा। १४ पवमानः १५, १६ गौः ॥ छन्दः—१ निचृद् बृहती। ६, ७, ९, ११ विराड् बृहती। १२ भुरिग् बृहती। १० स्वराड् बृहती। ५ आर्ची स्वराड् बृहती। १३ आर्ची बृहती। २, ४, ८ पङ्क्तिः। ३ गायत्री। १४ पाद निचृत्त्रिष्टुप्। १५ त्रिष्टुप्। १६ विराट् त्रिष्टुप्॥ स्वरः–१,

५, ६, ७, ९—११, १२, १३ मध्यमः । २, ४, ८ पञ्चमः । ३ षड्जः । १४—१६ धैवतः ॥

॥ १०१ ॥ ऋधगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये । यो नूनं मित्रा वरुणा वभिष्टय आचक्रे हव्यदातये ॥ १ ॥ वर्षिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा नरा राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ता बाहुता न दंसना रथर्यतः साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ २ ॥ प्र यो वां मित्रा वरुणा जिरो दूतो अद्रवत् । अयःशीर्षा मदेरघुः ॥ ३ ॥ न यः संपृच्छे न पुनर्हवीतवे न संवादाय रमते । तस्मान्नो अद्य समृतेरुरुष्यतं बाहुभ्यां न उरुष्यतम् ॥ ४ ॥ प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो । वरूथ्यं वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥ ५ ॥ ६ ॥ ते हिन्विरे अरुणं जेन्यं वस्वेकं पुत्रं तिसॄणाम् । ते धामान्यमृता मर्त्यानामदब्धा अभि चक्षते ॥ ६ ॥ आ मे वचांस्युद्यता द्युमत्तमानि कर्त्वा । उभा यातं नासत्या सजोषसा प्रति हव्यानि वीतये ॥ ७ ॥ रातिं यद्वामरक्षसं हवामहे युवाभ्यां वाजिनीवसू । प्राचीं होत्रां प्रतिरन्ताविते नरा गृणाना जमदग्निना ॥ ८ ॥ आ नो यज्ञं दिविस्पृशं वायो याहि सुमन्मभिः । अन्तः पवित्र उपरि श्रीणानोऽयं शुक्रो अयामि ते ॥ ९ ॥ वेत्यध्वर्युः पथिभी रजिष्ठैः प्रति हव्यानि वीतये । अधा नियुत्व उभयस्य नः पिब शुचिं सोमं गवाशिरम् ॥ १० ॥ ७ ॥ बण्महाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि । महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ असि ॥ ११ ॥ बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि । मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥ १२ ॥ इयं या नीच्यर्किणी रूपा रोहिण्या कृता । चित्रेव प्रत्यदर्श्यायत्यन्तर्दशसु बाहुषु ॥ १३ ॥ प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयुर्न्यन्या अर्कमभितो विविश्रे । बृहद्ध तस्थौ भुवनेष्वन्तः पवमानो हरित आ विवेश ॥ १४ ॥ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः । प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट ॥ १५ ॥ वचोविदं वाचमुदीरयन्तीं विश्वाभिर्धीभिरुपतिष्ठमानाम् । देवीं देवेभ्यः पर्येयुषीं गामा मावृक्त मर्त्यो दभ्रचेताः ॥ १६ ॥ ८ ॥

॥ १०२ ॥ १—२२ प्रयोगो भार्गव अग्निर्वा पावको बार्हस्पत्यः । अथवाग्नी गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वान्यतर ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३—५, ८, ९, १४, १५, २०—२२ निचृद्गायत्री । २, ६, १२, १३, १६ गायत्री । ७, ११, १७, १९ विराड् गायत्री । १०, १८, पाद निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥१०२॥ त्वमग्ने बृहद्वयो दधासि देव दाशुषे । कविर्गृहपतिर्युवा ॥१॥ स न ईळानया सह देवाँ अग्ने दुवस्युवा । चिकिद्विभानवा वह ॥२॥ त्वया ह स्विद्युजा वयं चोदिष्ठेन यविष्ठ्य । अभि ष्मो वाजसातये ॥ ३ ॥ और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ४ ॥ हुवे वातस्वनं कविं पर्जन्यक्रन्द्यं सहः । अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ आ सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ६ ॥ अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम् । अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ ७ ॥ अयं यथा न आभुवत्त्वष्टा रूपेव तक्ष्या । अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥ ८ ॥ अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते । आ वाजैरुप नो गमत् ॥ ६ ॥ विश्वेषामिह स्तुहि होतॄणां यशस्तमम् । अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥१०॥ ॥ १० ॥ शीरं पावकशोचिषं ज्येष्ठो यो दमेष्वा । दीदाय दीर्घश्रुत्तमः ॥ ११ ॥ तमर्वन्तन्न सानसिं गृणीहि विप्र शुष्मिणम् । मित्रं न यातयज्जनम् ॥ १२ ॥ उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः । वायोरनीके अस्थिरन् ॥ १३ ॥ यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम् । आपश्चिन्नि दधा पदम् ॥ १४ ॥ पदं देवस्य मीळ्हुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः । भद्रा सूर्य इवोपदृक् ॥ १५ ॥ ११ ॥ अग्ने घृतस्य धीतिभिस्तेपानो देव शोचिषा । आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ १६ ॥ तं त्वाजनन्त मातरः कविं देवासो अङ्गिरः । हव्यवाहममर्त्यम् ॥ १७ ॥ प्रचेतसं त्वा कवेऽग्ने दूतं वरेण्यम् । हव्यवाहं नि षेदिरे ॥ १८ ॥ नहि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति । अथैतादृग्भरामि ते ॥ १६ ॥ यदग्ने कानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि । ता जुषस्व यविष्ठ्य ॥ २० ॥ यदत्त्युपजिह्विका यद्वम्रो अतिसर्पति । सर्वं तदस्तु ते घृतम् ॥२१॥ अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः । अग्निमीधे विवस्वभिः ॥ २२ ॥ १२ ॥

॥ १०३ ॥ १–१४ सोभरिः काण्व ऋषिः ॥ १–१३ अग्निः । १४, अग्निर्मरुतश्च देवता ॥ छन्दः–१, ३, १३, विराड्बृहती । २ निचृद् बृहती । ४ बृहती । ६ आर्चीस्वराड् बृहती ७, ६ स्वराड् बृहती । ५ पङ्क्तिः । ११ निचृत् पङ्क्तिः । १० आर्चीभुरिग्गायत्री । ८ निचृदुष्णिक् । १२ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः–१–४, ६, ७, ६, १३ मध्यमः । ५, ११ पञ्चमः । ८, १२ ऋषभः । १० षड्जः । १४ गान्धारः ॥

॥ १०३ ॥ अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः । उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्त नो गिरः ॥ १ ॥ प्र दैवोदासो अग्निर्देवाँ अच्छा न मज्मना । अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य सानवि ॥ २ ॥ यस्माद्रेजन्त कृष्ट-

यश्चकर्त्यानि कृण्वतः । सहस्रसां मेधसाताविव त्मनाग्निं धीभिः संपर्यत ॥ ३ ॥
प्र यं राये निनीषसि मर्तो यस्ते वसो दाशत् । स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं
त्मना सहस्रपोषिणम् ॥ ४ ॥ स दृळ्हे चिदभि तृणत्ति वाजमर्वता स धत्ते अ-
क्षिति श्रवः । त्वे देवत्रा सदा पुरूवसो विश्वा वामानि धीमहि ॥ ५ ॥ १३ ॥
यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् । मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा-
यन्त्यग्नये ॥ ६ ॥ अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः । उभे तोके
तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम् ॥ ७ ॥ प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने
बृहते शुक्रशोचिषे । उपस्तुतासो अग्नये ॥ ८ ॥ आ वंसते मघवा वीरवद्यशः स-
मिद्धो द्युम्न्याहुतः । कुविन्नो अस्य सुमतिर्नवीयस्यच्छा वाजेभिरागमत् ॥ ९ ॥
प्रेष्ठमु प्रियाणां स्तुह्यासावातिथिम् । अग्निं रथानां यमम् ॥ १० ॥ १४ ॥ उदिता
यो निदिता वेदिता वस्वा यज्ञियो ववर्तति । दुष्टरा यस्य प्रवणे नोर्मयो धिया
वाजं सिषासतः ॥ ११ ॥ मा नो हृणीतामतिथिर्वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः ।
यः सुहोता स्वध्वरः ॥ १२ ॥ मो ते रिषन्ये अच्छोक्तिभिर्वसोऽग्ने केभिश्चिदेवैः ।
कीरिश्चिद्धि त्वामीट्टे दूत्याय रातहव्यः स्वध्वरः ॥ १३ ॥ आग्ने याहि
मरुत्सखा रुद्रेभिः सोमपीतये । सोभर्या उप सुष्टुतिं मादयस्व स्वर्णरे
॥ १४ ॥ १५ ॥ १० ॥ ८ ॥

॥ इत्यष्टमम्मण्डलं समाप्तम् ॥

---

# अथ नवमम्मण्डलम् ॥

॥१॥ १-१० मधुच्छन्दा ऋषिः॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, २, ६ गायत्री । ३, ७-१० निचृद् गायत्री । ४, ५ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १ ॥ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥ १ ॥ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम् । द्रुणा सधस्थमासदत् ॥ २ ॥ वरिवोधातमो भव मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः । पर्षि राधो मघोनाम् ॥ ३ ॥ अभ्यर्ष महानां देवानां वीतिमन्धसा । अभि वाजमुत श्रवः ॥ ४ ॥ त्वामच्छा चरामसि तदिदर्थं दिवेदिवे । इन्दो त्वे न आशसः ॥ ५ ॥१६॥ पुनाति ते परिस्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता । वारेण शश्वता तना ॥ ६ ॥ तमीमण्वीः समर्य आ गृभ्णन्ति योषणो दश । स्वसारः पार्ये दिवि ॥ ७ ॥ तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम् । त्रिधातु वारणं मधु ॥८॥ अभीममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोममिन्द्राय पातवे ॥ ९ ॥ अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विश्वा वृत्राणि जिघ्नते । शूरो मघा च मंहते ॥ १० ॥ १७ ॥

॥२॥ १-१० मेधातिथिर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, ४, ६ निचृद्गायत्री । २, ३, ५, ७-९ गायत्री । १० विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २ ॥ पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या । इन्द्रमिन्दो वृषा विश ॥ १ ॥ आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः । आ योनिं धर्णसिः सदः ॥ २ ॥ अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः । अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥ ३ ॥ महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः । यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥४॥ समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः । सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥ ५ ॥ १८ ॥ अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः । सं सूर्येण रोचते ॥ ६॥ गिरस्त इन्द ओजसा

मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भसे ॥ ७ ॥ तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे । तव प्रशस्तयो महीः ॥८॥ अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया । पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ॥ ९ ॥ गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत । आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥ १० ॥ १९ ॥

॥ ३ ॥ १-१० शुनःशेप ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, २ विराड् गायत्री । ३, ५, ७, १० गायत्री । ४, ६, ८, ९ निचृद् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३ ॥ एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति । अभि द्रोणान्यासदम् ॥१॥ एष देवो विपा कृतोऽति ह्वरांसि धावति । पवमानो अदाभ्यः ॥ २ ॥ एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । हरिर्वाजाय मृज्यते ॥ ३ ॥ एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः । पवमानः सिषासति ॥ ४ ॥ एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति । आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥ ५ ॥ २० ॥ एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ ६ ॥ एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया । पवमानः कनिक्रदत् ॥ ७ ॥ एष दिवं व्यासरत्तिरो रजांस्यस्पृतः । पवमानः स्वध्वरः ॥ ८ ॥ एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति ॥ ९ ॥ एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः ॥ १० ॥ २१ ॥

॥ ४ ॥ १-१० हिरण्यस्तूप ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः १, ३, ४, १० गायत्री । २, ५, ८, ९ निचृद् गायत्री । ६, ७ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४ ॥ सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ १ ॥ सना ज्योतिः सना स्वर्विश्वा च सोम सौभगा । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ २ ॥ सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥३॥ पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ४ ॥ त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ५ ॥ २२ ॥ तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक्पश्येम सूर्यम् । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ६ ॥ अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम् । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ७ ॥ अभ्यर्षानप-

च्युतो र॒यिं स॒मत्सु॑ सास॒हिः । अथा॑ नो॒ वस्य॑सस्कृधि ॥ ८ ॥ त्वां य॒ज्ञैर॑वीवृध॒न्पव॑मान॒ विध॑र्मणि । अथा॑ नो॒ वस्य॑सस्कृधि ॥ ९ ॥ र॒यिं न॑श्चि॒त्रम॒श्विन॒मिन्दो॑ वि॒श्वायु॒मा भ॑र । अथा॑ नो॒ वस्य॑सस्कृधि ॥ १० ॥ २३ ॥

॥५॥१–११ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः॥ आप्रियो देवता॥ छन्दः–१,२, ४–६ गायत्री । ३, ७ निचृद् गायत्री । ८ निचृदनुष्टुप् । ९, १० अनुष्टुप् । ११ विराड्नुष्टुप् ॥ स्वरः–१–७ षड्जः । ८–११ गान्धारः ॥

॥ ५ ॥ समि॑द्धो वि॒श्वत॒स्पति॒ः पव॑मानो॒ वि रा॑जति । प्री॒णन्वृष॒ा कनि॑क्रदत् ॥ १ ॥ तनू॒नपा॒त्पव॑मान॒ः शृङ्गे॒ शिशा॑नो अर्षति । अ॒न्तरि॑क्षेण॒ रार॑जत् ॥ २ ॥ ई॒ळेन्य॒ः पव॑मानो र॒यिर्वि रा॑जति द्यु॒मान् । मधो॒र्धारा॑भि॒रोज॑सा ॥ ३ ॥ ब॒र्हिः प्रा॒चीन॒मोज॑सा॒ पव॑मानः स्तृ॒णन्हरि॑ः । दे॒वेषु॑ दे॒व ई॑यते ॥ ४ ॥ उदा॒तैर्जि॑हते बृ॒हद्द्वारो॑ दे॒वीर्हि॑र॒ण्ययी॑ः । पव॑मानेन॒ सुष्टु॑ताः ॥ ५ ॥२४॥ सु॒शि॒ल्पे बृ॑ह॒ती म॒ही । पव॑मानो वृषण्यति । नक्तो॒षास॒ा न द॑र्श॒ते ॥ ६ ॥ उ॒भा दे॒वा नृ॒चक्ष॑सा॒ होता॑रा॒ दैव्या॑ हुवे । पव॑मान॒ इन्द्रो॒ वृषा॑ ॥ ७ ॥ भार॑ती॒ पव॑मानस्य॒ सर॑स्वतीळा॑ म॒ही । इ॒मं नो॑ य॒ज्ञमा ग॑मन्ति॒स्रो दे॒वीः सु॒पेश॑सः ॥ ८ ॥ त्वष्टा॑रमग्र॒जां गो॒पां पु॑रो॒यावा॑न॒मा हु॑वे । इन्दु॒रिन्द्रो॒ वृषा॒ हरि॒ः पव॑मानः प्र॒जाप॑तिः ॥ ९ ॥ वन॒स्पतिं॑ पवमान॒ मध्वा॒ सम॑ङ्ग्धि॒ धार॑या । स॒हस्र॑वल्शं॒ हरि॑तं॒ भ्राज॑मानं हिर॒ण्यय॑म् ॥ १० ॥ विश्वे॑ दे॒वाः स्वाहा॑कृतिं॒ पव॑मान॒स्या ग॑त । वा॒युर्बृह॒स्पति॒ः सूर्यो॒ऽग्निरिन्द्र॑ः स॒जोष॑सः ॥ ११ ॥ २५ ॥

॥ ६ ॥ १–९ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, २, ७ निचृद् गायत्री । ३—६, ९ गायत्री । ८ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६ ॥ म॒न्द्रया॑ सोम॒ धार॑या॒ वृषा॑ पवस्व देव॒युः । अव्यो॒ वारे॑ष्वस्म॒युः ॥ १ ॥ अ॒भि त्यं मद्यं॒ मद॒मिन्द॒विन्द्र॒ इति॑ क्षर । अ॒भि वा॒जिनो॒ अर्व॑तः ॥ २ ॥ अ॒भि त्यं पू॒र्व्यं मदं॑ सुवा॒नो अ॑र्ष प॒वित्र॒ आ । अ॒भि वाज॑मु॒त श्रव॑ः ॥ ३ ॥ अनु॑ द्र॒प्सास॒ इन्द॑व॒ आपो॒ न प्र॒वता॑सरन् । पु॒ना॒ना इन्द्र॑माशत ॥ ४ ॥ यमत्य॑मिव वा॒जिनं॑ मृ॒जन्ति॒ योष॑णो॒ दश॑ । वने॒ क्रीळ॑न्त॒मत्य॑विम् ॥ ५ ॥ २६ ॥ तं गोभि॒र्वृष॑णं॒ रसं॒ मदा॑य दे॒ववी॑तये । सु॒तं भरा॑य॒ सं सृ॑ज ॥ ६ ॥ दे॒वो दे॒वाय॒ धार॒येन्द्रा॑य पवते सु॒तः । पयो॒ यद॑स्य पी॒पय॑त् ॥ ७ ॥ आ॒त्मा य॒ज्ञस्य॒ रंह्या॑ सुष्वा॒णः प॑वते सु॒तः । प्र॒त्नं नि पा॑ति॒ काव्य॑म् ॥ ८ ॥ ए॒वा पु॑ना॒न इ॑न्द्र॒युर्मदं॑ मदिष्ठ वी॒तये॑ । गुहा॑ चिद्दधिषे॒ गिर॑ः ॥ ९ ॥ २७ ॥

॥ ७ ॥ १-६ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, ३, ५-६ गायत्री । २ निचृद्गायत्री । ४ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ७ ॥ असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । विदाना अस्य योजनम् ॥ १ ॥ प्र धारा मध्वो अग्रियो महीरपो वि गाहते । हविर्हविष्षु वन्द्यः ॥ २ ॥ प्र युजो वाचो अग्रियो वृषाव चक्रदद्वने । सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥ ३ ॥ परि यत्काव्या कविर्नृम्णा वसानो अर्षति । स्वर्वाजी सिषासति ॥ ४ ॥ पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति । यदीमृण्वन्ति वेधसः ॥ ५ ॥ २८ ॥ अव्यो वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति । रेभो वनुष्यते मती ॥ ६ ॥ स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति । रणा यो अस्य धर्मभिः ॥ ७ ॥ आ मित्रावरुणा भगं मध्वः पवन्त ऊर्मयः । विदाना अस्य शक्मभिः ॥ ८ ॥ अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये । श्रवो वसूनि सञ्जितम् ॥ ६ ॥ २६ ॥

॥ ८ ॥ १—६ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, २, ५, ८ निचृद् गायत्री । ३, ४, ७ गायत्री । ६ पाद निचृद् गायत्री । ६ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ८ ॥ एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन् । वर्धन्तो अस्य वीर्यम् ॥ १ ॥ पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना । ते नो धान्तु सुवीर्यम् ॥ २ ॥ इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय । ऋतस्य योनिमासदम् ॥ ३ ॥ मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः । अनु विप्रा अमादिषुः ॥ ४ ॥ देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्यः । सङ्गोभिर्वासयामसि ॥ ५ ॥ ३० ॥ पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः । परि गव्यान्यव्यत ॥ ६ ॥ मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो सखायमा विश ॥ ७ ॥ वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि । सहो नः सोम पृत्सु धाः ॥ ८ ॥ नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम् । भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥ ६ ॥ ३१ ॥

॥ ६ ॥ १—६ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३—५, ८ गायत्री । २, ६, ७, ६ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६ ॥ परि॑ प्रि॒या दि॒वः क॒विर्वयां॑सि न॒प्त्यो॑र्हि॒तः । सु॒वा॒नो या॑ति क॒विक्र॑तुः ॥ १ ॥ प्रप्र॒ क्षया॑य॒ पन्य॑से॒ जना॑य॒ जुष्टो॑ अ॒द्रुहे॑ । वी॒त्य॑र्ष॒ चनि॑ष्ठया ॥ २ ॥ स सू॒नुर्मा॒तरा॒ शुचि॑र्जा॒तो जा॒ते अ॑रोचयत् । म॒हान्म॒ही ऋ॑ता॒वृधा॑ ॥ ३ ॥ स स॒प्त धी॒तिभि॑र्हि॒तो न॒द्यो॑ अजिन्वद॒द्रुहः॑ । या एक॒मक्षि॑ वावृ॒धुः ॥ ४ ॥ ता अ॒भि सन्त॒मस्तृ॑तं म॒हे युवा॑न॒मा द॑धुः । इन्दु॑मिन्द्र॒ तव॑ व्र॒ते ॥ ५ ॥ ३२ ॥ अ॒भि वह्नि॒रम॑र्त्यः स॒प्त प॑श्यति॒ वाव॑हिः । क्रिवि॑र्दे॒वीर॑तर्पयत् ॥ ६ ॥ अवा॒ कल्पे॑षु नः पुम॒स्तमां॑सि सोम॒ योध्या॑ । तानि॑ पुनान जङ्घनः ॥ ७ ॥ नू नव्य॑से॒ नवी॑यसे सू॒क्ताय॑ साधया प॒थः । प्र॒त्न॒वद्रो॑चया॒ रुचः॑ ॥ ८ ॥ पव॑मान॒ महि॒ श्रवो॒ गामश्वं॑ रासि वी॒रव॑त् । सना॑ मे॒धां सना॒ स्वः॑ ॥ ६ ॥ ३३ ॥

॥ १० ॥ १—६ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ६, ८ निचृद्गायत्री । ३, ५, ७, ६ गायत्री । ४ भुरिग्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १० ॥ प्र स्वा॒नासो॒ रथा॑ इ॒वार्व॑न्तो॒ न श्र॑व॒स्यवः॑ । सोमा॑सो रा॒ये अ॑क्रमुः ॥ १ ॥ हि॒न्वा॒नासो॒ रथा॑ इव दधन्वि॒रे गभ॑स्त्योः । भरा॑सः का॒रिणा॑मिव ॥ २ ॥ राजा॑नो॒ न प्रश॑स्तिभि॒ सोमा॑सो॒ गोभि॑रञ्जते । य॒ज्ञो न स॒प्त धा॒तृभिः॑ ॥ ३ ॥ परि॑ सुवा॒नास॒ इन्द॑वो॒ मदा॑य ब॒र्हणा॑ गि॒रा । सु॒ता अ॑र्षन्ति॒ धार॑या ॥४॥ आ॒पा॒नासो॑ वि॒वस्व॑तो॒ जन॑न्त उ॒षसो॒ भग॑म् । सूरा॒ अण्वं॒ वि त॑न्वते ॥ ५ ॥ ३४॥ अप॒ द्वारा॑ मती॒नां प्र॒त्ना ऋ॑ण्वन्ति का॒रवः॑ । वृष्णो॒ हर॑स आ॒यवः॑ ॥ ६ ॥ स॒मी॒ची॒नास॑ आसते॒ होता॑रः स॒प्तजा॑मयः । प॒दमेक॑स्य॒ पिप्र॑तः ॥ ७ ॥ नाभा॒ नाभिं॑ न॒ आ द॑दे॒ चक्षु॑श्चि॒त्सूर्ये॒ सचा॑ । क॒वेरप॑त्य॒मा दु॑हे ॥ ८ ॥ अ॒भि प्रि॒या दि॒वस्प॒दम॑ध्व॒र्युभि॒र्गुहा॑ हि॒तम् । सूरः॑ पश्यति॒ चक्ष॑सा ॥ ६ ॥ ३५ ॥

॥ ११ ॥ १-६ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१–४, ६ निचृद् गायत्री । ५–८ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ११ ॥ उपा॑स्मै गायता नरः॒ पव॑माना॒येन्द॑वे । अ॒भि दे॒वाँ इय॑क्षते ॥ १ ॥ अ॒भि ते॒ मधु॑ना॒ पयोऽथ॑र्वाणो अशिश्रयुः । दे॒वं दे॒वाय॑ देव॒यु ॥ २ ॥ स नः॑ पवस्व॒ शं गवे॒ शं जना॑य॒ शमर्व॑ते । शं रा॑ज॒न्नोष॑धीभ्यः ॥ ३ ॥ ब॒भ्रवे॒ नु स्वत॑वसेऽरु॒णाय॑ दिवि॒स्पृशे॑ । सोमा॑य गा॒थम॑र्चत ॥ ४ ॥ ह॒स्तच्यु॑तेभि॒रद्रि॑भिः सु॒तं सोम॑

पुनीतन । मधावा धावता मधु ॥ ५ ॥ ३६ ॥ नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन । इन्दुमिन्द्रे दधातन ॥ ६ ॥ अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे । देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥ ७ ॥ इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे । मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥ ८ ॥ पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि नः । इन्दविन्द्रेण नो युजा ॥ ९ ॥ ३७ ॥

॥ १२ ॥ १-९ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ६—८ गायत्री । ३—५, ९ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १२ ॥ सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य सादने । इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥ १ ॥ अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न मातरः । इन्द्रं सोमस्य पीतये ॥ २ ॥ मदच्युत्क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित् । सोमो गौरी अधि श्रितः ॥ ३ ॥ दिवो नाभा विचक्षणोऽव्यो वारे महीयते । सोमो यः सुक्रतुः कविः ॥ ४ ॥ यः सोमः कलशेष्वाँ अन्तः पवित्र आहितः । तमिन्दुः परि षस्वजे ॥ ५ ॥ ३८ ॥ प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि । जिन्वन्कोशं मधुश्चुतम् ॥ ६ ॥ नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धीनामन्तः सबर्दुघः । हिन्वानो मानुषा युगा ॥७॥ अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्षति । विप्रस्य धारया कविः ॥ ८ ॥ आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम् । अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥ ९ ॥ ३९ ॥ ७ ॥

॥ १३ ॥ १-९ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१—३, ५, ८ गायत्री । ४ निचृद्गायत्री । ६ भुरिग्गायत्री । ७ पाद निचृद्गायत्री । ९ यवमध्या गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥१३॥ सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः । वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥ पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत । सुष्वाणन्देववीतये ॥ २ ॥ पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः । गृणाना देववीतये ॥ ३ ॥ उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः । द्युमदिन्दो सुवीर्यम् ॥ ४ ॥ ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः ॥ ५ ॥ १ ॥ अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये । वि वारमव्यमाशवः ॥ ६ ॥ वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न धेनवः । दधन्विरे गभस्त्योः ॥ ७ ॥ जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिक्रदत् । विश्वा अप द्विषो जहि ॥ ८ ॥ अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः । योनावृतस्य सीदत ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ १४ ॥ १-८ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१-३, ५, ७ गायत्री । ४, ८ निचृद्गायत्री । ६ ककुम्मती गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १४ ॥ परि प्रासिंष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधिं श्रितः । कारं बिभ्रंत्पुरुस्पृहंम् ॥ १ ॥ गिरा यदी सबंन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवंः । परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् ॥ २ ॥ आदंस्य शुष्मिणो रसे विश्वें देवा अंमत्सत । यदी गोभिर्वसायतें ॥ ३ ॥ निरिणानो विधांवति जहच्छर्याणि तान्वा । अत्रा सञ्जिघ्नते युजा ॥ ४ ॥ नप्तीभिर्यो विवस्वतः शुभ्रो न मांमृजे युवां । गाः कृण्वानो न निर्णिजंम् ॥ ५ ॥ ३ ॥ अति श्रिती तिरश्चता गव्या जिंगात्यण्व्यां । वग्नुमियर्ति यं विदे ॥ ६ ॥ अभि क्षिपः समंग्मत मर्जयंन्तीरिषस्पतिम् । पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः ॥ ७ ॥ परिं दिव्यानि मर्मृशद्विश्वानि सोम पार्थिवा । वसूंनि याह्यस्मयुः ॥ ८ ॥ ४ ॥

॥ १५ ॥ १-८ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१,३-५,८ निचृद्गायत्री । २, ६ गायत्री । ७ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १५ ॥ एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥ एष पुरु धियायते बृहते देवतांतये । यत्रामृतांस आसंते ॥ २ ॥ एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुभ्रावंता पथा । यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥ ३ ॥ एष शृङ्गांणि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो॒३वृषा । नृम्णा दधांन ओजंसा ॥ ४ ॥ एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः । पतिः सिन्धूनां भवंन् ॥ ५ ॥ एष वसूंनि पिब्दना परुषा ययिवाँ अति । अव शादेषु गच्छति ॥ ६ ॥ एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवंः । प्रचक्राणं महीरिषंः ॥ ७ ॥ एतमुत्यं दश क्षिपो मृजन्ति सप्त धीतयंः । स्वायुधं मदिन्तंमम् ॥ ८ ॥ ५ ॥

॥ १६ ॥ १-८ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१ विराड् गायत्री । २, ८ निचृद्गायत्री । ३-७ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १६ ॥ प्र ते सोतारं ओण्यो॒३रसं मदांय घृष्वये । सर्गो न तक्त्येतशः ॥ १ ॥ क्रत्वा दक्षस्य रथ्यमपो वसांनमन्धसा । गोषामण्वेषु सश्चिम ॥ २ ॥ अनंप्तमप्सु दुष्टरं सोमं पवित्र आ सृंज । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥ ३ ॥ प्र पुनानस्य चेतंसा सोमः पवित्रे अर्षति । क्रत्वा सधस्थमासंदत् ॥ ४ ॥ प्र त्वा नमोंभिरि-

न्दंव इन्द्र सोमा असृक्षत। मुहे भराय कारिणः ॥ ५ ॥ पुनानो रूपे अव्यये विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। शूरो न गोषु तिष्ठति ॥ ६ ॥ दिवो न सानु पिप्युषी धारा सुतस्य वेधसः। वृथा पवित्रे अर्षति ॥ ७ ॥ त्वं सोम विपश्चितं तना पुनान आयुषु। अव्यो वारं वि धावसि ॥ ८ ॥ ६ ॥

॥ १७ ॥ १-८ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३-८ गायत्री। २ भुरिग्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १७ ॥ प्र निम्नेनेव सिन्धवो घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः। सोमा असृग्रमाशवः ॥ १ ॥ अभि सुवानास इन्दवो वृष्टयः पृथिवीमिव। इन्द्रं सोमासो अक्षरन् ॥ २ ॥ अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥ ३ ॥ आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ॥ ४ ॥ अति त्री सोम रोचना रोहन्न भ्राजसे दिवम्। इष्णन्त्सूर्यं न चोदयः ॥ ५ ॥ अभि विप्रा अनूषत मूर्धन्यज्ञस्य कारवः। दधाना चक्षसि प्रियम् ॥ ६ ॥ तमु त्वा वाजिनं नरो धीभिर्विप्रा अवस्यवः। मृजन्ति देवतातये ॥ ७ ॥ मधोर्धारामनु क्षर तीव्रः सधस्थमासदः चारुर्ऋताय पीतये ॥ ८ ॥ ७ ॥

॥ १८ ॥ १-७ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ४ निचृद्गायत्री। २ ककुम्मती गायत्री। ३, ५, ६ गायत्री। ७ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १८ ॥ परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षाः। मदेषु सर्वधा असि ॥ १ ॥ त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्रजातमन्धसः। मदेषु सर्वधा असि ॥ २ ॥ तव विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत। मदेषु सर्वधा असि ॥ ३ ॥ आ यो विश्वानि वार्या वसूनि हस्तयोर्दधे। मदेषु सर्वधा असि ॥ ४ ॥ य इमे रोदसी मही सं मातरेव दोहते। मदेषु सर्वधा असि ॥ ५ ॥ परि यो रोदसी उभे सद्यो वाजेभिरर्षति। मदेषु सर्वधा असि ॥ ६ ॥ स शुष्मी कलशेष्वा पुनानो अचिक्रदत्। मदेषु सर्वधा असि ॥ ७ ॥ ८ ॥

॥ १९ ॥ १-७ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ विराड् गायत्री। २, ५, ७ निचृद् गायत्री। ३, ४ गायत्री। ६ भुरिग्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १९ ॥ यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु । तन्नः पुनान आ भर
॥ १ ॥ युवं हि स्थः स्वर्पती इन्द्रश्च सोम गोपती । ईशाना पिप्यतं धियः ॥ २ ॥
वृषा पुनान आयुषु स्तनयन्नधि बर्हिषि । हरिः सन्योनिमासदत् ॥ ३ ॥ अवाव-
शन्त धीतयो वृषभस्याधि रेतसि । सूनोर्वत्सस्य मातरः ॥ ४ ॥ कुविद्वृषण्यन्ती-
भ्यः पुनानो गर्भमादधत् । याः शुक्रं दुहते पयः ॥ ५ ॥ उप शिक्षापतस्थुषो
भियसमा धेहि शत्रुषु । पवमान विदा रयिम् ॥ ६ ॥ नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं नि
शुष्मं नि वयस्तिर । दूरे वा सतो अन्ति वा ॥ ७ ॥ ९ ॥

॥ २० ॥ १–७ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥
छन्दः–१, ४—७ निचृद्गायत्री । २, ३ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २० ॥ प्र कविर्देववीतयेऽव्यो वारेभिरर्षति । साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः
॥ १ ॥ स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति । पवमानः सहस्रिणम्
॥ २ ॥ परि विश्वानि चेतसा मृशसे पवसे मती । स नः सोम श्रवो विदः
॥ ३ ॥ अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम् । इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ४ ॥ त्वं
राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ । पुनानो वह्ने अद्भुत ॥ ५ ॥ स वह्निरप्सु
दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः । सोमश्चमूषु सीदति ॥ ६ ॥ क्रीळुर्मखो न मंहयुः
पवित्रं सोम गच्छसि । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ७ ॥ १० ॥

॥ २१ ॥ १—७ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो
देवता ॥ छन्दः—१, ३ विराड् गायत्री २, ७ गायत्री । ४—६ निचृद्गायत्री ॥
षड्जः स्वरः ॥

॥ २१ ॥ एते धावन्तीन्दवः सोमा इन्द्राय घृष्वयः । मत्सरासः स्वर्विदः
॥ १ ॥ प्रवृण्वन्तो अभियुजः सुष्वये वरिवोविदः । स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः ॥ २ ॥
वृथा क्रीळन्त इन्दवः सधस्थमभ्येकमित् । सिन्धोरूर्मा व्यक्षरन् ॥ ३ ॥ एते वि-
श्वानि वार्या पवमानास आशत । हिता न सप्तयो रथे ॥ ४ ॥ आस्मिन्पिशङ्ग-
मिन्दवो दधाता वेनमादिशे । यो अस्मभ्यमरावा ॥ ५ ॥ ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता
केतमादिशे । शुक्राः पवध्वमर्णसा ॥ ६ ॥ एत उ त्ये अवीवशन्काष्ठां वाजिनो
अक्रत । सतः प्रासाविषुर्मतिम् ॥ ७ ॥ ११ ॥

॥ २२ ॥ १-७ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, २ गायत्री । ३ विराड् गायत्री । ४-७ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २२ ॥ एते सोमास आशवो रथा इव प्र वाजिनः । सर्गाः सृष्टा अहेषत ॥ १ ॥ एते वाता इवोरवः पर्जन्यस्येव वृष्टयः । अग्नेरिव भ्रमा वृथा ॥ २ ॥ एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः । विपा व्यानशुर्धियः ॥ ३ ॥ एते मृष्टा अमर्त्याः ससृवांसो न शश्रमुः । इयक्षन्तः पथो रजः ॥ ४ ॥ एते पृष्ठानि रोदसोर्विप्रयन्तो व्यानशुः । उतेदमुत्तमं रजः ॥ ५ ॥ तन्तुं तन्वानमुत्तममनु प्रवत आशत । उतेदमुत्तमाय्यम् ॥ ६ ॥ त्वं सोम पणिभ्य आ वसु गव्यानि धारयः । ततं तन्तुमचिक्रदः ॥ ७ ॥ १२ ॥

॥ २३ ॥ १—७ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१-४, ६ निचृद्गायत्री ।५ गायत्री । ७ विराड्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २३ ॥ सोमा असृग्रमाशवो मधोर्मदस्य धारया । अभि विश्वानि काव्या ॥ १ ॥ अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः । रुचे जनन्त सूर्यम् ॥ २ ॥ आ पवमान नो भरार्यो अदाशुषो गयम् । कृधि प्रजावतीरिषः ॥ ३ ॥ अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् । अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥ ४ ॥ सोमो अर्षति धर्णसिर्दधान इन्द्रियं रसम् । सुवीरो अभिशस्तिपाः ॥ ५ ॥ इन्द्राय सोम पवसे देवेभ्यः सधमाद्यः । इन्दो वाजं सिषाससि ॥ ६ ॥ अस्य पीत्वा मदानामिन्द्रो वृत्राण्यप्रति । जघान जघनच्च नु ॥ ७ ॥ १३ ॥

॥ २४ ॥ १-७ असितः काश्यपो देवलो वा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, २ गायत्री । ३, ५, ७ निचृद्गायत्री । ४, ६ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २४ ॥ प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥ १ ॥ अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत ॥ २ ॥ प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय पातवे । नृभिर्यतो वि नीयसे ॥ ३ ॥ त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीसहे । सस्निर्यो अनुमाद्यः ॥ ४ ॥ इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि । अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ ५ ॥ पवस्व वृत्रहन्तमोक्थेभिरनुमाद्यः । शुचिः पावको अद्भुतः ॥ ६ ॥ शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतस्य मध्वः । देवावीरघशंसहा ॥ ७ ॥ १४ ॥ १ ॥

॥ २५ ॥ १—६ दृळ्हच्युतः आगस्त्य ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ गायत्री। २, ४ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २५ ॥ पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥ ॥१॥ पवमान धिया हितो३भि योनिं कनिक्रदत्। धर्मणा वायुमा विश ॥ २ ॥ सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः। वृत्रहा देववीतमः ॥ ३ ॥ विश्वा रूपाण्याविशन्पुनानो याति हर्यतः। यत्रामृतास आसते ॥ ४ ॥ अरुषो जनयन्गिरः सोमः पवत आयुषक्। इन्द्रं गच्छन्कविक्रतुः ॥ ५ ॥ आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम् ॥ ६ ॥ १५ ॥

॥ २६ ॥ १—६ इध्मवाहो दार्ढच्युत ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३–५ निचृद्गायत्री। २, ६ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २६ ॥ तममृक्षन्त वाजिनमुपस्थे अदितेरधि। विप्रासो अण्व्या धिया ॥ १ ॥ तं गावो अभ्यनूषत सहस्रधारमक्षितम्। इन्दुं धर्तारमा दिवः ॥ २ ॥ तं वेधां मेधयाह्यन्पवमानमधि द्यवि। धर्णसिं भूरिधायसम् ॥ ३ ॥ तमह्यन्भुरिजोर्धिया संवसानं विवस्वतः। पतिं वाचो अदाभ्यम् ॥ ४ ॥ तं सानावधि जामयो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। हर्यतं भूरिचक्षसम् ॥ ५ ॥ तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पवमान गिरावृधम्। इन्दविन्द्राय मत्सरम् ॥ ६ ॥ १६ ॥

॥ २७ ॥ १—६ नृमेध ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ६ निचृद्गायत्री। ३—५ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २७ ॥ एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते। पुनानो घ्नन्नप स्रिधः ॥ १ ॥ एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित्परि षिच्यते। पवित्रे दक्षसाधनः ॥ २ ॥ एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः। सोमो वनेषु विश्ववित् ॥ ३ ॥ एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥ ४ ॥ एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि। पवित्रे मत्सरो मदः ॥ ५ ॥ एष शुष्म्यसिष्यदद्न्तरिक्षे वृषा हरिः। पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥ ६ ॥ १७ ॥

॥२८॥१–६ प्रियमेध ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१,४,५ गायत्री। २, ३, ६ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २८ ॥ एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः । अव्यो वारं वि धावति ॥ १ ॥ एष पवित्रे अक्षरत्सोमो देवेभ्यः सुतः । विश्वा धामान्याविशन् ॥ २ ॥ एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः । वृत्रहा देववीतमः ॥ ३ ॥ एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः । अभि द्रोणानि धावति ॥ ४ ॥ एष सूर्यमरोचयत्पवमानो विचर्षणिः विश्वा धामानि विश्ववित् ॥ ५ ॥ एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति । देववीरघशंसहा ॥ ६ ॥ १८ ॥

॥ २९ ॥ १—६ नृमेध ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ विराड् गायत्री । २-४, ६ निचृद्गायत्री । ५ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ २९ ॥ प्रास्य धारा अक्षरन्वृष्णः सुतस्यौजसा । देवाँ अनु प्रभूषतः ॥ १ ॥ सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा । ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम् ॥ २ ॥ सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो । वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ॥ ३ ॥ विश्वा वसूनि सञ्जयन्पवस्व सोम धारया । इनु द्वेषांसि सध्र्यक् ॥ ४ ॥ रक्षा सु नो अररुषः स्वनात्समस्य कस्य चित् । निदो यत्र मुमुच्महे ॥ ५ ॥ एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया । द्युमन्तं शुष्ममा भर ॥ ६ ॥ १९ ॥

॥ ३० ॥ १—६ बिन्दुर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, २, ६ गायत्री । ३-५ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३० ॥ प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन् । पुनानो वाचमिष्यति ॥ १ ॥ इन्दुर्हियानः सोतृभिर्मृज्यमानः कनिक्रदत् । इयर्ति वग्नुमिन्द्रियम् ॥ २ ॥ आ नः शुष्मं नृषाह्यं वीरवन्तं पुरुस्पृहम् । पवस्व सोम धारया ॥ ३ ॥ प्र सोमो अति धारया पवमानो असिष्यदत् । अभि द्रोणान्यासदम् ॥ ४ ॥ अप्सु त्वा मधुमत्तमं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दविन्द्राय पीतये ॥ ५ ॥ सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे । चारुं शर्धाय मत्सरम् ॥ ६ ॥ २० ॥

॥ ३१ ॥ १-६ गोतम ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ ककुम्मती गायत्री । २ यवमध्या गायत्री । ३, ५ गायत्री । ४, ६ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३१ ॥ प्र सोमा॑सः स्वा॒ध्य१॒ः पव॑मानासो अक्रमुः । र॒यिं कृ॑ण्वन्ति॒ चे॑तनम् ॥ १ ॥ दि॒वस्पृ॑थि॒व्या अधि॒ भवे॑न्दो द्युम्न॒वर्ध॑नः । भवा॒ वाजा॑नां॒ पति॑ः ॥ २ ॥ तुभ्यं॒ वाता॑ अभि॒प्रिय॒स्तुभ्य॑मर्षन्ति॒ सिन्ध॑वः । सोम॒ वर्ध॑न्ति॒ ते॒ मह॑ः ॥ ३ ॥ आ प्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वत॑ः सोम॒ वृष्ण्य॑म् । भवा॒ वाज॑स्य सङ्ग॒थे ॥ ४ ॥ तुभ्यं॒ गावो॑ घृ॒तं पयो॒ बभ्रो॑ दुदु॒ह्रे अक्षि॑तम् । वर्षि॑ष्ठे॒ अधि॒ सान॑वि ॥५॥ स्वा॒यु॒धस्य॑ ते स॒तो भुव॑नस्य पते व॒यम् । इन्दो॑ सखि॒त्वमु॑श्मसि ॥ ६ ॥ २१ ॥

॥ ३२ ॥ १–६ श्यावाश्व ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, २ निचृद्गायत्री । ३—६ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३२ ॥ प्र सोमा॑सो म॒दच्यु॑त॒ः श्रव॑से नो म॒घोन॑ः सु॒ता वि॒दथे॑ अक्रमुः ॥ १ ॥ आदीं॑ त्रि॒तस्य॒ योष॑णो॒ हरिं॑ हिन्व॒न्त्यद्रि॑भिः । इन्दु॒मिन्द्रा॑य पी॒तये॑ ॥ २ ॥ आदीं॑ हं॒सो यथा॑ ग॒णं विश्व॑स्यावीवश॒न्म॒तिम् । अत्यो॒ न गोभि॑रज्यते ॥ ३ ॥ उ॒भे सो॑माव॒चाक॑शन्मृ॒गो न त॒क्तो अ॑र्षसि । सीद॑न्नृ॒तस्य॒ योनि॒मा ॥ ४ ॥ अ॒भि गावो॑ अनूषत॒ योषा॑ जा॒रमि॑व प्रि॒यम् । अग॑न्ना॒जिं यथा॑ हि॒तम् ॥५॥ अ॒स्मे धे॑हि द्यु॒मद्यशो॑ म॒घव॑द्भ्यश्च॒ मह्यं॑ च । स॒निं मे॒धामु॒त श्रव॑ः ॥ ६ ॥ २२ ॥

॥ ३३ ॥ १–६ त्रित ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ ककुम्मती गायत्री । २, ४, ५ गायत्री । ३, ६ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३३ ॥ प्र सोमा॑सो विप॒श्चितो॒ऽपां न य॑न्त्यू॒र्मय॑ः । वना॑नि महि॒षा इ॑व ॥१॥ अ॒भि द्रोणा॑नि ब॒भ्रव॑ः शु॒क्रा ऋ॒तस्य॒ धार॑या । वाजं॒ गोम॑न्तमक्षरन् ॥ २ ॥ सु॒ता इन्द्रा॑य वा॒यवे॒ वरु॑णाय म॒रुद्भ्य॑ः । सोमा॑ अर्षन्ति॒ विष्ण॑वे ॥ ३ ॥ ति॒स्रो वाच॒ उदी॑रते॒ गावो॑ मिमन्ति धे॒नव॑ः । हरि॑रेति॒ कनि॑क्रदत् ॥ ४ ॥ अ॒भि ब्र॒ह्मीर॑नूषत य॒ह्वीरृ॒तस्य॑ मा॒तर॑ः । म॒र्मृ॒ज्यन्ते॑ दि॒वः शिशु॑म् ॥५॥ रा॒यः स॑मु॒द्रांश्च॒तुरो॒ऽस्मभ्यं॑ सोम वि॒श्वत॑ः । आ प॑वस्व सह॒स्रिण॑ः ॥ ६ ॥ २३ ॥

॥ ३४ ॥ १–६ त्रित ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृद्गायत्री ३, ५, ६ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३४ ॥ प्र सु॑वा॒नो धार॑या॒ तनेन्दु॑र्हिन्वा॒नो अ॑र्षति । रु॒जद्दृ॒ळ्हा व्योज॑सा ॥ १ ॥ सु॒त इन्द्रा॑य वा॒यवे॒ वरु॑णाय म॒रुद्भ्य॑ः । सोमो॑ अर्षति॒ विष्ण॑वे ॥ २ ॥

वृषा॑णं॒ वृष॑भिर्य॒तं सु॒न्वन्ति॒ सोम॒मद्रि॑भिः । दु॒हन्ति॒ शक्म॑ना॒ पयः॑ ॥ ३ ॥ भुव॑त्त्रि॒तस्य॒ मर्ज्यो॒ भुव॒दिन्द्रा॑य मत्स॒रः । सं रू॒पैर॑ज्यते॒ हरिः॑ ॥ ४ ॥ अ॒भीमृ॒तस्य॑ वि॒ष्टपं॑ दु॒हते॒ पृश्नि॑मातरः । चारु॑ प्रि॒यत॑मं ह॒विः ॥ ५ ॥ सम॑ेन॒मह्रु॑ता इ॒मा गिरो॑ अ॒र्षन्ति स॒स्रुतः॑ । धे॒नूर्वा॒श्रो अ॑वीवशत् ॥ ६ ॥ २४ ॥

॥ ३५ ॥ १–६ प्रभूवसुर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४—६ गायत्री । ३ विराड्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३५ ॥ आ नः॑ पवस्व॒ धार॑या॒ पव॑मान र॒यिं पृ॒थुम् । यया॒ ज्योति॑र्वि॒दासि॑ नः ॥ १ ॥ इन्दो॑ समुद्रमीङ्खय॒ पव॑स्व विश्वमेजय । रा॒यो ध॒र्ता न॒ ओज॑सा ॥२॥ त्वया॑ वी॒रेण॑ वीरवो॒ऽभि ष्या॑म पृतन्य॒तः । क्षरा॑ णो अ॒भि वार्य॑म् ॥ ३ ॥ प्र वाज॒मिन्दु॑रिष्यति॒ सिषा॑सन्वाज॒सा ऋषिः॑ । व्र॒ता वि॑दा॒न आयु॑धा ॥ ४ ॥ तं गी॒र्भिर्वा॑चमीङ्खयं पु॑ना॒नं वा॑सयामसि । सोम॒ं जन॑स्य॒ गोप॑तिम् ॥५॥ विश्वो॒ यस्य॑ व्र॒ते जनो॑ दा॒धार॒ धर्म॑ण॒स्पतेः॑ । पु॒नान॒स्य॑ प्र॒भूव॑सोः ॥ ६ ॥ २५ ॥

॥३६॥ १–६ प्रभूवसुर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१ पादनिचृद्गायत्री । २, ६ गायत्री । ३—५ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३६ ॥ अस॑र्जि॒ रथ्यो॑ यथा प॒वित्रे॑ च॒म्वोः॑ सु॒तः । कार्ष्म॑न्वा॒जी न्य॑क्रमीत् ॥ १ ॥ स वह्निः॑ सोम॒ जागृ॑वि॒ः पव॑स्व देव॒वीरति॑ । अ॒भि कोशं॑ मधु॒श्चुत॑म् ॥२॥ स नो॒ ज्योतीं॑षि पूर्व्य॒ पव॑मान॒ वि रो॑चय । क्रत्वे॒ दक्षा॑य नो हिनु ॥ ३ ॥ शु॒म्भमा॑न ऋता॒युभि॑र्मृ॒ज्यमा॑नो॒ गभ॑स्त्योः । पव॑ते॒ वारे॑ अ॒व्यये॑ ॥ ४ ॥ स विश्वा॑ दा॒शुषे॒ वसु॒ सोमो॑ दि॒व्यानि॒ पार्थि॑वा । पव॑ता॒मान्तरि॑क्ष्या ॥ ५ ॥ आ दि॒वस्पृ॒ष्ठम॑श्व॒युर्ग॑व्य॒युः सो॑म रोहसि । वी॒र॒युः श॑वसस्पते ॥ ६ ॥ २६ ॥

॥ ३७ ॥ १–६ रहूगण ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः —१–३ गायत्री । ४—६ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३७ ॥ स सु॒तः पी॒तये॒ वृषा॒ सोमः॑ प॒वित्रे॑ अर्षति । वि॒घ्नन्रक्षां॑सि देव॒युः ॥१॥ स प॒वित्रे॑ विचक्ष॒णो हरि॑रर्षति धर्ण॒सिः । अ॒भि योनि॒ं कनि॑क्रदत् ॥२॥ स वा॒जी रो॑च॒ना दि॒वः पव॑मानो॒ वि धा॑वति । र॒क्षो॒हा वार॑म॒व्यय॑म् ॥ ३ ॥ स त्रि॒तस्याधि॒

सानत्रि पवमानो अरोचयत् । जामिभिः सूर्यं सह ॥ ४ ॥ स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविदर्दाभ्यः । सोमो वाजमिवासरत् ॥ ५ ॥ स देवः कविनेषितोऽभि द्रोणानि धावति । इन्दुरिन्द्राय मंहना ॥ ६ ॥ २७ ॥

॥ ३८ ॥ १-६ रहूगण ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ६ निचृद्गायत्री । ३ गायत्री । ५ ककुम्मती गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३८ ॥ एष उ स्य वृषा रथोऽव्यो वारेभिरर्षति । गच्छन्वाजं सहस्रिणम् ॥ १ ॥ एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥ एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भते ॥ ३ ॥ एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति गच्छञ्जारो न योषितम् ॥ ४ ॥ एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशुः । य इन्दुर्वारमाविशत् ॥ ५ ॥ एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः । क्रन्दन्योनिमभि प्रियम् ॥ ६ ॥ २८ ॥

॥ ३६ ॥ १—६ बृहन्मतिर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, ४, ६ निचृद् गायत्री । । २, ३, ५ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ३९ ॥ आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना । यत्र देवा इति ब्रवन् ॥ ॥ १ ॥ परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः । वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥ २ ॥ सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा । विचक्षाणो विरोचयन् ॥३॥ अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ । सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ॥ ४ ॥ आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः । इन्द्राय सिच्यते मधु ॥५॥ समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । योनावृतस्य सीदत ॥ ६ ॥ २६ ॥

॥ ४० ॥ १—६ बृहन्मतिर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २ गायत्री । ३—६ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४० ॥ पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः । शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥ १ ॥ आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रं वृषा सुतः । ध्रुवे सदसि सीदति ॥ २ ॥ नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ ३ ॥ विश्वा सोम पवमान द्युम्नानीन्दवा भर । विदाः सहस्रिणीरिषः ॥ ४ ॥ स नः पुनान आ भर रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम् । जरितुर्वर्धया गिरः ॥ ५ ॥ पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम् । वृषन्निन्दो न उक्थ्यम् ॥ ६ ॥ ३० ॥

॥ ४१ ॥ १-६ मेध्यातिथिर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४, ५ गायत्री । २ ककुम्मती गायत्री । ६ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४१ ॥ प्र ये गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥ १ ॥ सुवितस्य मनामहेऽति सेतुं दुराव्यम् । साह्वांसो दस्युमव्रतम् ॥ २ ॥ शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः । चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ३ ॥ आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् । अश्वावद्वाजवत्सुतः ॥ ४ ॥ स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण । उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ ५ ॥ परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः । सरा रसेव विष्टपम् ॥ ६ ॥ ३१ ॥

॥ ४२ ॥ १-६ मेध्यातिथिर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २ निचृद्गायत्री । ३, ४, ६ गायत्री । ५ ककुम्मती गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४२ ॥ जनयन्रोचना दिवो जनयन्नप्सु सूर्यम् । वसानो गा अपो हरिः ॥ १ ॥ एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि । धारया पवते सुतः ॥ २ ॥ वावृधानाय तूर्वये पवन्ते वाजसातये । सोमाः सहस्रपाजसः ॥ ३ ॥ दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यते । क्रन्दन्देवाँ अजीजनत् ॥ ४ ॥ अभि विश्वानि वार्याभि देवाँ ऋतावृधः । सोमः पुनानो अर्षति ॥ ५ ॥ गोमन्नः सोम वीरवदश्वावद्वाजवत्सुतः । पवस्व बृहतीरिषः ॥ ६ ॥ ३२ ॥

॥ ४३ ॥ १—६ मेध्यातिथिर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ५ गायत्री । ३, ६ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४३ ॥ यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः । तं गीर्भिर्वासयामसि ॥ १ ॥ तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा । इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥ पुनानो याति हर्यतः सोमो गीर्भिः परिष्कृतः । विप्रस्य मेध्यातिथेः ॥ ३ ॥ पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम् । इन्दो सहस्रवर्चसम् ॥ ४ ॥ इन्दुरत्यो न वाजसृत्कनिक्रन्ति पवित्र आ । यदक्षारति देवयुः ॥ ५ ॥ पवस्व वाजसातये विप्रस्य गृणतो वृधे । सोम रास्व सुवीर्यम् ॥ ६ ॥ ३३ ॥ ८ ॥ ६ ॥

॥ ४४ ॥ १-६ अयास्य ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, निचृद्गायत्री । २—६ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४४ ॥ प्र ण इन्दो महे तन ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि । अभि देवाँ अयास्यः ॥ १ ॥ मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति । विप्रस्य धारया कविः ॥ २ ॥ अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ । सोमो याति विचर्षणिः ॥ ॥ ३ ॥ स नः पवस्व वाजयुश्चक्राणश्चारुमध्वरम् । बर्हिष्माँ आ विवासति ॥४॥ स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः । सोमो देवेष्वा यमत् ॥ ५ ॥ स नो अद्य वसुत्तये क्रतुविद्गातुवित्तमः । वाजं जेषि श्रवो बृहत् ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ ४५ ॥ १—६ अयास्य ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३-५ गायत्री । २ विराड्गायत्री । ६ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४५ ॥ स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये । इन्दविन्द्राय पीतये ॥१॥ स नो अर्षाभि दूत्यं त्वमिन्द्राय तोशसे । देवान्त्सखिभ्य आ वरम् ॥ २ ॥ उत त्वामरुणं वयं गोभिरञ्ज्मो मदाय कम् । वि नो राये दुरो वृधि ॥ ३ ॥ अत्यू पवित्रमक्रमीद्वाजी धुरं न यामनि । इन्दुर्देवेषु पत्यते ॥ ४ ॥ समी सखायो अस्वरन्वने क्रीळन्तमत्यविम् । इन्दुं नावा अनूषत ॥ ५ ॥ तया पवस्व धारया यया पीतो विचक्षसे । इन्दो स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ६ ॥ २ ॥

॥ ४६ ॥ १-६ अयास्य ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता। । छन्दः—१ ककुम्मती गायत्री । २, ४, ६ निचृद्गायत्री । ३, ५ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४६ ॥ असृग्रन्देववीतयेऽत्यासः कृत्व्या इव । क्षरन्तः पर्वतावृधः ॥१॥ परिष्कृतास इन्दवो योषेव पित्र्यावती । वायुं सोमा असृक्षत ॥ २ ॥ एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः । इन्द्रं वर्धन्ति कर्मभिः ॥ ३ ॥ आ धावता सुहस्त्यः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना । गोभिः श्रीणीत मत्सरम् ॥ ४ ॥ स पवस्व धनञ्जय प्रयन्ता राधसो महः । अस्मभ्यं सोम गातुवित् ॥ ५ ॥ एतं मृजन्ति मर्ज्यं पवमानं दश क्षिपः । इन्द्राय मत्सरं मदम् ॥ ६ ॥ ३ ॥

॥ ४७ ॥ १—५ कविर्भार्गव ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४ गायत्री । २ निचृद्गायत्री । ५ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४७ ॥ अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदभ्यवर्धत । मन्दान उद्वृषायते ॥१॥ कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा । ऋणा च धृष्णुश्चयते॥ २ ॥ आत्सोम

इन्द्रियो रसो वज्रः सहस्रसा भुवत्। उक्थं यदस्य जायते ॥ ३ ॥ स्वयं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति। यदी मर्मृज्यते धियः ॥ ४ ॥ सिषासतू रयीणां वाजेष्ववतामिव। भरेषु जिग्युषामसि ॥ ५ ॥ ४ ॥

॥ ४८ ॥ १—५ कविर्भार्गव ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ५ गायत्री। २—४ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४८ ॥ तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः। चारुं सुकृत्यये महे ॥ १ ॥ संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम्। शतं पुरो रुरुक्षणिम् ॥ २ ॥ अतस्त्वा रयिमभि राजानं सुक्रतो दिवः। सुपर्णो अव्यथिर्भरत् ॥ ३ ॥ विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम्। गोपामृतस्य विर्भरत् ॥ ४ ॥ अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे। अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ४९ ॥ १—५ कविर्भार्गव ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृद्गायत्री। २, ३ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ४९ ॥ पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि। अयक्ष्मा बृहतीरिषः ॥ १ ॥ तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन्। जन्यास उप नो गृहम् ॥ २ ॥ घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव ॥ ३ ॥ स न ऊर्जे व्य१ व्ययं पवित्रं धाव धारया। देवासः शृणवन्हि कम् ॥ ४ ॥ पवमानो असिष्यदद्रक्षांस्यपजङ्घनत्। प्रत्नवद्रोचयन्रुचः ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ ५० ॥ १—५ उचथ्य ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ५ गायत्री। ३ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५० ॥ उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः। वाणस्य चोदया पविम् ॥ १ ॥ प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि ॥ २ ॥ अव्यो वारे परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। पवमानं मधुश्चुतम् ॥ ३ ॥ आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम् ॥ ४ ॥ स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः। इन्दविन्द्राय पीतये ॥ ५ ॥ ७ ॥

॥ ५१ ॥ १—५ उचथ्यः ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २ गायत्री। ३—५ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५१ ॥ अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ सृज । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥ १ ॥ दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे सुनोता मधुमत्तमम् ॥ २ ॥ तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्यश्नते । पवमानस्य मरुतः ॥ ३ ॥ त्वं हि सोम वर्धयन्त्सुतो मदाय भूर्णये । वृषन्त्स्तोतारमूतये ॥ ४ ॥ अभ्यर्ष विचक्षण पवित्रं धारया सुतः । अभि वाजमुत श्रवः ॥ ५ ॥ ८ ॥

॥ ५२ ॥ १—५ उचथ्यः ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ भुरिग्गायत्री । २ गायत्री । ३, ५ निचृद्गायत्री । ४ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५२ ॥ परि द्युक्षः सनद्रयिर्भरद्वाजं नो अन्धसा । सुवानो अर्ष पवित्र आ ॥ १ ॥ तव प्रत्नेभिरध्वभिरव्यो वारे परि प्रियः । सहस्रधारो यात्तना ॥ २ ॥ चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो न दानमीङ्खय । वधैर्वधस्नवीङ्खय ॥ ३ ॥ नि शुष्ममिन्दवेषां पुरुहूत जनानाम् । यो अस्माँ आदिदेशति ॥ ४ ॥ शतं न इन्द ऊतिभिः सहस्रं वा शुचीनाम् । पवस्व मंहयद्रयिः ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ ५३ ॥ १—४ अवत्सार ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री । २, ४ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५३ ॥ उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः । नुदस्व याः परिस्पृधः ॥ १ ॥ अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते । स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥ २ ॥ अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या । रुज यस्त्वा पृतन्यति ॥३॥ तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥ ४ ॥ १० ॥

॥ ५४ ॥ १—४ अवत्सार ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४ गायत्री । ३ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५४ ॥ अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः । पयः सहस्रसामृषिम् ॥ १ ॥ अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति । सप्त प्रवत आ दिवम् ॥ २ ॥ अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि । सोमो देवो न सूर्यः ॥ ३॥ परि णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमतः । पुनान इन्दविन्द्रयुः ॥ ४ ॥ ११ ॥

॥ ५५ ॥ १—४ अवत्सार ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २ गायत्री । ३, ४ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५५ ॥ यवंयवं नो अन्धसा पुष्टम्पुष्टं परि स्रव । सोम विश्वा च सौभगा ॥ १॥ इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः । नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥ २ ॥ उत नो गोविदश्ववित्पवस्व सोमान्धसा । मक्षूतमेभिरहभिः ॥ ३ ॥ यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य । स पवस्व सहस्रजित् ॥ ४ ॥ १२ ॥

॥ ५६ ॥ १—४ अवत्सार ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१—३ गायत्री । ४ यवमध्या गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५६ ॥ परि सोम ऋतं बृहदाशुः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥ १ ॥ यत्सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः । इन्द्रस्य सख्यमाविशन् ॥२॥ अभि त्वा योषणो दश जारं न कन्यानूषत । मृज्यसे सोम सातये ॥ ३ ॥ त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्दो परि स्रव । नॄन्त्स्तोतॄन्पाह्यंहसः ॥ ४ ॥ १३ ॥

॥ ५७ ॥ १—४ अवत्सार ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३ गायत्री । २ निचृद्गायत्री । ४ ककुम्मती गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५७ ॥ प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । अच्छा वाजं सहस्रिणम् ॥ १॥ अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । हरिस्तुञ्जान आयुधा ॥ २॥ स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः । श्येनो न वंसु षीदति ॥ ३ ॥ स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि । पुनान इन्दवा भर ॥४॥ १४॥

॥ ५८ ॥ १—४ अवत्सार ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री । २ विराड्गायत्री । ४ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥५८॥ तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत्स मन्दी धावति ॥१॥ उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः । तरत्स मन्दी धावति ॥ २ ॥ ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे । तरत्स मन्दी धावति ॥ ३ ॥ आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे । तरत्स मन्दी धावति ॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ ५६ ॥ १—४ अवत्सार ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ गायत्री । २ आर्चीस्वराड्गायत्री । ३, ४ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ५६ ॥ पवस्व गोजिदश्वजिद्विश्वजित्सोम रण्यजित् । प्रजावद्रत्नमा भर ॥ १ ॥ पवस्वाद्भ्यो अदाभ्यः पवस्वौषधीभ्यः । पवस्व धिषणाभ्यः ॥ २ ॥ त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर । कविः सीद नि बर्हिषि ॥ ३ ॥ पवमान स्वर्विदो जायमानोऽभवो महान् । इन्दो विश्वाँ अभीदसि ॥ ४ ॥ १६ ॥

॥ ६० ॥ १—४ अवत्सार ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४ गायत्री । ३ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, २, ४ षड्जः । ३ ऋषभः ॥

॥ ६० ॥ प्र गा॑य॒त्रेण॑ गायत॒ पव॑मानं॒ विच॑र्षणिम् । इन्दुं॑ स॒हस्र॑चक्षसम् ॥ १ ॥ तं त्वा॑ स॒हस्र॑चक्षस॒मथो॑ स॒हस्र॑भर्णसम् । अति॒ वार॑मपाविषुः ॥ २ ॥ अति॒ वारा॒न्पव॑मानो असिष्यदत्क॒लशाँ॑ अ॒भि धा॑वति । इन्द्र॑स्य॒ हार्द्या॑वि॒शन् ॥ ३ ॥ इन्द्र॑स्य सोम॒ राध॑से॒ शं प॑वस्व विचर्षणे । प्र॒जाव॒द्रेत॒ आ भ॑र ॥ ४ ॥ १७ ॥ २ ॥

॥ ६१ ॥ १—३० अमहीयुर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ५, ८, १०, १२, १५, १८, २२—२४, २९, ३० निचृद्गायत्री । २, ३, ६, ७, ९, १३, १४, १६, १७, २०, २१, २६—२८ गायत्री । ११, १९ विराड्गायत्री । २५ ककुम्मती गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६१ ॥ अ॒या वी॒ती परि॑ स्रव॒ यस्त॑ इन्दो॒ मदे॒ष्वा । अ॒वाह॑न्नव॒तीर्नव॑ ॥ १ ॥ पुरः॑ स॒द्य इ॒त्थाधि॑ये॒ दिवो॑दासाय॒ शम्ब॑रम् । अध॒ त्यं तु॒र्वशं॒ यदु॑म् ॥ २ ॥ परि॑ णो॒ अश्व॑मश्व॒विद्गोम॑दिन्दो॒ हिर॑ण्यवत् । क्षरा॑ सह॒स्रिणी॒रिषः॑ ॥ ३ ॥ पव॑मानस्य ते व॒यं प॒वित्र॑मभ्युन्द॒तः । स॒खि॒त्वमा वृ॑णीमहे ॥ ४ ॥ ये ते॑ प॒वित्र॑मू॒र्मयो॑ऽभि॒क्षर॑न्ति॒ धार॑या । तेभि॑र्नः सोम मृळय ॥ ५ ॥ १८ ॥ स नः॑ पुना॒न आ भ॑र र॒यिं वी॒रव॑ती॒मिष॑म् । ईशा॑नः सोम वि॒श्वतः॑ ॥ ६ ॥ ए॒तमु॒ त्यं दश॒ क्षिपो॑ मृ॒जन्ति॒ सिन्धु॑मातरम् । समा॑दि॒त्येभि॑रख्यत ॥ ७ ॥ समिन्द्रे॑णो॒त वा॒युना॑ सु॒त ए॑ति प॒वित्र॒ आ । सं सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑ ॥ ८ ॥ स नो॒ भगा॑य वा॒यवे॑ पू॒ष्णे प॑वस्व॒ मधु॑मान् । चारु॑र्मि॒त्रे वरु॑णे च ॥ ९ ॥ उ॒च्चा ते॑ जा॒तमन्ध॑सो दि॒वि षद्भूम्या द॑दे । उ॒ग्रं शर्म॒ महि॒ श्रवः॑ ॥ १० ॥ १९ ॥ ए॒ना विश्वा॑न्य॒र्य आ द्यु॒म्नानि॒ मानु॑षाणाम् । सिषा॑सन्तो वनामहे ॥ ११ ॥ स न॒ इन्द्रा॑य॒ यज्य॑वे॒ वरु॑णाय म॒रुद्भ्यः॑ । व॒रि॒वो॒वित्परि॑ स्रव ॥ १२ ॥ उपो॒ षु जा॒तम॒प्तुरं॒ गोभि॑र्भ॒ङ्गं परि॑ष्कृतम् । इन्दुं॑ दे॒वा अ॑यासिषुः ॥ १३ ॥ तमिद्व॑र्धन्तु नो॒ गिरो॑ व॒त्सं सं॒शिश्व॑रीरिव । य इन्द्र॑स्य हृदं॒सनिः॑ ॥ १४ ॥ अर्षा॑ णः सोम॒ शं गवे॑ धु॒क्षस्व॑ पि॒प्युषी॒मिष॑म् । वर्धा॑ समु॒द्रमु॒क्थ्य॑म् ॥ १५ ॥ २० ॥ पव॑मानो अजीजनद्दि॒वश्चि॒त्रं न त॑न्य॒तुम् । ज्योति॑र्वैश्वान॒रं बृ॒हत् ॥ १६ ॥ पव॑मानस्य ते॒ रसो॒ मदो॑ राजन्नदुच्छु॒नः । वि वार॒मव्य॑मर्षति ॥ १७ ॥ पव॑मान॒ रस॒स्तव॒ दक्षो॒ वि रा॑जति द्यु॒मान् । ज्योति॒र्विश्वं॒ स्व॑र्दृ॒शे ॥ १८ ॥ यस्ते॒ मदो॒ वरे॑ण्य॒स्तेना॑ पव॒स्वान्ध॑सा । दे॒वा॒वीर॑घशंस॒हा ॥ १९ ॥ जघ्नि॑र्वृ॒त्रम॑मि॒त्रियं॒ सस्नि॒र्वाजं॑ दि॒वेदि॑वे । गो॒षा उ॑ अश्व॒सा अ॑सि ॥ २० ॥ २१ ॥ सम्मि॑श्लो अरु॒षो भ॑व सूप॒स्थाभि॒र्न धे॒नुभिः॑ ।

ीदं॒ञ्छ्ये॒नो न योनि॒मा ॥ २१ ॥ स प॑वस्व॒ य आवि॒थेन्द्रं॑ वृ॒त्राय॒ हन्त॑वे । व॒व्रि॒-
ांसं॑ म॒हीर॒पः ॥ २२ ॥ सु॒वीरा॑सो व॒यं धना॒ जये॑म सोम मीढ्वः । पु॒ना॒नो व॑र्ध नो॒
गिरः॑ ॥ २३ ॥ त्वोता॑स॒स्तवाव॑सा॒ स्याम॑ व॒न्वन्त॑ आ॒मुरः॑ । सोम॑ व्र॒तेषु॑ जागृहि
२४ ॥ अ॒प॒घ्नन्प॑वते॒ मृधोऽप॒ सोमो॒ अरा॑व्णः । गच्छ॒न्निन्द्र॑स्य निष्कृ॒तम् ॥२५॥
२२॥ म॒हो नो॑ रा॒य आ भ॑र॒ पव॑मान ज॒ही मृधः॑ । रास्वे॑न्दो वी॒रव॒द्यशः॑ ॥२६॥
त्वा॑ श॒तं च॒न ह्रुतो॒ राधो॒ दित्स॑न्त॒मा मि॑नन् । यत्पु॑ना॒नो म॑ख॒स्यसे॑ ॥ २७ ॥
व॑स्वेन्दो॒ वृषा॑ सु॒तः कृ॒धी नो॑ य॒शसो॒ जने॑ । विश्वा॒ अप॒ द्विषो॑ जहि ॥ २८ ॥
्रस्य॑ ते स॒ख्ये व॒यं तवे॑न्दो द्यु॒म्न उ॑त्त॒मे । सा॒स॒ह्याम॑ पृतन्य॒तः ॥ २९ ॥ या ते॑
ी॒मान्यायु॑धा ति॒ग्मानि॒ सन्ति॒ धूर्व॑णे । रक्षा॑ सम॑स्य नो नि॒दः ॥ ३० ॥ २३ ॥

॥ ६२ ॥ १—३० जमदग्निर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—
, ६, ७, ९, १०, २३, २५, २८, २९ निचृद्गायत्री । २, ५, ११—१९,
१—२४, २७, ३० गायत्री । ३ ककुम्मती गायत्री । ४ पिपीलिकामध्या
ायत्री । ८, २०, २६ विराड्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६२ ॥ ए॒ते अ॑सृग्र॒मिन्द॑वस्ति॒रः प॒वित्र॑मा॒शवः॑ । विश्वा॑न्य॒भि सौभ॑गा
। १ ॥ वि॒घ्नन्तो॑ दुरि॒ता पु॒रु सु॒गा तो॒काय॑ वा॒जिनः॑ । तना॑ कृ॒ण्वन्तो॒ अर्व॑ते
। २ ॥ कृ॒ण्वन्तो॒ वरि॑वो॒ गवे॒ऽभ्य॑र्षन्ति सुष्टु॒तिम् । इळा॑म॒स्मभ्यं॑ सं॒यत॑म् ॥ ३ ॥
्रसा॑व्यं॒शुर्मदा॑या॒प्सु दक्षो॑ गिरि॒ष्ठाः । श्ये॒नो न योनि॒मास॑दत् ॥ ४ ॥ शु॒भ्रम-
न्धो॑ दे॒ववा॑तम॒प्सु धू॒तो नृभिः॑ सु॒तः । स्वद॑न्ति॒ गावः॒ पयो॑भिः ॥ ५ ॥ २४ ॥
आदी॒मश्वं॒ न हेता॒रोऽशू॑शुभन्न॒मृता॑य । मध्वो॒ रसं॑ सध॒मादे॑ ॥ ६ ॥ यास्ते॒ धारा॑
मधु॒श्चुतोऽसृ॑ग्रमिन्द ऊ॒तये॑ । ताभिः॑ प॒वित्र॒मास॑दः ॥ ७ ॥ सो अ॒र्षेन्द्रा॑य पी॒तये॑
ति॒रो रोमा॑ण्य॒व्यया॑ । सीद॒न्योना॒ वने॒ष्वा ॥ ८ ॥ त्वमि॑न्दो॒ परि॑ स्र॒व स्वादि॑ष्ठो॒
अङ्गि॑रोभ्यः । व॒रि॒वो॒विद्घृ॒तं पयः॑ ॥ ९ ॥ अ॒यं विच॑र्षणिर्हि॒तः पव॑मा॒नः स चे॑-
तति । हि॒न्वा॒न आप्यं॑ बृ॒हत् ॥ १० ॥ २५ ॥ ए॒ष वृषा॒ वृष॑व्रतः॒ पव॑मानो अश-
स्ति॒हा । कर॒द्वसू॑नि दा॒शुषे॑ ॥ ११ ॥ आ प॑वस्व स॒हस्रि॑णं र॒यिं गोम॑न्तम॒श्वि-
न॑म् । पु॒रु॒श्च॒न्द्रं पु॑रु॒स्पृह॑म् ॥ १२ ॥ ए॒ष स्य परि॑ षिच्यते मर्मृ॒ज्यमा॑न आ॒युभिः॑ ।
उ॒रु॒गा॒यः क॒विक्र॑तुः ॥ १३ ॥ स॒हस्रो॑तिः श॒ताम॑घो वि॒माना॒ रज॑सः क॒विः । इ-
न्द्रा॑य पवते॒ मदः॑ ॥ १४ ॥ गि॒रा जा॒त इ॒ह स्तु॒त इन्दु॒रिन्द्रा॑य धीयते । वि॒र्योना॑
व॒स॒ताविव ॥ १५ ॥ २६ ॥ पव॑मानः सु॒तो नृभिः॒ सोमो॒ वाज॑मिवासरत् । च॒-
मूषु॒ शक्म॑ना॒सद॑म् ॥ १६ ॥ तं त्रि॑पृ॒ष्ठे त्रि॑वन्धु॒रे रथे॑ युञ्जन्ति॒ यात॑वे । ऋषी॑णां

सप्त धीतिभिः ॥ १७ ॥ तं सोतारो धनस्पृतमाशुं वाजाय यातवे । हरिं हिनोत वाजिनम् ॥ १८ ॥ आविशन्कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः । शूरो न गोषु तिष्ठति ॥ १९ ॥ आ त इन्दो मदाय कं पयो दुहन्त्यायवः । देवा देवेभ्यो मधु ॥ २० ॥ २७ ॥ आ नः सोमं पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम् । देवेभ्यो देवश्रुत्तमम् ॥ २१ ॥ एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे । मदिन्तमस्य धारया ॥ २२ ॥ अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि । सनद्वाजः परि स्रव ॥२३॥ उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः । गृणानो जमदग्निना ॥२४॥ पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः । अभि विश्वानि काव्या ॥ २५ ॥ ॥ २८ ॥ त्वं समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन् । पवस्व विश्वमेजय ॥ २६ ॥ तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे । तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ॥ २७ ॥ प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसश्चतः । अभि शुक्रामुपस्तिरम् ॥ २८ ॥ इन्द्रायेन्दुं पुनीतनोग्रं दक्षाय साधनम् । ईशानं वीतिराधसम् ॥ २९ ॥ पवमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत् । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ३० ॥ २९ ॥

॥ ६३ ॥ १—३० निध्रुविः काश्यप ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, १२, १७, २०, २२, २३, २५, २७, २८, ३० निचृद्गायत्री । ३, ७—११, १६, १८, १९, २१, २४, २६ गायत्री । ५,१३,१५ विराड्गायत्री । ६, १४, २९ ककुम्मती गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६३ ॥ आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् । अस्मे श्रवांसि धारय ॥ १ ॥ इषमूर्जं च पिन्वस इन्द्राय मत्सरिन्तमः । चमूष्वा नि षीदसि ॥ २ ॥ सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत् । मधुमाँ अस्तु वायवे ॥ ३ ॥ एते असृग्रमाशवोऽति ह्वरांसि बभ्रवः । सोमा ऋतस्य धारया ॥ ४ ॥ इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अपघ्नन्तो अराव्णः ॥ ५ ॥ ३० ॥ सुता अनु स्वमा रजोऽभ्यर्षन्ति बभ्रवः । इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः ॥ ६ ॥ अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः ॥ ७ ॥ अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ॥ ८ ॥ उत त्या हरितो दश सूरो अयुक्त यातवे । इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन् ॥ ९ ॥ परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम् । अव्यो वारेषु सिञ्चत ॥ १० ॥ ३१ ॥ पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम दुष्टरम् । यो दूणाशो वनुष्यता ॥ ११ ॥ अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् । अभि वाजमुत श्रवः ॥ १२ ॥ सोमो देवो न सूर्योऽद्रिभिः पवते सुतः । दधानः

कलशे रसम् ॥ १३ ॥ एते धामान्यार्या शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥ १४ ॥ सुता इन्द्राय वज्रिणे सोमासो दध्याशिरः । पवित्रमत्यक्षरन् ॥ १५ ॥ ३२ ॥ प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ । मदो यो देववीतमः ॥१६॥ तमी मृजन्त्यायवो हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्॥१७॥ आ पवस्व हिरण्यवदश्वावत्सोम वीरवत् । वाजं गोमन्तमा भर ॥ १८ ॥ परि वाजे न वाजयुमव्यो वारेषु सिञ्चत । इन्द्राय मधुमत्तमम् ॥ १९ ॥ कविं मृजन्ति मर्ज्यं धीभिर्विप्रा अवस्यवः । वृषा कनिक्रदर्षति ॥ २० ॥ ३३ ॥ वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया । मती विप्राः समस्वरन् ॥ २१ ॥ पवस्व देवायुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः । वायुमा रोह धर्मणा ॥ २२ ॥ पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् । प्रियः समुद्रमा विश ॥ २३ ॥ अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥ २४ ॥ पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः । अभि विश्वानि काव्या ॥ २५ ॥ ३४ ॥ पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः । घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥ २६ ॥ पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत । पृथिव्या अधि सानवि ॥ २७ ॥ पुनानः सोम धारयेन्दो विश्वा अप स्रिधः । जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥ २८ ॥ अपघ्नन्त्सोम रक्षसोऽभ्यर्ष कनिक्रदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ॥ २९ ॥ अस्मे वसूनि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा । इन्दो विश्वानि वार्या ॥ ३० ॥ ३५ ॥

॥ ६४ ॥ १—३० काश्यप ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४, ७, १२, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६ गायत्री । २, ५, ६, ८—११ १४, १६, २०, २३, २५, २९ निचृद्गायत्री । १८, २१, २७, २८ विराड्गायत्री । ३० यवमध्यागायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६४ ॥ वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः । वृषा धर्माणि दधिषे ॥ १ ॥ वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा मदः । सत्यं वृषन्वृषेदसि ॥ २ ॥ अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः । वि नो राये दुरो वृधि ॥ ३ ॥ असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः ॥ ४ ॥ शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः । पवन्ते वारे अव्यये ॥ ५ ॥३६॥ ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा । पवन्तामान्तरिक्ष्या ॥ ६ ॥ पवमानस्य विश्ववित्प्र ते सर्गा असृक्षत । सूर्यस्येव न रश्मयः ॥ ७ ॥ केतुं कृ-

एवन्दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि । समुद्रः सोम पिन्वसे ॥ ८ ॥ हिन्वानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि । अक्रान्देवो न सूर्यः ॥ ९ ॥ इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती । सृजदश्वं रथीरिव ॥ १० ॥ ३७ ॥ ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ देववीः पर्यक्षरत् । सीदन्नृतस्य योनिमा ॥ ११ ॥ स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः । इन्दविन्द्राय पीतये ॥ १२ ॥ इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ १३ ॥ पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः । हरे सृजान आशिरम् ॥ १४ ॥ पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् । द्युतानो वाजिभिर्यतः ॥ १५ ॥ ३८ ॥ प्र हिन्वानास इन्दवोऽच्छा समुद्रमाशवः । धिया जूता असृक्षत ॥ १६ ॥ मर्मृजानास आयवो वृथा समुद्रमिन्दवः । अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥ १७ ॥ परि णो याह्यस्मयुर्विश्वा वसून्योजसा । पाहि नः शर्म वीरवत् ॥ १८ ॥ मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्वभिः । प्र यत्समुद्र आहितः ॥ १९ ॥ आ यद्योनिं हिरण्ययमाशुर्ऋतस्य सीदति । जहात्यप्रचेतसः ॥ २० ॥ ३९ ॥ अभि वेना अनूषतेयक्षन्ति प्रचेतसः । मज्जन्त्यविचेतसः ॥ २१ ॥ इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः । ऋतस्य योनिमासदम् ॥ २२ ॥ तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति वेधसः । सं त्वा मृजन्त्यायवः ॥ २३ ॥ रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे । पवमानस्य मरुतः ॥ २४ ॥ त्वं सोम विपश्चितं पुनानो वाचमिष्यसि । इन्दो सहस्रभर्णसम् ॥ २५ ॥ ४० ॥ उतो सहस्रभर्णसं वाचं सोम मखस्युवम् । पुनान इन्दवा भर ॥ २६ ॥ पुनान इन्दवेषां पुरुहूत जनानाम् । प्रियः समुद्रमा विश ॥ २७ ॥ दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा । सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥ २८ ॥ हिन्वानो हेतृभिर्यत आ वाजं वाज्यक्रमीत् । सीदन्तो वनुषो यथा ॥ २९ ॥ ऋधक्सोम स्वस्तये सञ्जग्मानो दिवः कविः । पवस्व सूर्यो दृशे ॥ ३० ॥ ४१ ॥ १ ॥

॥ ६५ ॥ १-३० भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा ऋषिः॥ पवमानः सोमो देवता॥ छन्दः—१, ६, १०, १२, १३, १६, १८, २१, २२, २४-२६ गायत्री । २, ११, १४, १५, २९, ३० विराड्गायत्री । ३, ६-८, १९, २०, २७, २८ निचृद्गायत्री । ४, ९ पादनिचृद्गायत्री । १७, २३ ककुम्मती गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ६५ ॥ हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् । महामिन्दुं महीयुवः ॥ १ ॥ पवमान रुचारुचा देवो देवेभ्यस्परि । विश्वा वसून्या विश ॥ २ ॥ आ

पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः । इषे पवस्व संयतम् ॥ ३ ॥ वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे । पवमान स्वाध्यः ॥ ४ ॥ आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध । इहो ष्विन्दवा गहि ॥ ५ ॥ १ ॥ यदद्भिः परिषिच्यसे मृज्यमानो गभस्त्योः । द्रुणा सधस्थमश्नुषे ॥ ६ ॥ प्र सोमाय व्यश्ववत्पवमानाय गायत । महे सहस्रचक्षसे ॥ ७ ॥ यस्य वर्णं मधुश्चुतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ ८ ॥ तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । सखित्वमा वृणीमहे ॥ ९ ॥ वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः । विश्वा दधान ओजसा ॥ १० ॥ २ ॥ तं त्वा धर्तारमोण्योः पवमान स्वर्दृशम् । हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥११॥ अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया । युजं वाजेषु चोदय ॥१२॥ आ न इन्दो महीमिषं पवस्व विश्वदर्शतः । अस्मभ्यं सोम गातुवित् ॥ १३ ॥ आ कलशा अनूषतेन्दो धाराभिरोजसा । एन्द्रस्य पीतये विश ॥१४॥ यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः । स पवस्वाभिमातिहा ॥ १५ ॥ ३ ॥ राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ॥ १६ ॥ आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम् । वहा भगत्तिमूतये ॥ १७ ॥ आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर । सुष्वाणो देववीतये ॥ १८ ॥ अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् । सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥ १९ ॥ अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमो अर्षति विष्णवे ॥ २० ॥ ४ ॥ इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ २१ ॥ ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । ये वादः शर्यणावति ॥ २२ ॥ य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम् । ये वा जनेषु पञ्चसु ॥ २३ ॥ ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः ॥ २४ ॥ पवते हर्यतो हरिर्गृणानो जमदग्निना । हिन्वानो गोरधि त्वचि ॥ २५ ॥ ५ ॥ प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न सप्तयः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥ २६ ॥ तं त्वा सुतेष्वाभुवो हिन्विरे देवतातये । स पवस्वानया रुचा ॥ २७ ॥ आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे । पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥ २८ ॥ आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम् । पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥२९॥ आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा । पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥३०॥६॥

॥ ६६ ॥ १—३० शतं वैखानसा ऋषिः ॥ १—१८, २२—३० पवमानः सोमः । १९—२१ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री । २, ३, ५—८, १०, ११, १३, १५—१७, १९, २०, २३, २४, २५, २६, ३०

गायत्री । ४, १४, २२, २७ विराड्गायत्री । ६, १२, २१, २८, २६ निचृद्
गायत्री । १८ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—१७, १६—३० षड्जः । १८ गान्धारः ॥

॥ ६६ ॥ पवस्व विश्वचर्षणेऽभि विश्वानि काव्या । सखा सखिभ्य ईड्यः
॥ १ ॥ ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी । प्रतीची सोम तस्थतुः
॥ २ ॥ परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः । पवमान ऋतुभिः कवे
॥ ३ ॥ पवस्व जनयन्निषोऽभि विश्वानि वार्या । सखा सखिभ्य ऊतये ॥४॥
तव शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्ठे वि तन्वते । पवित्रं सोम धामभिः ॥ ५ ॥ ७ ॥
तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिस्रते । तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥ ६ ॥ प्र सोम
याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः । दधानो अक्षिति श्रवः ॥ ७ ॥ समु त्वा
धीभिरस्वरन्हिन्वतीः सप्त जामयः । विप्रमाजा विवस्वतः ॥ ८ ॥ मृजन्ति त्वा
समग्रुवोऽव्ये जीरावधि ष्वणि । रेभो यदज्यसे वने ॥ ६ ॥ पवमानस्य ते कवे
वाजिन्त्सर्गा असृक्षत । अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥ १० ॥ ८ ॥ अच्छा कोशं मधु
श्चुतमसृग्रं वारे अव्यये । अवावशन्त धीतयः ॥ ११ ॥ अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं
गावो न धेनवः । अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥१२॥ प्र ण इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति
सिन्धवः । यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥१३॥ अस्य ते सख्ये वयमियक्षन्तस्त्वोतयः । इन्दो
सखित्वमुश्मसि ॥१४॥ आ पवस्व गविष्टये महे सोम नृचक्षसे । एन्द्रस्य जठरे विश
॥१५॥६॥ महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्द्र ओजिष्ठः । युध्वा सञ्छश्वज्जिगेथ
॥ १६ ॥ य उग्रेभ्यश्चिदोजीयाञ्छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः । भूरिदाभ्यश्चिन्मंहीयान्
॥ १७ ॥ त्वं सोम सूर एषस्तोकस्य साता तनूनाम् । वृणीमहे सख्याय वृणीमहे
युज्याय ॥ १८ ॥ अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व
दुच्छुनाम् ॥ १६ ॥ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे म-
हागयम् ॥ २० ॥ १० ॥ अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयिं मयि
पोषम् ॥ २१ ॥ पवमानो अति स्रिधोऽभ्यर्षति सुष्टुतिम् । सूरो न विश्वदर्शतः
॥ २२ ॥ स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान्प्रयसे हितः । इन्दुरत्यो विचक्षणः ॥२३॥
पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् । कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ॥ २४ ॥ पव-
मानस्य जङ्घ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत । जीरा अजिरशोचिषः ॥२५ ॥ ११ ॥ पव-
मानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः । हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥ २६ ॥ पवमानो व्य-
श्नवद्रश्मिभिर्वाजसातमः । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ २७ ॥ प्र सुवान इन्दुरक्षाः प-
वित्रमत्यव्ययम् । पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥ २८ ॥ एष सोमो अधि त्वचि गवां क्री-

त्यद्रिभिः । इन्द्रं मदाय जोहुवत् ॥ २९ ॥ यस्य ते द्युम्नवत्पयः पवमानाभृतं दिवः । तेन नो मृळ जीवसे ॥ ३० ॥ १२ ॥

॥ ६७ ॥ ऋषिः–१–३ भरद्वाजः । ४–६ कश्यपः । ७–९ गोतमः । १०–१२ अत्रिः । १३–१५ विश्वामित्रः । १६–१८ जमदग्निः । १९–२१ वसिष्ठः । २२–३२ पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा ॥ देवताः–१–९, १३–२२, २८–३० पवमानः सोमः । १०–१२ पवमानः सोमः पूषा वा । २३, २४ अग्निः । २५ अग्निः सविता वा । २६ अग्निरग्निर्वा सविता च । २७ अग्निर्विश्वेदेवा वा । ३१, ३२ पवमान्यध्येतृस्तुतिः ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ११—१३, १५, १९, २३, २५ निचृद्गायत्री । ३, ८ विराड्गायत्री । १० यवमध्यागायत्री । १६—१८ भुरिगार्ची विराड्गायत्री । ६, ७, ९, १४, २०—२२, २४, २६, २८, २९ गायत्री । २७ अनुष्टुप् । ३१, ३२ निचृदनुष्टुप् । ३० पुरउष्णिक् ॥ स्वरः—१—२६, २८, २९ षड्जः । २७, ३१, ३२ गान्धारः । ३० ऋषभः ॥

॥ ६७ ॥ त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे । पवस्व मंहयद्रयिः ॥ १ ॥ त्वं सुतो नृमादनो दधन्वान्मत्सरिन्तमः । इन्द्राय सूरिरन्धसा ॥ २ ॥ त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ॥ ३ ॥ इन्दुर्हिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । हरिर्वाजमचिक्रदत् ॥ ४ ॥ इन्दो व्यव्यमर्षसि वि श्रवांसि वि सौभगा । वि वाजान्त्सोम गोमतः ॥ ५ ॥ १३ ॥ आ न इन्दो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् । भरा सोम सहस्रिणम् ॥ ६ ॥ पवमानास इन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः । इन्द्रं यामेभिराशत ॥ ७ ॥ ककुहः सोम्यो रस इन्दुरिन्द्राय पूर्व्यः । आयुः पवत आयवे ॥ ८ ॥ हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं मधुश्चुतम् । अभि गिरा समस्वरन् ॥ ९ ॥ अविता नो अजाश्वः पूषा यामनियामनि । आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ १० ॥ १४ ॥ अयं सोमः कपर्दिने घृतं न पवते मधु । आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ ११ ॥ अयं त आघृणे सुतो घृतं न पवते शुचि । आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ १२ ॥ वाचो जन्तुः कवीनां पवस्व सोम धारया । देवेषु रत्नधा असि ॥ १३ ॥ आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते । अभि द्रोणा कनिक्रदत् ॥ १४ ॥ परि प्र सोम ते रसोऽसर्जि कलशे सुतः । श्येनो न तक्तो अर्षति ॥ १५ ॥ १५ ॥ पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः ॥ १६ ॥ असृग्रन्देववीतये वाजयन्तो रथा इव ॥ १७ ॥ ते सुतासो मदिन्तमाः शुक्रा वायुमसृक्षत ॥ १८ ॥ ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रं सोम गच्छसि । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ १९ ॥ एष तुन्नो अ-

भिष्टुतः पवित्रमति गाहते । रक्षोहा वारमव्ययम् ॥ २० ॥ १६ ॥ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह । पवमान वितज्जहि ॥ २१ ॥ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु नः ॥ २२ ॥ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥ २३ ॥ यत्ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहि नः । ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥ २४ ॥ उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च मां पुनीहि विश्वतः ॥ २५ ॥ १७ ॥ त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः । अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥ २६ ॥ पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया । विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मां ॥ २७ ॥ प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः । देवेभ्य उत्तमं हविः ॥ २८ ॥ उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम् । अगन्म बिभ्रतो नमः ॥ २९ ॥ अलाय्यस्य परशुर्ननाश तमा पवस्व देव सोम । आखुं चिदेव देव सोम ॥ ३० ॥ यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम् । सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ॥ ३१ ॥ पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम् । तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥ ३२ ॥ १८ ॥ ३ ॥

॥ ६८ ॥ १—१० वत्सप्रिर्भालन्दन ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृज्जगती । २, ४, ५, ९ जगती । ८ विराड्जगती । १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—९ निषादः । १० धैवतः ॥

॥ ६८ ॥ प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः । बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे ॥ १ ॥ स रोरुवदभि पूर्वा अचिक्रददुपारुहः श्रथयन्त्स्वादते हरिः । तिरः पवित्रं परियन्नुरु ज्रयो नि शर्याणि दधते देव आ वरम् ॥ २ ॥ वि यो ममे यम्या संयती मदः साकंवृधा पयसा पिन्वदक्षिता । मही अपारे रजसी विवेविददभिव्रजन्नक्षितं पाज आ ददे ॥ ३ ॥ स मातरा विचरन्वाजयन्नपः प्र मेधिरः स्वधया पिन्वते पदम् । अंशुर्यवेन पिपिशे यतो नृभिः सं जामिभिर्नसते रक्षते शिरः ॥ ४ ॥ सं दक्षेण मनसा जायते कविर्ऋतस्य गर्भो निहितो यमा परः । यूना ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतुर्गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम् ॥ ५ ॥ १९ ॥ मन्द्रस्य रूपं विविदुर्मनीषिणः श्येनो यदन्धो अभरत्परावतः । तं मर्जयन्त सुवृधं नदीष्वाँ उशन्तमंशुं परियन्तमृग्मियम् ॥ ६ ॥ त्वां मृजन्ति दश योषणः सुतं सोम ऋषिभिर्मतिभिर्धीतिभिर्हितम् । अव्यो वारेभिरुत देवहूतिभिर्नृभिर्यतो वाजमा दर्षि सातये ॥ ७ ॥ परिप्रयन्तं वय्यं सुषंसदं सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः । यो धारया मधुमाँ ऊर्मिणा दिव

इ॒यर्ति॒ वाचं॑ रयि॒षाळम॑र्त्यः ॥ ८ ॥ अ॒यं दि॒व इ॑यर्ति॒ विश्व॒मा रज॒ः सोम॑ः पुना॒-
नः क॒लशे॑षु सीदति । अ॒द्भिर्गोभि॑र्मृज्यते॒ अद्रि॑भिः सु॒तः पु॑ना॒न इन्दु॒र्वरि॑वो विद-
त्प्रि॒यम् ॥ ९ ॥ ए॒वा न॑ः सोम परिषि॒च्यमा॑नो॒ वयो॒ दध॑च्चि॒त्रत॑मं पवस्व । अ॒द्वे॒षे
द्यावा॑पृथि॒वी हु॑वेम॒ देवा॑ ध॒त्त र॒यिम॒स्मे सु॒वीर॑म् ॥ १० ॥ २० ॥

॥ ६९ ॥ १–१० हिरण्यस्तूप ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, ५ पादनिचृज्जगती । २–४, ६ जगती । ७, ८ निचृज्जगती । ९ निचृत्त्रिष्टुप् । १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–८ निषादः । ९, १० गान्धारः ॥

॥ ६९ ॥ इषु॒र्न धन्व॒न्प्रति॑ धीयते म॒तिर्व॒त्सो न मा॒तुरुप॑ स॒र्ज्यूध॑नि । उ॒रुधा॑-
रेव दुहे॒ अग्र॑ आय॒त्यस्य॑ व्र॒तेष्वपि॒ सोम॑ इष्यते ॥ १ ॥ उपो॑ म॒तिः पृ॒च्यते॑ सि॒-
च्यते॒ मधु॑ म॒न्द्राज॑नी चोदते अ॒न्तरा॒सनि॑ । पव॑मानः स॒न्त॒निः प्र॑घ्न॒तामि॑व॒ मधु॑-
मान्द्र॒प्सः परि॒ वार॑मर्षति ॥ २ ॥ अव्ये॑ वधू॒युः प॑वते॒ परि॑ त्व॒चि श्र॑थ्नी॒ते न॒प्ती-
रदि॑तेर्ऋ॒तं य॒ते । हरि॑रक्रान्यज॒तः सं॑य॒तो मदो॑ नृ॒म्णा शिशा॑नो महि॒षो न शो॑भते
॥ ३ ॥ उ॒क्षा मि॑माति॒ प्रति॑ यन्ति धे॒नवो॑ दे॒वस्य॑ दे॒वीरुप॑ यन्ति निष्कृ॒तम् ।
अत्य॑क्रमी॒दर्जु॑नं॒ वार॑म॒व्यय॑म॒त्कं॒ न नि॒क्तं परि॒ सोमो॑ अव्यत ॥ ४ ॥ अमृ॑क्तेन॒
रुश॑ता॒ वास॑सा॒ हरि॒रम॑र्त्यो नि॒र्णिजा॒नः परि॑ व्यत । दि॒वस्पृ॒ष्ठं ब॒र्हणा॑ नि॒र्णिजे॑
कृतोप॒स्तर॑णं च॒म्वो॑र्नभ॒स्मय॑म् ॥ ५ ॥ २१ ॥ सूर्य॑स्येव र॒श्मयो॑ द्रावयि॒त्नवो॑ म-
त्स॒रास॑ः प्र॒सुप॑ः सा॒कमी॑रते । तन्तुं॑ त॒तं परि॒ सर्गा॑स आ॒शवो॒ नेन्द्रा॑दृ॒ते प॑वते॒ धाम॒
किं च॒न ॥ ६ ॥ सिन्धो॑रिव प्रव॒णे नि॒म्न आ॒शवो॒ वृष॑च्युता॒ मदा॑सो गा॒तुमा॑शत ।
शं नो॑ नि॒वेशे॑ द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे॒ऽस्मे वाजा॑ः सोम तिष्ठन्तु कृ॒ष्टय॑ः ॥ ७ ॥ आ न॑ः
पवस्व॒ वसु॑म॒द्धिर॑ण्यव॒दश्वा॑व॒द्गोम॒द्यव॑मत्सु॒वीर्य॑म् । यू॒यं हि सो॑म पि॒तरो॒ मम॒ स्थन॑
दि॒वो मू॒र्धान॒ः प्रस्थि॑ता वय॒स्कृत॑ः ॥ ८ ॥ ए॒ते सोमा॒ः पव॑माना॒स इन्द्रं॒ रथा॑ इव॒
प्र य॑युः सा॒तिमच्छ॑ । सु॒ताः प॒वित्र॒मति॑ य॒न्त्यव्यं॑ हि॒त्वी व॒व्रिं ह॒रितो॑ वृ॒ष्टिमच्छ॑
॥ ९ ॥ इन्द॒विन्द्रा॑य बृह॒ते प॑वस्व सुमृळी॒को अ॑नव॒द्यो रि॒शादा॑ः । भरा॑ च॒न्द्राणि॑
गृण॒ते वसू॑नि दे॒वैर्द्या॑वापृथिवी॒ प्राव॑तं नः ॥ १० ॥ २२ ॥

॥ ७० ॥ १–१० रेणुर्वैश्वामित्र ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, ३ त्रिष्टुप् । २, ६, ९, १० निचृज्जगती । ४, ५, ७ जगती । ८ विराड्जगती ॥ स्वरः–१, ३ धैवतः । २, ४–१० ॥ निषादः

॥ ७० ॥ त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रे सत्यामाशिरं पूर्व्ये व्योमनि । चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत ॥ १ ॥ स भिक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे । तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः ॥२॥ ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी उभे अनु । येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद्राजानं मनना अगृभ्णत ॥ ३ ॥ स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः प्र मध्यमासु मातृषु प्रमे सचा । व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशौ ॥ ४ ॥ स मर्मृजान इन्द्रियाय धायस ओभे अन्ता रोदसी हर्षते हितः । वृषा शुष्मेण बाधते वि दुर्मतीरादेदिशानः शर्यहेव शुरुधः ॥ ५ ॥ २३ ॥ स मातरा न ददृशान उस्रियो नानददेति मरुतामिव स्वनः । जानन्नृतं प्रथमं यत्स्वर्णरं प्रशस्तये कमवृणीत सुक्रतुः ॥ ६ ॥ रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः । आ योनिं सोमः सुकृतं नि षीदति गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी ॥ ७ ॥ शुचिः पुनानस्तन्वमरेपसमव्ये हरिर्न्यधाविष्ट सानवि । जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे त्रिधातु मधु क्रियते सुकर्मभिः ॥ ८ ॥ पवस्व सोम देववीतये वृषेन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश । पुरा नो बाधाद्दुरिताति पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते ॥ ९ ॥ हितो न सप्तिरभि वाजमर्षेन्द्रस्येन्दो जठरमा पवस्व । नावा न सिन्धुमति पर्षि विद्वाञ्छूरो न युध्यन्नव नो निदः स्पः ॥ १० ॥ २४ ॥

॥ ७१ ॥ १—९ ऋषभो वैश्वामित्र ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ७ विराड्जगती । २ जगती । ३, ५, ८ निचृज्जगती । ६ पादनिचृज्जगती । ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—८ निषादः । ९ धैवतः ॥

॥ ७१ ॥ आ दक्षिणा सृज्यते शुष्म्या३ सदं वेति द्रुहो रक्षसः पाति जागृविः । हरिरोपशं कृणुते नभस्पय उपस्तिरे चम्वो३र्ब्रह्म निर्णिजे ॥ १ ॥ प्र कृष्टिहेव शूष एति रोरुवदसुर्यं१ वर्णं नि रिणीते अस्य तम् । जहाति वव्रिं पितुरेति निष्कृतमुपप्रुतं कृणुते निर्णिजं तना ॥२॥ अद्रिभिः सुतः पवते गभस्त्योर्वृषायते नभसा वेपते मती । स मोदते न संते साधते गिरा नेनिक्ते अप्सु यजते परीमणि ॥ ३ ॥ परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिञ्चन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम् । आ यस्मिन्गावः सुहुताद ऊधनि मूर्धञ्छ्रीणन्त्यग्रियं वरीमभिः ॥ ४ ॥ समी रथं न भुरिजोरहेषत दश स्वसारो अदितेरुपस्थ आ । जिगादुप ज्रयति गोरपीच्यं पदं

यदस्य मतुथा अजीजनन् ॥ ५ ॥ २५ ॥ श्येनो न योनिं सदनं धिया कृतं हिरण्ययमासदं देव एषति । ए रिणन्ति बर्हिषि प्रियं गिराश्वो न देवाँ अप्येति यज्ञियः ॥ ६ ॥ परा व्यक्तो अरुषो दिवः कविर्वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि । सहस्रणीतिर्यतिः परायती रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति ॥ ७ ॥ त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत्समृता सेधति स्त्रिधः । अप्सा याति स्वधया दैव्यं जनं सं सुष्टुती नसते सं गो अग्रया ॥८॥ उक्षेव यूथा परियन्नरावीदधि त्विषीरधित सूर्यस्य। दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः परि क्रतुना पश्यते जाः॥९॥२६॥

॥ ७२ ॥ १–९ हरिमन्त ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता॥ छन्दः—१–३, ६, ७ निचृज्जगती । ४, ८ जगती । ५ विराड्जगती । ९ पादनिचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७२ ॥ हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते । उद्वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कति चित्परिप्रियः ॥ १ ॥ साकं वदन्ति बहवो मनीषिण इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहुः । यदी मृजन्ति सुगभस्तयो नरः सनीळाभिर्दशभिः काम्यं मधु ॥२॥ अरममाणो अत्येति गा अभि सूर्यस्य प्रियं दुहितुस्तिरो रवम् । अन्वस्मै जोषमभरद्विनङ्गसः सं द्वयीभिः स्वसृभिः क्षेति जामिभिः ॥३॥ नृधूतो अद्रिषुतो बर्हिषि प्रियः पतिर्गवां प्रदिव इन्दुर्ऋत्वियः । पुरन्धिवान्मनुषो यज्ञसाधनः शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ॥ ४ ॥ नृबाहुभ्यां चोदितो धारया सुतोऽनुष्वधं पवते सोम इन्द्र ते । आप्राः क्रतून्त्स मजैरध्वरे मतीर्वेर्न द्रुषच्चम्वोरासदद्धरिः ॥ ५ ॥ २७ ॥ अंशुं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं कविं कवयोऽपसो मनीषिणः । समी गावो मतयो यन्ति संयत ऋतस्य योना सदने पुनर्भुवः ॥ ६ ॥ नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽपामूर्मौ सिन्धुष्वन्तरुक्षितः। इन्द्रस्य वज्रो वृषभो विभूवसुः सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥ ७॥ स तू पवस्व परि पार्थिवं रजः स्तोत्रे शिक्षन्नाधून्वते च सुक्रतो । मा नो निर्भाग्वसुनः सादनस्पृशो रयिं पिशङ्गं बहुलं वसीमहि ॥ ८ ॥ आ तू न इन्दो शतदात्वश्व्यं सहस्रदातु पशुमद्धिरण्यवत् । उप मास्व बृहती रेवतीरिषोऽधि स्तोत्रस्य पवमान नो गहि ॥ ९ ॥ २८ ॥

॥ ७३ ॥ १–९ पवित्र ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ जगती । २–७ निचृज्जगती । ८, ९ विराड्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७३ ॥ स्रक्वे द्रप्सस्य धमतः समस्वरन्नृतस्य योना समरन्त नाभयः । त्रीन्त्स
मूर्ध्नो असुरश्चक्र आरभे सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् ॥ १ ॥ सम्यक् सम्यञ्चो
महिषा अहेषत सिन्धोरूर्मावधि वेना अवीविपन् । मधोर्धाराभिर्जनयन्तो अर्कमि
त्प्रियामिन्द्रस्य तन्वमवीवृधन् ॥ २ ॥ पवित्रवन्तः परि वाचमासते पितैषां प्रत्नो
अभि रक्षति व्रतम् । महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम् ॥ ३
सहस्रधारेऽव ते समस्वरन्दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः । अस्य स्पशो न नि
मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः ॥ ४ ॥ पितुर्मातुरध्या ये समस्व
रन्नृचा शोचन्तः सन्दहन्तो अव्रतान् । इन्द्रद्विष्टामप धमन्ति मायया त्वचमसिक्नीं
भूमनो दिवस्परि ॥ ५ ॥ २९ ॥ प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरञ्छ्लोकयन्त्रासो र
भसस्य मन्तवः । अपानक्षासो बधिरा अहासत ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः
॥ ६ ॥ सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः । रुद्रास ए
षामिषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वञ्चः सुदृशो नृचक्षसः ॥ ७ ॥ ऋतस्य गोपा न
दभाय सुक्रतुस्त्री ष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे । विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यत्य
वाजुष्टान्विध्यति कर्ते अव्रतान् ॥ ८ ॥ ऋतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ जिह्वाया अग्रे व
रुणस्य मायया । धीराश्चित्तत्समिनक्षन्त आशतात्रा कर्तमव पदात्यप्रभुः ॥ ९ ॥ ३० ॥

॥ ७४ ॥ १–९ कक्षीवानृषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१,
पादनिचृज्जगती । २, ६ विराड्जगती । ४, ७ जगती । ५, ९ निचृज्जगती
८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–७, ९ निषादः । ८ धैवतः ॥

॥ ७४ ॥ शिशुर्न जातोऽव चक्रदद्वने स्व१र्यद्वाज्यरुषः सिषासति । दिवो
रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः ॥ १ ॥ दिवो यः स्कम्भो ध
रुणः स्वातत आपूर्णो अंशुः पर्येति विश्वतः । सेमे मही रोदसी यक्षदावृता समी
चीने दाधार समिषः कविः ॥ २ ॥ महि प्सरः सुकृतं सोम्यं मधूर्वी गव्यूतिरदि
तेर्ऋतं यते । ईशे यो वृष्टेरित उस्रियो वृषापां नेता य इतऊतिर्ऋग्मियः ॥ ३
आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पय ऋतस्य नाभिरमृतं वि जायते । समीचीनाः सुदा
नवः प्रीणन्ति तं नरो हितमव मेहन्ति पेरवः ॥ ४ ॥ अरावीदंशुः सचमान ऊ
र्मिणा देवाव्यं१मनुषे पिन्वति त्वचम् । दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोक
च तनयं च धामहे ॥ ५ ॥ ३१ ॥ सहस्रधारेऽव ता असश्चतस्तृतीये सन्तु र
जसि प्रजावतीः । चतस्रो नाभो निहिता अवो दिवो हविर्भरन्त्यमृतं घृतश्चुत

॥ ६ ॥ श्वेतं रूपं कृणुते यत्सिषासति सोमो मीढ्वाँ असुरो वेद भूमनः । धिया शमी सचते सेमभि प्रवद्दिवस्कबन्धमव दर्षदुद्रिणम् ॥ ७ ॥ अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तं कार्ष्मन्ना वाज्यक्रमीत्ससवान् । आ हिन्विरे मनसा देवयन्तः कक्षीवते शतहिमाय गोनाम् ॥ ८ ॥ अद्भिः सोम पपृचानस्य ते रसोऽव्यो वारं वि पवमान धावति । स मृज्यमानः कविभिर्मदिन्तम स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये ॥ ९ ॥ ३२ ॥

॥ ७५ ॥ १—५ कविर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृज्जगती । २ पादनिचृज्जगती । ५ विराड्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७५ ॥ अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते । आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥ १ ॥ ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः । दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं॑नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ॥ २ ॥ अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्येमानः कोश आ हिरण्यये । अभीमृतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति ॥ ३ ॥ अद्रिभिः सुतो मतिभिश्चनोहितः प्ररोचयन्रोदसी मातरा शुचिः । रोमाण्यव्या समया वि धावति मधोर्धारा पिन्वमाना दिवेदिवे ॥ ४ ॥ परि सोम धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम् । ये ते मदा आहनसो विहायसस्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मघम् ॥ ५ ॥ ३३ ॥ २ ॥

॥ ७६ ॥ १—५ कविर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २ विराड्जगती । ३, ५ निचृज्जगती । ४ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१ धैवतः । २—५ निषादः ॥

॥ ७६ ॥ धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः । हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुते नदीष्वा ॥ १ ॥ शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वः सिषासन्रथिरो गविष्टिषु । इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः ॥ २ ॥ इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश । प्र णः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया न वाजाँ उप मासि शश्वतः ॥ ३ ॥ विश्वस्य राजा पवते स्वर्दृश ऋतस्य धीतिमृषिषाळवीवशत् । यः सूर्यस्यासिरेण मृज्यते पिता मतीनामसमष्टकाव्यः ॥ ४ ॥ वृषेव यूथा परि कोशमर्षस्यपामुपस्थे वृषभः कनिक्रदत् । स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो यथा जेषाम समिथे त्वोतयः ॥ ५ ॥ १ ॥

॥ ७७ ॥ १—५ कविर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ जगती। २, ४, ५ निचृज्जगती। ३ पादनिचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७७ ॥ एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः। अभीमृतस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः ॥ १ ॥ स पूर्व्यः पवते यं दिवस्परि श्येनो मथायदिषितस्तिरो रजः। स मध्व आ युवते वेविजान इत्कृशानोरस्तुर्मनसाह बिभ्युषा ॥ २ ॥ ते नः पूर्वास उपरास इन्दवो महे वाजाय धन्वन्तु गोमते। ईक्षेण्यासो अह्योऽन चारवो ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्हविः ॥३॥ अयं नो विद्वान्वनवद्वनुष्यत इन्दुः सत्राचा मनसा पुरुष्टुतः। इनस्य यः सदने गर्भमादधे गवामुरुब्जमभ्यर्षति व्रजम् ॥ ४॥ चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो रसो महाँ अदब्धो वरुणो हुरुग्यते। असावि मित्रो वृजनेषु यज्ञियोऽत्यो न यूथे वृषयुः कनिक्रदत् ॥ ५ ॥ २ ॥

॥ ७८ ॥ १—५ कविर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती। २—४ जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७८ ॥ प्र राजा वाचं जनयन्नसिष्यददपो वसानो अभि गा इयक्षति। गृभ्णाति रिप्रमविरस्य तान्वा शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् ॥ १ ॥ इन्द्राय सोम परि षिच्यसे नृभिर्नृचक्षा ऊर्मिः कविरज्यसे वने। पूर्वीर्हि ते स्रुतयः सन्ति यातवे सहस्रमश्वा हरयश्चमूषदः ॥ २ ॥ समुद्रिया अप्सरसो मनीषिणमासीना अन्तरभि सोममक्षरन्। ता ईं हिन्वन्ति हर्म्यस्य सक्षणिं याचन्ते सुम्नं पवमानमक्षितम् ॥ ३ ॥ गोजिन्नः सोमो रथजिद्धिरण्यजित्स्वर्जिदब्जित्पवते सहस्रजित्। यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्समरुणं मयोभुवम् ॥ ४ ॥ एतानि सोम पवमानो अस्मयुः सत्यानि कृण्वन्द्रविणान्यर्षसि। जहि शत्रुमन्तिके दूरके च य उर्वीं गव्यूतिमभयं च नस्कृधि ॥ ५ ॥ ३ ॥

॥ ७९ ॥ १—५ कविर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३ पादनिचृज्जगती। २, ४, ५ निचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७९ ॥ अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र सुवानासो बृहद्दिवेषु हरयः। वि च नशन्न इषो अरातयोऽर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः ॥ १ ॥ प्र णो धन्वन्त्विन्दवो मदच्युतो धना वा येभिरर्वतो जुनीमसि। तिरो मर्तस्य कस्य चित्परिह्वृतिं वयं धनानि विश्वधा भरेमहि ॥ २ ॥ उत स्वस्या अरात्या अरिर्हि ष

उतान्यस्या अरात्या वृको हि ष। धन्वन्न तृष्णा समरीत ताँ अभि सोम जहि पवमान दुराध्यः ॥ ३ ॥ दिवि ते नाभा परमो य आददे पृथिव्यास्ते रुरुहुः सानवि क्षिपः। अद्रयस्त्वा बप्सति गोरधि त्वच्यप्सु त्वा हस्तैर्दुदुहुर्मनीषिणः ॥ ४ ॥ एवा त इन्दो सुभ्वं सुपेशसं रसं तुञ्जन्ति प्रथमा अभिश्रियः। निदंनिदं पवमान नि तारिष आविस्ते शुष्मो भवतु प्रियो मदः ॥ ५ ॥ ४ ॥

॥ ८० ॥ १-५ वसुर्भारद्वाज ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, ४ जगती। २, ५ विराड्जगती। ३ निचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ८० ॥ सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान्हवते दिवस्परि। बृहस्पते रवथेना वि दिद्युते समुद्रासो न सवनानि विव्यचुः ॥ १ ॥ यं त्वा वाजिन्नघ्न्या अभ्यनूषतायोहतं योनिमा रोहसि द्युमान्। मघोनामायुः प्रतिरन्महि श्रव इन्द्राय सोम पवसे वृषा मदः ॥ २ ॥ एन्द्रस्य कुक्षा पवते मदिन्तम ऊर्जं वसानः श्रवसे सुमङ्गलः। प्रत्यङ् स विश्वा भुवनाभि पप्रथे क्रीळन्हरिरत्यः स्यन्दते वृषा ॥ ३ ॥ तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं नरः सहस्रधारं दुहते दश क्षिपः। नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावभिः सुतोविश्वान्देवाँ आ पवस्वा सहस्रजित् ॥ ४ ॥ तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तमद्रिभिर्दुहन्त्यप्सु वृषभं दश क्षिपः। इन्द्रं सोम मादयन्दैव्यं जनं सिन्धोरिवोर्मिः पवमानो अर्षसि ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ८१ ॥ १—५ वसुर्भारद्वाज ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१-३ निचृज्जगती। ४ जगती। ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः १-४ निषादः। ५ धैवतः॥

॥ ८१ ॥ प्र सोमस्य पवमानस्योर्मय इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशसः। दध्ना यदीमुन्नीता यशसा गवां दानाय शूरमुदमन्दिषुः सुताः ॥ १ ॥ अच्छा हि सोमः कलशाँ असिष्यददत्यो न वोळ्हा रघुवर्तनिर्वृषा। अथा देवानामुभयस्य जन्मनो विद्वाँ अश्नोत्यमुत इतश्च यत् ॥ २ ॥ आ नः सोम पवमानः किरा वस्विन्दो भव मघवा राधसो महः। शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना मा नो गयमारे अस्मत्परा सिचः ॥ ३ ॥ आ नः पूषा पवमानः सुरातयो मित्रो गच्छन्तु वरुणः सजोषसः। बृहस्पतिर्मरुतो वायुरश्विना त्वष्टा सविता सुयमा सरस्वती ॥ ४ ॥ उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे अर्यमा देवो अदितिर्विधाता। भगो नृशंस उर्वन्तरिक्षं विश्वे देवाः पवमानञ्जुषन्त ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥८२॥ १–५ वसुर्भारद्वाज ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, ४ विराड्जगती । २ निचृज्जगती । ३ जगती । ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–४ निषादः । ५ धैवतः ॥

॥ ८२ ॥ असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् । पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ॥ १ ॥ कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि । अपसेधन्दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥ २ ॥ पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे । स्वसार आपो अभि गा उतासरन्त्सं ग्रावभिर्नसते वीते अध्वरे ॥ ३ ॥ जायेव पत्यावधि शेव मंहसे पज्राया गर्भ शृणुहि ब्रवीमि ते । अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसेऽनिन्द्यो वृजने सोम जागृहि ॥ ४ ॥ यथा पूर्वेभ्यः शतसा अमृध्रः सहस्रसाः पर्यया वाजमिन्दो । एवा पवस्व सुविताय नव्यसे तव व्रतमन्वापः सचन्ते ॥ ५ ॥ ७ ॥

॥ ८३ ॥ १–५ पवित्र ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, ४ निचृज्जगती । २, ५ विराड्जगती । ३ जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ८३ ॥ पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः । अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत ॥ १ ॥ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् । अवन्त्यस्य पवीतारमाशवो दिवस्पृष्ठमधि तिष्ठन्ति चेतसा ॥ २ ॥ अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभर्ति भुवनानि वाजयुः । मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ॥ ३ ॥ गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यद्भुतः गृभ्णाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत ॥४॥ हविर्हविष्मो महि सद्म दैव्यं नभो वसानः परि यास्यध्वरम् । राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बृहत् ॥५॥८॥

॥ ८४ ॥ १–५ प्रजापतिर्वाच्य ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, ३ विराड्जगती । ४ जगती । २ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, ३, ४ निषादः । २, ५ धैवतः ॥

॥ ८४ ॥ पवस्व देवमादनो विचर्षणिरप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे । कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिमदुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम् ॥ १ ॥ आ यस्तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति । कृण्वन्त्सञ्चृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः

सिक्तमुषसं न सूर्यः ॥ २ ॥ आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वा देवानां सुम्न इषयन्नुपावसुः । आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन्दैव्यं जनम् ॥ ३ ॥ एष स्य सोमः पवते सहस्रजिद्धिन्वानो वाचमिषिरामुषर्बुधम् । इन्दुः समुद्रमुदियर्ति वायुभिरेन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति ॥ ४ ॥ अभि त्यं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वर्विदम् । धनञ्जयः पवते कृत्व्यो रसो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ ८५ ॥ १–१२ वेनो भार्गव ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, ५, ६, १० विराड्जगती । २, ७ निचृज्जगती । ३ जगती । ४, ६ पादनिचृज्जगती । ८ आर्चीस्वराड्जगती । ११ भुरिक् त्रिष्टुप् । १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–१० निषादः । ११, १२ धैवतः ॥

॥ ८५ ॥ इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह । मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः ॥ १ ॥ अस्मान्त्समर्ये पवमान चोदय दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः । जहि शत्रूँरभ्या भन्दनायतः पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि ॥ २ ॥ अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तम आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तमः । अभि स्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनस्य निंसते ॥३॥ सहस्रणीथः शतधारो अद्भुत इन्द्रायेन्दुः पवते काम्यं मधु । जयन्क्षेत्रमभ्यर्षा जयन्नप उरुं नो गातुं कृणु सोम मीढ्वः ॥ ४ ॥ कनिक्रदत्कलशे गोभिरज्यसे व्य१व्ययं समया वारमर्षसि । मर्मृज्यमानो अत्यो न सानसिरिन्द्रस्य सोम जठरे समक्षरः ॥ ५ ॥ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने । स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः ॥६॥१०॥ अत्यं मृजन्ति कलशे दश क्षिपः प्र विप्राणां मतयो वाच ईरते । पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिमेन्द्रं विशन्ति मदिरास इन्दवः ॥ ७ ॥ पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्यमुर्वीं गव्यूतिं महि शर्म सप्रथः । माकिर्नो अस्य परिषूतिरीशतेन्दो जयेम त्वया धनंधनम् ॥ ८ ॥ अधि द्यामस्थाद्वृषभो विचक्षणोऽरूरुचद्वि दिवो रोचना कविः । राजा पवित्रमत्येति रोरुवद्दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः ॥ ९ ॥ दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतो वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् । अप्सु द्रप्सं वावृधानं समुद्र आ सिन्धोरूर्मा मधुमन्तं पवित्र आ ॥ १० ॥ नाके सुपर्णमुपपप्तिवांसं गिरो वेनानामकृपन्त पूर्वीः । शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्नतं हिरण्ययं शकुनं क्षामणि स्थाम् ॥ ११ ॥ ऊर्ध्वो

गन्धर्वो अधि नाके अस्थाद्विश्वा रूपा प्रतिचक्षाणो अस्य । भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत्प्रारूरुचद्रोदसी मातरा शुचिः ॥ १२ ॥ ११ ॥ ४ ॥

॥ ८६ ॥ ऋषिः—१–१० आकृष्टामाषाः । ११–२० सिकता निवावरी । २१–३० पृश्नयोऽजाः । ३१–४० त्रय ऋषिगणाः । ४१–४५ अत्रिः । ४६–४८ गृत्समदः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१,६,२१,२६,३३,४० जगती । २, ७, ८, ११, १२, १७, २०, २३, ३०, ३१, ३४, ३५, ३६, ३८, ३९, ४२, ४४, ४७ विराड्जगती । ३–५, ९, १०, १३, १६, १८, १९, २२, २५, २७, ३२, ३७, ४१, ४६ निचृज्जगती । १४, १५, २८, २९, ४३, ४८ पादनिचृज्जगती । २४ आर्चीजगती । ४५ आर्चीस्वराड्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ८६ ॥ प्र त आशवः पवमान धीजवो मदा अर्षन्ति रघुजा इव त्मना । दिव्याः सुपर्णा मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः परि कोशमासते ॥ १ ॥ प्र ते मदासो मदिरास आशवोऽसृक्षत रथ्यासो यथा पृथक् । धेनुर्न वत्सं पयसाभि वज्रिणमिन्द्रमिन्दवो मधुमन्त ऊर्मयः ॥ २ ॥ अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष स्वर्वित्कोशं दिवो अद्रिमातरम् । वृषा पवित्रे अधि सानो अव्यये सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ॥ ३ ॥ प्र त आश्विनीः पवमान धीजुवो दिव्या असृग्रन्पयसा धरीमणि । प्रान्तर्ऋषयः स्थाविरीरसृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ॥ ४ ॥ विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सतः परि यन्ति केतवः । व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥ ५ ॥ १२ ॥ उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः । यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योना कलशेषु सीदति ॥ ६ ॥ यज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानामुप याति निष्कृतम् । सहस्रधारः परि कोशमर्षति वृषा पवित्रमत्येति रोरुवत् ॥ ७ ॥ राजा समुद्रं नद्यो३वि गाहतेऽपामूर्मिं सचते सिन्धुषु श्रितः । अध्यस्थात्सानु पवमानो अव्ययं नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ॥ ८ ॥ दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदद्द्यौश्च यस्य पृथिवी च धर्मभिः । इन्द्रस्य सख्यं पवते विवेविदत्सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ॥ ९ ॥ ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः । दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः ॥ १० ॥ १३ ॥ अभिक्रन्दन्कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो

विचक्षणः । हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ॥११॥
अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षत्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति । अग्रे वाजस्य
भजते महाधनं स्वायुधः सोतृभिः पूयते वृषा ॥ १२ ॥ अयं मतवाञ्छकुनो यथा
हितोऽव्ये ससार पवमान ऊर्मिणा । तव क्रत्वा रोदसी अन्तरा कवे शुचिर्धिया
पवते सोम इन्द्र ते ॥ १३ ॥ द्रापिं वसानो यजतो दिविस्पृशमन्तरिक्षप्रा भुवने-
ष्वर्पितः । स्वर्जज्ञानो नभसाभ्यक्रमीत्प्रत्नमस्य पितरमा विवासति ॥ १४ ॥ सो
अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धाम प्रथमं व्यानशे । पदं यदस्य परमे
व्योमन्यतो विश्वा अभि सं याति संयतः ॥ १५ ॥ १४ ॥ प्रो अयासीदिन्दुरि-
न्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम् । मर्य इव युवतिभिः समर्षति
सोमः कलशे शतयाम्ना पथा ॥ १६ ॥ प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः
संवसनेष्वक्रमुः । सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभोऽभि धेनवः पयसेमशिश्रयुः ॥१७॥
आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमानो अस्रिधम् । या नो दो-
हते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम् ॥ १८ ॥ वृषा मतीनां पवते वि-
चक्षणः सोमो अह्नः प्रतरीतोषसो दिवः । क्राणा सिन्धूनां कलशाँ अवीवशदि-
न्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः ॥ १९ ॥ मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि
कोशाँ अचिक्रदत् । त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरदिन्द्रस्य वायोः सख्याय क-
र्तवे ॥ २० ॥ १५ ॥ अयं पुनान उषसो वि रोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लो-
ककृत् । अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥ २१ ॥
पवस्व सोम दिव्येषु धामसु सृजान इन्दो कलशे पवित्र आ । सीदन्निन्द्रस्य ज-
ठरे कनिक्रदन्नृभिर्यतः सूर्यमारोहयो दिवि ॥ २२ ॥ अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र
आँ इन्दविन्द्रस्य जठरेष्वाविशन् । त्वं नृचक्षा अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गि-
रोभ्योऽवृणोरप ॥ २३ ॥ त्वां सोम पवमानं स्वाध्योऽनु विप्रासो अमदन्नवस्य-
वः । त्वां सुपर्ण आभरद्दिवस्परीन्दो विश्वाभिर्मतिभिः परिष्कृतम् ॥ २४ ॥ अ-
व्ये पुनानं परि वार ऊर्मिणा हरिं नवन्ते अभि सप्त धेनवः । अपामुपस्थे अ-
ध्यायवः कविमृतस्य योना महिषा अहेषत ॥ २५ ॥ १६ ॥ इन्दुः पुनानो अति
गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे । गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः
कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥ असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं
नवन्तेऽव ता उदन्युवः । क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रो-
चने दिवः ॥ २७ ॥ तवेमाः प्रजा दिव्यस्य रेतसस्त्वं विश्वस्य भुवनस्य राजसि।

अथेदं विश्वं पवमान ते वशे त्वमिन्दो प्रथमो धामधा असि ॥ २८ ॥ त्वं समुद्रो
असि विश्ववित्कवे तवेमाः पञ्च प्रदिशो विधर्मणि । त्वं द्यां च पृथिवीं चाति
जभ्रिषे तव ज्योतींषि पवमान सूर्यः ॥ २९ ॥ त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवे-
भ्यः सोम पवमान पूयसे । त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णत तुभ्येमा विश्वा भुव-
नानि येमिरे ॥ ३० ॥ १७ ॥ प्र रेभ एत्यति वारमव्ययं वृषा वनेष्वव चक्रद-
द्धरिः । सं धीतयो वावशाना अनूषत शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्नतम्
॥ ३१ ॥ स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे । नय-
न्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम् ॥ ३२ ॥ राजा सि-
न्धूनां पवते पतिर्दिव ऋतस्य याति पथिभिः कनिक्रदत् । सहस्रधारः परि षि-
च्यते हरिः पुनानो वाचं जनयन्नुपावसुः ॥ ३३ ॥ पवमान मह्यर्णो वि धावसि
सूरो न चित्रो अव्ययानि पव्यया । गभस्तिपूतो नृभिरद्रिभिः सुतो महे वाजाय
धन्याय धन्वसि ॥ ३४ ॥ इषमूर्जं पवमानाभ्यर्षसि श्येनो न वंसु कलशेषु सी-
दसि । इन्द्राय मद्वा मद्यो मदः सुतो दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः ॥३५॥१८॥
सप्त स्वसारो अभि मातरः शिशुं नवं जज्ञानं जेन्यं विपश्चितम् । अपाङ्गन्धर्वं दिव्यं
नृचक्षसं सोमं विश्वस्य भुवनस्य राजसे ॥३६॥ ईशान इमा भुवनानि वीयसे युजान
इन्दो हरितः सुपर्ण्यः। तास्ते क्षरन्तु मधुमद्घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः॥३७॥
त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि । स नः पवस्व
वसुमद्धिरण्यवद्वयं स्याम भुवनेषु जीवसे॥३८॥ गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्यविद्रेतोधा
इन्दो भुवनेष्वर्पितः। त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित्तं त्वा विप्रा उप गिरेम आसते
॥३९॥उन्मध्व ऊर्मिर्वनना अतिष्ठिपदपो वसानो महिषो वि गाहते। राजा पवित्ररथो
वाजमारुहत्सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो बृहत् ॥ ४० ॥ १९ ॥ स भन्दना उदियर्ति प्र-
जावतीर्विश्वायुर्विश्वाः सुभरा अहर्दिवि । ब्रह्म प्रजावद्रयिमश्वपस्त्यं पीत इन्दविन्द्र-
मस्मभ्यं याचतात् ॥ ४१ ॥ सो अग्रे अह्नां हरिर्हर्यतो मदः प्र चेतसा चेतयते
अनु द्युभिः । द्वा जना यातयन्नन्तरीयते नरा च शंसं दैव्यं च धर्तरि ॥ ४२ ॥
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते । सिन्धोरुच्छ्वासे पत-
यन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमासु गृभ्णते ॥ ४३ ॥ विपश्चिते पवमानाय गा-
यत मही न धारात्यन्धो अर्षति । अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचमत्यो न क्रीळ-
न्नसरद्वृषा हरिः ॥४४॥ अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः ।
हरिर्घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः ॥ ४५ ॥ २० ॥

असर्जि स्कम्भो दिव उद्यतो मदः परि त्रिधातुर्भुवनान्यर्शति । अंशुं रिहन्ति मतयः पनिप्नतं गिरा यदि निर्णिजमृग्मिणो ययुः ॥ ४६ ॥ प्र ते धारा अत्यण्वानि मेष्यः पुनानस्य संयतो यन्ति रंहयः । यद्गोभिरिन्दो चम्वोः समज्यस आ सुवानः सोम कलशेषु सीदसि ॥ ४७ ॥ पवस्व सोम क्रतुविन्न उक्थ्योऽव्यो वारे परि धाव मधु प्रियम् । जहि विश्वान्रक्षस इन्दो अत्रिणो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ४८ ॥ २१ ॥

॥८७॥ १-९ उशना ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः- १, २ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ४,८ विराट् त्रिष्टुप् । ५-७,९ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः॥

॥ ८७ ॥ प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष । अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥ १ ॥ स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजनं रक्षमाणः । पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः ॥ २ ॥ ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन । स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम् ॥ ३ ॥ एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णे परि पवित्रे अक्षाः । सहस्रसाः शतसा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात् ॥ ४ ॥ एते सोमा अभि गव्या सहस्रा महे वाजायामृताय श्रवांसि । पवित्रेभिः पवमाना असृग्रञ्छ्रवस्यवो न पृतनाजो अत्याः ॥५॥ ॥२२॥ परि हि ष्मा पुरुहूतो जनानां विश्वासरद्भोजना पूयमानः । अथा भर श्येनभृत प्रयांसि रयिं तुञ्जानो अभि वाजमर्ष ॥ ६ ॥ एष सुवानः परि सोमः पवित्रे सर्गो न सृष्टो अदधावदर्वा । तिग्मे शिशानो महिषो न शृङ्गे गा गव्यन्नभि शूरो न सत्वा ॥ ७ ॥ एषा ययौ परमादन्तरद्रेः कूचित्सतीरूर्वे गा विवेद । दिवो न विद्युत्स्तनयन्त्यभ्रैः सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा ॥ ८ ॥ उत स्म राशिं परि यासि गोनामिन्द्रेण सोम सरथं पुनानः । पूर्वीरिषो बृहतीर्जीरदानो शिक्षा शचीवस्तव ता उपष्टुत् ॥ ९ ॥ २३ ॥

॥ ८८ ॥ १—८ उशना ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ सतः पङ्क्तिः । २, ४, ८ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ पञ्चमः २—८ धैवतः ॥

॥८८॥ अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम् ॥१॥ स ईं रथो न भुरिषाळयोजि महः पुरूणि सातये

वसूनि । आर्द्रीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त ॥ २ ॥ वायुर्न यो नियुत्वाँ इष्टयामा नासत्येव हव आ शम्भविष्ठः । विश्ववारो द्रविणोदा इव त्मन्पूषेव धीजवनोऽसि सोम ॥३॥ इन्द्रो न यो महा कर्माणि चक्रिर्हन्ता वृत्राणामसि सोम पूर्भित् । पैद्वो न हि त्वमहिनाम्नां हन्ता विश्वस्यासि सोम दस्योः ॥ ४ ॥ अग्निर्न यो वन आ सृज्यमानो वृथा पाजांसि कृणुते नदीषु । जनो न युध्वा महत उपब्दिरियर्ति सोमः पवमान ऊर्मिम् ॥ ५ ॥ एते सोमा अति वाराण्यव्या दिव्या न कोशासो अभ्रवर्षाः । वृथा समुद्रं सिन्धवो न नीचीः सुतासो अभि कलशाँ असृग्रन् ॥ ६ ॥ शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वानभिशस्ता दिव्या यथा विट् । आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनाषाण्न यज्ञः ॥ ७ ॥ राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरं तव सोम धाम । शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम ॥ ८ ॥ २४ ॥

॥ ८९ ॥ १—७ उशना ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २, ५, ६ त्रिष्टुप् । ३, ७ विराट्त्रिष्टुप् । ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८९ ॥ प्रो स्य वह्निः पथ्याभिरस्यान्दिवो न वृष्टिः पवमानो अक्षाः । सहस्रधारो असदन्न्य१स्मे मातुरुपस्थे वन आ च सोमः ॥ १ ॥ राजा सिन्धूनामवसिष्ट वास ऋतस्य नावमारुहद्रजिष्ठाम् । अप्सु द्रप्सो वावृधे श्येनजूतो दुह ईं पिता दुह ईं पितुर्जाम् ॥२॥ सिंहं नसन्त मध्वो अयासं हरिमरुषं दिवो अस्य पतिम् । शूरो युत्सु प्रथमः पृच्छते गा अस्य चक्षसा परि पात्युक्षा ॥ ३ ॥ मधुपृष्ठं घोरमयासमश्वं रथे युञ्जन्त्युरुचक्र ऋष्वम् । स्वसार ईं जामयो मर्जयन्ति सनाभयो वाजिनमूर्जयन्ति ॥ ४ ॥ चतस्र ईं घृतदुहः सचन्ते समाने अन्तर्धरुणे निषत्ताः । ता ईमर्षन्ति नमसा पुनानास्ता ईं विश्वतः परि षन्ति पूर्वीः ॥ ५ ॥ विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या विश्वा उत क्षितयो हस्ते अस्य । असत्त उत्सो गृणते नियुत्वान्मध्वो अंशुः पवत इन्द्रियाय ॥ ६ ॥ वन्वन्नवातो अभि देववीतिमिन्द्राय सोम वृत्रहा पवस्व । शग्धि महः पुरुश्चन्द्रस्य रायः सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥७॥२५॥

॥ ९० ॥ १—६ वसिष्ठ ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप् । २, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥९०॥ प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिष्यन्नयासीत् । इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः ॥१॥ अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामा-

इन्दूषाणामवावशन्त वाणीः । वना वसानो वरुणो न सिन्धून्वि रत्नधा दयते वार्याणि ॥ २ ॥ शूरग्रामः सर्ववीरः सहावाञ्जेता पवस्व सनिता धनानि । तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाळ्हः साह्वान्पृतनासु शत्रून् ॥ ३ ॥ उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरंन्धी । अपः सिषासन्नुषसः स्वर्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ॥ ४ ॥ मत्सि सोम वरुणं मत्सि मित्रं मत्सीन्द्रमिन्दो पवमान विष्णुम् । मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान्मत्सि महामिन्द्रमिन्दो मदाय ॥ ५ ॥ एवा राजेव क्रतुमाँ अमेन विश्वा घनिघ्नदुरिता पवस्व । इन्दो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ २६ ॥ ३ ॥

॥ ६१ ॥ १—६ कश्यप ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, २, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् । ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६१ ॥ असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमो मनीषी । दश स्वसारो अधि सानो अव्येऽजन्ति वह्निं सदनान्यच्छ ॥ १ ॥ वीती जनस्य दिव्यस्य कव्यैरधि सुवानो नहुष्येभिरिन्दुः । प्र यो नृभिरमृतो मर्त्येभिर्मर्मृजानोऽविभिर्गोभिरद्भिः ॥ २ ॥ वृषा वृष्णे रोरुवदंशुरस्मै पवमानो रुशदीर्ते पयो गोः । सहस्रमृक्वा पथिभिर्वचोविदध्वस्मभिः सूरो अण्वं वि याति ॥ ३ ॥ रुजा दृळ्हा चिद्रक्षसः सदांसि पुनान इन्द ऊर्णुहि वि वाजान् । वृश्चोपरिष्टात्तुजता वधेन ये अन्ति दूरादुपनायमेषाम् ॥ ४ ॥ स प्रत्नवन्नव्यसे विश्ववार सूक्ताय पथः कृणुहि प्राचः । ये दुःषहासो वनुषा बृहन्तस्तांस्ते अश्याम पुरुकृत्पुरुक्षो ॥ ५ ॥ एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरि । शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतींषि सोम ज्योङ्नः सूर्यं दृशये रिरीहि ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ ६२ ॥ १—६ कश्यप ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ भुरिक् त्रिष्टुप् । २, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ विराट्त्रिष्टुप् । ६ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६२ ॥ परि सुवानो हरिरंशुः पवित्रे रथो न सर्जि सनये हियानः । आपच्छ्लोकमिन्द्रियं पूयमानः प्रति देवाँ अजुषत प्रयोभिः ॥ १ ॥ अच्छा नृचक्षा असरत्पवित्रे नाम दधानः कविरस्य योनौ । सीदन्होतेव सदने चमूषूपेमग्मन्नृषयः सप्त विप्राः ॥ २ ॥ प्र सुमेधा गातुविद्विश्वदेवः सोमः पुनानः सद एति नित्यम् । भुवद्विश्वेषु काव्येषु रन्तानु जनान्यतते पञ्च धीरः ॥ ३ ॥ तव त्ये सोम पवमाना

निएये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः। दश स्वधाभिरधि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा नद्यः सप्त यह्वीः ॥ ४ ॥ तन्नु सत्यं पवमानस्यास्तु यत्र विश्वे कारवः सन्नसन्त। ज्योतिर्यदह्ने अकृणोदु लोकं प्रावन्मनुं दस्यवे करभीकम् ॥ ५ ॥ परि सद्मेव पशुमान्ति होता राजा न सत्यः समितीरियानः। सोमः पुनानः कलशाँ अयासीत्सीदन्मृगो न महिषो वनेषु ॥ ६ ॥ २ ॥

॥ ६३ ॥ १—५ नोधा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६३ ॥ साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः। हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी ॥ १ ॥ सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः। मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्त्सं गच्छते कलश उस्रियाभिः ॥ २ ॥ उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः। मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः ॥ ३ ॥ स नो देवेभिः पवमान रदेन्दो रयिमश्विनं वावशानः। रथिरायतामुशती पुरंधिरस्मद्र्यगा दावने वसूनाम् ॥ ४ ॥ नू नो रयिमुप मास्व नृवन्तं पुनानो वाताप्यं विश्वश्चन्द्रम्। प्र वन्दितुरिन्दो तार्यायुः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ ५ ॥ ३॥

॥ ६४ ॥ १—५ कण्व ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ३, ५ विराट्त्रिष्टुप्। ४ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६४ ॥ अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः। अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥ १ ॥ द्विता व्यूर्ण्वन्नमृतस्य धाम स्वर्विदे भुवनानि प्रथन्त। धियः पिन्वानाः स्वसरे न गाव ऋतायन्तीरभि वावश्र इन्दुम् ॥ २ ॥ परि यत्कविः काव्या भरते शूरो न रथो भुवनानि विश्वा। देवेषु यशो मर्ताय भूषन्दक्षाय रायः पुरुभूषु नव्यः ॥ ३ ॥ श्रिये जातः श्रिय आ निरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति। श्रियं वसाना अमृतत्वमायन्भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ ॥४॥ इषमूर्जमभ्यर्षाश्वं गामुरु ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान्। विश्वानि हि सुषहा तानि तुभ्यं पवमान बाधसे सोम शत्रून् ॥५॥४॥

॥ ६५ ॥ १—५ प्रस्कण्व ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्। २ संस्तार पङ्क्तिः। ३ विराट्त्रिष्टुप्। ४ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्। स्वरः—१, ३—५ धैवतः। २ पञ्चमः ॥

॥ ६५ ॥ कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन्वनस्य जठरे पुनानः । नृभि-
र्यतः कृणुते निर्णिजं गा अतो मतीर्जनयत स्वधाभिः ॥ १ ॥ हरिः सृजानः प-
थ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम् । देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति ब-
र्हिषि प्रवाचे ॥ २ ॥ अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ । न-
मस्यन्तीरुप च यन्ति सं चा च विशन्त्युशतीरुशन्तम् ॥ ३ ॥ तं मर्मृजानं महिषं
न सानावंशुं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् । तं वावशानं मतयः सचन्ते त्रितो बिभर्ति
वरुणं समुद्रे ॥ ४ ॥ इष्यन्वाचमुपवक्तेव होतुः पुनान इन्दो वि ष्या मनीषाम् ।
इन्द्रश्च यत्क्षयथः सौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ६६ ॥ १—२४ प्रतर्दनो दैवोदासिर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥
छन्दः—१, ३, ११, १२, १४, १६, २३ त्रिष्टुप् । २, १७ विराट् त्रिष्टुप् ।
४—१०, १३, १५, १८, २१, २४ निचृत्त्रिष्टुप् । १६ आर्ची भुरिक्त्रिष्टुप् । २०,
२२ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६६ ॥ प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।
भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥ १ ॥ समस्य
हरिं हरयो मृजन्त्यश्वहयैरनिशितं नमोभिः । आ तिष्ठति रथमिन्द्रस्य सखा विद्वाँ
एना सुमतिं यात्यच्छ ॥ २ ॥ स नो देव देवताते पवस्व महे सोम प्सरस इन्द्र-
पानः । कृण्वन्नपो वर्षयन्द्यामुतेमामुरोरा नो वरिवस्या पुनानः ॥३॥ अजीतयेऽहतये
पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते । तदुशन्ति विश्व इमे सखायस्तदहं वश्मि पवमान सोम
॥४॥ सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः । जनिताग्नेर्जनिता
सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ब्रह्मा देवानां पदवीः कवी-
नामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् । श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवि-
त्रमत्येति रेभन् ॥ ६ ॥ प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिरः सोमः पवमानो म-
नीषाः । अन्तः पश्यन्वृजनेमावराण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन् ॥ ७ ॥ स
मत्सरः पृत्सु वन्वन्नवातः सहस्ररेता अभि वाजमर्ष । इन्द्रायेन्दो पवमानो म-
नीष्यं१शोरूर्मिमीरय गा इषण्यन् ॥ ८ ॥ परि प्रियः कलशे देववात इन्द्राय
सोमो रण्यो मदाय । सहस्रधारः शतवाज इन्दुर्वाजी न सप्तिः समना जिगाति
॥ ९ ॥ स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो मृजानो अप्सु दुदुहानो अद्रौ । अभिशस्तिपा
भुवनस्य राजा विदद्गातुं ब्रह्मणे पूयमानः ॥ १० ॥ ७ ॥ त्वया हि नः पितरः

सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः । वन्वन्नवातः परिधीरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः ॥ ११ ॥ यथापवथा मनवे वयोधा अमित्रहा वरिवोविद्धविष्मान् । एवा पवस्व द्रविणं दधान इन्द्रे सं तिष्ठ जनयायुधानि ॥ १२ ॥ पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये । अव द्रोणानि घृतवान्ति सीद मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः ॥ १३ ॥ वृष्टिं दिवः शतधारः पवस्व सहस्रसा वाजयुर्देववीतौ । सं सिन्धुभिः कलशे वावशानः समुस्रियाभिः प्रतिरन्न आयुः ॥ १४ ॥ एष स्य सोमो मतिभिः पुनानोऽत्यो न वाजी तरतीदरातीः । पयो न दुग्धमदितेरिषिरमुर्विव गातुः सुयमो न वोळ्हा ॥ १५ ॥ ८ ॥ स्वायुधः सोतृभिः पूयमानोऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम । अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्याभि वायुमभि गा देव सोम ॥ १६ ॥ शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन । कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥ १७॥ ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् । तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् ॥ १८ ॥ चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् । अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥ १९ ॥ मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् । वृषेव यूथा परि कोशमर्षन्कनिक्रदच्चम्वोः३ रा विवेश ॥ २० ॥ ९ ॥ पवस्वेन्दो पवमानो महोभिः कनिक्रदत्परि वाराण्यर्ष । क्रीळञ्चम्वोः३ रा विश पूयमान इन्द्रं ते रसो मदिरो ममत्तु ॥ २१ ॥ प्रास्य धारा बृहतीरसृग्रन्नक्तो गोभिः कलशाँ आ विवेश । साम कृण्वन्त्सामन्यो विपश्चित्क्रन्दन्नेत्यभि सख्युर्न जामिम् ॥ २२ ॥ अपघ्नन्नेषि पवमान शत्रून्प्रियां न जारो अभिगीत इन्दुः । सीदन्वनेषु शकुनो न पत्वा सोमः पुनानः कलशेषु सत्ता ॥ २३ ॥ आ ते रुचः पवमानस्य सोम योषेव यन्ति सुदुघाः सुधाराः । हरिरानीतः पुरुवारो अप्स्वचिक्रदत्कलशे देवयूनाम् ॥२४॥१०॥५॥

॥ ९७ ॥ ऋषिः—१–३ वसिष्ठः । ४–६ इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः । ७–९ वृषगणो वासिष्ठः । १०–१२ मन्युर्वासिष्ठः । १३–१५ उपमन्युर्वासिष्ठः । १६–१८ व्याघ्रपाद्वासिष्ठः । १९–२१ शक्तिर्वासिष्ठः । २२–२४ कर्णश्रुद्वासिष्ठः । २५–२७ मृळीको वासिष्ठः । २८–३० वसुक्रोवासिष्ठः । ३१–४४ पराशरः । ४५–५८ कुत्सः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ६, १०, १२, १४, १५, १९, २१, २५, २६, ३२, ३६, ३८, ३९, ४५, ४६, ५२, ५४, ५६ निचृत्त्रिष्टुप् ।

२-४, ७, ८, ११, १६, १७, २०, २३, २४, ३३, ४८, ५३ विराट्त्रिष्टुप्। ५, ६, १३, २२, २७-३०, ३४, ३५, ३७, ४२-४४, ४७, ५७, ५८ त्रिष्टुप्। १८, ४१, ५०, ५१, ५५ आर्ची स्वराट्त्रिष्टुप्। ३१, ४६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्। ४० भुरिक्त्रिष्टुप्॥ धैवतः स्वरः॥

॥ ९७ ॥ अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम्। सुतः पवित्रं पर्येति रेभन्मितेव सद्म पशुमान्ति होता ॥ १ ॥ भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान्कविर्निवचनानि शंसन्। आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ ॥ २ ॥ समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे। अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ३ ॥ प्रगायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं हिनोत महते धनाय। स्वादुः पवाते अति वारमव्यमा सीदाति कलशं देवयुर्नः ॥ ४ ॥ इन्दुर्देवानामुप सख्यमायन्त्सहस्रधारः पवते मदाय। नृभिः स्तवानो अनु धाम पूर्वमगन्निन्द्रं महते सौभगाय ॥ ५ ॥ ११ ॥ स्तोत्रे राये हरिरर्षा पुनान इन्द्रम्मदो गच्छतु ते भराय। देवैर्याहि सरथं राधो अच्छा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति। महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥ ७ ॥ प्र हंसासस्तृपलं मन्युमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः। आङ्गूष्यं१पवमानं सखायो दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम् ॥ ८ ॥ स रंहत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीळन्तं मिमते न गावः। परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः ॥ ९ ॥ इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय। हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातीर्वरिवः कृण्वन्वृजनस्य राजा ॥ १० ॥ १२ ॥ अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः। इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ॥ ११ ॥ अभि प्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन्। इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये ॥ १२ ॥ वृषा शोणो अभिकनिक्रदद्गा नदयन्नेति पृथिवीमुत द्याम्। इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाचमेमाम् ॥ १३ ॥ रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम्। पवमानः सन्तनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः ॥ १४ ॥ एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन्वधस्नैः। परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः ॥ १५ ॥ १३ ॥ जुष्टी न इन्दो सुपथा सुगान्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन्। घनेव विष्वग्दुरितानि विघ्नन्नधि ष्णुना धन्व सानो अव्ये ॥ १६ ॥ वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां जिगत्नुमि-

ळावतीं शङ्ख्यां जीरदानुम्। स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन्बन्धूँरिमाँ अवराँ इन्दो वायून्
॥१७॥ ग्रन्थिं न विष्य ग्रथितं पुनान ऋजुं च गातुं वृजिनं च सोम। अत्यो न क्रदो ह-
रिरा सृजानो मर्यो देव धन्व पस्त्यावान् ॥१८॥ जुष्टो मदाय देवतात इन्दो परि ष्णुना
धन्व सानो अव्ये। सहस्रधारः सुरभिरदब्धः परि स्रव वाजसातौ नृषह्ये ॥१९॥
अरश्मानो येऽरथा अयुक्ता अत्यासो न ससृजानास आजौ। एते शुक्रासो धन्व-
न्ति सोमा देवासस्ताँ उप याता पिबध्यै ॥ २० ॥ १४ ॥ एवा न इन्दो अभि
देववीतिं परि स्रव नभो अर्णश्चमूषु। सोमो अस्मभ्यं काम्यं बृहन्तं रयिं ददातु
वीरवन्तमुग्रम् ॥ २१ ॥ तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग्ज्येष्ठस्य वा धर्मणि क्षोरनीके।
आदीमायन्वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम् ॥ २२ ॥ प्र दानुदो
दिव्यो दानुपिन्व ऋतमृताय पवते सुमेधाः। धर्मा भुवद्वृजन्यस्य राजा प्र रश्मिभि-
र्दशभिर्भारि भूम ॥ २३ ॥ पवित्रेभिः पवमानो नृचक्षा राजा देवानामुत मर्त्या-
नाम्। द्विता भुवद्रयिपती रयीणामृतं भरत्सुभृतं चार्विन्दुः ॥ २४ ॥ अर्वाँ इव
श्रवसे सातिमच्छेन्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्ष। स नः सहस्रा बृहतीरिषो दा भवा
सोम द्रविणोवित्पुनानः ॥ २५ ॥ १५ ॥ देवाव्यो नः परिषिच्यमानाः क्षयं सु-
वीरं धन्वन्तु सोमाः। आयज्यवः सुमतिं विश्ववारा होतारो न दिवियजो मन्द्र-
तमाः ॥ २६ ॥ एवा देव देवताते पवस्व महे सोम प्सरसे देवपानः। महश्चिद्धि
ष्मसि हिताः समर्ये कृधि सुष्ठाने रोदसी पुनानः ॥ २७ ॥ अश्वो न क्रदो वृष-
भिर्युजानः सिंहो न भीमो मनसो जवीयान्। अर्वाचीनैः पथिभिर्ये रजिष्ठा आ
पवस्व सौमनसं न इन्दो ॥ २८ ॥ शतं धारा देवजाता असृग्रन्त्सहस्रमेनाः क-
वयो मृजन्ति। इन्दो सनित्रं दिव आ पवस्व पुरएतासि महतो धनस्य ॥ २९ ॥
दिवो न सर्गा असमृग्रमह्नां राजा न मित्रं प्र मिनाति धीरः। पितुर्न पुत्रः क्र-
तुभिर्यतान आ पवस्व विशे अस्या अजीतिम् ॥ ३० ॥ १६ ॥ प्र ते धारा मधु-
मतीरसृग्रन्वारान्यत्पूतो अत्येष्यव्यान्। पवमान पवसे धाम गोनां जज्ञानः सूर्य-
मपिन्वो अर्कैः ॥ ३१ ॥ कनिक्रददनु पन्थामृतस्य शुक्रो वि भास्यमृतस्य धाम।
स इन्द्राय पवसे मत्सरवान्हिन्वानो वाचं मतिभिः कवीनाम् ॥ ३२ ॥ दिव्यः
सुपर्णोऽव चक्षि सोम पिन्वन्धाराः कर्मणा देववीतौ। एन्दो विश कलशं सोम-
धानं क्रन्दन्निहि सूर्यस्योप रश्मिम् ॥ ३३ ॥ तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य
धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्। गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो
वावशानाः ॥ ३४ ॥ सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छ-

मानाः। सोमः सुतः पूयते अज्यमानः सोमे अर्काम्त्रिष्टुभः सं नवन्ते॥ ३५॥ १७॥ एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति। इन्द्रमा विश बृहता रवेण वर्धया वाचं जनया पुरन्धिम् ॥ ३६॥ आ जागृविर्विप्र ऋता मतीनां सोमः पुनानो असदच्चमूषु। सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः ॥ ३७॥ स पुनान उप सूरे न धातोभे अप्रा रोदसी वि ष आवः। प्रिया चिद्यस्य प्रियसास ऊती स तू धनं कारिणे न प्र यंसत्॥ ३८॥ स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि नो ज्योतिषावीत्। येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमुष्णन्॥ ३९॥ अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवनस्य राजा। वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे सुवान इन्दुः॥ ४०॥ १८॥ महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान्। अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः॥ ४१॥ मत्सि वायुमिष्टये राधसे च मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः। मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान्मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम॥ ४२॥ ऋजुः पवस्व वृजिनस्य हन्तापामीवां बाधमानो मृधश्च। अभिश्रीणन्पयः पयसाभि गोनामिन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः॥ ४३॥ मध्वः सूदं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भगं च। स्वदस्वेन्द्राय पवमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रात्॥ ४४॥ सोमः सुतो धारयात्यो न हित्वा सिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः। आ योनिं वन्यमसदत्पुनानः समिन्दुर्गोभिरसरत्समद्भिः॥ ४५॥ १९॥ एष स्य ते पवत इन्द्र सोमश्चमूषु धीर उशते तवस्वान्। स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशुष्मः कामो न यो देवयतामसर्जि ॥४६॥ एषप्रत्नेन वयसा पुनानस्तिरो वर्पांसि दुहितुर्दधानः। वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन्॥ ४७॥ नू नस्त्वं रथिरो देव सोम परि स्रव चम्वोः पूयमानः। अप्सु स्वादिष्ठो मधुमाँ ऋतावा देवो न यः सविता सत्यमन्मा॥४८॥ अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः। अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम्॥ ४९॥ अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः। अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान्रथिनो देवसोम॥ ५०॥२०॥ अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः। अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः॥ ५१॥ अया पवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व। ब्रध्नश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित्तकवे नरं दात्॥ ५२॥ उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे। षष्टिं सहस्रा

नैगुतो वसूनि वृक्षं न पुक्वं धूनवद्रणाय ॥ ५३ ॥ मही॒मे अ॑स्य॒ वृष॒नाम॑ शू॒षे मां॒श्च॑त्वे वा॒ पृश॑ने वा॒ वध॑त्रे । अस्वा॑पयन्नि॒गुत॑ः स्ने॒हय॒च्चापा॒मित्राँ॒ अपा॒चितो॑ अ॒चेत॑ः ॥ ५४ ॥ सं त्री प॒वित्रा॒ वित॑तान्ये॒ष्यन्वेक॑ं धावसि पू॒यमा॑नः । असि॒ भगो॒ असि॑ दा॒त्रस्य॑ दा॒तासि॑ म॒घवा॑ म॒घव॑द्भ्य इन्दो ॥५५॥२१॥ ए॒ष वि॑श्व॒वित्प॑वते मनी॒षी सोमो॒ विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य॒ राजा॑ । द्र॒प्साँ ई॒रय॑न्वि॒दथे॒ष्विन्दु॒र्वि वार॒मव्य॑ं स॒मयाति॑ याति ॥ ५६ ॥ इन्दुं॑ रिहन्ति महि॒षा अद॑ब्धाः प॒दे रे॑भन्ति क॒वयो॒ न गृध्राः॑ । हि॒न्वन्ति॒ धीरा॑ द॒शभि॒ः क्षिपा॑भि॒ः सम॑ञ्जते रू॒पम॒पां रसे॑न ॥ ५७ ॥ त्वया॑ व॒यं पव॑मानेन सोम॒ भरे॑ कृ॒तं वि चि॑नुयाम॒ शश्व॑त् । तन्नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो मामहन्ता॒मदि॑तिः॒ सिन्धु॑ः पृथि॒वी उ॒त द्यौः ॥ ५८ ॥ २२ ॥

॥ ९८ ॥ १—१२ अम्बरीष ऋजिष्वा च ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ७, १० अनुष्टुप् । ३, ५, ९ निचृदनुष्टुप् । ६, १२ विराडनुष्टुप् । ८ आर्ची स्वराडनुष्टुप् । ११ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१—१०, १२ गान्धारः । ११ मध्यमः ॥

॥ ९८ ॥ अ॒भि नो॑ वाज॒सात॑मं र॒यिम॑र्ष पुरु॒स्पृह॑म् । इन्दो॑ स॒हस्र॑भर्णसं तुविद्यु॒म्नं वि॑भ्वा॒सह॑म् ॥ १ ॥ परि॒ ष्य सु॑वा॒नो अ॒व्ययं॒ रथे॒ न वर्मा॑व्यत । इन्दु॑र॒भि द्रुणा॑ हि॒तो हि॑या॒नो धारा॑भिरक्षाः ॥ २ ॥ परि॒ ष्य सु॑वा॒नो अ॑क्षा॒ इन्दु॒रव्ये॒ मद॑च्युतः । धारा॒ य ऊ॒र्ध्वो अ॑ध्व॒रे भ्रा॒जा नैति॑ गव्य॒युः ॥३॥ स हि त्वं दे॑व॒ शश्व॑ते॒ वसु॒ मर्ता॑य दा॒शुषे॑ । इन्दो॑ सह॒स्रिण॑ं र॒यिं श॒तात्मा॑नं विवाससि ॥४॥ व॒यं ते॑ अ॒स्य वृ॑त्रह॒न्वसो॒ वस्व॑ः पुरु॒स्पृह॑ः । नि नेदि॑ष्ठतमा इ॒षः स्याम॑ सु॒म्नस्या॑ध्रिगो ॥ ५ ॥ द्विर्यं पञ्च॒ स्वय॑शसं॒ स्वसा॑रो॒ अद्रि॑संहतम् । प्रि॒यमिन्द्र॑स्य॒ काम्यं॑ प्रस्ना॒पय॑न्त्यू॒र्मिण॑म् ॥ ६ ॥ २३ ॥ हरि॒ त्यं हर्य॒तं हरि॑ ब॒भ्रुं पु॑नन्ति॒ वारे॑ण । यो दे॒वान्विश्वाँ॒ इत्परि॒ मदे॑न स॒ह गच्छ॑ति ॥ ७ ॥ अ॒स्य वो॒ ह्यव॑सा॒ पान्तो॑ दक्ष॒साध॑नम् । यः सू॒रिषु॒ श्रवो॑ बृ॒हद्द॒धे स्व१॒॑र्ण ह॑र्य॒तः ॥८॥ स वां॑ य॒ज्ञेषु॑ मानवी॒ इन्दु॑र्जनिष्ट रोदसी । दे॒वो दे॑वी गिरि॒ष्ठा अस्रे॑ध॒न्तं तु॑वि॒ष्वणि॑ ॥ ९ ॥ इन्द्रा॑य सोम॒ पात॑वे वृत्र॒घ्ने परि॑ षिच्यसे । नरे॑ च॒ दक्षि॑णावते दे॒वाय॑ सद॒नासदे॑ ॥ १० ॥ ते प्र॒त्नासो॒ व्यु॑ष्टिषु॒ सोमा॑ः प॒वित्रे॑ अक्षरन् । अ॒पप्रोथ॑न्तः सनु॒तर्हु॑र॒श्चित॑ः प्रा॒तस्ताँ अप्र॑चेतसः ॥ ११ ॥ तं स॑खायः पुरो॒रुचं॑ यू॒यं व॒यं च॑ सू॒रय॑ः । अ॒श्याम॒ वाज॑गन्ध्यं स॒नेम॒ वाज॑पस्त्यम् ॥ १२ ॥ २४ ॥

॥ ९९ ॥ १—८ रेभसूनू काश्यपौ ऋषी ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ विराड्बृहती । २, ३, ५, ६ अनुष्टुप् । ४, ७, ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ मध्यमः । २—८ गान्धारः ॥

॥ ९९ ॥ आ हर्य॒ताय॑ धृ॒ष्णवे॒ धनु॑स्तन्वन्ति॒ पौंस्य॑म् । शु॒क्रां व॑य॒न्त्यसु॑राय नि॒र्णिजं॑ वि॒पामग्रे॑ मही॒युवः॑ ॥ १ ॥ अध॑ क्ष॒पा परि॑ष्कृतो॒ वाजाँ॑ अ॒भि प्र गा॑हते । यदी॑ वि॒वस्व॑तो॒ धियो॒ हरिं॑ हि॒न्वन्ति॒ यात॑वे ॥ २ ॥ तम॑स्य मर्जयामसि॒ मदो॒ य इ॑न्द्र॒पात॑मः । यं गाव॑ आ॒सभि॑र्द॒धुः पु॒रा नू॒नं च॑ सू॒रयः॑ ॥ ३ ॥ तं गाथ॑या पुरा॒ण्या पु॑ना॒नम॒भ्य॑नूषत । उ॒तो कृ॑पन्त धी॒तयो॑ दे॒वानां॒ नाम॒ बिभ्र॑तीः ॥ ४ ॥ तमु॒क्षमा॑णम॒व्यये॒ वारे॑ पुनन्ति धर्ण॒सिम् । दू॒तं न पू॒र्वचि॑त्तय॒ आ शा॑सते मनी॒षिणः॑ ॥ ५ ॥ २५ ॥ स पु॑ना॒नो म॒दिन्त॑मः॒ सोम॑श्च॒मूषु॑ सीदति । प॒शौ न रेत॑ आ॒दध॒त्पति॑र्वचस्यते धि॒यः ॥६॥ स मृ॑ज्यते सु॒कर्म॑भिर्दे॒वो दे॒वेभ्यः॑ सु॒तः । वि॒दे यदा॑सु सन्द॒दिर्म॒हीर॒पो वि गा॑हते ॥७॥ सु॒त इ॑न्दो प॒वित्र॒ आ नृभि॑र्य॒तो वि नी॑यसे । इन्द्रा॑य मत्स॒रिन्त॑मश्च॒मूष्वा नि षी॑दसि ॥ ८ ॥ २६ ॥

॥ १०० ॥ १—९ रेभसूनू काश्यपौ ऋषी ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ७, ९ निचृदनुष्टुप् । ३ विराडनुष्टुप् । ५, ६, ८ अनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १०० ॥ अ॒भी न॑वन्ते अ॒द्रुहः॑ प्रि॒यमिन्द्र॑स्य॒ काम्य॑म् । व॒त्सं न पूर्व॒ आयु॑नि जा॒तं रि॑हन्ति मा॒तरः॑ ॥ १ ॥ पु॒नान इ॑न्द॒वा भ॑र॒ सोम॑ द्वि॒बर्ह॑सं र॒यिम् । त्वं वसू॑नि पुष्यसि॒ विश्वा॑नि दा॒शुषो॑ गृ॒हे ॥ २ ॥ त्वं धियं॑ मनो॒युजं॑ सृ॒जा वृ॒ष्टिं न त॑न्य॒तुः । त्वं वसू॑नि॒ पार्थि॑वा दि॒व्या च॑ सोम पुष्यसि ॥ ३ ॥ परि॑ ते जि॒ग्युषो॑ यथा॒ धारा॑ सु॒तस्य॑ धावति । रंह॑माणा॒ व्य१॒॑व्यय॑ वारं॑ वा॒जीव॑ सान॒सिः ॥ ४ ॥ क्रत्वे॒ दक्षा॑य नः कवे॒ पव॑स्व सोम॒ धार॑या । इन्द्रा॑य॒ पात॑वे सु॒तो मि॒त्राय॒ वरु॑णाय च ॥ ५ ॥ २७ ॥ पव॑स्व वाज॒सात॑मः प॒वित्रे॒ धार॑या सु॒तः । इन्द्रा॑य सोम॒ विष्ण॑वे दे॒वेभ्यो॒ मधु॑मत्तमः ॥ ६ ॥ त्वां रि॑हन्ति मा॒तरो॒ हरिं॑ प॒वित्रे॑ अ॒द्रुहः॑ । व॒त्सं जा॒तं न धे॒नवः॒ पव॑मान॒ विध॑र्मणि ॥७॥ पव॑मान॒ महि॒ श्रव॑श्चि॒त्रेभि॑र्यासि र॒श्मिभिः॑ । शर्ध॒न्तमां॑सि जिघ्नसे॒ विश्वा॑नि दा॒शुषो॑ गृ॒हे ॥ ८ ॥ त्वं द्यां च॑ महिव्रत पृथि॒वीं चाति॑ जभ्रिषे । प्रति॑ द्रा॒पिम॑मुञ्चथा॒ः पव॑मान महित्व॒ना ॥ ९ ॥ २८ ॥ ४ ॥

॥ १०१ ॥ ऋषिः—१—३ अन्धीगुः श्यावाश्विः । ४—६ ययातिर्नाहुषः ।

७-९ नहुषो मानवः । १०-१२ मनुः सांवरणः । १३-१६ प्रजापतिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ६, ७, ९, ११-१४, निचृदनुष्टुप् । ४, ५, ८, १५, १६ अनुष्टुप् । १० पादनिचृदनुष्टुप् । २ निचृद्गायत्री । ३ विराड् गायत्री ॥ स्वरः-१, ४-१६ गान्धारः । २, ३ षड्जः ॥

॥ १०१ ॥ पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे । अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥ १ ॥ यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः । इन्दुरश्वो न कृत्व्यः ॥ २ ॥ तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया । यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः ॥ ३ ॥ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः । पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः ॥ ४ ॥ इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् । वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा ॥ ५ ॥ १ ॥ सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः । सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥६ ॥ अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति । पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥७॥ समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः । सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ॥ ८ ॥ य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम् । यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहै ॥ ९॥ सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । मित्राः सुवाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ १० ॥ २ ॥ सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि । इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन्वसुविदः ॥ ११ ॥ एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः । सूर्यासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥ १२ ॥ प्र सुन्वानस्यान्धसो मर्तो न वृत तद्वचः । अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥ १३ ॥ आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः । सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् ॥ १४ ॥ स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी । हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् ॥१५॥ अव्यो वारेभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि । कनिक्रदद्वृषा हरिरिन्द्रस्याभ्येति निष्कृतम् ॥ १६ ॥ ३ ॥

॥ १०२ ॥ १-८ त्रित ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१-४, ८ निचृदुष्णिक् । ५-७ उष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १०२ ॥ क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् । विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥ १ ॥ उप त्रितस्य पाष्यो३रभक्त यद्गुहा पदम् । यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् ॥ २ ॥ त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वेरया रयिम् । मिमीते अस्य

योज॑ना॒ वि सु॒क्रतु॑: ॥ ३ ॥ ज॒ज्ञानं॑ स॒प्त मा॒तरो॑ वे॒धाम॑शासत श्रि॒ये । अ॒यं ध्रु॒वो र॑यी॒णां चिके॑त॒ यत् ॥ ४ ॥ अ॒स्य व्र॒ते स॒जोष॑सो॒ विश्वे॑ दे॒वासो॑ अ॒द्रुह॑: । स्पा॒र्हा भ॑वन्ति॒ रन्त॑यो जु॒षन्त॒ यत् ॥ ५ ॥ ४ ॥ य॒मी गर्भ॑मृता॒वृधो॑ दृ॒शे चारु॒मजी॑जनन् । क॒विं मंहि॑ष्ठमध्व॒रे पु॑रु॒स्पृह॑म् ॥ ६ ॥ स॒मी॒ची॒ने अ॒भि त्मना॑ य॒ह्वी ऋ॒तस्य॑ मा॒तरा॑ । त॒न्वा॒ना य॒ज्ञमा॑नु॒षग्यद॑ञ्ज॒ते ॥ ७ ॥ क्रत्वा॑ शु॒क्रेभि॑र॒क्षभि॑रृ॒णोरप॑ व्र॒जं दि॒वः । हि॒न्वन्नृ॒तस्य॒ दीधि॑तिं॒ प्राध्व॒रे ॥ ८ ॥ ५ ॥

॥ १०३ ॥ १-६ द्वित आप्त्य ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३ उष्णिक् । २, ५ निचृदुष्णिक् । ४ पादनिचृदुष्णिक् । ६ विराडुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १०३ ॥ प्र पु॑ना॒नाय॑ वे॒धसे॒ सोमा॑य॒ वच॒ उद्य॑तम् । भृ॒तिं न भ॑रा म॒तिभि॒र्जुजो॑षते ॥ १॥ परि॒ वारा॑ण्य॒व्यया॒ गोभि॑रञ्जा॒नो अ॑र्षति । त्री ष॒धस्था॑ पुना॒नः कृ॑णुते॒ हरि॑: ॥ २ ॥ परि॒ कोश॑ं मधु॒श्चुत॑म॒व्यये॒ वारे॑ अर्षति । अ॒भि वाणी॒र्ऋषी॑णां स॒प्त नू॑षत ॥ ३ ॥ परि॑ णे॒ता म॑ती॒नां वि॒श्वदे॑वो॒ अदा॑भ्यः । सोम॑: पुना॒नश्च॒म्वो॑र्विश॒द्धरि॑: ॥ ४ ॥ परि॒ दैवी॒रनु॑ स्व॒धा इन्द्रे॑ण याहि स॒रथ॑म् । पु॒ना॒नो वा॒घद्वा॒घद्भि॒रम॑र्त्यः ॥ ५ ॥ परि॒ सप्ति॒र्न वा॑ज॒युर्दे॒वो दे॒वेभ्य॑: सु॒तः । व्या॒न॒शिः पव॑मानो॒ वि धा॑वति ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ १०४ ॥ १—६ पर्वतनारदौ द्वे शिखण्डिन्यौ वा काश्यप्यावप्सरसौ ऋषी ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४ उष्णिक् । २, ५, ६ निचृदुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥१०४॥ सखा॑य॒ आ नि षी॑दत पुना॒नाय॒ प्र गा॑यत । शिशुं॒ न य॒ज्ञैः परि॑ भूषत श्रि॒ये ॥१॥ समी॑ व॒त्सं न मा॒तृभि॑: सृ॒जता॑ गय॒साध॑नम् । दे॒वा॒व्यं१॒॑ मद॑म॒भि द्विश॑वसम् ॥२॥ पु॒नाता॑ द॒क्षसाध॑नं॒ यथा॒ शर्धा॑य वी॒तये॑ । यथा॑ मि॒त्राय॒ वरु॑णाय॒ शन्त॑मः ॥३॥ अ॒स्मभ्यं॑ त्वा वसु॒विद॑म॒भि वाणी॑रनूषत । गोभि॑ष्टे॒ वर्ण॑म॒भि वा॑सयामसि ॥ ४ ॥ स नो॑ मदानां पत॒ इन्दो॑ दे॒वप्स॑रा असि । सखे॑व॒ सख्ये॑ गातु॒वित्त॑मो भव ॥ ५ ॥ सने॑मि कृ॒ध्य१॒॑स्मदा र॒क्षसं॒ कं चि॑द॒त्रिण॑म् । अपादे॑वं द्व॒युमंहो॑ युयोधि नः ॥६॥७॥

॥ १०५ ॥ १—६ पर्वतनारदौ ऋषी ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २ उष्णिक् । ३, ४, ६ निचृदुष्णिक् । ५ विराडुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १०५ ॥ तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत । शिशुं न यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥ १ ॥ सं वत्स इव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते । देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥ २ ॥ अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये । अयं देवेभ्यो मधुमत्तमः सुतः ॥ ३ ॥ गोमन्न इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धन्व । शुचिं ते वर्णमधि गोषु दीधरम् ॥ ४ ॥ स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः । सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ॥ ५ ॥ सनेमि त्वमस्मदाँ अदेवं कं चिदत्रिणम् । साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ॥ ६ ॥ ८ ॥

॥ १०६ ॥ ऋषिः-१-३ अग्निश्चाक्षुषः । ४-६ चक्षुर्मानवः । ७-९ मनुराप्सवः । १०-१४ अग्निः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, ३, ४, ८, १०, १४ निचृदुष्णिक् । २,५—७,११,१२ उष्णिक् । ९,१३ विराडुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

॥ १०६ ॥ इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । श्रुष्टी जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ १ ॥ अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः । सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥ २ ॥ अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णीत सानसिम् । वज्रं च वृषणं भरत्समप्सुजित् ॥ ३ ॥ प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव । द्युमन्तं शुष्ममा भरा स्वर्विदम् ॥ ४ ॥ इन्द्राय वृषणं मदं पवस्व विश्वदर्शतः । सहस्रयामा पथिकृद्विचक्षणः ॥ ५ ॥ ९ ॥ अस्मभ्यं गातुवित्तमो देवेभ्यो मधुमत्तमः । सहस्रं याहि पथिभिः कनिक्रदत् ॥ ६ ॥ पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा । आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥ ७ ॥ तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः । त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ॥ ८ ॥ आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम् । वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥ ९ ॥ सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यो वारं वि धावति । अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ १० ॥ १० ॥ धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीळन्तमत्याविम् । अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ॥ ११ ॥ असर्जि कलशाँ अभि मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः । पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ॥ १२ ॥ पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या । अभ्यर्षन्त्स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥ १३ ॥ अया पवस्व देवयुर्मधोर्धारा असृक्षत । रेभन्पवित्रं पर्येषि विश्वतः ॥ १४ ॥ ११ ॥

॥ १०७ ॥ १—२६ सप्तर्षय ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः-१, ४, ६, ९, १४, १७, २१ विराड्बृहती । २, ५ भुरिग्बृहती । ८, १०, १२,

१३, १६, २५ बृहती। २३ पादनिचृद्बृहती । ३, १६ पिपीलिकामध्या गायत्री। ७, ११, १८, २०,२४,२६ निचृत् पङ्क्तिः। १५, २२ पङ्क्तिः ॥स्वरः—१, २, ४–६, ८–१०, १२–१४, १७, १६, २१, २३, २५ मध्यमः। ३, १६ षड्जः। ७, ११, १५, १८, २०, २२, २४, २६ पञ्चमः ॥

॥ १०७ ॥ परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः। दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥१॥ नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवादब्धः सुरभिन्तरः। सुते चित्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम् ॥ २ ॥ परि सुवानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः ॥ ३ ॥ पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि। आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देव हिरण्ययः ॥ ४ ॥ दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत्। आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षति नृभिर्धूतो विचक्षणः ॥ ५ ॥ १२ ॥ पुनानः सोम जागृविरव्यो वारे परि प्रियः। त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तमो मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः ॥६ ॥सोमो मीढ्वान्पवते गातुवित्तम ऋषिर्विप्रो विचक्षणः। त्वं कविरभवो देववीतम आ सूर्यं रोहयो दिवि ॥ ७॥ सोम उ षुवाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्। अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ ८ ॥ अनूपे गोमान्गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः। समुद्रं न संवरणान्यग्मन्मन्दी मदाय तोशते ॥ ६ ॥ आ सोम सुवानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया। जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दधिषे ॥ १० ॥ १३ ॥ स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः। अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिर्ऋक्वभिः ॥ ११ ॥ प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा। अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥१२॥ आ हर्यतो अर्जुने अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्नमर्ज्यः। तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः ॥१३॥ अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्। समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासः स्वर्विदः ॥१४॥ तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत्। अर्षन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत्॥१५॥१४॥ नृभिर्येमानो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः ॥१६॥ इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः। सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमीं मृजन्त्यायवः ॥१७॥ पुनानश्चमू जनयन्मतिं कविः सोमो देवेषु रण्यति। अपो वसानः परि गोभिरुत्तरः सीदन्वनेष्वव्यत॥ १८ ॥ तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे । पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीँरति ताँ इहि ॥ १६ ॥ उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा सख्याय बभ्र ऊधनि। घृणा

तर्पन्तमति सूर्यं परः शकुना इव पतिम ॥२०॥१५॥ मृज्यमानः सुहस्त्य समुद्रे वाचमिन्वसि । रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥२१॥ मृजानो वारे पवमानो अव्यये वृषाव चक्रदो वने । देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि ॥२२॥ पवस्व वाजसातयेऽभि विश्वानि काव्या । त्वं समुद्रं प्रथमो वि धारयो देवेभ्यः सोममत्सरः ॥२३॥ स तू पवस्व परि पार्थिवं रजो दिव्या च सोम धर्मभिः । त्वां विप्रासो मतिभिर्विचक्षण शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः ॥ २४ ॥ पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया । मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रियाहया मेधामभि प्रयांसि च ॥२५॥ अपो वसानः परि कोशमर्षतीन्दुर्हियानः सोतृभिः । जनयञ्ज्योतिर्मन्दना अवीवशद्गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥ २६ ॥ १६ ॥

॥ १०८ ॥ ऋषिः—१, २ गौरिवीतिः । ३, १४—१६ शक्तिः । ४,५ उरुः । ६, ७ ऋजिष्वाः । ८, ९ ऊर्द्धसद्मा । १०, ११ कृतयशाः । १२ १३ ऋणञ्चयः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, ९, ११ उष्णिक् ककुप् । ३ पादनिचृदुष्णिक् । ५, ७, १५ निचृदुष्णिक् । २ निचृद्बृहती । ४, ६,१०,१२ स्वराड्बृहती । ८, १६ पङ्क्तिः । १४ निचृत्पङ्क्तिः । १३ गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १५ ऋषभः । २, ४, ६, १०, १२ मध्यमः । ८, १४, १६ पञ्चमः । १३ षड्जः ॥

॥ १०८ ॥ पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । महि द्युक्षतमो मदः ॥ १ ॥ यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीता स्वर्विदः । स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः ॥२॥ त्वं ह्यङ्ग दैव्या पवमान जनिमानि द्युमत्तमः । अमृतत्वाय घोषयः ॥३॥ येना नवग्वो दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे । देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्यानशुः ॥ ४ ॥ एष स्य धारया सुतोऽव्यो वारेभिः पवते मदिन्तमः । क्रीळन्नूर्मिरपामिव ॥ ५ ॥ १७ ॥ य उस्रिया अप्या अन्तरश्मनो निर्गा अकृन्तदोजसा । अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज ॥६॥ आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम् । वनक्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ७ ॥ सहस्रधारं वृषभं पयोवृधं प्रियं देवाय जन्मने । ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत् ॥ ८ ॥ अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुः । वि कोशं मध्यमं युव ॥९॥ आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः । वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपां जिन्वा गविष्टये धियः ॥ १० ॥ १८ ॥

एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहुः । विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ११ ॥
वृषा वि जज्ञे जनयन्नमर्त्यः प्रतपञ्ज्योतिषा तमः । स सुष्टुतः कविभिर्निर्णिजं दधे
त्रिधात्वस्य दंससा ॥ १२ ॥ स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इळानाम् ।
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ १३ ॥ यस्य न इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः ।
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे ॥ १४ ॥ इन्द्राय सोम पातवे नृभिर्यतः
स्वायुधो मदिन्तमः । पवस्व मधुमत्तमः ॥ १५ ॥ इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश
समुद्रमिव सिन्धवः । जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे दिवो विष्टम्भ उत्तमः ॥ १६ ॥ १९ ॥

॥ १०९ ॥ १—२२ अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वरा ऋषिः ॥ पवमानः सोमो
देवता ॥ छन्दः—१, ७, ८, १०, १३, १४, १५, १७, १८ आर्ची भुरिग्गा-
यत्री । २—६, ९, ११, १२, १९, २२ आर्ची स्वराड्गायत्री । २०, २१ आर्ची
गायत्री । १६ पादनिचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १०९ ॥ परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥ १ ॥ इ-
न्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयाः क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः ॥ २ ॥ एवामृताय महे
क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः ॥ ३ ॥ पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता दे-
वानां विश्वाभि धाम ॥ ४ ॥ शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्र-
जायै ॥ ५ ॥ दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन्वाजी पवस्व ॥ ६ ॥ पवस्व सोम
द्युम्नी सुधारो महामवीनामनु पूर्व्यः ॥ ७ ॥ नृभिर्येमानो जज्ञानः पूतः क्षरद्विश्वानि
मन्द्रः स्वर्वित् ॥ ८ ॥ इन्दुः पुनानः प्रजामुराणः करद्विश्वानि द्रविणानि नः ॥ ९ ॥
पवस्व सोम क्रत्वे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ १० ॥ २० ॥ तं ते सोतारो
रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय ॥ ११ ॥ शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे
सोमं देवेभ्य इन्दुम् ॥ १२ ॥ इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय
॥ १३ ॥ बिभर्ति चार्विन्द्रस्य नाम येन विश्वानि वृत्रा जघान ॥ १४ ॥ पिब-
न्त्यस्य विश्वे देवासो गोभिः श्रीतस्य नृभिः सुतस्य ॥ १५ ॥ प्र सुवानो अक्षाः
सहस्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम् ॥ १६ ॥ स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अद्भि-
र्मृजानो गोभिः श्रीणानः ॥ १७ ॥ प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमानो
अद्रिभिः सुतः ॥ १८ ॥ असर्जि वाजी तिरः पवित्रमिन्द्राय सोमः सहस्रधारः
॥ १९ ॥ अञ्जन्त्येनं मध्वो रसेनेन्द्राय वृष्ण इन्दुं मदाय ॥ २० ॥ देवेभ्यस्त्वा
वृथा पाजसेऽपो वसानं हरिं मृजन्ति ॥ २१ ॥ इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते
श्रीणन्नुग्रो रिणन्नपः ॥ २२ ॥ २१ ॥

॥ ११० ॥ १—१२ त्र्यरुणत्रसदस्यू ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, १२ निचृदनुष्टुप् । ३ विराडनुष्टुप् । १०, ११ अनुष्टुप् । ४,७, ८ विराड्बृहती । ५, ६ पादनिचृद्बृहती । ९ बृहती ॥ स्वरः—१—३,१०—१२ गान्धारः । ४—९ मध्यमः ॥

॥ ११० ॥ पर्यू॒ षु प्र ध॑न्व॒ वाज॑सातये॒ परि॑ वृ॒त्राणि॑ स॒क्षणिः॑ । द्वि॒षस्त॒रध्या॑ ऋण॒या न॑ ईयसे ॥ १ ॥ अनु॑ हि त्वा॑ सु॒तं सो॑म॒ मदा॑मसि म॒हे स॑मर्य॒राज्ये॑ । वाजाँ॑ अ॒भि प॑वमान॒ प्र गा॑हसे ॥ २ ॥ अजी॑जनो॒ हि प॑वमान॒ सूर्यं॑ वि॒धारे॒ शक्म॑ना॒ पयः॑ । गोजी॑रया॒ रंह॑माणः॒ पुर॑न्ध्या ॥३॥ अजी॑जनो अमृत॒ मर्त्ये॒ष्वाँ ऋ॒तस्य॒ धर्म॑न्न॒मृत॑स्य॒ चारु॑णः । सदा॑सरो॒ वाज॒मच्छा॒ सनि॑ष्यदत् ॥ ४ ॥ अ॒भ्य॑भि॒ हि श्रव॑सा त॒तर्दि॒थोत्सं॒ न कं चि॑ज्जन॒पान॒मक्षि॑तम् । शर्या॑भि॒र्न भर॑माणो॒ गभ॑स्त्योः ॥ ५ ॥ आदीं॒ के चि॒त्पश्य॑मानास॒ आप्यं॑ वसु॒रुचो॑ दि॒व्या अ॒भ्य॑नूषत । वारं॒ न दे॒वः स॑वि॒ता व्यू॑र्णुते ॥ ६ ॥ २२ ॥ त्वे सो॑म प्रथ॒मा वृ॒क्तब॑र्हिषो म॒हे वाजा॑य॒ श्रव॑से॒ धियं॑ दधुः । स त्वं नो॑ वीर वी॒र्या॑य चोदय ॥ ७ ॥ दि॒वः पी॒यूषं॑ पू॒र्व्यं यदु॒क्थ्यं॑ म॒हो गा॒हाद्दि॒व आ निर॑धुक्षत । इन्द्र॑म॒भि जाय॑मानं॒ सम॑स्वरन् ॥ ८ ॥ अध॒ यदि॒मे प॑वमान॒ रोद॑सी इ॒मा च॒ विश्वा॒ भुव॑ना॒भि म॒ज्मना॑ । यू॒थे न नि॒ःष्ठा वृ॑ष॒भो वि ति॑ष्ठसे ॥ ९ ॥ सोमः॑ पुना॒नो अ॒व्यये॒ वारे॒ शिशु॒र्न क्रीळ॒न्पव॑मानो अक्षाः । स॒हस्र॑धारः श॒तवा॑ज॒ इन्दुः॑ ॥ १० ॥ ए॒ष पु॑ना॒नो मधु॑माँ ऋ॒तावेन्द्रा॒येन्दुः॑ पवते स्वा॒दुरू॒र्मिः । वा॒ज॒सनि॑र्वरिवो॒विद्व॑यो॒धाः ॥ ११ ॥ स प॑वस्व॒ सह॑मानः पृत॒न्यून्त्सेध॒न्रक्षां॒स्यप॑ दु॒र्गहा॑णि । स्वा॒यु॒धः सा॑स॒ह्वान्त्सो॑म॒ शत्रू॑न् ॥ १२ ॥ २३ ॥

॥ १११ ॥ १—३ अनानतः पारुच्छेपिर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१ निचृदष्टिः । २ भुरिगष्टिः । ३ अष्टिः ॥ मध्यमः स्वरः ॥

॥१११॥ अ॒या रु॒चा हरि॑ण्या पुना॒नो विश्वा॒ द्वेषां॑सि तरति स्व॒युग्व॑भिः॒ सूरो॒ न स्व॒युग्व॑भिः । धारा॑ सु॒तस्य॑ रोचते पुना॒नो अ॑रु॒षो हरिः॑ । विश्वा॒ यद्रू॒पा प॑रि॒यात्यृक्व॑भिः स॒प्तास्ये॑भि॒र्ऋक्व॑भिः ॥१॥ त्वं त्यत्प॑णी॒नां वि॑दो॒ वसु॒ सं मा॒तृभि॑र्मर्जयसि॒ स्व आ दम॑ ऋ॒तस्य॑ धी॒तिभि॒र्दमे॑ । प॒रा॒वतो॒ न साम॒ तद्यत्रा॒ रण॑न्ति धी॒तयः॑ । त्रि॒धातु॑भि॒ररु॑षीभि॒र्वयो॑ दधे॒ रोच॑मानो॒ वयो॑ दधे ॥ २ ॥ पूर्वा॒मनु॑ प्र॒दिशं॑ याति॒ चेकि॑त॒त्सं र॒श्मिभि॑र्यतते दर्श॒तो रथो॒ दैव्यो॑ दर्श॒तो रथः॑ । अग्म॑न्नु॒क्थानि॒ पौंस्येन्द्रं॒ जैत्रा॑य हर्षयन् । वज्र॑श्च॒ यद्भव॑थो॒ अन॑पच्युता स॒मत्स्वन॑पच्युता ॥ ३ ॥ २४ ॥

॥ ११२ ॥ १—४ शिशुर्ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१–३ विराट् पङ्क्तिः । ४ निचृत् पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ११२॥ नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम्। तक्षा रिष्टं रुतं भिषग्ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १ ॥ जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम् । कार्मारो अश्मभिर्द्युभिर्हिरण्यवन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ २ ॥ कारुरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी नना । नानाधियो वसूयवोऽनु गा इव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥ अश्वो वोळ्हा सुखं रथं हसनामुपमन्त्रिणः । शेपो रोमण्वन्तौ भेदौ वारिन्मण्डूक इच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥ २५ ॥

॥ ११३ ॥ १—११ कश्यप ऋषिः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः—१, २, ७ विराट् पङ्क्तिः । ३ भुरिक् पङ्क्तिः । ४ पङ्क्तिः । ५, ६, ८—११ निचृत् पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ११३ ॥ शर्यणावति सोममिन्द्रः पिबतु वृत्रहा । बलं दधान आत्मनि करिष्यन्वीर्यं महदिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १ ॥ आ पवस्व दिशां पत आर्जीकात्सोम मीढ्वः । ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ २ ॥ पर्जन्यवृद्धं महिषं तं सूर्यस्य दुहिताभरत् । तं गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णन्तं सोमे रसमादधुरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥ ऋतं वदन्नृतद्युम्न सत्यं वदन्त्सत्यकर्मन् । श्रद्धां वदन्त्सोम राजन्धात्रा सोम परिष्कृत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥ सत्यमुग्रस्य बृहतः सं स्रवन्ति संस्रवाः । सं यन्ति रसिनो रसाः पुनानो ब्रह्मणा हर इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ५ ॥ २६ ॥ यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यां वाचं वदन् । ग्राव्णा सोमे महीयते सोमेनानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ६ ॥ यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम् । तस्मिन्मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ७ ॥ यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः । यत्रामूर्यह्वतीरापस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ८ ॥ यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः । लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ९ ॥ यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रध्नस्य विष्टपम् । स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १० ॥ यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते । कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ११ ॥ २७ ॥

॥ ११४ ॥ १—४ कश्यप ऋषि ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ छन्दः–१, २ विराट् पङ्क्तिः । ३, ४ पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ११४ ॥ य इन्दोः पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत् । तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमाविधन्मन इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १ ॥ ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्वर्धयन्गिरः । सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पतिरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ २ ॥ सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः । देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥ यत्ते राजञ्छृतं हविस्तेन सोमाभि रक्ष नः । अरातीवा मा नस्तारीन्मो च नः किं चनाममदिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥ २८ ॥ ७ ॥ ६ ॥

॥ इति नवमम्मण्डलं समाप्तम् ॥

---

# अथ दशममण्डलम् ॥

॥ १ ॥ १—७ त्रित ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २, ३ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ७ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १ ॥ अग्रे॑ बृ॒हन्नु॒षसा॑मू॒र्ध्वो अ॑स्थान्निर्ज॒गन्वान्तम॑सो॒ ज्योति॒षागा॑त् । अ॒ग्निर्भा॒नुना॒ रुश॑ता॒ स्वङ्ग॒ आ जा॒तो विश्वा॒ सद्मा॑न्यप्राः ॥ १ ॥ स जा॒तो गर्भो॑ असि॒ रोद॑स्यो॒रग्ने॒ चारु॒र्विभृ॑त॒ ओष॑धीषु । चि॒त्रः शिशुः॒ परि॒ तमां॑स्य॒क्तून्प्र मा॒तृभ्यो॒ अधि॒ कनि॑क्रदद्गाः ॥ २ ॥ विष्णु॑रि॒त्था प॑र॒मम॑स्य वि॒द्वाञ्जा॒तो बृ॒हन्न॒भि पा॑ति तृ॒तीय॑म् । आ॒सा यद॑स्य॒ पयो॒ अक्र॑त॒ स्वं सचे॑तसो अ॒भ्य॑र्च॒न्त्यत्र॑ ॥ ३ ॥ अत॑ उ त्वा पितु॒भृतो॒ जनि॑त्रीरन्ना॒वृधं॒ प्रति॑ चर॒न्त्यन्नैः॑ । ता ईं॒ प्रत्ये॑षि॒ पुन॑र॒न्यरू॑पा॒ असि॑ त्वं वि॒क्षु मानु॑षीषु॒ होता॑ ॥ ४ ॥ होता॑रं चि॒त्ररथमध्व॒रस्य॑ य॒ज्ञस्य॑य॒ज्ञस्य के॒तुं रुश॑न्तम् । प्रत्य॑र्धिं दे॒वस्य॑देवस्य म॒ह्ना श्रि॒या त्व॒१॒॑ग्निमति॑थिं॒ जना॑नाम् ॥ ५ ॥ स तु वस्त्रा॒ण्यध॒ पेश॑नानि॒ वसा॑नो अ॒ग्निर्नाभा॑ पृथि॒व्याः । अ॒रु॒षो जा॒तः प॒द इळा॑याः पु॒रोहि॑तो राजन्यक्षी॒ह दे॒वान् ॥ ६ ॥ आ हि द्यावा॑पृथि॒वी अ॑ग्न उ॒भे सदा॑ पु॒त्रो न मा॒तरा॑ त॒तन्थ॑ । प्र या॒ह्यच्छो॑श॒तो य॑विष्ठाथा व॑ह सहस्ये॒ह दे॒वान् ॥ ७ ॥ २६ ॥

॥ २ ॥ १—७ त्रित ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ४, ६, ७ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २ ॥ पि॒प्री॒हि दे॒वाँ उ॑श॒तो य॑विष्ठ वि॒द्वाँ ऋ॒तूँरृ॑तुपते यजे॒ह । ये दैव्या॑ ऋ॒त्विज॒स्तेभि॑रग्ने॒ त्वं होतॄ॑णाम॒स्याय॑जिष्ठः ॥ १ ॥ वेषि॑ हो॒त्रमु॒त पो॒त्रं जना॑नां मन्धा॒तासि॑ द्रविणो॒दा ऋ॒ताවा॑ । स्वाहा॑ व॒यं कृ॒णवा॑मा ह॒वींषि॑ दे॒वो दे॒वान्य॑ज-

त्वग्निरर्हन् ॥ २ ॥ आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्रवोळ्हुम् । अग्निर्विद्वान्त्स यजात्सेदु होता सो अध्वरान्त्स ऋतून्कल्पयाति ॥ ३ ॥ यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः । अग्निष्टद्विश्वमा पृणाति विद्वान्येभिर्देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति ॥ ४ ॥ यत्पाकत्रा मनसा दीनदक्षा न यज्ञस्य मन्वते मर्त्यासः । अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँ ऋतुशो यजाति ॥ ५ ॥ विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं चित्रं केतुं जनिता त्वा जजान । स आ यजस्व नृवतीरनु क्षाः स्पार्हा इषः क्षुमतीर्विश्वजन्याः ॥ ६ ॥ यं त्वा द्यावापृथिवी यं त्वापस्त्वष्टा यं त्वा सुजनिमा जजान । पन्थामनु प्रविद्वान्पितृयाणं द्युमदग्ने समिधानो वि भाहि ॥ ७ ॥ ३० ॥

॥ ३ ॥ १–७ त्रित ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ विराट्त्रिष्टुप् । ५–७ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ३ ॥ इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि । चिकिद्वि भाति भासा बृहतासिक्नीमेति रुशतीमपाजन् ॥ १ ॥ कृष्णां यदेनीमभि वर्पसा भूज्जनयन्योषां बृहतः पितुर्जाम् । ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन्दिवो वसुभिररतिर्वि भाति ॥ २ ॥ भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् । सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् ॥ ३ ॥ अस्य यामासो बृहतो न वग्नूनिन्धाना अग्नेः सख्युः शिवस्य । ईड्यस्य वृष्णो बृहतः स्वासो भामासो यामन्नक्तवश्चिकित्रे ॥ ४ ॥ स्वना न यस्य भामासः पवन्ते रोचमानस्य बृहतः सुदिवः । ज्येष्ठेभिर्यस्तेजिष्ठैः क्रीळुमद्भिर्वर्षिष्ठेभिर्भानुभिर्नक्षति द्याम् ॥ ५ ॥ अस्य शुष्मासो ददृशानपवेर्जेहमानस्य स्वनयन्नियुद्भिः । प्रत्नेभिर्यो रुशद्भिर्देवतमो वि रेभद्भिररतिर्भाति विभ्वा ॥ ६ ॥ स आ वक्षि महि न आ च सत्सि दिवस्पृथिव्योररतिर्युवत्योः । अग्निः सुतुकः सुतुकेभिरश्वै रभस्वद्भी रभस्वाँ एह गम्याः ॥ ७ ॥ ३१ ॥

॥ ४ ॥ १–७ त्रित ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१–४ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ६ त्रिष्टुप् । ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४ ॥ प्र ते यक्षि प्र त इयर्मि मन्म भुवो यथा वन्द्यो नो हवेषु । धन्वन्निव प्रपा असि त्वमग्न इयक्षवे पूरवे प्रत्न राजन् ॥ १ ॥ यन्त्वा जनासो अभि सञ्चरन्ति गाव उष्णमिव व्रजं यविष्ठ । दूतो देवानामसि मर्त्यानामन्तर्महाँश्चर-

सिरोचनेन ॥ २ ॥ शिशुं न त्वा जेन्यं वर्धयन्ती माता बिभर्ति सचनस्यमाना। धनोरधि प्रवता यासि हर्यञ्जिगीषसे पशुरिवावसृष्टः ॥ ३ ॥ मूरा अमूर न वयं चिकित्वो महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से। शये वव्रिश्चरति जिह्वयादन्रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन् ॥ ४ ॥ कूचिज्जायते सनयासु नव्यो वने तस्थौ पलितो धूमकेतुः। अस्नातापो वृषभो न प्र वेति सचेतसो यं प्रणयन्त मर्ताः ॥ ५ ॥ तनूत्यजेव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिरभ्यधीताम्। इयन्ते अग्ने नव्यसी मनीषा युक्ष्वा रथं न शुचयद्भिरङ्गैः ॥ ६ ॥ ब्रह्म च ते जातवेदो नमश्चेयं च गीः सदमिद्वर्धनी भूत्। रक्षा णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत नस्तन्वो३ अप्रयुच्छन् ॥ ७ ॥ ३२ ॥

॥ ५ ॥ १—७ त्रित ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ विराट् त्रिष्टुप्। २–५ त्रिष्टुप्। ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५ ॥ एकः समुद्रो धरुणो रयीणामस्मद्धृदो भूरिजन्मा वि चष्टे। सिषक्त्यूधर्निण्योरुपस्थ उत्सस्य मध्ये निहितं पदं वेः ॥ १ ॥ समानं नीळं वृषणो वसानाः सञ्जग्मिरे महिषा अर्वतीभिः। ऋतस्य पदं कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे पराणि ॥ २ ॥ ऋतायिनी मायिनी सं दधाते मित्वा शिशुं जज्ञतुर्वर्धयन्ती। विश्वस्य नाभिं चरतो ध्रुवस्य कवेश्चित्तन्तुं मनसा वियन्तः ॥ ३ ॥ ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमिषो वाजाय प्रदिवः सचन्ते। अधीवासं रोदसी वावसाने घृतैरन्नैर्वावृधाते मधूनाम् ॥ ४ ॥ सप्त स्वसॄररुषीर्वावशानो विद्वान्मध्व उज्जभारा दृशे कम्। अन्तर्येमे अन्तरिक्षे पुराजा इच्छन्वव्रिमविदत्पूषणस्य ॥ ५ ॥ सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात्। आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ ॥ ६ ॥ असच्च सच्च परमे व्योमन्दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे। अग्निर्ह नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्व आयुनि वृषभश्च धेनुः ॥ ७ ॥ ॥ ३३ ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ १—७ त्रित ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप्। २ विराट् पङ्क्तिः। ४, ५ विराट् त्रिष्टुप्। ३ निचृत् पङ्क्तिः। ६ पङ्क्तिः। ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७ धैवतः। २, ३, ६ पञ्चमः ॥

॥ ६ ॥ अयं स यस्य शर्मन्नवोभिरग्नेरेधते जरिताभिष्टौ। ज्येष्ठेभिर्यो भानुभिर्ऋषूणां पर्येति परिवीतो विभावा ॥ १ ॥ यो भानुभिर्विभावा विभात्यग्नि-

दे॒वेभि॑र्ऋ॒तावा॒जस्रः॑ । आ यो वि॒वाय॑ स॒ख्या सखि॑भ्योऽप॑रिह्वृतो॒ अत्यो॒ न स-
प्तिः॑ ॥ २ ॥ ईशे॒ यो विश्व॑स्या दे॒ववी॑ते॒रीशे॑ वि॒श्वायु॑रु॒षसो॒ व्यु॑ष्टौ । आ यस्मि॑-
न्म॒ना ह॒वींष्य॒ग्नावरि॑ष्टरथः स्क॒भ्नाति॑ शू॒षैः ॥ ३ ॥ शू॒षेभि॑र्वृ॒धो जु॑षा॒णो अ॒र्कै-
र्दे॒वाँ अच्छा॑ रघु॒पत्वा॑ जिगाति । म॒न्द्रो होता॒ स जु॒ह्वा॒३॑ यजि॑ष्ठः सम्मि॑श्लो अ॒-
ग्निरा जि॑घर्ति दे॒वान् ॥ ४ ॥ तमु॒स्राामिन्द्रं॒ न रेज॑मानम॒ग्निं गी॒र्भिर्नमो॑भि॒रा कृ॑णु-
ध्वम् । आ यं विप्रा॑सो म॒तिभि॑र्गृ॒णन्ति॑ जा॒तवे॑दसं जु॒ह्वं॑ स॒हाना॑म् ॥५॥ सं यस्मि॒न्विश्वा॒
वसू॑नि ज॒ग्मुर्वाजे॒ नाश्वाः॒ सप्ती॑वन्त॒ एवैः॑ । अ॒स्मे ऊ॒तीरिन्द्र॑वाततमा अ॒र्वाची॒ना
अ॑ग्न॒ आ कृ॑णुष्व ॥ ६ ॥ अधा॒ ह्य॑ग्ने म॒ह्ना नि॒षद्या॑ स॒द्यो ज॑ज्ञा॒नो हव्यो॑ ब॒भूथ॑ ।
तं ते॑ दे॒वासो॒ अनु॒ केत॑माय॒न्नधा॑वर्धन्त प्रथ॒मास॒ ऊमाः॑ ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ ७ ॥ १—७ त्रित ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४ त्रिष्टुप् । ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७ ॥ स्व॒स्ति नो॑ दि॒वो अ॑ग्ने पृथि॒व्या वि॒श्वायु॑र्धेहि य॒जथा॑य देव । स-
चेम॑हि॒ तव॑ दस्म प्रके॒तैरु॑रु॒ष्या ण॑ उ॒रुभि॑र्देव॒ शंसैः॑ ॥ १ ॥ इ॒मा अ॑ग्ने म॒तय॒स्तुभ्यं॑
जा॒ता गोभि॒रश्वै॑र॒भि गृ॑णन्ति॒ राधः॑ । य॒दा ते॒ मर्तो॒ अनु॒ भोग॒मान॒ड्वसो॒ दधा॑नो
म॒तिभिः॑ सुजात ॥ २ ॥ अ॒ग्निं म॑न्ये पि॒तर॑म॒ग्निमा॒पिम॒ग्निं भ्रात॑रं॒ सद॒मित्सखा॑-
यम् । अ॒ग्नेरनी॑कं बृह॒तः स॑पर्यं दि॒वि शु॒क्रं य॑ज॒तं सूर्य॑स्य ॥ ३ ॥ सि॒ध्रा अ॑ग्ने॒
धियो॑ अ॒स्मे सनु॑त्रीर्यं त्राय॑से॒ दम॒ आ नित्य॑होता । ऋ॒ताव॒ा स रो॒हिद॑श्वः पुरु॒क्षु-
र्द्युभि॑रस्मा॒ अह॑भिर्वा॒मम॑स्तु ॥ ४ ॥ द्यु॒भिर्हि॒तं मि॒त्रमि॑व प्र॒योगं॑ प्र॒त्नमृ॒त्विज॑मध्व॒रस्य॑
जा॒रम् । बा॒हुभ्या॑म॒ग्निमा॒यवो॑ऽजनन्त वि॒क्षु होता॑रं॒ न्य॑सादयन्त ॥ ५ ॥ स्व॒यं य॑-
जस्व दि॒वि दे॑व दे॒वान्किं ते॒ पाकः॑ कृणव॒दप्र॑चेताः । यथाय॑ज ऋ॒तुभि॑र्देव दे॒वा-
ने॒वा य॑जस्व त॒न्वं॑ सुजात ॥ ६ ॥ भवा॑ नो अग्नेऽवि॒तोत गो॒पा भवा॑ वय॒स्कृदु॒त
नो॑ वयो॒धाः । रास्वा॑ च नः सुमहो ह॒व्यदा॑तिं॒ त्रास्वो॒त न॑स्त॒न्वो॒३॑ अप्र॑युच्छन् ॥७॥२॥

॥ ८ ॥ १—६ त्रिशिरास्त्वाष्ट्र ऋषिः ॥ १—६ अग्निः । ७—९ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५—७, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८ ॥ प्र के॒तुना॑ बृह॒ता या॑त्य॒ग्निरा रोद॑सी वृष॒भो रो॑रवीति । दि॒वश्चि॒-
दन्ताँ॑ उप॒माँ उदा॑नळ॒पामु॒पस्थे॑ महि॒षो व॑वर्ध ॥ १ ॥ मु॒मोद॒ गर्भो॑ वृष॒भः क॒कुद्मा॑न-

क्षेमा वृत्सः शिमीवाँ अरावीत् । स देवतात्युद्यतानि कृण्वन्त्स्वेषु क्षयेषु प्रथमो जि॑गाति ॥२॥ आ यो मूर्धानं पित्रोररब्ध्न्यध्वरे दधिरे सूरो अर्णः । अस्य पत्मन्नरुषीरश्वबुध्ना ऋतस्य योनौ तन्वो जुषन्त ॥३॥ उषउषो हि वसो अग्रमेषि त्वं यमयोरभवो विभावा । ऋताय सप्त दधिषे पदानि जनयन्मित्रं तन्वे स्वायै ॥ ४ ॥ भुवश्चक्षुर्मह ऋतस्य गोपा भुवो वरुणो यदृताय वेषि । भुवो अपां नपाज्जातवेदो भुवो दूतो यस्य हव्यं जुजोषः ॥ ५ ॥ ३ ॥ भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः । दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् ॥ ६ ॥ अस्य त्रितः क्रतुना वव्रे अन्तरिच्छन्धीतिं पितुरेवैः परस्य । सचस्यमानः पित्रोरुपस्थे जामि ब्रुवाण आयुधानि वेति ॥ ७ ॥ स पित्र्याण्यायुधानि विद्वानिन्द्रेषित आप्त्यो अभ्ययुध्यत् । त्रिशीर्षाणं सप्तरश्मिं जघन्वान्त्वाष्ट्रस्य चिन्निः ससृजे त्रितो गाः ॥ ८ ॥ भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्तमोजोऽवाभिनत्सत्पतिर्मन्यमानम् । त्वाष्ट्रस्य चिद्विश्वरूपस्य गोनामाचक्राणस्त्रीणि शीर्षा परा वर्क् ॥ ९ ॥ ४ ॥

॥ ९ ॥ १—९ त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीपो वाम्बरीश ऋषिः ॥ आपो देवताः ॥ छन्दः—१—४, ६ गायत्री । ५ वर्धमाना गायत्री । ७ प्रतिष्ठा गायत्री । ८, ९ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—७ षड्जः । ८, ९ गान्धारः ॥

॥ ९ ॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ १ ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ २ ॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ ३ ॥ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ ४ ॥ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम् । अपो याचामि भेषजम् ॥ ५ ॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशम्भुवम् ॥ ६ ॥ आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम । ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥ ७ ॥ इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि । यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम् ॥ ८ ॥ आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि । पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ॥ ९ ॥ ५ ॥

॥ १० ॥ १, ३, ५–७, ११, १३ यमी वैवस्वती । २, ४, ८–१०, १२, १४ यमो वैवस्वत ऋषिः ॥ १, ३, ५–७, ११, १३ यमो वैवस्वतः । २, ४,

८–१०, १२, १४ यमी वैवस्वती देवते ॥ छन्दः–१, २, ४, ६, ८ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ५, ९, १०, १२ त्रिष्टुप्। ७, १३ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप्। १४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १० ॥ ओ चित्सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान्। पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः ॥ १ ॥ न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत्सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति। महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन् ॥ २ ॥ उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित्त्यजसं मर्त्यस्य। नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः ॥ ३ ॥ न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनमृता वदन्तो अनृतं रपेम। गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ ॥ ४ ॥ गर्भे नु नौ जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः। नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥ ६ ॥ को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्र वोचत्। बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आहनो वीच्या नॄन् ॥ ६ ॥ यमस्य मा यम्यं१ काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय। जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद्वृहेव रथ्येव चक्रा ॥ ७ ॥ न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति। अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा ॥ ८ ॥ रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत्सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात्। दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि ॥ ९ ॥ आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि। उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् ॥ १० ॥ ७ ॥ किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्। काममूता बह्वे३तद्रपामि तन्वा मे तन्वं१सं पिपृग्धि ॥ ११ ॥ न वा उ ते तन्वा तन्वं१सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्। अन्येन मत्प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत् ॥ १२ ॥ बतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम। अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ॥ १३ ॥ अन्यमू षु त्वं यम्यन्य उ त्वां परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्। तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाधा कृणुष्व संविदं सुभद्राम् ॥ १४ ॥ ८ ॥

॥ ११ ॥ १—९ हविर्धान आङ्गिर्ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, २, ६ निचृज्जगती। ३–५ विराड् जगती। ७-९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–६ निषादः। ७–९ धैवतः ॥

॥ ११ ॥ वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः पयांसि यह्वो अदितेरदाभ्यः ।
विश्वं स वेद वरुणो यथा धिया स यज्ञियो यजतु यज्ञियाँ ऋतून् ॥ १ ॥ रपद्ग-
न्धर्वीरप्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः । इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु
नो भ्राता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति ॥ २ ॥ सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्व-
त्युषा उवास मनवे स्वर्वती । यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुमग्निं होतारं विदथाय जी-
जनन् ॥ ३ ॥ अध त्यं द्रप्सं विभ्वं विचक्षणं विराभरदिषितः श्येनो अध्वरे ।
यदी विशो वृणते दस्ममार्या अग्निं होतारमध धीरजायत ॥ ४ ॥ सदासि रण्वो
यवसेव पुष्यते होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः । विप्रस्य वा यच्छशमान उक्थ्यं वा-
जं ससवाँ उपयासि भूरिभिः ॥ ५ ॥ ६ ॥ उदीरय पितरा जार आ भगमियक्षति
हर्यतो हृत्त इष्यति । विवक्ति वह्निः स्वपस्यते मखस्तविष्यते असुरो वेपते मती
॥ ६ ॥ यस्ते अग्ने सुमतिं मर्तो अक्षत्सहसः सूनो अति स प्र शृण्वे । इषं दधा-
नो वहमानो अश्वैरा स द्युमाँ अमवान्भूषति द्यून् ॥ ७ ॥ यदग्न एषा समितिर्भ-
वाति देवी देवेषु यजता यजत्र । रत्ना च यद्विभजासि स्वधावो भागं नो अत्र व-
सुमन्तं वीतात् ॥ ८ ॥ श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथममृतस्य द्रवित्नुम् ।
आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप भूरिह स्याः ॥ ९ ॥ १० ॥

॥ १२ ॥ १–९ हविर्धान आङ्गिर्ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३ विराट्
त्रिष्टुप् । २,४,५,७ निचृत्त्रिष्टुप् । ६ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ।
९ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १२ ॥ द्यावा ह क्षामा प्रथमे ऋतेनाभिश्रावे भवतः सत्यवाचा । देवो
यन्मर्तान्यजथाय कृण्वन्त्सीदद्धोता प्रत्यङ् स्वमसुं यन् ॥ १ ॥ देवो देवान्परि-
भूर्ऋतेन वहा नो हव्यं प्रथमश्चिकित्वान् । धूमकेतुः समिधा भाऋजीको मन्द्रो होता
नित्यो वाचा यजीयान् ॥ २ ॥ स्वावृग्देवस्यामृतं यदी गोरतो जातासो धारयन्त
उर्वी । विश्वे देवा अनु तत्ते यजुर्गुर्दुहे यदेनी दिव्यं घृतं वाः ॥ ३ ॥ अर्चामि
वां वर्धायापो घृतस्नू द्यावाभूमी शृणुतं रोदसी मे । अहा यद्द्यावोऽसुनीतिमय-
न्मध्वा नो अत्र पितरा शिशीताम् ॥४॥ किं स्विन्नो राजा जगृहे कदस्याति व्रतं
चकृमा को वि वेद । मित्रश्चिद्धि ष्मा जुहुराणो देवाञ्छ्लोको न यातामपि वाजो
अस्ति ॥ ५ ॥ ११ ॥ दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति । य-
मस्य यो मनवते सुमन्त्वग्ने तमृष्व पाह्यप्रयुच्छन् ॥ ६ ॥ यस्मिन्देवा विदथे माद-
यन्ते विवस्वतः सदने धारयन्ते । सूर्ये ज्योतिरदधुर्मास्यक्तून्परि द्योतनिं चरतो

अजस्रा ॥ ७ ॥ यस्मिन्देवा मन्मनि सञ्चरन्त्यपीच्ये न वयमस्य विद्म । मित्रो नो अत्रादितिरनागान्त्सविता देवो वरुणाय वोचत् ॥ ८ ॥ श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथममृतस्य द्रवित्नुम् । आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप भूरिह स्याः ॥ ९ ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ १—५ विवस्वानादित्य ऋषिः ॥ हविर्धाने देवता ॥ छन्दः–१ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २, ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ विराट्त्रिष्टुप् । ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः–१–४ धैवतः । ५ निषादः ॥

॥ १३ ॥ युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः । शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः ॥१॥ यमे इव यतमाने यदैतं प्र वां भरन्मानुषा देवयन्तः । आ सीदतं स्वमु लोकं विदाने स्वासस्थे भवतमिन्दवे नः ॥ २ ॥ पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहं चतुष्पदीमन्वेमि व्रतेन । अक्षरेण प्रति मिम एतामृतस्य नाभावधि सम्पुनामि ॥ ३ ॥ देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं प्रजायै कममृतं नावृणीत । बृहस्पतिं यज्ञमकृण्वत ऋषिं प्रियां यमस्तन्वं प्रारिरेचीत् ॥ ४ ॥ सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतन्नृतम् । उभे इदस्योभयस्य राजत उभे यतेते उभयस्य पुष्यतः ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥१४॥ १–१६ यम ऋषिः ॥ देवताः–१–५, १३–१६ यमः । ६ लिङ्गोक्ताः । ७–९ लिङ्गोक्ताः पितरो वा । १०–१२ श्वानौ ॥ छन्दः–१, १२ भुरिक् त्रिष्टुप् । २, ३, ७, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ६ विराट् त्रिष्टुप् । ५, ९ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ८ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । १० त्रिष्टुप् । १३, १४ निचृदनुष्टुप् । १६ अनुष्टुप् । १५ विराड् बृहती ॥ स्वरः–१–१२ धैवतः । १३, १४, १६ गान्धारः । १५ मध्यमः ॥

॥ १४ ॥ परेयिवांसं प्रवतो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् । वैवस्वतं सङ्गमनं जनानां यमं राजानं हविषा दुवस्य ॥ १ ॥ यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ । यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः ॥ २ ॥ मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः । यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवान्त्स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति ॥ ३ ॥ इमं यम प्रस्तरमा हि सीदाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः । आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन्हविषा मादयस्व ॥४॥ अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिर्यम वैरूपैरिह मादयस्व । विवस्वन्तं हुवे यः

पिता तेऽस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्य ॥५॥१४॥ अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ ६ ॥ प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः। उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्॥७॥ सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन्। हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः ॥८॥ अपेत वीत वि च सर्पतातोऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन्। अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै ॥ ९ ॥ अति द्रव सारमेयौ श्वानौ चतुरक्षौ शबलौ साधुना पथा। अथा पितॄन्त्सुविदत्राँ उपेहि यमेन ये सधमादं मदन्ति ॥ १० ॥ १५ ॥ यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ। ताभ्यामेनं परि देहि राजन्त्स्वस्ति चास्मा अनमीवं च धेहि ॥ ११ ॥ उरूणसावसुतृपा उदुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतो जनाँ अनु। तावस्मभ्यं दृशये सूर्याय पुनर्दातामसुमद्येह भद्रम् ॥१२॥ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥ १३ ॥ यमाय घृतवद्धविर्जुहोत प्र च तिष्ठत। स नो देवेष्वा यमद्दीर्घमायुः प्र जीवसे ॥ १४ ॥ यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन। इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥ १५ ॥ त्रिकद्रुकेभिः पतति षळुर्वीरेकमिद्बृहत्। त्रिष्टुब्गायत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आहिता ॥ १६ ॥ १६ ॥

॥ १५ ॥ १—१४ शंखोयामायन ऋषिः ॥ पितरो देवताः॥ छन्दः–१, २, ७, १२–१४ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ९, १० त्रिष्टुप्। ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्। ६ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ आर्ची भुरिक् त्रिष्टुप्। ११ निचृज्जगती ॥ स्वरः–१–१०, १२–१४ धैवतः। ११ निषादः ॥

॥ १५ ॥ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥ १ ॥इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः। ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विक्षु ॥ २ ॥ आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः। बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ॥ ३ ॥ बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्। त आ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योररपो दधात ॥ ४ ॥ उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु। त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ ५ ॥ १७ ॥ आच्या

जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभि गृणीत विश्वे । मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो
यद्व आगः पुरुषता कराम ॥ ६ ॥ आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दा-
शुषे मर्त्याय । पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात ॥ ७ ॥
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः । तेभिर्यमः संरराणो ह-
वींष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु ॥ ८ ॥ ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदः स्तो-
मतष्टासो अर्कैः । आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् सत्यैः कव्यैः पितृभिर्घर्मसद्भिः
॥ ९ ॥ ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः । आग्ने या-
हि सहस्रं देववन्दैः परैः पूर्वैः पितृभिर्घर्मसद्भिः ॥ १० ॥ १८ ॥ अग्निष्वात्ताः
पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः । अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्य-
था रयिं सर्ववीरं दधातन ॥ ११ ॥ त्वमग्न ईळितो जातवेदोऽवाड्ढव्यानि सुर-
भीणि कृत्वी । प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि ॥१२॥
ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म । त्वं वेत्थ यति ते जा-
तवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व ॥ १३ ॥ ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा
मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते । तेभिः स्वराळसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्प-
यस्व ॥ १४ ॥ १९ ॥

॥ १६ ॥ १—१४ दमनोयामायन ऋषिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ४, ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ५ विराट् त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् त्रिष्टुप् । ६, ९ त्रिष्टुप् । १० स्वराट् त्रिष्टुप् । ११ अनुष्टुप् । १२ निचृदनुष्टुप् । १३, १४ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः–१–१० धैवतः । ११–१४ गान्धारः ॥

॥ १६ ॥ मैनमग्ने वि दहो माभि शोचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात्पितृभ्यः ॥ १ ॥ शृतं यदा करसि
जातवेदोऽथेमेनं परि दत्तात्पितृभ्यः । यदा गच्छात्यसुनीतिमेतामथा देवानां व-
शनीर्भवाति ॥२॥ सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा ।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः ॥ ३ ॥ अजो भा-
गस्तपसा तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः । यास्ते शिवास्तन्वो जातवे-
दस्ताभिर्वहैनं सुकृतामु लोकम् ॥४॥ अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुतश्चरति
स्वधाभिः । आयुर्वसान उप वेतु शेषः सं गच्छतां तन्वा जातवेदः ॥ ५ ॥२०॥
यत्ते कृष्णः शकुन आतुतोद पिपीलः सर्प उत वा श्वापदः । अग्निष्टद्विश्वाद-

गृदङ्कृणोतु सोमश्च यो ब्राह्मणाँ आविवेश ॥ ६ ॥ अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व पीवसा मेदसा च । नेत्त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हृषाणो दधृग्विधक्ष्यन्पर्यङ्खयाते ॥ ७ ॥ इममग्ने चमसं मा वि जिह्वरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम् । एष यश्चमसो देवपानस्तस्मिन्देवा अमृता मादयन्ते ॥ ८ ॥ क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः । इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥ ९ ॥ यो अग्निः क्रव्यात्प्रविवेश वो गृहमिमं पश्यन्नितरं जातवेदसम् । तं हरामि पितृयज्ञाय देवं स घर्ममिन्वात्परमे सधस्थे ॥ १० ॥ २१ ॥ यो अग्निः क्रव्यवाहनः पितॄन्यक्षदृतावृधः । प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्च पितृभ्य आ ॥ ११ ॥ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि । उशन्नुशत आ वह पितॄन्हविषे अत्तवे ॥ १२ ॥ यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः । कियाम्ब्वत्र रोहतु पाकदूर्वा व्यल्कशा ॥ १३ ॥ शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति । मण्डूक्या३सु सङ्गम इमं स्व१ग्निं हर्षय ॥ १४ ॥ २२ ॥ १ ॥

॥ १७ ॥ १—१४ देवश्रवा यामायन ऋषिः ॥ देवताः–१, २ सरण्यूः । ३–६ पूषा । ७–९ सरस्वती । १०, १४ आपः । ११–१३ आपः सोमो वा ॥ छन्दः–१, ५, ८ विराट् त्रिष्टुप् । २, ६, १२ त्रिष्टुप् । ३, ४, ७, ९–११ निचृत्त्रिष्टुप् । १३ ककुम्मती बृहती । १४ अनुष्टुप् ॥ स्वरः–१–१२ धैवतः । १३ मध्यमः । १४ गान्धारः ॥

॥ १७ ॥ त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समेति । यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश ॥ १ ॥ अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सवर्णामददुर्विवस्वते । उताश्विनावभरद्यत्तदासीदजहादु द्वा मिथुना सरण्यूः ॥२॥ पूषा त्वेतश्च्यावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः । स त्वैतेभ्यः परि ददत्पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः ॥३॥ आयुर्विश्वायुः परि पासति त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् । यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ॥ ४ ॥ पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः सो अस्माँ अभयतमेन नेषत् । स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरोऽप्रयुच्छन्पुर एतु प्रजानन् ॥ ५ ॥ २३ ॥ प्रपथे पथामजनिष्ट पूषा प्रपथे दिवः प्रपथे पृथिव्याः । उभे अभि प्रियतमे सधस्थे आ च परा च चरति प्रजानन् ॥ ६ ॥ सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने । सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ॥ ७ ॥ सरस्वति या स-

रथं य॒याथं॑ स्व॒धाभि॑र्दे॒वि पि॒तृभि॒र्मद॑न्ती । आ॒सद्या॒स्मिन्ब॒र्हिषि॑ मादयस्वानमी॒वा
इष॒ आ धे॑ह्य॒स्मे ॥ ८॥ सर॑स्वतीं॒ यां पि॒तरो॒ हव॑न्ते दक्षि॒णा य॒ज्ञम॑भि॒नक्ष॑माणाः।
स॒ह॒स्रा॒र्घमि॒ळो अत्र॑ भा॒गं रा॒यस्पोषं॒ यज॑मानेषु धेहि ॥ ९ ॥ आपो॑ अ॒स्मान्मा॒तरः॑
शुन्धयन्तु घृ॒तेन॑ नो घृत॒प्वः॑ पुनन्तु । विश्वं॒ हि रि॒प्रं प्र॒वह॑न्ति दे॒वीरुदिदा॑भ्यः
शुचि॒रा पू॒त ए॑मि ॥ १० ॥ २४ ॥ द्र॒प्सश्च॑स्कन्द प्रथ॒माँ अनु॒ द्यूनि॒मं च॒ योनि॒-
मनु॒ यश्च॒ पूर्वः॑ । स॒मा॒नं योनि॒मनु॑ सं॒चर॑न्तं द्र॒प्सं जु॑हो॒म्यनु॑ स॒प्त होत्राः॑ ॥ ११॥
यस्ते॑ द्र॒प्सः स्कन्द॑ति॒ यस्ते॑ अं॒शुर्बा॒हुच्यु॑तो धि॒षणा॑या उ॒पस्था॑त् । अ॒ध्व॒र्योर्वा॒ परि॑
वा॒ यः प॒वित्रा॒त्तं ते॑ जुहोमि॒ मन॑सा॒ वष॑ट्कृतम्॥ १२ ॥ यस्ते॑ द्र॒प्सः स्क॒न्नो यस्ते॑
अं॒शुर॒वश्च॒ यः प॒रः स्रु॒चा । अ॒यं दे॒वो बृह॒स्पति॒ः सं तं सि॑ञ्चन्तु॒ राध॑से ॥१३॥
पय॑स्वती॒रोष॑धयः॒ पय॑स्वन्मामकं॒ वचः॑ । अ॒पां पय॑स्व॒दित्पय॒स्तेन॑ मा स॒ह शु॑न्धत
॥ १४ ॥ २५ ॥

॥ १८ ॥ १—१४ सङ्कुसुको यामायन ऋषिः ॥ देवताः—१—४ मृत्युः।
५ धाता । ६ त्वष्टा । ७—१३ पितृमेधः । १४ पितृमेधः प्रजापतिर्वा ॥ छन्दः—
१, ५, ७—९ निचृत्त्रिष्टुप् । २—४, ६, १२, १३ त्रिष्टुप् । १० भुरिक्
त्रिष्टुप् । ११ निचृत् पङ्क्तिः । १४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१०, १२, १३ धैवतः।
११ पञ्चमः । १४ गान्धारः ॥

॥ १८ ॥ पर॑ं मृत्यो॒ अनु॒ परे॑हि॒ पन्थां॒ यस्ते॒ स्व इत॑रो दे॒व॒याना॑त् । चक्षु॑-
ष्मते शृण्व॒ते ते॑ ब्रवीमि॒ मा नः॑ प्र॒जां री॑रिषो॒ मोत वी॒रान् ॥ १ ॥ मृ॒त्योः प॒दं
यो॒पय॑न्तो॒ यदै॑त॒ द्राघी॑य॒ आयु॑ः प्रत॒रं दधा॑नाः । आ॒प्याय॑मानाः प्र॒जया॒ धने॑न शु॒द्धाः
पू॒ता भ॑वत यज्ञियासः ॥२॥ इ॒मे जी॒वा वि मृ॒तैराव॑वृत्र॒न्नभू॑द्भ॒द्रा दे॒वहू॑तिर्नो अ॒द्य
प्राञ्चो॑ अगाम नृ॒तये॑ हसा॑य॒ द्राघी॑य॒ आयु॑ः प्रत॒रं दधा॑नाः ॥ ३ ॥ इ॒मं जी॒वेभ्यः॑
प॒रि॒धिं द॑धामि॒ मैषां॒ नु गा॒दप॑रो॒ अर्थ॑मे॒तम् । श॒तं जी॑वन्तु श॒रदः॑ पु॒रू॒चीर॒न्तर्मृ॒त्युं
द॑धतां॒ पर्व॑तेन ॥ ४ ॥ यथाहा॑न्यनुपू॒र्वं भव॑न्ति॒ यथ॑ ऋ॒तव॑ ऋ॒तुभि॒र्यन्ति॑ सा॒धु ।
यथा॒ न पूर्व॒मप॑रो॒ जहा॑त्ये॒वा धा॑त॒रायूं॑षि कल्पयै॒षाम् ॥ ५ ॥ २६ ॥ आ रो॑ह॒ता-
यु॑र्ज॒रसं॑ वृणा॒ना अ॑नुपू॒र्वं यत॑माना॒ यति॑ष्ठ । इ॒ह त्वष्टा॑ सु॒जनि॑मा स॒जोषा॑ दी॒-
र्घमायु॑ः करति जी॒वसे॑ वः ॥ ६ ॥ इ॒मा नारी॑रविध॒वाः सु॒पत्नी॒राञ्ज॑नेन स॒र्पिषा॒
सं वि॑शन्तु । अ॒न॒श्रवो॑ऽनमी॒वाः सु॒रत्ना॒ आ रो॑हन्तु॒ जन॑यो॒ योनि॒मग्रे॑ ॥ ७ ॥ उ-
दी॑र्ष्व ना॒र्य॒भि जी॑वलो॒कं ग॒तासु॑मे॒तमुप॑ शेष॒ एहि॑ । ह॒स्त॒ग्रा॒भस्य॑ दिधि॒षोस्तवे॒द-

मर्त्यं जनित्वममभि सं बभूथ ॥ ८ ॥ धनुर्हस्तादाददानो मृतस्यास्मे क्षत्राय वर्चसे बलाय । अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वाः स्पृधो अभिमातीर्जयेम ॥ ९ ॥ उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम् । ऊर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात् ॥ १० ॥ २७ ॥ उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि मा निबाधथाः सूपायनास्मै भव सूपवञ्चना । माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि ॥ ११ ॥ उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम् । ते गृहासो घृतश्चुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र ॥ १२ ॥ उत्ते स्तभ्नामि पृथिवीं त्वत्परीमं लोगं निदधन्मो अहं रिषम् । एतां स्थूणां पितरो धारयन्तु तेऽत्रा यमः सादना ते मिनोतु ॥ १३ ॥ प्रतीचीने मामहनीष्वाः पर्णमिवा दधुः । प्रतीचीं जग्रभा वाचमश्वं रशनया यथा ॥ १४ ॥ २८ ॥ ६ ॥

॥ १९ ॥ ऋषिः—१—८ मथितो यामायनोभृगुर्वा वारुणिश्च्यवनो वा भार्गवः॥ देवताः १, २-८ आपो गावो वा । १ अग्नीषोमौ ॥ छन्दः-१,३-५ निचृदनुष्टुप् । २ विराडनुष्टुप् । ७, ८ अनुष्टुप् । ६ गायत्री ॥ स्वरः-१-५, ७, ८ गान्धारः । ६ षड्जः ॥

॥ १९ ॥ निवर्तध्वं मानु गातास्मान्त्सिषक्त रेवतीः । अग्नीषोमा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयिम् ॥ १ ॥ पुनरेना निवर्तय पुनरेना न्या कुरु । इन्द्र एणा नियच्छत्वग्निरेना उपाजतु ॥ २ ॥ पुनरेता निवर्तन्तामस्मिन्पुष्यन्तु गोपतौ । इहैवाग्ने निधारयेह तिष्ठतु या रयिः ॥ ३ ॥ यन्नियानं न्ययनं संज्ञानं यत्परायणम् । आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे ॥ ४ ॥ य उदानड्व्ययनं य उदानट्परायणम् । आवर्तनं निवर्तनमपि गोपा निवर्तताम् ॥ ५ ॥ आ निवर्त निवर्तय पुनर्न इन्द्र गा देहि । जीवाभिर्भुनजामहै ॥ ६ ॥ परि वो विश्वतो दध ऊर्जा घृतेन पयसा ये देवाः के च यज्ञियास्ते रय्या सं सृजन्तु नः ॥ ७ ॥ आ निवर्तन वर्तय नि निवर्तन वर्तय । भूम्याश्चतस्रः प्रदिशस्ताभ्य एना निवर्तय ॥८॥१॥

॥२०॥ ऋषिः-१-१० विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ आसुरी त्रिष्टुप् । २, ९ अनुष्टुप् । ३ पादनिचृद्गायत्री । ४, ५, ७ निचृद्गायत्री । ६ गायत्री । ८ विराड्गायत्री । १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१, १० धैवतः । २, ९ गान्धारः । ३-८ षड्जः ॥

॥ २० ॥ भद्रं नो अपि वातय मनः ॥ १ ॥ अग्निमीळे भुजां यविष्ठं शासा मित्रं दुर्धरीतुम्। यस्य धर्मन्त्स्व१रेनीः सपर्यन्ति मातुरूधः ॥ २ ॥ यमासा कृपनीळं भासाकेतुं वर्धयन्ति। भ्राजते श्रेणिदन् ॥ ३ ॥ अर्यो विशां गातुरेति प्र यदानड् दिवो अन्तान्। कविरभ्रं दीद्यानः ॥ ४ ॥ जुषद्धव्या मानुषस्योर्ध्वस्तस्थावृभ्वा यज्ञे। मिन्वन्त्सद्म पुर एति ॥ ५ ॥ स हि क्षेमो हविर्यज्ञः श्रुष्टीदस्य गातुरेति। अग्निं देवा वाशीमन्तम् ॥ ६ ॥ २ ॥ यज्ञासाहं दुव इषेऽग्निं पूर्वस्य शेवस्य। अद्रेः सूनुमायुमाहुः ॥ ७ ॥ नरो ये के चास्मदा विश्वेत्ते वाम आ स्युः। अग्निं हविषा वर्धन्तः ॥ ८ ॥ कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रध्न ऋज्र उत शोणो यशस्वान्। हिरण्यरूपं जनिता जजान ॥ ९ ॥ एवा ते अग्ने विमदो मनीषामूर्जो नपादमृतेभिः सजोषाः। गिर आ वक्षत्सुमतीरियान इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ॥ १० ॥ ३ ॥

॥ २१ ॥ ऋषिः—१—८ विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ४, ८ निचृत् पङ्क्तिः। २ पादनिचृत् पङ्क्तिः। ३, ५, ७ विराड् पङ्क्तिः। ६ आर्ची पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ २१ ॥ आग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे। यज्ञाय स्तीर्णबर्हिषे वि वो मदे शीरं पावकशोचिषं विवक्षसे ॥ १ ॥ त्वामु ते स्वाभुवः शुम्भन्त्यश्वराधसः। वेति त्वामुपसेचनी वि वो मद ऋजीतिरग्न आहुतिर्विवक्षसे ॥ २ ॥ त्वे धर्माण आसते जुहूभिः सिञ्चतीरिव। कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे विश्वा अधि श्रियो धिषे विवक्षसे ॥ ३ ॥ यमग्ने मन्यसे रयिं सहसावन्नमर्त्य। तमा नो वाजसातये वि वो मदे यज्ञेषु चित्रमा भरा विवक्षसे ॥ ४ ॥ अग्निर्जातो अथर्वणा विदद्विश्वानि काव्या। भुवद्दूतो विवस्वतो वि वो मदे प्रियो यमस्य काम्यो विवक्षसे ॥ ५ ॥ ४ ॥ त्वां यज्ञेष्वीळतेऽग्ने प्रयत्यध्वरे। त्वं वसूनि काम्या वि वो मदे विश्वा दधासि दाशुषे विवक्षसे ॥ ६ ॥ त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि षेदिरे। घृतप्रतीकं मनुषो वि वो मदे शुक्रं चेतिष्ठमक्षभिर्विवक्षसे ॥ ७ ॥ अग्ने शुक्रेण शोचिषोरु प्रथयसे बृहत्। अभिक्रन्दन्वृषायसे वि वो मदे गर्भं दधासि जामिषु विवक्षसे ॥ ८ ॥ ५ ॥

॥ २२ ॥ ऋषिः—१—१५ विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ८, १०, १४ पादनिचृद् बृहती। ३, ११

विराड् बृहती । २, ६, १२, १३ निचृदनुष्टुप् । ९ पादनिचृदनुष्टुप् । ७ आर्च्यनुष्टुप् । ८ अनुष्टुप् । १५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ८, १०, ११, १४ मध्यमः । २, ५–७, ६, १२, १३ गान्धारः । १५ धैवतः ॥

॥ २२ ॥ कुहं श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नद्य जने मित्रो न श्रूयते । ऋषीणां वा यः क्षये गुहा वा चर्कृषे गिरा ॥ १ ॥ इह श्रुत इन्द्रो अस्मे अद्य स्तवे वज्र्यृचीषमः । मित्रो न यो जनेष्वा यशश्चक्रे असाम्या ॥२॥ महो यस्पतिः शवसो असाम्या महो नृम्णस्य तूतुजिः । भर्ता वज्रस्य धृष्णोः पिता पुत्रमिव प्रियम् ॥ ३ ॥ युजानो अश्वा वातस्य धुनी देवो देवस्य वज्रिवः । स्यन्ता पथा विरुक्मता सृजानः स्तोष्यध्वनः ॥ ४ ॥ त्वं त्या चिद्वातस्याश्वागा ऋज्रा त्मना वहध्यै । ययोर्देवो न मर्त्यो यन्ता नकिर्विदाय्यः ॥ ५ ॥ ६ ॥ अध ग्मन्तोशना पृच्छते वां कदर्था न आ गृहम् । आ जग्मथुः पराकाद्दिवश्च ग्मश्च मर्त्यम् ॥ ६ ॥ आ न इन्द्र पृक्षसेऽस्माकं ब्रह्मोद्यतम् । तत्त्वा याचामहेऽवः शुष्णं यद्धन्नमानुषम् ॥७॥ अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः । त्वं तस्यामित्रहन्वधर्दासस्य दम्भय ॥ ८ ॥ त्वं न इन्द्र शूर शूरैरुत त्वोतासो बर्हणा । पुरुत्रा ते वि पूर्तयो नवन्त क्षोणयो यथा ॥ ९ ॥ त्वं तान्वृत्रहत्ये चोदयो नॄन्कार्पाणे शूर वज्रिवः । गुहा यदी कवीनां विशां नक्षत्रशवसाम् ॥ १० ॥ ७ ॥ मक्षू ता त इन्द्र दानाप्नस आक्षाणे शूर वज्रिवः । यद्ध शुष्णस्य दम्भयो जातं विश्वं सयावभिः ॥ ११ ॥ माकुध्र्यगिन्द्र शूर वस्वीरस्मे भूवन्नभिष्टयः । वयंवयं त आसां सुम्ने स्याम वज्रिवः ॥ १२ ॥ अस्मे ता त इन्द्र सन्तु सत्याहिंसन्तीरुपस्पृशः । विद्याम यासां भुजो धेनूनां न वज्रिवः ॥ १३ ॥ अहस्ता यदपदी वर्धत क्षाः शचीभिर्वेद्यानाम् । शुष्णं परि प्रदक्षिणिद्विश्वायवे नि शिश्नथः ॥ १४ ॥ पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो वसवान वसुः सन् । उत त्रायस्व गृणतो मघोनो महश्च रायो रेवतस्कृधी नः ॥ १५ ॥ ८ ॥

॥ २३ ॥ ऋषिः–१—७ विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४ आर्चीभुरिग् जगती । ६ आर्चीस्वराड् जगती । ३ निचृज्जगती । ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५, ७ धैवतः । २—४, ६ निषादः ॥

॥ २३ ॥ यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यं विव्रतानाम् । प्र श्मश्रु

दोधुवद्धूर्वथा भूद्रि सेनाभिर्दयमानो वि राधसा ॥ १ ॥ हरी न्वस्य या वने विदे वस्विन्द्रो मघैर्मघवा वृत्रहा भुवत् । ऋभुर्वाज ऋभुक्षाः पत्यते शवोऽव क्ष्णौमि दासस्य नाम चित् ॥ २ ॥ यदा वज्रं हिरण्य मिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि-सूरिभिः । आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य दीर्घश्रवसस्पतिः ॥ ३ ॥ सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या३ स्वा सचाँ इन्द्रः श्मश्रूणि हरिताभि प्रुष्णुते । अव वेति सुक्षयं सुते मधूदिद्धूनोति वातो यथा वनम् ॥४॥ यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान । तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः ॥ ५ ॥ स्तोमं त इन्द्र विमदा अजीजनन्नपूर्व्यं पुरुतमं सुदानवे । विद्मा ह्यस्य भो-जनमिनस्य यदा पशुं न गोपाः करामहे ॥६॥ माकिर्न एना सख्या वि यौषुस्तव चेन्द्र विमदस्य च ऋषेः । विद्मा हि ते प्रमतिं देव जामिवदस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ॥ ७ ॥ ६ ॥

॥२४॥ ऋषिः १-६ विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवताः— १—३ इन्द्रः । ४—६ अश्विनौ ॥ छन्दः—१ आस्तार पङ्क्तिः । २ आर्चीस्वराट् पङ्क्तिः । ३ शङ्कुमती पङ्क्तिः । ४, ६ अनुष्टुप् । ५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ पञ्चमः । ४—६ गान्धारः ॥

॥ २४ ॥ इन्द्र सोममिमं पिब मधुमन्तं चमू सुतम् । अस्मे रयिं नि धारय वि वो मदे सहस्रिणं पुरूवसो विवक्षसे ॥ १ ॥ त्वां यज्ञेभिरुक्थैरुप हव्येभि-रीमहे । शचीपते शचीनां वि वो मदे श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षसे ॥ २ ॥ य-स्पतिर्वार्याणामसि रध्रस्य चोदिता । इन्द्र स्तोतॄणामविता वि वो मदे द्विषो नः पाह्यंहसो विवक्षसे ॥ ३ ॥ युवं शक्रा मायाविना समीची निरमन्थतम् । विमदेन यदीळिता नासत्या निरमन्थतम् ॥ ४ ॥ विश्वे देवा अकृपन्त समीच्योर्निष्पत-न्त्योः । नासत्यावब्रुवन्देवाः पुनरा वहतादिति ॥ ५ ॥ मधुमन्मे परायणं मधुम-त्पुनरायनम् । ता नो देवा देवतया युवं मधुमतस्कृतम् ॥ ६ ॥ १० ॥

॥ २५ ॥ ऋषिः—१-११ विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ सोमो देवता ॥ छन्दः- १, २, ६, १०, ११ आस्तार पङ्क्तिः । ३-५ आर्षी-निचृत् पङ्क्तिः । ७—९ आर्षी विराट् पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ २५ ॥ भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् । अधा ते सख्ये अ-

न्धसो वि वो मदे रणन्गावो न यवसे विवक्षसे ॥ १ ॥ हृदिस्पृशस्त आसते वि-
श्वेषु सोम धामसु । अधा कामा इमे मम वि वो मदे तिष्ठन्ते वसूयवो विवक्षसे ॥२॥
उत व्रतानि सोम ते प्राहं मिनामि पाक्या । अधा पितेव सूनवे वि वो मदे मृळा नो
अभि चिद्वधाद्विवक्षसे ॥ ३ ॥ समु प्र यन्ति धीतयः सर्गासोऽवताँ इव । क्रतुं नः
सोम जीवसे वि वो मदे धारया चमसाँ इव विवक्षसे ॥ ४ ॥ तव त्ये सोम श-
क्तिभिर्निकामासो व्यृण्विरे । गृत्सस्य धीरास्तवसो वि वो मदे व्रजं गोमन्तम-
श्विनं विवक्षसे ॥ ५ ॥ ११ ॥ पशुं नः सोम रक्षसि पुरुत्रा विष्ठितं जगत् । स-
माकृणोषि जीवसे वि वो मदे विश्वा सम्पश्यन्भुवना विवक्षसे ॥६॥ त्वं नः सोम
विश्वतो गोपा अदाभ्यो भव । सेध राजन्नप स्रिधो वि वो मदे मा नो दुःशंस ई-
शता विवक्षसे ॥ ७॥ त्वं नः सोम सुक्रतुर्वयोधेयाय जागृहि । क्षेत्रवित्तरो मनुषो
वि वो मदे द्रुहो नः पाह्यंहसो विवक्षसे ॥ ८ ॥ त्वं नो वृत्रहन्तमेन्द्रस्येन्दो शिवः
सखा । यत्सीं हवन्ते समिथे वि वो मदे युध्यमानास्तोकसातौ विवक्षसे ॥ ९ ॥
अयं घ स तुरो मद इन्द्रस्य वर्धत प्रियः । अयं कक्षीवतो महो वि वो मदे मतिं
विप्रस्य वर्धयद्विवक्षसे ॥ १० ॥ अयं विप्राय दाशुषे वाजाँ इयर्ति गोमतः । अयं
सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे प्रान्धं श्रोणं च तारिषद्विवक्षसे ॥ ११ ॥ १२ ॥

॥ २६ ॥ ऋषिः—१—९ विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥
पूषा देवता ॥ छन्दः—१ उष्णिक् । ४ आर्षी निचृदुष्णिक् । ३ ककुम्मत्यनु-
ष्टुप् । ५—८ पादनिचृदनुष्टुप् । ९ आर्षी विराडनुष्टुप् । २ आर्ची स्वराडनुष्टुप् ॥
स्वरः—१, ४ ऋषभः । २, ३, ५—९ गान्धारः ।

॥ २६ ॥ प्र ह्यच्छा मनीषाः स्पार्हा यन्ति नियुतः । प्र दस्रा नियुद्रथः पूषा
अविष्टु माहिनः ॥ १ ॥ यस्य त्यन्महित्वं वाताप्यमयं जनः । विप्र आ वंसद्धीति-
भिश्चिकेत सुष्टुतीनाम् ॥ २ ॥ स वेद सुष्टुतीनामिन्दुर्न पूषा वृषा । अभि प्सुरः
प्रुषायति व्रजं न आ प्रुषायति ॥ ३ ॥ मंसीमहि त्वा वयमस्माकं देव पूषन् । म-
तीनां च साधनं विप्राणां चाधवम् ॥ ४ ॥ प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयो रथानाम् ।
ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सखः ॥ ५ ॥ १३ ॥ आधीषमाणायाः पतिः
शुचायाश्च शुचस्य च । वासोवायोऽवीनामा वासांसि मर्मृजत् ॥ ६ ॥ इनो वाजानां
पतिरिनः पुष्टीनां सखा । प्र श्मश्रु हर्यतो दूधोद्वि वृथा यो अदाभ्यः ॥ ७ ॥
आ ते रथस्य पूषन्नजा धुरं ववृत्युः । विश्वस्यार्थिनः सखा सनोजा अनपच्युतः

॥ ८ ॥ अस्माकमूर्जा रथं पूषा अविष्टु माहिनः । भुवद्वाजानां वृध इमं नः शृणवद्धवम् ॥ ९ ॥ १४ ॥

॥ २७ ॥ ऋषिः–१–२४ वसुक्र ऐन्द्रः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ५, ८, १०, १४, २२ त्रिष्टुप् । २, ९, १६, १८ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ४, ११, १२, १५, १९–२१, २३ निचृत्त्रिष्टुप् । ६, ७, १३, १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २४ भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २७ ॥ असत्सु मे जरितः साभिवेगो यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षम् । अनाशीर्दामहमस्मि प्रहन्ता सत्यध्वृतं वृजिनायन्तमाभुम् ॥ १ ॥ यदीदहं युधये सन्नयान्यदेवयून्तन्वा३ शूशुजानान् । अमा ते तुम्रं वृषभं पचानि तीव्रं सुतं पञ्चदशं नि षिञ्चम् ॥ २ ॥ नाहं तं वेद य इति ब्रवीत्यदेवयून्त्समरणे जघन्वान् । यदावाख्यत्समरणमृघावदादिद्ध मे वृषभा प्र ब्रुवन्ति ॥ ३ ॥ यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं विश्वे सतो मघवानो म आसन् । जिनामि वेत्क्षेम आ सन्तमाभुं प्र तं क्षिणां पर्वते पादगृह्य ॥ ४ ॥ न वा उ मां वृजने वारयन्ते न पर्वतासो यदहं मनस्ये । मम स्वनात्कृधुकर्णो भयात एवेदनु द्यून्किरणः समेजात् ॥ ५ ॥ १५ ॥ दर्शन्न्वत्र शृतपाँ अनिन्द्रान्बाहुक्षदः शरवे पत्यमानान् । घृषुं वा ये निनिदुः सखायमध्यू न्वेषु पवयो ववृत्युः ॥ ६ ॥ अभूर्वौक्षीर्व्यु१ आयुरानड्दर्षन्नु पूर्वो अपरो नु दर्षत् । द्वे पवस्ते परि तं न भूतो यो अस्य पारे रजसो विवेष ॥ ७ ॥ गावो यवं प्रयुता अर्यो अक्षन्ता अपश्यं सहगोपाश्चरन्तीः । हवा इदर्यो अभितः समायन्कियदासु स्वपतिश्छन्दयाते ॥ ८ ॥ सं यद्वयं यवसादो जनानामहं यवाद उर्वज्रे अन्तः । अत्रा युक्तोऽवसातारमिच्छादथो अयुक्तं युनजद्ववन्वान् ॥ ९ ॥ अत्रेदु मे मंससे सत्यमुक्तं द्विपाच्च यच्चतुष्पात्संसृजानि । स्त्रीभिर्यो अत्र वृषणं पृतन्यादयुद्धो अस्य वि भजानि वेदः ॥ १० ॥ १६ ॥ यस्यानक्षा दुहिता जात्वास कस्तां विद्वाँ अभि मन्याते अन्धाम् । कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते य ईं वहाते य ईं वा वरेयात् ॥ ११ ॥ कियती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण । भद्रा वधूर्भवति यत्सुपेशाः स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित् ॥ १२ ॥ पत्तो जगार प्रत्यञ्चमत्ति शीर्ष्णा शिरः प्रति दधौ वरूथम् । आसीन ऊर्ध्वामुपसि क्षिणाति न्यङ्ङुत्तानामन्वेति भूमिम् ॥ १३ ॥ बृहन्नच्छायो अपलाशो अर्वा तस्थौ माता विषितो अत्ति गर्भः । अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः ॥ १४ ॥ सप्त वी-

रासौ अधरादुदायन्नष्टोत्तरात्तात्समंजग्मिरन्ते । नवं पश्चातात्स्थविमंन्तं आय-
न्दश प्राक्सानु वि तिरन्त्यश्नः ॥ १५ ॥ १७ ॥ दशानामेकं कपिलं समानं तं हिं-
न्वन्ति क्रतवे पार्याय । गर्भं माता सुधितं वक्षणास्ववेनन्तं तुषयन्ती बिभर्ति ॥ १६ ॥
पीवानं मेषमपचन्त वीरा न्युप्ता अक्षा अनु दीव आसन् । द्वा धनुं बृहतीमप्स्वं१न्तः
पवित्रवन्ता चरतः पुनन्ता ॥ १७ ॥ वि क्रोशनासो विष्वञ्च आयन्पचाति नेमो
नहि पक्षदर्धः । अयं मे देवः सविता तदाह द्र्वन्न इद्वनवत्सर्पिरन्नः ॥ १८ ॥ अ-
पश्यं ग्रामं वहमानमाराद्चक्रया स्वधया वर्तमानम् । सिषक्त्यर्यः प्र युगा जनानां
सद्यः शिश्ना प्रमिनानो नवीयान् ॥ १९ ॥ एतौ मे गावौ प्रमरस्य युक्तौ मो षु
प्र सेधीर्मुहुरिन्ममन्धि । आपश्चिदस्य विनशन्त्यर्थं सूरश्च मर्क उपरो बभूवान्
॥ २० ॥ १८ ॥ अयं यो वज्रः पुरुधा विवृत्तोऽवः सूर्यस्य बृहतः पुरीषात् । श्रव-
इदेना परो अन्यदस्ति तदव्यथी जरिमाणस्तरन्ति ॥ २१ ॥ वृक्षेवृक्षे नियता मी-
मयद्गौस्ततो वयः प्र पतान्पूरुषादः । अथेदं विश्वं भुवनं भयात इन्द्राय सुन्वदृषये
च शिक्षत् ॥ २२ ॥ देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन्कृन्तत्रादेषामुपरा उदायन् । त्र-
यस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृबूकं वहतः पुरीषम् ॥२३॥ सा ते जीवातुरुत तस्य
विद्धि मा स्मैतादृगप गूहः समर्ये । आविः स्वः कृणुते गूहते बुसं स पादुरस्य नि-
र्णिजो न मुच्यते ॥ २४ ॥ १९ ॥

॥ २८ ॥ ऋषिः—१–१२ इन्द्र वसुक्रयोः संवाद ऐन्द्रः ॥ इन्द्रो देवता ॥
छन्दः—१, २, ७, ८, १२ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ६ त्रिष्टुप् । ४, ५, १० विराट् त्रिष्टुप् ।
९, ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २८ ॥ विश्वो ह्य१न्यो अरिराजगाम ममेदह श्वशुरो ना जगाम । जक्षी-
याद्धाना उत सोमं पपीयात्स्वाशितः पुनरस्तं जगायात् ॥ १ ॥ स रोरुवद्वृषभ-
स्तिग्मशृङ्गो वर्ष्मन्तस्थौ वरिमन्ना पृथिव्याः । विश्वेष्वेनं वृजनेषु पामि यो मे कु-
क्षी सुतसोमः पृणाति ॥ २ ॥ अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र तूयान्त्सुन्वन्ति सोमान्पि-
बसि त्वमेषाम् । पचन्ति ते वृषभाँ अत्सि तेषाम् पृक्षेण यन्मघवन्हूयमानः ॥ ३ ॥
इदं सु मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति । लोपाशः सिंहं प्रत्यञ्चं-
मत्साः क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात् ॥ ४ ॥ कथा त एतदहमा चिकेतं गृत्सस्य
पाकस्तवसो मनीषाम् । त्वं नो विद्वाँ ऋतुथा वि वोचो यमर्धं ते मघवन्क्षेम्या धूः
॥ ५ ॥ एवा हि मां तवसं वर्धयन्ति दिवश्चिन्मे बृहत उत्तरा धूः । पुरू सहस्रा

निशिशामि साकमशत्रुं हि मा जनिता जजान ॥ ६ ॥ २० ॥ एवा हि मां तवसं जज्ञुरुग्रं कर्मन्कर्मन्वृषणमिन्द्र देवाः । वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानोऽपंव्रजं महिना दाशुषें वम् ॥ ७॥ देवास आयन्परशूँरबिभ्रन्वना वृश्चन्तो अभि विड्भिरायन्। नि सुद्व्रन्दधतो वक्षणासु यत्रा कृपीटमनु तद्दहन्ति ॥ ८ ॥ शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं जगाराद्रिं लोगेन व्यभेदमारात् । बृहन्तं चिदृहते रन्धयानि वयद्वत्सो वृषभं शूशुवानः ॥ ९ ॥ सुपर्ण इत्था नखमा सिषायावरुद्धः परिपदं न सिंहः । निरुद्धश्चिन्महिषस्तर्ष्यावान्गोधा तस्मा अयथं कर्षदेतत् ॥ १० ॥ तेभ्यो गोधा अयथं कर्षदेतद्ये ब्रह्मणः प्रतिपीयन्त्यन्नैः । सिम उक्ष्णोऽवसृष्टाँ अदन्ति स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः ॥ ११ ॥ एते शमीभिः सुशमी अभूवन्ये हिन्विरे तन्वः सोम उक्थैः । नृवद्वदन्नुप नो माहि वाजान्दिवि श्रवो दधिषे नाम वीरः ॥१२॥२१ ॥

॥ २९ ॥ ऋषिः—१ वसुक्रः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ५, ७ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ २९ ॥ वने न वा यो न्यधायि चाकञ्छुचिर्वां स्तोमो भुरणावजीगः । यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् ॥ १ ॥ प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् । अनु त्रिशोकः शतमावहन्नॄन्कुत्सेन रथो यो असत्ससवान् ॥ २ ॥ कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद्दुरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव । कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः ॥ ३ ॥ कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नॄन्कया धिया करसे कन्न आगन्। मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या अन्ने समस्य यदसन्मनीषाः ॥ ४ ॥ प्रेरय सूरो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव ग्मन् । गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वीर्नर इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ॥ ५ ॥ ॥ २२ ॥ मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन। वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्मन्भवन्तु पीतये मधूनि ॥ ६ ॥ आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्रमिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः । स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैश्च ॥ ७ ॥ व्यानळिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः । आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे॥ ८ ॥ २३ ॥ २ ॥

॥ ३० ॥ ऋषिः—१—१५ कवष ऐलूषः ॥ देवताः— आप अपान्नपाद्वा ॥ छन्दः—१, ३, ९, ११, १२, १५ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४, ६, ८, १४ विराट् त्रिष्टुप् । ५, ७, १०, १३ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ३० ॥ प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुरेत्वपो अच्छा मनसो न प्रयुक्ति । महीं मित्रस्य
णस्य धासिं पृथुज्रयसे रीरधा सुवृक्तिम् ॥१॥ अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि भूता
प इतोशतीरुशन्तः । अव याश्चष्ट अरुणः सुपर्णस्तमास्यध्वमूर्मिमद्या सुहस्ताः
२ ॥ अध्वर्यवोऽप इता समुद्रमपां नपातं हविषा यजध्वम् । स वो ददद्वर्मिमद्या
पूतं तस्मै सोमम्मधुमन्तं सुनोत ॥ ३ ॥ यो अनिध्मो दीदयदप्स्व१न्तर्यं विप्रास
ळते अध्वरेषु । अपां नपान्मधुमतीरपो दा याभिरिन्द्रो वावृधे वीर्याय ॥ ४ ॥
भिः सोमो मोदते हर्षते च कल्याणीभिर्युवतिभिर्न मर्यः । ता अध्वर्यो अपो अच्छा
हि यदासिञ्चा ओषधीभिः पुनीतात् ॥ ५ ॥ २४ ॥ एवेद्यूने युवतयो नमन्त
दीमुशन्नुशतीरेत्यच्छ । सं जानते मनसा सञ्चिकित्रेऽध्वर्यवो धिषणापश्च देवीः
६ ॥ यो वो वृताभ्यो अकृणोदु लोकं यो वो मह्या अभिशस्तेरमुञ्चत् । त-
इन्द्राय मधुमन्तमूर्मिं देवमादनं प्र हिणोतनापः ॥ ७ ॥ प्रास्मै हिनोत मधु-
तमूर्मिं गर्भो यो वः सिन्धवो मध्व उत्सः । घृतपृष्ठमीड्यमध्वरेष्वापो रेवतीः
णुता हवं मे ॥ ८ ॥ तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्रपानमूर्मिं प्र हेत य उभे इयर्ति ।
इच्युतमौशानं नभोजां परि त्रितन्तुं विचरन्तमुत्सम् ॥ ९ ॥ आवर्वृततीरध नु द्वि-
रा गोषुयुधो न नियवं चरन्तीः । ऋषे जनित्रीर्भुवनस्य पत्नीरपो वन्दस्व सवृधः
योनीः ॥ १० ॥ २५ ॥ हिनोता नो अध्वरं देवयज्या हिनोत ब्रह्म सनये ध-
नाम् । ऋतस्य योगे वि ष्यध्वमूधः श्रुष्टीवरीर्भूतनास्मभ्यमापः ॥ ११ ॥ आ-
रेवतीः क्षयथा हि वस्वः क्रतुं च भद्रं बिभृथामृतं च । रायश्च स्थ स्वपत्य-
पत्नीः सरस्वती तद्गृणते वयो धात् ॥ १२ ॥ प्रति यदापो अदृश्रमायतीर्घृतं
यांसि बिभ्रतीर्मधूनि । अध्वर्युभिर्मनसा संविदाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः
१३ ॥ एमा अग्मन्रेवतीर्जीवधन्या अध्वर्यवः सादयता सखायः । नि बर्हिषि
त न सोम्यासोऽपां नप्त्रा संविदानास एनाः ॥ १४ ॥ अग्मन्नाप उशतीर्बर्हिरेदं
ध्वरे असदन्देवयन्तीः । अध्वर्यवः सुनुतेन्द्राय सोममभूदु वः सुशका देव-
ज्या ॥ १५ ॥ २६ ॥

॥ ३१ ॥ ऋषिः—१—११ कवष ऐलूषः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१,
निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४, ५, ७, ११ त्रिष्टुप् । ३, १० विराट् त्रिष्टुप् । ६ पाद-
चृत्त्रिष्टुप् । ९ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ३१ ॥ आ नो देवानामुप वेतु शंसो विश्वेभिस्तुरैरवसे यजत्रः । तेभिर्वयं

सुषखायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता स्याम ॥ १ ॥ परि चिन्मर्तो द्रविणं मम
न्यादृतस्य पथा नमसा विवासेत् । उत स्वेन क्रतुना सं वदेत श्रेयांसं दक्षं मनस
जगृभ्यात् ॥२॥ अधायि धीतिरससृग्रमंशास्तीर्थे न दस्ममुप यन्त्यूमाः । अभ्यान
श्म सुवितस्य शूषं नवेदसो अमृतानामभूम ॥ ३ ॥ नित्यश्चाकन्यात्स्वपतिर्दमू
ना यस्मा उ देवः सविता जजान । भगो वा गोभिरर्यमेमनज्यात्सो अस्मै चारुश्छ
दयदुत स्यात् ॥ ४ ॥ इयं सा भूया उषसामिव क्षा यद्ध क्षुमन्तः शवसा समा
यन् । अस्य स्तुतिं जरितुर्भिक्षमाणा आ नः शग्मास उप यन्तु वाजाः ॥५॥२७॥
अस्येदेषा सुमतिः पप्रथानाभवत्पूर्व्या भूमना गौः । अस्य सनीळा असुरस्य योनौ
समान आ भरणे बिभ्रमाणाः ॥ ६ ॥ किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्या
वापृथिवी निष्टतक्षुः । सन्तस्थाने अजरे इतऊती अहानि पूर्वीरुषसो जरन्त ॥७॥
नैतावदेना परो अन्यदस्त्युक्षा स द्यावापृथिवी बिभर्ति । त्वचं पवित्रं कृणुत स्वधा
वान्यदीं सूर्यं न हरितो वहन्ति ॥ ८ ॥ स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वीं मिहं न वातो वि ह वा
ति भूम । मित्रो यत्र वरुणो अज्यमानोऽग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम् ॥९॥ स्तरीर्यत्सूत
सद्यो अज्यमाना व्यथिरव्यथीः कृणुत स्वगोपा । पुत्रो यत्पूर्वः पित्रोर्जनिष्ट शम्यां
गौर्जगार यद्ध पृच्छान् ॥१०॥ उत कण्वं नृषदः पुत्र माहुरुत श्यावो धनमादत्त
वाजी । प्र कृष्णाय रुशदपिन्वतोधर्ऋतमत्र नकिरस्मा अपीपेत् ॥ ११ ॥ २८ ॥

॥ ३२ ॥ ऋषिः—१-९ कवष ऐलूषः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, २, विराड् जगती । ३ निचृज्जगती । ४ पादनिचृज्जगती । ५ आर्चीभुरिग् जगती । ६ त्रिष्टुप् । ७ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–५ निषादः ६–९ धैवतः ॥

॥ ३२ ॥ प्र सु ग्मन्ता धियसानस्य सक्षणि वरेभिर्वराँ अभि षु प्रसीदतः ।
अस्माकमिन्द्र उभयं जुजोषति यत्सोम्यस्यान्धसो बुबोधति ॥ १ ॥ वीन्द्र यासि
दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा पुरुष्टुत । ये त्वा वहन्ति मुहुरध्वराँ उप
ते सु वन्वन्तु वग्वनाँ अराधसः ॥ २ ॥ तदिन्मे छन्त्सद्वपुषो वपुष्टरं पुत्रो यज्जा
नं पित्रोरधीयति । जाया पतिं वहति वग्नुना सुमत्पुंस इद्भद्रो वहतुः परिष्कृतः
॥ ३ ॥ तदित्सधस्थमभि चारु दीधय गावो यच्छासन्वहतुं न धेनवः । माता य
न्मन्तुर्यूथस्य पूर्व्याभि वाणस्य सप्तधातुरिज्जनः ॥ ४ ॥ प्र वोऽच्छा रिरिचे देवयु
ष्पदमेको रुद्रेभिर्याति तुर्वणिः । जरा वा येष्वमृतेषु दावने परि व ऊमेभ्यः सि

ञ्चता मधु ॥ ५ ॥ २६ ॥ निधीयमानमपंगूळहमप्सु प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ॥ ६ ॥ अक्षेत्रवि-
त्क्षेत्रविदं ह्यप्राट् स प्रैति क्षेत्रविदानुशिष्टः । एतद्वै भद्रमनुशासनस्योत स्रुतिं वि-
न्दत्यञ्जसीनाम् ॥ ७ ॥ अद्येदु प्राणीदममन्निमाहापीवृतो अधयन्मातुरूधः । ए-
मेनमाप जरिमा युवानमहेळन्वसुः सुमना बभूव ॥ ८ ॥ एतानि भद्रा कलश क्रि-
याम कुरुश्रवण ददतो मघानि । दान इद्वो मघवानः सो अस्त्वयं च सोमो हृदि
यं बिभर्मि ॥ ९ ॥ ३० ॥ ७ ॥

॥ ३३ ॥ ऋषिः—१–९ कवष ऐलूषः ॥ देवताः—१ विश्वेदेवाः । २, ३
इन्द्रः । ४, ५ कुरुश्रवणस्य त्रासदस्यवस्य दानस्तुतिः । ६–९ उपमश्रवा मित्रा-
तिथिपुत्रः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २ निचृद् बृहती । ३ भुरिग् बृहती । ४–७, ९
गायत्री । ८ पादनिचृद् गायत्री ॥ स्वरः—१ धैवतः । २, ३ मध्यमः । ४–९ षड्जः ॥

॥ ३३ ॥ प्र मा युयुज्रे प्रयुजो जनानां वहामि स्म पूषणमन्तरेण । विश्वे-
देवासो अध मामरक्षन्दुःशासुरागादिति घोष आसीत् ॥१॥ सं मा तपन्त्यभितः
सपत्नीरिव पर्शवः । नि बाधते अमतिर्नग्नता जसुर्वेर्न वेवीयते मतिः ॥२ ॥ मूषो
न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो । सकृत्सु नो मघवन्निन्द्र मृळयाधा
पितेव नो भव ॥ ३ ॥ कुरुश्रवणमावृणि राजानं त्रासदस्यवम् । मंहिष्ठं वाघता-
मृषिः ॥ ४ ॥ यस्य मा हरितो रथे तिस्रो वहन्ति साधुया । स्तवै सहस्रदक्षिणे
॥ ५ ॥ १ ॥ यस्य प्रस्वादसो गिर उपमश्रवसः पितुः । क्षेत्रं न रण्वमूचुषे ॥६॥
अधि पुत्रोपमश्रवो नपान्मित्रातिथेरिहि । पितुष्टे अस्मि वन्दिता ॥ ७ ॥ यदी-
शीयामृतानामुत वा मर्त्यानाम् । जीवेदिन्मघवा मम ॥ ८ ॥ न देवानामति व्रतं
शतात्मा चन जीवति । तथा युजा वि वावृते ॥ ९ ॥ २ ॥

॥३४॥ ऋषिः—१–१४ कवष ऐलूषः अक्षो वा मौजवान् ॥ देवताः—१,
७, ९, १२, १३ अक्षकृषिप्रशंसा । २–६, ८, १०, ११, १४ अक्षकितवनिन्दा ॥
छन्दः—१, २, ८, १२, १३ त्रिष्टुप् । ३, ६, ११, १४ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ५, ९,
१० विराट् त्रिष्टुप् । ७ जगती ॥ स्वरः—१–६, ८–१४ धैवतः । ७ निषादः ॥

॥ ३४ ॥ प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृतानाः । सोम-
स्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान् ॥ १ ॥ न मा मिमेथ न

जिहीळ एषा शिवा सखिभ्य उत मह्यमासीत् । अक्षस्याहमेकपरस्य हेतोरनुव्रता
मप जायामरोधम् ॥ २ ॥ द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया रुणद्धि न नाथितो विन्दते म
र्डितारम् । अश्वस्येव जरतो वस्न्यस्य नाहं विन्दामि कितवस्य भोगम् ॥ ३
अन्ये जायां परि मृशन्त्यस्य यस्यागृधद्वेदने वाज्यक्षः । पिता माता भ्रातर एन
माहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम् ॥ ४ ॥ यदादीध्ये न दविषाण्येभिः परा
द्भ्योऽव हीये सखिभ्यः । न्युप्ताश्च बभ्रवो वाचमक्रतँ एमीदेषां निष्कृतं जारिणी
॥ ५ ॥३॥ सभामेति कितवः पृच्छमानो जेष्यामीति तन्वा शूशुजानः । अक्षासो
अस्य वि तिरन्ति कामं प्रतिदीव्ने दधत आ कृतानि ॥ ६ ॥ अक्षास इदङ्कुशिनो
नितोदिनो निकृत्वानस्तपनास्तापयिष्णवः । कुमारदेष्णा जयतः पुनर्हणो मध्वा स
म्पृक्ताः कितवस्य बर्हणा ॥ ७ ॥ त्रिपञ्चाशः क्रीळति व्रात एषां देव इव स
विता सत्यधर्मा । उग्रस्य चिन्मन्यवे ना नमन्ते राजा चिदेभ्यो नम इत्कृणोति
॥ ८ ॥ नीचा वर्तन्त उपरि स्फुरन्त्यहस्तासो हस्तवन्तं सहन्ते । दिव्या अङ्गारा
इरिणे न्युप्ताः शीताः सन्तो हृदयं निर्दहन्ति ॥ ९ ॥ जाया तप्यते कितवस्य हीना
माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित् । ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप न
क्तमेति ॥ १० ॥४॥ स्त्रियं दृष्ट्वाय कितवं ततापान्येषां जायां सुकृतं च योनिम्
पूर्वाह्णे अश्वान्युयुजे हि बभ्रून्त्सो अग्नेरन्ते वृषलः पपाद ॥ ११ ॥ यो वः से
नानीर्महतो गणस्य राजा व्रातस्य प्रथमो बभूव । तस्मै कृणोमि न धना रुण
ध्मि दशाहं प्राचीस्तदृतं वदामि ॥ १२ ॥ अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते
रमस्व बहु मन्यमानः । तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः
॥ १३ ॥ मित्रं कृणुध्वं खलु मृळता नो मा नो घोरेण चरताभि धृष्णु । नि वो
नु मन्युर्विशतामरातिरन्यो बभ्रूणां प्रसितौ न्वस्तु ॥ १४ ॥ ५ ॥

॥ ३५ ॥ ऋषिः—१—१४ लुशो धानाकः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ६, ९, ११ विराड् जगती । २ भुरिग् जगती । ३, ७, १०, १२ पादनिचृज्जगती । ४, ८ आर्चीस्वराड् जगती । ५ आर्चीभुरिग् जगती । १३ निचृत्त्रिष्टुप् । १४ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—१२ निषादः । १३, १४ धैवतः ॥

॥ ३५ ॥ अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्नयो ज्योतिर्भरन्त उषसो व्युष्टिषु ।
मही द्यावापृथिवी चेततामपोऽद्या देवानामव आ वृणीमहे ॥ १ ॥ दिवस्पृथि
व्योरव आ वृणीमहे मातॄन्त्सिन्धून्पर्वताञ्छर्यणावतः । अनागास्त्वं सूर्यमुषासमी

मुहे भुद्रं सोमः सुवानो अद्या कृणोतु नः ॥ २ ॥ द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा। उषा उच्छन्त्यप बाधतामघं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ३ ॥ इयं न उस्रा प्रथमा सुदेव्यं रेवत्सनिभ्यो रेवती व्युच्छतु। आरे मन्युं दुर्विदत्रस्य धीमहि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ४ ॥ प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिर्ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु। भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ५ ॥ ६ ॥ अनमीवा उषस आ चरन्तु न उदग्नयो जिहतां ज्योतिषा बृहत्। आयुक्षातामश्विना तूतुजिं रथं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ६ ॥ श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं भागमा सुव स हि रत्नधा असि। रायो जनित्रीं धिषणामुप ब्रुवे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ७ ॥ पिपर्तु मा तदृतस्य प्रवाचनं देवानां यन्मनुष्या अमन्महि। विश्वा इदुस्राः स्पळुदेति सूर्यः स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ८ ॥ अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि ग्राव्णां योगे मन्मनः साध ईमहे। आदित्यानां शर्मणि स्था भुरण्यसि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ९ ॥ आ नो बर्हिः सधमादे बृहद्दिवि देवाँ ईळे सादया सप्त होतॄन्। इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥१०॥७॥ त आदित्या आ गता सर्वतातये वृधे नो यज्ञमवता सजोषसः। बृहस्पतिं पूषणमश्विना भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ११ ॥ तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम्। पश्वे तोकाय तनयाय जीवसे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ १२ ॥ विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः। विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे ॥ १३ ॥ यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं त्रायध्वे यं पिपृथात्यंहः। यो वो गोपीथे न भयस्य वेद ते स्याम देववीतये तुरासः ॥ १४ ॥ ८ ॥

॥ ३६ ॥ ऋषिः—१—१४ लुशो धानाकः ॥ विश्वे देवा देवताः ॥ छन्दः—१ २, ४, ६—८, ११ निचृज्जगती। ३ विराड् जगती । ५, ९, १० जगती। १२ पादनिचृज्जगती। १३ त्रिष्टुप्। १४ स्वराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—१२ निषादः। १३, १४ धैवतः ॥

॥ ३६ ॥ उषासानक्ता बृहती सुपेशसा द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा। इन्द्रं हुवे मरुतः पर्वताँ अप आदित्यान्द्यावापृथिवी अपः स्वः ॥ १ ॥ द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतस ऋतावरी रक्षतामंहसो रिषः। मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्न ईशत

तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ २ ॥ विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः । स्वर्वज्ज्योतिरवृकं नशीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ३ ॥ ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु दुःष्वप्न्यं निर्ऋतिं विश्वमत्रिणम् । आदित्यं शर्म मरुतामशीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ४॥ एन्द्रो बर्हिः सीदतु पिन्वतामिळा बृहस्पतिः सामभिर्ऋक्वो अर्चतु । सुप्रकेतं जीवसे मन्म धीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ५ ॥ ९ ॥ दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं कृणुतं सुम्नमिष्टये । प्राचीनरश्मिमाहुतं घृतेन तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ६ ॥ उप ह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकमृष्वं सख्याय शंभुवम् । रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ७ ॥ अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे देवाव्यं सुहवमध्वरश्रियम् । सुरश्मिं सोममिन्द्रियं यमीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥८॥ सनेम तत्सुसनिता सनित्वभिर्वयं जीवा जीवपुत्रा अनागसः । ब्रह्मद्विषो विष्वगेनो भरेरत तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ९ ॥ ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन यद्वो देवा ईमहे तद्ददातन । जैत्रं क्रतुं रयिमद्वीरवद्यशस्तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ १० ॥ १० ॥ महदद्य महतामा वृणीमहेऽवो देवानां बृहतामनर्वणाम् । यथा वसु वीरजातं नशामहै तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ११ ॥ महो अग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये । श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ १२॥ ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते वरुणस्य देवाः ते सौभगं वीरवद्गोमदप्नो दधातन द्रविणं चित्रमस्मे ॥ १३ ॥ सविता पश्चातात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात् । सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः ॥ १४ ॥ ११ ॥

॥ ३७ ॥ ऋषिः—१—१२ अभितपाः सौर्यः ॥ सूर्यो देवता ॥ छन्दः—१—५ निचृज्जगती । ६—९ विराड् जगती । ११, १२ जगती । १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—९, ११, १२ निषादः । १० धैवतः ॥

॥ ३७ ॥ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतं सपर्यत । दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत ॥ १ ॥ सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च । विश्वमन्या नि विशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्यः । २ ॥ न ते अदेवः प्रदिवो नि वासते यदेतशेभिः पतरै रथर्यसि । प्राचीनमन्यदनु वर्तते रज उदन्येन ज्योतिषा यासि सूर्य ॥३॥

येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना। तेनास्मद्विश्वामनिरामनाहुतिमपामीवामप दुःष्वप्न्यं सुव ॥४॥ विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रतमहेळयन्नुच्चरसि स्वधा अनु। यदद्य त्वा सूर्योपब्रवामहै तं नो देवा अनु मंसीरत क्रतुम् ॥५॥ तं नो द्यावापृथिवी तन्न आप इन्द्रः शृण्वन्तु मरुतो हवं वचः। मा शूने भूम सूर्यस्य सन्दृशि भद्रं जीवन्तो जरणामशीमहि ॥ ६ ॥ १२ ॥ विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः। उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवेदिवे ज्योग्जीवाः प्रति पश्येम सूर्य ॥ ७ ॥ महि ज्योतिर्बिभ्रतं त्वा विचक्षण भास्वन्तं चक्षुषे चक्षुषे मयः। आरोहन्तं बृहतः पाजसस्परि वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य ॥ ८ ॥ यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्र चेरते नि च विशन्ते अक्तुभिः। अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्याह्नाह्ना नो वस्यसावस्यसोदिहि ॥९॥ शं नो भव चक्षसा शं नो अह्ना शं भानुना शं हिमा शं घृणेन। यथा शमध्वञ्छमसद्दुरोणे तत्सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम् ॥१०॥ अस्माकं देवा उभयाय जन्मने शर्म यच्छत द्विपदे चतुष्पदे। अदत्पिबदूर्जयमानमाशितं तदस्मे शं योररपो दधातन ॥११॥ यद्वो देवाश्चकृम जिह्वया गुरु मनसो वा प्रयुती देवहेळनम्। अरावा यो नो अभि दुच्छुनायते तस्मिन्तदेनो वसवो नि धेतन ॥ १२ ॥ १३ ॥

॥ ३८ ॥ ऋषिः-१—५ इन्द्रो मुष्कवान् ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ५ निचृज्जगती। २ पादनिचृज्जगती। ३, ४ विराड् जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ३८ ॥ अस्मिन्न इन्द्र पृत्सुतौ यशस्वति शिमीवति क्रन्दसि प्राव सातये यत्र गोषाता धृषितेषु खादिषु विष्वक्पतन्ति दिद्यवो नृषाह्ये ॥ १ ॥ स नः क्षुमन्तं सदने व्यूर्णुहि गोअर्णसं रयिमिन्द्र श्रवाय्यम्। स्याम ते जयतः शक्र मेदिनो यथा वयमुश्मसि तद्वसो कृधि ॥ २ ॥ यो नो दास आर्यो वा पुरुष्टुतादेव इन्द्र युधये चिकेतति। अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रवस्त्वया वयं तान्वनुयाम सङ्गमे ॥ ३॥ यो दभ्रेभिर्हव्यो यश्च भूरिभिर्यो अभीके वरिवोविन्नृषाह्ये। तं विखादे सस्निमद्य श्रुतं नरमर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे ॥ ४॥ स्ववृजं हि त्वामहमिन्द्र शुश्रवानानुदं वृषभ रध्रचोदनम्। प्र मुञ्चस्व परि कुत्सादिहा गहि किमु त्वावान्मुष्कयोर्बद्ध आसते ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ ३६ ॥ ऋषिः—१—१४ घोषा काक्षीवती ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१, ६, ७, ११, १३ निचृज्जगती। २, ८, ६, १२ जगती। ३ विराड् जगती।

५, ९ पादनिंचृज्जगती । १० आर्चीस्वराड् जगती । १४ निचृत्त्रिष्टुप् । स्वरः- १-१३ निषादः । १४ धैवतः ॥

॥ ३९ ॥ यो वां परिज्मा सुवृदश्विना रथों दोषामुषासो हव्यो हविष्मता । शश्वत्तमासस्तमु वामिदं वयं पितुर्न नाम सुहवं हवामहे ॥ १ ॥ चोदयतं सूनृताः पिन्वतं धिय उत्पुरंधीरीरयतं तदुश्मसि । यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं न चारुं मघवत्सु नस्कृतम् ॥ २ ॥ अमाजुरश्चिद्भवथो युवं भगोऽनाशोश्चिदवितारापमस्य चित् । अन्धस्य चिन्नासत्या कृशस्य चिद्युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित् ॥ ३ ॥ युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः । निष्टौग्र्यमूहथुरद्भ्यस्परि विश्वेत्ता वां सवनेषु प्रवाच्या ॥ ४ ॥ पुराणा वां वीर्या३ प्र ब्रवा जनेऽथो हासथुर्भिषजा मयोभुवा । ता वां नु नव्यावर्वसे करामहेऽयं नासत्या श्रदरिर्यथा दधत् ॥ ५ ॥ १५ ॥ इयं वामह्वे शृणुतं मे अश्विना पुत्रायेव पितरा मह्यं शिक्षतम् । अनापिरज्ञा असजात्यामतिः पुरा तस्या अभिशस्तेरव स्पृतम् ॥ ६ ॥ युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् । युवं हवं वध्रिमत्या अगच्छतं युवं सुषुतिं चक्रथुः पुरंधये ॥ ७ ॥ युवं विप्रस्य जरणामुपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद्वयः । युवं वन्दनमृश्यदादुदूपथुर्युवं सद्यो विश्पलामेतवे कृथः ॥ ८ ॥ युवं ह रेभं वृषणा गुहा हितमुदैरयतं ममृवांसमश्विना । युवमृबीसमुत तप्तमत्रय ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवध्रये ॥ ९ ॥ युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् । चर्कृत्यं ददथुर्द्रावयत्सखं भगं न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम् ॥ १० ॥ १६ ॥ न तं राजानावदिते कुतश्चन नांहो अश्नोति दुरितं नकिर्भयम् । यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी पुरोरथं कृणुथः पत्न्या सह ॥ ११ ॥ आ तेन यातं मनसो जवीयसा रथं यं वामृभवश्चक्रुरश्विना । यस्य योगे दुहिता जायते दिव उभे अहनी सुदिने विवस्वतः ॥ १२ ॥ ता वर्तिर्यातं जयुषा वि पर्वतमपिन्वतं शयवे धेनुमश्विना । वृकस्य चिद्वर्तिकामन्तरास्याद्युवं शचीभिर्ग्रसितामामुञ्चतम् ॥ १३ ॥ एतं वां स्तोममश्विनावकर्मातक्षाम भृगवो न रथम् । न्यमृक्षाम योषणां न मर्ये नित्यं न सूनुं तनयं दधानाः ॥ १४ ॥ १७ ॥

॥ ४० ॥ ऋषिः-१-१४ घोषा काक्षीवती ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः-१, ५, १२, १४ विराड् जगती । २, ३, ७, १०, १३ जगती । ४, ६, ११ निचृज्जगती । ९, ८ पादनिचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ४० ॥ रथं यान्तं कुह को ह वां नरा प्रति द्युमन्तं सुविताय भूषति । प्रातर्यावाणं विभ्वं विशेविशे वस्तोर्वस्तोर्वहमानं धिया शमि ॥१॥ कुह स्विद्दोषा कुह वस्तोरश्विना कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः । को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ ॥ २ ॥ प्रातर्जरेथे जरणेव कापया वस्तोर्वस्तोर्यजता गच्छथो गृहम् । कस्य ध्वस्रा भवथः कस्य वा नरा राजपुत्रेव सवनाव गच्छथः ॥ ३ ॥ युवां मृगेव वारणा मृगण्यवो दोषा वस्तोर्हविषा नि ह्वयामहे । युवं होत्रामृतुथा जुह्वते नरेषं जनाय वहथः शुभस्पती ॥ ४ ॥ युवां ह घोषा पर्यश्विना यती राज्ञ ऊचे दुहिता पृच्छे वां नरा । भूतं मे अह्न उत भूतमक्तवेऽश्वावते रथिने शक्तमर्वते ॥ ५ ॥ १८ ॥ युवं कवी ष्ठः पर्यश्विना रथं विशो न कुत्सो जरितुर्नशायथः । युवोर्ह मक्षा पर्यश्विना मध्वासा भरत निष्कृतं न योषणा ॥ ६ ॥ युवं ह भुज्युं युवमश्विना वशं युवं शिञ्जारमुशनामुपारथुः । युवो ररावा परि सख्यमासते युवोरहमवसा सुम्नमा चके ॥ ७ ॥ युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं युवं विधन्तं विधवामुरुष्यथः । युवं सनिभ्यः स्तनयन्तमश्विनाप व्रजमूर्णुथः सप्तास्यम् ॥ ८ ॥ जनिष्ट योषा पतयत्कनीनको वि चारुहन्वीरुधो दंसना अनु । आस्मै रीयन्ते निवनेव सिन्धवोऽस्मा अह्ने भवति तत्पतित्वनम् ॥ ९ ॥ जीवं रुदन्ति वि मयन्ते अध्वरे दीर्घामनु प्रसितिं दीधियुर्नरः । वामं पितृभ्यो य इदं समेरिरे मयः पतिभ्यो जनयः परिष्वजे ॥ १० ॥ १९ ॥ न तस्य विद्म तदु षु प्र वोचत युवा ह यद्युवत्याः क्षेति योनिषु । प्रियोस्रियस्य वृषभस्य रेतिनो गृहं गमेमाश्विना तदुश्मसि ॥ ११ ॥ आ वामगन्त्सुमतिर्वाजिनीवसू न्यश्विना हृत्सु कामा अयंसत । अभूतं गोपा मिथुना शुभस्पती प्रिया अर्यम्णो दुर्यां अशीमहि ॥१२॥ ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ धत्तं रयिं सहवीरं वचस्यवे । कृतं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती स्थाणुं पथेष्ठामप दुर्मतिं हतम् ॥ १३ ॥ क्व स्विदद्य कतमास्वश्विना विक्षु दस्रा मादयेते शुभस्पती । क ईं नि येमे कतमस्य जग्मतुर्विप्रस्य वा यजमानस्य वा गृहम् ॥ १४ ॥ २० ॥

॥ ४१ ॥ ऋषिः—१—३ सुहस्त्यो घौषेयः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१ पादनिचृज्जगती । २ निचृज्जगती । ३ विराड् जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ४१ ॥ समानमु त्यं पुरुहूतमुक्थ्यं रथं त्रिचक्रं सवना गनिग्मतम् । परिज्मानं विदथ्यं सुवृक्तिभिर्वयं व्युष्टा उषसो हवामहे ॥ १ ॥ प्रातर्युजं नासत्याधि

तिष्ठथः प्रातर्यावाणं मधुवाहनं रथम् । विशो येन गच्छथो यज्वरीर्नरा कीरेश्चि-
द्यज्ञं होतृमन्तमश्विना ॥ २ ॥ अध्वर्युं वा मधुपाणिं सुहस्त्यमग्निधं वा धृतदक्षं द-
मूनसम् । विप्रस्य वा यत्सवनानि गच्छथोऽत आ यातं मधुपेयमश्विना ॥३॥ २१॥

॥ ४२ ॥ ऋषिः—१—११ कृष्णः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३,
७—६, ११ त्रिष्टुप् । २, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ६, १० विराट्
त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४२ ॥ अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन्भूषन्निव प्र भरा स्तोममस्मै । वाचा
विप्रास्तरत वाचमर्यो निरामय जरितः सोम इन्द्रम् ॥ १ ॥ दोहेन गामुप शिक्षा
सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम् । कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टमा च्यावय मघ-
देयाय शूरम् ॥ २ ॥ किमङ्ग त्वा मघवन्भोजमाहुः शिशीहि मा शिशयं त्वा शृ-
णोमि । अप्नस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः ॥ ३ ॥ त्वां
जना ममसत्येष्विन्द्र सन्तस्थाना वि ह्वयन्ते समीके । अत्रा युजं कृणुते यो हवि-
ष्मान्नासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः ॥४॥ धनं न स्यन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमाँ
आसुनोति प्रयस्वान् । तस्मै शत्रून्त्सुतुकान्प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान्युवति हन्ति वृत्रम्
॥ ५ ॥ २२॥ यस्मिन्वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा काममस्मे । आ-
राच्चित्सन्भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम् ॥ ६ ॥ आराच्छत्रुमप
बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन । अस्मे धेहि यवमद्गोमदिन्द्र कृधी धियं
जरित्रे वाजरत्नाम् ॥ ७ ॥ प्र यमन्तर्वृषसवासो अग्मन्तीव्राः सोमा बहुलान्तास
इन्द्रम् । नाह दामानं मघवा नि यंसन्नि सुन्वते वहति भूरि वामम् ॥ ८ ॥ उत
प्रहामतिदीव्या जयाति कृतं यच्छ्वघ्नी विचिनोति काले । यो देवकामो न धना
रुणद्धि समित्तं राया सृजति स्वधावान् ॥६॥ गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं
पुरुहूत विश्वाम् । वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः । इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो
नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥ २३ ॥ ३ ॥

॥ ४३ ॥ ऋषिः—१-११ कृष्णः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ६ नि-
चृज्जगती । २ आर्चीस्वराड् जगती ।३, ६ जगती । ४, ५, ७, ८ विराड् जगती ।
१० विराट् त्रिष्टुप् । ११ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१—६ निषादः । १०, ११ धैवतः ॥

॥ ४३ ॥ अच्छा म इन्द्रं मतयः स्वर्विदः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत । परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ॥ १ ॥ न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत्कामं पुरुहूत शिश्रय । राजेव दस्म निषदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते ॥ २ ॥ विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते । तस्येदिमे प्रवणे सप्त सिन्धवो वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः ॥ ३ ॥ वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन्त्सोमास इन्द्रं मन्दिनश्चमूषदः । प्रैषामनीकं शवसा दविद्युतद्विदत्स्व१र्मनवे ज्योतिरार्यम् ॥ ४ ॥ कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत् । न तत्ते अन्यो अनु वीर्यं शकन्न पुराणो मघवन्नोत नूतनः ॥ ५ ॥ २४ ॥ विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद्वृषा । यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ॥ ६ ॥ आपो न सिन्धुमभि यत्समक्षरन्त्सोमास इन्द्रं कुल्या इव ह्रदम् । वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना ॥ ७ ॥ वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः । स सुन्वते मघवा जीरदानवेऽविन्दज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ॥ ८ ॥ उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा सह भूया ऋतस्य सुदुघा पुराणवत् । वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः स्व१र्ण शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः ॥ ९ ॥ गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् । वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः । इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥ २५ ॥

॥ ४४ ॥ ऋषिः—१–११ कृष्णः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २,१० विराट् त्रिष्टुप् । ३,११ त्रिष्टुप् । ४ विराड् जगती । ५–७,९ पाद निचृज्जगती । ८ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१–३, १०, ११ धैवतः । ४–९ निषादः ॥

॥ ४४ ॥ आ यात्विन्द्रः स्वपतिर्मदाय यो धर्मणा तूतुजानस्तुविष्मान् । प्रत्वक्षाणो अति विश्वा सहांस्यपारेण महता वृष्ण्येन ॥ १ ॥ सुष्ठामा रथः सुयमा हरी ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गभस्तौ । शीभं राजन्त्सुपथा याह्यर्वाङ् वर्धाम ते पपुषो वृष्ण्यानि ॥ २ ॥ एन्द्रवाहो नृपतिं वज्रबाहुमुग्रमुग्रासस्तविषास एनम् । प्रत्वक्षसं वृषभं सत्यशुष्ममेमस्मत्रा सधमादो वहन्तु ॥ ३ ॥ एवा पतिं द्रोणसाचं सचेतसमूर्जः स्कम्भं धरुण आ वृषायसे । ओजः कृष्व सं गृभाय त्वे अप्यसो यथा केनिपानामिनो वृधे ॥ ४ ॥ गमन्नस्मे वसून्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः । त्वमीशिषे सास्मिन्ना सत्सि बर्हिष्यनाधृष्या तव पात्राणि धर्मणा ॥ ५ ॥ २६ ॥

पृथक् प्रायन्प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा। न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः ॥ ६ ॥ एवैवापागपरे सन्तु दूढ्योऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुज्रे। इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना ॥ ७ ॥ गिरीँरज्रान्रेजमानाँ अधारयद्द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत्। समीचीने धिषणे विष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति ॥ ८ ॥ इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवञ्छफारुजः। अस्मिन्त्सु ते सवने अस्त्वोक्यं सुत इष्टौ मघवन्बोध्याभगः ॥ ९ ॥ गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्। वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥१०॥ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः। इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥ २७ ॥

॥ ४५ ॥ ऋषिः—१—१२ वत्सप्रिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१—५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ त्रिष्टुप्। ८ पाद निचृत्त्रिष्टुप्। ९—१२ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४५ ॥ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद्द्वितीयं परि जातवेदाः। तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रमिन्धान एनं जरते स्वाधीः ॥ १ ॥ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा। विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ ॥ २ ॥ समुद्रे त्वा नृमणा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन्। तृतीये त्वा रजसि तस्थिवांसमपामुपस्थे महिषा अवर्धन् ॥ ३ ॥ अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्। सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥ ४ ॥ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः। वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्र उषसामिधानः ॥ ५ ॥ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः। वीळुं चिदद्रिमभिनत्परायञ्जना यदग्निमयजन्त पञ्च ॥६॥२८॥ उशिक्पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि। इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥७॥ दृशानो रुक्म उर्विया व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौर्जनयत्सुरेताः ॥८॥ यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवन्तमग्ने। प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ ॥ ९ ॥ आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थउक्थ आ भज शस्यमाने। प्रियः सू-

यँ प्रियो अग्ना भंवात्युज्जातेनं भिनददुज्जनित्वैः ॥ १० ॥ त्वामंग्ने यजंमाना अनु द्यून्विश्वा वसुं दधिरे वार्याणि । त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वंव्रुः ॥ ११ ॥ अस्तांव्यग्निर्नुरां सुशेवों वैश्वानर ऋषिभिः सोमंगोपाः । अद्वेषे द्यावांपृथिवी हुवेम देवां धत्त रयिमस्मे सुवीरंम् ॥ १२ ॥ २६ ॥ ८ ॥ ७ ॥

॥ ४६ ॥ ऋषिः—१-१० वत्सप्रिः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः-१, २ पाद निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ५ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । ४, ८, १० त्रिष्टुप् । ६ आर्चीभुरिक् त्रिष्टुप् । ७ विराट् त्रिष्टुप् । ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४६ ॥ प्र होतां जातो महान्नंभोविन्नृषद्वा सीददपामुपस्थें । दधिर्यो धायि स ते वयांसि यन्ता वसूंनि विधते तंनूपाः ॥ १ ॥ इमं विधन्तों अपां सधस्थें पशुं न नष्टं पदैरनुं ग्मन् । गुहा चतंन्तमुशिजो नमोंभिरिच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन् ॥ २ ॥ इमं त्रितो भूर्यविन्ददिच्छन्वैभूवसो मूर्धन्यघ्न्यायाः । स शेवृधो जात आ हर्म्येषु नाभिर्युवां भवति रोचनस्यं ॥ ३ ॥ मन्द्रं होतांरमुशिजो नमोंभिः प्राञ्चं यज्ञं नेतारमध्वराणांम् । विशामंकृण्वन्नरतिं पांवकं हंव्यवाहं दधंतो मानुषेषु ॥ ४ ॥ प्र भूर्जयंन्तं महां विंपोधां मूरा अमूंरं पुरां दर्माणंम् । नयंन्तो गर्भं वनां धियं धुर्हिरिश्मश्रुं नार्वाणं धनंर्चम् ॥ ५ ॥ १ ॥ नि पस्त्यासु त्रितः स्तंभूयन्परिवीतो योनौं सीददन्तः । अतंः सङ्गृभ्यां विशां दमूंना विधर्मणायन्त्रैरीयते नॄन् ॥ ६ ॥ अस्याजरासो दमामरित्रा अर्चद्धूमासो अग्नयंः पावकाः । श्वितीचयंः श्वात्रासो भुरण्यवों वनर्षदों वायवो न सोमाः ॥ ७ ॥ प्र जिह्वयां भरते वेपों अग्निः प्र वयुनांनि चेतंसा पृथिव्याः । तमायवंः शुचयंन्तं पावकं मन्द्रं होतांरं दधिरे यजिष्ठम् ॥ ८ ॥ द्यावा यमग्निं पृथिवी जनिष्टामापस्त्वष्टा भृगंवो यं सहोंभिः । ईळेन्यं प्रथमं मांतरिश्वा देवास्ततक्षुर्मनवे यजंत्रम् ॥ ९ ॥ यं त्वां देवा दंधिरे हंव्यवाहं पुरुस्पृहो मानुषासो यजंत्रम् । स यामंन्नग्ने स्तुवते वयों धाः प्रदेवयन्यशसः सं हि पूर्वीः ॥ १० ॥ २ ॥

॥ ४७ ॥ ऋषिः—१-८ सप्तगुः ॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ छन्दः-१, ४, ७ त्रिष्टुप् । २ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् । ३ भुरिक् त्रिष्टुप् । ५, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ४७ ॥ जगृम्भा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवों वसुपते वसूंनाम् । विद्मा हि

त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ १ ॥ स्वायुधं स्ववसं सु
नीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम्। चर्कृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयि
न्दाः ॥ २ ॥ सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्तमुरुं गभीरं पृथुबुध्नमिन्द्र। श्रुतऋषिमुग्रमभि
मातिषाहमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिन्दाः ॥ ३ ॥ सनद्वाजं विप्रवीरं तरुत्रं धनस्पृतं
शूशुवांसं सुदक्षम्। दस्युहनं पूर्भिदमिन्द्र सत्यमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिन्दाः॥४॥
अश्वावन्तं रथिनं वीरवन्तं सहस्रिणं शतिनं वाजमिन्द्र। भद्रव्रातं विप्रवीरं स्व
र्षामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिन्दाः ॥ ५ ॥ ३॥ प्र सप्तगुमृतधीतिं सुमेधां बृहस्पतिं
मतिरच्छा जिगाति। य आङ्गिरसो नमसोपसद्योऽस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिन्दाः
॥ ६ ॥ वनीवानो मम दूतास इन्द्रं स्तोमाश्चरन्ति सुमतीरियानाः। हृदिस्पृशो
मनसा वच्यमाना अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिन्दाः ॥ ७ ॥ यत्वा यामि दद्धि तन्न
इन्द्र बृहन्तं क्षयमसमं जनानाम्। अभि तद्द्यावापृथिवी गृणीतामस्मभ्यं चित्रं वृषणं
रयिन्दाः ॥ ८ ॥ ४ ॥

॥ ४८ ॥ ऋषिः—१—११ इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ छन्दः—१, ३ पादनिचृज्जगती। २, ८ जगती। ४ निचृज्जगती। ५ विराड् जगती। ६, ६ आर्चीस्वराड् जगती। ७ विराट् त्रिष्टुप्। १०, ११ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१—६, ८, ६ निषादः। ७, १०, ११ धैवतः॥

॥ ४८ ॥ अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शश्वतः। मां
हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे वि भजामि भोजनम् ॥ १ ॥ अहमिन्द्रो रोधो
वक्षो अथर्वणस्त्रिताय गा अजनयमहेरधि। अहं दस्युभ्यः परि नृम्णमाददे गो-
त्रा शिक्षन् दधीचे मातरिश्वने ॥२॥ मह्यं त्वष्टा वज्रमतक्षदायसं मयि देवासोऽवृ-
जन्नपि क्रतुम्। ममानीकं सूर्यस्येव दुष्टरं मामार्यन्ति कृतेन कर्त्वेन च ॥३॥ अहमेतं
गव्ययमश्व्यं पशुं पुरीषिणं सायकेना हिरण्ययम्। पुरु सहस्रा नि शिशामि दा-
शुषे यन्मा सोमास उक्थिनो अमन्दिषुः ॥४॥ अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न
मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन। सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये
रिषाथन ॥ ५ ॥ ५ ॥ अहमेताञ्छाश्वसतो द्वाद्वेन्द्रं ये वज्रं युधयेऽकृण्वत। आ-
ह्वयमानाँ अव हन्मनाहनं दृळ्हा वदन्ननमस्युर्नमस्विनः ॥ ६ ॥ अभीदमेकमेको
अस्मि निष्षाळभी द्वा किमु त्रयः करन्ति। खले न पर्षान् प्रति हन्मि भूरि किं
मा निन्दन्ति शत्रवोऽनिन्द्राः ॥ ७ ॥ अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिग्वमिष्करमिषं न

वृत्रतुरं विद्गु धारयम् । यत्पर्णयघ्न उत वा करञ्जहे प्राहं महे वृत्रहत्ये अशुश्रवि ॥ ८ ॥ प्र मे नमी साप्य इषे भुजे भूद्गवामेषे सख्या कृणुत द्विता । दिद्युं यदस्य समिथेषु मंहयमादिदेनं शंस्यमुक्थ्यं करम् ॥९॥ प्र नेमस्मिन्ददृशे सोमो अन्तर्गोपा नेममाविरस्था कृणोति । स तिग्मशृङ्गं वृषभं युयुत्सन् द्रुहस्तस्थौ बहुले बद्धो अन्तः ॥ १० ॥ आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां न मिनामि धाम । ते मा भद्राय शवसे ततक्षुरपराजितमस्तृतमषाळ्हम् ॥ ११ ॥ ६ ॥

॥ ४९ ॥ ऋषिः—१—११ इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः । छन्दः—१ आर्चीभुरिग् जगती । ३, ९ विराड् जगती । ४ जगती । ५, ६, ८ निचृज्जगती । ७ आर्ची स्वराड् जगती । १० पादनिचृज्जगती । २ विराट् त्रिष्टुप् । ११ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१, ३—१० निषादः । २, ११ धैवतः ॥

॥ ४९ ॥ अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम् । अहं भुवं यजमानस्य चोदितायज्वनः साक्षि विश्वस्मिन्भरे ॥ १ ॥ मां धुरिन्द्रं नाम देवता दिवश्च ग्मश्चापां च जन्तवः । अहं हरी वृषणा विव्रता रघू अहं वज्रं शवसे धृष्ण्वा ददे ॥ २ ॥ अहमत्कं कवये शिश्नथं हथैरहं कुत्समावमाभिरूतिभिः । अहं शुष्णस्य श्नथिता वधर्यमं न यो रर आर्यं नाम दस्यवे ॥ ३ ॥ अहं पितेव वेतसूँरभिष्टये तुग्रं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम् । अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यद्भरे तुजये न प्रियाधृषे ॥ ४ ॥ अहं रन्धयं मृगयं श्रुतर्वणे यन्माजिहीत वयुना चनानुषक् । अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सव्याय पड्गृभिमरन्धयम् ॥ ५ ॥ ७ ॥ अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम् । यद्वर्धयन्तं प्रथयन्तमानुषग्दूरे पारे रजसो रोचनाकरम् ॥ ६ ॥ अहं सूर्यस्य परि याम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा । यन्मा सावो मनुष आह निर्णिज ऋधक्कृषे दासं कृत्व्यं हथैः ॥ ७ ॥ अहं सप्तहा नहुषो नहुष्टरः प्राश्रावयं शवसा तुर्वशं यदुम् । अहं न्यन्यं सहसा सहस्करं नव व्राधतो नवतिं च वक्षयम् ॥ ८ ॥ अहं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रवित्न्वः पृथिव्यां सीरा अधि । अहमर्णांसि वि तिरामि सुक्रतुर्युधा विदं मनवे गातुमिष्टये ॥ ९ ॥ अहं तदासु धारयं यदासु न देवश्चन त्वष्टाधारयद्रुशत् । स्पार्हं गवामूधःसु वक्षणास्वा मधोर्मधु श्वात्र्यं सोममाशिरम् ॥ १० ॥ एवा देवाँ इन्द्रो विव्ये नॄन् प्र च्यौत्नेन मघवा सत्यराधाः । विश्वेत्ता ते हरिवः शचीवोऽभि तुरासः स्वयशो गृणन्ति ॥ ११ ॥ ८ ॥

॥ ५० ॥ ऋषिः-१-७ इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ देवता-इन्द्रो वैकुण्ठः । छन्दः-१ निचृज्जगती । २, आर्चीस्वराड् जगती । ६, ७ पादनिचृज्जगती । ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ४ विराट् त्रिष्टुप् । ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ६, ७ निषादः । ३—५ धैवतः ॥

॥ ५० ॥ प्र वो॑ म॒हे मन्द॑माना॒यान्ध॒सोऽर्चा॑ वि॒श्वान॑राय विश्वा॒भुवे॑ । इन्द्र॑स्य॒ यस्य॑ सु॒मखं॒ सहो॒ महि॒ श्रवो॑ नृ॒म्णं च॒ रोद॑सी सप॒र्यतः॑ ॥ १ ॥ सो चि॒न्नु सख्या॒ नर्य॑ इ॒नः स्तु॒तश्च॒र्कृत्य॒ इन्द्रो॒ माव॑ते॒ नरे॑ । विश्वा॑सु धू॒र्षु वा॑ज॒कृत्ये॑षु सत्पते वृ॒त्रे वा॒प्स्व१॒॑भि शू॑र मन्दसे ॥ २ ॥ के ते॒ नर॑ इन्द्र॒ ये त॑ इ॒षे ये ते॑ सु॒म्नं स॑ध॒न्य१॒॑मिय॑क्षान् । के ते॒ वाजा॑यासु॒र्या॑य हिन्वि॒रे के अ॒प्सु स्वासू॒र्वरा॑सु॒ पौंस्ये॑ ॥ ३ ॥ भुव॒स्त्वमि॑न्द्र॒ ब्रह्म॑णा म॒हान्भुवो॒ विश्वे॑षु॒ सव॑नेषु य॒ज्ञियः॑ । भुवो॒ नॄँश्च्यौ॒त्नो विश्व॑स्मि॒न्भरे॒ ज्येष्ठ॑श्च॒ मन्त्रो॑ विश्वचर्षणे ॥ ४ ॥ अवा॒ नु कं॒ ज्याया॑न्य॒ज्ञव॑नसो म॒हीं त॒ ओमा॑त्रां कृ॒ष्टयो॑ विदुः । असो॒ नु क॑म॒जरो॒ वर्धा॑श्च॒ विश्वेदे॒ता सव॑ना तूतु॒मा कृ॑षे ॥ ५ ॥ ए॒ता विश्वा॒ सव॑ना तूतु॒मा कृ॑षे स्व॒यं सू॑नो सहसो॒ यानि॑ दधि॒षे । वरा॑य ते॒ पात्रं॒ धर्म॑णे॒ तना॑ य॒ज्ञो मन्त्रो॒ ब्रह्मोद्य॑तं॒ वचः॑ ॥ ६ ॥ ये ते॑ विप्र ब्रह्म॒कृतः॑ सु॒ते सचा॒ वसू॑नां च॒ वसु॑नश्च दा॒वने॑ । प्र ते सु॒म्नस्य॒ मन॑सा प॒था भु॑व॒न्मदे॑ सु॒तस्य॑ सो॒म्यस्यान्ध॑सः ॥ ७ ॥ ६ ॥

॥ ५१ ॥ ऋषिः—१, ३, ५, ७, ९ देवाः । २, ४, ६, ८ अग्निः सौचीकः ॥ देवता—१, ३, ५, ७, ९ अग्निः सौचीकः । २, ४, ६, ८ देवाः ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ५, ६ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ७ त्रिष्टुप् । ८, ९ भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५१ ॥ म॒हत्तदुल्बं॒ स्थवि॑रं॒ तदा॑सी॒द्येनावि॑ष्टितः प्रवि॒वेशि॑था॒पः । विश्वा॑ अपश्यद्बहु॒धा ते॑ अग्ने॒ जात॑वेदस्त॒न्वो॑ दे॒व एकः॑ ॥ १ ॥ को मा॑ ददर्श कत॒मः स दे॒वो यो मे॑ त॒न्वो॑ बहु॒धा प॒र्यप॑श्यत् । क्वाह॑ मित्रावरुणा क्षियन्त्य॒ग्नेर्विश्वाः॑ स॒मिधो॑ देव॒यानीः॑ ॥ २ ॥ ऐच्छा॑म त्वा बहु॒धा जा॑तवे॒दः प्रवि॑ष्टमग्ने अ॒प्स्वोष॑धीषु । तं त्वा॑ य॒मो अ॑चिकेच्चित्रभानो दशान्तरु॒ष्याद॑ति॒रोच॑मानम् ॥ ३ ॥ हो॒त्राद॒हं व॑रुण॒ बिभ्य॑दाय॒ नेदे॒व मा॑ यु॒नज॒न्नत्र॑ दे॒वाः । तस्य॑ मे त॒न्वो॑ बहु॒धा निवि॑ष्टा ए॒तमर्थं॒ न चि॑केता॒हम॒ग्निः ॥ ४ ॥ एहि॒ मनु॑र्देव॒युर्य॒ज्ञका॑मोऽरं॒कृत्या॒ तम॑सि क्षेष्यग्ने । सु॒गान्प॒थः कृ॑णुहि देव॒याना॒न्वह॑ ह॒व्यानि॑ सु॒मन॒स्यमा॑नः ॥ ५ ॥ १० ॥ अग्नेः

र्वे भ्रातरो अर्थमेतं रथीवाध्वानमन्वावरीवुः। तस्माद्भिया वरुण दूरमायं गौरो-
न क्षेप्नोरविजे ज्यायाः॥ ६॥ कुर्मस्त आयुरजरं यदग्ने यथा युक्तो जातवेदो
न रिष्याः। अथा वहासि सुमनस्यमानो भागं देवेभ्यो हविषः सुजात॥ ७॥
याजान्मे अनुयाजांश्च केवलानूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम्। घृतं चापां पु-
षं चौषधीनामग्नेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः॥ ८॥ तव प्रयाजा अनुयाजाश्च
केवल ऊर्जस्वन्तो हविषः सन्तु भागाः। तवाग्ने यज्ञो३ऽयमस्तु सर्वस्तुभ्यं नमन्तां
प्रदिशश्चतस्रः॥ ९॥ ११॥

॥ ५२॥ ऋषिः—१—६ अग्निः सौचीकः॥ देवा देवताः॥ छन्दः—१ त्रि-
ष्टुप्। २—४ निचृत्त्रिष्टुप्। ५, ६ विराट् त्रिष्टुप्॥ धैवतः स्वरः॥

॥ ५२॥ विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह होता वृतो मनवै यन्निषद्य। प्र
मे ब्रूत भागधेयं यथा वो येन पथा हव्यमा वो वहानि॥ १॥ अहं होता न्यसी-
दं यजीयान् विश्वे देवा मरुतो मा जुनन्ति। अहरहरश्विनाध्वर्यवं वां ब्रह्मा स-
मिद्भवति साहुतिर्वाम्॥ २॥ अयं यो होता किरु स यमस्य कमप्यूहे यत्समञ्ज-
न्ति देवाः। अहरहर्जायते मासिमास्यथा देवा दधिरे हव्यवाहम्॥ ३॥ मां देवा
दधिरे हव्यवाहमपम्लुक्तं बहु कृच्छ्रा चरन्तम्। अग्निर्विद्वान्यज्ञं नः कल्पया-
तिपञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम्॥ ४॥ आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं यथा वो देवा
वरिवः कराणि। आ बाह्वोर्वज्रमिन्द्रस्य धेयामथेमा विश्वाः पृतना जयाति॥ ५॥
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन्। औक्षन्घृतैरस्तृण-
न्बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त॥ ६॥ १२॥

॥ ५३॥ ऋषिः—१—३, ६ ११ देवाः। ४, ५ अग्निः सौचीकः॥ दे-
वता—१—३, ६—११ अग्निः सौचीकः। ४, ५ देवाः॥ छन्दः—१, ३, ८
त्रिष्टुप्। २, ४ विराट् त्रिष्टुप्। ५ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप्। ६, ७, ९ निचृज्ज-
गती। १० विराड् जगती ११ पाद निचृज्जगती॥ स्वरः—१—५, ८ धैवतः
६, ७, ९—११ निषादः॥

॥ ५३॥ यमैच्छाम मनसा सो३ऽयमागाद्यज्ञस्य विद्वान्परुषश्चिकित्वान्। स
नो यक्षद्देवताता यजीयान्नि हि षत्सदन्तरः पूर्वो अस्मत्॥ १॥ अराधि होता
निषदा यजीयानभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यत्। यजामहै यज्ञियान्हन्त देवाँ ई-
ळामहा ईड्याँ आज्येन॥ २॥ साध्वीमकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामवि-

दाम गुह्यम् । स आयुरागात्सुरभिर्वसानो भद्रामकर्देवहूतिं नो अद्य ॥ ३ ॥ त
दद्य वाचः प्रथमं मसीय येनासुराँ अभि देवा असाम । ऊर्जाद उत यज्ञियासः
पञ्च जना मम होत्रं जुषध्वम् ॥ ४ ॥ पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां गोजाता उत
ये यज्ञियासः । पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥ ५ ॥
॥ १३ ॥ तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥ ६ ॥ अक्षानहो नह्य
तनोत सोम्या इष्कृणुध्वं रशना ओत पिंशत । अष्टावन्धुरं वहताभितो रथं येन दे
वासो अनयन्नभि प्रियम् ॥ ७ ॥ अश्मन्वती रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता स
खायः । अत्रा जहाम ये असन्नशेवाः शिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान् ॥ ८ ॥ त्वष्टा
माया वेदपसामपस्तमो बिभ्रत्पात्रा देवपानानि शन्तमा । शिशीते नूनं परशुं स्वा
यसं येन वृश्चादेतशो ब्रह्मणस्पतिः ॥ ९ ॥ सतो नूनं कवयः सं शिशीत वाशी
भिर्याभिरमृताय तक्षथ । विद्वांसः पदा गुह्यानि कर्तन येन देवासो अमृतत्वमानशुः
॥ १० ॥ गर्भे योषामदधुर्वत्समासन्यपीच्येन मनसोत जिह्वया । स विश्वाहा सु
मना योग्या अभि सिषासनिर्वनते कार इज्जितिम् ॥ ११ ॥ १४ ॥

॥ ५४ ॥ ऋषिः—१—६ बृहदुक्थो वामदेव्यः ॥ इन्द्रोदेवता ॥ छन्दः—१,
६ त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३, ४ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥
धैवतः स्वरः ॥

॥ ५४ ॥ तां सु ते कीर्तिं मघवन्महित्वा यत्त्वा भीते रोदसी अह्वयेताम् । प्रावो
देवाँ आतिरो दासमोजः प्रजायै त्वस्यै यदशिक्ष इन्द्र ॥ १ ॥ यदचरस्तन्वा वावृ
धानो बलानीन्द्र प्रब्रुवाणो जनेषु । मायेत्सा ते यानि युद्धान्याहुर्नाद्य शत्रुं ननु पुरा
विवित्से ॥ २ ॥ क उ नु ते महिमनः समस्यास्मत्पूर्व ऋषयोऽन्तमापुः । यन्मातरं
च पितरं च साकमजनयथास्तन्वः स्वायाः ॥ ३ ॥ चत्वारि ते असुर्याणि नामा
दाभ्यानि महिषस्य सन्ति । त्वमङ्ग तानि विश्वानि वित्से येभिः कर्माणि मघवञ्च
कर्थ ॥ ४ ॥ त्वं विश्वा दधिषे केवलानि यान्याविर्या च गुहा वसूनि । काम
मिन्मे मघवन्मा वि तारीस्त्वमाज्ञाता त्वमिन्द्रासि दाता ॥ ५ ॥ यो अदधाज्ज्यो
तिषि ज्योतिरन्तर्यो असृजन्मधुना सं मधूनि । अध प्रियं शूषमिन्द्राय मन्म ब्रह्म
कृतो बृहदुक्थादवाचि ॥ ६ ॥ १५ ॥

॥ ५५ ॥ ऋषिः—१—८ बृहदुक्थो वामदेव्यः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१,

८ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ३, ४, ६ त्रिष्टुप् । ७ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ५५ ॥ दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैर्यत्त्वा भीते अह्वयेतां वयोधै । उदस्तभ्नाः पृथिवीं द्यामभीके भ्रातुः पुत्रान्मघवन्तित्विषाणः ॥ १ ॥ महत्तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग्येन भूतं जनयो येन भव्यम् । प्रत्नं जातं ज्योतिर्यदस्य प्रियं प्रियाः समविशन्त पञ्च ॥ २ ॥ आ रोदसी अपृणादोत मध्यं पञ्च देवाँ ऋतुशः सप्तसप्त । चतुस्त्रिंशता पुरुधा वि चष्टे सरूपेण ज्योतिषा विव्रतेन ॥ ३ ॥ यदुष औच्छः प्रथमा विभानामजनयो येन पुष्टस्य पुष्टम् । यत्ते जामित्वमवरं परस्या महन्महत्या असुरत्वमेकम् ॥ ४ ॥ विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार । देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान ॥ ५ ॥ १६ ॥ शाक्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीळः । यच्चिकेत सत्यमित्तन्न मोघं वसु स्पार्हमुत जेतोत दाता ॥६॥ ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि येभिरौक्षद्वृत्रहत्याय वज्री । ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न ऋतेकर्ममुदजायन्त देवाः ॥७॥ युजा कर्माणि जनयन्विश्वौजा अशस्तिहा विश्वमनास्तुराषाट् । पीत्वी सोमस्य दिव आ वृधानः शूरो निर्युधाधमद्दस्यून् ॥ ८ ॥ १७ ॥

॥ ५६ ॥ ऋषिः–१–७ बृहदुक्थो वामदेव्यः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः–१,३ निचृत्त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ७ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप् । ४ पादनिचृज्जगती । ५ विराड् जगती । ६ आर्चीभुरिग् जगती ॥ स्वरः–१–३, ७ धैवतः । ४–६ निषादः ॥

॥ ५६ ॥ इदं त एकं पर ऊं त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व । संवेशने तन्वश्चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥ १ ॥ तनूष्टे वाजिन्तन्वं नयन्ती वाममस्मभ्यं धातु शर्म तुभ्यम् । अह्रुतो महो धरुणाय देवान्दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयाः ॥ २ ॥ वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः सुवितः स्तोमं सुवितो दिवं गाः । सुवितो धर्म प्रथमानु सत्या सुवितो देवान्त्सुवितोऽनु पत्म ॥ ३ ॥ महिम्न एषां पितरश्चनेशिरे देवा देवेष्वदधुरपि क्रतुम् । समविव्यचुरुत यान्यत्विषुरैषां तनूषु नि विविशुः पुनः ॥ ४ ॥ सहोभिर्विश्वं परि चक्रमू रजः पूर्वा धामान्यमिता मिमानाः । तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे प्रासारयन्त पुरुध प्रजा अनु ॥ ५ ॥ द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदमास्थापयन्त तृतीयेन कर्मणा । स्वां प्रजां पितरः पित्र्यं

सह आवंरेष्वदधुस्तन्तुमातंतम् ॥ ६ ॥ नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्ति भिरति दुर्गाणि विश्वा। स्वां प्रजां बृहदुक्थो महित्वावंरेष्वदधादा परेषु ॥७॥१८॥

॥ ५७ ॥ ऋषिः—१—६ बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गौपायनाः। विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः-१गायत्री । २—६ निचृद् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः।

॥ ५७ ॥ मा प्र गांमपथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनंः। मान्तः स्थुर्नो अरातयः ॥ १ ॥ यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतं नशीमहि ॥ २ ॥ मनो न्वा हुवामहे नाराशंसेन सोमेन। पितृणां च मन्मभिः ॥ ३ ॥ आ तं एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक् च सूर्यं दृशे ॥ ४ ॥ पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः। जीवं व्रातं सचेमहि ॥ ५ ॥ वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ६ ॥ १६ ॥

॥५८॥ ऋषिः-१-१२ बन्ध्वादयो गौपायनाः ॥ देवता—मनआवर्तनम्॥ निचृदनुष्टुप् छन्दः ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ५८ ॥ यत्ते यमं वैवस्वतं मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥१॥ यत्ते दिवं यत्पृथिवीं मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ २ ॥ यत्ते भूमिं चतुर्भृष्टिं मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ३ ॥ यत्ते चतस्रः प्रदिशो मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥४॥ यत्ते समुद्रमर्णवं मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ५ ॥ यत्ते मरीचीः प्रवतो मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥६॥२०॥ यत्ते अपो यदोषधीर्मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥७॥ यत्ते सूर्यं यदुषसं मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ८ ॥ यत्ते पर्वतान्बृहतो मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ९ ॥ यत्ते विश्वमिदं जगन्मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ १० ॥ यत्ते पराः परावतो मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥११॥ यत्ते भूतं च भव्यं च मनो जगाम दूरकम्। तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ १२ ॥ २१ ॥

॥ ५९ ॥ ऋषिः-१-१० बन्ध्वादयो गौपायनाः ॥ देवता-१-३ निर्ऋतिः।

४ निर्ऋतिः सोमश्च । ५,६ असुनीतिः । ७ लिङ्गोक्ताः । ८,९,१० द्यावापृथिव्यौ । १० द्यावापृथिव्याविन्द्रश्च ॥ छन्दः-१ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४-६ निचृत्त्रिष्टुप् । ३, ७ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप् । ८ भुरिक् पङ्क्तिः । ९ जगती । १० विराड् जगती ॥ स्वरः-१-७ धैवतः । ८ पञ्चमः । ९, १० निषादः ॥

॥ ५९ ॥ प्र तार्यायुः प्रतरं नवीयः स्थातारेव क्रतुमता रथस्य । अध च्यवान उत्तवीत्यर्थं परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ॥ १ ॥ सामन्नु राये निधिमन्न्वन्नं करामहे सु पुरुध श्रवांसि । ता नो विश्वानि जरिता ममत्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ॥ २ ॥ अभी ष्व१र्यः पौंस्यैर्भवेम द्यौर्न भूमिं गिरयो नाज्रान् । ता नो विश्वानि जरिता चिकेत परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ॥ ३ ॥ मो षु णः सोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् । द्युभिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ॥ ४ ॥ असुनीते मनो अस्मासु धारय जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः । रारन्धि नः सूर्यस्य सन्दृशि घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व ॥५॥ ॥ २२ ॥ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम् । ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नः स्वस्ति ॥ ६ ॥ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम् । पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३ या स्वस्तिः ॥ ७ ॥ शं रोदसी सुबन्धवे यह्वी ऋतस्य मातरा । भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ॥ ८ ॥ अव द्वके अव त्रिका दिवश्चरन्ति भेषजा । क्षमा चरिष्ण्वेककं भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ॥९ ॥ समिन्द्रेरय गामनड्वाहं य आवहदुशीनराण्या अनः । भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ॥ १० ॥ २३ ॥

॥ ६० ॥ ऋषिः-१-५, ७-१२ बन्ध्वादयो गौपायनाः । ६ अगस्त्यस्य स्वसैषां माता ॥ देवता-१-४, ६ असमाती राजा । ५ इन्द्रः । ७-११ सुबन्धोर्जीविताह्वानम् । १२ हस्तः ॥ छन्दः-१-३ गायत्री । ४, ५ निचृद् गायत्री । ६ पादनिचृदनुष्टुप् । ७,१०,१२ निचृदनुष्टुप् । ११ आर्च्यनुष्टुप् । ८,९ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः-१-५ षड्जः । ६, ७, १०-१२ गान्धारः । ८, ९ पञ्चमः ॥

॥६०॥ आ जनं त्वेषसन्दृशं माहीनानामुपस्तुतम् । अगन्म बिभ्रतो नमः ॥१॥ असमातिं नितोशनं त्वेषं निययिनं रथम् । भजेरथस्य सत्पतिम् ॥ २ ॥ यो जनान्महिषाँ इवातितस्थौ पवीरवान् । उतापवीरवान्युधा ॥ ३ ॥ यस्येक्ष्वाकुरुप

व्रते रेवान्मरांय्येधते दिवीव पञ्च कृष्टयः ॥ ४ ॥ इन्द्र क्षत्रासमातिषु रथप्रोष्ठेषु धारय । दिवीव सूर्यं दृशे ॥ ५ ॥ अगस्त्यस्य नद्भ्यः सप्ती युनक्षि रोहिता । पणीन्न्यक्रमीरभि विश्वान्राजन्नराधसः ॥ ६ ॥ २४ ॥ अयं मातायं पितायं जीवातुरागमत् । इदं तव प्रसर्पणं सुबन्धवेहि निरिहि ॥ ७ ॥ यथा युगं वरत्रया नह्यन्ति धरुणाय कम् । एवा दाधार ते मनो जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ ८ ॥ यथेयं पृथिवी मही दाधारेमान्वनस्पतीन् । एवा दाधार ते मनो जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ ९ ॥ यमादहं वैवस्वतात्सुबन्धोर्मन आभरम् । जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ १० ॥ न्यग्वातोऽवं वाति न्यक्तपति सूर्यः । नीचीनमघ्न्या दुहे न्यग्भवतु ते रपः ॥ ११॥ अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः । अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः ॥ १२ ॥ २५ ॥ ४ ॥

॥६१॥ ऋषिः—१—२७ नाभानेदिष्ठो मानवः॥ विश्वे देवा देवताः॥ छन्दः—१, ८—१०, १५, १६, १८, १९, २१ निचृत्त्रिष्टुप् २, ७, ११, १२, २० विराट् त्रिष्टुप् । ३, २६ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप् । ४, १४, १७, २२, २३, २५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ५, ६, १३ त्रिष्टुप् । २४,२७ आर्चीभुरिक् त्रिष्टुप्॥ धैवतः स्वरः॥

॥ ६१ ॥ इदमित्था रौद्रं गूर्तवचा ब्रह्म क्रत्वा शच्यामन्तराजौ । क्राणा यदस्य पितरा मंहनेष्ठाः पर्षत्पक्थे अहन्ना सप्त होतॄन् ॥ १ ॥ स इद्दानाय दभ्याय वन्वञ्च्यवानः सूदैरमिमीत वेदिम् । तूर्वयाणो गूर्तवचस्तमः क्षोदो न रेत इतऊति सिञ्चत् ॥ २ ॥ मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता । आ यः शर्याभिस्तुविनृम्णो अस्याश्रीणीतादिशं गभस्तौ ॥ ३ ॥ कृष्णा यद्गोष्वरुणीषु सीदद्दिवो नपाताश्विना हुवे वाम् । वीतं मे यज्ञमा गतं मे अन्नं ववन्वांसा नेषमस्मृतध्रू ॥ ४ ॥ प्रथिष्ट यस्य वीरकर्ममिष्णदनुष्ठितं नु नर्यो अपौहत् । पुनस्तदा वृहति यत्कनाया दुहितुरा अनुभृतमनर्वा ॥ ५ ॥ २६ ॥ मध्या यत्कर्त्वमभवदभीके कामं कृण्वाने पितरि युवत्याम् । मनानग्रेतो जहतुर्वियन्ता सानौ निषिक्तं सुकृतस्य योनौ ॥ ६ ॥ पिता यत्स्वां दुहितरमधिष्कन्क्ष्मया रेतः सञ्जग्मानो नि षिञ्चत् । स्वाध्योऽजनयन्ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन् ॥ ७ ॥ स ईं वृषा न फेनमस्यदाजौ स्मदा परैदप दभ्रचेताः । सरत्पदा न दक्षिणा परावृङ् न ता नु मे पृशन्यो जगृभ्रे ॥ ८ ॥ मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्दिरग्निं न नग्न उप सीददूधः । सनितेध्मं सनितोत वाजं स धर्ता जज्ञे सहसा यवीयुत् ॥ ९ ॥ मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा ऋतं वदन्त ऋतयु-

क्षिमग्मन्। द्विबर्हसो य उप गोपमागुरदक्षिणासो अच्युता दुदुक्षन् ॥ १० ॥
॥ २७ ॥ मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो राधो न रेत ऋतमित्तुरण्यन्। शुचि यत्ते
रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः ॥ ११ ॥ पश्वा यत्पश्चा वियुता
बुधन्तेति ब्रवीति वक्तरी रराणः। वसोर्वसुत्वा कारवोऽनेहा विश्वं विवेष्टि द्रवि-
णमुप क्षु ॥ १२ ॥ तदिन्न्वस्य परिषद्वानो अग्मन्पुरू सदन्तो नार्षदं बिभित्सन्।
वि शुष्णस्य सङ्ग्रथितमनर्वा विदत्पुरुप्रजातस्य गुहा यत् ॥ १३ ॥ भर्गो ह ना-
मोत यस्य देवाः स्व१र्णये त्रिषधस्थे निषेदुः। अग्निर्ह नामोत जातवेदाः श्रुधी
नो होतर्ऋतस्य होताध्रुक् ॥ १४ ॥ उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता नासत्याविन्द्र
गूर्तये यजध्यै। मनुष्वद्वृक्तबर्हिषे रराणा मन्दू हितप्रयसा विक्षु यज्यू ॥ १५ ॥
॥२८॥ अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधा अपश्च विप्रस्तरति स्वसेतुः। स कक्षी-
वन्तं रेजयत्सो अग्निं नेमिं न चक्रमर्वतो रघुद्रु ॥ १६ ॥ स द्विबन्धुर्वैतरणो यष्टा
सबर्धुं धेनुमस्वं दुहध्यै। सं यन्मित्रावरुणा वृञ्ज उक्थैर्ज्येष्ठेभिरर्यमणं वरूथैः
॥ १७ ॥ तद्बन्धुः सूरिर्दिवि ते धियन्धा नाभानेदिष्ठो रपति प्र वेनन्। सा
नो नाभिः परमास्य वा घाहं तत्पश्चा कतिथश्चिदास ॥ १८ ॥ इयं मे
नाभिरिह मे सधस्थमिमे मे देवा अयमस्मि सर्वः। द्विजा अह प्रथमजा
ऋतस्येदं धेनुरदुहज्जायमाना ॥ १९ ॥ अधासु मन्द्रो अरतिर्विभावाव स्यति
द्विवर्तनिर्वनेषाट्। ऊर्ध्वा यच्छ्रेणिर्न शिशुर्दन्मक्षू स्थिरं शेवृधं सूत माता ॥२०॥
॥ २९ ॥ अधा गाव उपमातिं कनाया अनु श्वान्तस्य कस्य चित्परेयुः। श्रुधि
त्वं सुद्रविणो नस्त्वं याळाश्वघ्नस्य वावृधे सूनृताभिः ॥ २१ ॥ अध त्वमिन्द्र वि-
द्ध्य१स्मान्महो राये नृपते वज्रबाहुः। रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीननेहसस्ते
हरिवो अभिष्टौ ॥ २२ ॥ अध यद्राजाना गविष्टौ सरत्सरण्युः कारवे जरण्युः।
विप्रः प्रेष्ठः स ह्येषां बभूव परा च वक्षदुत पर्षदेनान् ॥ २३ ॥ अधा न्वस्य जे-
न्यस्य पुष्टौ वृथा रेभन्त ईमहे तदू नु। सरण्युरस्य सूनुरश्वो विप्रश्चासि श्रव-
सश्च सातौ ॥ २४ ॥ युवोर्यदि सख्यायास्मे शर्धाय स्तोमं जुजुषे नमस्वान्।
विश्वत्र यस्मिन्ना गिरः समीचीः पूर्वीव गातुर्दाशत्सूनृतायै ॥ २५ ॥ स गृणानो
अद्भिर्देववानिति सुबन्धुर्नमसा सूक्तैः। वर्धदुक्थैर्वचोभिरा हि नूनं व्यध्वैति पय
स उस्रियायाः ॥ २६ ॥ त ऊ षु णो महो यजत्रा भूत देवास ऊतये सजोषाः।
ये वाजाँ अनयता वियन्तो ये स्था निचेतारो अमूराः ॥ २७ ॥ ३० ॥ १ ॥

॥ ६२ ॥ ऋषिः—१-११ नाभानेदिष्ठो मानवः ॥ देवता—१-६ विश्वेदेवा-

अङ्गिरसो वा। ७ विश्वेदेवाः। ८-११ सावर्णेर्दानस्तुतिः॥ छन्दः-१, २ विराड् जगती। ३ पादनिचृज्जगती। ४ निचृज्जगती। ५ अनुष्टुप्। ८, ९ निचृदनुष्टुप्। ६ बृहती। ७ विराट् पङ्क्तिः। १० गायत्री। ११ भुरिक् त्रिष्टुप्॥ स्वरः-१-४ निषादः। ५, ८, ९ गान्धारः। ६ मध्यमः। ७ पञ्चमः। १० षड्जः। ११ धैवतः॥

॥ ६२ ॥ ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृतत्वमानश। तेभ्यो भद्रमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः॥ १ ॥ य उदाजन्पितरो गोमयं वस्वृतेनाभिन्दन्परिवत्सरे वलम्। दीर्घायुत्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः॥ २ ॥ य ऋतेन सूर्यमारोहयन् दिव्यप्रथयन्पृथिवीं मातरं वि। सुप्रजास्त्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः॥३॥ अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे देवपुत्रा ऋषयस्तच्छृणोतन। सुब्रह्मण्यमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः॥४॥ विरूपास इदृषयस्त इद्गम्भीरवेपसः। ते अङ्गिरसः सूनवस्ते अग्नेः परि जज्ञिरे॥ ५ ॥ १ ॥ ये अग्नेः परि जज्ञिरे विरूपासो दिवस्परि। नवग्वो नु दशग्वो अङ्गिरस्तमः सचा देवेषु मंहते॥६॥ इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो व्रजं गोमन्तमश्विनम्। सहस्रं मे ददतो अष्टकर्ण्यः श्रवो देवेष्वक्रत॥७॥ प्र नूनं जायतामयं मनुस्तोक्मेव रोहतु। यः सहस्रं शताश्वं सद्यो दानाय मंहते॥ ८ ॥ न तमश्नोति कश्चन दिव इव सान्वारभम्। सावर्ण्यस्य दक्षिणा वि सिन्धुरिव पप्रथे॥९॥ उत दासा परिविषे स्मद्दिष्टी गोपरीणसा। यदुस्तुर्वश्च मामहे॥ १० ॥ सहस्रदा ग्रामणीर्मा रिषन्मनुः सूर्येणास्य यतमानैतु दक्षिणा। सावर्णेर्देवाः प्र तिरन्त्वायुर्यस्मिन्नश्रान्ता असनाम वाजम्॥११॥२॥

॥ ६३ ॥ ऋषिः-१-१७ गयः प्लातः॥ देवता-१-१४, १७ विश्वेदेवाः। १५, १६ पथ्यास्वस्तिः॥ छन्दः-१, ६, ८, ११-१३ विराड् जगती। २, ३, १०, १४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्। ४, ५, ७ निचृज्जगती। ९ आर्चीस्वराड् जगती। १५ जगती त्रिष्टुब्वा। १६ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप्। १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१—१४ निषादः। १५ निषादो धैवतो वा। १६, १७ धैवतः॥

॥ ६३ ॥ परावतो ये दिधिषन्त आप्यं मनुप्रीतासो जनिमा विवस्वतः। ययातेर्ये नहुष्यस्य बर्हिषि देवा आसते ते अधि ब्रुवन्तु नः॥१॥ विश्वा हि वो नमस्यानि वन्द्या नामानि देवा उत यज्ञियानि वः। ये स्थ जाता अदितेरद्भ्यस्परि ये पृथिव्यास्ते म इह श्रुता हवम्॥ २ ॥ येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं

द्यौरदितिरद्रिबर्हाः । उक्थशुष्मान्वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये
॥ ३ ॥ नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः । ज्योती-
रथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥ ४ ॥ सम्राजो ये सु-
वृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् । ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभि-
र्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ॥ ५ ॥ ३ ॥ को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ
विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन । को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षद-
त्यंहः स्वस्तये ॥ ६ ॥ येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त
होतृभिः । त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥७॥
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः । ते नः कृतादकृतादे-
नसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥ ८ ॥ भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सु-
कृतं दैव्यं जनम् । अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये॥९॥
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् । दैवीं नावं स्वरित्राम-
नागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये॥१०॥४॥ विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं
नो दुरेवाया अभिह्रुतः । सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्व-
स्तये ॥ ११ ॥ अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः । आरे
देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये॥१२॥ अरिष्टः स मर्तो विश्व
एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि । यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि
दुरिता स्वस्तये ॥१३॥ यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥ १४ ॥ स्वस्ति नः
पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति । स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति
राये मरुतो दधातन ॥ १५ ॥ स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाम-
मेति । सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥ १६ ॥ एवा
प्लतेः सूनुरवीवृधद्वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी । ईशानासो नरो अमर्त्ये-
नास्तावि जनो दिव्यो गयेन ॥ १७ ॥ ५ ॥

॥ ६४ ॥ ऋषिः—१-१७ गयः प्लातः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ९, १०, १३, १५ निचृज्जगती । २, ३, ७, ८, ११ विराड् जगती । ६, १४ जगती । १२ त्रिष्टुप् । १६ निचृत्त्रिष्टुप् । १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—११, १३—१५ निषादः । १२, १६, १७ धैवतः ॥

॥ ६४ ॥ कथा देवानां कतमस्य यामनि सुमन्तु नाम शृण्वतां मनामहे
को मृळाति कतमो नो मयस्करत्कतम ऊती अभ्या ववर्तति ॥ १ ॥ क्रतूयन्ति
क्रतवो हृत्सु धीतयो वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः । न मर्डिता विद्यते अन्य
एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत ॥ २ ॥ नरा वा शंसं पूषणमगोह्यमग्निं दे-
वेद्धमभ्यर्चसे गिरा । सूर्यामासा चन्द्रमसा यमं दिवि त्रितं वातमुषसमक्तुमश्विना
॥ ३ ॥ कथा कविस्तुवीरवान्कया गिरा बृहस्पतिर्वावृधते सुवृक्तिभिः । अज ए-
कपात्सुहवेभिर्ऋक्वभिरहिः शृणोतु बुध्न्यो हवीमनि ॥ ४ ॥ दक्षस्य वादिते ज-
न्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि । अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्त-
होता विषुरूपेषु जन्मसु ॥ ५ ॥ ६ ॥ ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृ-
ण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः । सहस्रसा मेधसाताविव त्मना महो ये धनं समिथेषु
जभ्रिरे ॥ ६ ॥ प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं स्तोमैः कृणुध्वं सख्याय पूषणम् । ते
हि देवस्य सवितुः सवीमनि क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः ॥ ७ ॥ त्रिः सप्त
सस्रा नद्यो महीरपो वनस्पतीन्पर्वताँ अग्निमूतये । कृशानुमस्तॄन्तिष्यं सधस्थ-
आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे ॥ ८ ॥ सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीः
रवसा यन्तु वक्षणीः । देवीरापो मातरः सूदयित्न्वो घृतवत्पयो मधुमन्नो अर्चत
॥ ९ ॥ उत माता बृहद्दिवा शृणोतु नस्त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः । ऋ-
भुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगो रण्वः शंसः शशमानस्य पातु नः ॥ १० ॥ ७ ॥ र-
ण्वः सन्दृष्टौ पितुमाँ इव क्षयो भद्रा रुद्राणां मरुतामुपस्तुतिः । गोभिः ष्याम य-
शसो जनेष्वा सदा देवास इळया सचेमहि ॥ ११ ॥ यां मे धियं मरुत इन्द्र देवा
अददात वरुण मित्र यूयम् । तां पीपयत पयसेव धेनुं कुविद्गिरो अधि रथे वहाथ
॥ १२ ॥ कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः सजात्यस्य मरुतो बुबोधथ । नाभा
यत्र प्रथमं सन्नसामहे तत्र जामित्वमदितिर्दधातु नः ॥ १३ ॥ ते हि द्यावापृथिवी
मातरा मही देवी देवाञ्जन्मना यज्ञिये इतः । उभे बिभृत उभयं भरीमभिः पुरू
रेतांसि पितृभिश्च सिञ्चतः ॥ १४ ॥ वि षा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं बृहस्प-
तिररमतिः पनीयसी । ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदवीवशन्त मतिभिर्मनीषिणः ॥ १५ ॥
एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा द्रविणस्युर्द्रविणसश्चकानः । उक्थेभिरत्र मतिभिश्च
विप्रोऽपीपयद्वयो दिव्यानि जन्म ॥ १६ ॥ एवा प्लतेः सूनुरवीवृधद्वो विश्व आदित्या
अदिते मनीषी । ईशानासो नरो अमर्त्येनास्तावि जनो दिव्यो गयेन ॥ १७ ॥ ८ ॥

॥ ६५ ॥ ऋषिः—१–१५ वसुकर्णो वासुक्रः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१,

४, ६, १०, १२, १३ निचृज्जगती । २ पादनिचृज्जगती । ३, ७, ९ विराड्
जगती । ५, ८, ११ जगती । १४ त्रिष्टुप् । १५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–१३
निषादः । १४, १५ धैवतः ॥

॥ ६५ ॥ अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा वायुः पूषा सरस्वती सजो-
षसः । आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत्सोमो रुद्रो अदितिर्ब्रह्मणस्पतिः ॥ १ ॥
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती मिथो हिन्वाना तन्वा३ समोकसा । अन्तरिक्षं मह्या
पप्रुरोजसा सोमो घृतश्रीर्महिमानमीरयन् ॥ २ ॥ तेषां हि मह्ना महतामनर्वणां
स्तोमाँ इयर्म्यृतज्ञा ऋतावृधाम् । ये अप्सवमर्णवं चित्रराधसस्ते नो रासन्तां म-
हये सुमित्र्याः ॥ ३ ॥ स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना द्यावाभूमी पृथिवीं स्कम्भुरो-
जसा । पृक्षा इव महयन्तः सुरातयो देवाः स्तवन्ते मनुषाय सूरयः ॥ ४ ॥ मित्राय
शिक्ष वरुणाय दाशुषे या सम्राजा मनसा न प्रयुच्छतः । ययोर्धाम धर्मणा रोचते
बृहद्ययोरुभे रोदसी नाधसी वृतौ ॥ ५ ॥ ९ ॥ या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतं पयो
दुहाना व्रतनीरवारतः । सा प्रब्रुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्धविषा वि-
वस्वते ॥ ६ ॥ दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृध ऋतस्य योनिं विमृशन्त आसते ।
द्यां स्कभित्व्य१प आ चक्रुरोजसा यज्ञं जनित्वी तन्वी३ नि मामृजुः ॥ ७ ॥
परिक्षिता पितरा पूर्वजावरी ऋतस्य योना क्षयतः समोकसा । द्यावापृथिवी व-
रुणाय सव्रते घृतवत्पयो महिषाय पिन्वतः ॥ ८ ॥ पर्जन्यावाता वृषभा पुरीषि-
णेन्द्रवायू वरुणो मित्रो अर्यमा । देवाँ आदित्याँ अदितिं हवामहे ये पार्थिवासो दि-
व्यासो अप्सु ये ॥ ९ ॥ त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते दैव्या होतारा उषसं स्व-
स्तये । बृहस्पतिं वृत्रखादं सुमेधसमिन्द्रियं सोमं धनसा उ ईमहे ॥ १० ॥ १० ॥
ब्रह्म गामश्वं जनयन्त ओषधीर्वनस्पतीन्पृथिवीं पर्वताँ अपः । सूर्यं दिवि रोहयन्तः
सुदानव आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि ॥ ११ ॥ भुज्युमंहसः पिपृथो निर-
श्विना श्यावं पुत्रं वध्रिमत्या अजिन्वतम् । कमद्युवं विमदायोहथुर्युवं विष्णाप्व१ं
विश्वकायाव सृजथः ॥ १२ ॥ पावीरवी तन्यतुरेकपादजो दिवो धर्ता सिन्धुरापः
समुद्रियः । विश्वे देवासः शृणवन्वचांसि मे सरस्वती सह धीभिः पुरन्ध्या ॥ १३ ॥
विश्वे देवाः सह धीभिः पुरन्ध्या मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः । रातिषाचो अभिषाचः
स्वर्विदः स्व१र्गिरो ब्रह्म सूक्तं जुषेरत ॥ १४ ॥ देवान्वसिष्ठो अमृतान्ववन्दे ये विश्वा
भुवनाभि प्रतस्थुः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १५ ॥ ११ ॥

॥ ६६ ॥ ऋषिः—१—१५ वसुकर्णो वासुक्रः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः-१, ३, ५—७ जगती । २, १०, १२, १३ निचृज्जगती । ४, ८, ११ विराड् जगती । ९ पादनिचृज्जगती । १४ आर्चीस्वराड् जगती । १५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः-१-१४ निषादः । १५ धैवतः ॥

॥ ६६ ॥ देवान्हुवे बृहच्छ्रवसः स्वस्तये ज्योतिष्कृतो अध्वरस्य प्रचेतसः । ये वावृधुः प्रतरं विश्ववेदस इन्द्रज्येष्ठासो अमृता ऋतावृधः ॥ १ ॥ इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा ये सूर्यस्य ज्योतिषो भागमानशुः । मरुद्गणे वृजने मन्म धीमहि माघोने यज्ञं जनयन्त सूरयः ॥ २ ॥ इन्द्रो वसुभिः परि पातु नो गयमादित्यैर्नो अदितिः शर्म यच्छतु । रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति नस्त्वष्टा नो ग्नाभिः सुवितायं जिन्वतु ॥ ३ ॥ अदितिर्द्यावापृथिवी ऋतं महदिन्द्राविष्णू मरुतः स्वर्बृहत् । देवाँ आदित्याँ अवसे हवामहे वसून्रुद्रान्त्सवितारं सुदंससम् ॥ ४ ॥ सरस्वान्धीभिर्वरुणो धृतव्रतः पूषा विष्णुर्महिमा वायुरश्विना । ब्रह्मकृतो अमृता विश्ववेदसः शर्म नो यंसन् त्रिवरूथमंहसः ॥ ५ ॥ १२ ॥ वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञिया वृषणो देवा वृषणो हविष्कृतः । वृषणा द्यावापृथिवी ऋतावरी वृषा पर्जन्यो वृषणो वृषस्तुभः ॥ ६ ॥ अग्नीषोमा वृषणा वाजसातये पुरुप्रशस्ता वृषणा उप ब्रुवे । यावीजिरे वृषणो देवयज्यया ता नः शर्म त्रिवरूथं वि यंसतः ॥ ७ ॥ धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो बृहद्दिवा अध्वराणामभिश्रियः । अग्निहोतार ऋतसापो अद्रुहोऽपो असृजन्नन्नु वृत्रतूर्ये ॥ ८ ॥ द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रताप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया । अन्तरिक्षं स्व१रा पप्रुरूतये वशं देवासस्तन्वी३नि मामृजुः ॥ ९ ॥ धर्तारो दिव ऋभवः सुहस्ता वातापर्जन्या महिषस्य तन्यतोः । आप ओषधीः प्र तिरन्तु नो गिरो भगो रातिर्वाजिनो यन्तु मे हवम् ॥ १० ॥ १३ ॥ समुद्रः सिन्धू रजो अन्तरिक्षमज एकपात्तनयित्नुरर्णवः । अहिर्बुध्न्यः शृणवद्वचांसि मे विश्वे देवास उत सूरयो मम ॥ ११ ॥ स्याम वो मनवो देववीतये प्राञ्चं नो यज्ञं प्रणयत साधुया । आदित्या रुद्रा वसवः सुदानव इमा ब्रह्म शस्यमानानि जिन्वत ॥ १२ ॥ दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया । क्षेत्रस्य पतिं प्रतिवेशमीमहे विश्वान्देवाँ अमृताँ अप्रयुच्छतः ॥ १३ ॥ वसिष्ठासः पितृवद्वाचमक्रत देवाँ ईळाना ऋषिवत्स्वस्तये । प्रीता इव ज्ञातयः काममेत्यास्मे देवासोऽव धूनुता वसु ॥ १४ ॥ देवान्वसिष्ठो अमृतान्ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १५ ॥ १४ ॥

॥ ६७ ॥ ऋषिः—१—१२ अयास्यः ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ छन्दः—१ विराट् त्रिष्टुप् । २–७, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ८–१०, १२ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६७ ॥ इमां धियं सप्तशीर्ष्णीं पिता न ऋतप्रजातां बृहतीमविन्दत् । तुरीयं स्विज्जनयद्विश्वजन्योऽयास्य उक्थमिन्द्राय शंसन् ॥ १ ॥ ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः । विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त ॥ २ ॥ हंसैरिव सखिभिर्वावदद्भिरश्मन्मयानि नहना व्यस्यन् । बृहस्पतिरभिकनिक्रदद्गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वाँ अगायत् ॥ ३ ॥ अवो द्वाभ्यां पर एकया गा गुहा तिष्ठन्तीरनृतस्य सेतौ । बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिच्छन्नुदुस्रा आकर्वि हि तिस्र आवः ॥ ४ ॥ विभिद्या पुरं शयथेमपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत् । बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्निव द्यौः ॥५॥ इन्द्रो वलं रक्षितारं दुघानां करेणेव वि चकर्ता रवेण । स्वेदाञ्जिभिराशिरमिच्छमानोऽरोदयत्पणिमा गा अमुष्णात् ॥ ६ ॥ १५ ॥ स ईं सत्येभिः सखिभिः शुचद्भिर्गोधायसं वि धनसैरदर्दः । ब्रह्मणस्पतिर्वृषभिर्वराहैर्घर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानट् ॥ ७ ॥ ते सत्येन मनसा गोपतिं गा इयानास इषणयन्त धीभिः । बृहस्पतिर्मिथोअवद्यपेभिरुदुस्रिया असृजत स्वयुग्भिः ॥ ८ ॥ तं वर्धयन्तो मतिभिः शिवाभिः सिंहमिव नानदतं सधस्थे । बृहस्पतिं वृषणं शूरसातौ भरेभरे अनु मदेम जिष्णुम् ॥ ९ ॥ यदा वाजमसनद्विश्वरूपमा द्यामरुक्षदुत्तराणि सद्म । बृहस्पतिं वृषणं वर्धयन्तो नाना सन्तो बिभ्रतो ज्योतिरासा ॥ १० ॥ सत्यामाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्ध्यवथ स्वेभिरेवैः । पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद्रोदसी शृणुतं विश्वमिन्वे ॥ ११ ॥ इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य वि मूर्धानमभिनदर्बुदस्य । अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धून्देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ॥१२॥१६॥

॥ ६८ ॥ ऋषिः—१—१२ अयास्यः ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ छन्दः—१, १२ विराट् त्रिष्टुप् । २, ८—११ त्रिष्टुप् । ३–७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६८ ॥ उदप्रुतो न वयो रक्षमाणा वावदतो अभ्रियस्येव घोषाः । गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तो बृहस्पतिमभ्यर्का अनावन् ॥ १ ॥ सं गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणो भग इवेदर्यमणं निनाय । जने मित्रो न दम्पती अनक्ति बृहस्पते वाजयाशूँरिवाजौ ॥ २ ॥ साध्वर्या अतिथिनीरिषिराः स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः । बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः ॥ ३ ॥ आ-

प्रुषायन्मधुन ऋतस्य योनिमवक्षिपन्नर्क उल्कामिव द्योः। बृहस्पतिरुद्धरन्नश्मनो गा भूम्या उद्नेव वि त्वचं बिभेद ॥ ४ ॥ अप ज्योतिषा तमो अन्तरिक्षादुद्नः शीपालमिव वात आजत्। बृहस्पतिरनुमृश्या वलस्याभ्रमिव वात आ चक्र आ गाः ॥ ५ ॥ यदा वलस्य पीयतो जसुं भेद्बृहस्पतिरग्नितपोभिरर्कैः। दद्भिर्न जिह्वा परिविष्टमाददाविर्निधीरँकृणोदुस्रियाणाम् ॥ ६ ॥ १७ ॥ बृहस्पतिरमत हि त्यदासां नाम स्वरीणां सदने गुहा यत्। आण्डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भमुदुस्रियाः पर्वतस्य त्मनाजत् ॥ ७ ॥ अश्नापिनद्धं मधु पर्यपश्यन्मत्स्यं न दीन उदनि क्षियन्तम्। निष्टज्जभार चमसं न वृक्षाद्बृहस्पतिर्विरवेणा विकृत्य ॥ ८ ॥ सोषामविन्दत्स स्वः सो अग्निं सो अर्केण वि बबाधे तमांसि। बृहस्पतिर्गोवपुषो वलस्य निर्मज्जानं न पर्वणो जभार ॥९॥ हिमेव पर्णा मुषिता वनानि बृहस्पतिनाकृपयद्वलो गाः। अनानुकृत्यमपुनश्चकार यात्सूर्यामासा मिथ उच्चरातः ॥ १०॥ अभि श्यावं न कृशनेभिरश्वं नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन्। रात्र्यां तमो अदधुर्ज्योतिरहन्बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद्गाः ॥ ११ ॥ इदमकर्म नमो अभ्रियाय यः पूर्वीरन्वानोनवीति। बृहस्पतिः स हि गोभिः सो अश्वैः स वीरेभिः सनृभिर्नो वयो धात् ॥ १२ ॥ १८ ॥ ५ ॥

॥ ६९ ॥ ऋषिः—१–१२ सुमित्रो वाध्र्यश्वः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती। २ विराड् जगती। ३, ७ त्रिष्टुप्। ४, ५, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप्। ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप्। ९, ११ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ६९ ॥ भद्रा अग्नेर्वध्र्यश्वस्य सन्दृशो वामी प्रणीतिः सुरणा उपेतयः। यदीं सुमित्रा विशो अग्र इन्धते घृतेनाहुतो जरते दविद्युतत् ॥ १ ॥ घृतमग्नेर्वध्र्यश्वस्य वर्धनं घृतमन्नं घृतम्वस्य मेदनम्। घृतेनाहुत उर्विया वि पप्रथे सूर्य इव रोचते सर्पिरासुतिः ॥ २ ॥ यत्ते मनुर्यदनीकं सुमित्रः समीधे अग्ने तदिदं नवीयः। स रेवच्छोच स गिरो जुषस्व स वाजं दर्षि स इह श्रवो धाः ॥ ३ ॥ यं त्वा पूर्वमीळितो वध्र्यश्वः समीधे अग्ने स इदं जुषस्व। स नः स्तिपा उत भवा तनूपा दात्रं रक्षस्व यदिदं ते अस्मे ॥ ४ ॥ भवा द्युम्नी वाध्र्यश्वोत गोपा मा त्वा तारीदभिमातिर्जनानाम्। शूर इव धृष्णुश्च्यवनः सुमित्रः प्र नु वोचं वाध्र्यश्वस्य नाम ॥५॥ समज्र्या पर्वत्या वसूनि दासा वृत्राण्यार्या जिगेथ। शूर इव धृष्णुश्च्यवनो जनानां त्वमग्ने पृतनायूँरभि ष्याः ॥ ६ ॥ १९ ॥ दीर्घ

तन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभ्वा। द्युमान् द्युमत्सु नृभिर्मृज्यमानः सुमित्रेषु दीदयो देवयत्सु ॥ ७ ॥ त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदोऽसश्चतेव समना सबर्धुक्। त्वं नृभिर्दक्षिणावद्भिरग्ने सुमित्रेभिरिध्यसे देवयद्भिः ॥८ ॥ देवाश्चित्ते अमृता जातवेदो महिमानं वाध्र्यश्व प्र वोचन्। यत्सम्पृच्छं मानुषीर्विश आयन्त्वं नृभिरजयस्त्वावृधेभिः ॥ ९ ॥ पितेव पुत्रमबिभरुपस्थे त्वामग्ने वध्र्यश्वः सपर्यन्। जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठोत पूर्वाँ अवनोर्व्राधतश्चित् ॥ १० ॥ शश्वदग्निर्वध्र्यश्वस्य शत्रून्नृभिर्जिगाय सुतसोमवद्भिः। समनं चिददहश्चित्रभानोऽव व्राधन्तमभिनद्वृधश्चित् ॥११॥ अयमग्निर्वध्र्यश्वस्य वृत्रहा सनकात्प्रेद्धो नमसोपवाक्यः। स नो अजामीँरुत वा विजामीनभि तिष्ठ शर्धतो वाध्र्यश्व ॥ १२ ॥ २० ॥

॥ ७० ॥ ऋषिः–१–११ सुमित्रो वाध्र्यश्वः ॥ आप्रं देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, १० निचृत्त्रिष्टुप्। ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्। ५–७,९,११ त्रिष्टुप्। ८ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७० ॥ इमां मे अग्ने समिधं जुषस्वेळस्पदे प्रति हर्या घृताचीम्। वर्ष्मन्पृथिव्याः सुदिनत्वे अह्नामूर्ध्वो भव सुक्रतो देवयज्या ॥ १ ॥ आ देवानामग्रयावेह यातु नराशंसो विश्वरूपेभिरश्वैः। ऋतस्य पथा नमसा मियेधो देवेभ्यो देवतमः सुषूदत् ॥ २ ॥ शश्वत्तममीळते दूत्याय हविष्मन्तो मनुष्यासो अग्निम्। वहिष्ठैरश्वैः सुवृता रथेना देवान्वक्षि नि षदेह होता ॥ ३ ॥ वि प्रथतां देवजुष्टं तिरश्चा दीर्घं द्राघ्मा सुरभि भूत्वस्मे। अहेळता मनसा देव बर्हिरिन्द्रज्येष्ठाँ उशतो यक्षि देवान् ॥ ४ ॥ दिवो वा सानु स्पृशता वरीयः पृथिव्या वा मात्रया वि श्रयध्वम्। उशतीर्द्वारो महिना महद्भिर्देवं रथं रथयुर्धारयध्वम् ॥ ५ ॥ २१ ॥ देवी दिवो दुहितरा सुशिल्पे उषासानक्ता सदतां नि योनौ। आ वां देवास उशती उशन्त उरौ सीदन्तु सुभगे उपस्थे ॥ ६ ॥ ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः समिद्धः प्रिया धामान्यदितेरुपस्थे। पुरोहितावृत्विजा यज्ञे अस्मिन् विदुष्टरा द्रविणमा यजेथाम् ॥ ७ ॥ तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं वरीय आ सीदत चकृमा वः स्योनम्। मनुष्वद्यज्ञं सुधिता हवींषीळा देवी घृतपदी जुषन्त ॥८॥ देव त्वष्टर्यद्ध चारुत्वमानड्यदङ्गिरसामभवः सचाभूः। स देवानां पाथ उप प्र विद्वानुशन्यक्षि द्रविणोदः सुरत्नः ॥ ९ ॥ वनस्पते रशनया नियूया देवानां पाथ उप वक्षि विद्वान्। स्वदाति देवः कृणवद्धवींष्यवतां द्यावापृथिवी हवं मे ॥ १० ॥ अग्ने वह वरुणमिष्टये न इन्द्रं

दिवो मरुतोऽन्तरिक्षात् । सीदन्तु बर्हिर्विश्व आ यजत्राः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥ ११ ॥ २२ ॥

॥ ७१ ॥ ऋषिः—१–११ बृहस्पतिः ॥ देवता—ज्ञानम् ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २ भुरिक् त्रिष्टुप् । ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ५, ६, ८, १०, ११ विराट् त्रिष्टुप् । ९ विराड् जगती ॥ स्वरः—१–८, १०, ११ धैवतः । ९ निषादः ॥

॥ ७१ ॥ बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः । यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः ॥१॥ सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत । अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥ २ ॥ यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम् । तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते ॥३॥ उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम् । उतो त्वस्मै तन्वं१ वि सस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥ ४ ॥ उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु । अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम् ॥ ५ ॥ २३ ॥ यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति । यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् ॥ ६ ॥ अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः । आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ॥ ७ ॥ हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद्ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः । अत्राह त्वं वि जहुर्वेद्याभिरोहब्रह्माणो वि चरन्त्यु त्वे ॥ ८ ॥ इमे ये नार्वाङ्न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः । त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः ॥ ९ ॥ सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः । किल्बिषस्पृत्पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय ॥ १० ॥ ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु । ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उ त्वः ॥ ११ ॥ २४ ॥ २ ॥

॥७२॥ ऋषिः—१–९ बृहस्पतिर्बृहस्पतिर्वा लौक्य अदितिर्वा दाक्षायणी ॥ देवा देवताः ॥ छन्दः—१, ४, ६ अनुष्टुप् । २ पादनिचृदनुष्टुप् । ३, ५, ७ निचृदनुष्टुप् । ८, ९ विराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ७२ ॥ देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया । उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तरे युगे ॥ १ ॥ ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत् । देवानां

पूर्व्ये युगेऽसतः सदजायत ॥ २ ॥ देवानां युगे प्रथमेऽसतः सदजायत । तदाशा अन्वजायन्त तदुत्तानपदस्परि ॥ ३ ॥ भूर्जज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त । अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद्वदितिः परि ॥ ४ ॥ अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥ ५ ॥ १ ॥ यद्देवा अदः सलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत । अत्रा वो नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरपायत ॥ ६ ॥ यद्देवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत । अत्रा समुद्र आ गूळ्हमा सूर्यमजभर्तन ॥ ७ ॥ अष्टौ पुत्रासो अदितेर्ये जातास्तन्व१स्परि । देवाँ उप प्रैत्सप्तभिः परा मार्ताण्डमास्यत् ॥ ८ ॥ सप्तभिः पुत्रैरदितिरुप प्रैत्पूर्व्यं युगम् । प्रजायै मृत्यवे त्वत्पुनर्मार्ताण्डमाभरत् ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ ७३ ॥ ऋषिः—१—११ गौरिवीतिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ५ त्रिष्टुप् । ३, ४, ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ६ विराट् त्रिष्टुप् । ७ आर्ची स्वराट् त्रिष्टुप् । ९ आर्चीभुरिक् त्रिष्टुप् । ११ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७३ ॥ जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः । अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्धनिष्ठा ॥ १ ॥ द्रुहो निषत्ता पृशनी चिदेवैः पुरू शंसेन वावृधुष्ट इन्द्रम् । अभीवृतेव ता महापदेन ध्वान्तात्प्रपित्वादुदरन्त गर्भाः ॥ २ ॥ ऋष्वा ते पादा प्र यज्जिगास्यवर्धन्वाजा उत ये चिदत्र । त्वमिन्द्र सालावृकान्त्सहस्रमासन्दधिषे अश्विना ववृत्याः ॥ ३ ॥ समना तूर्णिरुप यासि यज्ञमा नासत्या सख्याय वक्षि । वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्राश्विना शूर ददतुर्मघानि ॥ ४ ॥ मन्दमान ऋतादधि प्रजायै सखिभिरिन्द्र इषिरेभिरर्थम् । आभिर्हि माया उप दस्युमागान्मिहः प्र तम्रा अवपत्तमांसि ॥ ५ ॥ ३ ॥ सनामाना चिद्ध्वसयो न्यस्मा अवाहन्निन्द्र उषसो यथानः । ऋष्वैरगच्छः सखिभिर्निकामैः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ ॥ ६ ॥ त्वं जघन्थ नमुचिं मखस्युं दासं कृण्वान ऋषये विमायम् । त्वं चकर्थ मनवे स्योनान्पथो देवत्राञ्जसेव यानान् ॥ ७ ॥ त्वमेतानि पप्रिषे वि नामेशान इन्द्र दधिषे गभस्तौ । अनु त्वा देवाः शवसा मदन्त्युपरिबुध्नान्वनिनश्चकर्थ ॥ ८ ॥ चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् । पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥ ९ ॥ अश्वादियायेति यद्वदन्त्योजसो जातमुत मन्य एनम् । मन्योरियाय हर्म्येषु तस्थौ यतः प्रजज्ञ इन्द्रो अस्य वेद ॥ १० ॥ वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः । अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्य१स्मान्निधयेव बद्धान् ॥ ११ ॥ ४ ॥

॥ ७४ ॥ ऋषिः—१—६ गौरिवीतिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ३ आर्चीभुरिक् त्रिष्टुप् । ६ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७४ ॥ वसूनां वा चर्कृष इयक्षन्धिया वा यज्ञैर्वा रोदस्योः । अर्वन्तो वा ये रयिमन्तः सातौ वनुं वा ये सुश्रुणं सुश्रुतो धुः ॥ १ ॥ हव एषामसुरो नक्षत द्यां श्रवस्यता मनसा निंसत क्षाम् । चक्षाणा यत्र सुविताय देवा द्यौर्न वारेभिः कृणवन्त स्वैः ॥ २ ॥ इयमेषाममृतानां गीः सर्वताता ये कृपणन्त रत्नम् । धियं च यज्ञं च साधन्तस्ते नो धान्तु वसव्यमसामि ॥ ३ ॥ आ तत्त इन्द्रायवः पनन्ताभि य ऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान् । सकृत्स्वं१ये पुरुपुत्रां महीं सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन् ॥ ४ ॥ शचीव इन्द्रमवसे कृणुध्वमनानतं दमयन्तं पृतन्यून् । ऋभुक्षणं मघवानं सुवृक्तिं भर्ता यो वज्रं नर्यं पुरुक्षुः ॥ ५ ॥ यद्वावान पुरुतमं पुराषाळा वृत्रहेन्द्रो नामान्यप्राः । अचेति प्रासहस्पतिस्तुविष्मान्यदीमुश्मसि कर्तवे करत्तत् ॥ ६ ॥ ९ ॥

॥ ७५ ॥ ऋषिः—१—९ सिन्धुक्षित्प्रैयमेधः ॥ नद्यो देवताः ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती । २, ३ विराड्जगती । ४ जगती । ५, ७ आर्चीस्वराड् जगती । ६ आर्चीभुरिग् जगती । ८, ९ पादनिचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७५ ॥ प्र सु व आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः । प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वरीणामति सिन्धुरोजसा ॥ १ ॥ प्र तेऽरदद्वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद्वाजाँ अभ्यद्रवस्त्वम् । भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदेषामग्रं जगतामिरज्यसि ॥ २ ॥ दिवि स्वनो यतते भूम्योपर्यनन्तं शुष्ममुदियर्ति भानुना । अभ्रादिव प्र स्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत् ॥ ३ ॥ अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः । राजेव युध्वा नयसि त्वमित्सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि ॥ ४ ॥ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या । असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥ ५ ॥ ६ ॥ तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या त्या । त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्न्वा सरथं याभिरीयसे ॥ ६ ॥ ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि ज्रयांसि भरते रजांसि । अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता ॥ ७ ॥ स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती । ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि

वस्ते सुभगा मधुवृधम् ॥ ८ ॥ सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषद-स्मिन्नाजौ । महान्ह्यस्य महिमा पनस्यतेऽदब्धस्य स्वयशसो विरप्शिनः ॥ ९ ॥ ७ ॥

॥ ७६ ॥ ऋषिः—१—८ जरत्कर्ण ऐरावतः सर्पः ॥ ग्रावाणो देवताः ॥ छन्दः—१, ६, ८ पादनिचृज्जगती । २, ३ आर्चीस्वराड् जगती । ४, ७ निचृज्जगती । ५, आसुरीस्वराडार्चीनिचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ७६ ॥ आ व ऋञ्जस ऊर्जां व्युष्टिष्विन्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन । उभे यथा नो अहनी सचाभुवा सदः सदो वरिवस्यात उद्भिदा ॥ १ ॥ तदु श्रेष्ठं सवनं सुनोतनात्यो न हस्तयतो अद्रिः सोतरि । विदद्ध्यर्यो अभिभूति पौंस्यं महो राये चित्तरुते यदर्वतः ॥ २ ॥ तदिद्ध्यस्य सवनं विवेरपो यथा पुरा मनवे गातुमश्रेत् । गोअर्णसि त्वाष्ट्रे अश्वनिर्णिजि प्रेमध्वरेष्वध्वराँ अशिश्रयुः ॥ ३ ॥ अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः स्कभायत निर्ऋतिं सेधतामतिम् । आ नो रयिं सर्ववीरं सुनोतन देवाव्यं भरत श्लोकमद्रयः ॥ ४ ॥ दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो विभ्वना चिदाश्वपस्तरेभ्यः । वायोश्चिदा सोमरभस्तरेभ्योऽग्नेश्चिदर्च पितुकृत्तरेभ्यः ॥ ५ ॥ ८ ॥ भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो ग्रावाणो वाचा दिविता दिवित्मता । नरो यत्र दुहते काम्यं मध्वाघोषयन्तो अभितो मिथस्तुरः ॥६॥ सुन्वन्ति सोमं रथिरासो अद्रयो निरस्य रसं गविषो दुहन्ति ते । दुहन्त्यूधरुपसेचनाय कं नरो हव्या न मर्जयन्त आसभिः ॥ ७ ॥ एते नरः स्वपसो अभूतन य इन्द्राय सुनुथ सोममद्रयः । वामंवामं वो दिव्याय धाम्ने वसुवसु वः पार्थिवाय सुन्वते ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ ७७ ॥ ऋषिः-१-८ स्यूमरश्मिर्भार्गवः॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः-१, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ४ त्रिष्टुप् । ६-८ विराट् त्रिष्टुप् । ५ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः-१-४, ६-८ धैवतः । ५ निषादः ॥

॥ ७७ ॥ अभ्रप्रुषो न वाचा प्रुषा वसु हविष्मन्तो न यज्ञा विजानुषः । सुमारुतं न ब्रह्माणमर्हसे गणमस्तोष्येषां न शोभसे ॥ १ ॥ श्रिये मर्यासो अञ्जीँरकृण्वत सुमारुतं न पूर्वीरति क्षपः । दिवस्पुत्रास एता न येतिर आदित्यासस्ते अक्रा न वावृधुः ॥ २ ॥ प्र ये दिवः पृथिव्या न बर्हणा त्मना रिरिच्रे अभ्रान्न

सूर्यः । पाजस्वन्तो न वीराः पनस्यवो रिशादसो न मर्या अभिद्यवः ॥ ३ ॥
युष्माकं बुध्ने अपां न यामनि विथुर्यति न मही श्रथर्यति । विश्वप्सुर्यज्ञो अर्वागयं सु वः प्रयस्वन्तो न सत्राच आ गत ॥ ४ ॥ यूयं धूर्षु प्रयुजो न रश्मिभिर्ज्योतिष्मन्तो न भासा व्युष्टिषु । श्येनासो न स्वयशसो रिशादसः प्रवासो न प्रसितासः परिप्रुषः ॥ ५ ॥ १० ॥ प्र यद्वहध्वे मरुतः पराकाद्यूयं महः संवरणस्य वस्वः । विदानासो वसवो राध्यस्याराच्चिद्द्वेषः सनुतर्युयोत ॥ ६ ॥ य उदृचि यज्ञे अध्वरेष्ठा मरुद्भ्यो न मानुषो ददाशत् । रेवत्स वयो दधते सुवीरं स देवानामपि गोपीथे अस्तु ॥ ७ ॥ ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमा आदित्येन नाम्ना शम्भविष्ठाः । ते नोऽवन्तु रथतूर्मनीषां महश्च यामन्नध्वरे चकानाः ॥ ८ ॥ ११ ॥

॥ ७८ ॥ ऋषिः—१—८ स्यूमरश्मिर्भार्गवः ॥ मरुतो देवता ॥ छन्दः—१ आर्चीत्रिष्टुप् । ३, ४ विराट्त्रिष्टुप् । ८ त्रिष्टुप् । २, ५, ६ विराड् जगती । ७ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१, ३, ४, ८ धैवतः । २, ५—७ निषादः ॥

॥ ७८ ॥ विप्रासो न मन्मभिः स्वाध्यो देवाव्योऽन यज्ञैः स्वप्नसः । राजानो न चित्राः सुसन्दृशः क्षितीनां न मर्या अरेपसः ॥ १ ॥ अग्निर्न ये भ्राजसा रुक्मवक्षसो वातासो न स्वयुजः सद्यऊतयः । प्रज्ञातारो न ज्येष्ठाः सुनीतयः सुशर्माणो न सोमा ऋतं यते ॥ २ ॥ वातासो न ये धुनयो जिगत्नवोऽग्नीनां न जिह्वा विरोकिणः । वर्मण्वन्तो न योधाः शिमीवन्तः पितॄणां न शंसाः सुरातयः ॥ ३ ॥ रथानां न येऽराः सनाभयो जिगीवांसो न शूरा अभिद्यवः । वरेयवो न मर्या घृतप्रुषोऽभिस्वर्तारो अर्कं न सुष्टुभः ॥ ४ ॥ अश्वासो न ये ज्येष्ठास आशवो दिधिषवो न रथ्यः सुदानवः । आपो न निम्नैरुदभिर्जिगत्नवो विश्वरूपा अङ्गिरसो न सामभिः ॥ ५ ॥ १२ ॥ ग्रावाणो न सूरयः सिन्धुमातर आदर्दिरासो अद्रयो न विश्वहा । शिशूला न क्रीळयः सुमातरो महाग्रामो न यामन्नुत त्विषा ॥ ६ ॥ उषसां न केतवोऽध्वरश्रियः शुभंयवो नाञ्जिभिर्व्यश्वितन् । सिन्धवो न ययियो भ्राजदृष्टयः परावतो न योजनानि ममिरे ॥ ७ ॥ सुभागान्नो देवाः कृणुता सुरत्नानस्मान्त्स्तोतॄन्मरुतो वावृधानाः । अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गात सनाद्धि वो रत्नधेयानि सन्ति ॥ ८ ॥ १३ ॥

॥ ७९ ॥ ऋषिः—१—७ अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा सप्तिर्वा वाजम्भरः ॥

अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २, ४, ६ विराट् त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । ७ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ७९ ॥ अपश्यमस्य महतो महित्वममर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु । नाना हनू विभृते सं भरेते असिन्वती बप्सती भूर्यत्तः ॥ १ ॥ गुहा शिरो निहितमृधगक्षी असिन्वन्नत्ति जिह्वया वनानि । अत्राण्यस्मै पड्भिः सम् भरन्त्युत्तानहस्ता नमसाधि विक्षु ॥ २ ॥ प्र मातुः प्रतरं गुह्यमिच्छन्कुमारो न वीरुधः सर्पदुर्वीः । ससं न पक्वमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः ॥ ३ ॥ तद्वामृतं रोदसी प्र ब्रवीमि जायमानो मातरा गर्भो अत्ति । नाहं देवस्य मर्त्यश्चिकेताग्निरङ्ग विचेताः स प्रचेताः ॥४॥ यो अस्मा अन्नं तृष्वा३दधात्याज्यैर्घृतैर्जुहोति पुष्यति । तस्मै सहस्रमक्षभिर्वि चक्षेऽग्ने विश्वतः प्रत्यङ्ङसि त्वम् ॥ ५॥ किं देवेषु त्यज एनश्चकर्थाग्ने पृच्छामि नु त्वामविद्वान् । अक्रीळन्क्रीळन्हरिरत्तवेऽदन्वि पर्वशश्चकर्त गामिवासिः ॥ ६ ॥ विषूचो अश्वान्युयुजे वनेजा ऋजीतिभी रशनाभिर्गृभीतान् । चक्षदे मित्रो वसुभिः सुजातः समानृधे पर्वभिर्वावृधानः ॥ ७ ॥ १४ ॥

॥८०॥ ऋषिः—१–७ अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ५, ६ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८० ॥ अग्निः सप्तिं वाजम्भरं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम् । अग्नी रोदसी वि चरत्समञ्जन्नग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरन्धिम् ॥ १ ॥ अग्नेरप्नसः समिदस्तु भद्राग्निर्मही रोदसी आ विवेश । अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि ॥ २ ॥ अग्निर्ह त्यं जरतः कर्णमावाग्निरद्भ्यो निरदहज्जरूथम् । अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदन्तरग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत्सम् ॥ ३ ॥ अग्निर्दाद्द्रविणं वीरपेशा अग्निरृषिं यः सहस्रा सनोति । अग्निर्दिवि हव्यमा ततानाग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा ॥ ४ ॥ अग्निमुक्थैरृषयो वि ह्वयन्तेऽग्निं नरो यामनि बाधितासः । अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तोऽग्निः सहस्रा परि याति गोनाम् ॥ ५ ॥ अग्निं विश ईळते मानुषीर्या अग्निं मनुषो नहुषो वि जाताः । अग्निर्गान्धर्वीं पथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता ॥ ६ ॥ अग्नये ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुरग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम् । अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठाग्ने महि द्रविणमा यजस्व ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ ८१ ॥ ऋषिः—१–७ विश्वकर्मा भौवनः ॥ विश्वकर्मा देवता ॥ छन्दः—१, ५, ६ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८१ ॥ य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वदृषिर्होता न्यसीदत्पिता नः । स आ
शिषा द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छदवराँ आ विवेश ॥ १ ॥ किं स्विदासीदधि
ष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथासीत् । यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णो
न्महिना विश्वचक्षाः ॥ २ ॥ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत वि
श्वतस्पात् । सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥ ३ ॥ किं
स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः । मनीषिणो मनसा
पृच्छतेदु तद्यदध्यतिष्ठद्भुवनानि धारयन् ॥ ४ ॥ या ते धामानि परमाणि याव
मा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा । शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व
तन्वं वृधानः ॥ ५ ॥ विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम् ।
मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥ ६ ॥ वाचस्पतिं विश्वक-
र्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम । स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भू
रवसे साधुकर्मा ॥ ७ ॥ १६ ॥

॥ ८२ ॥ ऋषिः—१—७ विश्वकर्मा भौवनः ॥ विश्वकर्मा देवता ॥ छन्दः—
१, ५, ६ त्रिष्टुप् । २, ४ भुरिक् त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ।
धैवतः स्वरः ॥

॥ ८२ ॥ चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमेने अजनन्नम्नमाने । यदेद
न्ता अददृहन्त पूर्व आदिद्द्यावापृथिवी अप्रथेताम् ॥ १ ॥ विश्वकर्मा विमना आ
द्विहाया धाता विधाता परमोत सन्दृक् । तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्त
ऋषीन्पर एकमाहुः ॥ २ ॥ यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुव
नानि विश्वा । यो देवानां नामधा एक एव तं सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥ ३ ॥
त आयजन्त द्रविणं समस्मा ऋषयः पूर्वे जरितारो न भूना । असूर्ते सूर्ते रजसि
निषत्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि ॥ ४ ॥ परो दिवा पर एना पृथिव्या परो
देवेभिरसुरैर्यदस्ति । कं स्विद्गर्भं प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समपश्यन्त विश्वे
॥५॥ तमिद्गर्भं प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे । अजस्य नाभावध्ये
कमर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥ ६ ॥ न तं विदाथ य इमा जजाना
न्यद्युष्माकमन्तरं बभूव । नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्च
रन्ति ॥ ७ ॥ १७ ॥

॥ ८३ ॥ ऋषिः—१—७ मन्युस्तापसः ॥ मन्युर्देवता ॥ छन्दः—१ विरा

जगती । २ त्रिष्टुप् । ३, ६ विराट् त्रिष्टुप् । ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ निषादः । २—७ धैवतः ॥

॥ ८३ ॥ यस्ते॑ म॒न्योऽवि॑धद्वज्र सायक॒ सह॒ ओजः॑ पुष्यति॒ विश्व॑मानु॒षक् । सा॒ह्याम॒ दास॒मार्यं॒ त्वया॑ यु॒जा सह॑स्कृतेन॒ सह॑सा॒ सह॑स्वता ॥ १ ॥ म॒न्युरिन्द्रो॑ म॒न्युरे॒वास॑ दे॒वो म॒न्युर्होता॒ वरु॑णो जा॒तवे॑दाः । म॒न्युं विश॑ ईळते॒ मानु॑षी॒र्याः पा॒हि नो॑ मन्यो॒ तप॑सा स॒जोषाः॑ ॥ २ ॥ अ॒भी॑हि मन्यो त॒वस॒स्तवी॑या॒न्तप॑सा यु॒जा वि ज॑हि॒ शत्रू॑न् । अ॒मि॒त्र॒हा वृ॑त्र॒हा द॑स्यु॒हा च॒ विश्वा॒ वसू॒न्या भ॑रा॒ त्वं नः॑ ॥ ३ ॥ त्वं हि म॑न्यो अ॒भिभू॑त्योजाः स्वय॒म्भूर्भामो॑ अभिमातिषा॒हः । वि॒श्वच॑र्षणिः॒ सहु॑रिः॒ सहा॑वान॒स्मास्वोज॒ः पृत॑नासु धेहि ॥ ४ ॥ अ॒भा॒गः सन्नप॒ परे॑तो अस्मि॒ तव॒ क्रत्वा॑ तवि॒षस्य॑ प्रचेतः । तं त्वा॑ मन्यो अक्र॒तुर्जि॑हीळा॒हं स्वा त॒नूर्ब॑ल॒देया॑य॒ मेहि॑ ॥ ५ ॥ अ॒यं ते॑ अ॒स्म्युप॒ मेह्य॒र्वाङ् प्र॑तीची॒नः स॑हुरे विश्वधायः । मन्यो॑ वज्रिन्न॒भि मामा व॑वृत्स्व॒ हना॑व॒ दस्यूँ॑रु॒त बो॑ध्या॒पेः ॥ ६ ॥ अ॒भि प्रेहि॑ दक्षिण॒तो भ॑वा॒ मेऽधा॑ वृ॒त्राणि॑ जङ्घनाव॒ भूरि॑ । जु॒होमि॑ ते ध॒रुणं॒ मध्वो॒ अग्र॑मु॒भा उ॑पां॒शु प्र॑थ॒मा पि॑बाव ॥ ७ ॥ १८ ॥

॥ ८४ ॥ ऋषिः—१—७ मन्युस्तापसः ॥ मन्युर्देवता ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप् । २ भुरिक् त्रिष्टुप् । ४, ५ पादनिचृज्जगती । ६ आर्चीस्वराड् जगती । ७ विराड् जगती ॥ स्वरः—१—३ धैवतः । ४—७ निषादः ॥

॥ ८४ ॥ त्वया॑ मन्यो स॒रथ॑मारु॒जन्तो॒ हर्ष॑माणासो धृषि॒ता म॑रुत्वः । ति॒ग्मेष॑व॒ आयु॑धा सं॒शिशा॑ना अ॒भि प्र य॑न्तु॒ नरो॑ अ॒ग्निरू॑पाः ॥ १ ॥ अ॒ग्निरि॑व मन्यो त्विषि॒तः स॑हस्व सेना॒नीर्नः॑ सहुरे हू॒त ए॑धि । ह॒त्वाय॒ शत्रू॒न्वि भ॑जस्व॒ वेद॒ ओजो॒ मिमा॑नो॒ वि मृधो॑ नुदस्व ॥ २ ॥ सह॑स्व मन्यो अ॒भिमा॑तिम॒स्मे रु॒जन्मृ॒णन्प्र॑मृ॒णन्प्रेहि॒ शत्रू॑न् । उ॒ग्रं ते॒ पाजो॑ न॒न्वा रु॑रुध्रे व॒शी वशं॑ नयस एकज॒ त्वम् ॥ ३ ॥ एको॑ बहू॒नाम॑सि मन्यवीळि॒तो विशं॑विशं यु॒धये॒ सं शि॑शाधि । अकृ॑त्तरु॒क्त्वया॑ यु॒जा व॒यं द्यु॒मन्तं॒ घोषं॑ विज॒याय॑ कृण्महे ॥ ४ ॥ वि॒जे॒ष॒कृदिन्द्र॑ इवानवब्र॒वो॒३॑ऽस्माकं॑ मन्यो अधि॒पा भ॑वे॒ह । प्रि॒यं ते॒ नाम॑ सहुरे गृणीमसि वि॒द्मा तमुत्सं॒ यत॑ आब॒भूथ॑ ॥ ५ ॥ आभू॑त्या सह॒जा व॑ज्र सायक॒ सहो॑ बिभर्ष्यभिभूत॒ उत्त॑रम् । क्रत्वा॑ नो मन्यो स॒ह मे॒द्ये॑धि महाध॒नस्य॑ पुरुहूत सं॒सृजि॑ ॥ ६ ॥ संसृ॑ष्टं॒ धन॑मु॒भयं॑ स॒माकृ॑तम॒स्मभ्यं॑ दत्तां॒ वरु॑णश्च म॒न्युः । भियं॒ दधा॑ना॒ हृद॑येषु॒ शत्र॑वः॒ परा॑जितासो॒ अप॒ नि ल॑यन्ताम् ॥ ७ ॥ १९ ॥ ६ ॥

॥ ८५ ॥ ऋषिः–१–४७ सूर्यासावित्री॥ देवता–१–५ सोमः । ६—१६ सूर्याविवाहः । १७ देवाः । १८ सोमार्कौ । १९ चन्द्रमाः । २०–२८ नृणां विवाहमन्त्रा आशीः प्रायाः । २९, ३० वधूवासः संस्पर्शनिन्दा । ३१ यक्ष्मनाशिनीदम्पत्योः । ३२–४७ सूर्या ॥ छन्दः—१, ३, ८, ११, २५, २८ ३२, ३३, ३८, ४१, ४५ निचृदनुष्टुप् । २, ४, ५, ९, ३०, ३१, ३५, ३९, ४६, ४७ अनुष्टुप् ।६, १०, १३, १६, १७, २९, ४२ विराडनुष्टुप् । ७, १२, १५, २२ पादनिचृदनुष्टुप् । ४० भुरिगनुष्टुप् । १४, २०, २४, २६, ३७ निचृत्त्रिष्टुप् १९ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । २१, ४४ विराट् त्रिष्टुप् । २३, २७, ३६ त्रिष्टुप् । १८ पादनिचृज्जगती । ४३ निचृज्जगती ३४ उरो बृहती ॥ स्वरः–१–१३, १५–१७, २२, २५ २८–३३, ३५, ३८–४२, ४५–४७ गान्धारः । १४, १९–२१, २३, २४, २६, ३६, ३७, ४४ धैवतः । १८, २७, ४३ निषादः । ३४ मध्यमः ॥

॥ ८५ ॥ सत्येनोत्तभिता भूमिः सूर्येणोत्तभिता द्यौः । ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः ॥ १ ॥ सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही । अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः ॥ २ ॥ सोमं मन्यते पपिवान्यत्संपिंषन्त्योषधिम् । सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन ॥ ३ ॥ आच्छद्विधानैर्गुपितो बार्हतैः सोम रक्षितः । ग्राव्णामिच्छृण्वन्तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः ॥ ४ ॥ यत्त्वा देव प्रपिबन्ति तत आप्यायसे पुनः । वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः ॥ ५ ॥ २० ॥ रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी । सूर्याया भद्रमिद्वासो गाथयैति परिष्कृतम् ॥ ६ ॥ चित्तिरा उपबर्हणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम् । द्यौर्भूमिः कोश आसीद्यदयात्सूर्या पतिम् ॥ ७॥ स्तोमा आसन्प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः । सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत्पुरोगवः ॥८॥ सोमो वधूयुरभवदश्विनास्तामुभा वरा । सूर्यां यत्पत्ये शंसन्तीं मनसा सविताददात् ॥ ९ ॥ मनो अस्या अन आसीद्द्यौरासीदुत च्छदिः । शुक्रावनड्वाहावास्तां यदयात्सूर्या गृहम् ॥ १० ॥ २१ ॥ ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावितः । श्रोत्रं ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः ॥ ११ ॥ शुची ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः । अनो मनस्मयं सूर्यारोहत्प्रयती पतिम् ॥ १२ ॥ सूर्याया वहतुः प्रागात्सविता यमवासृजत् । अघासु हन्यन्ते गावोऽर्जुन्योः पर्युह्यते ॥ १३ ॥ यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः । विश्वे देवा अनु तद्वामजानन्पुत्रः पितराववृणीत पूषा ॥ १४ ॥ यदयातं शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप । क्वैकं

चक्रं वामासीत्क्व देष्ट्राय तस्थथुः ॥ १५ ॥ २२ ॥ द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माण ऋ-
तुथा विदुः । अथैकं चक्रं यद्गुहा तदद्धातय इद्विदुः ॥ १६ ॥ सूर्यायै देवेभ्यो मि-
त्राय वरुणाय च । ये भूतस्य प्रचेतस इदं तेभ्योऽकरं नमः ॥ १७ ॥ पूर्वापरं च-
रतो माययैतौ शिशू क्रीळन्तौ परि यातो अध्वरम् । विश्वान्यन्यो भुवनाभिचष्ट ऋ-
तूँरन्यो विदधज्जायते पुनः ॥ १८ ॥ नवोनवो भवति जायमानोऽह्नां केतुरुषसा-
मेत्यग्रम् । भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥ १९ ॥ सुकिंशुकं
शल्मलिं विश्वरूपं हिरण्यवर्णं सुवृतं सुचक्रम् । आ रोह सूर्ये अमृतस्य लोकं स्योनं
पत्ये वहतुं कृणुष्व ॥ २० ॥ २३ ॥ उदीर्ष्वातः पतिवती ह्येषा विश्वावसुं नमसा गीर्भि-
रीळे । अन्यामिच्छ पितृषदं व्यक्तां स ते भागो जनुषा तस्य विद्धि ॥ २१ ॥ उ-
दीर्ष्वातो विश्वावसो नमसेळामहे त्वा । अन्यामिच्छ प्रफर्व्यं सञ्जायां पत्या सृज
॥ २२ ॥ अनृक्षरा ऋजवः सन्तु पन्था येभिः सखायो यन्ति नो वरेयम् । स-
मर्यमा सम्भगो नो निनीयात्सं जास्पत्यं सुयममस्तु देवाः ॥ २३ ॥ प्र त्वा मु-
ञ्चामि वरुणस्य पाशाद्येन त्वाबध्नात्सविता सुशेवः । ऋतस्य योनौ सुकृतस्य
लोकेऽरिष्टां त्वा सह पत्या दधामि ॥ २४ ॥ प्रेतो मुञ्चामि नामुतः सुबद्धाममुत-
स्करम् । यथेयमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रा सुभगासति ॥ २५ ॥ २४ ॥ पूषा त्वेतो नयतु
हस्तगृह्याश्विना त्वा प्र वहतां रथेन । गृहान्गच्छ गृहपत्नी यथासो वशिनी त्वं
विदथमा वदासि ॥ २६ ॥ इह प्रियं प्रजया ते समृध्यतामस्मिन्गृहे गार्हपत्याय
जागृहि । एना पत्या तन्वं सं सृजस्वाधा जिव्री विदथमा वदाथः ॥ २७ ॥ नीललोहितं
भवति कृत्यासक्तिर्व्यज्यते । एधन्ते अस्या ज्ञातयः पतिर्बन्धेषु बध्यते ॥ २८ ॥
परा देहि शामुल्यं ब्रह्मभ्यो वि भजा वसु । कृत्यैषा पद्वती भूत्व्या जाया विशते
पतिम् ॥ २९ ॥ अश्रीरा तनूर्भवति रुशती पापयामुया । पतिर्यद्वध्वो वाससा
स्वमङ्गमभिधित्सते ॥ ३० ॥ २५ ॥ ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जना-
दनु । पुनस्तान्यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः ॥ ३१ ॥ मा विदन्परिपन्थिनो
य आसीदन्ति दम्पती । सुगेभिर्दुर्गमतीतामप द्रान्त्वरातयः ॥ ३२ ॥ सुमङ्ग-
लीरियं वधूरिमां समेत पश्यत । सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन ॥ ३३ ॥
तृष्टमेतत्कटुकमेतदपाष्ठवद्विषवन्नैतदत्तवे । सूर्यां यो ब्रह्मा विद्यात्स इद्वाधूयम-
र्हति ॥ ३४ ॥ आशसनं विशसनमथो अधिविकर्तनम् । सूर्यायाः पश्य रूपाणि
तानि ब्रह्मा तु शुन्धति ॥ ३५ ॥ २६ ॥ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या
जरदष्टिर्यथासः । भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥ ३६ ॥

तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्याःवपन्ति । या नं ऊरू उंशती विश्रयाते यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपम् ॥३७॥ तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्या वहतुना सह । पुनः पतिभ्यो जायां दा अंग्ने प्रजया सह ॥ ३८ ॥ पुनः पत्नीमग्निरदादायुषा सह वर्चसा । दीर्घायुरस्या यः पतिर्जीवाति शरदः शतम् ॥ ३९ ॥ सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः । तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजा ॥४०॥ ॥२७॥ सोमो ददद्गन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये । रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥ ४१ ॥ इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् । क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे ॥ ४२ ॥ आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिराजरसाय समनक्त्वर्यमा । अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥४३॥ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः । वीरसूर्देवृकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ४४ ॥ इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु । दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि ॥ ४५ ॥ सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव । ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु ॥ ४६ ॥ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ । सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ॥ ४७ ॥ २८ ॥ ३ ॥

॥ ८६ ॥ ऋषिः—१–२३ वृषाकपिरैन्द्र इन्द्राणीन्द्रश्च ॥ वरुणो देवता ॥ छन्दः—१, ७, ११, १३, १४, १८, २३ पङ्क्तिः । २, ५ पादनिचृत्पङ्क्तिः । ३, ६, ९, १०, १२, १५, २०–२२ निचृत्पङ्क्तिः । ४, ८, १६, १७, १९ विराट् पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ ८६ ॥ वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत । यत्रामदद्वृषाकपिरर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १ ॥ परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः । नो अह प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २ ॥ किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः । यस्मा इरस्यसीदु न्वर्यो वा पुष्टिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ३ ॥ यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि । श्वा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ४ ॥ प्रिया तष्टानि मे कपिर्व्यक्ता व्यदूदुषत् । शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ५ ॥ १ ॥ न मत्स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् । न मत्प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ६ ॥ उवे अम्ब सुलाभिके

यथेत्राङ्ग भविष्यति । भसन्मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव हृष्यति विश्वस्मा॰ दिन्द्र उत्तरः ॥७॥ किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथुजाघने । किं शूरपत्नि नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ८ ॥ अवीरामिव मामयं शरारुरभि मन्यते । उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ९ ॥ संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वाव गच्छति । वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १० ॥ २ ॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम् । नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥११॥ नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते । यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥१२॥ वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदुसुस्नुषे । घसत्त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १३ ॥ उक्ष्णो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम् । उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १४ ॥ वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्यूथेषु रोरुवत् । मन्थस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १५ ॥ ३ ॥ न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३कपृत् । सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १६ ॥ न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते । सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३कपृद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १७ ॥ अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत् । असिं सूनां नवं चरुमादेधस्यान आचितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १८ ॥ अयमेमि विचाकशद्विचिन्वन्दासमार्यम् । पिबामि पाकसुत्वनोऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १९ ॥ धन्व च यत्कृन्तत्रं च कति स्वित्ता वि योजना । नेदीयसो वृषाकपेऽस्तमेहि गृहाँ उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०॥ पुनरेहि वृषाकपे सुविता कल्पयावहै । य एषः स्वप्ननंशनोऽस्तमेषि पथा पुनर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २१ ॥ यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन । क्व१स्य पुल्वघो मृगः कमगञ्जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २२ ॥ पर्शुर्ह नाम मानवी साकं ससूव विंशतिम् । भद्रं भल त्यस्या अभूद्यस्या उदरमामयद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २३ ॥ ४ ॥

॥ ८७ ॥ ऋषिः—१—२५ पायुः ॥ देवता—अग्नी रक्षोहा ॥ छन्दः—१, ८, १२, १७ त्रिष्टुप् । २, ३, २० विराट् त्रिष्टुप् । ४—७, ९—११, १८, १९ निचृत्त्रिष्टुप् । १३—१६ भुरिक् त्रिष्टुप् । २१ पादनिचृत्त्रिष्टुप् २२, २३ अनुष्टुप् । २४, २५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—२१ धैवतः । २२—२५ गान्धारः ॥

॥ ८७ ॥ रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठमुप यामि शर्म । शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ॥१॥ अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानानुप स्पृश जातवेदः समिद्धः । आ जिह्वया मूरदेवान्रभस्व क्रव्यादो वृक्त्व्यपि धत्स्वासन् ॥२॥ उभोभयाविन्नुप धेहि दंष्ट्रा हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च । उतान्तरिक्षे परि याहि राजञ्जम्भैः सं धेह्यभि यातुधानान् ॥ ३ ॥ यज्ञैरिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्याँ अशनिभिर्दिहानः । ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान्प्रतीचो बाहून्प्रति भङ्ध्येषाम् ॥४॥ अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंस्राशनिर्हरसा हन्त्वेनम् । प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात्क्रविष्णुर्वि चिनोतु वृक्णम् ॥ ५ ॥ ५ ॥ यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस्तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम् । यद्वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः ॥ ६ ॥ उतालब्धं स्पृणुहि जातवेद आलेभानादृष्टिभिर्यातुधानात् । अग्ने पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादः क्ष्विङ्कास्तमदन्त्वेनीः ॥ ७ ॥ इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने यो यातुधानो य इदं कृणोति । तमा रभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम् ॥ ८ ॥ तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः । हिंस्रं रक्षांस्यभि शोशुचानं मा त्वा दभन्यातुधाना नृचक्षः ॥ ९ ॥ नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा । तस्याग्ने पृष्टीर्हरसा शृणीहि त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च ॥ १० ॥ ६ ॥ त्रिर्यातुधानः प्रसितिं त एत्वृतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति । तमर्चिषा स्फूर्जयञ्जातवेदः समक्षमेनं गृणते नि वृङ्धि ॥ ११ ॥ तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे शफारुजं येन पश्यसि यातुधानम् । अथर्ववज्ज्योतिषा दैव्येन सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष ॥ १२ ॥ यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद्वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः । मन्योर्मनसः शरव्या जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान् ॥१३॥ परा शृणीहि तपसा यातुधानान्पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि । परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपो अभि शोशुचानः ॥ १४ ॥ पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः । वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन्विश्वस्यैतु प्रसितिं यातुधानः ॥ १५ ॥ ७ ॥ यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः । यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च ॥१६॥ संवत्सरीणं पय उस्रियायास्तस्य माशीद्यातुधानो नृचक्षः । पीयूषमग्ने यतमस्तितृप्सात्तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मन् ॥१७॥ विषं गवां यातुधानाः पिबन्त्वा वृश्च्यन्तामदितये दुरेवाः । परैनान्देवः सविता ददातु परा भागमोषधीनां जयन्ताम् ॥१८॥

सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः। अनु दह सहमूरान्क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥१९॥ त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तात्त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात्। प्रति ते ते अजरासस्तपिष्ठा अघशंसं शोशुचतो दहन्तु ॥२०॥ ॥८॥ पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात्कविः काव्येन परि पाहि राजन्। सखे सखायमजरो जरिम्णेऽग्ने मर्ताँ अमर्त्यस्त्वं नः ॥ २१ ॥ परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि। धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावताम् ॥२२॥ विषेण भङ्गुरावतः प्रति ष्म रक्षसो दह। अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिर्ऋष्टिभिः ॥२३॥ प्रत्यग्ने मिथुना दह यातुधाना किमीदिना। सं त्वा शिशामि जागृह्यदब्धं विप्र मन्मभिः ॥ २४ ॥ प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति। यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम् ॥ २५ ॥ ९ ॥

॥ ८८ ॥ ऋषिः—१—१९ मूर्धन्वानाङ्गिरसो वामदेव्यो वा ॥ देवता—सूर्यवैश्वानरौ ॥ छन्दः—१–४, ७, १५, १९ विराट् त्रिष्टुप्। ५, ८ त्रिष्टुप्। ६, ९–१४, १६, १७ निचृत्त्रिष्टुप्। १८ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८८ ॥ हविष्पान्तमजरं स्वर्विदि दिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्नौ। तस्य भर्मणे भुवनाय देवा धर्मणे कं स्वधया पप्रथन्त ॥ १ ॥ गीर्णं भुवनं तमसापगूळ्हमाविः स्वरभवज्जाते अग्नौ। तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापोऽरणयन्नोषधीः सख्ये अस्य ॥ २॥ देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभिरग्निं स्तोषाण्यजरं बृहन्तम्। यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमामाततान रोदसी अन्तरिक्षम् ॥ ३ ॥ यो होतासीत्प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जन्नाज्येना वृणानाः। स पतत्रीत्वरं स्था जगद्यच्छ्वात्रमग्निरकृणोज्जातवेदाः ॥ ४ ॥ यज्जातवेदो भुवनस्य मूर्धन्नतिष्ठो अग्ने सह रोचनेन। तं त्वाहेम मतिभिर्गीर्भिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः ॥ ५ ॥ १० ॥ मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्निस्ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन्। मायामू तु यज्ञियानामेतामपो यत्तूर्णिश्चरति प्रजानन् ॥६॥ दृशेन्यो यो महिना समिद्धोऽरोचत दिवियोनिर्विभावा। तस्मिन्नग्नौ सूक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनूपाः ॥७॥ सूक्तवाकं प्रथममादिदग्निमादिद्धविरजनयन्त देवाः। स एषां यज्ञो अभवत्तनूपास्तं द्यौर्वेद तं पृथिवी तमापः ॥८॥ यं देवासोऽजनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा। सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमामृजूयमानो अतपन्महित्वा ॥ ९ ॥ स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्निमजीजनञ्छक्तिभी रोदसिप्राम्। तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति

'विश्वरूपाः'॥ १० ॥ ११ ॥ यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम्
यदा चरिष्णू मिथुनावभूतामादित्प्रापश्यन्भुवनानि विश्वा ॥ ११ ॥ विश्वस्मा
अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् । आ यस्ततानोषसो विभातीरपो
ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन् ॥ १२ ॥ वैश्वानरं कवयो यज्ञियासोऽग्निं देवा अ
जनयन्नजुर्यम् । नक्षत्रं प्रत्नममिनच्चरिष्णु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम् ॥ १३ ॥
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः । यो महिम्ना परि
बभूवोर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात् ॥ १४ ॥ द्वे स्रुती अशृणवं पितॄणामहं दे
वानामुत मर्त्यानाम् । ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च ॥१५॥
॥ १२ ॥ द्वे समीची बिभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम् । स प्रत्यङ्वि
श्वा भुवनानि तस्थावप्रयुच्छन्तरणिर्भ्राजमानः ॥ १६ ॥ यत्रा वदेते अवरः प
रश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद । आ शेकुरित्सधमादं सखायो नक्षन्त यज्ञं
क इदं वि वोचत् ॥ १७॥ कत्यग्नयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्यु स्विदापः ।
नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्मने कम् ॥१८॥ यावन्मात्र
मुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्यो३ वसते मातरिश्वः । तावद्दधात्युप यज्ञमायन्ब्राह्मणो होतु
रवरो निषीदन् ॥ १९ ॥ १३ ॥

॥ ८९ ॥ ऋषिः—१–१८ रेणुः ॥ देवता-१—४, ६–१८ इन्द्रः । ५
इन्द्रासोमौ ॥ छन्दः–१, ४, ६, ७, ११, १२, १५, १८ त्रिष्टुप् । २ आर्चीत्रि
ष्टुप् । ३, ५, ९, १०, १४, १६, १७ निचृत्त्रिष्टुप् । ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । १३
आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ८९ ॥ इन्द्रं स्तवा नृतमं यस्य मह्ना विबबाधे रोचना वि ज्मो अन्तान्
आ यः पप्रौ चर्षणीधृद्वरोभिः प्र सिन्धुभ्यो रिरिचानो महित्वा ॥ १ ॥ स सू
र्यः पर्युरू वरांस्येन्द्रो ववृत्याद्रथ्येव चक्रा । अतिष्ठन्तमपस्यं१ न सर्गं कृष्णा तमां
सि त्विष्या जघान ॥ २ ॥ समानमस्मा अनपावृदर्च क्ष्मया दिवो असमं ब्रह्म
नव्यम् । वि यः पृष्ठेव जनिमान्यर्य इन्द्रश्चिकाय न सखायमीषे ॥ ३ ॥ इन्द्राय
गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रेरयं सगरस्य बुध्नात् । यो अक्षेणेव चक्रिया शची
भिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥ ४॥ आपान्तमन्युस्तृपलप्रभर्मा धुनिः शिमी
वाञ्छरुमाँ ऋजीषी । सोमो विश्वान्यतसा वनानि नार्वागिन्द्रं प्रतिमानानि
देभुः ॥ ५ ॥ १४ ॥ न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः

सोमो॑ अ॒क्ताः । यद॑स्य म॒न्युर॑धिनी॒यमा॑नः शृ॒णाति॑ वी॒ळु रु॒जति॑ स्थि॒रा॑णि
॥ ६ ॥ ज॒घान॑ वृ॒त्रं स्वधि॑ति॒र्वने॑व रु॒रोज॒ पुरो॒ अर॑द॒न्न सिन्धू॑न् । बि॒भेद॑ गि॒रिं
नव॒मिन्न कु॒म्भमा गा इन्द्रो॑ अकृणुत स्व॒युग्भिः॑ ॥ ७ ॥ त्वं ह॒ त्यदृ॑ण॒या इ॑न्द्र
धीरो॒ऽसिर्न पर्व॑ वृ॒जिना॑ शृणासि । प्र ये मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य॒ धाम॒ यु॒जं न जना॑
मि॒नन्ति॑ मि॒त्रम् ॥ ८ ॥ प्र ये मि॒त्रं प्रार्य॒मणं॑ दु॒रेवा॒ः प्र स॒ङ्गिरः॒ प्र वरु॑णं मि॒नन्ति॑ ।
न्य१॒॑मि॒त्रेषु॑ व॒धमि॑न्द्र॒ तुम्रं॒ वृष॒न्वृषा॑णमरु॒षं शि॑शीहि ॥ ९ ॥ इन्द्रो॑ दि॒व इन्द्र॑ ईशे
पृथि॒व्या इन्द्रो॑ अ॒पामि॑न्द्र॒ इत्पर्व॑तानाम् । इन्द्रो॑ वृ॒धामिन्द्र॒ इन्मेधि॑राणा॒मिन्द्रः॒ क्षेमे॒
योगे॒ हव्य॒ इन्द्रः॑ ॥ १० ॥ १५ ॥ प्राक्तु॒भ्य॒ इन्द्रः॒ प्र वृ॒धो अह॑भ्यः॒ प्रान्तरि॑क्षा-
त्प्र स॑मु॒द्रस्य॑ धा॒सेः । प्र वात॑स्य॒ प्रथ॑सः॒ प्र ज्मो अन्ता॒त्प्र सिन्धु॑भ्यो रिरिचे॒ प्र
क्षि॒तिभ्यः॑ ॥ ११ ॥ प्र शोशु॑चत्या उ॒षसो॒ न के॒तुर॑सि॒न्वा ते॑ वर्ततामिन्द्र हे॒तिः । अश्मे॑-
व विध्य दि॒व आ सृ॑जा॒नस्तपि॑ष्ठेन॒ हेष॑सा द्रोघमित्रान् ॥ १२ ॥ अन्वह॒ मासा॒
अन्विद्वना॒न्यन्वोष॑धीरनु॒ पर्व॑तासः । अन्विन्द्रं॒ रोद॑सी वावशा॒ने अन्वापो॑ अजि-
हत॒ जाय॑मानम् ॥ १३ ॥ कर्हि॑ स्वि॒त्सा त॑ इन्द्र चे॒त्यास॑द॒घस्य॒ यद्भि॒नदो॒ रक्ष॒
एष॑त् । मि॒त्रक्रुवो॒ यच्छस॑ने॒ न गावः॑ पृथि॒व्या आ॒पृग॑मु॒या शय॑न्ते ॥ १४ ॥ श-
त्रू॒यन्तो॑ अ॒भि ये न॑स्ततस्रे॒ महि॒ व्राध॑न्त ओग॒णास॑ इन्द्र । अ॒न्धेना॒मित्रा॒स्तम॑सा
सचन्तां सु॒ज्यो॒तिषो॑ अ॒क्तव॒स्ताँ अ॒भि ष्युः॑ ॥ १५ ॥ पु॒रूणि॒ हि त्वा॒ सव॑ना॒
जना॑नां॒ ब्रह्मा॑णि॒ मन्द॑न्गृण॒तामृषी॑णाम् । इ॒मामा॒घोष॒न्नव॑सा॒ सहू॑तिं ति॒रो वि-
श्वाँ॒ अर्च॑तो याह्य॒र्वाङ् ॥ १६ ॥ ए॒वा ते॑ व॒यमि॑न्द्र भु॒ञ्जती॒नां वि॒द्याम॑ सुमती॒नां
नवा॑नाम् । वि॒द्याम॒ वस्तो॒रव॑सा गृ॒णन्तो॑ वि॒श्वामि॑त्रा उ॒त त॑ इन्द्र नू॒नम् ॥ १७ ॥
शु॒नं हु॑वेम म॒घवा॑न॒मिन्द्र॑म॒स्मिन्भरे॒ नृत॑मं॒ वाज॑सातौ । शृ॒ण्वन्त॑मु॒ग्रमू॒तये॑ स॒मत्सु॒ घ्नन्तं॑
वृ॒त्राणि॑ स॒ञ्जितं॒ धना॑नाम् ॥ १८ ॥ १६ ॥

॥ ९० ॥ ऋषिः—१-१६ नारायणः ॥ पुरुषो देवता ॥ छन्दः-१-३, ७ १०, १२, १३ निचृदनुष्टुप् । ४-६, ९, १४, १५ अनुष्टुप् । ८, ११ विराडनुष्टुप् । १६ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—१५ गान्धारः । १६ धैवतः ॥

॥ ९० ॥ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् । स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा-
त्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥ १ ॥ पुरु॑ष ए॒वेदं सर्वं॒ यद्भू॒तं यच्च॒ भव्य॑म् । उ॒ताम॑ृत॒त्वस्येशा॑
नो॒ यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति ॥ २ ॥ ए॒तावा॑नस्य महि॒मातो॒ ज्याया॑ँश्च॒ पूरु॑षः । पादो॑ऽ-
स्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑ त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि ॥ ३ ॥ त्रि॒पादू॒र्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः॒ पादो॑ऽ-

स्येहाभ॑वत्पुन॑ः । ततो॒ विष्व॒ङ्व्य॑क्रामत्साशनानश॒ने अ॒भि ॥ ४ ॥ तस्मा॑द्वि॒राळ॑जा
यत वि॒राजो॒ अधि॒ पूरु॑षः । स जा॒तो अत्य॑रिच्यत प॒श्चाद्भूमि॒मथो॑ पु॒रः ॥ ५
॥ १७ ॥ यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑ दे॒वा य॒ज्ञमत॑न्वत । व॒सन्तो॑ अस्यासी॒दाज्यं॑ ग्री॒ष्म
इ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः ॥ ६ ॥ तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॒ प्रौक्ष॒न्पुरु॑षं जा॒तम॑ग्र॒तः । तेन॑ दे॒वा अय॑
जन्त सा॒ध्या ऋष॑यश्च॒ ये ॥ ७ ॥ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुतः॒ सम्भृ॑तं पृषदा॒ज्यम् । प॒
शून्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्या॑नार॒ण्यान्ग्रा॒म्याश्च॒ ये ॥ ८ ॥ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुत॒ ऋचः॒ सा
मा॑नि जज्ञिरे । छन्दां॑सि जज्ञिरे॒ तस्मा॒द्यजु॒स्तस्मा॑दजायत ॥ ९ ॥ तस्मा॒दश्वा॑ अ
जायन्त॒ ये के चो॑भ॒याद॑तः । गावो॑ ह जज्ञिरे॒ तस्मा॒त्तस्मा॑ज्जा॒ता अ॑जा॒वय॑ः ॥१०॥
॥ १८ ॥ यत्पुरु॑षं॒ व्यद॑धुः कति॒धा व्य॑कल्पयन् । मुखं॒ किम॑स्य॒ कौ बा॒हू का ऊ॒रू
पादा॑ उच्येते ॥ ११ ॥ ब्रा॒ह्म॒णो॑ऽस्य॒ मुख॑मासीद्बा॒हू रा॑ज॒न्य॑ः कृ॒तः । ऊ॒रू तद॑-
स्य॒ यद्वैश्य॑ः प॒द्भ्यां शू॒द्रो अ॑जायत ॥ १२ ॥ च॒न्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तश्चक्षो॒ः सू-
र्यो॑ अजायत । मुखा॒दिन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ प्रा॒णाद्वा॒युर॑जायत ॥ १३ ॥ नाभ्या॑ आसी-
द॒न्तरि॑क्षं शी॒र्ष्णो द्यौः सम॑वर्तत । प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्रा॒त्तथा॑ लो॒काँ अ॑क-
ल्पयन् ॥ १४ ॥ स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिध॑ः कृ॒ताः । दे॒वा यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒-
ना अब॑ध्न॒न्पुरु॑षं प॒शुम् ॥१५॥ य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वास्तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन् ।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मान॑ः सचन्त॒ यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः ॥ १६ ॥ १९ ॥ ७ ॥

॥ ९१ ॥ ऋषिः—१—१५ अरुणो वैतहव्यः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१,
३, ६ निचृज्जगती । २, ४, ५, ७, ९, १०, १३ विराड् जगती । ८, ११ पाद
निचृज्जगती । १२, १४ जगती । १५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१४, नि-
षादः । १५ धैवतः ॥

॥ ९१ ॥ सं जा॑गृ॒वद्भि॒र्जर॑माण इध्यते॒ दमे॒ दमू॑ना इ॒षय॑न्नि॒ळस्प॒दे । विश्व॑-
स्य॒ होता॑ ह॒विषो॒ वरे॑ण्यो वि॒भुर्वि॒भावा॑ सु॒षखा॑ सखीय॒ते ॥ १ ॥ स द॑र्श-
त॒श्रीरति॑थिर्गृ॒हेगृ॑हे॒ वने॑वने शिश्रिये तक्व॒वीरि॑व । जनं॑जनं॒ जन्यो॒ नाति॑ मन्य-
ते॒ विश॒ आ क्षे॑ति वि॒श्यो॒३॒॑ विशं॑विशम् ॥ २ ॥ सु॒दक्षो॒ दक्षैः॒ क्रतु॑नासि
सु॒क्रतु॒रग्ने॑ क॒विः काव्ये॑नासि विश्व॒वित् । वसु॒र्वसू॑नां क्षयसि॒ त्वमेक॒ इद्द्यावा॑
च॒ यानि॑ पृथि॒वी च॒ पुष्य॑तः ॥ ३ ॥ प्र॒जा॒नन्न॑ग्ने॒ तव॒ योनि॑मृ॒त्विय॒मिळा॑यास्प॒दे घृ-
तव॑न्त॒मास॑दः । आ ते॑ चिकित्र उ॒षसा॑मि॒वेत॑योऽरे॒पसः॒ सूर्य॑स्येव र॒श्मयः॑ ॥ ४ ॥
तव॒ श्रियो॑ व॒र्ष्य॑स्येव वि॒द्युत॑श्चि॒त्राश्चि॑कित्र उ॒षसां॒ न के॒तवः॑ । यदोष॑धीर॒भिसृ॑ष्टो

वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये ॥ ५ ॥ २० ॥ तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः । तमित्समानं वनिनश्च वीरुधोऽन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा ॥ ६ ॥ वातोपधूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद्वितिष्ठसे । आ ते यतन्ते रथ्यो३ यथा पृथक्शर्धांस्यग्ने अजराणि धक्षतः ॥ ७ ॥ मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारं परिभूतमं मतिम् । तमिदर्भे हविष्या समानमित्तमिन्महे वृणते नान्यं त्वत् ॥ ८ ॥ त्वामिदत्र वृणते त्वायवो होतारमग्ने विदथेषु वेधसः । यद्देवयन्तो दधति प्रयांसि ते हविष्मन्तो मनवो वृक्तबर्हिषः ॥ ९ ॥ तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः । तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश्च नो दमे ॥ १० ॥ ॥२१॥ यस्तुभ्यमग्ने अमृताय मर्त्यः समिधा दाशदुत वा हविष्कृति । तस्य होता भवसि यासि दूत्य१मुप ब्रूषे यजस्यध्वरीयसि ॥ ११ ॥ इमा अस्मै मतयो वाचो अस्मदाँ ऋचो गिरः सुष्टुतयः समग्मत । वसूयवो वसवे जातवेदसे वृद्धासु चिद्वर्धनो यासु चाकनत् ॥ १२ ॥ इमां प्रत्नाय सुष्टुतिं नवीयसीं वोचेयमस्मा उशते शृणोतु नः । भूया अन्तरा हृद्यस्य निस्पृशे जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥ १३ ॥यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो वशा मेषा अवसृष्टास आहुताः । कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनये चारुमग्नये ॥ १४ ॥ अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्वीव सोमः । वाजसनिं रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम् ॥ १५ ॥ २२ ॥

॥ ९२ ॥ ऋषिः—१—१५ शार्यातो मानवः॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, ६, १२ १४ निचृज्जगती । २, ५, ८, १०, ११, १५ जगती । ३, ४, ९, १३ विराड् जगती । ७ पादनिचृज्जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ ९२ ॥ यज्ञस्य वो रथ्यं विश्पतिं विशां होतारमक्तोरतिथिं विभावसुम् । शोचञ्छुष्कासु हरिणीषु जर्भुरद्वृषा केतुर्यजतो द्यामशायत ॥ १ ॥ इममञ्जस्पामुभये अकृण्वत धर्माणमग्निं विदथस्य साधनम् । अक्तुं न यह्वमुषसः पुरोहितं तनूनपातमरुषस्य निंसते ॥ २ ॥ बळस्य नीथा वि पणेश्च मन्महे वया अस्य प्रहुता आसुरत्तवे । यदा घोरासो अमृतत्वमाशतादिज्जनस्य दैव्यस्य चर्किरन् ॥ ३ ॥ ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरु व्यचो नमो मह्य१रमतिः पनीयसी । इन्द्रो मित्रो वरुणः सं चिकित्रिरेऽथो भगः सविता पूतदक्षसः ॥ ४ ॥ प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धवस्तिरो महीमरमतिं दधन्विरे । येभिः परिज्मा परियन्नुरु ज्रयो वि रोरुवज्जठरे विश्वमुक्षते ॥ ५ ॥ २३ ॥ क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो दिवः श्येनासो

असुरस्य नीळर्यः । तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमेन्द्रो देवेभिर्यशेभिरर्वशः ॥ ६ ॥ इन्द्रे भुजं शशमानास आशत सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये । प्र ये न्वस्यार्हणा ततक्षिरे युजं वज्रं नृषदनेषु कारवः ॥ ७ ॥ सूरश्चिदा हरितो अस्य रीरमदिन्द्रादा कश्चिद्भयते तवीयसः । भीमस्य वृष्णो जठरादभिश्वसो दिवेदिवे सहुरिः स्तन्नबाधितः ॥ ८ ॥ स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिक्वसे क्षयद्वीराय नमसा दिदिष्टन । येभिः शिवः स्ववाँ एवयावभिर्दिवः सिषक्ति स्वयशा निकामभिः ॥ ९ ॥ ते हि प्रजाया अभरन्त वि श्रवो बृहस्पतिर्वृषभः सोमजामयः । यज्ञैरथर्वा प्रथमो वि धारयद्देवा दक्षैर्भृगवः सं चिकित्रिरे ॥ १० ॥ २४ ॥ ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा नराशंसश्चतुरङ्गो यमोऽदितिः । देवस्त्वष्टा द्रविणोदा ऋभुक्षणः प्र रोदसी मरुतो विष्णुरर्हिरे ॥ ११ ॥ उत स्य न उशिजामुर्विया कविरहिः शृणोतु बुध्न्यो३हवीमनि । सूर्यामासा विचरन्ता दिविक्षिता धिया शमीनहुषी अस्य बोधतम् ॥ १२ ॥ प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्योऽपां नपादवतु वायुरिष्टये । आत्मानं वस्यो अभि वातमर्चत तदश्विना सुहवा यामनि श्रुतम् ॥ १३ ॥ विशामासामभयानामधिक्षितं गीर्भिरु स्वयशसं गृणीमसि । ग्नाभिर्विश्वाभिरदितिमनर्वणमक्तोर्युवानं नृमणा अधा पतिम् ॥ १४ ॥ रेभदत्र जनुषा पूर्वो अङ्गिरा ग्रावाण ऊर्ध्वा अभि चक्षुरध्वरम् । येभिर्विहाया अभवद्विचक्षणः पाथः सुमेकं स्वधितिर्वनन्वति ॥ १५ ॥ २५ ॥

॥ ९३ ॥ ऋषिः—१—१५ तान्वः पार्थ्यः । विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१ विराट् पङ्क्तिः । ४ पादनिचृत्पङ्क्तिः । ५ आर्चीभुरिक् पङ्क्तिः । ६, ७, १०, १४ निचृत्पङ्क्तिः । ८ आस्तार पङ्क्तिः । ९ अक्षरैः पङ्क्तिः । १२ आर्ची पङ्क्तिः । २, १३ आर्चीभुरिगनुष्टुप् । ३ पाद निचृदनुष्टुप् । ११ न्यङ्कुसारिणी बृहती । १५ पाद निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१, ४—१०, १२, १४ पञ्चमः । २, ३ १३ गान्धारः । ११, १५ मध्यमः ॥

॥ ९३ ॥ महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी नारी यह्वी न रोदसी सदं नः । तेभिर्नः पातं सह्यस एभिर्नः पातं शूषणि ॥ १ ॥ यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो देवान्त्सपर्यति । यः सुम्नैर्दीर्घश्रुत्तम आविवासात्येनान् ॥ २ ॥ विश्वेषामिरज्यवो देवानां वार्महः । विश्वे हि विश्वमहसो विश्वे यज्ञेषु यज्ञियाः ॥ ३ ॥ ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्रा अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा । कद्रुद्रो नृणां स्तुतो मरुतः पूषणो भगः ॥ ४ ॥

उत नो नक्तमपां वृषण्वसू सूर्यामासा सदनाय सधन्या । सचा यत्साद्येषामहिर्बुध्नेषु बुध्न्यः ॥ ५ ॥ २६ ॥ उत नो देवावश्विना शुभस्पती धामभिर्मित्रावरुणा उरुष्यताम् । महः स राय एषतेऽति धन्वेव दुरिता ॥ ६ ॥ उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना विश्वे देवासो रथस्पतिर्भगः । ऋभुर्वाज ऋभुक्षणः परिज्मा विश्ववेदसः ॥ ७ ॥ ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो मद आ ते हरी जूजुवानस्य वाजिना । दुष्टरं यस्य साम चिदृधग्यज्ञो न मानुषः ॥ ८ ॥ कृधी नो अह्रयो देव सवितः स च स्तुषे मघोनाम् । सहो न इन्द्रो वह्निभिर्न्येषां चर्षणीनां चक्रं रश्मिं न योयुवे ॥ ९ ॥ ऐषु द्यावापृथिवी धातं महदस्मे वीरेषु विश्वचर्षणि श्रवः । पृक्षं वाजस्य सातये पृक्षं रायोत तुर्वणे ॥ १० ॥ २७ ॥ एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्ट्वं कूचित्सन्तं सहसावन्नभिष्टये सदा पाह्यभिष्टये । मेदतां वेदता वसो ॥ ११ ॥ एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये द्युतद्यामानं वावृधन्त नृणाम् । संवननं नाश्व्यं तष्टेवानपच्युतम् ॥ १२ ॥ वावर्त येषां राया युक्तैषां हिरण्ययी । नेमधिता न पौंस्या वृथेव विष्टान्ता ॥ १३ ॥ प्र तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु । ये युक्त्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम् ॥ १४ ॥ अधीन्न्वत्र सप्ततिं च सप्त च । सद्यो दिदिष्ट तान्वः सद्यो दिदिष्ट पार्थ्यः सद्यो दिदिष्ट मायवः ॥ १५ ॥ २८ ॥

॥ ९४ ॥ ऋषिः—१–१४ अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः ॥ ग्रावाणो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ४, १०, ११, १३ विराड् जगती । २, ६, १२ जगती । ८, ९ आर्चीस्वराड् जगती । ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–४, ६, ८–१३ निषादः । ५, ७, १४ धैवतः ॥

॥ ९४ ॥ प्रैते वदन्तु प्र वयं वदाम ग्रावभ्यो वाचं वदता वदद्भ्यः । यदद्रयः पर्वताः साकमाशवः श्लोकं घोषं भरथेन्द्राय सोमिनः ॥ १ ॥ एते वदन्ति शतवत्सहस्रवदभि क्रन्दन्ति हरितेभिरासभिः । विष्ट्वी ग्रावाणः सुकृतः सुकृत्यया होतुश्चित्पूर्वे हविरद्यमाशत ॥ २ ॥ एते वदन्त्यविदन्नना मधु न्यूङ्खयन्ते अधि पक्व आमिषि । वृक्षस्य शाखामरुणस्य बप्सतस्ते सूभर्वा वृषभाः प्रेमराविषुः ॥ ३ ॥ बृहद्वदन्ति मदिरेण मन्दिनेन्द्रं क्रोशन्तोऽविदन्ना मधु । संरभ्या धीराः स्वसृभिरनर्तिषुराघोषयन्तः पृथिवीमुपब्दिभिः ॥ ४ ॥ सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्याखरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः । न्यङ्नि यन्त्युपरस्य निष्कृतं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्वितः ॥ ५ ॥ २९ ॥ उग्रा इव प्रवहन्तः समायमुः साकं युक्ता वृषणो बिभ्रतो धुरः ।

गच्छुसन्तो जग्रसाना अराविषुः शृण्व एषां प्रोथथो अर्वतामिव ॥ ६ ॥ दशावनिभ्यो दशकक्ष्येभ्यो दशयोक्त्रेभ्यो दशयोजनेभ्यः । दशाभीशुभ्यो अर्चताजरेभ्यो दश धुरो दश युक्ता वहद्भ्यः ॥ ७ ॥ ते अद्रयो दशयन्त्रास आशवस्तेषामाधानं पर्येति हर्यतम् । त ऊं सुतस्य सोम्यस्यान्धसोऽंशोः पीयूषं प्रथमस्य भेजिरे ॥८॥ ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निंसतेऽंशुं दुहन्तो अध्यासते गवि। तेभिर्दुग्धं पपिवान्त्सोम्यं मध्विन्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते ॥ ९ ॥ वृषा वो अंशुर्न किला रिषाथनेळावन्तः सदमित्स्थनाशिताः । रैवत्येव महसा चारवः स्थन यस्य ग्रावाणो अजुषध्वमध्वरम् ॥ १० ॥ ३० ॥ तृदिला अतृदिलासो अद्रयोऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः । अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृषिता अतृष्णजः ॥११॥ ध्रुवा एव वः पितरो युगेयुगे क्षेमकामासः सदसो न युञ्जते । अजुर्यासो हरिषाचो हरिद्रव आ द्यां रवेण पृथिवीमशुश्रवुः ॥ १२ ॥ तदिद्वदन्त्यद्रयो विमोचने यामन्नञ्जस्पा इव घेदुपब्दिभिः। वपन्तो बीजमिव धान्याकृतः पृञ्चन्ति सोमं न मिनन्ति बप्सतः ॥ १३ ॥ सुते अध्वरे अधि वाचमक्रता क्रीळयो न मातरं तुदन्तः । वि षू मुञ्चा सुषुवुषो मनीषां वि वर्तन्तामद्रयश्चायमानाः ॥ १४ ॥ ३१ ॥ ४ ॥

॥ ९५ ॥ ऋषिः—१, ३, ६, ८—१०, १२, १४, १७ पुरूरवा ऐळः । २, ४, ५, ७, ११, १३ १५, १६, १८ उर्वशी ॥ देवता—१, ३, ६, ८—१० १२, १४, १७ उर्वशी । २, ४, ५, ७, ११, १३, १५, १६, १८ पुरूरवाऐळः ॥ छन्दः—१, २, १२ त्रिष्टुप् ३, ४, १३, १६ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ५, १० आर्ची भुरिक् त्रिष्टुप् । ६—८, १५ विराट् त्रिष्टुप् । ९, ११, १४, १७, १८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ९५ ॥ हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु । न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन्परतरे चनाहन् ॥ १ ॥ किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव । पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वात इवाहमस्मि ॥ २ ॥ इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः । अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चितयन्त धुनयः ॥ ३ ॥ सा वसु दधती श्वशुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात् । अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन्दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन ॥४॥ त्रिः स्म माह्नः श्नथयो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि । पुरूरवोऽनु ते केतमायं राजा मे वीर तन्व१स्तदासीः ॥ ५ ॥ १ ॥ या सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपि-

ह्रंदेचत्तुर्न ग्रन्थिनी चरण्युः । ता अञ्जयोऽरुणयो न सस्रुः श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्तः ॥ ६ ॥ समस्मिञ्जायमान आसत ग्ना उतेमवर्धन्नद्यः स्वगूर्ताः । मुहे यत्त्वा पुरूरवो रणायावर्धयन्दस्युहत्याय देवाः ॥ ७ ॥ सचा यदासु जहतीष्वत्कममानुषीषु मानुषो निषेवे । अप स्म मत्तरसन्ती न भुज्युस्ता अत्रसन्रथस्पृशो नाश्वाः ॥ ८ ॥ यदासु मर्तो अमृतासु निस्पृक्सं क्षोणीभिः क्रतुभिर्न पृङ्क्ते । ता आतयो न तन्वः शुम्भत स्वा अश्वासो न क्रीळयो दन्दशानाः ॥ ९ ॥ विद्युन्न या पतन्ती दविद्योद्भरन्ती मे अप्या काम्यानि । जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशी तिरत दीर्घमायुः ॥ १० ॥ २ ॥ जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः । अशासं त्वा विदुषी सस्मिन्नहन्न आशृणोः किमभुग्वदासि ॥ ११ ॥ कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन् । को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत् ॥ १२ ॥ प्रति ब्रवाणि वर्तयते अश्रु चक्रन्न क्रन्ददाध्ये शिवायै । प्र तत्ते हिनवा यत्ते अस्मे परेह्यस्तं नहि मूर मापः ॥ १३ ॥ सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ । अधा शयीत निर्ऋतेरुपस्थेऽधैनं वृका रभसासो अद्युः ॥ १४ ॥ पुरूरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उ क्षन् । न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता ॥ १५ ॥ ३ ॥ यद्विरूपाचरं मर्त्येष्ववसं रात्रीः शरदश्चतस्रः । घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्नां तादेवेदं तातृपाणा चरामि ॥ १६ ॥ अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप शिक्षाम्युर्वशीं वसिष्ठः । उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे ॥ १७ ॥ इति त्वा देवा इम आहुरैळ यथेमेतद्भवसि मृत्युबन्धुः । प्रजा ते देवान्हविषा यजाति स्वर्ग उ त्वमपि मादयासे ॥ १८ ॥ ४ ॥

॥ ९६ ॥ ऋषिः—१—१३ बरुःसर्वहरिर्वैन्द्रः ॥ देवता—हरिस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ७, ८ जगती । २—४, ९, १० जगती । ५ आर्चीस्वराड् जगती । ६ विराड् जगती । ११ आर्चीभुरिग् जगती । १२, १३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—११ निषादः । १२, १३ धैवतः ॥

॥ ९६ ॥ प्र ते मुहे विदथे शंसिषं हरी प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम् । घृतं न यो हरिभिश्चारु सेचत आ त्वा विशन्तु हरिवर्पसं गिरः ॥ १ ॥ हरिं हि योनिमभि ये समस्वरन्हिन्वन्तो हरी दिव्यं यथा सदः । आ यं पृणन्ति हरिभिर्न धेनव इन्द्राय शूषं हरिवन्तमर्चत ॥ २ ॥ सो अस्य वज्रो हरितो य आयसो

हरिर्निकामो हरिरा गभस्त्योः । द्युम्नी सुशिप्रो हरिमन्युसायक इन्द्रे नि रूपा हरित
मिमिक्षिरे ॥ ३ ॥ दिवि न केतुरधि धायि हर्यतो विव्यचद्वज्रो हरितो न रंह्या । तुदद
हरिशिप्रो य आयसः सहस्रशोका अभवद्धरिम्भरः ॥ ४ ॥ त्वन्त्वमहर्यथा उपस्तुतः पू
र्वेभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभिः । त्वं हर्यसि तव विश्वमुक्थ्य१मसामि राधो हरि
जात हर्यतम् ॥ ५ ॥ ५ ॥ ता वज्रिणं मन्दिनं स्तोम्यं मद इन्द्रं रथे वहतो ह
र्यता हरी । पुरूण्यस्मै सवनानि हर्यत इन्द्राय सोमा हरयो दधन्विरे ॥ ६ ॥ अ
कामाय हरयो दधन्विरे स्थिराय हिन्वन्हरयो हरी तुरा । अर्वद्भिर्यो हरिभिर्जोषमी
यते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशे ॥ ७ ॥ हरिश्मशारुर्हरिकेश आयसस्तुरस्पेये
यो हरिपा अवर्धत । अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरी
॥ ८ ॥ स्रुवेव यस्य हरिणी विपेततुः शिप्रे वाजाय हरिणी दविध्वतः । प्र य
त्कृते चमसे मर्मृजद्धरी पीत्वा मदस्य हर्यतस्यान्धसः ॥ ९ ॥ उत स्म सद्म ह
र्यतस्य पस्त्यो३रत्यो न वाजं हरिवाँ अचिक्रदत् । मही चिद्धि धिषणाहर्यदोजसा
बृहद्वयो दधिषे हर्यतश्चिदा ॥ १० ॥ ६ ॥ आ रोदसी हर्यमाणो महित्वा नव्यं
नव्यं हर्यसि मन्म नु प्रियम् । प्र पस्त्यमसुर हर्यतं गोराविष्कृधि हरये सूर्याय
॥ ११ ॥ आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो जनानां रथे वहन्तु हरिशिप्रमिन्द्र । पिबा यथ
प्रतिभृतस्य मध्वो हर्यन्यज्ञं सधमादे दशोणिम् ॥ १२ ॥ अपाः पूर्वेषां हरिव
सुतानामथो इदं सवनं केवलं ते । ममद्धि सोमं मधुमन्तमिन्द्र सत्रा वृषञ्जठर आ
वृषस्व ॥ १३ ॥ ७ ॥

॥ ९७ ॥ ऋषिः—१–२३ भिषगाथर्वणः ॥ देवता—ओषधी स्तुतिः ।
छन्दः—१, २, ४–७, ११, १७ अनुष्टुप् । ३, ९, १२, २२, २३ निचृदनुष्टुप्
८, १०, १३–१६, १८–२१ विराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ ९७ ॥ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनै नु बभ्रूणाम
शतं धामानि सप्त च ॥ १ ॥ शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः । अधा शत
क्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत ॥ २ ॥ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः ॥ ३ ॥ ओषधीरिति मातरस्तद्वो दे
वीरुप ब्रुवे । सनेयमश्वं गां वास आत्मानं तव पूरुष ॥ ४ ॥ अश्वत्थे वो निष
दनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥ ५ ॥ ८ ॥
यत्रौषधीः समग्मत राजानः समिताविव । विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचा

तनः ॥ ६ ॥ अश्वावतीं सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम्। आवित्सि सर्वा ओषधी-
रस्मा अरिष्टतातये ॥ ७ ॥ उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते। धनं सनि-
ष्यन्तीनामात्मानं तव पूरुष ॥ ८ ॥ इष्कृतिर्नाम वो माताथो यूयं स्थ निष्कृतीः।
सीराः पतत्रिणीः स्थन यदामयति निष्कृथ ॥ ९ ॥ अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेन
इव व्रजमक्रमुः। ओषधीः प्राचुच्यवुर्यत्किं च तन्वो३रपः ॥ १० ॥ ९॥ यदिमा
वाजयन्नहमोषधीर्हस्त आदधे। आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा
॥ ११ ॥ यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्गं परुष्परुः। ततो यक्ष्मं वि बाधध्व उग्रो म-
ध्यमशीरिव ॥ १२ ॥ साकं यक्ष्म प्र पत चाषेण किकिदीविना। साकं वातस्य
ध्राज्या साकं नश्य निहाकया ॥ १३ ॥ अन्या वो अन्यामवत्वन्यान्यस्या उपा-
वत। ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः ॥ १४ ॥ याः फलिनीर्या अ-
फला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥१५॥१०॥
मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य पड्बीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बि-
षात् ॥ १६ ॥ अवपतन्तीरवदन्दिव ओषधयस्परि। यं जीवमश्नवामहै न स
रिष्याति पूरुषः ॥ १७ ॥ या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः। तासां
त्वमस्युत्तमारं कामाय शं हृदे ॥ १८ ॥ या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवी-
मनु। बृहस्पतिप्रसूता अस्यै सं दत्त वीर्यम् ॥ १९ ॥ मा वो रिषत्खनिता यस्मै
चाहं खनामि वः। द्विपच्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम् ॥ २० ॥ याश्चेदमु-
पशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः। सर्वाः सङ्गत्य वीरुधोऽस्यै सं दत्त वीर्यम्
॥ २१ ॥ ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं रा-
जन्पारयामसि ॥ २२ ॥ त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः। उपस्तिरस्तु
सो३स्माकं यो अस्माँ अभिदासति ॥ २३ ॥ ११ ॥

॥ ९८ ॥ ऋषिः—१-१२ देवापिरार्ष्टिषेणः ॥ देवा देवताः ॥ छन्दः—१,
७ भुरिक् त्रिष्टुप्। २, ६, ८, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ३, ५ त्रिष्टुप्। ९ पाद-
निचृत्त्रिष्टुप्। ४, १० विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ९८ ॥ बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा।
आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वान्त्स पर्जन्यं शन्तनवे वृषाय ॥ १ ॥ आ देवो दूतो अजिर-
श्चिकित्वान्त्वद्देवापे अभि मामगच्छत्। प्रतीचीनः प्रति मामा ववृत्स्व दधामि ते
द्युमतीं वाचमासन् ॥२॥ अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन्बृहस्पते अनमीवामिषिराम्।

ययां वृष्टिं शन्तनवे वनाव दिवो द्रप्सो मधुमाँ आ विवेश ॥३॥ आ नो द्रप्सा मधुमन्त
विशन्त्विन्द्र देह्यधिरथं सहस्रम् । नि षीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान्देवापे हविषा स
पर्य ॥ ४ ॥ आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन्देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् । स उत्त
रस्मादधरं समुद्रमपो दिव्या असृजद्वर्ष्या अभि ॥ ५ ॥ अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तर
स्मिन्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् । ता अद्रवन्नार्ष्टिषेणेन सृष्टा देवापिना प्रेषित
मृक्षिणीषु ॥ ६ ॥ १२ ॥ यद्देवापिः शन्तनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदी
धेत् । देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत् ॥ ७ ॥ यं त्वा दे
वापिः शुशुचानो अग्न आर्ष्टिषेणो मनुष्यः समीधे । विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः
पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम् ॥ ८ ॥ त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भिरायन्त्वामध्वरेषु पुरुहू
विश्वे । सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदश्वोप याहि ॥ ९ ॥ एतान्यग्ने
नवतिर्नव त्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा । तेभिर्वर्धस्व तन्वः शूर पूर्वीर्दिवो नो वृ
ष्टिमिषितो रिरीहि ॥ १० ॥ एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्ण इन्द्रा
भागम् । विद्वान्पथ ऋतुशो देवयानानप्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ॥ ११ ॥ अग्ने
बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहापामीवामप रक्षांसि सेध । अस्मात्समुद्राद्बृहतो दिवो नोऽप
भूमानमुप नः सृजेह ॥ १२ ॥ १३ ॥

॥९९॥ ऋषिः—१–१२ वम्रो वैखानसः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ७
११ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ५, ६, १२ त्रिष्टुप् । ३, ९ विराट्त्रिष्टुप् । ४ आसुरीस्व
राडार्चीनिचृत्त्रिष्टुप् । ८ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । १० पाद निचृत्त्रिष्टुप् ।
धैवतः स्वरः ॥

॥ ९९ ॥ कं नश्चित्रमिषण्यासि चिकित्वान्पृथुग्मानं वाश्रं वावृधध्यै । कत
स्य दातु शवसो व्युष्टौ तक्षद्वज्रं वृत्रतुरमपिन्वत् ॥ १ ॥ स हि द्युता विद्युता वेति
साम पृथुं योनिमसुरत्वा ससाद । स सनीळेभिः प्रसहानो अस्य भ्रातुर्न ऋते
सप्तथस्य मायाः ॥ २ ॥ स वाजं यातापदुष्पदा यन्त्स्वर्षाता परि षदत्सनिष्यन्
अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो घ्नञ्छिश्नदेवाँ अभि वर्पसा भूत् ॥ ३ ॥ स यह्व्यो
नीर्गोषु वा जुहोति प्रधन्यासु सस्रिः । अपादो यत्र युज्यासोऽरथा द्रोण्यश्वास
ईरते घृतं वाः ॥ ४ ॥ स रुद्रेभिरशस्तवार ऋभ्वा हित्वी गयमारेअवद्य आगा
त् । वम्रस्य मन्ये मिथुना विवव्री अन्नमभीत्यारोदयन्मुषायन् ॥ ५ ॥ स इदास
तुवीरवं पतिर्दन्षळक्षं त्रिशीर्षाणं दमन्यत् । अस्य त्रितो न्वोजसा वृधानो विप
वराहमयोअग्रया हन् ॥ ६ ॥ १४ ॥ स द्रुह्वणे मनुष ऊर्ध्वसान आ साविषदर्श

स्नानाय शर्म॑ । स नृत॑मो नहु॑षोऽस्मत्सुजा॑तः पुरो॑ऽभिन॒दर्हन्दस्यु॒हत्ये॑ ॥ ७ ॥ सो अ॒भ्रियो॒ न यव॑स उद॒न्यन्क्षया॑य गा॒तुं वि॒दन्नो॑ अ॒स्मे । उप॒ यत्सीद॒दिन्दुं॒ शरी॑रैः श्ये॒नोऽयो॑पाष्टिर्हन्ति॒ दस्यू॑न् ॥ ८ ॥ स व्राध॑तः शवसा॒नेभि॑रस्य॒ कुत्सा॑य॒ शुष्णं॑ कृप॒णे परा॑दात् । अ॒यं क॒विम॑नयच्छ॒स्यमा॑न॒मत्कं॒ यो अ॑स्य॒ सनि॑तो॒त नृ॒णाम् ॥ ९ ॥ अ॒यं द॑श॒स्यन्नर्ये॑भिरस्य द॒स्मो दे॒वेभि॒र्वरु॑णो॒ न मा॒यी । अ॒यं क॒नीन॑ ऋतु॒पा अ॑वे॒द्यमि॑मीता॒ररुं॒ यश्चतु॑ष्पात् ॥ १० ॥ अ॒स्य स्तोमे॑भिरौशि॒ज ऋ॒जिश्वा॑ व्र॒जं द॑रयद्वृष॒भेण॒ पिप्रोः॑ । सुत्वा॒ यद्य॑ज॒तो दी॒दय॒द्गीः पुर॑ इया॒नो अ॒भि वर्प॑सा भूत् ॥ ११ ॥ ए॒वा म॒हो अ॑सुर व॒क्षथा॑य व॒म्रकः॑ प॒ड्भिरुप॑ सर्प॒दिन्द्र॑म् । स इ॑या॒नः क॑रति स्व॒स्तिम॑स्मा इ॒षमूर्जं॑ सुक्षि॒तिं विश्व॒माभाः॑ ॥ १२ ॥ १५ ॥ ८ ॥

॥१००॥ ऋषिः—१–१२ दुवस्युर्वान्दनः॥ विश्वेदेवा देवताः॥ छन्दः—१—३ जगती । ४, ५, ७, ११ निचृज्जगती । ६, ८, १० विराड् जगती । ९ पाद निचृज्जगती । १२ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—११ निषादः । १२ धैवतः ॥

॥ १०० ॥ इन्द्र॒ दृह्य॑ मघव॒न्त्वाव॒ दिद्भु॒ज इ॒ह स्तु॒तः सु॑त॒पा बो॑धि नो वृ॒धे । दे॒वेभि॑र्नः सवि॒ता प्राव॑तु श्रु॒तमा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ १ ॥ भरा॑य॒ सु भ॑रत भा॒गमृ॒त्विय॒ं प्र वा॒यवे॑ शुचि॒पे क्र॒न्ददि॑ष्टये । गौ॒रस्य॒ यः पय॑सः पी॒तिमा॑न॒श आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ २ ॥ आ नो॑ दे॒वः स॑वि॒ता सा॑विष॒द्वय॑ ऋजू॒यते॒ यज॑मानाय सुन्व॒ते । यथा॑ दे॒वान्प्र॑ति॒भूषे॑म पाक॒वदा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ३ ॥ इन्द्रो॑ अ॒स्मे सु॒मना॑ अस्तु वि॒श्वहा॒ राजा॒ सोमः॑ सुवि॒तस्याध्ये॑तु नः । यथा॑यथा मि॒त्रधि॑तानि सन्द॒धुरा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ४ ॥ इन्द्र॑ उ॒क्थेन॒ शव॑सा॒ परु॑र्दधे॒ बृह॑स्पते प्रतरी॒तास्यायु॑षः । य॒ज्ञो मनुः॒ प्रम॑तिर्नः पि॒ता हि क॒मा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ५ ॥ इन्द्र॑स्य॒ नु सुकृ॑तं॒ दैव्यं॒ सहो॒ऽग्निर्गृ॒हे ज॑रि॒ताभे॒धिरः॑ क॒विः । य॒ज्ञश्च॑ भूद्वि॒दथे॒ चारु॒रन्त॑म॒ आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ६ ॥ १६ ॥ न वो॒ गुहा॑ चकृम॒ भूरि॑ दुष्कृ॒तं नावि॒ष्ट्यं॑ वसवो देव॒हेळ॑नम् । माकि॑र्नो देवा॒ अनृ॑तस्य॒ वर्प॑स॒ आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ७ ॥ अपामी॑वां सवि॒ता सा॑विष॒न्न्य१॒॑ग्वरी॑य॒ इदप॑ सेध॒न्त्वद्र॑यः । ग्रावा॒ यत्र॒ मधु॒षुदु॒च्यते॑ बृ॒हदा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ८ ॥ ऊ॒र्ध्वो ग्रावा॑ वसवोऽस्तु सो॒तरि॒ विश्वा॒ द्वेषां॑सि सनु॒तर्यु॑योत । स नो॑ दे॒वः स॑वि॒ता पा॒युरीड्य॒ आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ९ ॥ ऊर्जं॑ गावो॒ यव॑से॒ पीवो॑ अत्तन ऋ॒तस्य॒ याः सद॑ने॒ कोशे॑ अ॒ङ्ग्ध्वे । त॒नूरे॒व त॒न्वो॑ अस्तु भेष॒जमा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ १० ॥ क्र॒तु॒प्रावा॑ जरि॒ता शश्व॑ताम॒व इन्द्र॒ इद्भ॒-

द्रा प्रमतिः सुतावताम् । पूर्णमूधर्दिव्यं यस्य सिक्तय आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ॥ ११ ॥ चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः सन्ति स्पृधो जरणिप्रा अधृष्टाः । रजिष्ठया रज्या पश्व आ गोस्तूतूर्षति पर्यग्रं दुवस्युः ॥ १२ ॥ १७ ॥

॥१०१॥ ऋषिः-१-१२ बुधः सौम्यः ॥ देवता-विश्वेदेवा ऋत्विजो वा ॥ छन्दः-१, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । २, ८ त्रिष्टुप् । ३, १० विराट् त्रिष्टुप् । ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ४, ६ गायत्री । ५ बृहती । ९ विराड् जगती । १२ निचृज्जगती ॥ स्वरः-१-३, ७, ८, १०, ११ धैवतः । ४, ६ षड्जः । ५ मध्यमः । ९, १२ निषादः ॥

॥ १०१ ॥ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळाः । दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे नि ह्वये वः ॥ १ ॥ मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम् । इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्र णयता सखायः ॥ २ ॥ युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम् । गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमेयात् ॥ ३ ॥ सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् । धीरा देवेषु सुम्नया ॥ ४ ॥ निराहावान्कृणोतन सं वरत्रा दधातन । सिञ्चामहा अवतमुद्रिणं वयं सुषेकमनुपक्षितम् ॥ ५ ॥ इष्कृताहावमवतं सुवरत्रं सुषेचनम् । उद्रिणं सिञ्चे अक्षितम् ॥ ६ ॥ १८ ॥ प्रीणीताश्वान्हितं जयाथ स्वस्तिवाहं रथमित्कृणुध्वम् । द्रोणाहावमवतमश्मचक्रमंसत्रकोशं सिञ्चता नृपाणम् ॥ ७ ॥ व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्म सीव्यध्वं बहुला पृथूनि । पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दृंहता तम् ॥ ८ ॥ आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये देवा देवीं यजतां यज्ञियामिह । सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ॥ ९ ॥ आ तू षिञ्च हरिमीं द्रोरुपस्थे वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः । परि ष्वजध्वं दश कक्ष्याभिरुभे धुरौ प्रति वह्निं युनक्त ॥ १० ॥ उभे धुरौ वह्निरापिब्दमानोऽन्तर्योनेव चरति द्विजानिः । वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं नि षू दधिध्वमखनन्त उत्सम् ॥ ११ ॥ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये । निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये ॥ १२ ॥ १९ ॥

॥ १०२ ॥ ऋषिः-१-१२ मुद्गलो भार्म्यश्वः ॥ देवता-द्रुघन इन्द्रो वा । छन्दः-१ पादनिचृद्बृहती । ३, १२ निचृद्बृहती । २, ४, ५, ६ निचृत्त्रि

ष्टुप् । ६ भुरिक् त्रिष्टुप् । ७, ८, १० विराट् त्रिष्टुप् । ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, १२ मध्यमः । २, ४—११ धैवतः ॥

॥ १०२ ॥ प्र ते रथं मिथूकृतमिन्द्रोऽवतु धृष्णुया । अस्मिन्नाजौ पुरुहूत श्रवाय्ये धनभक्षेषु नोऽव ॥ १ ॥ उत्स्म वातो वहति वासो अस्या अधिरथं यदजयत्सहस्रम् । रथीरभून्मुद्गलानी गविष्टौ भरे कृतं व्यचेदिन्द्रसेना ॥ २ ॥ अन्तर्यच्छ जिघांसतो वज्रमिन्द्राभिदासतः । दासस्य वा मघवन्नार्यस्य वा सनुतर्यवया वधम् ॥ ३ ॥ उद्नो ह्रदमपिबज्जर्हृषाणः कूटं स्म तृंहदभिमातिमेति । प्र मुष्कभारः श्रव इच्छमानोऽजिरं बाहू अभरत्सिषासन् ॥ ४ ॥ न्यक्रन्दयन्नुपयन्त एनममेहयन्वृषभं मध्य आजेः । तेन सूभर्वं शतवत्सहस्रं गवां मुद्गलः प्रधने जिगाय ॥ ५ ॥ ककर्दवे वृषभो युक्त आसीदवावचीत्सारथिरस्य केशी । दुधेर्युक्तस्य द्रवतः सहानस ऋच्छन्ति ष्मा निष्पदो मुद्गलानीम् ॥ ६ ॥ २० ॥ उत प्रधिमुदहन्नस्य विद्वानुपायुनग्वंसगमत्र शिक्षन् । इन्द्र उदावत्पतिमघ्न्यानामरंहत पद्याभिः ककुद्मान् ॥ ७ ॥ शुनमष्ट्राव्यचरत्कपर्दी वरत्रायां दार्वानह्यमानः । नृम्णानि कृण्वन्बहवे जनाय गाः पस्पशानस्तविषीरधत्त ॥८॥ इमं तं पश्य वृषभस्य युञ्जं काष्ठाया मध्ये द्रुघणं शयानम् । येन जिगाय शतवत्सहस्रं गवां मुद्गलः पृतनाज्येषु ॥ ९ ॥ आरे अघा को न्वि१त्था ददर्श यं युञ्जन्ति तम्वा स्थापयन्ति । नास्मै तृणं नोदकमा भरन्त्युत्तरो धुरो वहति प्रदेदिशत् ॥ १० ॥ परिवृक्तेव पतिविद्यमानट् पीप्याना कूचक्रेणेव सिञ्चन् । एषैष्या चिद्रथ्या जयेम सुमङ्गलं सिनवदस्तु सातम् ॥ ११ ॥ त्वं विश्वस्य जगतश्चक्षुरिन्द्रासि चक्षुषः । वृषा यदाजिं वृषणा सिषाससि चोदयन्वध्रिणा युजा ॥ १२ ॥ २१ ॥

॥ १०३ ॥ ऋषिः—१—१३ अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—१—३, ५—११ इन्द्रः । ४ बृहस्पतिः । १२ अप्वा । १३ इन्द्रो मरुतो वा । छन्दः—१, ३—५, ९ त्रिष्टुप् । २ स्वराट् त्रिष्टुप् । ६ भुरिक् त्रिष्टुप् । ७, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ८, १०, १२ विराट् त्रिष्टुप् । १३ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—१२ धैवतः । १३ गान्धारः ॥

॥ १०३ ॥ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥ संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना । तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥ २ ॥ स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सं-

सं॒स्र॒ष्टा स युध॒ इन्द्रो॑ ग॒णेन॑ । सं॒सृ॒ष्ट॒जित्सो॑म॒पा बा॑हुश॒र्ध्यु॑१॒ग्रध॑न्वा॒ प्रति॑हिताभि॒र-स्ता॑ ॥३॥ बृह॑स्पते॒ परि॑ दीया॒ रथे॑न रक्षो॒हामित्राँ॑ अप॒बाध॑मानः । प्र॒भ॒ञ्जन्त्सेनाः॑ प्रमृ॒णो यु॒धा जय॑न्न॒स्माक॑मेध्यवि॒ता रथा॑नाम् ॥ ४ ॥ ब॒ल॒वि॒ज्ञा॒यः स्थवि॑रः॒ प्रवी॑रः॒ सह॑स्वान्वा॒जी सह॑मान उ॒ग्रः । अ॒भिवी॑रो अ॒भिस॑त्वा सहो॒जा जैत्र॑मिन्द्र॒ रथ॒मा ति॑ष्ठ गो॒वित् ॥ ५ ॥ गो॒त्र॒भिदं॑ गो॒विदं॒ वज्र॑बाहुं॒ जय॑न्त॒मज्म॑ प्रमृ॒णन्त॒मोज॑सा । इ॒मं स॑-जाता॒ अनु॑ वीरयध्व॒मिन्द्रं॑ सखायो॒ अनु॒ सं र॑भध्वम् ॥६॥ २२॥ अ॒भि गो॒त्राणि॒ सह॑सा॒ गाह॑मानोऽद॒यो वी॒रः श॒तम॑न्यु॒रिन्द्रः॑ । दु॒श्च्य॒व॒नः पृ॑तना॒षाळ॑यु॒ध्यो॒३॒॑स्माक॒ं सेना॑ अवतु॒ प्र यु॒त्सु ॥ ७ ॥ इन्द्र॑ आसां ने॒ता बृह॒स्पति॒र्दक्षि॑णा य॒ज्ञः पु॒र ए॑तु॒ सोमः॑ । दे॒व॒से॒नाना॑मभिभञ्जती॒नां जय॑न्तीनां म॒रुतो॑ य॒न्त्वग्र॑म् ॥ ८ ॥ इन्द्र॑स्य॒ वृष्णो॒ वरु॑णस्य॒ राज्ञ॑ आदि॒त्यानां॑ म॒रुतां॒ शर्ध॑ उ॒ग्रम् । म॒हाम॑नसां भुवनच्य॒वानां॒ घोषो॑ दे॒वानां॒ जय॑ता॒मुद॑स्थात् ॥ ९ ॥ उद्ध॑र्षय मघव॒न्नायु॑धा॒न्युत्सत्व॑नां माम॒काना॒ं म-नां॑सि । उद्वृ॑त्रहन्वा॒जिनां॒ वाजि॑ना॒न्युद्रथा॑नां॒ जय॑तां यन्तु॒ घोषाः॑ ॥ १० ॥ अ॒-स्माक॒मिन्द्रः॒ समृ॑तेषु ध्व॒जेष्व॒स्माकं॒ या इष॑व॒स्ता ज॑यन्तु । अ॒स्माकं॑ वी॒रा उत्त॑रे भ-वन्त्व॒स्माँ उ॑ देवा अवता॒ हवे॑षु ॥ ११ ॥ अ॒मीषां॑ चि॒त्तं प्र॑ति॒लो॒भय॑न्ती गृहा॒णा-ङ्गा॑न्यप्वे॒ परे॑हि । अ॒भि प्रेहि॒ निर्द॑ह हृ॒त्सु शोकै॑र॒न्धेना॒मित्रा॒स्तम॑सा सचन्ताम् ॥१२॥ प्रेता॒ जय॑ता नर॒ इन्द्रो॑ वः॒ शर्म॑ यच्छतु । उ॒ग्रा वः॑ सन्तु बा॒हवो॑ऽनाधृ॒ष्या यथास॑थ ॥ १३ ॥ २३ ॥

॥ १०४ ॥ ऋषिः—१-११ अष्टको वैश्वामित्रः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ७, ८, ११ त्रिष्टुप् । ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् । ५, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप् । ९ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १०४ ॥ असा॑वि॒ सोमः॑ पुरुहू॒त तुभ्यं॒ हरि॑भ्यां य॒ज्ञमुप॑ याहि॒ तूय॑म् । तुभ्यं॒ गिरो॒ विप्र॑वीरा इया॒ना द॑ध॒न्विर॑ इन्द्र॒ पिबा॑ सु॒तस्य॑ ॥ १ ॥ अ॒प्सु धू॒तस्य॑ हरिवः॒ पिबे॒ह नृभिः॑ सु॒तस्य॑ ज॒ठरं॑ पृणस्व । मि॒मि॒क्षुर्यमद्र॑य इन्द्र॒ तुभ्यं॒ तेभि॑र्वर्धस्व॒ मद॑मुक्थवाहः ॥ २ ॥ प्रो॒ग्रां पी॒तिं वृष्ण॑ इयर्मि स॒त्यां प्र॒यै सु॒तस्य॑ हर्यश्व॒ तुभ्य॑म् । इन्द्र॒ धेना॑भिरि॒ह मा॑दयस्व धी॒भिर्विश्वा॑भिः॒ शच्या॑ गृणा॒नः ॥ ३ ॥ ऊ॒ती श॑ची-व॒स्तव॑ वी॒र्ये॑ण॒ वयो॒ दधा॑ना उ॒शिज॑ ऋत॒ज्ञाः । प्र॒जाव॑दिन्द्र॒ मनु॑षो दुरो॒णे त॒स्थु-र्गृ॒णन्तः॑ सध॒माद्या॑सः ॥ ४ ॥ प्रणी॑तिभिष्टे हर्यश्व सु॒ष्टोः सु॑षु॒म्नस्य॑ पुरु॒रुचो॒ ज-नासः । मंहि॑ष्ठामू॒तिं वि॒तिरे॒ दधा॑नाः स्तो॒तार॑ इन्द्र॒ तव॑ सू॒नृता॑भिः ॥ ५ ॥ २४ ॥

उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि पीतये सुतस्य । इन्द्र त्वा यज्ञः क्षममाणमानड् दाश्वाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ॥ ६ ॥ सहस्रवाजमभिमातिषाहं सुतेरणं मघवानं सुवृक्तिम् । उप भूषन्ति गिरो अप्रतीतमिन्द्रं नमस्या जरितुः पनन्त ॥ ७ ॥ सप्तापो देवीः सुरणा अमृक्ता याभिः सिन्धुमतर इन्द्र पूर्भित् । नवतिं स्रोत्या नव च स्रवन्तीर्देवेभ्यो गातुं मनुषे च विन्दः ॥ ८ ॥ अपो महीरभिशस्तेरमुञ्चोऽजागरास्वधि देव एकः । इन्द्र यास्त्वं वृत्रतूर्ये चकर्थ ताभिर्विश्वायुस्तन्वं पुपुष्याः ॥ ६ ॥ वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः सुशस्तिरुतापि धेना पुरुहूतमीट्टे । आर्दयद्वृत्रमकृणोदु लोकं ससाहे शक्रः पृतना अभिष्टिः ॥ १० ॥ शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम् ॥ ११ ॥ २५ ॥

॥ १०५ ॥ ऋषिः—१—११ कौत्सः सुमित्रो दुर्मित्रो वा ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ पिपीलिकामध्याउष्णिक् । ३ भुरिगुष्णिक् । ४, १० निचृदुष्णिक् । ५, ६, ८, ६, बिराडुष्णिक् । २ आर्ची स्वराडनुष्टुप् । ७ विराडनुष्टुप् । ११ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१, ३–६, ८—१० ऋषभः । २ ७ गान्धारः । ११ धैवतः ॥

॥ १०५ ॥ कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आव श्मशा रुधद्वाः । दीर्घं सुतं वाताप्याय ॥ १ ॥ हरी यस्य सुयुजा विव्रता वेरर्वन्तानु शेपा । उभा रजी न केशिना पतिर्दन् ॥ २ ॥ अप योरिन्द्रः पापज आ मर्तो न शश्रमाणो बिभीवान् । शुभे यद्युयुजे तविषीवान् ॥ ३ ॥ सचायोरिन्द्रश्चर्कृष आँ उपानसः सपर्यन् । नदयोर्विव्रतयोः शूर इन्द्रः ॥ ४ ॥ अधि यस्तस्थौ केशवन्ता व्यचस्वन्ता न पुष्ट्यै । वनोति शिप्राभ्यां शिप्रिणीवान् ॥ ५ ॥ २६ ॥ प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभिस्ततक्ष शूरः शवसा । ऋभुर्न क्रतुभिर्मातरिश्वा ॥ ६ ॥ वज्रं यश्चक्रे सुहनाय दस्यवे हिरीमशो हिरीमान् । अरुतहनुरद्भुतं न रजः ॥ ७ ॥ अव नो वृजिना शिशीह्यृचा वनेमानृचः । नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे ॥ ८ ॥ ऊर्ध्वा यत्ते त्रेतिनी भूद्यज्ञस्य धूर्षु सद्मन् । सजूर्नावं स्वयशसं सचायोः ॥ ६ ॥ श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी भूच्छ्रिये दर्विररेपाः । यया स्वे पात्रे सिञ्चस उत् ॥ १० ॥ शतं वा यदसुर्य प्रति त्वा सुमित्र इत्थास्तौद्दुर्मित्र इत्थास्तौत् । आवो यद्दस्युहत्ये कुत्सपुत्रं प्रावो यद्दस्युहत्ये कुत्सवत्सम् ॥ ११ ॥ २७ ॥ ५ ॥

॥ १०६ ॥ ऋषिः–१–११ भूतांशः काश्यपः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः–१, ३, ७ त्रिष्टुप् । २, ४, ८–११ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ६ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥१०६॥ उभा उ नूनं तदिदर्थयेथे वि तन्वाथे धियो वस्त्रापसेव । सध्रीचीना यातवे प्रेममजीगः सुदिनेव पृक्ष आ तंसयेथे ॥१ ॥उष्टारेव फर्वरेषु श्रयेथे मायोगेव श्वात्र्या शासुरेथः । दूतेव हि ष्ठो यशसा जनेषु माप स्थातं महिषेवावपानात् ॥२॥ साकंयुजा शकुनस्येव पक्षा पश्वेव चित्रा यजुरा गमिष्टम् । अग्निरिव देवयोर्दीदिवांसा परिज्मानेव यजथः पुरुत्रा ॥ ३ ॥ आपी वो अस्मे पितरेव पुत्रोग्रेव रुचा नृपतीव तुर्यै । इर्येव पुष्ट्यै किरणेव भुज्यै श्रुष्टीवानेव हवमा गमिष्टम् ॥४॥ वंसगेव पूषर्या शिम्बाता मित्रेव ऋता शतरा शातपन्ता । वाजेवोच्चा वयसा घर्म्येष्ठा मेषेवेषा सपर्या३ पुरीषा ॥ ५ ॥ १ ॥ सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका । उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु ॥ ६ ॥ पज्रेव चर्चरं जारं मरायु क्षद्मेवार्थेषु तर्तरीथ उग्रा । ऋभू नापत्खरमज्रा खरज्रुर्वायुर्न पर्फरत्क्षयद्रयीणाम् ॥ ७ ॥ घर्मेव मधु जठरे सनेरू भगेविता तुर्फरी फारिवारम् । पतरेव चचरा चन्द्रनिर्णिङ्मनऋङ्गा मनन्या३ न जग्मी ॥ ८ ॥ बृहन्तेव गम्भरेषु प्रतिष्ठां पादेव गाधं तरते विदाथः । कर्णेव शासुरनु हि स्मराथोऽशेव नो भजतं चित्रमप्नः ॥ ९ ॥ आरङ्गरेव मध्वेरयेथे सारघेव गवि नीचीनबारे । कीनारेव स्वेदमासिष्विदाना क्षामेवोर्जा सूयवसात्सचेथे ॥ १० ॥ ऋध्याम स्तोमं सनुयाम वाजमा नो मन्त्रं सरथेहोप यातम् । यशो न पक्वं मधु गोष्वन्तरा भूतांशो अश्विनोः काममप्राः ॥ ११ ॥ २ ॥

॥ १०७ ॥ ऋषिः-१-११ दिव्यो दक्षिणावा प्राजापत्या ॥ देवता-दक्षिणा तद्दातारो वा ॥ छन्दः-१, ५, ७ त्रिष्टुप् । २, ३, ६, ६, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ४ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१—३, ५—११ धैवतः । ४ निषदः ॥

॥ १०७ ॥ आविरभून्महि माघोनमेषां विश्वं जीवं तमसो निरमोचि । महि ज्योतिः पितृभिर्दत्तमागादुरुः पन्था दक्षिणाया अदर्शि ॥ १ ॥ उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदाः सह ते सूर्येण । हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्र तिरन्त आयुः ॥ २ ॥ दैवी पूर्तिर्दक्षिणा देवयज्या न कवारिभ्यो नहि ते पृणन्ति । अथा नरः प्रयतदक्षिणासोऽवद्यभिया बहवः पृणन्ति ॥ ३ ॥ शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं नृचक्षसस्ते अभि चक्षते हविः । ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति सङ्गमे ते दक्षिणां दुहते सप्तमातरम् ॥ ४ ॥ दक्षिणावान्प्रथमो हूत एति

दक्षिणावान्ग्रामणीरग्रमेति । तमेव मन्ये नृपतिं जनानां यः प्रथमो दक्षिणामाविवाय ॥ ५ ॥ ३ ॥ तमेव ऋषिं तमु ब्रह्माणमाहुर्यज्ञन्यं सामगामुक्थशासम् । स शुक्रस्य तन्वो वेद तिस्रो यः प्रथमो दक्षिणया रराध ॥६॥ दक्षिणाश्वं दक्षिणा गां ददाति दक्षिणा चन्द्रमुत यद्धिरण्यम् । दक्षिणान्नं वनुते यो न आत्मा दक्षिणां वर्म कृणुते विजानन् ॥ ७ ॥ न भोजा मम्रुर्न न्यर्थमीयुर्न रिष्यन्ति न व्यथन्ते ह भोजाः । इदं यद्विश्वं भुवनं स्वश्चैतत्सर्वं दक्षिणैभ्यो ददाति ॥ ८ ॥ भोजा जिग्युः सुरभिं योनिमग्रे भोजा जिग्युर्वध्वं या सुवासाः । भोजा जिग्युरन्तः पेयं सुराया भोजा जिग्युर्ये अहूताः प्रयन्ति ॥ ६ ॥ भोजायाश्वं सं मृजन्त्याशुं भोजायास्ते कन्या शुम्भमाना । भोजस्येदं पुष्करिणीव वेश्म परिष्कृतं देवमानेव चित्रम् ॥ १० ॥ भोजमश्वाः सुष्ठुवाहो वहन्ति सुवृद्रथो वर्तते दक्षिणायाः । भोजं देवासोऽवता भरेषु भोजः शत्रून्त्समनीकेषु जेता ॥ ११ ॥ ४ ॥

॥ १०८ ॥ ऋषिः–१, ३, ५, ७, ६ पणयोऽसुराः । २, ४, ६, ८, १०, ११ सरमा देवशुनी ॥ देवता–१, ३, ५, ७, ६ सरमा । २, ४, ६, ८, १०, ११ पणयः ॥ छन्दः–१ विराट् त्रिष्टुप् । २, १० त्रिष्टुप् । ३–५, ७–६, ११ निचृत्त्रिष्टुप् । ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १०८ ॥ किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः । कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि ॥ १ ॥ इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि मह इच्छन्ती पणयो निधीन्वः । अतिष्कदो भियसा तन्न आवत्तथा रसाया अतरं पयांसि ॥ २ ॥ कीदृङ्ङिन्द्रः सरमे का दृशीका यस्येदं दूतीरसरः पराकात् । आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति ॥ ३ ॥ नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स यस्येदं दूतीरसरं पराकात् । न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे ॥ ४ ॥ इमा गावः सरमे या ऐच्छः परि दिवो अन्तान्त्सुभगे पतन्ती । कस्त एना अव सृजादयुध्व्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा ॥ ५ ॥ ५ ॥ असेन्या वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तन्वः सन्तु पापीः । अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पतिर्व उभया न मृळात् ॥ ६ ॥ अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्टः । रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा रेकु पदमलकमा जगन्थ ॥ ७ ॥ एह गमन्नृषयः सोमशिता अयास्यो अङ्गिरसो नवग्वाः । त एतमूर्वं वि भजन्त गोनामथैतद्वचः पणयो वमन्नित् ॥ ८ ॥ एवा च त्वं सरम

आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन। स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम ॥ ९ ॥ नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः। गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः ॥ १० ॥ दूरमित पणयो वरीय उद्गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन। बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूळ्हाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः ॥ ११ ॥ ६ ॥

॥ १०९ ॥ ऋषिः—१—७ जुहूर्ब्रह्मजायोर्ध्वनाभा वा ब्राह्मः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ४, ५ त्रिष्टुप्। ३ विराट् त्रिष्टुप्। ६,७ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—५ धैवतः। ६, ७ गान्धारः ॥

॥१०९॥ तेऽवदन्प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषेऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा। वीळुहरास्तप उग्रो मयोभूरापो देवीः प्रथमजा ऋतेन ॥ १ ॥ सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहृणीयमानः। अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसीदग्निर्होता हस्तगृह्या निनाय ॥२॥ हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ब्रह्मजायेयमिति चेदवोचन्। न दूताय प्रह्ये तस्थ एषा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य ॥ ३ ॥ देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसे ये निषेदुः। भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धां दधाति परमे व्योमन् ॥ ४ ॥ ब्रह्मचारी चरति वेविषद्विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम्। तेन जायामन्वविन्दद्बृहस्पतिः सोमेन नीतां जुह्वं न देवाः ॥ ५ ॥ पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्या उत। राजानः सत्यं कृण्वाना ब्रह्मजायां पुनर्ददुः ॥ ६ ॥ पुनर्दाय ब्रह्मजायां कृत्वी देवैर्निकिल्बिषम्। ऊर्जं पृथिव्या भक्त्वायोरुगायमुपासते ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥११०॥ ऋषिः—१—११ जमदग्नी रामो वा ॥ देवता आप्रियः ॥ छन्दः—१, २, ५, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्। ३ आर्चीत्रिष्टुप्। ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ ६, ७, ९ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ११० ॥ समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः। आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः ॥ १ ॥ तनूनपात्पथ ऋतस्य यानान्मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व। मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन्देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः ॥ २ ॥ आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्चा याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः। त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान्यक्षीषितो यजीयान् ॥ ३ ॥ प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम्। व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो-

अदितये स्योनम् ॥ ४ ॥ व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः । देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः ॥ ५ ॥ ८ ॥ आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ । दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने ॥ ६ ॥ दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै । प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥ ७ ॥ आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विळा मनुष्वदिह चेतयन्ती । तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु ॥ ८ ॥ य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंशद्भुवनानि विश्वा । तमद्य होतरिषितो यजीयान्देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान् ॥ ९ ॥ उपावसृज त्मन्या समञ्जन्देवानां पाथ ऋतुथा हवींषि । वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन ॥ १० ॥ सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः । अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः ॥ ११ ॥ ९ ॥

॥ १११ ॥ ऋषिः—१–१० अष्ट्रादंष्ट्रो वैरूपः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४ त्रिष्टुप् । ३, ६, १० विराट् त्रिष्टुप् । ५, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ८ पाद निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १११ ॥ मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषां यथायथा मतयः सन्ति नृणाम् । इन्द्रं सत्यैरेरयामा कृतेभिः स हि वीरो गिर्वणस्युर्विदानः ॥ १ ॥ ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत्सं गार्ष्टेयो वृषभो गोभिरानट् । उदतिष्ठत्तविषेणा रवेण महान्ति चित्सं विव्याचा रजांसि ॥ २ ॥ इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य वेद स हि जिष्णुः पथिकृत्सूर्याय । आन्मेनां कृण्वन्नच्युतो भुवद्गोः पतिर्दिवः सनजा अप्रतीतः ॥ ३ ॥ इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य व्रतामिनादङ्गिरोभिर्गृणानः । पुरूणि चिन्नि तताना रजांसि दाधार यो धरुणं सत्यताता ॥ ४ ॥ इन्द्रो दिवः प्रतिमानं पृथिव्या विश्वा वेद सवना हन्ति शुष्णम् । महीं चिद्द्यामातनोत्सूर्येण चास्कम्भ चित्कम्भनेन स्कभीयान् ॥ ५ ॥ १० ॥ वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रमस्तरदेवस्य शूशुवानस्य मायाः । वि धृष्णो अत्र धृषता जघन्थाथाभवो मघवन्बाह्वोजाः ॥ ६ ॥ सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन् । आ यन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो नकिरद्धा नु वेद ॥ ७ ॥ दूरं किल प्रथमा जग्मुरासामिन्द्रस्य याः प्रसवे सस्रुरापः । क्व स्विदग्रं क्व बुध्न आसामापो मध्यं क्व वो नूनमन्तः ॥ ८ ॥ सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानाँ आदिदेताः प्र विविज्रे जवेन । मुमुक्षमाणा उत या मुमुच्रेऽधेदेता न र-

न्ते निर्तिक्ताः ॥ ६ ॥ सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन्त्सनाज्जार आरितः पूर्भिदासाम् । अस्तमा ते पार्थिवा वसून्यस्मे जग्मुः सूनृता इन्द्र पूर्वीः ॥१०॥११॥

॥ ११२ ॥ ऋषिः—१—१० नभः प्रभेदनो वैरूपः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३, ७, ८ विराट् त्रिष्टुप् । २, ४—६, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ११२ ॥ इन्द्र पिब प्रतिकामं सुतस्य प्रातः सावस्तव हि पूर्वपीतिः । हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रूनुक्थेभिष्टे वीर्या३ प्र ब्रवाम ॥ १ ॥ यस्ते रथो मनसो जवीयानेन्द्र तेन सोमपेयाय याहि । तूयमा ते हरयः प्र द्रवन्तु येभिर्यासि वृषभिर्मन्दमानः ॥ २ ॥ हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठै रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व । अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः संध्रीचीनो मादयस्वा निषद्य ॥ ३ ॥ यस्य त्यत्ते महिमानं मदेष्विमे मही रोदसी ना विविक्ताम् । तदोक आ हरिभिरिन्द्र युक्तैः प्रियेभिर्याहि प्रियमन्नमच्छ॥ ४॥ यस्य शश्वत्पपिवाँ इन्द्र शत्रूननानुकृत्या रण्या चकर्थ । स ते पुरंधिं तविषीमियर्ति स ते मदाय सुत इन्द्र सोमः ॥ ५ ॥ १२ ॥ इदं ते पात्रं सनवित्तमिन्द्र पिबा सोममेना शतक्रतो । पूर्ण आहावो मदिरस्य मध्वो यं विश्व इदभिहर्यन्ति देवाः ॥ ६ ॥ वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा जनासो हितप्रयसो वृषभ ह्वयन्ते अस्माकं ते मधुमत्तमानीमा भुवन्त्सवना तेषु हर्य ॥ ७ ॥ प्र त इन्द्र पूर्व्याणि प्र नूनं वीर्या वोचं प्रथमा कृतानि । सतीनमन्युरश्रथायो अद्रिं सुवेदनामकृणोर्ब्रह्मणे गाम् ॥ ८ ॥ नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम् । न ऋते त्वत्क्रियते किञ्चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च ॥ ६ ॥ अभिख्या नो मघवन्नाधमानान्त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम् । रणं कृधि रणकृत्सत्यशुष्माभक्ते चिदा भजा राये अस्मान् ॥ १० ॥ १३ ॥ ६ ॥

॥ ११३ ॥ ऋषिः—१—१० शत प्रभेदनो वैरूपः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१, ५ जगती । ३, ६, ६ विराड् जगती । ३ निचृज्जगती । ४ पाद निचृज्जगती । ७, ८ आर्चीस्वराड् जगती । १० पाद निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–६ निषादः । १० धैवतः ॥

॥११३॥ तमस्य द्यावापृथिवी सचेतसा विश्वेभिर्देवैरनु शुष्ममावताम् । यदैत्कृण्वानो महिमानमिन्द्रियं पीत्वी सोमस्य क्रतुमाँ अवर्धत ॥ १ ॥ तमस्य वि-

ष्णुर्महिमानमोजसांशुं दधन्वान्मधुनो वि रप्शते । देवेभिरिन्द्रो मघवा सयावभि-
र्वृत्रं जघन्वाँ अभवद्वरेण्यः ॥ २ ॥ वृत्रेण यदहिना बिभ्रदायुधा समस्थिथा यु-
धये शंसमाविदे । विश्वे ते अत्र मरुतः सह त्मनावर्धन्नुग्र महिमानमिन्द्रियम् ॥
३ ॥ जज्ञान एव व्यबाधत स्पृधः प्रापश्यद्वीरो अभि पौंस्यं रणम् । अवृश्चद-
द्रिमव सस्यदः सृजदस्तभ्नान्नाकं स्वपस्यया पृथुम् ॥ ४ ॥ आदिन्द्रः सत्रा त-
विषीरपत्यत वरीयो द्यावापृथिवी अबाधत । अवाभरद्धृषितो वज्रमायसं शेवं मि-
त्राय वरुणाय दाशुषे ॥ ५ ॥ १४ ॥ इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो विरप्शिन ऋघा-
यतो अरंहयन्त मन्यवे । वृत्रं यदुग्रो व्यवृश्चदोजसापो बिभ्रतं तमसा परीवृतम्
॥ ६ ॥ या वीर्याणि प्रथमानि कर्त्वा महित्वेभिर्यतमानौ समीयतुः । ध्वान्तं त-
मोऽव दध्वसे हत इन्द्रो मह्ना पूर्वहूताव पत्यत ॥ ७ ॥ विश्वे देवासो अध वृ-
ष्ण्यानि तेऽवर्धयन्त्सोमवत्या वचस्यया । रद्धं वृत्रमहिमिन्द्रस्य हन्मनाग्निर्न ज-
म्भैस्तृष्वन्नमावयत् ॥ ८ ॥ भूरि दक्षेभिर्वचनेभिरृक्वभिः सख्येभिः सख्यानि
प्र वोचत । इन्द्रो धुनिं च चुमुरिं च दम्भयञ्छ्रद्धामनस्या शृणुते दभीतये ॥९॥
त्वं पुरूण्या भरा स्वश्व्या येभिर्मंसैर्निवचनानि शंसन् । सुगेभिर्विश्वा दुरिता
तरेम विदो षु ण उर्विया गाधमद्य ॥ १० ॥ १५ ॥

॥ ११४ ॥ ऋषिः—१—१० सध्रिर्वैरूपो घर्मो वा तापसः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप् । २, ३, ६ भुरिक् त्रिष्टुप् । ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । १० पाद निचृत्त्रिष्टुप् । ४ जगती ॥ स्वरः—१—३, ५—१० धैवतः । ४ निषादः ॥

॥ ११४ ॥ घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतुस्तयोर्जुष्टिं मातरिश्वा जगाम । दि-
वस्पयो दिधिषाणा अवेषन्विदुर्देवाः सहसामानमर्कम् ॥ १ ॥ तिस्रो देष्ट्राय नि-
र्ऋतीरुपासते दीर्घ श्रुतो वि हि जानन्ति वह्नयः । तासां नि चिक्युः कवयो नि-
दानं परेषु या गुह्येषु व्रतेषु ॥ २ ॥ चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतप्रतीका वयु-
नानि वस्ते । तस्यां सुपर्णा वृषणा नि षेदतुर्यत्र देवा दधिरे भागधेयम् ॥ ३ ॥
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे । तं पाकेन मनसा-
पश्यमन्तितस्तं माता रेळ्हि स उ रेळ्हि मातरम् ॥ ४ ॥ सुपर्णं विप्राः कवयो
वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति । छन्दांसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्त्सोम-
स्य मिमते द्वादश ॥ ५ ॥ १६ ॥ षट्त्रिंशांश्च चतुरः कल्पयन्तश्छन्दांसि च

दधंत आद्वादशम् । यज्ञं विमायं कवयों मनीष ऋक्सामाभ्यां प्र रथं वर्तयन्ति ॥ ६ ॥ चर्तुर्दशान्ये महिमानों अस्य तं धीरा वाचा प्रणयन्ति सप्त । आप्नानं तीर्थं क इह प्र वोचद्येनं पथा प्रपिबन्ते सुतस्यं ॥ ७ ॥ सहस्रधा पंञ्चदशान्युक्था यावद्द्यावापृथिवी तावदित्तत् । सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद्ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक् ॥ ८ ॥ कश्छन्दसां योगमा वेद धीरः को धिष्ण्यां प्रति वाचं पपाद । कमृत्विजामष्टमं शूरमाहुर्हरी इन्द्रस्य नि चिकाय कः स्वित् ॥ ९ ॥ भूम्या अन्तं पर्येके चरन्ति रथस्य धूर्षु युक्तासो अस्थुः । श्रमस्य दायं वि भजन्त्येभ्यो यदा यमो भवति हर्म्ये हितः ॥ १० ॥ १७ ॥

॥ ११५ ॥ ऋषिः—१—९ उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २, ४, ७ विराड् जगती । ३ जगती । ५ आर्चीभुरिग् जगती । ६ निचृज्जगती । ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ९ पादनिचृच्छक्करी ॥ स्वरः—१—७ निषादः । ८, ९ धैवतः ॥

॥ ११५ ॥ चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावप्येति धातवे । अनूधा यदि जीजनदधा च नु ववक्ष सद्यो महि दूत्यं चरन् ॥ १ ॥ अग्निर्ह नाम धायि दन्नपस्तमः सं यो वना युवते भस्मना दता । अभिप्रमुरा जुह्वा स्वध्वर इनो न प्रोथमानो यवसे वृषा ॥ २ ॥ तं वो विं न द्रुषदं देवमन्धस इन्दुं प्रोथन्तं प्रवपन्तमर्णवम् । आसा वह्निं न शोचिषा विरप्शिनं महिव्रतं न सरजन्तमध्वनः ॥ ३ ॥ वि यस्य ते ज्रयसानस्याजर धक्षोर्न वाताः परि सन्त्यच्युताः । आ रण्वासो युयुधयो न सत्वनं त्रितं नशन्त प्र शिषन्त इष्टये ॥ ४ ॥ स इदग्निः कण्वतमः कण्वसखार्यः परस्यान्तरस्य तरुषः । अग्निः पातु गृणतो अग्निः सूरीनग्निर्ददातु तेषामवो नः ॥ ५ १८ ॥ वाजिन्तमाय सह्यसे सुपित्र्य तृषु च्यवानो अनु जातवेदसे । अनुद्रे चिद्यो धृषता वरं सते महिन्तमाय धन्वनेदविष्यते ॥६॥ एवाग्निर्मर्तैः सह सूरिभिर्वसुः ष्टवे सहसः सूनरो नृभिः । मित्रासो न ये सुधिता ऋतायवो द्यावो न द्युम्नैरभि सन्ति मानुषान् ॥ ७ ॥ ऊर्जो नपात्सहसावन्निति त्वोपस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक् । त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ॥ ८ ॥ इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य पुत्रा उपस्तुतास ऋषयोऽवोचन् । तांश्च पाहि गृणतश्च सूरीन्वषड्वषळित्यूर्ध्वासो अनक्षन्नमो नम इत्यूर्ध्वासो अनक्षन् ॥ ९ ॥ १९ ॥

॥ ११६ ॥ ऋषिः—१—९ अग्नियुतः स्थौरोऽग्नियूपो वा स्थौरः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ८, ९ त्रिष्टुप् । २ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् । ५, ७ विराट् त्रिष्टुप् । ६ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ११६ ॥ पिबा सोमं महत इन्द्रियाय पिबा वृत्राय हन्तवे शविष्ठ । पिब राये शवसे हूयमानः पिब मध्वस्तृपदिन्द्रा वृषस्व ॥ १ ॥ अस्य पिब क्षुमतः प्रस्थितस्येन्द्र सोमस्य वरमा सुतस्य । स्वस्तिदा मनसा मादयस्वार्वाचीनो रेवते सौभगाय ॥ २ ॥ ममत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र ममत्तु यः सूयते पार्थिवेषु । ममत्तु येन वरिवश्चकर्थ ममत्तु येन निरिणासि शत्रून् ॥ ३ ॥ आ द्विबर्हा अमिनो यात्विन्द्रो वृषा हरिभ्यां परिषिक्तमन्धः । गव्या सुतस्य प्रभृतस्य मध्वः सत्रा खेदामरुशहा वृषस्व ॥ ४ ॥ नि तिग्मानि भ्राशयन्भ्राश्यान्यव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् । उग्राय ते सहो बलं ददामि प्रतीत्या शत्रून्विगदेषु वृश्च ॥ ५ ॥ २० ॥ व्यर्य इन्द्र तनुहि श्रवांस्योजः स्थिरेव धन्वनोऽभिमातीः । अस्मद्र्यग्वावृधानः सहोभिरनिभृष्टस्तन्वं वावृधस्व ॥ ६ ॥ इदं हविर्मघवन्तुभ्यं रातं प्रति सम्राळहृणानो गृभाय । तुभ्यं सुतो मघवन्तुभ्यं पक्वो३द्धीन्द्र पिब च प्रस्थितस्य ॥ ७ ॥ अद्धीदिन्द्र प्रस्थितेमा हवींषि चनो दधिष्व पचतोत सोमम् । प्रयस्वन्तः प्रति हर्यामसि त्वा सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ ८ ॥ प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यामियर्मि सिन्धाविव प्रेरयं नावमर्कैः । अया इव परि चरन्ति देवा ये अस्मभ्यं धनदा उद्भिदश्च ॥ ९ ॥ २१ ॥

॥ ११७ ॥ ऋषिः—१—९ भिक्षुः ॥ इन्द्रो देवता—धनान्न दान प्रशंसा ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती । २ पादनिचृज्जगती । ३, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, ६ त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् । ८ भुरिक् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ ११७ ॥ न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः । उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन्मर्डितारं न विन्दते ॥ १ ॥ य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन्रफितायोपजग्मुषे । स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितारं न विन्दते ॥ २ ॥ स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय । अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम् ॥ ३ ॥ न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः । अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत् ॥ ४ ॥ पृणीयादिन्नाधमानाय त-

ष्यान्द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्। ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः ॥ ५ ॥ २२ ॥ मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य। नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥ ६ ॥ कृषन्नित्फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः। वदन्ब्रह्मावदतो वनीयान्पृणन्नापिरपृणन्तमभि ष्यात् ॥ ७ ॥ एकपाद्भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात्त्रिपादमभ्येति पश्चात्। चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे सम्पश्यन्पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः ॥८॥ समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः सम्मातरा चिन्न समं दुहाते। यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः ॥ ९ ॥ २३ ॥

॥ ११८ ॥ ऋषिः—१—९ उरुक्षय आमहीयवः ॥ देवता—अग्नी रक्षोहा ॥ छन्दः—१ पिपीलिकामध्यागायत्री। २, ५ निचृद्गायत्री। ३, ८ विराड् गायत्री। ६, ७ पाद निचृद्गायत्री। ४, ९ गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ११८ ॥ अग्ने हंसि न्यत्रिणं दीद्यन्मर्त्येष्वा। स्वे क्षये शुचिव्रत ॥ १ ॥ उत्तिष्ठसि स्वाहुतो घृतानि प्रति मोदसे। यत्त्वा स्रुचः समस्थिरन् ॥२॥ स आहुतो वि रोचतेऽग्निरीळेन्यो गिरा। स्रुचा प्रतीकमज्यते ॥ ३ ॥ घृतेनाग्निः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः। रोचमानो विभावसुः ॥ ४ ॥ जरमाणः समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन। तं त्वा हवन्त मर्त्याः ॥ ५ ॥ २४॥ तं मर्ता अमर्त्यं घृतेनाग्निं सपर्यत। अदाभ्यं गृहपतिम् ॥ ६ ॥ अदाभ्येन शोचिषाग्ने रक्षस्त्वं दह। गोपा ऋतस्य दीदिहि ॥ ७ ॥ स त्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योष यातुधान्यः। उरुक्षयेषु दीद्यत् ॥ ८ ॥ तं त्वा गीर्भिरुरुक्षया हव्यवाहं समीधिरे। यजिष्ठं मानुषे जने ॥९॥२५॥

॥ ११९ ॥ ऋषिः—१—१३ लब ऐन्द्रः ॥ देवता—आत्मस्तुतिः ॥ छन्दः—१—५, ७—१० गायत्री। ६, १२, १३ निचृद्गायत्री। ११ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ ११९ ॥ इति वा इति मे मनो गामश्वं सनुयामिति कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १ ॥ प्र वाता इव दोधत उन्मा पीता अयंसत। कुवित्सोमस्यापामिति ॥२॥ उन्मा पीता अयंसत रथमश्वा इवाशवः। कुवित्सोमस्यापामिति ॥३॥ उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम्। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ४ ॥ अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम्। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ५ ॥ नहि मे अक्षिपच्च-

नाचछान्त्सुः पञ्च कुष्टयः । कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ६ ॥२६॥ नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति । कुवित्सोमस्यापामिति ॥७॥ अभि द्यां महिना भुवमभीइमां पृथिवीं महीम् । कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ८ ॥ हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा । कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ९ ॥ ओषमित्पृथिवीमहं जङ्घनानीह वेह वा । कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १० ॥ दिवि मे अन्यः पक्षोऽधो अन्यमचीकृषम् । कुवित्सोमस्यापामिति ॥११ ॥ अहमस्मि महामहोऽभिनभ्यमुदीषितः । कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १२॥ गृहो याम्यरंकृतो देवेभ्यो हव्यवाहनः । कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १३ ॥ २७ ॥ ६ ॥

॥ १२० ॥ ऋषिः–१-९ बृहद्दिव आथर्वणः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः–१ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् । २, ३, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ४, ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप् । ७, ८ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १२० ॥ तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः । सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः ॥ १ ॥ वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति । अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु ॥२॥ त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः । स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ ३ ॥ इति चिद्धि त्वा धना जयन्तं मदेमदे अनुमदन्ति विप्राः । ओजीयो धृष्णो स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन्यातुधाना दुरेवाः ॥ ४ ॥ त्वया वयं शाशद्महे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि । चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि ॥५॥१॥ स्तुषेय्यं पुरुवर्पसमृभ्वमिनतममाप्त्यमाप्त्यानाम् । आ दर्षते शवसा सप्त दानून्प्र साक्षते प्रतिमानानि भूरि ॥६॥ नि तद्दधिषेऽवरं परं च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे । आ मातरा स्थापयसे जिगत्नू अत इनोषि कर्वरा पुरूणि ॥ ७ ॥ इमा ब्रह्म बृहद्दिवो विवक्तीन्द्राय शूषमग्रियः स्वर्षाः । महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजो दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ॥ ८ ॥ एवा महान्बृहद्दिवो अथर्वावोचत्स्वां तन्वमिन्द्रमेव । स्वसारो मातरिभ्वरीररिप्रा हिन्वन्ति च शवसा वर्धयन्ति च ॥ ९ ॥ २ ॥

॥१२१॥ ऋषिः–१-१० हिरण्यगर्भः प्राजापत्यः ॥ को देवता ॥ छन्दः–१, ३, ६, ८, ९ त्रिष्टुप् । २, ५ निचृत्त्रिष्टुप् । ४, १० विराट् त्रिष्टुप् । ७ स्वराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १२१ ॥ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स
दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ १ ॥ य आत्मदा बलदा
यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै दे-
वाय हविषा विधेम ॥ २ ॥ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो ब-
भूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥ यस्येमे
हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै
देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं
येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥५॥३॥
यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभा-
ति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥६॥ आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जन-
यन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ७ ॥
यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक
आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ८ ॥ मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो
वा दिवं सत्यधर्मा जजान। यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा वि-
धेम ॥ ९ ॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्का-
मास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ १२२ ॥ ऋषिः—१—८ चित्रमहा वासिष्ठः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१
त्रिष्टुप्। ५ निचृत्त्रिष्टुप्। २ जगती। ३, ८ पादनिचृज्जगती। ४, ६ निचृज्जगती।
७ आर्चीस्वराड् जगती ॥ स्वरः—१, ५ धैवतः। २—४, ६—८ निषादः ॥

॥ १२२ ॥ वसुं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमतिथिमद्विषेण्यम्। स रा-
सते शुरुधो विश्वधायसोऽग्निर्होता गृहपतिः सुवीर्यम् ॥ १ ॥ जुषाणो अग्ने प्रति हर्य मे
वचो विश्वानि विद्वान्वयुनानि सुक्रतो। घृतनिर्णिग्ब्रह्मणे गातुमेरय तव देवा अ-
जनयन्ननु व्रतम् ॥ २ ॥ सप्त धामानि परियन्नमर्त्यो दाशद्दाशुषे सुकृते मामहस्व।
सुवीरेण रयिणाग्ने स्वाभुवा यस्त आनट् समिधा तं जुषस्व ॥ ३ ॥ यज्ञस्य केतुं
प्रथमं पुरोहितं हविष्मन्त ईळते सप्त वाजिनम्। शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं पृणन्तं
देवं पृणते सुवीर्यम् ॥४॥ त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः स हूयमानो अमृताय मत्स्व।
त्वां मर्जयन्मरुतो दाशुषो गृहे त्वां स्तोमेभिर्भृगवो वि रुरुचुः ॥ ५ ॥ ५ ॥ इषं
दुहन्त्सुदुघां विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो। अग्ने घृतस्नुस्त्रिर्ऋतानि

दीर्घश्रुर्तिर्यञ्ज परियन्त्सुक्रतूयसे ॥ ६॥ त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अयजन्त मानुषाः । त्वां देवा महयाय्याय वावृधुराज्यमग्ने निमृजन्तो अध्वरे ॥७॥ नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त वाजिनं गृणन्तो अग्ने विदथेषु वेधसः । रायस्पोषं यजमानेषु धारय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥ ६ ॥

॥ १२३ ॥ ऋषिः–१–८ वेनः ॥ वेनो देवता ॥ छन्दः–१, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् । २–४, ६, ८ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १२३ ॥ अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने । इममपां संङ्गमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति ॥ १ ॥ समुद्रादूर्मिमुदियर्ति वेनो नभोजाः पृष्ठं हर्यतस्य दर्शि । ऋतस्य सानावधि विष्टपि भ्राट् समानं योनिमभ्यनूषत व्राः ॥ २ ॥ समानं पूर्वीरभि वावशानास्तिष्ठन्वत्सस्य मातरः सनीळाः । ऋतस्य सानावधि चक्रमाणा रिहन्ति मध्वो अमृतस्य वाणीः ॥ ३ ॥ जानन्तो रूपमकृपन्त विप्रा मृगस्य घोषं महिषस्य हि ग्मन् । ऋतेन यन्तो अधि सिन्धुमस्थुर्विदद्गन्धर्वो अमृतानि नाम ॥ ४ ॥ अप्सरा जारमुपसिष्मियाणा योषा बिभर्ति परमे व्योमन् । चरत्प्रियस्य योनिषु प्रियः सन्त्सीदत्पक्षे हिरण्यये स वेनः ॥ ५ ॥ ७ ॥ नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा । हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥६॥ ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात्प्रत्यङ्चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि । वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वर्ण नाम जनत प्रियाणि ॥ ७ ॥ द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन्गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन् । भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि ॥ ८ ॥ ८ ॥

॥ १२४ ॥ ऋषिः–१, ५–६ अग्निवरुणसोमानां निहवः । २–४ अग्निः ॥ देवता–१–४ अग्निः । ५–८ यथानिपातम् । ६ इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ८ त्रिष्टुप् । २, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ विराट् त्रिष्टुप् । ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ७ जगती ॥ स्वरः—१–६, ८, ६ धैवतः । ७ निषादः ॥

॥ १२४ ॥ इमं नो अग्न उप यज्ञमेहि पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् । असो हव्यवाळुत नः पुरोगा ज्योगेव दीर्घं तम आशयिष्ठाः ॥ १ ॥ अदेवाद्देवः प्रचता गुहा यन्प्रपश्यमानो अमृतत्वमेमि । शिवं यत्सन्तमशिवो जहामि स्वात्सख्यादरणीं नाभिमेमि ॥ २ ॥ पश्यन्नन्यस्या अतिथिं वयाया ऋतस्य धाम वि मिमे पुरूणि । शंसामि पित्रे असुराय शेवमयज्ञियाद्यज्ञियं भागमेमि ॥ ३ ॥ बह्वीः समा अकर-

मन्तरस्मिन्निन्द्रं वृणानः पितरं जहामि । अग्निः सोमो वरुणस्ते च्यवन्ते पर्यावर्द्राष्ट्रं तदवाम्यायन् ॥ ४ ॥ निर्माया उ त्ये असुरा अभूवन्त्वं च मा वरुण कामयासे । ऋतेन राजन्ननृतं विविञ्चन्मम राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि ॥ ५ ॥ ६ ॥ इदं स्वरिदमिदास वाममयं प्रकाश उर्व१न्तरिक्षम् । हनाव वृत्रं निरेहि सोम हविष्ट्वा सन्तं हविषा यजाम ॥ ६ ॥ कविः कवित्वा दिवि रूपमासजदप्रभूती वरुणो निरपः सृजत् । क्षेमं कृण्वाना जनयो न सिन्धवस्ता अस्य वर्णं शुचयो भरिभ्रति ॥ ७ ॥ ता अस्य ज्येष्ठमिन्द्रियं सचन्ते ता ईमा क्षेति स्वधया मदन्तीः । ता ईं विशो न राजानं वृणाना बीभत्सुवो अप वृत्रादतिष्ठन् ॥ ८ ॥ बीभत्सूनां सयुजं हंसमाहुरपां दिव्यानां सख्ये चरन्तम् । अनुष्टुभमनु चर्चूर्यमाणमिन्द्रं नि चिक्युः कवयो मनीषा ॥ ९ ॥ १० ॥

॥ १२५ ॥ ऋषिः–१–८ वागाम्भृणी ॥ देवता–वागाम्भृणी ॥ छन्दः–१, ३, ७, ८ विराट् त्रिष्टुप् । ४, ५ त्रिष्टुप् । ६ निचृत्त्रिष्टुप् । २ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१, ३–८ धैवतः । २ निषादः ॥

॥ १२५ ॥ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ १ ॥ अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् । अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये३यजमानाय सुन्वते ॥ २ ॥ अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥ ३ ॥ मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् । अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥ ४ ॥ अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः । यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ५ ॥ ११ ॥ अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ । अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥ ६ ॥ अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्व१न्तः समुद्रे । ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ॥ ७ ॥ अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा । परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सम्बभूव ॥ ८ ॥ १२ ॥

॥ १२६ ॥ ऋषिः–१–८ कुल्मलबर्हिषः शैलूषिरंहोमुग्वा वामदेव्यः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, ५, ६ निचृद् बृहती । २–४ विराड् बृहती । ७ बृहती । ८ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१–७ मध्यमः । ८ धैवतः ॥

॥ १२६ ॥ न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् । सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विषः ॥ १ ॥ तद्धि वयं वृणीमहे वरुण मित्रार्यमन् । येना निरंहसो यूयं पाथ नेथा च मर्त्यमति द्विषः ॥ २ ॥ ते नूनं नोऽयमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा । नयिष्ठा उ नो नेषणि पर्षिष्ठा उ नः पर्षण्यति द्विषः ॥ ३ ॥ यूयं विश्वं परि पाथ वरुणो मित्रो अर्यमा । युष्माकं शर्मणि प्रिये स्याम सुप्रणीतयोऽति द्विषः ॥४॥ आदित्यासो अति स्रिधो वरुणो मित्रो अर्यमा । उग्रं मरुद्भी रुद्रं हुवेमेन्द्रमग्निं स्वस्तयेऽति द्विषः ॥ ५ ॥ नेतार ऊ षु णस्तिरो वरुणो मित्रो अर्यमा । अति विश्वानि दुरिता राजानश्चर्षणीनामति द्विषः ॥६ ॥ शुनमस्मभ्यमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्म यच्छन्तु सप्रथ आदित्यासो यदीमहे अति द्विषः ॥ ७ ॥ यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः । एवो ष्व१स्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ॥ ८ ॥ १३ ॥

॥ १२७ ॥ ऋषिः—१—८ कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजी ॥ देवता—रात्रिस्तवः ॥ छन्दः—१, ३, ६ विराड् गायत्री । २ पादनिचृद् गायत्री । ४, ५, ८ गायत्री । ७ निचृद् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १२७ ॥ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्य१क्षभिः । विश्वा अधि श्रियोऽधित ॥ १ ॥ ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्यु१द्वतः । ज्योतिषा बाधते तमः ॥ २ ॥ निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती । अपेदु हासते तमः ॥ ३ ॥ सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि । वृक्षे न वसतिं वयः ॥ ४ ॥ नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः । नि श्येनासश्चिदर्थिनः ॥ ५ ॥ यावया वृक्यं१वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये । अथा नः सुतरा भव ॥ ६ ॥ उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित । उष ऋणेव यातय ॥ ७ ॥ उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः । रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ॥ ८ ॥ १४ ॥

॥ १२८ ॥ ऋषिः—१—९ विहव्यः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, ३ विराट् त्रिष्टुप् । २, ५, ८ त्रिष्टुप् । ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप् । ७ भुरिक् त्रिष्टुप् । ९ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१—८ धैवतः । ९ निषादः ॥

॥ १२८ ॥ ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम । मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम ॥ १ ॥ मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः । ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामे

अस्मिन् ॥२॥ मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः । दैव्या होतारो वनुषन्त पूर्वेऽरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः ॥३॥ मह्यं यजन्तु मम यानि हव्याकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु । एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अधि वोचता नः ॥ ४ ॥ देवीः षळुर्वीरुरु नः कृणोत विश्वेदेवास इह वीरयध्वम् । मा हास्महि प्रजया मा तनूभिर्मा रधाम द्विषते सोम राजन् ॥ ५ ॥ १५ ॥ अग्ने मन्युं प्रतिनुदन्परेषामदब्धो गोपाः परि पाहि नस्त्वम् । प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्तेऽमैषां चित्तं प्रबुधां वि नेशत् ॥ ६ ॥ धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पतिर्देवं त्रातारमभिमातिषाहम् । इमं यज्ञमश्विनोभा बृहस्पतिर्देवाः पान्तु यजमानं न्यर्थात् ॥ ७ ॥ उरुव्यचा नो महिषः शर्म यंसदस्मिन्हवे पुरुहूतः पुरुक्षुः । स नः प्रजायै हर्यश्व मृळयेन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः ॥ ८ ॥ ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव बाधामहे तान् । वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन् ॥ ९ ॥ १६ ॥ १० ॥

॥१२९॥ ऋषिः–१–७ प्रजापतिः परमेष्ठी ॥ देवता–भाववृत्तम् ॥ छन्दः–१—३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४–६ त्रिष्टुप् । ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १२९ ॥ नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् । किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम् ॥ १ ॥ न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः । आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास ॥ २ ॥ तम आसीत्तमसा गूळ्हमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम् । तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकम् ॥ ३ ॥ कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् । सतो बन्धुमसति निरविन्दन्हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा ॥ ४ ॥ तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त् । रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥ ५ ॥ को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः । अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव ॥ ६ ॥ इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न । यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥ ७ ॥ १७ ॥

॥ १३० ॥ ऋषिः–१–७ यज्ञः प्राजापत्यः ॥ देवता–भाववृत्तम् ॥ छन्दः–१ विराड् जगती । २ भुरिक् त्रिष्टुप् । ३, ६, ७ त्रिष्टुप् । ४ विराट् त्रिष्टुप् । ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ निषादः । २–७ धैवतः ॥

॥ १३० ॥ यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिस्तत एकशतं देवकर्मेभिरायतः। इमे वयन्ति पितरो य आययुः प्र वयाप वयेत्यासते तते ॥ १ ॥ पुमाँ एनं तनुत उत्कृणत्ति पुमान्वि तत्ने अधि नाके अस्मिन्। इमे मयूखा उप सेदुरू सदः सामानि चक्रुस्तसराण्योतवे ॥ २ ॥ कासीत्प्रमा प्रतिमा किं निदानमाज्यं किमासीत्परिधिः क आसीत्। छन्दः किमासीत्प्रउगं किमुक्थं यद्देवा देवमयजन्त विश्वे ॥३॥ अग्नेर्गायत्र्यभवत्सयुग्वोष्णिहया सविता सम्बभूव। अनुष्टुभा सोम उक्थैर्महस्वान्बृहस्पतेर्बृहती वाचमावत् ॥४॥ विराण्मित्रावरुणयोरभिश्रीरिन्द्रस्य त्रिष्टुबिह भागो अह्नः। विश्वान्देवाञ्जगत्या विवेश तेन चाक्लृप्र ऋषयो मनुष्याः ॥ ५ ॥ चाक्लृप्रे तेन ऋषयो मनुष्या यज्ञे जाते पितरो नः पुराणे। पश्यन्मन्ये मनसा चक्षसा तान्य इमं यज्ञमयजन्त पूर्वे ॥ ६ ॥ सहस्तोमाः सहछन्दस आवृतः सहप्रमा ऋषयः सप्त दैव्याः। पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीरा अन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन् ॥ ७ ॥ १८ ॥

॥ १३१ ॥ ऋषिः—१–७ सुकीर्तिः काक्षीवतः॥ देवता—१–३,६,७ इन्द्रः। ४,५ अश्विनौ ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्। २ निचृत्त्रिष्टुप्। ३ विराट् त्रिष्टुप्। ५,६,७ पादनिचृत्त्रिष्टुप्। ४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१–३,५–७ धैवतः। ४ गान्धारः॥

॥ १३१ ॥ अप प्राच इन्द्र विश्वाँ अमित्रानपापाचो अभिभूते नुदस्व। अपोदीचो अप शूराधराच उरौ यथा तव शर्मन्मदेम ॥ १ ॥ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः ॥ २ ॥ नहि स्थूर्यृतुथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे सङ्गमेषु। गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ॥ ३ ॥ युवं सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा। विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥४॥ पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दंसनाभिः। यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥ ५ ॥ इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः। बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥६॥ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम। स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद्द्वेषः सनुतर्युयोतु ॥ ७ ॥ १९ ॥

॥ १३२ ॥ ऋषिः—१–७ शकपूतो नार्मेधः॥ देवता—१ लिङ्गोक्ताः। २–७ मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ बृहती। २, ४ पादनिचृत्पङ्क्तिः। ३ पङ्क्तिः। ५, ६ विराट् पङ्क्तिः। ७ महासतो बृहती ॥ स्वरः—१, ७ मध्यमः। २–६ पञ्चमः॥

॥ १३२ ॥ ईजानमिद्द्यौर्गूर्तावसुरीजानं भूमिरभि प्रभूषणि । ईजानं देवावश्विनावभि सुम्नैरवर्धताम् ॥ १ ॥ ता वां मित्रावरुणा धारयत्क्षिती सुषुम्नेषितत्वता यजामसि । युवोः क्राणाय सख्यैरभि ष्याम रक्षसः ॥ २ ॥ अधा चिन्नु यद्दिधिषामहे वामभि प्रियं रेक्णः पत्यमानाः । दद्वाँ वा यत्पुष्यति रेक्णः सम्वारन्नकिरस्य मघानि ॥ ३ ॥ असावन्यो असुर सूयत द्यौस्त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा । मूर्धा रथस्य चाकन्नैतावतैनसान्तकध्रुक् ॥ ४ ॥ अस्मिन्त्स्वे३तच्छकपूत एनो हिते मित्रे निगतान्हन्ति वीरान् । अवोर्वा यद्धात्तनूष्ववः प्रियासु यज्ञियास्वर्वा ॥ ५ ॥ युवोर्हि मातादितिर्विचेतसा द्यौर्न भूमिः पयसा पुपूतनि । अव प्रिया दिदिष्टन सूरो निनिक्त रश्मिभिः ॥ ६ ॥ युवं ह्यप्नराजावसीदतं तिष्ठद्रथं न धूर्षदं वनर्षदम् । ता नः कणूकयन्तीर्नृमेधस्तत्रे अंहसः सुमेधस्तत्रे अंहसः ॥ ७ ॥ २० ॥

॥१३३॥ ऋषिः—१–७ सुदाः पैजवनः॥ इन्द्रो देवता॥ छन्दः—१–३ शक्वरी। ४–६ महापङ्क्तिः । ७ विराट् त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१–३, ७ धैवतः। ४–६ पञ्चमः॥

॥ १३३ ॥ प्रोष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत । अभीके चिदु लोककृत्सङ्गे समत्सु वृत्रहास्माकं बोधि चोदिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ १ ॥ त्वं सिन्धूँरवासृजोऽधराचो अहन्नहिम् । अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ २ ॥ वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः । अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति या ते रातिर्ददिर्वसु नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ३ ॥ यो न इन्द्राभितो जनो वृकायुरादिदेशति । अधस्पदं तमीं कृधि विबाधो असि सासहिर्नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ४ ॥ यो न इन्द्राभिदासति सनाभिर्यश्च निष्ट्यः । अव तस्य बलं तिर महीव द्यौरध त्मना नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥५॥ वयमिन्द्र त्वायवः सखित्वमा रभामहे । ऋतस्य नः पथा नयाति विश्वानि दुरिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ६ ॥ अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां शिक्ष या दोहते प्रति वरं जरित्रे । अच्छिद्रोध्नी पीपयद्यथा नः सहस्रधारा पयसा मही गौः ॥ ७ ॥ २१ ॥

॥ १३४ ॥ ऋषिः—१–६[1] मान्धाता यौवनाश्वः । ६[2], ७ गोधा ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१–६ महापङ्क्तिः । ७ पङ्क्तिः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

॥ १३४ ॥ उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव । महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनां देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १ ॥ अव स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम् । अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ आदिदेशति देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ २ ॥ अव त्या बृहतीरिषो विश्वश्चन्द्रा अमित्रहन् । शचीभिः शक्र धूनुहीन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ३ ॥ अव यत्त्वं शतक्रतविन्द्र विश्वानि धूनुषे । रयिं न सुन्वते सचा सहस्रिणीभिरूतिभिर्देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ४ ॥ अव स्वेदा इवाभितो विष्वक्पतन्तु दिद्यवः । दूर्वाया इव तन्तवो व्य१स्मदेतु दुर्मतिर्देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ५ ॥ दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः । पूर्वेण मघवन्पदाजो वयां यथा यमो देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ६ ॥ नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि । पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि संरभामहे ॥ ७ ॥ २२ ॥

॥१३५॥ ऋषिः—१—७ कुमारो यामायनः ॥ देवता—यमः ॥ छन्दः—१—३ ५, ६ अनुष्टुप् । ४ विराडनुष्टुप् । ७ भुरिगनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १३५ ॥ यस्मिन्वृक्षे सुपलाशे देवैः सम्पिबते यमः । अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ अनु वेनति ॥ १ ॥ पुराणाँ अनुवेनन्तं चरन्तं पापयामुया । असूयन्नभ्यचाकशं तस्मा अस्पृहयं पुनः ॥ २ ॥ यं कुमार नवं रथमचक्रं मनसाकृणोः । एकेषं विश्वतः प्राञ्चमपश्यन्नधि तिष्ठसि ॥ ३ यं कुमार प्रावर्तयो रथं विप्रेभ्यस्परि । तं सामानु प्रावर्तत समितो नाव्याहितम् ॥ ४ ॥ कः कुमारमजनयद्रथं को निरवर्तयत् । कः स्वित्तदद्य नो ब्रूयादनुदेयी यथाभवत् ॥ ५ ॥ यथाभवदनुदेयी ततो अग्रमजायत । पुरस्ताद्बुध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम् ॥ ६ ॥ इदं यमस्य सादनं देवमानं यदुच्यते । इयमस्य धम्यते नाळीरयं गीर्भिः परिष्कृतः ॥ ७ ॥ २३ ॥

॥ १३६ ॥ ऋषिः—१—७ मुनयो वातरशनाः । देवता—१ जूतिः । २ वातजूतिः । ३ विप्रजूतिः । ४ वृषाणकः । ५ करिक्रतः । ६ एतशः । ७ ऋष्यशृङ्गः ॥ केशिनः ॥ छन्दः—१, विराडनुष्टुप् । २—४, ७ अनुष्टुप् । ५, ६ निचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥१३६॥ केश्य१ग्निं केशी विषं केशी बिभर्ति रोदसी । केशी विश्वं स्वर्दृशे केशीदं ज्योतिरुच्यते ॥ १ ॥ मुनयो वातरशनाः पिशङ्गा वसते मला । वातस्या-

नु ध्राजिं यन्ति यद्देवासो अविंक्षत ॥ २ ॥ उन्मंदिता मौनेयेन वातां आ तंस्थिमा वयम् । शरीरेदस्माकं यूयं मर्तासो अभि पंश्यथ ॥ ३ ॥ अन्तरिक्षेण पतति विश्वा रूपावचाकंशत् । मुनिर्देवस्यदेवस्य सौकृत्याय सखा हितः ॥४॥ वातस्याश्वो वायोः सखाथ देवेषितो मुनिः । उभौ समुद्रावा क्षेति यश्च पूर्व उतापंरः ॥ ५ ॥ अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणे चरन् । केशी केतंस्य विद्वान्त्सखा स्वादुर्मदिन्तमः ॥ ६ ॥ वायुरंस्मा उपामन्थत्पिनष्टि स्मा कुनन्नमा । केशी विषस्य पात्रेण यद्रुद्रेणापिबत्सह ॥ ७ ॥ २४ ॥

॥ १३७ ॥ ऋषिः—१—७ सप्त ऋषय एकर्चाः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, ४, ६ अनुष्टुप् । २, ३, ५, ७ निचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १३७ ॥ उत दैवा अवंहितं देवा उन्नयथा पुनः । उतागंश्चक्रुषं देवा देवा जीवर्यथा पुनः ॥ १ ॥ द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः । दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः ॥ २ ॥ आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः । त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ॥ ३॥ आ त्वागमं शन्तातिभिरथो अरिष्टतांतिभिः । दक्षं ते भद्रमाभार्षं परा यक्ष्मं सुवामि ते ॥ ४॥ त्रायंन्तामिह देवास्त्रायंतां मरुतां गणः । त्रायंन्तां विश्वा भूतानि यथायमंरपा असंत् ॥ ५ ॥ आप इद्वा उं भेषजीरापों अमीवचातंनीः । आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ ६ ॥ हस्ताभ्यां दशंशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी । अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि ॥ ७ ॥ २५ ॥

॥ १३८ ॥ ऋषिः—१—६ अङ्ग औरवः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ४, ६ पादनिचृज्जगती । २ निचृज्जगती ३, ५ विराड् जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ १३८ ॥ तव त्य इन्द्र सख्येषु वह्नय ऋतं मन्वाना व्यंदर्दिरुर्वलम् । यत्रा दशस्यन्नुषसो रिणन्नपः कुत्साय मन्मन्नह्यश्च दंसयः ॥ १॥ अवासृजः प्रस्वः श्वञ्चयो गिरीनुदाज उस्रा अपिबो मधु प्रियम् । अवर्धयो वनिनो अस्य दंसंसा शुशोच सूर्य ऋतजातया गिरा ॥ २ ॥ वि सूर्यो मध्ये अमुचद्रथं दिवो विदद्दासाय प्रतिमानमार्यः । दृळ्हानि पिप्रोरसुरस्य मायिन इन्द्रो व्यास्यच्चकृवाँ ऋजिश्वना ॥ ३ ॥ अनाधृष्टानि धृषितो व्यास्यन्निधीरदेवाँ अमृणदयास्यः । मासेव सूर्यो वसु पुर्यमा ददे गृणानः शत्रूँरशृणाद्विरुक्मंता ॥ ४ ॥ अयुद्धसेनो विभ्वा विभिन्दता दाशंद्वृत्रहा तुज्यानि तेजते । इन्द्रस्य वज्रादबिभेदभिश्नथः

प्राक्रामच्छुन्ध्यूरजहादुषा अनः ॥ ५ ॥ एता त्या ते श्रुत्यानि केवला यदेक एकमकृणोरयज्ञम् । मासां विधानमदधा अधि द्यवि त्वया विभिन्नं भरति प्रधिं पिता ॥ ६ ॥ २६ ॥

॥ १३९ ॥ ऋषिः—१—६ विश्वावसुर्देव गन्धर्वः ॥ देवता—१—३ सविता । ४–६ विश्वावसुः॥ छन्दः–१, २, ४–६ त्रिष्टुप् । ३ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १३९ ॥ सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम् । तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्त्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः ॥ १ ॥ नृचक्षा एष दिवो मध्य आस्त आपप्रिवान्रोदसी अन्तरिक्षम् । स विश्वाचीरभि चष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम् ॥ २ ॥ रायो बुध्नः सङ्गमनो वसूनां विश्वा रूपाभि चष्टे शचीभिः । देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम् ॥ ३ ॥ विश्वावसुं सोम गन्धर्वमापो ददृशुषीस्तदृतेना व्यायन् । तदन्ववैदिन्द्रो रारहाण आसां परि सूर्यस्य परिधीँरपश्यत् ॥ ४ ॥ विश्वावसुरभि तन्नो गृणातु दिव्यो गन्धर्वो रजसो विमानः । यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म धियो हिन्वानो धिय इन्नो अव्याः ॥ ५ ॥ सस्निमविन्दच्चरणे नदीनामपावृणोद्दुरो अश्मव्रजानाम् । प्रासां गन्धर्वो अमृतानि वोचदिन्द्रो दक्षं परि जानादहीनाम् ॥ ६ ॥ २७ ॥

॥ १४० ॥ ऋषिः—१—६ अग्निः पावकः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः–१, ३, ४ निचृत्पङ्क्तिः । २ भुरिक् पङ्क्तिः । ५ संस्तार पङ्क्तिः ॥ ६ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–१–५ पञ्चमः । ६ धैवतः ॥

॥१४०॥ अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो । बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यं दधासि दाशुषे कवे ॥१॥ पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षि भानुना । पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे ॥२॥ ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व धीतिभिर्हितः । त्वे इषः सन्दधुर्भूरिवर्पसश्चित्रोतयो वामजाताः ॥ ३ ॥ इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्य । स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि सानसिं क्रतुम् ॥ ४ ॥ इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः । रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं रयिम् ॥ ५ ॥ ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः । श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा ॥ ६ ॥ २८ ॥

॥ १४१ ॥ ऋषिः—१—६ अग्निस्तापसः ॥ विश्वेदेवा देवताः ॥ छन्दः—१, २ निचृदनुष्टुप् । ३, ६ विराडनुष्टुप् । ४, ५ अनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १४१ ॥ अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ्नः सुमना भव । प्र नो यच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम् ॥ १ ॥ प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः । प्र देवाः प्रोत सूनृता रायो देवी ददातु नः ॥ २ ॥ सोमं राजानमवसेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे । आदित्यान्विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥ ३ ॥ इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे । यथा नः सर्व इज्जनः सङ्गत्यां सुमना असत् ॥ ४ ॥ अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय । वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ॥ ५ ॥ त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय । त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ॥ ६ ॥ २९ ॥

॥ १४२ ॥ ऋषिः—१—८ शार्ङ्गाः । १, २ जरिता । ३, ४ द्रोणः । ५, ६ सारिसृक्वः । ७, ८ स्तम्बमित्रः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २ निचृज्जगती । ३, ४, ६ त्रिष्टुप् । ५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् । ७ निचृदनुष्टुप् । ८ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ निषादः । ३—६ धैवतः । ७, ८ गान्धारः ॥

॥ १४२ ॥ अयमग्ने जरिता त्वे अभूदपि सहसः सूनो नह्यन्यदस्त्याप्यम् । भद्रं हि शर्म त्रिवरूथमस्ति त आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि ॥ १ ॥ प्रवत्ते अग्ने जनिमा पितूयतः साचीव विश्वा भुवना न्यृञ्जसे । प्र सप्तयः प्र सनिषन्त नो धियः पुरश्चरन्ति पशुपा इव त्मना ॥ २ ॥ उत वा उ परि वृणक्षि बप्सद्बहोरग्न उलपस्य स्वधावः । उत खिल्या उर्वराणां भवन्ति मा ते हेतिं तविषीं चुक्रुधाम ॥ ३ ॥ यदुद्वतो निवतो यासि बप्सत्पृथगेषि प्रगर्धिनीव सेना । यदा ते वातो अनुवाति शोचिर्वप्तेव श्मश्रु वपसि प्र भूम ॥ ४ ॥ प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र एकं नियानं बहवो रथासः । बाहू यदग्ने अनुमर्मृजानो न्यङ्ङुत्तानामन्वेषि भूमिम् ॥ ५ ॥ उत्ते शुष्मा जिहतामुत्ते अर्चिरुत्ते अग्ने शशमानस्य वाजाः । उच्छ्वञ्चस्व नि नम वर्धमान आ त्वाद्य विश्वे वसवः सदन्तु ॥ ६ ॥ अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम् । अन्यं कृणुष्वेतः पन्थां तेन याहि वशाँ अनु ॥ ७ ॥ आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः । ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे ॥ ८ ॥ ३० ॥ ७ ॥

॥ १४३ ॥ ऋषिः—१—६ अत्रिः साङ्ख्यः ॥ अश्विनौ देवते ॥ छन्दः—१—५ अनुष्टुप् । ६ निचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १४३ ॥ त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमश्वं न यातवे । कक्षीवन्तं यदी पुनारथं न कृणुथो नवम् ॥ १ ॥ त्यं चिदश्वं न वाजिनमरेणवो यमत्नत । दृळ्हं ग्रन्थिं न वि ष्यतमत्रिं यविष्ठमा रजः ॥ २ ॥ नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः । अथा हि वां दिवो नरा पुनः स्तोमो न विशसे ॥ ३॥ चिते तद्वां सुराधसा रातिः सुमतिरश्विना । आ यन्नः सदने पृथौ समने पर्षथो नरा ॥ ४ ॥ युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईङ्खितम् । यातमच्छा पतत्रिभिर्नासत्या सातये कृतम् ॥५॥ आ वां सुम्नैः शंयू इव मंहिष्ठा विश्ववेदसा । समस्मे भूषतं नरोत्सं न पिप्युषीरिषः ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ १४४ ॥ ऋषिः—१—६ सुपर्णस्तार्क्ष्यपुत्र ऊर्ध्व कृशनो वा यामायनः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री । ४ भुरिग्गायत्री । २ आर्चीस्वराड् बृहती । सतोबृहती । ६ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४ षड्जः । २, ५ मध्यमः । ६ पञ्चमः ॥

॥ १४४ ॥ अयं हि ते अमर्त्य इन्दुरत्यो न पत्यते । दक्षो विश्वायुर्वेधसे ॥१॥ अयमस्मासु काव्य ऋभुर्वज्रो दास्वते । अयं बिभर्त्यूर्ध्वकृशनं मदमृभुर्न कृत्व्यं मदम् ॥२ ॥ घृषुः श्येनाय कृत्वन आसु स्वासु वंसगः । अव दीधेदहीशुवः ॥ ३ ॥ यं सुपर्णः परावतः श्येनस्य पुत्र आभरत् । शतचक्रं योऽह्यो वर्तनिः ॥ ४ ॥ यं ते श्येनश्चारुमवृकं पदाभरदरुणं मानमन्धसः । एना वयो वि तार्यायुर्जीवस एना जागार बन्धुता ॥ ५ ॥ एवा तदिन्द्र इन्दुना देवेषु चिद्धारयाते महि त्यजः । क्रत्वा वयो वि तार्यायुः सुक्रतो क्रत्वायमस्मदा सुतः ॥ ६ ॥ २ ॥

॥ १४५ ॥ ऋषिः–१—६ इन्द्राणी ॥ देवता—उपनिषत्सपत्नी बाधनम् । छन्दः—१, ५ निचृदनुष्टुप् । २, ४ अनुष्टुप् । ३ आर्चीस्वराडनुष्टुप् । ६ निचृत् पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१—५ गान्धारः । ६ पञ्चमः ॥

॥ १४५ ॥ इमां खनाम्योषधिं वीरुधं बलवत्तमाम् । यया सपत्नीं बाधते यया संविन्दते पतिम् ॥ १ ॥ उत्तानपर्णे सुभगे देवजूते सहस्वति । सपत्नीं मे परा धम पतिं मे केवलं कुरु ॥ २ ॥ उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः । अथा सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः ॥ ३ ॥ नह्यस्या नाम गृभ्णामि नो अस्मिन्रमते जने । परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि ॥ ४ ॥ अहमस्मि सहमानाथ त्व-

मसि सासहिः । उभे सहस्वती भूत्वी सपत्नीं मे सहावहै ॥ ५ ॥ उप तेऽधां सहमानामभि त्वाधां सहीयसा । मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु ॥ ६ ॥ ३ ॥

॥ १४६ ॥ ऋषिः—१—६ देवमुनिरैरम्मदः ॥ देवता—अरण्यानी ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप् । २ भुरिगनुष्टुप् । ३, ५ निचृदनुष्टुप् । ४, ६ अनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १४६ ॥ अरण्यान्यरण्यान्यसौ या प्रेव नश्यसि । कथा ग्रामं न पृच्छसि न त्वा भीरिव विन्दतीँ३ ॥ १ ॥ वृषारवाय वदते यदुपावति चिच्चिकः । आघाटिभिरिव धावयन्नरण्यानिर्महीयते ॥ २ ॥ उत गाव इवादन्त्युत वेश्मेव दृश्यते उतो अरण्यानिः सायं शकटीरिव सर्जति ॥ ३ ॥ गामङ्गैष आ ह्वयति दार्वङ्गैषो अपावधीत् । वसन्नरण्यान्यां सायमक्रुक्षदिति मन्यते ॥ ४ ॥ न वा अरण्यानिर्हन्त्यन्यश्चेन्नाभिगच्छति । स्वादोः फलस्य जग्ध्वाय यथाकामं नि पद्यते ॥ ५ ॥ आञ्जनगन्धिं सुरभिं बह्वन्नामकृषीवलाम् । प्राहं मृगाणां मातरमरण्यानिमशंसिषम् ॥ ६ ॥ ४ ॥

॥ १४७ ॥ ऋषिः—१—५ सुवेदाः शैरीशिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ विराड् जगती । २ आर्चीभुरिग्जगती । ३ जगती । ४ पादनिचृज्जगती । ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१—४ निषादः । ५ धैवतः ॥

॥ १४७ ॥ श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन्यद्वृत्रं नर्यं विवेरपः । उभे यत्त्वा भवतो रोदसी अनु रेजते शुष्मात्पृथिवी चिदद्रिवः ॥ १ ॥ त्वं मायाभिरनवद्य मायिनं श्रवस्यता मनसा वृत्रमर्दयः । त्वामिन्नरो वृणते गविष्टिषु त्वां विश्वासु हव्यास्विष्टिषु ॥ २ ॥ ऐषु चाकन्धि पुरुहूत सूरिषु वृधासो ये मघवन्नानशुर्मघम् । अर्चन्ति तोके तनये परिष्टिषु मेधसाता वाजिनमह्रये धने ॥ ३ ॥ स इन्नु रायः सुभृतस्य चाकनन्मदं यो अस्य रंह्यं चिकेतति । त्वावृधो मघवन्दाश्वध्वरो मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः ॥ ४ ॥ त्वं शर्धाय महिना गृणान उरु कृधि मघवञ्छग्धि रायः । त्वं नो मित्रो वरुणो न मायी पित्वो न दस्म दयसे विभक्ता ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ १४८ ॥ ऋषिः—१—५ पृथुर्वैन्यः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ विराट् त्रिष्टुप् । २ आर्ची भुरिक् त्रिष्टुप् । ३, ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ४ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १४८ ॥ सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा ससवांसश्च तुविनृम्ण वाजम्। आ नो भर सुवितं यस्य चाकन्त्मना तना सनुयाम त्वोताः ॥ १ ॥ ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर जातो दासीर्विशः सूर्येण सह्याः। गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु बिभृमसि प्रस्रवणे न सोमम् ॥ २ ॥ अर्यो वा गिरो अभ्यर्च विद्वानृषीणां विप्रः सुमतिं चकानः। ते स्याम ये रणयन्त सोमैरेनोत तुभ्यं रथोळह भक्षैः ॥ ३ ॥ इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं शंसि दा नृभ्यो नृणां शूर शवः। तेभिर्भव सक्रतुर्येषु चाकन्नुत त्रायस्व गृणत उत स्तीन् ॥ ४ ॥ श्रुधी हवमिन्द्र शूर पृथ्या उत स्तवसे वेन्यस्यार्कैः। आ यस्ते योनिं घृतवन्तमस्वारूर्मिर्न निम्नैर्द्रवयन्त वक्वाः ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ १४९ ॥ ऋषिः—१—५ अर्चन्हैरण्यस्तूपः ॥ सविता देवता ॥ छन्दः—१, ४ भुरिक् त्रिष्टुप्। २, ५ विराट् त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १४९ ॥ सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता द्यामदृंहत्। अश्वमिवाधुक्षद्धुनिमन्तरिक्षमतूर्ते बद्धं सविता समुद्रम् ॥ १ ॥ यत्रा समुद्रः स्कभितो व्यौनदपां नपात्सविता तस्य वेद। अतो भूरत आ उत्थितं रजोऽतो द्यावापृथिवी अप्रथेताम् २ ॥ पश्चेदमन्यदभवद्यजत्रममर्त्यस्य भुवनस्य भूना। सुपर्णो अङ्ग सवितुर्गरुत्मान्पूर्वो जातः स उ अस्यानु धर्म ॥ ३ ॥ गाव इव ग्रामं यूयुधिरिवाश्वान्वाश्रेव वत्सं सुमना दुहाना। पतिरिव जायामभि नो न्येतु धर्ता दिवः सविता विश्ववारः ॥ ४ ॥ हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा त्वाङ्गिरसो जुह्वे वाजे अस्मिन्। एवा त्वार्चन्नवसे वन्दमानः सोमस्येवांशुं प्रति जागराहम् ॥ ५ ॥ ७ ॥

॥ १५० ॥ ऋषिः—१—५ मृळीको वासिष्ठः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, २ बृहती। ३ निचृद्बृहती। ४ उपरिष्टाज्ज्योतिर्नामजगती वा। ५ उपरिष्टाज्ज्योतिः ॥ स्वरः—१—३ मध्यमः। ४, ५ निषादः ॥

॥ १५० ॥ समिद्धश्चित्समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन। आदित्यै रुद्रैर्वसुभिर्न आ गहि मृळीकाय न आ गहि ॥ १ ॥ इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि। मर्तासस्त्वा समिधान हवामहे मृळीकाय हवामहे ॥ २ ॥ त्वामु जातवेदसं विश्ववारं गृणे धिया। अग्ने देवाँ आ वह नः प्रियव्रतान्मृळीकाय प्रियव्रतान् ॥ ३ ॥ अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरोहितोऽग्निं मनुष्या३ ऋषयः समीधिरे। अग्निं महो

धनसातावहं हुवे मृळीकं धनसातये ॥ ४ ॥ अग्निरत्रिं भरद्वाजं गविष्ठिरं प्रावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहवे । अग्निं वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृळीकाय पुरोहितः ॥५॥८॥

॥ १५१ ॥ ऋषिः—१–५ श्रद्धा कामायनी ॥ देवता—श्रद्धा ॥ छन्दः—१, ४, ५ अनुष्टुप् । २ विराडनुष्टुप् । ३ निचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १५१॥ श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः । श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ॥ १ ॥ प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे दिदासतः । प्रियं भोजेषु यज्वस्विदं म उदितं कृधि ॥ २ ॥ यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे । एवं भोजेषु यज्वस्वस्माकमुदितं कृधि ॥ ३ ॥ श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते । श्रद्धां हृदय्य१याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु ॥ ४॥ श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि । श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥५॥६॥११॥

॥ १५२ ॥ ऋषिः—१—५ शासो भारद्वाजः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप् । ३ अनुष्टुप् । ५ विराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १५२ ॥ शास इत्था महाँ अस्यमित्रखादो अद्भुतः । न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन ॥ १ ॥ स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी । वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयङ्करः ॥ २ ॥ वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज । वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः ॥३॥ वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः । यो अस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः ॥४॥ अपेन्द्र द्विषतो मनोऽप जिज्यासतो वधम् । वि मन्योः शर्म यच्छ वरीयो यवया वधम् ॥५॥१०॥

॥१५३॥ ऋषिः—१–५ इन्द्र मातरो देवजामयः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ निचृद् गायत्री । २–५ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥१५३॥ ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । भेजानासः सुवीर्यम् ॥ १ ॥ त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । त्वं वृषन्वृषेदसि ॥ २ ॥ त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्य१न्तरिक्षमतिरः । उद्द्यामस्तभ्ना ओजसा ॥ ३ ॥ त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः । वज्रं शिशान ओजसा ॥४॥ त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा । स विश्वा भुव आभवः ॥ ५ ॥ ११ ॥

॥ १५४ ॥ ऋषिः—१-५ यमी ॥ देवता—भाववृत्तम् ॥ छन्दः—१, ३, ४ अनुष्टुप् । २, ५ निचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १५४ ॥ सोम॒ एके॑भ्यः पवते घृ॒तमेक॒ उपा॑सते । येभ्यो॒ मधु॑ प्र॒धाव॑ति॒ तांश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छतात् ॥ १ ॥ तप॑सा॒ ये अ॑नाधृ॒ष्या स्तप॑सा॒ ये स्व॑र्य॒युः । तपो॒ ये च॑क्रि॒रे मह॒स्तांश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छतात् ॥ २ ॥ ये युध्य॑न्ते प्र॒धने॑षु॒ शूरा॑सो॒ ये त॑नू॒त्यजः॑ । ये वा॑ स॒हस्र॑दक्षिणा॒स्तांश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छतात् ॥ ३ ॥ ये चि॒त्पूर्व॑ ऋ॒तसा॑प ऋ॒तावा॑न ऋता॒वृधः॑ । पि॒तॄन्तप॑स्वतो यम॒ तांश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छतात् ॥ ४ ॥ स॒हस्र॑णीथाः क॒वयो॒ ये गो॑पा॒यन्ति॒ सूर्य॑म् । ऋषी॒न्तप॑स्वतो यम तपो॒जाँ अपि॑ गच्छतात् ॥ ५ ॥ १२ ॥

॥१५५॥ ऋषिः—१-५ शिरिम्बिठो भारद्वाजः ॥ देवता—१, ४ अलक्ष्मीघ्नम् २, ३ ब्रह्मणस्पतिः । ५ विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप् । ३ अनुष्टुप् । ५ विराडनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १५५ ॥ अरा॑यि॒ काणे॒ विक॑टे गि॒रिं ग॑च्छ सदान्वे । शि॒रिम्बि॑ठस्य॒ सत्व॑भि॒स्तेभि॑ष्ट्वा चातयामसि ॥ १ ॥ च॒त्तो इ॒तश्च॒त्ताऽमुतः॒ सर्वा॑ भ्रू॒णान्या॒रुषी॑ । अ॒राय्यं॑ ब्रह्मणस्पते॒ तीक्ष्ण॑शृङ्गोदृ॒षन्नि॑हि ॥ २ ॥ अ॒दो यद्दारु॒ प्लव॑ते॒ सिन्धोः॑ पा॒रे अ॑पूरु॒षम् । तदा र॑भस्व दुर्हणो॒ तेन॑ गच्छ परस्त॒रम् ॥ ३ ॥ यद्ध॒ प्राची॒रज॑ग॒न्तोरो॑ मण्डूरधाणिकीः । ह॒ता इन्द्र॑स्य॒ शत्र॑वः॒ सर्वे॑ बुद्बु॒दया॑शवः ॥ ४ ॥ परी॒मे गाम॑नेषत॒ पर्य॒ग्निम॑हृषत । दे॒वेष्व॑क्रत॒ श्रवः॒ क इ॒माँ आ द॑धर्षति ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ १५६ ॥ ऋषिः—१-५ केतुराग्नेयः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ५ गायत्री । २, ४ निचृद्गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १५६ ॥ अ॒ग्निं हि॑न्वन्तु॒ नो धियः॒ सप्ति॑मा॒शुमि॑वा॒जिषु॑ । तेन॑ जेष्म॒ धनं॑धनम् ॥ १ ॥ यया॒ गा आ॒करा॑महे॒ सेन॑याग्ने॒ तवो॒त्या । तां नो॑ हिन्व म॒घत्त॑ये ॥ २ ॥ आग्ने॑ स्थू॒रं र॒यिं भ॑र पृ॒थुं गोम॑न्तम॒श्विन॑म् । अ॒ङ्‌ग्धि खं व॒र्तया॑ प॒णिम् ॥ ३ ॥ अग्ने॒ नक्ष॑त्रम॒जर॒मा सूर्यं॑ रोहयो दि॒वि । दध॒ज्ज्योति॒र्जने॑भ्यः ॥ ४ ॥ अग्ने॑ के॒तुर्वि॒शाम॑सि॒ प्रेष्ठः॒ श्रेष्ठ॑ उपस्थ॒सत् । बोधा॑ स्तो॒त्रे वयो॒ दध॑त् ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ १५७ ॥ ऋषिः—१-५ भुवन आप्त्यः साधनो वा भौवनः विश्वेदेवा देवताः ॥ द्विपदात्रिष्टुप् छन्दः ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १५७ ॥ इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥ १ ॥ यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीक्लृपाति ॥ २ ॥ आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम् ॥ ३ ॥ हत्वाय देवा असुरान्यदायन्देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः ॥ ४ ॥ प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ॥ ५ ॥ १५ ॥

॥ १५८ ॥ ऋषिः—१-५ चक्षुः सौर्यः ॥ सूर्यो देवता ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराड् गायत्री । २ स्वराड् गायत्री । ३ गायत्री । ४ निचृद् गायत्री । ५ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १५८ ॥ सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात् । अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः ॥ १ ॥ जोषा सवितर्यस्य ते हरः शतं सवाँ अर्हति । पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः ॥२॥ चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उतपर्वतः । चक्षुर्धाता दधातु नः ॥३॥ चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः । सं चेदं वि च पश्येम ॥४॥ सुसन्दृशं त्वा वयं प्रति पश्येम सूर्य । वि पश्येम नृचक्षसः ॥ ५ ॥ १६ ॥

॥ १५९ ॥ ऋषिः—१—६ शची पौलोमी ॥ देवता—शचीपौलोमी ॥ छन्दः-१-३, ५ निचृदनुष्टुप् । ४ पादनिचृदनुष्टुप् । ६ अनुष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १५९ ॥ उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः । अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः ॥ १ ॥ अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी । ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत् ॥ २ ॥ मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट् । उताहमस्मि सञ्जया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः ॥ ३ ॥ येनेन्द्रो हविषा कृत्व्यभवद्द्युम्न्युत्तमः । इदं तदक्रि देवा असपत्ना किलाभुवम् ॥ ४ ॥ असपत्ना सपत्नघ्नी जयन्त्यभिभूवरी । आवृक्षमन्यासां वर्चो राधो अस्थेयसामिव ॥५॥ समजैषमिमा अहं सपत्नीरभिभूवरी । यथाहमस्य वीरस्य विराजानि जनस्य च ॥ ६ ॥ १७॥

॥ १६० ॥ ऋषिः-१-५ पूरणो वैश्वामित्रः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः-१, ३ त्रिष्टुप् । २ पादनिचृत्त्रिष्टुप् । ४, ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥१६० ॥ तीव्रस्याभिवयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरी इह मुञ्च । इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन्तुभ्यमिमे सुतासः ॥ १ ॥ तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु-

सोत्वासस्त्वा गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति । इन्द्रेदमद्य सवनं जुषाणो विश्वस्य विद्वाँ इह पाहि सोमम् ॥ २ ॥ य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति । न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति ॥ ३ ॥ अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान्न सुनोति सोमम् । निररत्नौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः ॥ ४ ॥ अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ । आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम ॥५॥१८॥

॥१६१॥ ऋषिः–१–५ यक्ष्मनाशनः प्राजापत्यः ॥ देवता–राजयक्ष्मघ्नम् ॥ छन्दः–१, ४ भुरिक् त्रिष्टुप् । २ त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः–१–४ धैवतः । ५ गान्धारः ॥

॥ १६१ ॥ मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात् । ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् ॥ १ ॥ यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव । तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्षमेनं शतशारदाय ॥ २ ॥ सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषाहार्षमेनम् । शतं यथेमं शरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥ ३ ॥ शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान् । शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥ ४ ॥ आहार्षं त्वाविदं त्वा पुनरागाः पुनर्नव । सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ॥ ५ ॥ १६ ॥

॥ १६२ ॥ ऋषिः–१–६ रक्षोहा ब्राह्मः ॥ देवता–गर्भसंस्रावे प्रायश्चित्तम् ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप् । ३, ५, ६ अनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १६२ ॥ ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः । अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये ॥१॥ यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये । अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् ॥ २ ॥ यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम् । जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ ३ ॥ यस्त ऊरू विहरत्यन्तरा दम्पती शये । योनिं यो अन्तरारेळ्हि तमितो नाशयामसि ॥ ४ ॥ यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते । प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ ५ ॥ यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते । प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥६॥ २० ॥

॥ १६३ ऋषिः–१—६ विवृहा काश्यपः ॥ देवता—यक्ष्मघ्नम् ॥ छन्दः–१, ६ अनुष्टुप् । २—५ निचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १६३ ॥ अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि । यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते ॥ १ ॥ ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् । यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते ॥२॥ आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि । यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्नः प्लाशिभ्यो वि वृहामि ते ॥३॥ ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् । यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाद्भंससो वि वृहामि ते ॥४॥ मेहनाद्वनंकरणाल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः । यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ॥५॥ अङ्गादङ्गाल्लोम्नोलोम्नो जातं पर्वणिपर्वणि । यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ॥ ६ ॥ २१ ॥

॥१६४॥ ऋषिः–१–५ प्रचेताः ॥ देवता–दुःस्वप्नघ्नम् ॥ छन्दः–१ निचृदनुष्टुप् । २ अनुष्टुप् । ४ विराडनुष्टुप् । ३ आर्चीभुरिक् त्रिष्टुप् । ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१, २, ४ गान्धारः । ३ धैवतः । ५ पञ्चमः ॥

॥ १६४ ॥ अपेहि मनसस्पतेऽप क्राम परश्चर । परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः ॥१॥ भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम् । भद्रं वैवस्वते चक्षुर्बहुत्रा जीवतो मनः ॥२॥ यदाशसा निःशसाभिशसोपारिम जाग्रतो यत्स्वपन्तः । अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे अस्मद्दधातु ॥३॥ यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽभिद्रोहं चरामसि । प्रचेता न आङ्गिरसो द्विषतां पात्वंहसः ॥ ४ ॥ अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम् । जाग्रत्स्वप्नः संकल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ॥ ५ ॥२२॥

॥ १६५ ॥ ऋषिः—१—५ कपोतो नैर्ऋतः ॥ देवता—कपोतोपहतौ प्रायश्चित्तं वैश्वदेवम् ॥ छन्दः—१ स्वराट् त्रिष्टुप् । २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् । ४ भुरिक् त्रिष्टुप् ५ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १६५ ॥ देवाः कपोत इषितो यदिच्छन्दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम । तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १ ॥ शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहेषु । अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु ॥२॥ हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मानाष्ट्र्यां पदं कृणुते

अग्निधानें। शं नो गोभ्यंश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नों हिंसीदिह देवाः कपोतः ॥३॥ यदुलूको वदति मोघ मेतद्यत्कपोतः पदमग्नौ कृणोति। यस्य दूतः प्रहित एष एतत्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ॥ ४ ॥ ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदमिषं मदन्तः परि गां नयध्वम्। संयोपयन्तो दुरितानि विश्वा हित्वा न ऊर्ज प्र पतात्पतिष्ठः ॥ ५ ॥ २३ ॥

॥ १६६ ॥ ऋषिः—१—५ ऋषभो वैराजः शाकरोवा ॥ देवता—सपत्नघ्नम् ॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्। ३, ४ निचृदनुष्टुप्। ५ महा पङ्क्तिः ॥ स्वरः–१–४ गान्धारः। ५ पञ्चमः ॥

॥ १६६ ॥ ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासहिम्। हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम् ॥ १ ॥ अहमस्मि सपत्नहेन्द्र इवारिष्टो अक्षतः। अधः सपत्ना मे पदोरिमे सर्वे अभिष्ठिताः ॥ २ ॥ अत्रैव वोऽपि नह्याम्युभे आर्त्नी इव ज्यया। वाचस्पते नि षेधेमान्यथा मदधरं वदान् ॥ ३ ॥ अभिभूरहमागमं विश्वकर्मेण धाम्ना। आ वश्चित्तमा वो व्रतमा वोऽहं समितिं ददे ॥ ४ ॥ योगक्षेमं व आदायाहं भूयासमुत्तम आ वो मूर्धानमक्रमीम्। अधस्पदान्म उद्वदत मण्डूका इवोदकान्मण्डूका उदकादिव ॥ ५ ॥ २४ ॥

॥ १६७ ॥ ऋषिः–१–४ विश्वामित्रजमदग्नी ॥ देवता–१, २, ४ इन्द्रः। ३ लिङ्गोक्ताः ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराड् जगती। २, ४ विराड् जगती। ३ जगती ॥ निषादः स्वरः ॥

॥ १६७ ॥ तुभ्येदमिन्द्र परि षिच्यते मधु त्वं सुतस्य कलशस्य राजसि। त्वं रयिं पुरुवीरामु नस्कृधि त्वं तपः परितप्याजयः स्वः ॥ १ ॥ स्वर्जितं महि मन्दानमन्धसो हवामहे परि शक्रं सुताँ उप। इमं नो यज्ञमिह बोध्या गहि स्पृधो जयन्तं मघवानमीमहे ॥ २ ॥ सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मणि। तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातर्विधातः कलशाँ अभक्षयम् ॥ ३ ॥ प्रसूतो भक्षमकरं चरावपि स्तोमं चेमं प्रथमः सूरिरुन्मृजे। सुते सातेन यद्यागमं वां प्रति विश्वामित्रजमदग्नी दमे ॥ ४ ॥ २५ ॥

॥ १६८ ॥ ऋषिः—१—४ अनिलो वातायनः ॥ वायुर्देवता ॥ छन्दः-१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ४ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १६८ ॥ वात॑स्य॒ नु म॑हि॒मानं॒ रथ॑स्य रु॒जन्ने॑ति स्त॒नय॑न्नस्य॒ घोषः॑। दि॒विस्पृग्या॑त्यरु॒णानि॑ कृ॒ण्वन्नु॒तो ए॑ति पृथि॒व्या रे॒णुमस्य॑न् ॥ १ ॥ सम्प्रेर॑ते॒ अनु॒ वात॑स्य वि॒ष्ठा ऐनं॑ गच्छन्ति॒ सम॑नं॒ न योषाः॑। ताभिः॑ स॒युक्स॒रथं॑ दे॒व ई॑यते॒ऽस्य विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य॒ राजा॑ ॥२॥ अ॒न्तरि॑क्षे प॒थिभि॒रीय॑मानो॒ न नि वि॑शते कत॒मच्च॒नाहः॑। अ॒पां सखा॑ प्रथम॒जा ऋ॒ताव॒ा क्व॑ स्विज्जा॒तः कुत॒ आ ब॑भूव ॥३॥ आ॒त्मा दे॒वानां॒ भुव॑नस्य॒ गर्भो॑ यथाव॒शं च॑रति दे॒व ए॒षः। घोषा॒ इद॑स्य शृण्विरे॒ न रू॒पं तस्मै॒ वाता॑य ह॒विषा॑ विधेम ॥ ४ ॥ २६ ॥

॥ १६९ ॥ ऋषिः—१—४ शबरः काक्षीवतः ॥ गावो देवताः ॥ छन्दः–१ विराट् त्रिष्टुप्। २, ४ त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १६९ ॥ म॒यो॒भूर्वातो॑ अ॒भि वा॑तू॒स्रा ऊर्ज॑स्वती॒रोष॑धी॒रा रि॑शन्ताम्। पीव॑स्वतीर्जी॒वध॑न्याः पिबन्त्वव॒साय॑ प॒द्वते॑ रुद्र मृळ ॥ १ ॥ याः सरू॑पा॒ विरू॑पा॒ एक॑रूपा॒ यासा॑म॒ग्निरिष्ट्या॒ नामा॑नि॒ वेद॑। या अङ्गि॑रस॒स्तप॑से॒ह च॒क्रुस्ताभ्यः॑ पर्जन्य॒ महि॒ शर्म॑ यच्छ ॥ २ ॥ या दे॒वेषु॒ तन्व॒मैर॑यन्त॒ यासां॒ सोमो॒ विश्वा॑ रू॒पाणि॒ वेद॑। ता अ॒स्मभ्यं॒ पय॑सा॒ पिन्व॑मानाः प्र॒जाव॑तीरिन्द्र गो॒ष्ठे रि॑रीहि ॥ ३ ॥ प्र॒जाप॑ति॒र्मह्य॑मे॒ता ररा॑णो॒ विश्वै॑र्दे॒वैः पि॒तृभिः॑ संविदा॒नः। शि॒वाः स॒तीरुप॑ नो॒ गो॒ष्ठमाक॒स्तासां॑ व॒यं प्र॒जया॒ सं स॑देम ॥ ४ ॥ २७ ॥

॥ १७० ॥ ऋषिः—१-४ विभ्राट् सूर्यः ॥ सूर्यो देवता ॥ छन्दः—१, ३ विराड् जगती। २ जगती। ४ आस्तार पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ निषादः। ४ पञ्चमः ॥

॥ १७० ॥ वि॒भ्राड्बृ॒हत्पि॑बतु सो॒म्यं मध्वायु॒र्दध॑द्य॒ज्ञप॑ता॒ववि॑ह्रुतम्। वात॑जूतो॒ यो अ॑भि॒रक्ष॑ति॒ त्मना॑ प्र॒जाः पु॑पोष पुरु॒धा वि रा॑जति ॥ १ ॥ वि॒भ्राड्बृ॒हत्सुभृ॑तं वाज॒सात॑मं॒ धर्म॑न्दि॒वो ध॒रुणे॑ स॒त्यमर्पि॑तम्। अ॒मि॒त्र॒हा वृ॑त्र॒हा द॑स्यु॒हन्त॑मं॒ ज्योति॑र्जज्ञे असुर॒हा स॑पत्न॒हा ॥ २ ॥ इ॒दं श्रेष्ठं॒ ज्योति॑षां॒ ज्योति॑रुत्त॒मं वि॒श्व॒जिद्ध॑न॒जिदु॑च्यते बृ॒हत्। वि॒श्व॒भ्राड्भ्रा॒जो महि॒ सूर्यो॑ दृ॒श उ॒रु प॑प्रथे॒ सह॒ ओजो॒ अच्यु॑तम् ॥ ३ ॥ वि॒भ्राज॒ञ्ज्योति॑षा॒ स्व॒रग॑च्छो रोच॒नं दि॒वः। येने॒मा विश्वा॒ भुव॑ना॒न्याभृ॑ता वि॒श्वक॑र्मणा वि॒श्वदे॑व्यावता ॥ ४ ॥ २८ ॥

॥ १७१ ॥ ऋषिः—१-४ इटो भार्गवः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१ निचृद् गायत्री । २, ४ विराड् गायत्री । ३ पादनिचृद् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १७१ ॥ त्वं त्यमि॒टतो॒ रथ॒मिन्द्र॒ प्रावः॑ सु॒ताव॑तः । अशृ॑णोः सो॒मिनो॒ हव॑म् ॥ १ ॥ त्वं म॒खस्य॒ दोध॑तः॒ शिरोऽव॑ त्व॒चो भ॑रः । अग॑च्छः सो॒मिनो॑ गृ॒हम् ॥ २ ॥ त्वं त्यमि॑न्द्र॒ मर्त्य॑मास्त्रबु॒ध्नाय॑ वे॒न्यम् । मुहुः॑ श्रथ्ना म॒नस्य॑वे ॥ ३ ॥ त्वं त्यमि॑न्द्र॒ सूर्यं॑ प॒श्चा सन्तं॑ पु॒रस्कृ॑धि । दे॒वानां॑ चित्ति॒रो वश॑म् ॥ ४ ॥ २९ ॥

॥ १७२ ॥ ऋषिः—१—४ संवर्तः ॥ उषा देवताः ॥ छन्दः—पिपीलिकामध्यागायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १७२ ॥ आ या॑हि॒ वन॑सा स॒ह गावः॑ सचन्त वर्त॒निं यदूध॑भिः ॥ १ ॥ आ या॑हि॒ वस्व्या॑ धि॒या मंहि॑ष्ठो जार॒यन्म॑खः सु॒दानु॑भिः ॥ २ ॥ पि॒तु॒भृतो॒ न तन्तु॒मित्सु॒दान॑वः॒ प्रति॑ दध्मो॒ यजा॑मसि ॥ ३ ॥ उ॒षा अप॒ स्वसु॒स्तमः॒ सं व॑र्तयति वर्त॒निं सु॑जा॒तता॑ ॥ ४ ॥ ३० ॥

॥ १७३ ॥ ऋषि :—१—६ ध्रुवः ॥ देवता—राज्ञःस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ३—५ अनुष्टुप् । २ भुरिगनुष्टुप् । ६ निचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १७३ ॥ आ त्वा॑हार्षम॒न्तरे॑धि ध्रु॒वस्ति॒ष्ठावि॑चाचलिः । विश॑स्त्वा॒ सर्वा॑ वाञ्छन्तु॒ मा त्वद्रा॒ष्ट्रमधि॑ भ्रशत् ॥ १ ॥ इ॒हैवैधि॒ माप॑ च्योष्ठाः॒ पर्व॑त इ॒वावि॑चाचलिः । इन्द्र॑ इ॒वेह ध्रु॒वस्ति॑ष्ठे॒ह रा॒ष्ट्रमु॑ धारय ॥ २ ॥ इ॒ममिन्द्रो॑ अदीधरद्ध्रु॒वं ध्रु॒वेण॑ ह॒विषा॑ । तस्मै॒ सोमो॒ अधि॑ ब्रव॒त्तस्मा॑ उ॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिः॑ ॥ ३ ॥ ध्रु॒वा द्यौर्ध्रु॒वा पृ॑थि॒वी ध्रु॒वासः॒ पर्व॑ता इ॒मे । ध्रु॒वं विश्व॑मि॒दं जग॑द्ध्रु॒वो राजा॑ वि॒शाम॒यम् ॥ ४ ॥ ध्रु॒वं ते॒ राजा॒ वरु॑णो ध्रु॒वं दे॒वो बृह॒स्पतिः॑ । ध्रु॒वं त॒ इन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ रा॒ष्ट्रं धा॑रयतां ध्रु॒वम् ॥ ५ ॥ ध्रु॒वं ध्रु॒वेण॑ ह॒विषा॒भि सोमं॑ मृशामसि । अथो॑ त॒ इन्द्रः॒ केव॑ली॒र्विशो॑ बलि॒हृत॑स्करत् ॥ ६ ॥ ३१ ॥

॥१७४॥ ऋषिः—१— ५ अभीवर्तः ॥ देवता—राज्ञः स्तुतिः ॥ छन्दः—१, ५ निचृदनुष्टुप् । २, ३ विराडनुष्टुप् । ४ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः ॥

॥ १७४ ॥ अ॒भी॒व॒र्तेन॑ ह॒विषा॒ येनेन्द्रो॑ अभिवावृ॒ते । तेना॒स्मान्ब्र॑ह्मणस्पते॒ऽभि रा॒ष्ट्राय॑ वर्तय ॥ १ ॥ अ॒भि॒वृत्य॑ स॒पत्ना॑न॒भि या॒ नो॒ अरा॑तयः । अ॒भि पृ॑त-

न्यन्तं तिष्ठाभि यो नं इरस्यतिं ॥ २ ॥ अभि त्वां देवः संवि॒ताभि सोमों
वीवृतत् । अभि त्वा विश्वां भूतान्यभीवर्तो यथासंसि ॥ ३ ॥ येनेन्द्रों ह॒वि
कृत्व्यभंवद्युम्न्युत्तमः । इदं तदंक्रि देवा असपत्नः किलाभुवम् ॥ ४ ॥ अ
पत्नः संपत्नहाभिराष्ट्रो विषासहिः । यथाहमेषां भूतानां विराजांनि जनं
च ॥ ५ ॥ ३२ ॥

॥ १७५ ॥ ऋषिः-१-४ऊर्ध्वग्रावार्बुदिः ॥ ग्रावाणो देवताः॥ छन्दः-
१, २, ४ गायत्री । ३ विराड् गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

॥ १७५ ॥ प्र वों ग्रावाणः सवि॒ता देवः सुंवतु धर्मंणा । धूर्षु युंज्य
सुनुत ॥ १ ॥ ग्रावांणो अपं दुच्छुनामपं सेधत दुर्मतिम् । उस्राः कर्तन भेषज
॥ २ ॥ ग्रावांण उपंरेष्वा महीयन्ते सजोषंसः । वृष्णे दधंतो वृष्ण्यंम् ॥३॥
वाणः सवि॒ता नु वों देवः सुंवतु धर्मंणा । यजमानाय सुन्वते ॥ ४ ॥ ३३ ॥

॥ १७६ ॥ ऋषिः—१—४ सूनुरार्भवः ॥ देवता—१ ऋभवः । २—
अग्निः ॥ छन्दः—१, ४ विराडनुष्टुप् । ३ अनुष्टुप् । २ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—
३, ४ गान्धारः । २ षड्जः ॥

॥ १७६ ॥ प्र सूनवं ऋभूणां बृहन्नंवन्त वृजनां । क्षामा ये विश्वधांयसे
श्नंन्धेनुं न मातरंम् ॥ १ ॥ प्र देवं देव्या धिया भरंता जातवेंदसम् । हव्या
वक्षदानुषक् ॥ २ ॥ अयमुष्य प्र देवयुर्होतां यज्ञायं नीयते । रथो न योर
तो घृणींवाञ्चेताति त्मनां ॥ ३ ॥ अयमग्निरुरुष्यत्यमृतांदिव जन्मंनः । सहंसा
त्सहीयान्देवो जीवातंवे कृतः ॥ ४ ॥ ३४ ॥

॥ १७७ ॥ ऋषिः—१—३ पतङ्गः प्राजापत्यः ॥ देवता—मायाभेद
छन्दः—१ जगती । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ निषा
२, ३ धैवतः ॥

॥ १७७ ॥ पतङ्गमक्तमसुंरस्य मायया हृदा पंश्यन्ति मनंसा विपश्चितः
मुद्रे अन्तः कवयो वि चंक्षते मरींचीनां पदमिंच्छन्ति वेधसः ॥ १ ॥ पतङ्गो
चं मनंसा बिभर्ति तां गन्धर्वोऽवदद्गर्भें अन्तः । तां द्योतंमानां स्वर्यं मनीषामृ
पदे कवयो नि पांन्ति ॥२॥ अपंश्यं गोपामनिंपद्यमानमा च परां च पथिभि
रंन्तम् । स सध्रीचीः स विषूचीर्वसांन आ वरीवर्ति भुवंनेष्वन्तः ॥ ३ ॥ ३५

॥ १७८ ॥ ऋषिः—१—३ अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यः ॥ देवता—तार्क्ष्यः ॥
–१ विराट् त्रिष्टुप्। २ निचृत्त्रिष्टुप्। ३ त्रिष्टुप्॥ धैवतः स्वरः॥

॥ १७८ ॥ त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहावानं तरुतारं रथानाम्। अरिष्टनेमिं
जमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम॥१॥ इन्द्रस्येव रातिमाजोहुवानाः स्वस्तये
मेवा रुहेम। उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे मा वामेतौ मा परेतौ रिषाम॥२॥ सद्य-
यः शवसा पञ्च कृष्टीः सूर्य इव ज्योतिषापस्ततान। सहस्रसाः शतसा अ-
र्हिनं स्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम्॥ ३॥ ३६॥

॥ १७९ ॥ ऋषिः—१ शिविरौशीनरः। २ प्रतर्दनः काशिराजः। ३ वसुम-
हिदश्वः॥ इन्द्रो देवता॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्। २ निचृत्त्रिष्टुप्। ३
टुप्॥ स्वरः—१ गान्धारः। २, ३ धैवतः॥

॥ १७९ ॥ उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्। यदि श्रातो जुहोतन
ातो ममत्तन॥ १॥ श्रातं हविरो ष्विन्द्र प्र याहि जगाम सूरो अध्वनो वि-
म्। परि त्वासते निधिभिः सखायः कुलपा न व्राजपतिं चरन्तम्॥२॥ श्रा-
न्य ऊधनि श्रातमग्नौ सुश्रातं मन्ये तदृतं नवीयः। माध्यन्दिनस्य सवनस्य
ः पिबेन्द्र वज्रिन्पुरुकृज्जुषाणः॥ ३॥ ३७॥

॥ १८० ॥ ऋषिः—१—३ जयः ॥ इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—१, २
प्। ३ विराट् त्रिष्टुप्॥ धैवतः स्वरः॥

॥१८०॥ प्र ससाहिषे पुरुहूत शत्रूञ्ज्येष्ठस्ते शुष्म इह रातिरस्तु। इन्द्रा भर
णेना वसूनि पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम्॥१॥ मृगो न भीमः कुचरो गि-
ः परावत आ जगन्था परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ता
वि मृधो नुदस्व॥ २॥ इन्द्र क्षत्रमभि वाममोजोऽजायथा वृषभ चर्षणीनाम्।
नुदो जनममित्रयन्तमुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम्॥ ३॥ ३८॥

॥१८१॥ ऋषिः—१ प्रथो वासिष्ठः। २ सप्रथो भारद्वाजः॥ ३ घर्मः सौर्यः॥
देवा देवताः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥
स्वरः॥

॥ १८१ ॥ प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो हविर्यत् । धातु
र्द्युतानात्सवितुश्च विष्णो रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः ॥ १ ॥ अविन्दन्ते अति
हितं यदासीद्यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् । धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णोर्भरद्वाजो
बृहदा चक्रे अग्नेः ॥२॥ तेऽविन्दन्मनसा दीध्याना यजुः ष्कन्नं प्रथमं देवयानम्
धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णोरा सूर्यादभरन्घर्ममेते ॥ ३ ॥ ३९ ॥

॥ १८२ ॥ ऋषिः—१—३ तपुर्मूर्धा बार्हस्पत्यः ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ छन्दः—
भुरिक् त्रिष्टुप् । २ विराट् त्रिष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः ॥

॥ १८२ ॥ बृहस्पतिर्नयतु दुर्गहा तिरः पुनर्नेषदघशंसाय मन्म । क्षिपदश
स्तिमप दुर्मतिं हन्नथा करद्यजमानाय शं योः ॥ १ ॥ नराशंसो नोऽवतु प्रयाजे
नो अस्त्वनुयाजो हवेषु । क्षिपदशस्तिमप दुर्मतिं हन्नथा करद्यजमानाय शं यो
॥ २ ॥ तपुर्मूर्धा तपतु रक्षसो ये ब्रह्मद्विषः शरवे हन्तवा उ । क्षिपदशस्तिमप दु
र्मतिं हन्नथा करद्यजमानाय शं योः ॥ ३ ॥ ४० ॥

॥ १८३ ॥ ऋषिः—१—३ प्रजावान्प्राजापत्यः ॥ अन्वृचं यजमानपत्नी
होत्राशिषो देवताः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप् । २, ३ विराट् त्रिष्टुप् ॥ धैवतः स्वरः

॥ १८३ ॥ अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं तपसो जातं तपसो विभूतम् । इ
प्रजामिह रयिं रराणः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकाम ॥ १ ॥ अपश्यं त्वा मनसा
दीध्यानां स्वायां तनू ऋत्व्ये नाधमानाम् । उप मामुच्चा युवतिर्बभूयाः प्र जायस्व
जया पुत्रकामे ॥ २ ॥ अहं गर्भमदधामोषधीष्वहं विश्वेषु भुवनेष्वन्तः । अहं प्र
अजनयं पृथिव्यामहं जनिभ्यो अपरीषु पुत्रान् ॥ ३ ॥ ४१ ॥

॥ १८४ ॥ ऋषिः—१—३ त्वष्टा गर्भकर्ता विष्णुर्वा प्राजापत्यः
देवता—लिङ्गोक्ताः । गर्भार्थाशीः ॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप् । ३ निचृदनुष्टुप्
गान्धारः स्वरः ॥

॥ १८४ ॥ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु । आ सिञ्चतु
जापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥ १ ॥ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति
गर्भं ते अश्विनौ देवावा धत्तां पुष्करस्रजा ॥ २ ॥ हिरण्ययी अरणी यं निर्मन्थ
अश्विना । तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि सूतवे ॥ ३ ॥ ४२ ॥

।१८५।। ऋषिः–१–३ सत्यधृतिर्वारुणिः।। देवता–अदितिः। स्वस्त्ययनम्।।
-१, ३ विराड् गायत्री । २ निचृद्गायत्री ।। षड्जः स्वरः ।।

।। १८५ ।। महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः । दुराधर्षं वरुणस्य
।। नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु । ईशे रिपुरघशंसः ।। २ ।। यस्मै पु
अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय । ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम् ।। ३ ।। ४३ ।।

।।१८६।। ऋषिः–१–३ उलो वातायनः।। वायुर्देवता।। छन्दः–१,२ गायत्री ।
निचृद्गायत्री ।। षड्जः स्वरः ।।

।। १८६ वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र ण आयूंषि तारिषत्
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा । स नो जीवातवे कृधि ।।२।।
वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः । ततो नो देहि जीवसे ।। ३ ।। ४४ ।।

।।१८७।। ऋषिः–१–५ वत्स आग्नेयः।। अग्निर्देवता ।। छन्दः–१ निचृद्-
। २–५ गायत्री ।। षड्जः स्वरः ।।

।। १८७ ।। प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम् । स नः पर्षदति द्विषः
।। यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते । स नः पर्षदति द्विषः ।।२।।
क्षांसि निजूर्वति वृषा शुक्रेण शोचिषा । स नः पर्षदति द्विषः ।। ३ ।। यो
भि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पर्षदति द्विषः ।। ४ ।। यो
पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत । स नः पर्षदति द्विषः ।। ५ ।। ४५ ।।

।।१८८।। ऋषिः–१–३ श्येन आग्नेयः ।। देवता–अग्निर्जातवेदाः।। गायत्री
।। षड्जः स्वरः ।।

।। १८८ ।। प्र नूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम् । इदं नो बर्हिरासदे
।। अस्य प्र जातवेदसो विप्रवीरस्य मीळ्हुषः । महीमियर्मि सुष्टुतिम् ।। २ ।।
चो जातवेदसो देवत्रा हव्यवाहनीः । ताभिर्नो यज्ञमिन्वतु ।। ३ ।। ४६ ।।
।।१८९।। ऋषिः–१–३ सार्पराज्ञी।। देवता–सार्पराज्ञी सूर्यो वा ।। छन्दः–१
गायत्री । २ विराड् गायत्री । ३ गायत्री।। षड्जः स्वरः ।।

॥ १८९ ॥ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः
॥ १ ॥ अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥ २
त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते । प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥ ३ ॥ ४७

॥ १९० ॥ ऋषिः–१–३ अघमर्षणो माधुच्छन्दसः ॥ देवता–भाववृत्तम्
छन्दः–१ विराडनुष्टुप् । २ अनुष्टुप् । ३ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ गान्धारः स्वरः

॥ १९० ॥ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत तत
समुद्रो अर्णवः ॥ १ ॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि
विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २ ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दि
च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ३ ॥ ४८ ॥

॥ १९१ ॥ ऋषिः–१–४ संवननः ॥ देवता–१ अग्निः । २–४ संज्ञानम्
छन्दः–१ विराडनुष्टुप् । २ अनुष्टुप् । ४ निचृदनुष्टुप् । ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः–
२,४ गान्धारः । ३ धैवतः ॥

॥ १९१ ॥ संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ । इळस्पदे समिध्यसे
नो वसून्या भर ॥ १ ॥ सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भा
यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥ २ ॥ समानो मन्त्रः समितिः समानी समा
मनः सह चित्तमेषाम् । समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि
॥ ३ ॥ समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनो यथा व
सुसहासति ॥ ४ ॥ ४९ ॥ ८ ॥ ८ ॥ १२ ॥ १० ॥

॥ इति दशमम्मण्डलं समाप्तम् ॥

॥ ऋग्वेदसंहिता समाप्ता ॥

